॥दो॥ गुरु ...
साह सेक ...
सेषतकीस्याह के पीरा॥ ता के संग ...
रहे बीरा॥ यातरिल स्नैन आ ...
ऐसा मद अरू गर नसु ...
तकी स्याह सूं कही॥ सो चादी ...
रासही॥ दी इन्नृ लिरहे हैं सब ...
हिबकूं पावे नहीं २ हीइतुरक ...
करे पुकारा॥ जुल्न हा ... णी ...
अपारा॥ सेषतकी इक ...
कहो कबीर तुम अग ...
रासरी इतें तुम रा ... ई ...
अग मच सत क्या पाई॥ ताके ...
चोक हो बुझाई॥ नहिं तो ...
रे भाई॥४॥ हाथी माला ...
वो याके ऊपरि ...
लाव तहाथी ... वो गाढा ...
हजूरि की ओत बगाडा ५ सेषत ...
की बूझ तदेबा ला हाथी मस्त बड़ा

तहेमाताम्हावतहाथीकूंलनकेरो
याकोतुरतमारिहीडारोहेकदीन
सूंआगेसांनांकाहूकाइनडरनहे
मांनांतबहाथीकूंआनिकुंकाया
मेरेमनमेंजैनहींआया ५ कुके
नहाथीकरैविवेषा सिंघरूपत
हांबैठेदेषा औरकिसीकीनजरि
नआवेहाथीदेषिदेषिपछितावे
८ हाथीकालनरूपकोदेषैहमरे
स्वांतिरूपमनलेषे हाथीभागि
गयोहैषांनांपातस्याहनहींपाये
जपांनां ए हूसरबरीयांआनिपु
कारा कबीरखांणीकथेअपारा
करोकैदकबहुमतिछोरा या
कूंमारिगंगामेंबोरो १९ सेषतकी
कहैकेसीभईपातस्याहतबके
कुनहींकहीसेषतकीइककी
न्हबषांनांयाकामरमनकाहू
जांनां २१ चोबदारकोदीनपग

बै

॥

संतनिबे

सेघतकी सोची मन मांही॥१६॥दो कु
दीन दन दीन रवा

थे तब कबीर कूं तुरत बुलायो॥१
मरदन करि बसत्र पहिरायो। तेल च
मेल फुलेल लगायो। कहे कबीर क
हा मन मानी। सोही बात मोहि कहो नि

दांनी॥१८॥स्माहतकीदोयबोलेबां
तेरीसैंनत्तिकरैहैंग्पांनी॥येकदी
मैंवडारहैऊ॥देऊदीनकाहेकंक
ऊ॥१९॥तबकबीरकरिकहीबि
षा॥दोकदीनमैंकहूंनदेषा॥दीन
कसबकेमननाया॥दोऊदीनक
तैंग्रायाा२०॥दीनयेकमैंकऊंपुक
री॥दोयकहेंदोजगमेंडारी॥येक
नकोईनहींपावै॥दोयकहैदोज
जीवजावै॥२१॥जाकोनांमतुमदीन
ठहिराया॥सोसरूपधरिमैंहीग्राय
तुमकूंग्रांखिनसूफेनांहीं॥मैंग्राप
कहूंसबकेमांहीं॥२२॥सकलम
छिग्रापहीग्रापा॥ग्रापहीजपैग्र
पनौजापा॥जुलहाग्पांनकथेग्रप
रा॥सूंनत्तिकरैमत्तिल्यावोबारा॥२
३॥नाईयेकतुमलेहोबुलाई॥इनं
कीसैंनत्तिकरोरेभाई॥नाईदेषिदे
षिपछितावै॥सदलीक्यासूंनित्ति

ई॥देषिदेषि सबर हेछिपाई॥तब
रडेरैचलन आया॥२३॥जहूंस्या
मेदन हीपाया॥२४॥सेषतकीबो
कबानी॥सुनोंस्याह मैंकहूंबषा
हैयहां नाई॥सबके
छैतलबकराई॥२६॥येकलाठस
सूतमगाई॥सबहीजुलहापकडि
ई॥तबकबीरजबिगाडे नयेता॥
तस्याहसंबांनीकहे जोंयेतुमकांम
छुनहींकीया॥सबकूंडपकादेकं
या॥इनसबहीकंबिदाजोदेही॥सं
निसांसबहमसूंलेही॥२८॥चौबदा
कंलीनोंसाथ॥नलीतगाइकदीनों
॥ऐसेंचतऐसेंचतछोरनआवे॥
बष्याकेमनमेंपछितावे॥२९॥सत
रबकतलहांलागा॥कहूंछोरनही
सैधागा॥करामातिदेषितबरहेउ
हूस्याहमेदनहींलहेउ॥३०॥ऐसे
मतिकेमंदानयेनयेजगवतफं
॥चौथापरचाऐसैंदीयेजपानस्या

हमेदनहीलीयेत २१ पांचवांपरचाकहूं
विचारी जाकीबातबकुतअतिभारी पं
डितसंन्यासीगुरुडंडी इनसब-दिनमिलि
कीनीभंडी सेवककोअरुस्या हेबराजे
तहांजायबकुतहीगाजे कबीरखानु
सबकुपरिगावे कासीमेंकोइरहणनपा
वे २२ बांनीकहैसबनकेआगे हमरोजे
वे २३ बांनीकहैसबनकेआगे हमरोजे
रकछुनहीलागे केतोयाकोमारिहीडा
रो कैहमकूंतुममारिनिकारो २४ तब
सबहिनमिलिमोहिबुलाया तबमेंआं
गेंहीचलिआया तबकाहीनागीसम
सेरा चक्रहिसासोंनीबोंछेरा संबसम
सेरहेअतउगाई मेरेमनकछुसंसेना
हीं मारमारसबबोलेबांनी चढिगयो
गगनिकाहूनहींजांनी पैवनरूपधरि
तहांदिखाया स्वाहमेदअजहूंनहीं
आया छठवांपरचाऐसेलीनां सात
कोटडीमांहीदीनां २५ कुलफदईपो
कीवेवाई निकसिगयोकाहूववरिन
पाई सातमेंपरचेसरणमगाया सरबं
अंगमैंलेलपटाया २६ ताकोविसनहीं

नकीबातब

१४गोयेवुदायकादावा

ना

दकगमबताई

पेगंमरनये

रिलइये

नमांनेसोल

हम

नाजे

नजारादेखाना

हीस्थालहमाराा४६ाजोकोग्रागतोहा
कीयौनाासोहीलगावैतोभुजावैकौना
ग्रपारवापरचाग्रैसैदीनातनमैंका
मयेकग्रसकीनाा४७ापरबतऊपरि
मोहिचढाया।वहांजायकरितुरतगिरा
याधरतीऊपरिग्रांणिसमायाा४२जहं
स्याहभेदनहींपायाा४८ाकेतेपरचाक
लेहेमोसूंमैंलोकछूकहीनहींतोसैं
मनमांनेंकरिलीज्योभाईमेरेहेसत्यपुर
षसहाई।४९।तुमरोमास्योकबकुनम
रिहूंातीनलोकमैंनाहीडरिहूंाकाल
मनुनकोंडंडदिवावोसोमेरैमनकबून
ग्रावैा५०ासिरपरकहाचढावोभारात
मतासबैकालकेचारााकालबलीसैं
कबूनछूटैातीनोंलोकक्रालसबलहै
५१ासोकालहैसत्तिकाचेराासोमैंकीया
सत्तिमेंडेराातनमनसुरतिसत्तिमेंरहे
मेराभेदनकोईलहैा५२ाजंत्रमंत्रबड
मूंठिचलाईामेरेग्रंगनलागीभाईाक
हांलगपरचाल्हेहोमेराामेरामरमनक
लहेराा५३ाग्रबारवांपरचाग्रैसैंदीनाा

मूरखमोहिनचीनों।तिरवांपरचा
लमगाया।।ताताकरिकैमोहिन्हलां
।धु।धां।सीतलअंगनलाग्योताता
अंन्हकीजाता।परचैपरचैऐसै॰
।कौनबातकाकहूंबिबेषा।।५५।
तीबारकरामतिहमदेखी।उनके
मैडरमतिनआंचोदवापरचांऔर
पाया।।अजहूंस्पाहनेदनहीपा
महिलांमांहीमोकूंदेषा।।तब॰
लकीनबिबेषा।।इनकीअगम
क्याकहीयै।।अबतौचुपहोयकैर
।धू।।कूतहीपरचालीलोभाई।।इ
कामरमन्नकाहूपाईपिंडमांपर
सैंलीनांमैंकोमयेकअसकीनों।
जोगणीबांवनबीरा।देषेस्पाहमह
तीरा।देषतसुधिबुधिसबैहिरां
क्योदिलमैंकछुइकजांनी।।धू।।५६
च्यारिकीहोतीअरामा।सोमैंऐंचिली
मपासा।रहगयाकुछ्छामननपिछ्छतो
।तबतकैकछुउपज्योग्यांनां।।६०
येकहाकहीनहीजाईकछुइक

रचो औरत्यो भाई। कोइ मोटा परचो दे
हो कबीरा। तो तुम सो चे सतिफकीरा।
ई१ मोटा परचो हमकूं देही। जाति अ
न्हकी तब व्यवहारा इ सो त्नवां परचा ऐ
सै दीनो। म्हाजहूद कों मनअसकीनो।
ई२ पीर पकंमर नवीरसूला। ये सब मु
सलमांन के मूला। सो मैं सब ही लीन
बुलाई। अगम ग्याल का कून्ही पाई
ई३ स्याह देषितकी फिर देपा। अग
मग्याल के मैं करि लेषा। जागत है वै
सुपनां नाई। देषि देषि दिल में पिछ
ताई ई४ भाग बडे हम जांनी बाता
है कबीर साहिब की जाता। कहै स्या
ह सुनौ हो पीरा। सतिपुरष है सदे क
५ बीरा। सब वां परचा सति सरूपा। म्ह
तेज अरूल बकुतसरूपा। पांणी पवन
जमी आकासा। चंद सूर संग लीया त
मासा। ई५ स्याहतकी दोउ भर्म भूला
है कबीर ग्यांन को मूला। इनकी सिप
ति क्या करूं बषांनी। अगम निगम उन
सब ही जांनी। ई६ साहिब मन चाहै

काहेडरै।सुक्तिमकारणअहनपुध
ई६।कालनबलीम्हाबडोकहावै।से
रकीनजरिनआवै।१६।भिकबीर
चकतमयेउ।पातस्याहअचरज
पगयेज।१६।पातस्याहकेअैसी
जिउसेपलकीसांचीमोहिकहे
निकमहरिजोमोपरकरहीतोमे
यसवहीहरही।१७०।भिास्तबेकूं
आगेगयेउ।इनकोबोजनकाहू
हेजातीनलोककीहोतबडाई।बि
कतेबसकलबहराई।७१।सोतोसब
हीनउगाई।अैसीअगमअगोरक्यापा
सेपतकीमोहिकहोबुझाई।तोतुम
चेपीरकहाई।७२।सेमलकीतबउ
उ।पातस्याहबातसुनिलीयेउ
नेसकमांनिकोइहूसरनांही।येतुमसा
।७३।अगरवांपरचा
भाई।अगमप्यालककूकही
हसभाजो।रिकेबैबातबमें
बघटभीतरिपैवौंसूपमेकअनंतहीं ७
मनकाहूलहेजातब
साहकै नःडीमनकीडरमति

बहीं।।३ दीकेरआ...
बकबीरअगमकछुकह्या। जोकछु
रजहोयसोनेकु। पीछेदोसनहमकूंदे
क ७६ ।। तबस्याहककहीमिस्तमेंपाउं
तोमेंसरगातुम्हारीआंउं। येकछिनके
मेंमिस्तदिखाई। मुखसेंस्याहकहीमेंपाई
७७ स्याहमरमपायोहैपूरा। अबमेरेउ
मनयेसबहरा। सेयुनकीछोडेनहीं
बांनी। अंधेबातमेरीनहींमांनी ७८
पेछतकीबोलेअभिमांनी। साहिबसि
तिनकाकुजांनी। जोतुमदोकुनकी
अससबाता। तोमांनूंसाहिबकीजाता
७९ बेनमूनसाहिबहैसोही। सोनमू
नमांनेंनहींकोई। बेचूंनबेजिस्याक
तावे। सोसाहिबमेरेमनभावे ६०
सबेनिसांनमेंनिजहैसोही। ताकीस
बरिनपावेकोई। सेबतकीतबअंधे
कहैतु। जायगगनिमेंबांनीकहेतु
६१ होयनकीहोयअससबाता। तबत
सतिसाहिबकीजाना। अलखपकनक
मकरीवसीवा। तबहींउनेमांनीसीष
...सेयुनकीमांनिजोलीयेउ। केत
...सेयुनकीस्याहद...

लाया।यामुरदाकौदेहीतबाईतो
अनहमुदायकहाशे।६४।सतुसबद
लकरहेत।नामकमालचबैचित
ही।सोकरिदिषलाईाहन
गतिमतिकाकनपाईं।६६।इनकीलषि
किमेदेहीफिरमैकनकनामलेउं।
हिबइनमेंअनरनांहीयेहीबातजां
ननमांही।६७।साहिबसीचासतिक
ही।हतुरकदोककेपीरा।हीहतुर
दोउसीसतिबा।वो।सतिसाहिबकीजाति
बो।६८।स्याहनकीरमसलतेकरी।ए
नदिलमांहीधरीायहांऔरकोईरहे
सांचीबातकहोमोहिपीरा।६९।सेष
तकवांणीकही।रांमानंदनांमतहां
चोदासेंबरसओरहहीराषा।तन्हे
नूं।नाषा।।७०।सोकबीरकोपीर
हीजे।ताही।संककूपरचालीजे।स्याह
दरकहीतुकाड़ीमोकूंपरचादेहीं।
७१।चलीयेजायदरसवहांकीजोव
ककूपरचालीजो।स्याहसिकंदलीन
जा।चलेजायआपणीमोजा।७२।सेद
संगहीलीनो।स्याहसिकंदऔरस।
...पालंदपेगा...नयेउ।रांमानंद

एसगाई॥५४॥फकीरनामकबीरकहाईके
रफकीरहेटुकडागदाईतबमारीनागीसम
सेराद्रटतमूकनलागीबेरा॥५५॥द्रटतमू
कधारदोनिकसीओरओरदेहीतहांविग
सीमेकहूधडकरगत्रधारातबस्याहमन
कीयोबिचारा॥५६॥योकैसोकारनहोगयो
रगत्रदूधकाहेसंनयोयेतीकहतदोसही
लागीस्याहसरीरलगीहेआगी॥५७॥जरबू
जरतूंकरिडरैआया॥स्याहसरीरकष्टबहु
तपाया॥सतिकबीरकूंनेहोबुलाईमेरी
आगिदेहोबुकाई॥५८॥चोबदारआरि
तबगयेउ॥जायकबीरपैठाढेभयेउ॥
हकीकतिसबकहीबनाई॥किंहिविध
दरदस्याहकेजाई॥चोबदारकेसंगही
लीनो॥आयस्याहकेदरसनकंदीनो
अमीदृष्टिभरिदेषतभयउ॥स्याहदुष
हरिहोयगयउ॥१०१॥हरिअयोदुषसुष
करारा॥तबहीस्याहइकबचनउचा
रा॥कहोसाहिबइकमूकबानी॥ताके
समक्षिकहोमोहिग्यानी॥१०२॥सांमांत
दकूंहमहीमारा॥ताकेअंगचलीदो
धारा॥एक [illegible] साहजेअंगरग
[illegible] बासा [illegible] कबीर [illegible] निवांनी
[illegible] नहींगुरमांनी [illegible] ग्यानसुना
[illegible] अंगमें [illegible] समाया॥१०॥ [illegible]
[illegible] समाईताजे [illegible] नयोरे [illegible] ग्यान

संमरथ मात्रापुरुषकी दया कबीर धरमदा
यागुसांईसाहेबदासजीकीदयागुसांईकुल
सजीकीदयागुसांईलछमणदासजीकीद
सांईजगपतदासजीकीदयागुसांईसुख
कीदयागुसांईईश्वरदासजीकीदयागुसं
लपतदासजीकीदयागुसांईसुरतदासजी
सांईस्योकदासजीकी दयागुसं
मदासजीकीदयागुसांईहंसदासजी
यागुसांईनेहचलसाहेबग्यानीजी स
याबाबाजीग्यानदासजी साहेबकी
यामुलतानपुरन भंडारकीदयासव
कीदयासवसंतनकीदयाहुलिख्य
अथ अमरमुल॥ चोपई॥ अमरमूल है
वहैसार॥ अमृतज्ञानकोकहोविच
अमृतग्रहदकबीरकोसार॥ जेहो
तजोजतरहोपार॥१॥ साखी॥ अ
मूलएहगृहेकबीरविचार॥ अम
लजोनेविनाबुडासवसंसार॥२॥ चौ

ई॥ अमरसुलधरमदाससैजांना॥ ताकोभे
वषकुंग्रवांना॥ अमरसुल ऐकग्रहुहै म
ही अछुरबिनबुंडीडुंयां ग्राहीच॥ धर
मदासउबाच॥ तबधरमदासबिनती
अनुसारी॥ कहोस्वामीऐहभेदबिचा
री॥ अमरसुलबकहेदीन्हा॥ अम
रभेदसबहीकहेदीन्हा॥ ४॥ पहिलेस
बदसुरतिअनुसारा॥ तापीछेतीउंलो
कपसारा॥ तबधरमदासकहेकजो
री॥ सुनोसाहेबबिनतीऐकमोरी॥ ५॥
अमरसुलमोहिकहोबिचारी॥ ताको
भेदकहोनिरवारी॥ ओरग्रंथक
लाबउंभांता॥ सोईकहोत्यामेसं
सिजाती॥ ६॥ मैश्रुतीतनुमारीकीन्हा
अवरजीवकाउनहीचीन्हा॥ कहु
हेकबीरतबकहेबिचारी॥ तुमकुं
ज्ञानभयोबडभारी॥ ७॥ प्रथमेसुन
सा मकाहे या॥ तापीहेनरीयर

कापेवा॥ तवेश्रा दस्तीम माधांनवी चार
न यहकारजजीव कुं लेदीतेवारी॥ दे
पांनश्रवो नाशब्द है सारा॥ यादीश्रुं
दसउवारा॥ अंकनांम श्रदरी
नुं मनि है अछर कलो हुजाई॥ ७॥
द अछर का करो निवेरा तब्ब दीठो
सिष मै तेरा॥ नि:अछर मैं स्तुं बु का
नेदी तेत मारीस से जाई॥ ९॥ नोवा
पिते षाक कहे मैके स्मा॥ वा हो नि चार
चितश्रावै जे सा तु न सब निरगुन का
जा संनाही॥ अमर मूल मोहि कवोर
जाही॥ के सतं जन जिन लाम लूम लो
क होवि चारी प्रमपद रहे सी॥ १० शब्द
लीसब सुरति अंतु सारा॥ सार्य लै
लोक पसारा॥ और शब्द नाम लो का
हि माही॥ नि: अछर मैं लोका संनाही॥ ११
अछर काव ले पाजी॥ तब सब
नमरे ले जाई॥ जीवत लोकमै

बैठे जाई सार सब्दु मैं रहै समाई ॥ १३ ॥
अमर साखु तब ही अनु सारा जब दी
लोक जो कीया परा ॥ अब ही पलोक
को जाउ ॥ जैसो पुरख ते सो लोक जाउ
१४ सो भाकोट कट्टो न ही जाइ ॥ बनत
बुनत नही सराइ ॥ जोहो च्यार मोख को
मिनिकी ओती सो होइ सोनि दे सनकी
कोती ॥ १५ ॥ अरु पुरख सो भाक ट्टीन जाई
अमर मुरतन मेटे पोजाइ ॥ अमर मूल
ज्याकुं मिगया ॥ सो पानि अमर जो भया
१६ ॥ अमर मूरतन का करो बिचारा ॥ सो इनि
न है देह मास ॥ ते मारे बेसु कुं ऐट उपदे
सा ॥ सो ज्ञानी होरे ताही कुं संदेसा ॥ १७ ॥
साखी ॥ सब से जिन बोलहो कहै कबीर
बिचार ज्ञानी सु जिन ढुराये हो संतो
संतमति सार ॥ १८ ॥ जुहा ॥ बोकुंत मोति
संमजाये हो ॥ जीव है मेरो अंस जीवला
अंसु सया पापा ॥ धर्मदास तुं मवेल ॥ १९ ॥
साखी ललसु का पाव हो ज्ञानी जो है कं लि

गाथै।वादीसं जो छुंद कै है।सो ऐसो [illegible]
रजोया॥२०॥चोपई. धर्मदासउवा [illegible]
कप चामै चा।नां गुसांई।अब निरगु [illegible]
सरंग।एक होब का ई।है धर्मदा [illegible]
गनो मोन हृ प्रहर सारा॥सिव [illegible]
जो कीया पसारा॥२१॥निरंजन [illegible]
वुं कैसो ई॥अब वक्ता जो कौ [illegible] ॥
मनं मेलन का करो वि चा [illegible]
सतं म प्रहर सारा॥२ [illegible]
बजुं तो मो या॥प्रम [illegible]
साया।साया पव आ [illegible] ॥
रमूल काजुं।बर तै जो [illegible] ॥
रमल धर्मदास संन [illegible]
साहं सन कुं दै [illegible]
कातं मारा॥सोई नि [illegible]
२४॥साषी॥ज्यासं कहे स [illegible]॥सोई
तत है पाया॥निरंतर सब [illegible]
पच मेरे संसारा॥२५॥साष [illegible] जो
यसो मांन है॥बुजिदं॥सिंध प्रमाना॥को

है कावीरसोवं वहै॥ ओसकतलम
थारहै॥ चौपई॥ एकसांनमैकउ
बजाई यमैलासस्नीये चीतलाई
नोसवनकालैमावैऊं॥ संनकैसांन
सोई चतलैऊं॥ २७॥ एकग्रघटक
सालमैमाथा॥ तामैनीरपवनसब
राखा॥ वाहीमांहिरहै अरुफाडीनी
रपवनमैद्देमलाई॥ २८॥ सबदस
रमैकऊंनिरबेरा॥ ताहिनैचीनैज
मकाचेरा॥ तातेबिकोरे जनमलैहै
सोई॥ लैमावनगावै बाकूबारसोई
र ए॥ सितेनीरव चासीपवना॥ ताते
रचौसीयकौ भ्याला॥ २९॥ तोपसारा
कालकूंदीन्हा॥ नामसिंघुसमै
कोन्हा॥ ३०॥ सोईनांमसतलिवदे
पावै॥ कालेकादगो लगानहीं
पावै॥ साषी॥ नांममैरजोपावहै
सो चलहै भवजलजीत॥ नहीतो
कालमिळैनलाहै॥ का॥ गिनघरम

कीरीत॥३१॥ चोपई॥जो प्रणवन
कैसवा॥नांमप्र चै ग्पु अअंन
वा॥ज्यासजोतक रेह बि चौरी॥
मोअंरथ घड़ी निरवारी॥३२॥
नाहै है समांना॥जेद
बिनहोना॥ताते प्रेका
नीषपरे ग्पुसरारा॥३३॥सा
नगनमो हरप सोधीयां॥३
बनाया॥भ्रम ट सतजगमिल्या॥
लोककुंजाया॥३४॥ चोपई
मैकुंबि चारी॥जैसी ते हैं
॥मोरहै चोकी सत
बेनामक हाहै सोई॥ चपा
बांनाराषी॥ मनि सं नहै
मबिनाबे चै नहीं कोई॥ कै ये
ककावै सोई॥३६॥ पटिय
वेदबि चारा॥ बिना नांम नांही॥नहि
ताश॥च्यारजुग संसार मैं कीन्हा॥ताजै
हाथमंत्रि मैं दीन्हा॥३७॥ एदतोहे

सो कपगये भवसागर मे बहुरन
आवे ॥ २ ॥ साखी ॥ च्यारगहे संसार
मे हां मे जम के द्वार ॥ भोर गहे जल
छार मये ॥ मानसरोवर वार ॥ २ ॥ ॥
चोपाई ॥ तामे धर्मदास बडि प्रेमप्रीति
न को पेख बिग्रातनी सबसा ॥ धर्मदास
भये मतिकाधीरा ॥ जिन कहे संसार
कोपीरा ॥ ४० ॥ ईनते हस जो उतर
ही पारा ॥ जिनकी न्हाय भव निर
वारा ॥ साखी ॥ राजा वंके जे प्रोर बद
भज सकते जी देरी मन है द्छो का व
हंस का ॥ सबदे हे पद ही चीन ॥ ४१ ॥
चोपाई ॥ धर्मदास बंस बियाती हे माव
है कबीर बिचार ॥ ईस कुंदी में सब
दमे उतरो भवजल पार ॥ ४२ ॥ चोपाई ॥
ईसकुं छोडि अंतन चित लावे जन्मज
न्म चोरासी जो वे ॥ बियाती सबंस धर
मदास को सार ॥ भोरसकल है कुरप
सार ॥ ४३ ॥ साखी ॥ नाम मंत्र जो पावे

ईर्तैलरहैपार॥नितरसब हंनीयांजत
गझी॥सैकालजमधार॥ ४४॥ चोपई
नधर्मदास मैकहुं बिचार॥जिन पे
पोहसंसार॥कालकठिनहैया देव
जिनतोषायो सबसंसार॥४५॥ताहि
ईनजांनै भाजी॥कालको संसपतिकर
काजीकालदगाकरि लैरोवावै॥काल
चारकीतहुंनहीपावै॥ ४६॥नांमसार
कहैगुप्ति प्रमोला॥धर्मदास मैंसमझा
लाजोकोईनांमकाकरैपसाला॥सोलरू
ऐहैसंसार॥४७॥तुमकुंदीन्हा सबदें
सा॥सोहंसनसंकहोसंदेसा॥जोकोइ
मै सबदतंमारा॥सोचलिआवैलोकह
रा॥४८॥औरसकलबडी हंनीयांस्या
लीजमकैहाथपडै॥गाजाझीत्याहंबारमे
कउंगहोराई॥शब्दुसागीको चितलाई
॥४९॥मैनिजशब्दुका सारविचार॥जि
मांन्यातेजमसंउबारा॥ज[redacted]कोभे
सकहो गुरुसांई॥जमको भेदहंम

सतो कपगहै ॥ भवसागर मे बूडत नू
पावै पार ८ ॥ साषी ॥ च्यार गहै संसार
मे हंहां कै जम कै द्वार ॥ भीर गहै जल
छार भयै ॥ मांनसरोवर वार ॥ ३९ ॥
चौपई ॥ तमे धर्मदास बोडि प्रभु पाति
न को पंछ बिधांस्ती सबंसा ॥ धर्मदास
भये मति कां थीरा ॥ जिन कंह है संसार
कोपीरा ॥ ४० ॥ ईसतै हंस जो उतर
ही पारा ॥ जिन को न्हाम एक मंत्र निर
वारा ॥ साषी ॥ राजा वंके न प्रेर वर
भज सकत जो है संसार है छां कांव
हंस कां ॥ सब्द देहै पर ही चान ॥ ४१
साषी ॥ धर्मदास बोबिधसतीसाव
हे कबीर बिचार ॥ कुंन कुंदी मैं सब
द मे उतरे भवजल पार ॥ ४२ ॥ चौपई
एक मंत्र तो छाडि प्रभु तिचित लावै जन्म ज
न्म चौरासी जाव ॥ बिधा ती सबंस धर्म
दास को सारं ॥ प्रो सकल है फु गपु
सार ॥ ४३ ॥ साषी ॥ नांम मंत्र जो पावे

भाव मोहि कहो गुसांई॥ जे दीलै म
न की संसे जाई॥ कबीर उवाच कै क
बीर संसै धर्मदासा॥ ऐही भेद कहुं तोर्ष
पासा॥ ५ आपुनै आपा न जाही घट सोई॥
मुक्ति भेद कुं जाने सोई॥ ए मे तोकुं ज्ञान सुप
रेसा॥ ज्ञानी होय सो बुझे ही मे सा॥ ६ नाम सुप
निनाम नि हसं सै होई॥ अमर ज्ञान बैठार देे
सोई॥ जे होतिक कही ये सो सब माया॥ स
सासार सब जुग कुं षाया॥ ५ एक॥ मन कल पै
सो सब माया॥ इन कलपनि सो इनि रमाया॥
जब हि सुरति निरति मे आवे॥ मुगति ने हदु
सोई पावै॥ ऐसा ने रपा जै सो कोई॥ ज्यौ कहै उ
जीव नि है कमी होई॥ जो पाबे सो कमल ही
होई॥ ८॥ ज्या का कमका टि कर कारयासे
गहै गरा ष्ट हमारा॥ नीतर सो षे सूंने अस
रावो॥ कमी जीन बेटन ही पावो॥ ६ ॥ ज्ञान
का सजा ही घंट होई॥ ताके हि दै मो स्ल
हृक्षा॥ ऐसे ज्ञा
मुखा दशाए हमनमोह छुट

कैसेपाई॥५०॥जमराजा हैतीऊंलो
कपसारा॥ताको मोहि कहोनिरवार
बदीकोकि मोहैकहोसमकाई॥जे
होतैमनकीसंसेजाई॥५१॥साखी
धर्मराजउवाच॥संन्यथर्मसमकेवीयान
रवारा॥तमसंकऊंमेमताअपारा॥जम
राजहैसंसेमाई॥संसान्छूटतिकाल
ऊंजाई॥५२॥संसीकहोयेजा
कोईसंसेकालरहैनहींसोई॥५३॥
साखी॥कठिनकालहैसंसेकहक
बीरविचार॥ज्याकुंमतगरमिलगया
संतमयाउंजीयार॥५४॥चौपई॥सं
नगंमसंतसमकुंचीन्हा॥जानगंम
लवलीकरलीहीन्हा॥अगरजानजाही
घटहोई॥संकिनिकटतासकेसोई॥
५५॥धर्मदासउवाच॥कहेधर्मसं
मसंनोगसाई॥संकिभेदमोहिकहो
बुझाई॥संकिकहोकैसेकजोना॥
तोकभेदकैसेपहिचाना॥५६॥स

सं भाव मोहि काहो ॥५९॥ सांई जे ही लै म
की संसै जाई ॥ कबीर ६० बा. चकै ले
सं नौ धर्म्मदासा ॥ ऐही भेद कहै सो र्द
सा ॥५०॥ गुनै गपान जाही घट होई ॥
भेद कुं जाने सोई ॥ ऐ त्रमे तोकुं ज्ञान उप
सा ॥ ज्ञानी होय सो बुझे ही ले सा ॥५१॥ गुर
मनि हमसे से होई ॥ अमर ज्ञान ब्रैटार है
जिहा निक कहीये सो सन माया ॥ सं
सब जुग कुं खाया ॥५२॥ मन कलु ये
सब माया ॥ इन कलपनि सोई निरमाया
बहि सुरति निरति मे आने ॥ गुन तिने टकु
ई पावे ॥ ऐसा नेर पाने ओ को ॥ ज्यों कोई
निसै क्रमी होई ॥ जो पावे सो क्रम ही
ई ॥५३॥ जाका क्रम काटि कर डारा ॥ सो
गहै गा ग्रंथ हमारा ॥ नीतर सीखे सूनै अस
वौ क्रमी जीन भेद नहीं पावै ॥५४॥ ज्ञान
का सजा ही घट होई ॥ ताकै हिरदै मो स्ल
ही जैसे सूरज बादल मे हुआ ॥ ऐसे ज्ञा
मो हिने मुआ ॥५५॥ ऐ॰॰॰ह मन मोह छुट

तवजाई॥ तनवैनामघटमाहिसमाईजव
लगमोहिमनवासा॥ तवलगनाहीज्ञानप्रका
ता॥६४ जन्मजन्मकीभक्तिजोहोई॥ तव
भेदशद्वकुंपावैसोई॥ कोटिजन्मभग
तिजिनकीन्हा॥ अमरमूलतिनपायो
चीन्हा॥६५ अमरमूलकापावैभेद॥
कहैकबीरसोहंसअछेद॥ अवमैक
हुंपानपरवाना॥ नरीयरकेरकहुंसहि
दाना॥६६॥ धर्मिनसहेजकाचकैसेभये
पानप्रवाना॥ नरीयरकेरकहोविकाना॥
कबीरउवाच॥ अमरमूलतेपानउप
जाय॥ विनवीजवेलीजिमाया॥ ताकी
बीजवेलीनहीमाई॥ सहूहीमेउत्प
बेलीजिमाई॥६७ उपजेपानजोति
नरिअर्पानी॥ ज्यारीतेहंसहोयनिरबा
नी॥ नरीयरहैबुलकोअसा॥ तातेरी
योधर्मकेग्रासा॥६८ नरीयरमिथ्य
नजीवकोबदूलोदीना॥ जीवछोडा
येकालसुलीना॥ नरीयरपानसाव

की जोरी॥सहू सार तैन री येर मोरी॥ दिये
जिन प्रसाद न री येर को पायै॥ जन्म जन्म
को पाप ब..हायै॥ पान प्रसाद संत जो पा
वै॥ देह सहित अमर होये जावै॥७०॥
काल कोट गा देह कै जाई॥ अमर लोक
मै जाय समाई॥ और भक्ति परवान सब तिर
ही॥ बिना भक्ति नोही ऊधरही॥७१॥ धर
मदास उ बाच॥ भक्ति परवान सब कहो म
साई॥ केही परवान जीव मुकताई॥ कबीर
उ बा च॥ धर्मदास कहुं भक्ति बिचारा॥
जिनतै हंस उतरही पारा॥७२॥ प्रथमे ही
पावै पान परवाना॥ और न्या धेश वा मन मं
ना॥ येह राह कुं उठ करि गहै॥ सदर जान
मेट सो रहै॥७३॥ और ग्रम्र ति बात कहै
अभि लाया॥ शारशहू कीवह कै भाषा॥
..बि स्रो यशो ष नही करै॥ सोई कबीर
॥७४॥ सत्य सार निरूपण
लोक पढि च
जो हि घट हो ही मे लखरूप

मु०॥ रै अंतमनाम कीर चै पावै॥ इविध
भाव कबजुंम ही आवै॥ ६७॥ कीजै
सर्जेवा चा॥ तबधर्म सकदै अनुंस
रा॥ सेते रेककरो पटहारा॥ अबज
वपवनका भेदबतावो॥ रेद संमज
ये जीवमुकतावो॥ ६८॥ कबीरउवा
चा॥ तबसंमर्थ कहै अैसेलीना भी
पवनका भेदकहीदीना॥ पवनपच
सी कलविसुतारा॥ जीवनाव रेकप
वननिन्यारा॥ ६९॥ कुरमकैलरूप
है भाई॥ किरेबरूपते मनुजकहाई
अवरजीव मेबरतै भाई॥ मानुषक
ही प्रजटरमाई॥ ७०॥ इत मचिन
के घीरहोवैहीये॥ ताको भेदबूझसं
तहीये॥ मुक्तिनाम वाही संकहीय
और सकलचंधामंमलईये॥ ७१
धंधा करते जन्मैसिराना॥ मुक्तिभेद
काउन नहीजांना॥ अमरसंतहै मु॥ कि
पसारा॥ ताकासंतकरै निरवारा॥ ७२

ऐकहै भाई॥आपा चिनब्रु
ह्म होये जाई॥जैसे जल मे तरंग समा
ई॥जैसे जीव ब्रह्म होये जाई॥९३॥ज्यु
कंचन कै भूखन कहीये॥ऐसे जीव ब्र
ह्म मे लहीये॥जैसे दीपक ऐक ते दोये की
ना॥तैसे जीव ब्रह्म गहि लीना॥९४॥जै
से संरज जोतिप्रकासा॥तैसे जीव ब्रह्म मे
बासा॥जैसे ब्रह्म सगति है दोई॥बुझ्यां तैं
न ऐके होई॥९५॥सिवसगति ऐक म
ति कीना॥ताको पावै भेद कोई चीना॥जि
न चीन्या सो मुक्ता रहै जी॥भ्रम भेद कोई
बिरलै पहै॥९६॥साखी॥भ्रम भेद जि
न जानीया॥सोई साहब मांना॥जो है गा
कोई पारखु॥कहै कबीर सुजाना॥९७॥
चोपई॥ऐक है अमर लोक की कहांनी॥
बुझे गा कोई आतम ग्यानी॥जिन बुझ्या
तिन मन कुं जांना॥मन जान्या तै ब्रह्म स
मांना॥९८॥ टी॥आतम जीव सीव मिलजा
ऐगे॥इतीया भाव ऐको नहीं रहैगी॥जैसे

कंचन अरु टिमिलाई जीव सीव ऐक
होई जाई ॥ लै वा दोऊ कंचन ऐकहोये
जाई तबही ऐक कर अरु टिमिलाई
व हंत आसमन विधने कीना ॥ ऐसे
जीव सीव कर दीना ॥१००॥ कहै कबी
र सं धर्मदास ॥ ऐसा जांन कहै सगा
सा ॥ ऐसा भेदको हं नही जाना ॥ आप
आप मै सकल भुलाना ॥१०१॥ दुधरुपा
म मंडल जिन कछु कीया ॥ सो आपै सी है
निरालये ॥ आतम रामकुं बूझ कै ॥ धर्म तुम
मिलजाय ॥१०२॥ चोपई ॥ ज्यांके सां
न दिव्य हीये जोई ॥ ताके देह मित शाद
सहाई ॥ ज्यां नहीं नशानी जो है ई ताकुं
जिल हंनावे शोई ॥१०३॥ साखी म
रम भेद जांने नहीं ॥ हो वैहै का जन्मका
जाकु भेद जांनै नहीं ॥ लै जावै जम
राजा ॥१०४॥ चोपई ॥ मोतंम कुं निज
जांन हंनाया ॥ जन्म जन्मका पाप बहु
हाया ॥ तंम धर्मदास निजमति सुनहे

है॥ ऐसेही मति सब संतन कुं है ॥९॰ [illegible]
ऐसीमति का जो कोई जानै सो है॥ [illegible]
कबीर सोहै सत्रपुरुषा ॥ संत [illegible]
नपांनजा म की ना॥ [illegible]
ही चीना॥१०॥ [illegible]
तौ संमान है सन ही को ॥ [illegible]
जिन अक्षर जाना॥ [illegible]
बिछुना ॥९० ॥ [illegible]
हा॥ संगति कहि रपा [illegible]
नौ संगति ज्ञान न्ही पावै॥ [illegible]
सब मलमावै॥९० [illegible]
मारा बाण॥ संगति तैनि है [illegible]
मा॥ संत सोई जिन [illegible]
नासंगति सहन्ही [illegible] ॥९० [illegible]
सोई जेही सतगुरु [illegible]
है निरमा या॥ संत सोई [illegible]
सतगुरुके चर्न कवल [illegible] है॥ १
१०॥ [illegible] संतसमा [illegible] मिले॥ संत
के चरणनि वास॥ कहै कबीर तें मुक्ति

भया॥ सतज्ञान प्रकाश॥ ११९॥ चौपई॥
संतकी महिमा कही न जाई॥ कहीबि
धतै मै कहूँ बडाई॥ संत दरस ण च्या
फल पावै॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष
वै॥ १२०॥ मोछि मुक्ति कुं सोधी प्रानी॥ ति
साधन के चरणी चित मानी॥ संतसोई
सतनाम है जाना॥ बिना नाम सोग टि
वाना॥ १२३॥ धर्मदास निज ऐह संन दे
हो॥ केवल ज्ञान उपु चित दे हो॥ कहै
कबीर सुनो सत सियाना॥ केवल कहै
उपजा उ ज्ञाना॥ १२४॥ धर्मदास सुनो च
धर्मदास कहै सुनो गुरु सोई॥ केवल ज्ञा
न मोहि कहो समझाई॥ कबीर उवाच
केवल ज्ञान को कहं हो पसारा॥ सुन धर्म
दास तुम सिष हमारा॥ १२५॥ सीधे पु
टै कबहु ज्ञान न होई॥ जब लग दया उघे
कीन्ही कोई॥ केवल ज्ञान कहावै सो
ई॥ तत ज्ञान मे रहे समोई॥ १२६॥ जे हा दे
वै तहां तत समाना॥ जो बोलै सो सहूस

मांनाथवोनातंतनांम है ज्वर मा
सूर्भ दा [illegible] मलह ज्वरा [illegible]
दोंबुफाजा॥११ ७॥ निहै ज्वरह का [illegible]
होसंदेसा॥ तामै पा ते ज्ञान के [illegible]
होंरक्त॥ निहै ज्वरहै [illegible]
ही साक्र मकी छाही॥१२ [illegible]
निह कमी होऊं॥ केल [illegible]
है। केव ल ज्ञान मो [illegible]
मेरो मन पति ज्वा ऊं॥ १० [illegible]
नै जांन की कृपा॥ [illegible]
कृपा दयावंत [illegible]
सकल जग म [illegible]
सबदाई सबही कुं [illegible]
होये ज्वत्रिव जावा॥ [illegible]
करि जांनै॥ [illegible]
ज्ञानै॥१२१॥ [illegible]
ऊ॥ पाखंड धरम मेट [illegible]
ही तैसे वैरागा दोनु [illegible]
लागा॥१२२॥ ऊं [illegible]

नी॥जैसे बुंदबुदबुदा पांनी॥ऐसा चि
तज्मों होका होइ॥केवलपंन क
हावे सोइ॥१२३॥मायाछितमनमेन
हो प्रावे॥सोइ केवल ज्ञांन कूपावे॥
केवल नाम काहो कूं कहीये॥सोइ
कहो ज्याते नरवहीये॥१२४॥केवल
नाम निहै प्रसर माई॥निहै प्रछर
मे रहो समाई॥निहै प्रछर का पावे
भेदा॥कहै कबीर सो हंस अछेदा॥१
२५॥ऐसा ज्ञांन कहो निरबेरा॥कहै
कबीर सोई जिन मेरा॥
सदू सार मो हि कहो समजाई
जेहिते हंस लोक कुं जाई॥१२६॥क
सारशब्द जादि कुं कही
ये सत सरूप जादी का लहीये॥जै
क सब्द तिहे माई॥निहै प्रछर
मे जाये समाई॥१२७॥निहै प्रछर क
ऐह बिचारा॥ज्यो देखे सो सरूप हम
ता रूप अखंड अोर सब खंडा॥

बोलैब हांका॥१२ चानि है अहल
५ चै पावै॥ अमरदीप नै जाये अ सं
॥धर्मदास कीना चा॥ धर्मदास बिनै
जोरी॥ साहेब सुनो बिनती एक मोरि
॥१२ ०॥ अमरलोक का कहो लिचा
॥ कवन रूप कवन प्रकारा॥ कवन कै
स रूप करही॥ कवन रूप पुरुष सो र
ही॥ १२१॥ कवन रूप कावन का अंगुली
सो स्वामी मो दी प्रगट सुना वे कबीर जे
चा॥ कहै कबीर सुनो धर्मदास सा॥ अपार
क का कहुं प्रकासा॥ १२२॥ सत लोक कि
रे बर काया॥ ऐक रूप सब हंस ही पा
॥ सो रै है भांनि हंस की जोती॥ अमर
पद हैब कुं भांती॥ १२३॥ लोक पुरुष
भा कही न जाई॥ जो बरनु तो न्ही
ब माई॥ अमरदीप अमर है का अ
का मरम का कुं बिरलै पाया॥ १२४॥
अमर पुरुष का पावे भेदा॥ कहे कबी
सो हंस अछेदा॥ सत्त लोक का सत

बिचारा सतनाम सत आधारा १३
४ अमिरतफल संतभोजन करही
जन्मजन्मकीक्षुधा निरवारही भोजन
भाव भरमिटि जाई कामनिरुपकाब
रनकहाई १३५ प्रेमअथंग चितबु
तउहहारी च्यार भांनिकामनि तजी
यारी सोईअधिकप्रेमपीयारी कामनि
रूपकीयाबिचारी १३६ प्रेमभावसदा
उरमांही अनहतबचनउरआव
तनांही बोलैहंसअमिरतकीबा
नी सोभाकहुतोप्रेमकीबांनी १३७
हंसहंसनीप्रेमबढावै अमरतनाम
हिरदामैगावै प्रेमभावसतनामप्रगा
सा प्रेमबचननिकसेहरि सासा
१३८ स्वासउसासऐकतहांनाही
भावप्रकासबुझैमनमांही बुझै
संतजुगतिऐहसोई सतसमिल्य
जाहीकुंहोई १३९ हैमिहदसा
हुसहु करकहै ज्ञानगम्मकहिऐह

दयावंत धर्मदास मैं तोहि बुझावौं
सारशब्द कौ भेद बतावौं ॥१ धर्मदास
शब्द का पावै भेदा ॥ कहै कबीर
संग्रह छेदा ॥ सारशब्द निज आहि
सारशब्द की कहूँ बड़ाई ॥१ ॥ सार
शब्द ओछा नी पावै ॥ अमरदीप में जा
समावै ॥ साखी ॥ कहै कबीर एक भेद है
प्रेम संत होय धर्मदास ॥ अमर मूल एक
है ॥ अमर लोक चलि जासि ॥१ ॥ चौपा
ई ॥ धर्मदास तुम बिनती करै
कर जोरी ॥ स्वामी सुनो बिनती मोरी ॥ कवन प्रसाद ते देह पाया
साद ते नाम सनेहा ॥१ ॥
साद सतगुरु कीन्ह दया ॥ कवन प्रसाद अ
मर भई काया ॥ कवन प्रसाद ते ज्ञान हम पा
वा कवन प्रसाद मोहिं स ना ध्यावा ॥
४ ॥ कवन प्रसाद सुजन जिन लहीय सो
अब स्वामी मो संकट हीये कबार ठेला
कहै कबीर सुनो धर्मदास ॥ ऐसा भेद कहूँ

रु। और साधु ऐक कहि जांनै॥ सोई हंस
लोक पहिचांनै॥१५८॥ साषी॥ साधु सोई
ग तिलहै॥ मन आवै प्रतीत॥ कहै कबीर
ते हंसा॥ चलहै भव जल जीत॥१५ ॥ चौ
पाई॥ तहां साध कै आरती करही॥ सबै
कांम छूटक तहां पग धरही॥ चलि मिते
साधन को लेही॥ सरधा सं आचेवन कर
ही॥१६०॥ गुर की दया पुरुष तिरीये निंद्रा
रूपन कब कु करीये॥ वार सबै सअपर
नां मा॥ तेही जिन मोरै मम मांना॥१६१॥ मदै
अकुर निर भै है माई॥ सैदेही अमर होसे
जाई॥ गुरु कै बचन सांच करि मांनै॥ बि
नां नांम मन और न आंनै॥१६२॥ और न जां
नै और न देषे॥ निस दिन पल पल ऐक बि
वेषे॥ करम भरम की छाडे आसा॥ ऐक नांम
कै रहै बिसवासा॥१६३॥ सत नांम छो कि
और नहीं जोवै॥ कुल नल ज्या को भरम बि
गोवै॥ ऐसी रहै नी रहै धरम दासा॥ जनम ज
नम की मिटै जो त्रासा॥१६४॥ बिना नांम

डीउंनीयां सब ग्राइ॥ नांम जांनैते
बिना नांम बु मासंसार
बिचारा॥१६५॥ सीधै
स्न पटै गुंन गावै॥ सत नांम का मर्म न पा
वै॥ सास्त्र पढि कै पंडित कहावै॥ नांम बि
ना मोख नही पावै॥१६६॥ कहै सब संग्र
थ वेद बिचारा॥ पढि गुन कथा कीन बिस्
तारा॥ पढि पंडित माते अभिमांना॥ आदि
पुर्ष का मर्म न जांना॥१६७॥ भ्रंति का स
मैं नांम सुनावै॥ दिव्याते बकहु कोम
न आवै॥ दिव्या गुर जो कोई जांनै॥ ऐक
नाम बिमल कै निरधांनै॥१६८॥ नांम बि
ना समम्र कहा करही॥ नांम बिना सो न्ही
बिसतर ही॥ व्यास देव पुरांन बखांना॥ सं न
पुरांन भये अभिमांना॥१६९॥ ग्यो पुरांन की
गति काउं न्ही पाई॥ स्त्रेत्र दस कीग तिन स
मझी॥ ब्रह्म रूप कहै समान सुनावं॥ विन
सतगुर दीदार न पावै॥१७०॥ जुग्य सांन क
अभिमांना॥ जिन आदि ब्रह्म का मर्म न

गुमावै ॥ १८३॥ सतगुरमिलैतोभेदबता
वै ॥ न्हीतोभर्मभर्ममरजावै ॥ ओ्रकसत
गुरभेद ज्ञांनतेपावै ॥ बिनासतगुरसब
मुलगमावै ॥ १८४ ॥ धर्मदासउवाच ॥
कहैधर्मदाससुनोगुसांई ॥ ज्ञांनहमोहिक
होबुझाई ॥ कबीरउवाच ॥ कहैकबी
रसुनौधर्मदासा ॥ ज्ञांनरूपमेकरूंपका
सा ॥ १८५ ॥ ग्यांनरूपसतपुर्षकहावै ॥
ज्ञांनीनांमकबीरहोयेजावै ॥ ज्ञांनीशब्
दीपसमजांनो ॥ बिनानांमफुरसब
मांनो ॥ १८६ ॥ ग्यांनपुर्षजाहीमिल
गया ॥ ज्ञांनदीपजाहीघटभया ॥ ग्यांन
सरूपअछरहैभाई ॥ ज्ञांनबिनाअछ
रन्हीपाई ॥ १८७ ॥ ज्ञानसरूपअर्थमक
रिजांनो ॥ एहबचनसतकरीमांनो ॥ ज्ञांन
सरूपनहैअछरकहीये ॥ अछरग्यांन
भेदसुंलहीये ॥ १८८ ॥ अकनिहैअछ
रज्ञांनतेजांनहै ॥ ग्यांनीअगहीनमति
मांनहै ॥ फिरज्ञांनीमांहिज्योंआत्म

ग्यांनी॥ऐसीहै अक्षर सहैदानी॥ १८०
आत्म ग्यांन सब ही कांन्हेन्या का
तमै सब जग भूला आत्म ग्यान
घट होई परमात्म मिलन
आत्म मिलन परमात्म चीन्हा
न्यमि कहै हाना। आत्म सक्ष
होना। आत्मपातप होसे। ९१
नीपुर्ष का सतपुरखा आत्म ग्यां
होय हाखा सा। कहै कबीर
कैतं मसन्हो सत सग्यांन आत्म ग्यां
पावहीं॥ सोई हंस निर्वान १९२
आत्म ग्यांन जो प्रांनी पावै। सोई
सक लावै॥ आत्म ग्यान अक्षर ते
आत्म ग्यांन परमात्म मिलन रहाय १९३
म ग्यांन। सब तै न्यारा। तीन लोक तै निन
सारा॥ आत्म हंस ज्यां ही कुं होई। नहै अक्ष
रमैं जा ये समोई। १९४ कैनाप
दिग्गुणपश्चिमहै। व ड़ंत मवै पहन्यजा। यं
कबीर अक्षर बिना जीव परे तिर जाये

चोपई॥१९५॥ऐसा भेद कउं धरम दा
सो जन्म जन्म की मिटै जो त्रासा॥ जन्म क
मब कुं नही होई॥ ऐसा भेद जांनै जो
कोई॥१९६॥ ऐही ग्यांन मैं तुम तै भाषा॥ ऐ
ग्यांन सब अंतनि की साषा॥ अमर मेद
जांनै जिन कोई॥ ताकुं जन्म मरण न
होई॥१९७॥ सतगुर मिलै तो भेद बतावै॥
कमरम में संसै मिट जावै॥ कम काटबे कुं
सतगुर कीना॥ अमर होये ग्यांन गहे लीना॥
१९८॥ संसा काम के कउं बंधाना॥ संसै का
ल बट मांहि समाना॥ जब ही पुर्ब धरम के
कीना॥ संसै छेल पतूत ही लीना॥१९९॥ जो
नर है प्रभुर कीरचै पावै॥ संसै मिटै अमर
घर आवै॥ संसै मेटन ग्यांन ऐक भाई॥ संसै
काल सकल जुग खाई॥२००॥ साखी॥
संसै काल सरीर मैं जम काल है ड्रंराताहि
लै सै कोई संत जिन॥ तो जाईकरै सब धुर
२०१॥ चोपई॥ निरसंसी क होये जो को
ई संसै काल रहै नही सोई संसै भेद

परमदासा ग्र ... ग्रहेकि
२० रा ग्र छर ... मनजं
कडि॰तारि ... मीसे ... कूप
संसा ग्रोर सक ल्नदेत
३॥स॥ २ कदे ...
कात विस्तार ...
वजत्नपार २०॥
कदे
ईष्टोन ल्ान सबन
जीत कामेदवताले. ...
तावौ॥ २०५
रसैना वरमदास॥ ... औ
साम्पान हीन ओ प्रा ... ले
नाउताई॥२०६॥ ताकुं
निदे चेग देतो ल्ोव निक ...
तहीया मे धावै॥ सप्रान ...
गपान पापे केसत ...
निसदिन राघा॥ सत ... २०७॥ ओजन ...
समर्थ बेव नैतारे साई॥ २०

त्म दिष्टी होई॥ आपति रैपुन तौ सोई॥ सा
धन की सेवा मन लावै॥ आत्म ग्यान भेद
सो पावै॥ २०९॥ और सतगुर की दया पं
न्य होई॥ नहै चै पार पावै जिन सोई॥ साध
न की निरखा जो करही॥ साधन के चर्ण प
ल पल चित धरही॥ २१०॥ सत नारी को म
न ज्यो लागै॥ तब सै धन्य के चर्ण मन लागै
वारै तन मन सब सैं जांनी॥ निरदै पार पा
वै नर प्रांनी॥ २११॥ चर्ण पखाल चर्णो
दक लेही॥ सीत प्रसाद लेत विध सेही
मन बच कर्म चर्ण चित ल्यावै॥ अमर लोक मै
जाय समावै॥ २१२॥ नार पूर्व मुक्ति जो होई॥ के
तो ज्ञान हीन होय कोई॥ साखी॥ २८॥ संत समा
गम जो रहै॥ रहै धीन लवलाय॥ कहै कबीर ते अ
मर लये॥ जुग जुग पुष्प बुझाय॥ २१३॥ चौपई
२५॥ संतन मांहि हमारा बासा॥ ज्ञान होय सो करै प
कासा॥ ज्ञान हीन नारी को रूपा॥ ताको सब मै
कहु सरूपा॥ २१४॥ संतन उपरै जो तन मन वा
रै॥ संतन की सेवा चित धारै॥ संतन सं जो अंतर

२१५ पृ.

।नैधर्मरायकेमुद्रा
मको।निछानरहेही आन
ही। औमार्उपदेसदेहोय
हीमिटेत्रासा।।२१६
हिदासनिनतीअनुमारी हेमन
हारी।।ऐहजोनेदतुममोविकना
मननहीआया।।२१७। न
नु।।पुरूषरूपएकनु
येसबसंसारा।।आदिपु
२१८।।आदिपुरुषसमनु
गृहथवानु। हमसुमन्यो
बाततुममोहीनुजाई। २१।
ऐहनेटनलामेलीना तुमर
तुमजानोसबअतरजामी।
कुकसीयाजैहीतनेटदु
त्रीकोहोई।।ताकुअकमे
या।ऐहसबनेटवनायहो तुमपु
होसंसैसकलमिटायहो मत्ररनदन
२२ कहेकबीरगु
२२२।।को

कमे आवै ॥ हे धर्मदास ऐह प्रसाद सब ही
न कौं देहै ॥ जीव छुडाये काल सं लेहै ॥ २
२६ ॥ पार्स नाम कहुं उपदेसा ॥ कोन छाप
का कहुं संदेसा ॥ सोंनी जीव कुं सब्द है सा
रा ॥ या ही पारस तें हंस उबारा ॥ २२७ ॥ पार
स पान बालक कुं भाई ॥ जे ही तें हंस लोक कुं
जाई ॥ कितक पार्स है सीवा ॥ सु करीया जो नी
सब्द ही पीवा ॥ २२८ ॥ सुरति सब्द मे तन मन दे
ही ॥ धर्मदास मे कहुं बुझाई ॥ ऐसी रहनी पं
थ चलावो ॥ हंस बोध्य के लोक लै आवो ॥ २
२९ ॥ तीन वचन कहुं बुझाई ॥ जो मोंने र
सो लो सिधाई ॥ पुर्ष हो पे सब्द न ही जांना ॥ निह
चे होय ये है नरक निधांनां ॥ २३० ॥ बालक हो
ये बीरा न ही पावै ॥ कैसे करि सत लोक सिधा
वै ॥ कोंम नि होये पार्स न ही देही ॥ कैसे करि
होये मुक्ति सनेही ॥ २३१ ॥ सिष जांनी होय
गुर न बतावै ॥ तो सब दोष गहह कें आवै ॥ को
मनि पारस गुर कुं देई ॥ गुर सोई जि पार्स ले
ई ॥ र धर राई न मै जो गुर संसै राषै ॥ तो धर्मरा

थेकै मुद गत्य चाद्य
वै।सिदसोई गुर मनबै
टकवै गुरवाड़ा नदै है जी
मतै बचनक नहै निह
थेबात॥ २४४
बिनती प्रभु सारी॥
हारी॥ ममबसपार्स देई
होहोई॥२४५॥
उपदेसा॥जे ही तेह घे
सबालकजो होई॥
२४६॥ तिनकूंपास
गटकबीरही होई॥
निस दिन रहे सह मेसी॥
नमै रहै अस्थिर प्रगा॥
गा॥ और सतपारस को जानै
बसो वहै दा॥ २४८॥ प्रेम
प्रगटकबीर ताही
कीजै॥ बसतू मारे सबूर
गा काछे लपसारा॥

कमे आवै ॥ हे धर्मदास ऐरुप साट सबही
नकोदेहे ॥ जीव छुडाये कालसं ले हो ॥ र
रही ॥ पासे नाम कहुं उपदेसा ॥ कोन शब्द
का कहुं संदेसा ॥ सोनी जीव कुं सब्द है सा
रा ॥ याही पारस ते हंस उबारा ॥ २२७ ॥ पा
स पान बालक कुं माई ॥ ऐसे ही ते हंस लोक
जाई ॥ कितक कुं पासे है सीवा ॥ सु करीया जांनी
सब्द ही पीवा ॥ २२८ ॥ सुरति सब्द मे तन मन
दी ॥ धर्मदास मे कहुं बुझाई ॥ ऐसी रहनी प
थ चलावै ॥ हंस बोध के लोक रे आवै ॥
२९ ॥ तीन बचन कहुं बुझाई ॥ जो माने
सो लोक सिधाई ॥ पुर्ब होपे सब्द ही जांना ॥ नि
चे होये है नेरक निधांना ॥ २३० ॥ बालक हो
ये बीसा न ही पावै ॥ कैसे करि सत लोक सिधा
वै ॥ कोमन होये पासे न ही देही ॥ कैसे क
होये मुक्ति सने ही ॥ २३१ ॥ सब जांना हो
गुर न बतावै ॥ तो सब ग
म निपारस गुर र
हीर धरा ईन

येके मुद गत चाथैाजुर सोईज्यो सियसमका
कैसियसोईजोगुरमनबैभेाार ४३ागुरकुंमे
टकरेगुरखाज्ञानदे चे जीवनरकमेजाईातं
मते बचनकुंनदे॥निर्चेकरितंमस्त्नी
थोवाताार ४४॥धर्मदासर्जेना च धर्मदास
बिनती अनुसारी॥हे सतगुरमेतुमबलि
हारी॥मनबसपासेदेई॥तंमते भेटवकुरन
होई॥२४ ५॥अबतंमबेसनलेकरी
उपदेसा॥जेहीते होघे हंसकुं भेसा॥तुमारेबं
सबालकजोहोई॥होयेज्ञानीमनिबु भेसोई
२४ ६॥तिनकूंपासे भाषोसोई॥न्यायघटप्र
गटकबीरहीहोई॥न्याकुंनहीव्यापेकामा
निसदिनरहेसहजमेधामा॥२४ ७॥रहेनगरेह
नमेरहे अस्थिर अंगा॥मनसावाचासतप्रसं
गा॥औरसतपारसकोजांने भेदा॥ अर्त्यपवेसर
मेविवेदा॥२४ ८॥ऐसेसंतजनसहूसनेही॥
प्रगटकबीरताहीकीदेही॥तिनमेपारसभेदन
जी॥बंसतं मारे सहूपतीजे॥२४ ९॥वकुंरं
गीकाबेलपसारा॥रंगज्ञानमतिकरोचोथा

री। बाहिर भीतर तत दुसे सोई। ताकाब
चन सत करि मांनै। अपनी मति कबऊं
मति मंनै ॥२६३॥ गुर गोबिंद मांन मद
तौरे। संसै का तततन छिन बोरे। गुर कुंमा
नै ब्रह्म सरूपा। पाप पुन्य तै परे अनुपा
२६४ ॥ धरमदास उवाच ॥ धर्मदास बि
नवै कर जोरी। स्वांमी संनौ बिनती ऐक मोरी
नारी नांम नरक की षांनी। सो गुर कुं क्यूं दी
जै प्रांनी ॥२६५॥ अघोर नरक नारी ज्यो क
ही रे। सो ऐह सत गुर कै से लही रे। गुर कुं
ब्रह्म सरूप हंम जांना। नरक भोगवै कव
न अग्यांना ॥२६६॥ गुर कै च रण है मुक्ति को
मुंता। जुनी मै मैं कवन बिधमरता। गुरम
है मा अगम बताई। नीच बच्चन किम क
ही गुसांई ॥२६७॥ नीचा सो जो नीची क
है। नीच पंथ जो प्रांनी लहै। उ चै जल नां
ही ठहैराई। नीचा मांही पांनी भर आई॥२
६८॥ साषी ॥ कबीर ॥ सो तं मम मो दैवता वौ

मैसोंनअपाराधरमदासकीबीनती
रन्दीकताहमारा२६९॥दुहा२३॥
तीसोंनतमबोलीया॥सनसहदेवाये॥
नचारमैसतकरो॥कहोगहसमझाये
२७०॥चोपई२७१॥कबीरउबाच॥कहे
कबीरसुनोधर्मदासा॥ऐसीसोनमैकहुं
सा॥मैजोन्यातम भमेकुदुटात
कुं केविनकालभमेलटा॥२७३॥काल
कीगतिमतितुमनहीपाई॥फुंगि फुंगिमे
रहै मुलाई॥मानबडाई बेरोउ तारी॥क
ा तनमनवारी॥२७२॥लज्या खोये
॰॥मसमाई॥ऐहलज्यासगलोजगमाई
ऐहलज्यासंसारलजाई॥बोलज्याविजते
होयेआई॥२७३॥ज्याकुंकदीयेवुद्ध स
रुपाताकुंकहीकअरुभुपा॥बाहेमीन
तदुसाई॥सोघटभीनप्रगट रहाई॥२
॥ताकेबचनसतकरिमानै॥अपनी
कबकुंमतिगनै॥ऐसागोविदमानैम
॥सैसकालततछिबोरै॥२७५॥श्री

नगरहैबहुसंभाउ॥ पापपुंन्यतैन्य
गाउ॥ धर्मरायेतूंमोवैघट॰प्रावाअुर
बचनतूंमभुलयावा॥ २७६॥ सि
सोईगुरबचनहीमांना॥ प्रग्यांनीह
बकैग्यांना॥ गरपुतीतहिदै॰प्रोईति
सबवुडहैडुनीयां॰प्राई॥ २७७॥ बुम
येथाहनहीपावै॥ तातेजन्मभमेन्ह
जावै॥ तबकबीरमये॰प्रति ध्यांना॥
हसपीछैपिछतांना॥ २७८॥ धर्मदा
[illegible]॥ देगुरदयालदयाकरिहैसां
मैनहीजांन्यां॰प्रंतरजांमी॥ मै॰प्रग्यांन
ममभैमनजांना॥ मैजांनबुझि मातेप्र
भिमांना॥ २७९॥ प्रभुमेरैचितकहुसं
नांही॥ जांनिबुझ डुलथैगरपांही॥ तुम
रदेहतैबहुसमांना॥ मैसेवगपहुडुंग
यांना॥ २८०॥ बालकजोकछुपीतातेमं
वै॥ पीताबालककुदया॰प्रभिलायैदय
मोपरकरिहैस्वांमी॥ तुमकरना मैप्रभू॰प्रंत
जांमी॥ २८१॥ जोतुमदुसमोकुंदेहो॥ प

।वमेरोतूम लेहैं।।जोनदी इसपांई
।त्यागप्रानजीवहोयेप्रकाजार
सादेवमोपदयाकीना।तेमाहेव
।दमदीना।।कनीरर्जनाच न
याचितआईधर्मदासलवड
।२३।।चर्णगहैकेकंडोलकीना
।न चर्णोदिक लीना।।माहाप्रस
वियातबमांगी।।किनलीकरिचर्णचि
तलागी।।२८४।।तबसाहिबनेदासाकीन
महाप्रसादकरादेलीना।।मानबीजन्
कीमाबजं भातीं।।बहुप्रकारबजुलदो
सेती।।२८५।।कनचनथारआरतीवारी
सेवाबजंतदीयामेधारी।।सततनारीसबच
रणनलागे।।चर्णघटायेभक्तिअनुरागे।।
२८६।।चरणोदिकसबप्राणीनेलीना।।
दिव्यज्ञानसबहीनकुंदीना।।तबसाहेब
चोकामैंयो।।भांतिभांतिकेअंगदिढाये। २
८७।।आदमबाहसमरनधोना।।नावूमिंत्र
रतिपुवीना।।परूसहीपालहायकरना

न गरहै बहुरि माती ॥ पाप पुंन्य तैं न्यारा
गाती ॥ धर्मरायें तें मोंरै घट आवा ॥ गुरवे
बचन तैं मडुल पावा ॥ २७६ ॥ सिष
सोई गुर बचन ही मांना ॥ अग्यानी हो
बूझै ज्यांना ॥ गुर प्रतीत हिरदै आई ॥ तातै
सब बुडहै दुनीयां आई ॥ २७७ ॥ बु मा उ
पैष्य हंस नही पावै ॥ तातै जन्म भर्म मे ही
जावै ॥ तब कबीर भये अंतरि ध्यांना ॥ ध
र्मदास पीछै पिछतांना ॥ २७८ ॥ धर्मदास
बीनती ॥ हे गुर दया तब दया करि हो सांम
मैं नही जांन्यो अंतरजांमी ॥ मै अग्यांनतें
भर्म मे मन जांना ॥ मै जांन्य बुझि मातै अ
भिमांना ॥ २७९ ॥ अब हम मेरै चित कछु संसे
नांही ॥ जांनि हु फुडुल षै गर पांही ॥ तुम स
र देव तैं बहुरि समांना ॥ मैं सेवग प्रभु तुं अ
पंना ॥ २८० ॥ बालक जो कछु पीता तै मां
पै पीता बालक कछु दया अभिलाषै दया
मो प्र करि है स्वांमी ॥ तुम कना मै प्रभु अंतर
जांमी ॥ २८१ ॥ जो तुम दुष मो कुं दे हो प्रं

रावमेरोतंम त्ने हैा॥जौनदी इ स्पर्श
आज्ञा त्याग प्रान जीव होये प्रकाश
साहेबमोप दयाकीनाा॥तत्
रहे मदीना॥कबीर जुंबा च
याचिन आइ॥धर्म
प्र॥चरणगहै के कंठे
चरणोदिक लीना॥आ
दिया तब मांग॥ कबीर
त लागी॥र ८ धा॥तब साहेब ने
महाप्रसाद करावे लीना॥
कौ पाव अं भांती॥
सेती॥र ८ ४॥केन
सेवा बंड तदीया मे धारै॥
गन लागे॥चर्ण घटाये
र ८ ई॥चरणोदिक सब प्रानी
दिव्य ज्ञान सब हीन कुंदा॥तब साहेब
चौका मे ये॥भांति भंति के अंग
॥प्रादम बाहर मरन सो ना॥
र्तिप्रवी ना॥पकुस दी याव हाथ

नगरहै बहुसं भाते॥ पापपुंन्यतैन्यारा
गाते॥ धर्मरायेतंमोवैधट॰प्राना॥गुरके
बचनतंमडुलथावा॥ २७६॥ सिष
सोई गुर बचनहीमांना॥॰प्रग्यानीहोये
बकैजांना॥ गरप्रतीतहिरदै॰प्रीजीतोते
सबबुडहै दुनीयां॰म्राई॥ २७७॥ बुमाज
येथ्रु हानहीपावे॥ तातेजन्म भर्मेही॰
जावे॥ तबकबीरमये॰प्रति ध्यांना॥धर
दासपीछेपिछतांना॥ २७८॥ धर्मदासंसा
नाचा॥ देगुरदया तव दया करि हे सांम
मैनहीजांन्यां॰प्रत जांमी॥ मै॰प्रजांनत
भ्रममेमनजांना॥ मैजांन्यबुझि मांते॰प्र
भिमांना॥ २७९॥॰प्रब मेरै चित कछुसंसे
नांही॥ जांनिबुझ दुखबैगरपांही॥ तुमम
रदेहतैबहुसमांना॥ मैसेवगपछुदुंग्र
पांना॥ २८०॥ बालक जो कछु पीताते मां
गै पीता बालक कछु दया॰प्रभि ताये दया
मोप्रकरिहै स्वांमी॥ तुम कना मैप्रम॰प्रंत
जांमी॥ २८१॥ जोतुम मद्दुख मोकुंदेहो॥ष

नेहौ॥जोनदाङ्गपांडे
त्यागप्रानजीवहोयेप्रकाञ्ज॥र
साहेवमोपदयाकीना॥तेमारेव
रहंमदीना॥कनीरजैबाच त
याचितआईधर्मदासतवड्
पाचरणगहेकैकंडोतकीना
चरणोदिकलीना॥मादाप्रस
वियातबमांगी॥बिनतीकरिचरणेचि
॥तवसाहिबनैदयाकीन
साह करावे लीना॥नाना बीजन
ऊ भांती॥सबप्रकारवऊसदी
शाकनचनथारआरतीवारी
पामेधारी॥सतनारीसबच
तिञ्चनुरागी॥
चरणोदिकसबप्रानीनेलीना॥
सबहीनकुंदीना॥तवसाहेव
दिढाये २
॥आहमबाह्मसमरनखानाना॥वृमिन
प्रवीना॥पुरूसहीयाचहाथकरना

री ॥ सोभा सं दुख है प्रेम पीयारी ॥ २८६ ॥ बा
हं बार प्रसाद लै आवै ॥ प्रेम भाव सत गु
र मन भावै ॥ कर ही बिहार सुगंध मंधुरी
सकल मंध आनंद भरपुरी ॥ २८७ ॥
पाये प्रसाद अचवन लीना ॥ धर्मदास
कुं प्रसाद दीना ॥ सबही मिल प्रसाद पा
वा ऐक मत होये भक्ति सी भावा ॥ २८८ ॥
भर्मैदस सर्व दीना ॥ धर्मदास बिनवे करि
जोरी ॥ तं म समर्थ हो बंदी छोरी ॥ तत प्रसा
द सबही कुं दीना ॥ आनंद बुस सब
ही कं कीना ॥ २८९ ॥ जिते क जीव ग्रे
मै दोई ॥ सब मिल आनंद प्रेम समोई
वैरी वैराग्र है जिन लोगा ॥ ऐक मति
होये भक्ति संजोगा ॥ २९० ॥ तब साहेब
पीलंग पर आये ॥ बहोत प्रीत स आसब
नाये ॥ धर्मदास सब पुत्र कलंत्रा ॥ ऐक म
न ऐक चित कै जंत्रा ॥ २९१ ॥ धर्मदास की
नारी बे ल आई ॥ पुत्र बंधं पुत्री संग लाई
आसम लिख लाना ॥ तब समर्थ कुं बंद

।कीनात्तनमन घनि सत गरकुंदीन
षीउ धा।एेहत्तनमन ले है।ग सांई
ममका जा तनमन घनिनवछाव
कहासवसंपति कुलला जार ए५।।चौ
२० समर्पे उना चा।।तवसमर्पेमेदया
विमसत्तिकउपहाथ जोदीना
कैसे कप वेगाई।।अंतरगति कोअं
एदीजोमरघसोई भीवदे या।।स
सोटी कीयापरे घग।जावो नाही अप
तमारोसतदे यो उर माही।।र
मनहो ही।मन अदक
योही।एेह मनका है कहिन विका
।एेह मनका ऊजीतन पारा।।२ए चा
मनकमरुकमकरावे।।देहके स्वार्थ
चनचावे।।बहुआधीन सतगरवच
२
ममनथिरहमजाना।।काल
अभिमाना।।मानतिजेविनपी
वे।।होयेआधीन चर्णकुंगहीये

॰६॥ बहुत प्रनाम करत तब मन ऐसे॥ ध
दास कूं आसका दऐते॥ धर्मदास तूं
बेस तुं जागरु॥ तुं मदेस पछुं चैसे स्वस
र॥ चू॰ १॥ नहै चै हो ऐ मुक्ति प्रवांना॥ स
लोक अबकर होपीयो ना॥ तुं मारे बं
ज हो लग होई॥ तिन कै हाथ मुक्ति स
होई॥ चू॰ २॥ बयांलीस बंस तुं मारो हे
॥ तिनकूं करतार है सब कोई॥ बयांलीस
समैदस हजारा॥ ईनते हंस उतरही प
॥ चू॰ ३॥ नांम जा मैते सबही उधारा॥
ना नांम बुना संसारा॥ नांमन होये अ
स कहावे॥ बिना नांम नही लोक सि
ावे॥ चू॰ ४॥ नांमन होये करे अहंकार
है चै नरक पड़े जम द्वारा॥ नांम जानै सो
मारे बंसा॥ बिना नांम सब लोक बिनास
५॥ कृता ऐक ऊंती यान होई॥ इतीया भा
बहुत सुइ जा सोई॥ ऐक तै भये अनंत प
रा॥ तामे भिंट कमंवा संसारा॥ चू॰ ६॥ ऐ
कनांम वैद आपअके ला॥ ऐकनांम बि

हला॥केते कछिपदांनबुझ
ए भारथविसतरही॥२०७॥चा
ऊ साखहीजांना॥नवव्याकरण
॥लपर
१०८॥से
॥जिनव्याम्
बूंदघटमाहीपहिचांना॥सोतोलखेको
धनबखे चोरलेजाय
लकीगतिमति ऐसीहोई॥
महिमाजांनैनहीकोई॥लगलन
तिकैहीना॥कबहीरूकबहीउ
कीगतिऐसीकही
नुष कहैहंमनीकेचीन्हा॥मन
मनमैआवैऐसा॥ऐहसबमेरोप
सा॥३११॥कबऊकहैपभूनैकीनाक
हीना॥साखी३५
भेदनहीजांनै॥मुरखकहैपभूलायोन
धर्मदासतै॥सनलीज्यो चितला
॥३१२॥चोपई३१

तुम कैसे प्राये उदास मोहि कीना ॥ ग्रज
मता है जाको गुसांई ॥ नितर मार जीव स
बवांई ॥ २४ ॥ मैं हुं निरंजन ग्रलख ग्र
पारा ॥ कौन भेद तैं कोन पसारा ॥ तुम नहि
जांनहो हमारो ब्योहारा ॥ कौन भेद तें
जीव उतहि पारा ॥ २५ ॥ कबीर उवा
चा ॥ हमे कह्यौ सुनौ धरमराजा ॥ रमन
हीं जांनैं हमारो काजा ॥ हमारे बल ग्राइ
को ग्राई ॥ याही बल तें जीव मुक्ता ई ॥ २
रही जांहां नांम तहां तुम नहीं कोई ॥ बि
नां नांम तुमारा सोई ॥ नांम प्रतीत भक्ति प्रवां
ना ॥ एहि बिध काढुं हंस निरबांना ॥ २६ ॥
धरम वचा
जेतेक नांम तुम सुमर्ण करहीं ॥ सो सब नां
म हमारो धरहीं ॥ जो कोइ भक्ति करै संसारा
सो सब है हमारो ब्योहारा ॥ २२ ॥ सब तेत
फंद हम कीना ॥ सब समेट बांध भग
दीना ॥ तुम केहि भांति जीव मुक्तावो ॥ सो
स्वांमी मोहि भेद बतावो ॥ २७ ॥ कबीर उ
वाचा ॥ हमारे सहूपे एक पुरुष केरा ॥ सहू मिं

ताकूमारकऊजार छाया॥ऱऱलाकु
ऐक ग्रेसदी ग्राहा॥ग्रेदिकाल
पुम्पदाहा॥सिवसमाधकरैग्रहे

विस्मग्र

डषदेउ॥ग्प्रवरकवनजाहीन्हीसे
मन्प्राये हैाहं सर्हुवारन॥
भक्तिहोये हैकुलतारना॥कवी
धरमरायैलजाई
मधर्म भये ग्रन्याई॥ऱऱ थाकुर
माशीजोगजीत मैनां
ममित्रऐकदीयोग्रमोलासं
नसहग्प्रमोला॥ऱऱशाकरनां
कहोशिमीगरगक्करकहैनकोईतुं

तबतें समांन सरोवर आये॥ कंन्या देषेब
ऊंत मन भाये॥२४॥ तबतें म कंन्या
प्रासे लीना॥ सीस कुरंभ कौं तबतें मछ
ना॥ अप्रमी अप्रेकुरतोर कैसीना॥ उपंस
रापतो हीकुंदीना॥२४ ली बचन कोर
है सुला इ॥ तातें धरम तुम भये अ
न्याई॥ तीन लोक का करो अप्रहारा
तो ऊंन मसीतं दूतें मागा॥२५॥ वचन
रतें हमसें न्यारा॥ तातें हुम रो भिन पसारा॥
तब हुरथतो ये मारे निकारा॥ तब हंम भये
हंस रष बारा॥२५१॥ तब हंम सहकी व
र सवांसा॥ सो तुम्हारी टोरी नहीं टरहै टा
रा॥ सतसहु को पावै भेदा॥ हंमही मिल
है दे सछेदा॥२५२॥ हमारे सहु हंसग
ति पावै॥ तुम्ही पेल हंस मि धावै॥ सो तो
भेद तुम नहीं पावै॥ के तेस वा करगो
दोरी॥२५३॥ तुम कुबि छा अप्रोगन बो
कीना॥ पर्षवचन की अप्रजपा दीना॥ त
तै तुमेंरे भिन्न पसारा॥ राजकरो बैग॥

प्रसंसा॥२५४॥ हे भक्त दयाहं सब्की
अंडी॥ ताते लोक दे थ्यो हंसगं डी॥ हंस्मा
रीदया मांन सीस लीजै॥ सहु कामोजल
बंडन्ही कीजै॥२५५॥ जब तें भया लो
सहूविकोना॥ तब ते मारे लोक है न
नि धीना॥ तब सब जीव सत लोक ही
जाई॥ तब तें मारी रहै कव नब माई
२५६॥ ऐहे अप्रतीहास कथा विस्तारा॥
नहीं तो पुर्छे सब ही ते न्यारा॥ ऐह सिंस तुं
भक्त वर दीना॥ सहु का मोज करी ऊँप
तिकीना॥२५७॥ साषी २८॥ मही इंदे ज
ब होये है॥ तब दे ष हो लोक हं मारा॥ त
व तें भक्त हं समिलै गा॥ सत तहं छूट का
सारा॥२५८॥ चोपई॥ ए ए सबै धर्म जबै
मिं जाई रहै पृथी तब से न्य संमाई॥ ते ते
धर्मराज तें सप्त थे कै अंससों॥ मिल देस
पू मिट जाहै संशा॥२५९॥ ईतनी बात
धर्मराये सूं कीना॥ पीछे जगति पीया
नादीना॥ चले चले

तवतं मभांनसरोवर आये॥ कंन्याद्वेषेव
ऊंतमनभाये॥ ३४८॥ तवतं मकेंन्या
प्रासे सीना॥ सीसकुरम कौंतवतं मछ्
ना॥ अप्रमीअप्रकुरतोर कैभीना॥ ३४९॥ स
रापतोदीकुंदीना॥ ३४७॥ ॥ वचनकेर
हैमत्ना॥ ताते धरम तुम भये अ
माई॥ तीन लोककाकरो अप्रहार
तोऊंनमहीतें दूतं मारा॥ ३५०॥ वचन
रतेहमस॰ वार॥ तासेहुमरी भिनपसारा॥
नवहुरषतोये मारेनिकारा॥ तबहंम भये
हसरथबारा॥ ३५१॥ तबहंम सहकीवा
रसचारा॥ सोतमारी टारी नदीटरहेटा
रा॥ मतसबको पावे भेदा॥ हमही मित
हैद समछेदा॥ ३५२॥ हमारे सहहंसग
तिपावे॥ तम्हीपेत हंससि धावै॥ सो तो
भेद तमनहीपावै॥ केतेस वाकरजी
होरा॥ ३५३॥ तमकुविध्या प्रोगनबोऊ
कीना॥ पर्षवचनकी अपजपादीना॥ त
तेतमैंगे भिन्नपसारा॥ ॥राजकरेबेग

अपसेरा॥२५४॥हे मकुंद याहे सकी
ओडी॥ताते लोक देषो हम गंडो हंमा
रीदया मोन सीरलीजै सहु का छोजन
बऊन्ही कीजै॥२५५॥जब लेष्यवा लो
सहु विको ना॥तब तुमारो लोक है न
नि धोना॥तब सब जीव सत लोक ही
जाई॥तब तुमारी रहै कव नवमा डी
२५६॥ऐहै प्रतीहास कथा बिस्तारा॥
नही तो पुर्छ सब ही तै न्यारा॥ऐहू मिं मकु
कु वर दीना॥सहु का भोजन कर्छ जोम
कीना॥२५७॥साषी २ ट॥मलोइसैज
बहोये है॥तब देषहो लोक हैं माला त
ब तुम मकुंद समिले गा॥सतगुरु छूट का
मा॥२५८॥चोपई॥बहु लनै षं कउजै
मिं जाशी रहै पुष तब स्नेह सं नाई॥हे
धर्मराज तुम पुर्ष के अंसा॥मिल्न है रा
षु मिट जाहे संशा॥२५९॥ईतनी बात
धर्मराये सुकीना॥षी छे जगति पीया
ना दीना॥चले चले संसारही ग्रा.

मारगमोहिबडुंहेसछोडाये॥३६०॥अ
रसिधप्रवरतमैरहीपा॥तिनतेभेदसां
नकोकहीपा॥वैहैसिवतोकोलतेब
चै॥दिव्यज्ञानदिवाके सं चै॥३६१॥ता
पीछेमितलोकहीआये॥धर्मदासतें
इहपाये॥धरमदासलखेबाबा॥तबधर्म
दासबिनतीअनुसारी॥देसतगुरमेतं
मबलीहारी॥३६२॥आगमज्ञानतुमम
हिबताया॥हिदाकवल जोमोरेजे
या॥धिन्य है सुकितहमारीबानी॥जे
हीतैमिटैनकबोानी॥३६३॥बिन
जीवनहैजन्महमारा॥जेहीतैसुख
पायोतुमारा॥एहबातमोहिकहोस
मझाई॥जेहीतेजीवकोसंसेजाई॥३
६४॥कालककिकोडुंनहीजाना॥स
मोसुकहीयेपानप्रवाना॥कालपाये
अवतारजोहोई॥नानारंगकरैपुन
सोई॥३६५॥जीवतकालचीजोपा
ई॥तबतोजीवसबेसिधाई॥अबल

ाल चीन्ह नहीं पावै॥तब लग भ्रम
न्ह्यावै॥२६६॥रमतो जोन
देख्या नहीं मिटै
जैसा॥जो रमै दयाकी यो बिस्तारा॥तोसे
हमारा॥२६७॥जो ऐह कालकी
त लोक पठवै जाई ज्यों
है जीव मांही॥तो काल की
नायै देहै मोहि पाही॥२६८॥तिन चीन्ह
नहीं हंस जु बारा॥भेख पलै ची तमै की
न बिचारा॥काल करिन है जग मे फंदा
कैसे हंस होये निरबंदा॥२६९॥निरडं
दी मोहि करि हो गुसांई॥तो मै पंथ चलं
जाई॥कबीर उवाच॥तब साहेब कहै
वै प्रभु सारा॥सुन धर्मदास हम काल
पसारा॥२७०॥काल मूल ससै है माई॥प
थमै काल रूप चीन्हो आई॥जिते कर्क
करै संसारा॥सोई है सब काल पसारा॥
२७१॥काल स्वभाव लै जन्म जो कोई॥काल
सब जाये बिगोई॥मीन रूप काल

जाई॥सतलोकतबनामधराई॥जब
हीपुर्षगुपतहोयेजाई॥सेनोम्हतम
हजायेसमाई॥३८४॥कालहंसको
ऐकविचारा॥सत्यथिररहैकालच
लधारा॥नौकउजाईनाकेकुंग्प्रारे
कालकलाकहिसबैसमाई॥३८५
जैसादेषोतैसाहैसोई॥कबहीप्रगट
कबहीगुपतहोई॥गुपतप्रगटहै
ऐकसमाऊ॥दुतीयाभावकहिगया
नसुनाऊ॥३८६॥जसहैतैसेकहोंन
जाई॥ग्यानविनानहीबनैभाई॥
ताकुंदिब्यग्यानहैसारा॥ताकुंदीपक
संमउजीयारा॥उंचनीचउनसमक
रिजांना॥उंचनीचसबजटिकरमां
ना॥३८७॥औरजुगलोगनबुझेकी
ई॥सबसंसारफुटहैसोई॥फुटसोच
होजुमिटजाई॥ग्यानप्रगटआकैघ
टसमाई॥३८८॥धरमदासतंमबुझै
हौग्यांना॥कालकोगहनभमजांनैनां

गा सोई ॥ ३८९ ॥ साखी ३९० ॥
अमर मूल कूं बूझवै ॥ तो काल दगा सि
र जाये ॥ काल पार सो बूझ करि ॥ लख म
है काल समायो ॥ ३९० ॥ चोपई ३९१ ॥ का
ल न है काल को भेद बताऊं ॥ सुन धर्म
दास मै तोहि समझाऊं ॥ जे अक्षर का
भेद जो पाया ॥ सो न है काल मे जाय सम
या ॥ ३९१ ॥ ज्यो न ही जो नै न है अक्षर का
भेदा ॥ ताकै काल करत है छेदा ॥ बिलसै
अरु नही काल ही जीता ॥ आये का जाये
है सबरी ता ॥ ३९२ ॥ जो गाजी गए सब का
ल पसारा ॥ अक्षर नाम बिर ब्योहारा ॥
काल की गति मति ऐसे सब होही ॥ कोई
ढी ॥ ३९३ ॥ जो
सोना ॥ काल न चीन्ह
अरु लोना ॥ कबही सब कबही ज्यू
काल की गति ऐसी है सोई ॥ ३९४ ॥ भा
कहै मै मन माहि बिचारी ॥ सु..

मुक्तिजोहोयपेहैहमारी॥ऐहैमनकाल
जैहैपेसीरलीना॥भर्मनचानैमतिके
हीना॥२५५९॥साखी १६॥जीवतमुक्ति
कुछौककै॥ करैमवैकीआस॥तेनरभु
लैवापड़ै॥धरिसुवाल बिसवास॥२५६०॥
चौपई ३२॥निसदिन ससैधोषेगहैरावे
अनदे ष्यारीजैअ हुगावै॥जोदेषैसो
कालपसारा॥औरजोबिनसैसोकाल
ब्योहारा॥२५६७॥साषी १४॥अमी डुनी
यांअ धरी॥षोषैजनमगमाये॥सबडु
नीयांजहहुं गई॥मितमितमन आये॥२
५६८॥चौपई३७॥मेराकहाजोनजु निज
चीना॥ताकुंउबारकालसहलीना॥तातेतु
मकूंकहौसंदेसा॥अविनासीघटपाये
उपदेसा॥२५६९॥तुमधरमदासमतदिढ
करहो॥इतवतिचित्तअनंतमतिधरहो॥
सतभवदूबरतमांनजोकहीये॥यादि
बिधतीकालनिरबहीये॥५७०॥सतसे
कालकीकाया॥भवदहोयेसोजीवकहा

पांवृत मांनप्रमात्म जांनो॥प्यांही त्रिध्व
नकालपहिचांनो॥४०१॥सोई भूत से
ई वृतमांना॥सोई भवस्य हीये पहिचां
नां॥कालकला कुं चीन्हत नांही॥काल
विचेत्र है सब मांही॥४०२॥सासी धरा
काल जीत जांनीया॥सब इंद्रीयां मिट
जाये॥ इंद्रीया भाव न उपजै॥ तब रहे
काल पछिताये॥४०३॥ चोपई २८॥जो
न आत्म दृष्टी होई॥इंद्रीयां भाव न उ
पजै कोई॥जां हां इंद्रीयां तहां दुख हो
ई॥इंद्रीयां काल न चीन्है कोई॥४०४॥स
सीधरा॥इंद्रीयां चेरी काल की॥खुर्द सम
फैं नांही॥ज्याकी इंद्रीयां मिट गई तिन्ह
सब सुख समांही॥४०५॥ चोपई २९॥
इंद्रीयां दुरमति दासी होई॥ ज्ञांन बिचा
र कहां ते सोई॥तीन काल मे रहै जो
सोई पुर्ष कायां को बीरा॥४०६॥सोई
हूंनाज मेरा॥मिंत्र ध्यांन सो
लाला हीदं सतै कालडराई॥

कोटिउँपाई ॥ ४०७॥ रहैम्रगहैम्रतैसहूजो
हसे॥ आतमरामघटमैंप्रसे॥ ४०८॥ साषी
॥ ४०९॥ इतनीबातसुनलीजीये॥ कालु
कोज्ञानबषान॥ कालपायकेहोयहै
हंमसूफिरफिरज्ञान॥ ४०९॥ चौपई
४०९॥ धरमदासउँवाचा॥ तबधरमदासपाये
नेपरै॥ हैसतगुरतुममोहिनिसतारै॥ तुम
तौकहैवचनप्रवाना॥ कालपायकरिफि
रफिरज्ञाना॥ ४१०॥ तुमप्रसादमतिफ
लपाये॥ ऐहभवसागरबहुरनआये॥ ह
मसूज्ञानकिहोफिरहोई॥ तातबचन
कहीपेपुन्यसोई॥ ४११॥ कबीरउँवाच
तबसाहेबकहैवेअसेलीना॥ तुमहीपा
पोकालकरिचीना॥ हमतुमदेसएककहै
आई॥ हमतुमएकअवरकहुनाही
॥ ४१२॥ ऐकमनऐकतनऐकहैअंगा॥
ताकुंकहीयेप्रेमअभंगा॥ बहुरनेप
छाआयेसहीना॥ भृंगीभावभृंगीकी
ना॥ ४१३॥ हमतुमसतलोकके बासी

कालनदीतदासद्रअबिनासी॥मैअे
कसो मित्तलोकब्योहारा॥कालपा
येकरूरूये अवतारा॥७४॥कालपा
येबिनसे जूगसारा॥कालपायेकैकरै
आहारा॥कालपाये कतानही चीन्ना
समात्योजूगकीन्ना॥७१५॥
जोगतेसिष्टनिरमाडी॥ओरका
राई॥साषी४५॥कबी
जैतेरहो॥ओरकालकोजोग
हिजतिरहो॥काल
।७१६॥चोपई४४॥धरम
पा वर मरहर छीन्ना॥अ
ज्ञांनसतसरपहि चीन्ना॥तेसाहे
जोबाला॥अपनोजांनक
पाला॥७१७॥एकबातमैकुहैत
॥सोसतगुरमैबिनतीलाउ॥का
रममोहिबताडी॥आपरज
आझा॥७१८॥ज्योएहसक
लप

निषेदा॥बेदसास्त्रपढिपंडितकहाई
कालपुरुषसबतैबडआई॥४३१॥सा
धसंगतिमिलभेदबतावही॥जेहीते
कालकैफंदछूटंचावही॥कालसबद
नहीहोतानाशी॥तोकाहेकूंभक्तिकराई
४३२॥कालकैडरतेजोगअनुसरही
कालकैडरतैदानबहुकरही॥कालकैडरतै
तनतपसाधा॥कालकैडरतैपांचूंइंद्रीबांधै
४३३॥कालकैडरतैसंतकहैज्ञाना॥काल
कैडरतैछांडैअभिमाना॥कालकैडरतै
नरसंककरही॥कालकैडरतैकूरिप्रहर
ही॥४३४॥कालकैडरतैपाषंडनहीकरही॥
कालकैडरतैपाषंडपरहरही॥साषी॥४॥जे
सोडरहैकालको॥तेमरन्होधरमदासाअन्त
बहुलचीन्यांबिनां॥नहीपावैसुषबासा॥४३५॥
चौपई॥४२॥औरमरहीतेउनीयासबबू
डी॥काहूनदेषीकालकीमूमी॥तेमधरम
दासमिडरहोयेरहै॥कालनहीहैकूरिप्र
रहै॥४३६॥कूरिसाचपहिचानोमाजीते

क्षैमैदनेहीन
गधरमदासजैबाचा॥ ज्याकुतेमदसाकार
होगुसाई॥ सोईज्ञानपावैसबगेईकबी
रबाचा॥ तुमधरमदासगुपतिकरहोज्ञान
बानाम्र रचाजेहेचोर
ग्रपसबैचोरादुनजाही॥ जब
यारामया॥ चोरसे साहातत
धर्मदासजैबाचतब
ज्ञानदुतभएऔ॥ बिगलसबावल
बनतीबहोत॥ तीसे
चलहीना
॥पदरजलैमस्तकप्रताप॥ जान
पसातिकपाया॥ रजपलालज्ञोति
६
लेवै तंतमाला
सेवै॥ सीत कुष्टदेहबोकस
सबबूये जायेज्योबुकैमर्म॥ ४४ राचग
बिश्वस

मतिमांनै ग्यांनी जीवकुंनि उपदेसा सब
सुरति कापावै देसा ४५६ सब्द सार ग्यांनी
जो होई सोई हंसकहावै जोई धरमदा
जमकुं नही मारा सबकौ तारन दे कता
जमउपदेस कहुं बहो मांती जो मानै सो
हंसकी पांती सो नही मानै कहा तु मार
सो पुहै जमके दुवारा ४५८ जमकै हा
थपरै गा जाई बुभा जा पेथ हान हीपाई
४५९ [illegible] कहै कबीर सुनली जीये
धर्मनामि नस हिदांन समै समै जीव कुंदी
जीये पावै पद निरबांन ४६० चौपई [illegible]
[illegible] धरमदास बिनती अनु
सारी है सतगुर मैं तुम बली हारी कहो अ
रती चौका ब्योहारा कवन सद्द ते आरती
बारा ४६१ कवन सद्द सतगुरकी पांज
जे होते छुटै कालकी बाजी कवन सद्द ते
नरीयर मोरा कवन सद्द ते तीनका तोर
४६२ कवन सद्द दीपक उजीयारा कव
वन सद्द ते दीपक बारा कवन सद्द ते च

काकीना॥कवनसब्दतैपानलिषदीना॥
४६३॥कवनसब्दतैप्रसादबनाया॥कव
नसब्दतैमिष्टान चढाया॥कवनसब्दतै
पवानासाजा॥कवनसब्दतैप्रनवदनेवा
जा॥४६४॥कवनसब्दतैसोमजी॥[illegible]
चोकामिषैआन संचारा॥कवनसब्दतै
धोवतीआन चढाई॥कवनसब्दतैघि
सिचंदनलाई॥४६५॥कवनसब्दतैपदो
प चढाया॥कवनसब्दतैजलप्रसादब
नाया॥कवनसब्दतैआरतीउताई॥सतगुरु
के चर्ण जो सिर चढाई॥४६६॥[illegible]
हि दीजैनाथा॥जेतीतैं[illegible]॥
कबीरहू वाचा॥[illegible] चनातें[illegible]
क[illegible]र्थ जोन समझाऊं॥४६७॥[illegible] मना[illegible]
[illegible]सुमात[illegible]कोंपा पस्वाव॥
[illegible] चौका चाले॥[illegible]
[illegible]॥४६८॥[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥४६९॥तबजीवउंगबिनतीकीना॥चंद
सूरज दोयेसाषी दीना॥तापीछेप्रवांना
साजा॥ग्यांनसव्दघटमांहिसमाजा॥४७०॥क
दलीपत्रतहांप्रानधराया॥प्रमसंदहेसे
चारकराया॥अमरपनवाराअमरकेजो
ना॥अमरबिस्तब्रिलैपहिचांना॥४७१॥अ
मरबिस्तकाजांनेभेदा॥कहैकबीरसोप
नवाराअछेदा॥तापुपानअमरधराया॥
ताकोभेदकोइब्रिलैपाया॥४७२॥बीजमि
त्रधरतीप्रदीना॥पांनसुपारीनरीयरलीना
सोप्रसादसंतजोपावै॥सतसुकृतकेलोक
सिधावै॥४७३॥तीनषंडत्रिषंडसरीरा॥बा
हेरभीत्रऐकैनीरा॥कहैकबीर झुतीपारसु
भेटो॥ऐकलुउकायाबीरसुभेटो॥४७४॥
तापीछेततमिष्टांन चढाया॥बहोतनतसं
प्रेमलगाया॥ऐहूसतसुक्रतिभेटहमारी॥
हंसतीजीभव जीवउंबारी॥४७५॥साषी॥
४७॥करजोरबिनतिबिनवुसोधोसकल
सरीर॥चूकपरैतोबिगसीयो॥सतगुरसत

कबीर॥४७६॥ चोपई४७॥तबनरीयेर कंडु
नचढाया॥बहोततत संप्रेम लगाया॥सित
लोक है जम कोथांना॥सारै मित्र कबीर को
बोना॥४७७॥बोन मार अगति जसहीना॥
ठेठै संत कूं टीका दीना॥साषी४७९॥पां
नरीयेर मोर कै॥जम सिर टीका कर बांदा॥कं
नकपुर मिलाये कै॥साहेब कबीर को पोह
।४७८॥चोपई४५॥कबीर उंबा चा॥तब
पक कूं औन प्रकासा॥सत लोक मानु की
या वासा जगमग जोत बरे प्रगासा॥अउ
विस मैक रैनिवासा॥४७९॥ क्ष अरविस्तको
भेदा॥कहे कबीर सो जोत अछेदा॥ तेस्मं
प है पकी माला॥बिंध मिबार चीध्र स
सांना॥४८०॥कलसा अंकात पलंव धरी
व्य सौपारी कपुर लै भरीया॥तब पान
लेबन लिषीया॥अप्रम बिस्तत हां सबदे
या॥४८१॥सतसबूना मै लिषदीना॥मि
चार ऐके तहां कीना॥स्रय सागर मे रो
पंना॥तहां वैसेत चढाया पांना॥४८२

सेतपांनकी अमरकाया॥ सीपमांहिमांतुइ
मृतनाया॥ अमतपवन फिरैसंसारा॥ निरम
लहंस होये असवारा॥ ४८३॥ जन्मजन्म
कापापबहाया॥ तबहीतिनकाबेगतो
राया॥ ४८४॥ ॥ ॥
आसाबासामनकलपना॥ येहोसबा मृत
आजहंमसेंहंससूजमसूतिनकोतट
फूगा जमकैमूंटैथूका॥ ४८५॥ तबपानस्वे
नादेहैस जांना॥ मृक्तिहोयेहंसनिरबानां
तांहिनछौकोधरमअस्थाना॥ बावेउरगद
तीजांना॥ ४८६॥ आगेचित्रगुपतिकोना
रानांमहैनिजहंसउबारा॥ उरेघाटऋ
कासीकोटा॥ हंसाउबरेनामकीओटा॥ ४
८७॥ साषी॥ केतैपछीकेतैबिछु॥ केते
बिछेबेआये॥ कहैकबीरजोप्रसमिये॥ ता
सालोकहीजाये॥ ४८८॥ चौपई॥
पांनदेहनिजहंसमुक्तावा॥ सांनभक्तिवै
मांहिसमावा॥ षटकौश्चैकहीबिचारा॥ जे
हीतैजीतैजमकीधारा॥ ४८९॥ जपअसनो

॥साखी ४१॥

४७१॥ चोपई ४७॥ मित्र सनान का॥ स॥

सनान कराया॥ करसिनान ओमाथ्रो नि
वाया॥ धनी के चरण चित्त चितवन ला
या ४७२॥ कहै कबीर सुनो धरमदास
होय उदास॥ साखी ४२॥
प्रति ऐक जोत है प्रमरनाम प्रसधी
। सत कबी
॥ चोपई ४८ मित्र ग्रुपन का बाको
का दीना सील संतोष है
। यारा सत
फेरी उहां ई॥ जल पवीत्र सत्त नस ख्व
गा समाहि पुरष

सेतपानकी अमरकाया॥सीपमांहिमांचुई
मृतनाया॥अमतपवनफिरैसंसारा॥निरम
लदेंसहोयेअसवारा॥४८३॥जन्मजन्म
कापापबहाया॥तबहीतिनकाबेगतो
राया॥४८४॥मिंद्रतिपावतोऊवाका॥
आसाबासामनकलपना॥बेहोसरबासत
आजहमसहंससजमसतिनकाहट
फंदाजमकैमरहैथूक॥४८५॥तबपांनसंदे
नादेहौसजांना॥मुक्तिहोयेहंसनिरबान
तांहिमछाकोधरमअस्थाना॥बावेउरगव
नीजांना॥४८६॥आगेचित्रगुप्तिकोमा
रा॥नांमदैनिजहंसउबारा॥ऊँरवाटअ
आसीकोटा॥हंसाउबरैनामकीओटा॥४
८७॥सायीपुनः॥केतैपछीकेतैबिछ॥केते
बिदेबेआये॥कहैकबीरजोपरमिये॥तोप
सालोकहीजाये॥४८८॥चौपई॥
पानदेहनिजहंसमुक्तावा॥सांनमक्तिवक
मांहिसमावा॥घटकीपरचैकहीबिचारा॥जे
हीतैजीतैजमकीधारा॥४८९॥जपअसनां

नकोमिंत्रसंनावेगा बिनामित्रपांनीमतिपीवै
बिनामित्र चरणाम्रितमतिपीवौ।।मांनंरूप
प्रदेकरिजीवौ।।४८०।।साषी५१।। अगम
सरोवर बिमल जला।हंसापैठेनैहाये।का
याकंचनमनमेंगन।। करम भ्रम मिट जाये
४८१।। चोपई ४७।। मित्रस्नांनका।।सू
क्रतिसागरसंनीरमेंगाया।।धनीकूं अस्नांन
सनांनकराया।।करिसिनांन जो मांथो नि
वाया।।धनीके चरणचित्तलचित्तवन ला
या।।४८२।।कहेकबीरसुनौधरमदास
भवसागरसूं होये उदासा।।साषी५२।।
आदअंत्रितिएकजोतहैअमरनांम अस सथी
र।।चवदेभवननवेषंडमै।।एकहीसतकबी
र।।४८३।। चोपई ४८ मित्रअपनकालोके
निरभैपदका चोका दीना।।सीलसंतोषले
मंजनकीना।।प्रेमपीतकामयाउजीयारा।।सत
सूक्रतिमिलजीवनहारा।।४८४।।सतसूक्र
तिकीफिरीदुहाई।।जलपवीत्रसंतनसुखपा
ई।।सर्वसंतनमिलकीयाप्रगासा।।मादीपुरुष

मोहिभेदबतावौ॥जेहीतेहोपैहंसमस्त
वौ॥५०८॥कबीरउवाच॥तवसमर्थ
सैकहैवैतीना॥ऐहमतावंमतंमस्कहै
ना॥ओईतनीबिध्यनहीबिनआवै॥तोसं
जआरतीप्रेमसूंगावै॥५०९॥तीनंकालमे
आरतीकरै॥प्रातिमिध्यसंज्यबिस्तरै॥सव
सेरमिष्टानमंगावै॥नरीयरऐकतहांआ
चढावै॥५१०॥सवासोपानसेतमंगावै॥से
चोकामेआन्यचढावै॥सातपांचतहांमं
लगावै॥साधनकीसेवामनल्यावै॥५११॥
ऐसीप्रीतसूंआरतीकरै॥सोप्रानीभवसा
गंतिरै॥पांचसुपारीऐकधोवतीधरै॥सत
गुरुकीनवछावरकरै॥५१२॥मैधनतैब
प्रीतबंधावै॥सतगुरुसरूपहोयेज्ञानसूंन
वै॥ज्ञानपढैस्वरूसबसमझावै॥सबसूंस
प्रेममनभावै॥५१३॥धरमदासउवाच॥ओ
ईतनानहीकरैकंकोहारा॥ताकोमोसूंकहोबि
चारा॥कबीरउवाच॥ओईतनानहीबन
आवैतोपदवीकदेहीहारनपावै॥५१४॥ब

आरतीज्योन हीकौसैतोदोये आरतीसे चा
चितधरै॥ फागुन औरूं भाद्रवाधवान्ना॥ दो
आरतीमतिछोडो सरूजांना॥ ५१५॥ [illegible]
स्वांनादेही॥ बहारैमासकैक्रम जो धोई॥
यांन सनांनभक्ति जो होई॥ धरमजैदेसमत
संगतिसेमोई॥ ५१६॥ साषी ५५॥ पांनप्रवाना
कोभैदहै॥ सत गुरमहिमाजांना॥ तैहसातौ
मुक्तिपदा॥ सतसहप्रवांनों॥ चोपई ५१॥ स्वा
धरमबासमैतोहिबुजाऊं॥ आरतीमतासब
जांन सुनाउं॥ अक्षरसारआरतीहैसोई॥ बिन
अक्षरसबजायेबिगोई॥ ५१७॥ अक्षर भेद ज्ये
जांनै अंगा॥ ताकूंकालनआवैसंगा॥ आरती
बहुतभांतिसूंकरै॥ अक्षरभेदहिदेनहिधरै
प्र(ं)॥ साषी ५६॥ अक्षरभेदजांनैनहीं॥ बातांक
बनाये॥ तोकोकहीयोनमांनीये॥ जीवहीदेवै
निसाये॥ ५१८॥ चोपई ५२॥ आरतीभक्तिओर
अछरसार॥ औरसकलहैरूपपसारा॥ ज्या
कैअछरकीपरचैहोई॥ आरतीनिजकहा
वैसोई॥ ५१९॥ आरतीजांन अक्षरधुन्यगा

जे मूरतमित्र घटमाहिबिराजै॥ ताकीम
हिमा तहै न कोई॥ कैसे संत कहावे सोई॥
५२२॥ सोकणिहारअछरनिजजांना॥ अ
रगरूसबमेयेषिसमांना॥ गरूसोईज्योअ
छरजांने॥ औरसकलमूरषपुरवांने॥ ५२३॥
अछरभेदनजांनेभाई॥ कैसेकरिकणिहा
रकहाई॥ कणिहारसोईसो जीवकूतारै॥ बि
नअछरसोनरकहीडारै॥ ५२४॥ सिषसक
लकणिहारसमेता॥ गरूनहीएहदगाजमदेत
बिनअछरगरवाईकरही॥ धर्मरायकेफं
दसोपरही॥ ५२५॥ कोटिजन्मनरकमेबास
सिषसमेतसबकीयानिवासा॥ इतनाभेदन
जांनैप्रांनी॥ सोतोपेटकेकारनेज्ञानबषानी॥
५२६॥ जैसेजगमेठगनेहारा॥ तैसेजानहै
सोकणिहारा॥ अछरकीपचैनहीपावे॥ अ
पआपमेगरूकहावे॥ ५२७॥ गरूनामकबी
रकोआई॥ तिनकेपगेतरैकोनकहाई॥ गु
गरवागंगासमजोई॥ एरकीमहिमागंगानहि
होई॥ ५२८॥ साषी ५६॥ गरूनांमकबीरहै॥

रसकलदेसिषा।जैसे नदीयांमेगंगा।सै
कूंपरिषा।पर२णे।।चौपइ५२१।।धर्मदास
चौ।।ऐहंसन्यधर्मदासहिरषांमे।।सतस
म्रावीनो।।जन्मदेमारासाध्य भरोउ।।
जन्मकोपापमिटगएजी।।५२०।।तब
सकदेवैक जोरी।साहेबसूंनोबिनती ऐ
कमोरी।।ऐकससेमोराघटमाही।।कैसे
छूटतनेंही।।५२१।।मृतलोकमेपाषं
डरमा।कैसेजीवहोयेनिर्देकमा।।तंम
पेज्ञानसूंनाई।सिषपाषंडतत्यैानहीजा
।।५२२।।ताकोमोहिउपदेसबतावो।
जीवहोयेमूक्तावो।।कबीरउवाच।।
बंकीजीवकीमुक्तिनहीहोई।।केतेकम
करेपुंनसोई।।५२३।।ज्याकेमनपाषंडनहीं
होई।सोहंसानिरमूक्तासोई।सोमुक्तागुरुबं
प्रवाना।।वचनरहेतपावंमतज्यज्ञाना
२४।।जपतपज्ञानबडुंकरिजांनै।।नेम
धर्मबडुंभांतिबषांनै।।जबलगनहीपावं
जाई।तबलगगरुगम्यनहीरहेराई

जै मूरत मित्र घट माहि बिराजै ताकीम
हि मात है न कोई कैसे संत कहावै सोई
५२२ सो कणिहार अछर निज जांना अ
र गरू सब मे येषि सम मांना गरू सोई ज्यो अ
छर जांनै और सकल मूरष परवांनै ५२३
अछर भेद न जांनै भाई कैसे करि कणिह
र कहाई कणिहार सोई सो जीव कू तारै बि
न अछर सो नरक ही डारै ५२४ सिष सक
ल कणिहार समेता गरू नहीं एहद गा जम दे
बिन अछर गरवाई करही धर्मराय के फ
द सो परही ५२५ कोटि जन्म नरक मे बास
सिष समेत सब कीया निवासा इतना भेद न
जांनै पांनी सो तो पेट के कारनै ज्ञान बषांनी
५२६ जैसे जग मे ठगनै हारा तैसे जान है
सो कणिहारा अछर की परचै नहीं पावै अ
प आप मे गरू कहावै ५२७ गरू नांम कबी
र को आई तिनकै पटंतरे को न कहाई गु
गर वा गंगा सम जोई पर की महिमा गंगा न
होई ५२८ साषी पदी गरू नांम कबीर है

ग्रोरसकलदेसियाजैसेनदीयामेगंगा॥ग्रेसै
कंपरिषापरणी॥चोपइ५३॥षर्षदासर्‍वे
बाचा॥ऐदस्रन्यधर्मदासहिरषांमे॥सतसह
ग्राधीनै॥जन्मदमारासारथजऐतो॥
जन्मकोपापमिटगएजी॥५२०॥तबधर्‍
मकदैवेकजोरी॥साहेवसुनोबिनतीऐ
कमोरी॥ऐकससोमोराघटमाही॥कैसेकं
छुटतनेंही॥५२१॥छितलोकमेपाषंड
धरमा॥कैसेजीवहोयेनिहकमा॥तुमगरहे
पज्ञानसनाई॥सिघपाषंडतत्योनहीजा
॥५२२॥ताकोमोहिउपदेसबताबो॥ज्या
जीवहोयेमुक्तावो॥कबीरउवाच॥
षंडीजीवकीमुक्तिनहीहोई॥कितै-
करैपुनसोई॥५२३॥ग्याकेमनपाषडनहीं
होई॥सोहंसानिरमुक्तासोई॥सोमुक्तागुरब
पवाना॥बचनरहेतपाषंमतज्ञाना
२४॥जपतपज्ञानबडुंकरिजानै॥नेम
बडुंमांतिबषानै॥जबलगनहीपाषंड
जाहि॥तबलगगरुगम्यनहीरहेराई

नस्वरूपसतगुर तैपावै। बिनसतगुरको
भेदवतावै। ज्ञाननांमहै बीजसरूपा।।
बिनाज्ञानसब जमकोरूपा।।५४ चज्ञा
नबीजप्रथमअस्सारा। ज्ञानबीजतैस
कलपसारा। ज्ञानबीजतेदीपनिरमाई।
भूमीअंकुरज्ञानतेपाई।।५४।। प्रथम
तहांपुर्षकोमरता। जेहीतैभऐसकलअ
सथूला। सोरहैसूतिभयेउतपांनी। ज्ञान
बीजहैसबकीषांनी।।५५०। कुरभमहै
तधर्मरायेवरजोरा। सुरतिनांमज्ञानीअ
नुसारा। जिनधर्मरायेकोमाथ्यौतोरा।
कतेदीननिकारवरजोरा।५५१। बिषमस
रोवर धर्मबिराजै। पुतिअहंकारमहु
बलगाजै। भांतिभांतिकेबाजनबाजै
पांचतत्तगुनतीनबिराजै।।५५२। ततो
सकलसिष्टमुमाई। भयापसारोबिल
मनहीलाई। ऐहसबज्ञानकीयाउतप
नीबांनएाकुरीबैसस्तूकीषांनी।।५
५३। वहातेसवजातपसारा। च्यारबु

मैहै अधिकारा॥ज्यां जनतै सकल पसार
बूतैसंसारा॥५५॥ब्रह्म [illegible]
लकुं जांनै॥तातै ब्राह्मण जातब [illegible]॥ब्र
येब्रह्म नहीजांनै॥सोब्राह्मन [illegible]
॥५५॥बिना ज्ञानब्रह्मकै अज्ञाना॥ [illegible]
मित्र जपै निज ध्याना॥गायेत्री मित्र [illegible]
राती॥और जांनै नहीब्रह्म बिद्या [illegible]॥५५॥
गायेत्री जपै अति अभिमाना॥ हमसे [illegible]
औरकोज्ञाना॥गुरमारग छीमै अहो आई॥
पढि पढि पंडित रहै भुलाई॥५५॥सज्ञान
मन और षटकर्मा॥बेद बिचार [illegible]
धरमा॥भक्ति ज्ञान नही जांनै मर्मा॥सर्थ
बिचारकहै ब्रह्म धर्मा॥५५॥ [illegible] कपाला प
क्षिन कुं दीना॥अपनै मन [illegible] अहंकार लड
कीना॥हम तो पत्र भक्ति सोलाखो॥ ऐ हसम
ओर भक्ति नही भाखो॥५५॥ब्राह्मण एक
देव करै जिमनारा॥ब्राह्मण धर्मलूं पूजै अ
हंकारा॥हम तो ब्रह्म कै कुलन मै आयै हमतै
पत्र भक्ति लोला यै॥५५॥जीमै

ऊंतकरै अभिमांन। वै सगाये सब नरकुं।
तसद्रूपवांन॥ ५८७॥ अथ स्वरूप प्रश्नो
र॥ चौपई॥ ५८॥ च्यार जुगमे सद प्राधीन
सेवा करै भक्तिसो दीना॥ याते भक्ति सत
रकी पांई॥ च्यार जुगनमे सद अधिकाई॥ ५
८९॥ बडभागि सेवा अनुसरै॥ कांम क्रोध
मपरिहरै॥ जांन भक्ति ज्या घटनां होई॥
बतैसद्ध कहावै सोई॥ ५९०॥ दुजो जुग
रैमिंत्राई॥ नितनित संसो प्रेम अधिकाई॥ वे
धर्मकुं बिद्यस्रूपुजै॥ सतधर्म द्रि ढैन हीसु
५९१॥ याही तैसद भक्ति बषानै॥ बडसोम
मे सेवामांनै॥ कलजुग मांहि सद अधिका
तीन धर्म कोम यो सिंघारा॥ ५९४॥ धिन्य स
द जो सेवा करही॥ अरु धिन्य ज्या भक्ति
व तरही॥ धिन्य सद जो बहहीजांना॥
गुमांन होये दीरघ पद हि चांना॥ ५९२॥
मीर्दैर॥ ऐहकरनी है सद की रमसनै
धर्मदास॥ सत गुरचरण सेवा करै॥ अभ
कमै बास॥ ५९३॥ चौपई पूर्ण॥ धर्मदास

मसूइ स्रवतारा।तेपै मुक्ति सतगुरु कीया
तुंमारे पीछे वाहन।।तिरहै।।तुमारे पीछे हे छ
।५९४।।तुमारे पीछे बंस इह असरे।।
चहोये उचरे धर है।।ज्यार बाण इति कु
।ज्यो सीतप्रसादी मोहि चितल्यावे।।५९५
पीढ़ी च।।ओर सकल सब बैसहो ये प्रसे
मकारै।।कहै कबीर सो पड़ं चेलो।।ज्यो हि
करै बिचार।५९६।। चोपई ६०।।ऐहे तुमा
नो बुणन करले षा।।मुक्ति पगावै तुमा देही
षा।।अरु तूंमारे सा षासहू दीपावै।।बिना पु
नहीं सि षकहावै।।५९७।।अरु जार मेहदू
प्रगा।।ताकुं नहीं काल प्रसंगा।।बिन[illegible]
सबकुं दुष होई।।तुंमारे सिष सब जा ये
।।५९८।।ओर सकल है जम कीया
।ताकुं धर्मधीर है मागा।।धर्मदास तें बा
तब धर्मदास कहै वे कर जोरी।।स्वामी सूनो
नती एक मोरी।।५९९।।तूम दयाल दयानि
स्वामी।।कहो दया करि अंतरजामी।।तुमा
बचन मुक्ति सब जेहो।।हंमारो बंस कैसे

रकप्रहै॥ दं०४॥ साखीगुरुवाच॥ तत्वस
देख्य प्रेसे कहै वै ची ना॥ ग्रबत मारे बस कर
क ऊंची ना॥ जेही बिद्य मुक्ति कुं जै है भाई
सो सब तो हि क ऊं सम झाई॥ दं०१ प्रथमे तो
ज्ञान मन्न लावै॥ सो सद्गुरु समाध परमपद पावै
निरमोही होये जग मे रहाई॥ मोह प्रीत जग सू
नही करहाई॥ दं०२ मांने तो समता होये सां
ना॥ सत ही जांने सत पहि चांना॥ निहचै नां
म कबीर को धरही॥ तिन सू कछु अंतर नही
करही॥ दं०३॥ आपा छोड नाम चित धरही
से देही सत लोक मे पग धरही॥ जो कछु मन मे
करै अहंकारा॥ निहचै जीव बुडे तेही बा
रा॥ दं०४॥ सत भक्ति संतन मन लावै॥ धिन्यद
छि मी संतन कू पहावै॥ साधन की सेवा मन
लावै॥ बाढै भक्ति परमपद पावै॥ दं०५॥ सतब
चन सब ही सू कहै॥ सत सब्द हिरदा मे रहै
सत छोडि कि स्रोर नही राषै॥ पुठ छोडि अनंत
नही भाषै॥ दं०६॥ ज्यों ई तना चित्त नही सा
वै॥ निहचै नरक सो प्रांनी जावै॥ आपकमै की

धन ही मन मांही ॥ जो बोहै तो अं [illegible]
ही ॥ ६० ॥ अग्यांन प्रकास सत सब्द [illegible]
व होजी वन लोक प्रभाव ही ॥ [illegible]
जो होई ॥ तिन कै प्रभव [illegible]
प्रभ कै कीयां भक्ति न होई [illegible]
दी रज्य भेस मोई ॥ [illegible]
सह सारथी निरवान ॥ [illegible]
क तमारै होई ॥ [illegible]
मोई ॥ तातै भक्ति न होई [illegible]
[illegible]

रकप्रहै॥ ८०४॥ साखीसर्वंगका॥ तत्त्वस
देख गुप्रैसे कहैहै सीना॥ अबतमारैबसकर
कऊंचीना॥ जेहीबिद्यमृक्तिकुंजैहैभाई॥
सोसबतोहिकऊंसमझाई॥ ८०१॥ प्रथमेतो
संतनमननलावै॥ सोसद्गुरुसमाधपरमपदपावै॥
निरमोहीहोयेजगमेरहाई॥ मोहप्रीत्जगस
नहीकरहाई॥ ८०२॥ मांनेतोसमताहोयेसं
ना॥ सतहीजांनैसत पहिचांना॥ निहचैना
मकबीरकोधरहीं॥ तिनसूंकछूअंतरनहीं
करहीं॥ ८०३॥ आपाछोमनामचितधरही॥
सेदेहीसतलोकमेपगधरहीं॥ जोकछूमनमे
करैअहंकारा॥ निहचैजीवबुडैतेहीबा
रा॥ ८०४॥ सतभक्तिसंतनमनलावै॥ धिन्यत
हिमीसंतनकूंपहलावै॥ साधनकीसेवामन
लावै॥ बाहैभक्तिप्रमपदपावै॥ ८०५॥ सतब
चनसबहीसंकहै॥ सतसद्गुहिरदामेरहै॥
सतछोकिआरनहीराखै॥ पुछैछोडिअनंत
नहीभाखै॥ ८०६॥ ज्योईतनाचितनहींआ
वै॥ निहचैनरकसोप्रांनीजावै॥ आपमेंको

वन हीमन माही॥ जो बोरै तो ज्ञानकी छां
ही॥ ६०॥ ज्ञानप्रकास सत सद्द संनावही
व हो जीवन लोक पठावही॥ तेमारे वसंम्
भै जो होई॥ तिन कैप्रमबऊ त्तमन होई॥ ६१
प्रमकै कीया भक्ति नही होई॥ सात पी
डी लग भ्रम मोई॥ अष्टमी पीडी भक्ति प्रवां
ना॥ सद्द सारपी वे निरबाना॥ ६२॥ ऐसा तत्व
वकत्तमारे होई॥ छै बालक ऊ प्रमिमानस
मोई॥ तातै भक्ति न होयै जीयारा॥ तिन कु
गुरु कहै संसारा॥ ६३॥ तीन लोक बासना
जाई॥ स्वर्ग पाताल मेर है समाई॥ धर्मराय ता
की स्वपावे॥ तव अपना उत्तव गपरावे॥
६४॥ बऊ त्तब लकरैता पावे॥ सद्द सार मिन
तो पावैनाई॥ सद्द सार ज्याके घट माही॥ तिन कै
उत्तनिकट नही जाही॥ ६५॥ ओर त्तमारे वं
सको होई॥ बिना नाम बचै नही कोई॥ अम
नाम ज्याकू मिलगया॥ सो प्रानी निरसंसे भ
या॥ जा ही घट प्रगासा॥ तहा
ऊबासा॥ सद्द न जानै वंसक

हावै। सो कैसै करि सो कामिया वै॥ ६१४॥ सा
षी ६४॥ भ्रम सरूप आवैन दी॥ रहे भ्रम पिछी
ताये॥ कहै कबीर विचार कै। कैसे करि चौ
रासी नही जाये॥ ६१५॥ चौपई ६१॥ धर्मदास उ
वाच॥ तब धर्मदास विनवे कर जोरी। साहेब
सुनौ विनती एक मोरी॥ जो तुम कहो सोइ प
वांना॥ सब का सहू सत्त कर जांना॥ ६१६॥
हम जांन्या पर्षे गुर मांही॥ तुम तै पुर्ष भेद का
हू नांही॥ हमारै जीव प्रश्न आप्रा शी। हम बूझें स
बै तुम्हारै मांही॥ ६१७। तुम साहेब हौ सब सु
षदाई॥ तुम बिन कौंन हंस मुकताई॥ हमारै
बालक तुम्हारै पीछै॥ तुम्हारै नाम सकल न्य
गसी है॥ ६१८॥ कबीर उवाच॥ तब साहे
ब अप्रसै कहै समझाई। बालक तुम्हारा भक्ति
कुं जाई। बालक जो कोई तुम्हारा होई॥ भ
क्ति होये तै जीयारा सोई॥ ६१९॥ जो बालक
साहेब कौ होई॥ ताकुं माथौ निवावै सब को
ई। तिन तै भक्ति मुजादा होई॥ सब सार चल
है निज सोई॥ ६२०॥ अप्रो तुमारो बालक

नादकोकोई॥तिनव
दकैबालकसहदी
लोकपहिचान्ने॥८२४
रफाईमानग्रमान
नैहेंमसंनहीश्च॥
भजाना॥८२
पुनपायेदेलोक
अपुवानापाया
या॥ ८२२
है॥प्रेमसकलस
है॥तेहीजमस
त्वधर्मदासऐद
पारा॥तंमबिना
कलपवानप
नसहीजाना॥
तंमधरमदास
ताछोडिसबदे
सहुसमाना॥
चरा॥मनद
कदै॥मोसत

होवै॥ सो कैसे करि नो कासिया वै॥ ६१४॥ सा
खी ६८॥ भ्रमस सद्भ पावै न ही॥ रहै भरम पिछी
ताये॥ कहै कबीर बिचार कै॥ कैसे कारि चौ
रासी नही जाये॥ ६१५॥ चौपई ६१॥ धर्मदास उ
वाच॥ तब धर्मदास बिनवै कर जोरी॥ साहेब
सुनौ बिनती एक मोरी॥ जो तुम कहौ सो इप
वांना॥ गरब का सब्द सत्त कर जांना॥ ६१६॥
हंम जांन्या परख गुर मांही॥ तुम तै पुर्ष भेद का
छु नांही॥ हंमारे जीव प्रछ्या आप्राई॥ हंम बूझे स
ब हंमारे मांई॥ ६१७॥ तुम साहेब हौ सब सु
खदाई॥ तुम बिन कौन हंस मुक्ताई॥ हमारै
बालक तुमारै पीछै॥ तुमारै नाम सकल नहू
गासी छै॥ ६१८॥ कबीर उवाच॥ तब साहे
ब अप्रसे कहै बुझाई॥ बालक तुमारा भक्ति
कुं जाई॥ बालक जो कोई तुमारा होई॥ भ
क्ति होये उजीयारा सोई॥ ६१९॥ जो बालक
साहेब कौ होई॥ ताकुं माया न्वि वै सब को
ई॥ तिन तै भक्ति मिजाद होई॥ सब्द सार चल
है निज सोई॥ ६२०॥ अप्रो तुमारो बालक

।झूटीबालमई
मोरे।सबब्रह्म दुतीयानहीकोई।।ड
ीया भ्रममिटगयोसोई।।६७२।।जेदसा
ब्र ऐहसबबखांनी।।बचनबिलासकहै
तबज्ञांनी।।खूजैसाआमिलझगडांको
ा ब्रह्मरूपका जेन ही चीना।।६७३।
चीनैतोजैडजाहोई।।भ्रमबादपरैसब
कोई।।अथंकतब्रह्मसबकोईकहै।।अब
कतज्ञांनमैनिसदिनरहै।।६७४।।ताकीब
कहैतप्रवांना।।झूठीबातनकोमैअ
ज्ञांना।।आपहीकहैआपहीनांही।।आ
पहीथापैआपहीउगांही।।६७५।।मूरष
कीमैकरकहीयेमाही।।सबनब्रह्मरहैस
माई।।आपहीमुरषआपहीज्ञांनी।।आपही
कथा कहैबषांनी।।६७६।।आपहीऊंच
ीचदिषलावै।।आपहीज्ञांनीहोयसांन
ंनावै।।आपहीबूझैआपहीनांही।।आप
हीआपमैसकलसमांही।।६७७।।आपही
।कहैबनांही।।जपतपज्ञांनआपह

धरहैसै भारी ॥ ६६५ ॥ अधम अहार सतगु
न ज्यो कही ॥ सतगुन रूप भोजन अन
कही ॥ ऐतम ता उत्तम प्रान धराया ॥ उत्तम
चोका पवीत्र बनाया ॥ ६६६ ॥ पानी छान
तहां धरी राषा ॥ सहज बोटै जो अभिलाषा ॥ जे
ति कछु चाहोये मन भाती ॥ तेती करै धरै म
न षीती ॥ ६६७ ॥ सहज बोटै प्रसाद चढावै ॥
भोजन लै अधिकरु चर्ड पावै ॥ ऐहनिस
करैसै तपद जाना ॥ भोगरालै ई अधिक
सषमाना ॥ ६६८ ॥ दसवै भाग अभ्यागति
कुं देही ॥ तब प्रसाद पवीत्र कर लेही ॥
अभ्यागतिकुं देन नही पावै ॥ राजसीध
र महोये नरक कही जावै ॥ ६६९ ॥ सतगु
न धर्म छुट तब जाई ॥ राजसी धर्म रहै ग
हिराई ॥ सतगुन धर्म करै प्रतपाला ॥ निह
चै पावै लोक री साला ॥ ६७० ॥ चेतन पुरष
मै जाये समाई ॥ उब वा भाव सबै मिट
जाई ॥ रज गृंन तमि गृन सतगृन कहीये
सब मिट जाये ज्ञान सो लहीये ॥ ६७१ ॥

बकुं भ्रमकं करि डारो॥ झूंटी बात मई
ब्रारो॥ सब ब्रह्म दुतीया नही कोई॥ दु
तीया भ्रम मिट गयो सोई॥ ६७२॥ जे दस
त्र ऐ दस बखांनी॥ बचन बिलास कहै
सब ग्यांनी॥ द्रढ सा ब्रह्म मिल जगडा को
ना ब्रह्म रूप का जिन ही चीना॥ ६७३॥
चीनै तो जो दुजा होई॥ भ्रम बाद परे सब
कोई॥ अंधकार तै ब्रह्म सभी कोई कहै॥ अंध
कार ज्ञान मे निस दिन रहै॥ ६७४॥ ता की ब
तक है तब जांना॥ फूरि बातन की मैं अ
ज्ञांना॥ आप ही कहै आप ही नांही॥ आ
प ही थापै आप ही उगांही॥ ६७५॥ मूरख
की मै कर कहीये माही॥ सब ब्रह्म रहै स
माही॥ आप ही मुरख आप ही ज्ञानी॥ आप ही
कथा कहै बखानी॥ ६७६॥ आप ही ऊंच
नीच दिखलावै॥ आप ही ज्ञानी होये ज्ञान
सुनावै॥ आप ही बुझै आप ही नांही॥ आप
आप मै सकल समांही॥ ६७७॥ आप ही
मर एक रेख नांही॥ जप तप ज्ञान आपठ

है राई ॥ आपही सिरजन निगुन मे बासा ॥
आपही ऐक अनेक तमासा ॥ ६७८ ॥ आ
पही बाजीगर होये आया ॥ आपत मासे
आप भुलाया ॥ आपही आपकुं चीने
नांही ॥ ताते भटकत फिरै मही मांही ॥ ६७९ ॥
साषी ६७। आप आपकुं चीनकै ॥ आप ब्र
ह्म होये जाये ॥ आप न चीनै आपकुं ॥ पडै न
रक मे आये ॥ ६८० ॥ चोपई ६८ ॥ अकथक
हांनी कहीन जाई ॥ आप उत्पति होये कथा स
नाई ॥ आपही मांनष का रूप बनाया ॥ उजा हो
ये करि जगति दिषाया ॥ ६८१ ॥ ऐसे भाव बि
धनै कीना ॥ ताते कोई न पावै चीना ॥ सत गुन
भक्ति ग्यान जिन चीना ॥ रज गुन तम गुन की प
या मलीना ॥ ६८२ ॥ साषी ६८ ॥ आप आपकुं
चीनकर ॥ आप ब्रह्म होये जाये ॥ कहै कबी
र निरदोष होये ॥ ब्रह्म सरूप कहाये ॥ ६८३ ॥
चोपई ६९ ॥ तेही ब्रह्म सरूपकुं जांना ॥ ती
न सहंसार रूप कमांना ॥ कित ऊन देषीये ऊ
जानांऊं ॥ सब घट ब्रह्म गवैं ही गांऊं ॥ ६८४ ॥

जिनकुं ग्यान अग्न भै प्रकासा॥ तब सकल
कर्मकुं सदै जै बिनासा॥ तब सकल कर्म स
हज ही मिट गये॥ नांक डुं आये नां कगये॥
६८५॥ जैसे रहै तैसे है सोई॥ दिलको भ्रम मि
ट गयो सोई॥ तब भ्रम कर्मकी छुटी आसा
ऐक नांम मेरै है बिसवासा॥६८६॥ नांम छोडि
और नही जांना॥ती पृबृत मन ऐकान आ
ना॥ आपही तीर्थ आपही देवा॥ आपही आ
पलगावै सेवा॥६८७ आपही मूर्ति पिका क
हाया॥ आपही जानी होये जानाल गाया॥ आ
पही महिमा सबकी कीना॥६ आपही सिद्धा
करि मिथ्या लीना॥६८ सोसाखी ६९०॥ आप
सकल जूग ब्यापीया॥ आपही अलख अपा
र॥ आप जगतिरुप जावे॥ आपही दसअव
तार॥६९१॥ चौपई ६९२॥ आपही देवदेय
त सब मांही॥ आपही जरधकीयो सबगाही॥
आपही महाभार्य कराया॥ पांडूकूं सबसां
न सनाया॥६९३॥ आपही कैरूपांडव कहा
या॥ आपही दोदसबनकुं दाया॥ आपही

है राई ॥ आपही सिरजन निगुन मै बासा ॥
आपही ऐक अनेक तमासा ॥ ६७८ ॥ आ
पही बाजीगर होये आया ॥ आपत मासे
आप भूलाया ॥ आपही आपकुं चीनै
नांही ॥ ताते भटकत फिरै मही मांही ॥ ६७९ ॥
साखी ६७ ॥ आप आपकुं चीनके ॥ आप ब्र
ह्म होये जाये ॥ आप न चीनै आपकुं ॥ पडै न
रक मै आये ॥ ६८० ॥ चोपई ६८ ॥ अकथ क
हांनी कही न जाई ॥ आप अवत्ति होये कथा स
नाई ॥ आपही मानष का रूप बनाया ॥ उजा हो
ये करि जगत दिषाया ॥ ६८१ ॥ ऐसे भाव बि
धनै कीना ॥ ताते कोई न पावै चीना ॥ सत गुन
भक्ति ग्यान जिन चीना ॥ र जगून तमगुन की
या मलीना ॥ ६८२ ॥ साखी ६९ ॥ आप आपकुं
चीनकर ॥ आप ब्रह्म होये जायै ॥ कहै कबी
र निरदोष होये ॥ ब्रह्म सरूप कहाये ॥ ६८३ ॥
चोपई ६९ ॥ तेही ब्रह्म सरूपकुं जाना ॥ ती
न सहंसार ऊगकमाना ॥ कित ऊंन देषीयें उ
जानांन्हें ॥ सब घट ब्रह्म गवै ही गंन्हें ॥ ६८४ ॥

क्रमकुंसहै जैविनासा॥तबसकलक्रमस
रजहीमिटगये॥नोकडूँ आयेनाकगये॥
६८५॥जैसेरहैतैसेहै सोई॥दिलकोभूमभि
टगयोसोई॥तवभ्रमक्रमकीछूटीआसा
ऐकनांममेरहैविसवासा॥६८६॥नांमछोडि
औरनहीजांना॥तीर्थब्रतमनऐकलआं
ना॥आपहीतीर्थआपहीदेवा॥आपहीआ
पलगावेसेवा॥६८७॥आपहीमूर्तिपिकाक
हाया॥आपहीजानीहोयेजाचालगाया॥आ
पहीमहिमासबकीकीना॥आपहीनिद्या
करिमिथ्यालीना॥६८८॥साखी६८९॥आप
सकलजूगव्यापीया॥आपहीअलखअपा
रा॥आपजगतिर्जेपजावे॥आपहीदसअव
तारा॥६९०॥चोपई६९१॥आपहीदेवदैये
मोही॥आपहीजरधकीये

॥का॥

॥आपहीदोत्तसबनकुं

हैहै कारसरूपा ॥ आपही राजा कौ सबको
भूपा ॥ ६५१ ॥ आपही भला बूरा दीये नांहै ॥
आपही आवै भवकै गंहै ॥ आपही चेरा है
ऐसे वा नाई ॥ आपही पिमत होये कथा स
नाई ॥ ६५२ ॥ आपही सूने आपही कहै आ
पा जांन बुझे जनढहोये रहै ॥ आपही रावहै
ये न्याव चूकावै ॥ आप अन्याव आप समझा
वै ॥ ६५३ ॥ आपही देत आपही उपाही आ
पही खाटा आरे मीगस्वादी ॥ आपही सत्य
समघत गाई ॥ आपही रागरसना है गाई ॥ ६५४
आप सकल है बेद पुरांना ॥ आपही पो
थी आपब पांना ॥ आपही है ऊंसा सब बना
या बाद बिबाद करि ज्ञांन सुनाया ॥ ६५५
आपही जीतै आपही हारै ॥ आपही नरै
आपही नारै ॥ आपही जनै आपही मौर
आपही सहा येक आपही बारै ॥ ६५६
६ ॥ साषी ॥ ऐसी महिमा ब्रह्म की ॥ कहै
तां कहीन जाये ॥ ऐक अनेक मेर मरहा
ट घट रह्यो समाये ॥ ६५७ ॥ चोपई दोहै ॥ अथ

तमज्योकहौ ऐकब्रह्मसमां
ऐदजांना॥कबदीअसां
रूपदोयेब्रुते ॥कबदीज्ञानीदोयेकरिछ
दर्ये चा॥कबदीकहै ऐदब्रह्म समांना॥कबदी
राजभिछक भयेमांना॥ ब्रह्मरूपकादै ऐसै
कीना॥सोसांदेबमोहिबतावो चीना॥६९॥
कबीरजैबा च॥कहै कबीरसुनोधर्मदास
याही को भेदकहूंतोहिपासा॥ब्रह्मरूपहै
जसमांना॥ पारब्रह्म अंकुरपुवांना॥७०॥
ताही मांहि पुत्रदोये कीना॥ऐकसगति ऐ
सबकुचीना॥मूलबीज ऐकसोसबजांना॥
पुर्षप्रकृतिदोयेनांमबषांना॥७१॥तामांहि
पांचमारनिरमाया॥आकासआदिदैसब
माया॥प्रथमहीवायेरूपसोकीना॥ वाये
मध्यतेजधरदीना॥७२॥तेजकेमध्यपानी
पजाया॥ पांनीकेमिद्धप्रथवीसमाया॥जैसे
बीजतैब्रिछ निरमाया॥तैसेप्रभ्रसकलब
या॥७३॥ऐसेउतपनसबकीहोई॥धोब
मैसबगयेबिगोई॥सतगुरज्याकुंदयाकी

हैहैकारसरूप॥ आपहीराजकैसबको
भूपा॥द ५१॥ आपहीसलाबूरहोयेनांऊं॥
आपही आवैभवकैगांऊं॥ आपहीचेराहो
येसेवालाई॥ आपहीपिमत्तहोयेकथास
नाई॥द ५२॥ आपहीसूनेआपहीकहे आ
पाजांनबुझे ज्ञ दहोयेरहे॥ आपहीरावहो
येन्यावचूकावै॥ आपअन्यावआपसमझ
वै॥द ५३॥ आपहीदेतआपहीउपाही॥ आ
पहीमाटा ओरमीगसाही॥ आपहीसन्म
समधलगाई॥ आपहीरागरसनालेगाई॥द ५४
आपसकलहैबेदपुरांना॥ आपहीपो
थी आपबखांना॥ आपहीछऊंसास्त्रबना
या॥वादबिबादकरिज्ञांनसूनाया॥द ५५
आपहीजीतैआपहीहारै॥ आपहीनरै
आपहीनारै॥ आपहीजरै आपहीमारै
आपहीसदायेक आपहीउबारै॥द ५
६॥साषी॥ ऐसीमहिमाब्रह्मकीकहै
तांकहीनजाये॥ ऐकअनेकमेरमरहाव
टघटरह्योसमाये॥द ५७॥ चोपाई॥ ध्यरस

दासउवाच॥ तुमज्योकहेो ऐकब्रह्मसमां
ना॥ जीवसरूपका ऐहज्ञांना॥ कबही अज्ञान
रूपहोयेखुते॥ कबहीज्ञानीहोयेकरिथरते
ईये॥ कबहीकहैऐहब्रह्मसमांना॥ कबही
राजभिछकभयेमांना॥ ब्रह्मरूपकहेअैसे
कीना॥ सोसाहेबमोहिबतावोचीना॥ ६९॥
कबीरउवाच॥ कहैकबीरसुनोधर्मदासा
याहीकोभेदकहुंतोहिपासा॥ ब्रह्मरूपहैबी
जसमांना॥ पारब्रह्मअंकुरपुवांना॥ ७०॥
ताहीमांहिपुत्रहोयेकीना॥ ऐकसगतिऐक
सबकुचीना॥ मूलबीजऐकसोसबजांना॥
पृथ्वीप्रकृतिहोयेनामबखांना॥ ७१॥ तामांही
पांचमारनिरमाया॥ ताकोसकलिहैसबब
नाया॥ प्रथमहींवायेरूपजोकीना॥ वायेके
मथतेजपरहीना॥ ७२॥ तेजकेमधपांनीउ
पजाया॥ पांनीकेमिद्धपृथ्वीसमाया॥ जैसे
बीजतैसेबिछ निरमाया॥ तैसेप्रभूस
पा॥ ७३॥ अैसेउतपनसबकी
भैसबगयेबिगोई॥ सतगुरज्या

ना ७१७ कवनबोलतासमर्पणाना कौन
स्थलेश्रावनजाना बिनाबीजकोजाव
नज्यामे बिनाअंककोअंकपहिचाने
७१८ साखी ० पा कबीर देवा वा बिनाअं
ककोबीरवा बिनामंडीकोफुल बिन
नालकोकवलहे बिनामूलअस्थूल
७१९ चोपई ७७ हेसंतोहमकहेबिच
रा सेतमूलपांषडीडारा तामेअगरकी
बाससहोई तेहेअग्रधार चलिआई
७२० येहेतहांकबीरधर्मदासा बूही
यांतसकत्तिरहेबासा फेरीबातज्योर
चलछाने निरछीरनिरवारकरिजानी
७२१ सबतत्वसारहेभरपूरी बाहिर
भीतरतत्दुजरी दुजाकोईनहींदेषेसो
ई सतपुरषेजाकेघटहोई ७२२ जाकुं
सतगुरदयाकीना अमरमूलतिनपाय
चीना सतगुरसांचकेहरसबहोई नही
मानेजडमूरषसोई ७२३ हमधर्मदा
सज्ञानसूनलेहो सतसीषापनहसुंकुं

देहै मिथ्याज्ञान जोतुम जीप देसो तीन
दीपावो लोकप्रवेसो ७२४ जोतुम चाहोम्र
पनाकाजा सबदेसनकुंसद्गुरुपराजा जो
कोईसद्गुरसेनेतुमसेती सोनिहचेहोयहंस
कीपंती ७२५ ज्याकुंसतज्ञानमिजआया
सोहंसानिरमोलकभया सोहेब्रसेलगऐ
कहोयेजाई जैसेकंचनम्रवटमिलाई
७२६ द्रुतीयाभावमिटगयाहाई जीव
ब्रह्मएकहोयेजाई संसमिटेम्रमरपद
सहीये म्रमरमहलकोसोजसलहीये ७२७
म्रमरमहलसतगुरूसपावे बिनसतगुरूसब
भूलयभावे ततभेदनहेम्रककोपाया तब
तेएकऐकजोडिहाया ७२८ कहेकबी
रसुनोधर्मदासा ग्रेसाभेदकरोप्रकासा
जोतुमऐहभेदसंसारसुनावो तोसबहंस
लोकहेप्रावो ७२९ तुमकुंदीनमिन
सहिदानी ज्याकुंदयाकहोचित्तजानी
सोईमुक्तिजीवकोईपावे बिनाखेकचोरा
सीजावे ७३०

ना ७१७॥ कवन बोलता समर्पणा बोना॥ कौन सहूले आवन जोना॥ बिना बीज कों जांव नज्यामै॥ बिना अंक कों अंकप दिचांनै॥ ७१८॥ साखी ७१॥ कबीर वचा॥ बिना अंक को बीरवा॥ बिना झांडी कोफुल॥ बिना नाल कौ कवल है॥ बिना मूल अस्थूल॥ ७१९॥ चोपई ७७॥ हे संतो तेम कहे बिच रा से तमूल पांषडी डारा तामे अगर की बास सू होई जैहे अपधार चलि आई ७२० ये ये तहां कबीर धर्मदासा बहीयां तसकतिर दे बासा फंगी बातज्यों बत हां नी निरछीर निरवार करि जांनी ७२१ सब नवब्रह्म होमूपूरी बाहिर भीतर तत हजूरी दुजा कोई नही दधैसा ई सतपुरष जाके घट होई ७२२ ज्याकुं सतगुर दयाकीना अमरमत तिनपाये चीना सतगुर साच फेर सब होई नही मांने जट मूर्ष सोई ७२३ तेम धर्मदा स ग्रांन सून तेहे सत्य सीया पन दे संकुं

देहै मिथ्याज्ञानजोतमर्जपदेसो तोन
हीपावेलोकप्रवेसो ७२४ जोतमचाहोस्र
पनाकाजा सबदेसनकुंसद्गुरुपराजा जो
कोईसद्गुरुसेनेतमसेती सोनिरुचैहोयदेस
कीपांती ७२५ ज्याकुंसतज्ञानमिजयाया
सोहंसानिरमोलकभया साहेबसेबगऐ
कहोयेजाई जैसेकंचनअवटमिलाई
७२६ दुतीयाभावमिटगयासाई जीव
बह्मऐकहोयेजाई संसमिटेअमरपद
सहीये अमरमूलकोसोजसलहीये ७२७
अमरमूलसतगुरुसपावे बिनसतगुरुसब
मूलगुमावे ततभेदनदेअेककोपाया ता
तेएकऐकजोडिहाया ७२८ कहेकबी
रसुनोधर्मदासा अैसाभेदकरोप्रकासा
जोतमऐहभेदसंसारसुनावो तोसबसंसा
रलोकलेआवो ७२९ तुमकुंदीनमिन
सहिदानी ज्याकुंदयाकहोचित्तजानी
सोईमूक्तिजीवकोईपावे बिनाअेकचोरा
सीजावे ७३० मुक्तिभेदजोपावेप्रानी

सद्द् अंकब्रह्मसहिदांनी ॥ रजगुनतमगुन
ते आगेकहीये सतगुनधर्मकीप्रचैतदीये
७३१ ॥ सतगुनधर्मकापावे भेदाकहेक
बीरतबहंस अछेदा ॥ धर्मदासपरोवाच ॥ तब
धर्मदासबिनतीअनुसारी ॥ दैसतगुरमेहम
बलीहारी ॥ ७३२ ॥ कबीरउवाच ॥ सतगुर
ताकुंदयाकीना सकलबिस्तकोपायेची
ना ततमांहिनदैसततदिषावे हिरदामाहि
अनहदकंपावे ७३३ औरूताकुंआ
गेप्रसबनावे नवदीरघप्रमपदपावे
औरूपरन जांनजाहीघटहोई सतगुरभे
दकुंपावैसोई ७३४ औरब्रह्मग्यांनबि
नमुक्तिनहोई केसोसंतकहावैसोई
नांमबोभि औरनहीजांने तीरथबूतऐको
नहीमांने ७३५ औरसकलधोषाकूं
जांने सतनांमअबिनासीमांने धोषाजो
गजिगतपकीना धोषादांनपुन्यकरदीना
७३६ धोषेकमकरैसंसारा धोषारूपजक्ति
उबिस्तारा धोषासकलपुरांनबषांने धोषा

वेदसास्त्रसबमांनै ७३७ धोखासाषीपदहै
भाई धोखाकहैकहैग्रंथसंनाई प्रथमधोख
साचकरमांना बुझातैधोखाकरिजांना ७३८
जैसैसिरगुणतैनिरगुणपहिचांना निरगुण
दोन्यसिरगुणकाजंमांना निरगुणसिरगू
णद्वोर्उमिटजाया आदिब्रह्मसंपूर्णमया
७३९ तेमधरमदासनिजमतिसूनलेहो
धोयेसंसैचित्तमतिदेहो प्रथमभक्तिरूप
कोजांना॥ताहीपाछैततत्तबयांना॥७४०
धर्मदासर्उबाचजबतंमततसूंनावोखा
मी॥जांनहोयेर्उरअंबज्यांमीकबीरर्उबाच
जबवैहैततहिदामैआवै तबसबधोषा
बुनसूंनावे ७४१ तबहीततअपनाकरि
जांनै सतगुरकुंतबहीपहिचांनै तबही
गरूसिषसबकोई सबमेदेषीयेतंमही
सोई ७४२ गरूसिषएककरिजांनै डुंजो
बातचित्तनहीआंनै जबतिकडुजाभाव
हैज्याकै॥नहीगरूनहीसिषहैत्याकै॥७४३
साषी७६॥गरूसिषकीमहिमा कहैकबी

पहीमनवारूपकहावै॥आपहीउजामा
वसनावै॥७७॥आपहीबचनबचननहीं
आवै॥आपबचनकहेजगसमझावै॥
आपअरूपरूपनहीकोई॥आपहीसब
तसपहैसोई॥७८॥आपहीसिरगुण
निरगुणकहीये॥ग्यांनगमतेएहमतिल
हीये॥आपहीग्यांनमुक्तिकेदाता॥ग्रंथ
नबोलेबिख्याता॥७९॥कहेकबीरस
नोधर्मदासा॥ऐसाग्यांनकरूप्रकासा॥
[illegible] तबधर्मदासबिन
ती अनुसारी॥ हेसाहेबमैतुमबली
हारी॥८०॥ ऐहमतिअगमसोदिस
नावो॥ हिरदाकवलजोमोरजुडावो॥
ऐकबातमेपुछुगुसाई॥सोइकहो
ज्यामैसंसेजाइ॥८१॥तुमसबब्रह्म
कहेदिखलाया॥मेरेमननिहचेसो
आया॥ओरनकुकहाकउंगुसाई॥
ऐहतोग्यांनकह्योनहीजाई॥८२॥
मैजांन्यासबतुमारीदया॥ओरजीव

नही सद्रूपती आया॥ अबतो कर मोहि
कहौ उपदेसा॥ जो हंसन कुं कहुं संदेसा
७६३॥ कागी रहे बाचा। है घर मे दास तोही
ज्ञान सुनाऊं जो मो। नही मोहन कोम
ै बल ज्ञान ज्या के घट होई अमर से
कुप ऊंचे सोई ७६४ तब कली रम
से कहै बुझाई। हम तुं कौन संसै है भाई
हम तो अपना हंस उबारा। ओर न को दो
न है भारा॥७६५॥ ड॥ ७ ॥ सब कौ तार
न समरथ है॥ कहै कबीर बिचार हम है से
सै कौन है। अपना करो उबार।७६६॥ चौप
ई ७॥ सत गुर ली नज्ञानि कौ भार तेही क
रि कै सिष्ट उबारा। जहां सत्त पुरुष तवे चित
तब निहं चे हंस लोक पहुंचे जाई॥ ७
जब ऐ हंस सिष्ट की पायु जा सो अनंत
अजा ऊं अनंत हंस सत्ता
सत लोक मै आनंद समाई॥ ७६७ तुम तुं क
ओर संसै नांही आपना हंस करो मत्ता ही
अब छार सारा सोहं

या ७८३ सतलोकतै आगै चलगाएउ अच
रज खेलत तहां ऐकभएउ सोअचरज मोहिक
हौनजाई तुमपुछौतोदेउं बताई ७८४ ऐ
सीबातकाउं नहीजानी किनउंनपुछीका
उंनबषांनी तुमधर्मदासप्रमहेत मोरा सुन्हो
ग्यांन ऐहदीपकजोरा ७८५ केतेकसत
लोकमेदेषा औरपुर्षपुरातमबउतलेषा
ऐसोलोक हौयेब्यौहारा ऐसापुर्षऐही
बिस्तारा॥ ७८६॥ तहांव हांदेष्यासूर्तिसुभा
ई॥ जिनवहांहंमकुंदीनपगाई॥ उहां ७८७ त
हांवहांदेष्यासहजदी॥ अनेकसूनेअपार॥
कहांलगकहीयेगनती॥ सुनधर्मदासबिस्ता
रा॥ सा॥ ७८८॥ जोकछुआवैगनती॥ ताकोहैस
बनासा॥ वेहैअ नगनितकैसेगिनै॥ ऐसैसाहु
प्रकास॥ ७८९॥ चौपई ७९ बचनभेदकरिक
थासुनाई जेहीतैतुमारोमनपतीआई बहु
अलेषलिषोकिमजांनी अषंडतकहेकरि
ग्यांनबषांनी ७८१ जहांतिकगांम्यग्यांनकी
होई तहांतिकबिनसैरहैनकोई जहांति

कसोभासैनो अपारा॥ जो देषो सो भर्मविन्हारा
७५० और कहै सो इंद्रीया दोई ॥ इन्द्री था भर्म
मिटगया सो ई ॥ ऐक ब्रह्म इंद्रीया नहीं कोई कि
सै ऊतपुन्य कहीये सोई ॥ ७५१ शब्द स्पर्श रूप नहीं ति
तपुन्य नहीं प्रलै नहीं आवै नहीं जावे ॥ नहीं गिन
तन ही अलिंगित ता ॥ एद सब भ्रम नसस जाणे ॥ ७५
चोपई ७५ ॥ धर्मदास कौ बाच ॥ हे समर्थ स्वम
गम्य अपारा तुम सीढ या आवागवन निवारा
तब धर्मदास पुछै कि जोरी सनो स्वामी विनती ए
कमेरी ७५३ निहचे ज्ञान तुम सो हि रहना ना नि
ह चैप्रेम मे तुम तै पावा ॥ एक अनुचज विनती सुनौ
स्वामी सोई बात पुछु अंतरज्यामी ॥ ७५४ आवा
गवन बिध्य होई ॥ सो साहेब मोहि कहो बिलो
ई ॥ कबीर उवाच ॥ तब साहेब कहै वै अनूसा
र पांच भूत का फुतला सवारा ॥ ७५५ ता मे
ही प्रगट जो आप समाना ॥ त्रिगुन रूप करि आ
तम जाना ॥ उभै सूष्म अस्थूल रूप समाई ॥ इनमैम
नराजा करि पाई ॥ ७५६ ताते जीव बुध्य है भाई
अवगति गति मे रहै सदाई ॥ आपना रूप आप

नदी चीना ॥ ता तै आवा गिवन करती ना ॥
७७ ॥ ना कोई आपा ना कोई गया ॥ मन कै भ
र्म तै जद ब्रुत भया ॥ मन दी सानी मूर्ख कदी
ये ॥ मन दी ब्रहम रूप होये तदी ये ॥ ७८ ॥ म
न को ऐह सकल पसारा ॥ पाप पुन्य मन दी बि
स्तारा ॥ मन दी मोह भाव उपजावै ॥ मन दी आ
सत्ति दसा लावै ॥ ७९ ॥ मन दी देव देस पसा
र ॥ मन दी पुजै मन दा पुजारा ॥ मन दी नारी
पुर्ष करि जाना ॥ मन पुत्र मन बाप बषाना ॥
८० ॥ दोहरा ॥ कहै कबीर ऐह मन है म
न को सकल पसार ॥ बुझि कै सहज समाईये त
ब आगै ब्रसल दीदार ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ ह
म आगै मोदी या पयांना ॥ जहां देष्या तहां स
त समांना ॥ अंदर ऐक सब मै देष्या भाव अ
नेक करै कौ लेषा ॥ ८२ ॥ तब हम चढे अप
ने अस्थांना ॥ तब उन रथ लोक स्रकीया पीयां
ना ॥ मारग बिच अचरज बहु देष्या ॥ ताकी
सोभा कहुं बिसेषा ॥ ८३ ॥ अद्भुत लीया
बनी न जाई ॥ और कहां सन्यासं कौपती

संतधर्मदाससैतोहिसंनाउे. अकथग्रं
थासंनाउे चौ०४ तहांदेष्योकबीरसोतो
सहूतेरहेतहांरहांबिसीधा-अस्थक
थोदेसा तहांनेकनव्यापैकाहूनेसा चौ०५ दे
ज्योकेहंमहीकबीरा जहांदेषेतहांकबी
रा तबचितमांहिजोकीनबिचारा ऐ ,
बीरसकलहैसारा चौ०६ दुजाऔरनही
ई सबमेंसतकबीरहैसोई सतकबी
रपुरषांबाहिरभीतततहसमा चौ०७॥साष
॥हमकबीरहेमकता ॥सबकालवि
मदास दुजानांहीदेषीये॥सतसब्द्रप्रकास
है॥चोपई७ ॥औरनहीकबीरनहीघ
दासा अछरएकघटमांहिनिवासा बाही
जोसतपुर्षकहीये आदिअंतअछरहीये
रहीये चौ०९ अछरमूलओरसनडारा स
रमेनीकथाबिस्तारा कथाकहैकरज्ञान
सुनाया ऐहभांतिसंसारबुझाया चौ०१० जि
न्पातिनधोषामांना सकलजालमि
थ्याकरजांना मिथ्याबाद छांडिजिनदीना

समजावा बचनभावमैसबश्रोंग्रावा ॥ २५ बचनभावबचनकिमकहीये सोखं
मीमोहिभेदनिरखहीये प्रथमतोतुमसद्गु
रूनापीछेज्ञानगम्यदृसावा ॥ २६ अब
तुमकहोबचनकालेया हमसेवगकिमक
रैप्रेषा ऐकबचनकहीयेगहेराई जेहीतै
चित्तअनंतनहीजाई ॥ २७ ॥ कबीरउ
वाच तबकबीरअसेकहैवेहीना ज्ञान
भेदसबहीकहीदीना सूनधर्मदासमैक
ऊंबिचारी तेहीतेनिमहैसबसंसारी ॥
२८ प्रथमहीसिषहोयेजोआई ताकुंज्ञा
नदिढावोभाई पानप्रवानकीपितजबआ
वै तीनकुंभक्तिअंगजसावे ॥ २९ जब
देषोवाकोदिढज्ञाना ताकुकहीयेसद्गु
सहिदाना सद्गुमोहिजबनिहचेआवे तो
कुंज्ञानअगाधसुनावे ॥ ३० ज्याकुंज्ञा
नदिढहोयेजाई ताकुंज्ञानअगाधसुना
ई अनभैकाजबकरैबिचारा सोतीती
नलोकतैन्यारा ॥ ३१ ॥ जंग्रज्ञानप्रगटज

बहोई आतमरामको चीनैसोई आपसह
हैसहूकहावै आपहीबोलैअ बोलसं
८२२ आपहीबचनसोअबचनक
हीये आपहीबोलै चूपकररहीये अबोल
बोलमिथ्यकतारा हैसबमाहिसबतैन्यारा
८२३ आपहीगरुआपहीसिषा आपहीअ
आपकुंदेषा एहमतिजिनपावैकोईसूरा
ज्याकुंसतगुरमिलीयापुरा ८२४॥ दुहा॥
८७॥ देष्यासंन्याकहान कृत॥ आपहीरूप
अपार॥ आपन चीनै आपकुं॥ मु लैसबस
सार॥ ८२५॥ चोपई ८१॥ एहीमहिमा तंमकुं
कहैदीना बिरला सिषकोईपावै चीना तंम
धर्मदासएहमतिउपदेसौ जोजिनजिसता
हीतिसबिसेषौ ८२६ बालकसमज्याकुंहो
येज्ञांना ताकुंदेहोपानप्रवांना ज्याकुंज्ञान
सुखमहै भाई ताकुंसमरणदेहोदिढाई
८२७ ज्याकुंज्ञानगंम्य जोहोई ताकुंसार
हैसोई ज्याकुंदिव्य ज्ञानप्रकासा ता
ततज्ञांन उपदेसा ८२८ ज्याकुंउपसं

नजोहोई आत्मततकुंपावैसोई जहां
ज्ञांनप्रकासा आत्मरांमतहांकरैनिवा
सा ८३९ आत्मरांमकीपरचैहोई आप
हीआत्मब्रह्महैसोई इआंकित इंनदेखे
भाई आपरहै सबमांहिसमाई ८४० ऐ
हभांतितंमजगसमजावो आसमकैतांहि
लोकलैआवो जिनसतनांमकीपरचैपाई
आकंलोकनिकटहैभाई ८४१ हंमतो
ऐकलोककहीदीनो अनंतलोकघरहीं
मैचीना अनंतलोककीपरचैपावै कहेक
बीरअमरहोयेजावै ८४२ ऐकबचनमे
देहुदिषाई जिनतेतमारीससैजाई ऐक
पैसतजुगमैरहीया सतपुर्षमोसंकं कहीया ८४३ हंमतंम आयेततसम ऐका
हजाभावमतिराषिहैटेका संरतिसरूपहैं
मदीभाई जैसेरूपमोहि निरषहोआई ८
४४ ब्रह्मरूपमोहीकुंजांना जलतरंगमोहि
कुंमांना केवलब्रह्मऐकहंससरूपा स
रतिसरूपऐकआयेअनुपा ८४५ सह

ऐकसरतिबयांनी सोमोकुंतलमनिह
जोनी ओरधर्मदासहैमोरो ऐसा सोई
होतमनिजहंसा ॥४६॥ औरतीन्पु
मोरैनिवासा सकलसिष्टमेसोपु
सा जेदरूपऐककीनाभाई ॥ सरूपस
रूपब हुरूपबनाई ॥४७॥ पांचतत्तहंम
प्रगटकीना निहचैबासतहांमेलीना
पहीतैसबथेलसजोई आपहीआपमे
रहैसमोई ॥४८॥ गुनुबरूपअपू बल
बनाई रामकृष्णहुप्रगटहुसाई ऐह
निजरूपहमारोसांचा ईनचौमेतेजम
सबांचा ॥४९॥ जमराहैमोरसरूपा औ
रलखचौरासीबनायोरूपा तामेबासअ
पमेकीना गोपमताभेलमेकुदीना ॥५०॥
हमतैद्रसनांहीकोई भर्महीमेसबगयेबि
गोई सुरनरमुनीअदेवअपारा रिचै ॥ ब
भरमबीहारा ॥५१॥ ईनतोसिष्टभ
ई रातिदिवसभर्ममेरहैसमाई ऐ
रमैलमतैकहा अनंतकबीरसब

हा ॥ ८५२ ॥ निंद्दै चै बात ऐही प्रवांना ॥ जं
नै गा के हूं संत सरजांना ॥ सो धरमदास
मैं तरम तै कही ॥ तरम निरवै वेकर मांन
हैं सही ॥ ८५३ ॥ धर्मदास वचन ॥ तब ध
रम कहै कै कजो री ॥ साहेब सें नै बिनती ऐक
मो री ॥ अषत कथा तें मनो दिसे नाई ॥ ह
सर और न कोई आई ॥ ८५४ ॥ कबीर व
चन ॥ तब कबीर धरम बोलै बानी ॥ सत ब
चन संतन तै हैं सांनी ॥ धरम मे धोख है म
ई ॥ ऐक ही जिन अनंत पटाई ॥ ८५५ ॥
कै रैक रावै आप ऋता सा ॥ गाफल मरम
भूले संसारा ॥ भरम काल जम जाल पसारा ॥
संत है सो ज्ञान ऐक भरम बिमारा ॥ ८५६ ॥ सा
षी ८८ ॥ बेहर औ मन बि मिला सूरा ॥ बेलेब
दैहु संजांन ॥ सकल आतम ऐक है ॥ मत ब
कै बिलछांन ॥ ८५७ ॥ चोपई ८८ ॥ ऐह अष
त कथा है मनै ताकेहा ॥ बात प्रवांन सिधु कं
सदेहा ॥ ऐती अषत कथा मिथ्र कर सम
झावा ॥ दुजा कोई न जांनत भावा ॥ ८५८

सतूमनीकैजाना॥सहूमित्रकीनाबि
नहांना॥धर्मदासउँबाचहैसमरथप्रबि
चनसुनाया॥हिदाकवलजोमोरखु
८४९ हंमसतगुरकीबलबल
भवसागरमेबहूतदुषपाऊं हेकोजि
कहाकहुंबषांनी सतगुरकीमहिमाको
नाजांनी॥८५०॥गदगदबचनकह्यानहीजा
बिगसकंवलगुणरहैसमाई॥बहोतप्रे
हेतदिलमाही॥प्रचजेसयकहतल्या
जांही॥८५१॥कहैधर्मदासपुरसहीग्यांनी
॥महिमाकैसेकिमतबषांनी॥जोकछु
यातमकरीगुसांई॥सोसोसहदेहैंउरमाई
॥कबीरउँबाचकहैकबीरधर्मदास
याना बहेजाततमप्रनसेजाना हमतुम
कबीरधर्मदासा सबसुसिद्धएकैपरकास
है कबीरधर्मदासदोयमतिजांनो तत
तानिहचैकरिमांनो ज्योधर्मदाससोइक
कबीरधर्मदासकाऐकसरीर ८५२
हैसोसहूपहांना सहूसरूपकबी

हा ॥ ८५२ ॥ निर्दै चै बात ऐ ही प्रवांना ॥ जं
मैं गाकै हूं संत स्र जांना ॥ सो धर्मदास
मैं तं मैं तै कहीं ॥ तं म निर्दै चै कर मांन
हीं सही ॥ ८५३ ॥ धर्मदास उवाच ॥ तब ध
र्म कहैं कर जो री ॥ साहेब सूं नौ विनती एक
मोरी ॥ अमृत कथा तुम मोहि सुनाई ॥ हृ
सरे और न कोई आई ॥ ८५४ ॥ कबीर उ
वाच ॥ तब कबीर अस बोलै बांनी ॥ सत ब
चन संन लैहो सांनी ॥ [illegible] सरम म मेंधो षटे म
ई ॥ ऐक कही जिन अनंत बपटाई ॥ ८५५ ॥
कै ऐक रावै आप करता ॥ स्रगा फल मरम
म्हैले संसारा ॥ धर्म काल जम जाल पसारा ॥
संन हैसे जांन ऐ हु भरमें बिमोरा ॥ ८५६ ॥ स
षी ८८ ॥ पैदर औसर बिसला सूरा ॥ मेंलैव
हैबु संजांन ॥ सकल आत्म ऐकहै ॥ मूलब
फै बिलहांना ॥ ८५७ ॥ चौपई उवाच ॥ ऐक अम
त कथा है मन्ने ताकेहा ॥ बात प्रवांन मिथुक
संदेहा ॥ ऐतो अमृत कथा मिथ्या कर समझ ९
का वा ॥ दुजा कोई न जांनत भावा ॥ ८५८

सतूमनीकैजांना॥सद्गुभिंत्रकीना
न्हांना॥धमदासउबाचहैसंमरथञ्र
स्ववचनसुनाया॥हिदाकरत्नओमोरचु
८६०॥ हंमसतगुरकीबलबल
जै भवसागरमैबहरमञ्रांतै हैकजि
कलाकहंवषांना सतगुरकीमहिमा को
ना॥८६१॥गदगदबचनकहानहीजा
विंगसकेवल्गुणरहैसमाई॥वहोतञ्रा
होतदिलमांही॥ञ्रवजेसमूकछकह्या
जांही॥८६२॥कहैधर्मदासहमहीजांनी
८६३॥महिमाकैसेकिमतवषांनी॥जोक
यातमकरीगुसांई॥सोसो सहदरहैउरमांई
॥कवीरउबाचकहैकवीरधर्मदा
सयांना बहैजातत्तमनमेजांना हंमतुम
कवीरधर्मदासा सबलसिषएकैप्रकास
८६४ कवीरधर्मदासदोयमतिजांनो तत
बेताभिदचैकरिमांनो ज्योधर्मदाससोइक
कवीरधर्मदासका ऐकसरीरा ८६५
हैसोसहूपवांना सहूसरूपकवी

चौ० ३। ऐही ग्रंथ मम मित्र सुनावा। च्यार
बेद कौ मूल बतावा। छहै सास्त्र पढि करै
बिचारा। ऐसै सो ग्यान तो हूतलै न पारा। चौ०
ऐसो ग्यान अ[illegible] कहत भारी। अमर मूल मे तत
सवारी। सतसंगति करि षोज जिन पाया। स
गुर चरणां यौं मन लाया। चौ० ४। कुहा ऐ
ऐसा ग्यान ज्या घट मै। तंम सूं न्हौ धमेद
सा प्रगट ब्रह्म सरूप है। ऐक नाम बि सव
सा चौ० ५। साषी ऐटा। अमर मूल है कथ
सब ग्यानन केर भंडारा। सुनत अमर पद
पावही। कहै कबीर बिचारा। चौ० ६। चौ
[illegible]
[illegible]
[illegible] सतगुर चरणां [illegible]
[illegible]
[illegible] सुण बके जगपा
न हूं मोरा। सब बिधि काज करौं मै तोरा। ग
नैं पूछै सो मै भाषुं। भेद अभेद जुगति स
राषुं। १। थोरै मै सब ग्यान दिखाउं। ग्यान

ग्यांनसकलसंमझाई॥भक्तिभेदतोकौं
रोझा॥अगमनिगमसबतोंहिदिखरांऊ
॥संतगुरकेचरणचितधरह्या॥धर्मरायै
जिनमरिझा॥जोगपकलाजेतीजोहोई
बजो भाषिसुनोऊतोही॥२॥अवरपुन
मं॥तामैसपतदीपनवखंडा॥ता
गमनिगमनिरबांना॥सोजलसेहूनकाहू
जांना॥धा॥सोमैतोकौंदेहूंलखाई॥अग
काहूनहीपाई॥आदसरजसैंगिरती
३निसबासरपुनिकहीयेसोई॥धा॥देइप
मिलैमासएकपुरा॥आयुष्याकायेदसहुं
रामासबुसऐककहीयो॥सहस्रबाहयाहीसैं
हियोहीसेहविधिसबजगबीतोजाई॥
अगमबस्तकाहूनहीपाई॥रिषमुनीगणगं
फदेवा॥अगमबस्तकाहिंमैनभेवा॥ज
साविष्णमहादेसोई॥अगमबस्तकौंल
मैनकोई॥पंडितजोगीमुनीबुधिवंता ताव
स्तकौंदेहैनअंता॥पा॥औरजीवजेतेसुरगसं
॥सिधिसाधककोइपावतनांही॥अै

व केऊप्रस्ता दैवेंकी॥ ऊगमस्थलतागैन
होर्टकी पद्दैभक्तिकौचित्तलाई॥ ता
संछुटैमनकीकाई॥ ३॥ तनमनधनतुंम
अरपनकरिहो॥ सतगुरचरणसीसधरिहो
आपणसरबसदेहोलूटाई॥ छुटैजनम
रणकीकाई॥ ३॥ सतगुरसंपदुदानहीकर
णं॥ होयेअमरकेबहुंनहीमरणं॥ तनमन
सेतासेवाकीजे॥ सतपंथकोमागलीजे॥ ४॥
अबमैंमारगकहूंबिचारी॥ जिहचेकरलेहो
देरधारी॥ सतकबलमुलगहोमांही॥ लेक
रज्ञानमिलावोतांहीं॥ ५॥ स्वासासुरतिऐक
घरिलावो॥ तिनुगुणमैज्ञानमिलावो॥ स्वास
सुरतिएकगुणतीन्हा॥ आयेकैत्रिकुटीमै
चीन्हा॥ ६॥ येहतेसबमणसंगचलावे॥ म
हासंगतमैजायेसमावे॥ वासूफिरउंपरकुं
धावे॥ त्रिलोकीकाहुसनपावे॥ ७॥ वासूपि
रउंपरकौचढदेषे॥ महासंगतलिषआपे
पेषे॥ ताआगेसतपुर्षबिराजै॥ अनहदबा
जाअनेजौं॥ ८॥ वहांजाईकेवासाकर

हीना कोऊ दीप जैसी कोऊ मैं हीं लिम्नत
न बिषपान नम्रता ॥ बिसजं सम करत सन्मनेव
जौं फुरै ॥४७॥ संत पुरष ईस बिधि होय पाते
बिनजि म्यातहां वहीं जगावै ॥ जो ऐसे कोई
सो भाग्यो ॥ ४८ ॥ गोड़ः जोन हीन जातें ॥ ४९ ॥ दे
गएगिह पदेव मनी धामनी ॥ सब छिलि छेटे
तैनिर जनमानी ॥ सिध साध करि सिंगो जो ज
ना ॥ मन को षोज न पायौ इतना ॥ ४९ ॥ गुण छिद
मूरा मैं सब हिरचो ॥ सत शिवा सब भैरीप
चो ॥ कथत बकत सब जन्म गायो ॥ सोन सुष
मन को मैं न पायौ ॥ ५० ॥ ये हम सन्न ब्रहिषेन
को भोगी ॥ ये हम न जोगी छिलि रौगी छिहन
कहीं मन मांन तें नांही ॥ सत ऊँदे हू मन मन
हि मांही ॥ ५१ ॥ ये हम सब जन लिलि हं जैनं प्रा
ण ॥ मन हि थाप स्रोत पुन पाड़ो ॥ ये हम मन कै रस
क गीकराव या ॥ अगम भेद कोई नहीं पाव
न ॥ ५० ॥ ये हं मन जलत होई ते हि आग ॥ छि
है जन्म मर्न को धाजा ॥ सो निज भेद तिहि मैं
ही ॥ सत पुरुष के जर्व

व केऊ रहा है वैकी ॥ ऋ मम्हद लागेन
ही ठै की पद लै भक्ति कौ चित लाई ॥ ता
संछुटै मन की काई ॥ ३ ॥ तन मन धन ऊ म
अरपन करिहौ ॥ सतगुर चरणसीसधरिहौ
आपण सरब सै दे हौ लूटाई ॥ छुटै जन्म म
रण की काई ॥ ३ ॥ सतगुर सं पडदा नही कर
णां ॥ हाये ऋ मर्के बहुं नही मरणां ॥ तन मन
सेती सेवा कीजे ॥ सत पंथ को मार्ग लीजे ॥ ४० ॥
अब मैं मारग कहूं बिचारी ॥ जिह चे करले हो
भेरधारी ॥ मन कच लमुलग हौ मां ही ॥ लेक
र ग्रांन मिलावो तां ही ॥ ४१ ॥ स्वासा सुरति एक
धरि लावो ॥ तिनु गुण मै ज्ञांन मिलावो ॥ स्वास
सुरति एक गुण तीन्हा ॥ आये कै त्रिकूटी मै
चीन्हा ॥ ४२ ॥ येह तैसू षमण संग चलावे ॥ म
हा संगत मैं जाय समावै ॥ वासू फिर भौंपर कुं
धावै ॥ त्रिलोकी का दृसन पावै ॥ ४३ ॥ वासू
र गुंफ कौं चट देषो ॥ महा संगत लिष आगै
पेषो ॥ ताआगै सतपुरष बिराजै ॥ अन हद बा
जा अने जौ ॥ ४४ ॥ वहां जाई कै बासा कर

हीनाकौंक्रतीप जैंसाकोक्रमरहीं॥तिमहुं
नविंपानतमेलै॥जिमजलकवलअनेक
जौंफुलै॥४५॥सतपुरषईसविधिसोपावै
बिनजिभ्यातहावलीजगावै॥जोसैंसैकोई
सोभाग्याणौ॥अगमगोडः वेनहीजाणै॥४६
गणगेहः पदेवहरनीधानी॥सबविधिपूरे.
तैनिरंजनमानी॥सिधसाधकरिंमजोगीज
ना॥मनकोषोजनपायोईतना॥४७॥गुणनिर
गुणमेंसबहिरचे॥समतविनासबरहैसंप
चे॥कथतबकलसबजनमगमायो॥सतपु
रषकोमेंमेनपायौ॥४८॥येहमनआदिअंत
कोभोगी॥येहमनजोगीयेहिविरोगी॥बिहंत
कहीमनमोनतेनांहीं॥सबकठेषमनमन
हिमाहीं॥४९॥येहमनमनहिनिरंजनआ
पु॥मनहिथापअथापुनपापु॥येहमनकैरण
कणीकरावण॥अजमेदकोईनहीपाव
न॥५०॥येहमनगलतहोईतेहिजागा॥ब
टैजन्ममर्नकाधागा॥सोनिजभेदतिहिमें
दीना॥सतपुरषवंकेजचीना॥५१॥साषीष

कहतौ कह्यौ बिसतारि कै ॥ कितहौं नहीं स
तो ष ॥ सतनाम कौं चीन्ह कै ॥ छुटै सब ही धो
ष ॥ ५१ ॥ [illegible] कहे
बे के जू रहो गुर मेरा ॥ कैसे पाऊं अगम बसे
रा ॥ ऐसा ज्ञान सरूप न ही देषा ॥ रिष मुनी
षोज कीया सब भेषा ॥ ५२ ॥ षट दर्शन षोजै
सब ग्यानी ॥ येऊ बात काहूं न दीगंनी ॥ च्या
र बेद षटसास्त्र सुनीया ॥ हम सा ग्यान न का
हू गुनीया ॥ ५३ ॥ अवरन शब्द सम सो पुरा
ण ॥ चार संप्रदा बांवन द्वार ॥ इनका ज्ञान
षोजे हम सारा ॥ और जहां लग कही ये ग्या
ना ॥ सो हम सुंपनै मन मै जाना ॥ येह बा न्कू
टपटी कही ॥ कौंण भांत की जिये सही ॥ ५४ ॥
कैसे जीव परषं चै देसा ॥ साहिब कही ये अ
मर देसा ॥ सोई करौ परष चै वा जागा ॥ अब
मेरा मन इसुं सो लागा ॥ ५५ ॥ अवर ज्ञान नि
श्चै नहीं आवै ॥ बसत हमारी कैसे पावै ॥ सोई ब
त अब करौ हो गुसांई ॥ अब मेरै मन संसै ना
हीं ॥ ५६ ॥ ताहि कारण दया हम की ना ॥ सबै बि

हंसकुंहंसचीन्हा॥कहै।विचारकौ।एसुन
मैरा॥श्रवागवनकाटुटाकोरा॥४०॥येहजो
।सत्तगुरहंसआये॥हंसछूटनसबसुषपाये
मनसुकामच्छगतिहंसपाई॥तमसाहिबनम
कोनसहाई॥६०॥हमारीगलिमतकिन्हहन-
हीपाई॥सोसाहिबहमदीननमाई॥ग्राहिअं
तिमैंजांणीस्वांमी॥हम्हीसबघटअंतर
हे॥साषी५॥कबीरउवाच॥कहैकबीर
जसैंपुर्बदयाभईतोये॥सतनामकुंकुंजकै॥
रहौअमघरसोये॥६२॥चौपई॥चू॥ईती
अगाधरमेणीसंपुर्णस्तस्ही॥अथसेउसमन
कीष चईलिषते॥साधुआयेअगमसा॥पसोसं
हिकीयागवन॥गेरिगेरिक्रफतफिरै॥समनका
परकौन॥१॥आयेद्वारगडेभये॥तबहिसाकी
न्हीसैन॥तबसमनसुरसोडिकै॥देषीअप
नैनैन॥२॥समनउभिसनेहकरी॥ईसणका
लदेहा॥सुषहिपायोनाबनै॥सनसुषहो
सुषदेह॥३॥समनसेरीसांकडी॥
टलियेजाये॥साधआयेपीतक

व्यासजन ५

माथा जा जैसेन कसे नाकन जा जैसेन ब
पानीबुण नर्डेत है बहोरन चढइच
२३ समत्मातेसमन चत्या १घमेदो
जाये जोकै हम चोरीकरी सोपहचै
आये २४ बाजारबहदो ये षि
आईनाहि वेदेतु चोरीगये तहांभइ
रि २५ तबही समनआयके पोतिप
सो आये वीयादेषिके रोवही समत
सीधोत्ककाये २६ जाकिकीवाड
षियो सीसछिपावेतकंथ मोकुं
का चीगिनी मते मते हो संत २७
कहैनी कांकीया आन त्यायेक रसी
बके साधपधारसी कहसी सबकसी
२८ नी कीरवतदीसैनही आस्तनि
आवे सेर्डेसीसवरमेधस्यो
नोनिम वै २९ हमजानत रोवही
तेतीपणघटिजाये नीकीतोकृतीप
[illegible] ३० मां
बिमुषपधारता तब [illegible] हेनीथीय

॥ ा॥२४॥सम

नकीसङ्करोईये॥कीसकाकीजैसोग॥सेतै
वासस्रायेको॥सखैवटाउलोग॥२न्यास
मनवास्रतकैकहाकहिसमरीये॥ऋकीक
रोवुश्रवा॥मूवानकोईवाहडा ञ्जापा
मोजासीसवा॥ररोईतनीवहैतुमोजन
मयो॥बीतीरजनीञ्जाध॥ञ्जा गोपाः
सेतजना॥उगेसौप्रसाद॥२४॥कहोर
मनसेउकहा॥जिनकोमसीञ्चगाथा॥ञ्ज
वतहीचरणा॥प्र॥ञ्जवनहीदीसे
भा॥२५॥कहोसाधोकीसंतकहा॥सेराम
नकीबात॥करेवतनाहीजीवपरे॥वीर
२ हेतेञ्जावतजात॥२६॥समसाधोसो
जनकरो॥वेप्याहाटूसेनाही॥लालाज
हिदासाही॥२४॥
वहदोकहोदाय
॥सोरकरेसवलोग॥२५
॥मतिकोईव्रकोव

ज्ञ१ करै भोजनपोटणकीयो वीतग
ईसवराति पहरदोपे जातांथको तबहू
वेप्रमाति ४० साधसवारेउठिचरे मय
सोकीयोउं चारसमनसेउं कह्योगयो मिय
न चलतीवार ४१ सेउंजगमेसचरि
गयेंदमवीचमिनहार वाकोमीरणोङ्
लमदे मास्योयाकेधार ४२ तबसाधउं
ठिबोलियाकैसेंकहीतमवात सेउंकी
णनमारीयादेखो हमरात ४३ तब
साधुआयेपांवुना पऊपगारकीयोमसत
गतोघरमेंपयो धड-लतीदीयो ४४ रे
समनसेउंमारीयो नैनकेआइनमहरि स
धुऐसीनाकरै तमतोकरीकहरि ४५ म
स्योकेहरनांभयो मेरेहोयेअकाज सेउंके
पणनिभगयो रहीसमनकीलाज ४६ से
उंचंदनकोबिडो सीचकीयोसमर्थे काट
तहीकसवैयानही वहसऊनयेहत्थ ४७
तबसाधुऐसैकहै सुनोसमनएकमन
साधसेवैहरि भजै जाकोजीवणधने

धीचा॥पुर्षे टाणस्रब लिवसे॥सवदीनबे ण
ज करा ये॥समन वेदीचरबसे॥जिनचर
श्रेसोभाव॥धणी बात कहे तप छडे च ल्मा
ता॥षड पेपड्ड च्या जाये॥ गरह्लसो श्रेरे
दीसा॥पंथ दीसादोये पाये॥५०॥ हिर्दे हरि
जन चलत सो राम कहे रही॥लल
मरदे प्रेमप्रकासीयो॥ लिषनको रेजे
डि॥५१॥ षड सं लेसुनम ष मयो॥ जोडे दीमे
हाथ साधा मूष प्रकासि दोो कि हीस मनदे बा
ता॥परसी सेम्यावोम हसी साघ व ता वोलाये
ओर भेद तम जिनके हो॥ ब्रेराग्य चोम्ब
या॥५२॥ साष भये जोये कते॥ षड प जोडे
सीसा॥ रामनाम रस न्यार चो॥ किरिपा करीज गदी
सा॥५३॥ तीन पहर लट कारे हे ओ॥ सीसवी
नैतनो जतीसती की पार षा॥ सीलत भये
५४॥ सेउ जागत सीक हो॥ सी ली सुनी
॥ राम कहो सब दीन मलो॥ पेरो मलो दीनम्बा
 मै दे जो
 कहा
नि दोडे
 बात नगर जाणी नर सुन
 दो डे देषन २ गावत देनर

राग॥५७॥सकलऋाये चरनोंपड़ै॥महि
माबढीअपार॥मंगलजसरघुनाथको
... ॥५८॥तबरांमरायेकिपा
करी॥जरकीयासबडुष॥राजाआये माये
पड़ो॥भयेसमनकोसीष॥५९॥पुरपाटण
मैनिपजे॥दोन्यैंहरिकासंत॥सेउसमन
कीकथा॥बनीदासअनंत॥६०॥ ...
...सेउसमनकीप्रचई...पुरण॥... बी
... साहेबकीगोष्टी... ॥गो... बा
...॥गोरषकहैस्वामीजी॥कहाहमसेवा
कहाहमपुजा॥मोहीदेहौबताई॥कास
हेहमचलिआये॥तुमरीसुनीबडाई
१॥कबीरकहैअवधु॥मनहीसेवामनहि
पुजा॥मनहीतूं॥या भोगी॥पुणब्रह्मसब
लघटपैलै॥हममनजाणै जोगी॥२॥
गोरष... जी॥मनमैजांनपवनप
हिचांनै॥बीरजबंधकरिबांधूं॥ओरदेव
थरकरिजांनै॥सुरतिशिजानमैसाधुं॥३
...कबीरकहै... धु॥बिंदराषांसबोव

कहावै। पटरा जावै रैलै। दुषं बीरो दहीन
मै मारे। वाका संग मैं ले लै। ४॥ गोरष कहै स्वा
मी जी॥ बिंद राखां जम कैसे मारै। ला ला हीय
जो होई। मष मां षसोने नाड़ैसो। कुंड पड़न
ही कोई। ५। कबीर कहै अवधू। ढलां दे येसे
रो जक जावै। बेद वात्तमारै नांही। व पाडे वा
सी संकुं दीजे। सा देव है सब मांही। ६। गोरष
कहै स्वांमी जी॥ बिंद मां दूहीन होबी गेडे।
सीधा नांम कहीजे॥ रोग दोष आपे नहींगी
डी॥ ऐसा जस लहीजे॥७॥ कबीर कहै अ
वधू॥ जल नहीं रहता वंकू भला॥ ना कुंप
वन माई॥ रहता नांम और है गोरष॥ ए कहते
रहता नांही॥८॥ गोरष कहै स्वामी जी॥ सज
माया मोहि जलकी दीसै॥ कालासेंस से ठो
ला॥ जल साधे ते पुरा जोगी॥ अजर अमर
करि मेले ला॥९॥ कबीर कहै अवधू॥ जल
बीजासी॥ पवन बीजासी॥ जासी चंद अरु
सूरा॥ नहीं पुर्ण ग्यांन प्रमपद पाया॥ ता तै रहा
अधूरा॥१०॥ गोरष कहै स्वांमी जी॥ आदि ज

लहै॥ जलकी काया॥ जलका चहूंदीस चाला॥ जलका ततसै जमी सहमाण॥ मैज लका गोरष बाला॥११॥ कबीर कहै अवधू ओला जल है ऊलीकाया॥ ऊला चहूंदी स चाला॥ करम करता अगम अगोचर॥ ऊं ऊला गोरष बाला॥१२॥ गोरष कहै स्वामीजी हम तो करता जल ही जांनें॥ इतीया इसैं ही ब्रह्मा बिस्न म्हेसर देवा॥ जलमें रहा समाई॥१३॥ कबीर कहै अवधु ब्रह्मा बि स्न म्हेसर देवा॥ ये हनि तका आवे जाई॥ ऐसा भेद बि चारो गोरष॥ प्रमतत मिल्ल्य ई॥१४॥ गोरष कहै स्वामीजी॥ जलमें जो ति हो तिन ही व्यापै॥ जल ही जल लेगा या॥ नो नाथ चौरासी सीधा॥ जलमें जोग मा या॥१५॥ कबीर कहै अवधू॥ जोग न जां जुगति न जांनें॥ सहज समाध लेगाई॥ बि सूरज चंद्र भया ऊजियारा॥ प्रमतत मि जाई॥१६॥ गोरष कहै स्वामीजी॥ जोग ग कै बडा अंचंभा॥ मोहि अंदेसा भारी॥

सोवीरजंत्रीयासंगदीना॥सद जैवाजीता
री॥१७॥कबीरकहैअवधू॥सद्गुरु की सेना
सद्दीदेना॥सद्दीघरपाया॥छिनासद्गुसंस
रीडनीया॥मथिमथिमूलमूमाया॥१८॥गो
रखकहैस्वामीजी॥मायाकेसंगमायाबिनरो॥
पातपातसं फुटे॥सिंचनोंमलोनहीपडे
गा॥पाकबेलिसंटुटै॥१९॥कबीरकहै
अवधू॥सिचभयापलसिंचानाही॥छिरि
संगणकी आस॥न मभस भरके भवसा
गर॥लष चौरासीवास॥२०॥गोरषकहैस्वा
मीजी॥भेषसतीछांडरवनमैषेग॥सबैबा
सनौत्यागी॥आदिनाथसद्दकेपुता॥
मेस्तगोरषबंभि भागी॥२१॥कबीरकहैअ
वधू॥घरमैजोगभोगघरमाही॥घरमैअस
रगलागा॥घरमाहीपुरागुरपाया॥जरामनेमे
भोगा॥२२॥गोरषकहैस्वामीजी॥ब्यावर
कीपीडबांझनहीजाणै॥कहाजाणैमृण
कैसा॥भीज्याबिना भेदनहीवाके॥सूका
लकडजैसा॥२३॥कबीरकहैअवधू॥सु

कालकंटु जलप्रचारै सतगुर कै परुपका
रा ऐसा भेद विचारौ गोरष उतरौ भौ
जे पारा २४ गोरष कहै स्वामी जी जोग
जुगति है जुग सूं न्यारा भाग बडा सोई पा
वै जो ये ह जोग जुगति कू पावै तौ उ लषि
जू लीन ही आवै २५ कबीर कहै अवधू
जोग जुगत समृति न होई मेरा मन कौ
मानो पुवेद सास्त्र को मारग ताका ममन
जानो २६ गोरष कहै स्वामी जी तुम
बाही जोगी जोग कहि रहै भाई जोग ज
गति मेचट भेदया घट मे करी कमाई २
कबीर कहै अवधू जती ह्वा तो मुक्ति
पावै सिंगल दीप समाना वैउ धरे तो च
मबीउ धरे हम सूनि सूण भया हराना
२८ गोरष कहै स्वामी जी भोग आरंभा
जोग न होई बात करो तुम ओ ही ऐ
मता साधका नाही जूणई डीकी बो ली
२९ कबीर कहै अवधु हम निरगुण नि
गुण के बालक तुम कहा भेद पदि चा

आदि भक्ति हंम करें [illegible] ।।गोर [illegible]
जोंनो।।३७।। गोरष कहें स्वामी जी।। [illegible]
कंद्र जोगी।। विजरसरीं [illegible] या।। [illegible]
लैजंदा मछी।। ऐसा पैडा पाया।।३८।। [illegible] गोरष
ते अबधू सके गानी [illegible] ।। [illegible]
सब ब्यो हारा।। हस [illegible] में जरना [illegible]
सब सम्यारा।।३६।। गोरष कहें स्वामी [illegible]
पहा डां धुणी हमारी।। नित जागे [illegible]
न लोक सूं निमै बसे की [illegible]
र३।। कबीर कहै अवधू।। [illegible]
णहोई।। [illegible]
तेराबन मैं।। यो तो मुक्ति [illegible]
स्वामी जी।। हम ब्रह्मगिन्यानी।। [illegible]
बसं है लटा [illegible] जोगी।। गोरख बाला।। स
हविचारत्ती चाल्या।।४१।। [illegible] कहै अवधू
ब्रह्म चीन सो ब्रह्मगिन्यांनी।। सब घट एक ही
जोंनो।। आपही मां दिपहि जांनै।।४२।। गोरष क
स्वामी जी।। मन पवनां मैं वसि करि राष्या।। जा
लमठ छाया।। पांच तत्वां ए ज्यग तसं

पि3 बुद्धं ड र चन हारे कं

कासकहु जलप्रचारे सतगुर मैंतु पका
रा ऐसा भेदबिचारो गोरष ऐतरो भो
जेपारा २४ गोरषकहै स्वामीजी जोग
जुगतिहै तुमसेन्यारा भागबडासोई पा
वै जोयेहजोगजुगतिकूं पावै तौतुल
जू लीनहो आवे २५ कबीरकहै अवधू
जोगजुगतसमरत्तिनहोई मेरामनक
मानो पूर्बदसोंकोमारग ताकामर्म
जानो २६ गोरषकहैस्वामीजी त
बाहीजोगी जोगकठिणहै भाई जोग
गतिमेषटभेदध्या षटभेकरीकमाई
कबीरकहै अवधू जतीहुवातोमुक्ति
पावो सिंगलदीपसमाना वैठेधरेतो
मबीर्जधरे हमसूनिसूण भयाहंना
२८ गोर्षकहैस्वामीजी भोगआरंभ
जोगनहोई बातकरो तुमओछीमे
मतासाधकानाही मूणई डीकीबो
२९ कबीरकहै अवधू हमनिरमणि
गुणकेवालक तुमकहाभेदपहिचं

आदिमक्ति हंमकरीकुं माई।।गोर्ष [illegible]
जांनै।।३०।।गोरषकहै स्वांमीजी।।[illegible] मोदि
बुंइ जोगी।।बजरसरीरबनाया।।उ[illegible]है नीर च
लैजहांमछी।।ऐसापैडापाया।।३१।।शक्ति बीरक
है अवधूसरकै गानीरमछी अंतमरैसी।।येऊग
सब ब्यो हागा।।हमधरतीमैधरतीहम मै हमतौ
सबसन्यागा।।३२।।गोरषकहै स्वांमीजी।।पिं[illegible]
पहाडां षुणीहमारी।।नितजा गूंनहीसरता।।ती
नलोकहूंनिमैबसेकीन्हा।।मैगोर्ष अवधुत
रा।।कबीरकहै अवधू।।गिडापाहाराक्यागु
होई।।मेंडानन इसावो।।हीरणहोज बहो
रावनमे।।यौं तोमुक्तिंपावो।।३४।।गोरषकहै न
ामीजी।।हम ब्रह्मगिन्यांनी।।सब संकोंनी।।स
र्ब तटाहातमं।।ष्ष्रवा जोगी गोरषबाला।।स
मैचारहीचातं।।३५।।कबीरकहै अवधू
नचीनसो ब्रह्मगिन्यांनी।।सबघटऐकही
आपहीमांहिपहिचांनै।।३६।।गोरषक
सीजी।।मनपवनामैबसिकराषा।।जायेजं
ग छाया।।पांचबांणजगतसंजीत्या।।प
पिंडबुसंदर [illegible]

दनिरबांण ही पाया॥ ३७॥ कबीर कहै अबधू॥
चंद नही सूर गिगन नही धरती॥ जहां नहि अ
रतारा॥ जहां नही पांनी जहां नही पवनां॥ जहं
अस्थांन हमारा॥ ३८॥ गोरष कहै स्वांमीजी॥ गो
षकहै तू म्हगुरवा स्वांमी॥ अ मैरी क्रमोदिद
जे॥ हंम कैं णदेहकौंन सरीरा॥ ई कामभेकहिजे
कबीर कहै अबधू॥ सपतधात का बन्यापींज
रा॥ मांहि निरगुन बीराजे॥ योतो भेद अगम
है गोरष॥ उलट निरंजण गाजै॥ ४०॥ गोरषक
है स्वांमीजी॥ भली भई तुम हम सूं मिलिया
सतगुर भेद बतावो॥ हम सतगुरु हम सिष तु
मारा॥ तनकी तपत मिटावो॥ ४१॥ कबीरक
है अबधू॥ सूछम बेद कै पैडै लागो॥ तुम बिर
ग सहु लोलावो॥ कहै सहु सो कांनै षेलो
जद सीदा सुष पावो॥ ४२॥ ततघोटै तार
लगी॥ हरडीया की तीर॥ गोरष का संसा मि
सतगुर मिलै कबीर॥ ४३॥ नौनाथ चौरास
सिधा॥ कोई न देष्या पीर॥ गोरष का संसा म
या सतगुर मिलै कबीर॥ ४४॥ सतगुर मि

कबीर॥ भेदसबदी यामताये॥ग्प्रस [illegible]
मरगथा॥ सोपलमैंदीयाणकूप्यारे॥ [illegible]
श्रीगोषेकबीरसादेबक। गोष्टसंपु-ण॥ [illegible]
ग्थरजनामा॥ करत कुं एकारमें [illegible] को
ग्रधा॥ बिंगकीजीरे गुहार॥ बेगी [illegible] दा
लाये हो॥ बडेबके [illegible] संतन [illegible] की
यो॥२॥ ग्रोप्रनजन [illegible] जिनपजैदी [illegible]
हो॥१॥ जिनके डयकु [illegible] प्रतग्प्रापद [illegible] ति
कोकलापमेटो डमद [illegible] नदापर [illegible] सा
गरदिवा ऐहो॥२॥ सेतबंधबा [illegible]
चंदबिकलभये [illegible] [illegible]
यांनकुं तिरायेहै॥३॥ द्रापरतन [illegible]
सतारोन्यपवध्यातबिषकुं बिडार [illegible]
किंकरतेब चायेहै॥४॥ पंडुकेकुलमा [illegible]
कलजगपके [illegible] कोहा॥ बहेमंसैकीधारदा
रसीसभं [illegible] ये [illegible]॥ तिनकेजगपसाखा
बिमास्यो डमद [illegible] तेलकल मुपेंनमैंजे मे
जैकार्तचरायेहै॥६॥ कल [illegible] तनधोरसो
रेकोजबकुजीवकु [illegible]॥५॥ [illegible]

नों· करत्तकलापहर [illegible] हारेरसाहृदंपत्त्व
त्तजोर॥२४॥ ईन [illegible] पुत्रमास्याहैमोरा॥ह
हृत्तसकरवभोरा॥हमरनमैस्रभागे॥
५॥ तबबोलेसत्तनामबैन॥ साहृहृदे
षचैन॥ त्तेरोसतमिलैश्रैन॥ तजोकुमा
काग॥२६॥ सहजअपारतीर्थनमानो॥स
हसतदीयापांन॥ तबबालिकअगिर
न॥ लोकसोमाअपूरराग॥२७॥ देमवरम
नचित्तभयोअानंद॥ मेटैसबकात
दंद॥ छोडोसत्तनामबंद॥ चूकबगस
मागीऐ॥२८॥ धरमदासदासांनदास
सतगुरपदकंजआस॥ सत्तनामजप
खास॥ प्रेमअमिरसपागे॥२९॥ इतीश्री
अपरजनांमसंपुर्ण॥ सबकोगणतीसैं
॥३०॥ सर्वसंतनसबीनतीमोरी॥ दु
रोअपकरसीजोरी जोहैसोसिरधी॥म
मदोषनदेरी॥ छुद्रा॥नंगरब्रदपुरधांमसु
भैसंतनरसनअपुरणां॥ग्रंथलीयोसा
मधदेवी॥ मंगलांनदास॥ रघुसास॥१॥

गुसांईश्री स्यामलदासजी
॥श्री गुसांई गोरधनदासजी
को लेक जालेके ॥पोथीउतार
प्रस्तरह्ना तो लीषी ॥संमत॥॥॥
मासकातिक ॥कृष्णपक्ष ॥वा
री चलि च्या जिनकुंडमै तत्व
प्रहोये ॥सत्तसाहेब ॥सत्त
हे भगवानदासदासोन
रीनाघड़ीकां भ्हं तदेवादास
नीलग्रंथ ॥उग्रसैरलोलि
गाईजमलाल ॥कबीरसाहे
बभेदसार लिषते ॥चौपई॥
रनवाच ॥पांनी तत्त का व्यवक है हो बि
चारा ॥सावधान होसुनियो सारा ॥पवन पच
सीकछु वषांनी ॥ जाकी ज्यारि अतनहीं जा
नी॥१॥सो गंथन मैं भाषि सुनाई ॥काकछु के हि
रलै साधु पाई ॥उरस अंस तैं उतपनि भयउ
भिन भिन गेय नमैं कहेउ ॥२॥सम मैं पांनी पुत्र
तकी रचना॥

१३

चीन्है भेदकौं ॥ उत्तरै भौजलपार ॥ २ ॥ चौ
ई ॥ अब पांनीका कहूं बिचार ॥ पवन
दलै उत्तरै पारा ॥ रंग छत्तीस भये है जल
का ॥ ऐक बूंद सब ही मैं हलका ॥ ४ ॥ वा
बुंदतै उतपति भये ॥ अमीबुंदक
हू नहीं लहै ॥ अमीबुंदका अगम
चारा ॥ ताकौं कोपावै संसारा ॥ ५ ॥ अमी
बुंदकौं जांनै कोई ॥ पवन भेद पावै गा
ई ॥ पांनी बूझ्या बिरला महेसा ॥ पांनीबु
रं मसक्ति अरसेसा ॥ ६ ॥ पांनी पांच त
उपाया ॥ तीन लोक मै ऐही छाया ॥ ऐ
बही मन की उतपांनी ॥ सौ कोई पावै
रलै गपांनी ॥ ७ ॥ समै ॥ पांनी पवन की
कहै ॥ च्यारि लोक बिसतार ॥ जांनी है
सो पावही ॥ तासपुरस निन्यार ॥ ८ ॥ चौ
पई ॥ मूलसरत्तिपुरससंग्याई ॥ तासैं
बबाजी फैलाई ॥ बाजी कीन्ही अनंत
अपारा ॥ कहां लूं गिनु वार नही पारा ॥
करता कालन कीया बिसतारा ॥ लय

चौरासीबारन्[illegible]
निकयिकुं॥ [illegible]
॥१०॥सुरतिस[illegible]
हीलीनैगगा[illegible]
हूतसबकोइ॥ [illegible]
साई॥११॥जो[illegible]
परमपुरससोड[illegible]
थैजोकोई॥ [illegible]
१२॥सुरतिसारवसत्तकोपावै॥ [illegible]
रकोसमैमिटावै॥भवसागरसौ[illegible]
आई॥ऐसीसुरतिकंजे जो [illegible]॥सा
सारसहूहैसिखरपहिं[illegible]
सतगुरबिनानपांवहीं॥ [illegible] जो
कोई॥१४॥ चौपई॥ [illegible] पा
कडुं॥निमषसांहिंप[illegible]
कोइ भेदनपावै॥ [illegible]
यलथावै॥१५॥ [illegible] निज[illegible]
सबतेसीसनहीपावैपारा॥नाभिकवल
तेसुरतिल्योलावै॥गगनि

काकरोहेबिचारा॥ भांतिभांतिकेघं
टसंवारा॥ पांचौतजोपवननिजगहेकु
सारनांमभेदहमकहतहेऊ॥ २९॥ कहै
कबीरसुनोधरमदासा॥ सतभेदको
नेकुप्रकासा॥ गुपतनांमहमकोंकहि
दीन्हां॥ ताकरभेदनकाहुचीन्हां॥
३०॥ ऐहीनांमराखोतुमगोई॥ ताक
रभेदनपावैकोई॥ सारनांमपावैनिज
सोई॥ जाकेसतगुरपूराहोई॥ ३१॥ अग
गमनांमसबहीतेन्यारा॥ धरमदास
तेपहुचेपारा॥ जोकोइहंसनांमनि
जपावे॥ सोईहंसलोककोंजावे॥ ३२॥
नामबिनामुक्तिनहीजाई॥ सोहमतो
कोंदीन्हचिन्हाई॥ ऐहीचहुनचीन्हि
जोपावे॥ आवागवनबोहोरिनहीआ
वै॥ ३३॥ बारबारमैंकहुंचिताई॥ बि
नानांमसबजमपुरजाई॥ नांमकहेऐही
प्रगटनांही॥ ऐहीनिजभेदहमारेमांहि
॥ ३४॥ तेरेजीवकाजमैंकहीसति

रत्ती तियेही है सही॥धरमदास ऐही सार बि
चारा॥भवसागर सें उतरो पारा॥२४॥सभें
रहस्थिर निजरूपत है॥कहैं भेद तोहि
सारा॥सोपीवै सो बांचही॥नहीं तो सब जम
के द्वारा॥२६॥चोपई॥सब्द सब्द सब कोई ब
षांनै॥सब्द भेद कोई नहीं जांनै॥ग्यांनी गू
नी कवी स्तूर पिंडत्ता॥सब ही कहै सबद
की मंडित्त॥२७॥सब्द सुरति आये संसारा
आपही समरथ रहा निन्यारा॥सब्द अग
मगम पावै नांही॥रलिरहे सब भ्रम हीमं
ही॥२८॥पांच सब्द उरसई चारा॥मूल भेद
है न्यारान्यारा॥पांचऊ सब्द पुरस सें भये
ऊ॥जासें भये सो श्रोजन लयेऊ॥२९॥
पथम सबद सोहं जो कीन्हां॥सब घट
मांही ताकर चीन्हां॥सब्द ऐकररंका
रई चारा॥ब्रह्मा बिस्नु जप ही त्रपुरारा॥
३०॥वो ऊंकार सब्द जब भयेऊ॥तिन
सब्द ही रचना करि लीयेऊ॥सब्द सरूप
जन जांनां॥जिन ऐही कीयो सक

किरहेसबज्ञांनी॥ कहांरेकहूंपास्नहीको
ई जेआयेतेगयेबिगोई॥६८॥कोईकह
सलोककौंगयेऊ॥सतगुरभेदसुरतिनि
लहे॥सतगुरसतगुरजगतिबखांनें॥स
तगुरकाकोईमरमनजांनें॥६९॥सतगुर
सोईगुरज्ञांनप्रकासा॥तासैंमिटैकाल
कीत्रासा॥सतगुरसोसतगुरदाता॥त
कीगतिनहीलखैबिधाता॥७०॥संत
जगतिकेगुरुकहावे॥त्रदेवासोभेद
नपावे॥कहैकबीरसूनोधरमदासा॥
दिढप्रतीतकरैबिसवासा॥७१॥नू
सुहूरमलसबहीको॥पायेकारिजहा
येहैजीवका॥नहीतोत्रोरअनेकउपा
वा॥करिकरिथकेलोकनहीआवा॥७
२॥येकहीनामबिनमुक्तिनपावे॥जो
कोईकोटिजतनकरिधांवे॥सोहंनाम
हमारेपासा॥पावेसतलोकहोयेबासा
७३॥बिरलाहंसपावेहीनाई॥सोमैतो
सैंदीन्ह चिन्हाई॥कहैकबीरसूनोंध

मदासा॥सारनांमबिनहंसनिरासा॥संमें।
धा॥कहैकबीरधरमदाससें॥ल्हैहोनांम
समारि॥नांमबिनांबूडैनहीं॥कालबडो
बरीयारि॥७५॥इहकायाकालपसारहै॥सार
नांमहैडुरि॥बिरलाहंसापावही॥होईगंपा
तीजरिपुरि॥७६॥ चोपई धरमदाससतिमें
नायौ॥रूपतिबस्तप्रगटकरिराषौ॥स्वास
ऐकघांनहैमांहीं॥न्हस्वासासैंकरोलखाई
न्हस्वासान्हअक्षरलोई॥सतगुरभेदक
होवैसोई॥कालमहाकालहैदोई॥महाप
रलैमैंरहैनकोई॥७८॥तबरहीहैन्हअक्ष
रसारा॥सोईसबकोसिरजनहारा॥आदि
सक्तिनिरंजनदेवा॥सिधसाधिकलागेऐह
सेवा॥७९॥अष्टकरमकेदाताहोई॥कम
करेभुगतावेसोई॥न्हअक्षरहैअलषअ
नामी॥सक्तिनिरंजनकेसोस्वामी॥८०॥पां
चततगुंणतीनसंवांरा॥सोऐहीआदिसक
तिबिसतारा॥तीनलोकसक्तिसंवांरा॥
चोथालोकपुरसहैन्यारा॥८१॥ चोथा

लोकवाही बिसतारा॥ पुर्सपुरातम अपुरुष
पारा॥ चौपै॥ कहै कबीर धरमदास सौं॥ ऐही नि
ज भेद हमारा॥ जो पावै हंस नाम कौं॥ धरै
न जग अवतारा॥ ८२ चौपै॥ सार नाम गहि
उतरे पारा॥ बारबार मैं कहौ पुकारा॥ सब सौं
कहै कबीर कबीर॥ कहे न मिटै काल की
पीर॥ ८३॥ नाम हमारा जगत — सब कहै
ई॥ भेद हमारा न कोई लहै ई॥ मेरो निज
सरूप है सोई॥ ताकौं चीन्है बिरला कोई
८४॥ मेरै निज सरूप कौं पावै॥ सोई हंस
लोक कौं आवै॥ धरमदास तेरै बड भा
गा॥ तोकौं दीन्हौ अटल सुहागा॥ ८५
धरमदास मैं कहु पुकारी॥ नाम बिना नहिं
मुक्ति हमारी॥ ऐही मैं कहु भेद कौ बा
णी॥ धरमदास तुम्ह है बड ग्यानी॥ ८६
बानी कै बहु वार न पारा॥ भेद सार सब मैं तत
सारा॥ बहुत जीव अटके जम द्वारा॥ त
ब मैं कहौ भेद निज सारा॥ ८७॥ सति स
हू परतीति लगावै॥ मनि वदेह सोई

ाकरदी।तासौंक
।।निराधरनोंर्भें
बहुरिनआवे।।।
कीन्हा।।सहदम
।।८ ए।।मेदहमा
प्रहरनांसहैस्पारा
ाला।।धरमदा
।।च्यास्यौंगूरहैज
मैंतोसैंकही।
ेकाजहोईसोपद
ना।।एशाधरमदासओरलहतेजी।।
तुजरा,ऐबंकेजी।।च्यारौंगूरजगत
कएिहारा।।नांम भेदसौंउत्तरैपारा।।
रा।।नांवसबदनगौहराव।।मेरानां
काहूपाव।।धरमदास तौहिंदीन्ह रन
षाई।।जबकरोकालसौंजाई।।एडाहोऐ
संकजीवमुक्तावो।।छ्रमराघरकौं लेप
हंचावो।।ऐसेंकरोजीवकाकाज।।सब

ष्ट्वादस नांम पुर्सपरमांनां॥ द्वादस नाम जीव
के जांनां॥ ऐहा चौबीसौंद कपिहारा॥ काटै
कर्म नरक की धारा॥१०७॥ ऐही सुमरन ऐ
ही ज्ञांनां॥ ऐहा पूजपा ऐही ध्यांनां॥ ऐही
भेद प्रगट कहूंनांही॥ धरमदास राषौम
नमांही॥१०८॥ अष्टपुर्स नाम कौबरनंन
प्रथम पुर्स के नांम उचारूं॥ ऐक नाम कौक
रै दीदारू॥ सति नांम त्रय कैं कहि दी
न्हां॥ ता का भेदन काहू चीन्हां॥१०९
पुरुक है नाम है अगम अपारा॥ सोई सब
को सिरजन हारा॥ अजर नांम अमृत
निज नांमां॥ गगनि मंडल कत्ता कर धं
मां॥११०॥ अमोल नांम पारस सौ पारा
बिरला जन कोई लषै हारा॥ अभै नं
म निहगमना का॥ पायै कारिज होये है
जीव का॥१११॥ सतिसि [illegible] अघुदित जिन
जांनां॥ ता का अावागवन निसांनां॥ अ
मोदित नहि चेत निज नांमा॥ द्वादस नां
म सिरै निज धांमां॥११२॥ द्वादस नांम

हंसा लेई॥ करम भरम सं छैल जिडेई
है कबीर सुनौं धरमदासा॥ छादस नाम
से प्रकासा॥११३॥ अथ जीव का नांव रनेन
दस नाम जीव के सारा॥ ताका अर्थ सै
कूं बिचारा॥ जीव स्वास सरति ग्यांन
मन ऐसी बिधि जांन्यूं॥११४॥ सिव
र हंस कहीजे॥ ऐही अष्ट नाम का भेद
नहीं जो॥ वो कूं सोहं सुकि अभिजांणां॥ ता
को है अजमपुर हांसां॥११५॥ ऊंहीं पद
पद अंसी पद लेखा॥ छादस नाम
देषा॥ मन अक्रूद सरति ऐक घर लू
आप मधुर ससौता सौधरि का॥११६॥
बिधि ध्यान धरै जो कोई॥ स्रति धुसैवरप
चैसोई॥ कहै कबीर सुनौं धरमदासा
अद्धर मैं की ज्यौं बासा॥११७॥ बिर
जो नै ये द्दकार भेदा॥ जो नै मिटै जगत प
दा॥ नाम न्हअक्षर न्यारा भाई॥ ता
समाई॥११८॥ तहां ही सो सब
कूं॥ तीन लोक मैं दीनौं जो॥ जो

...नाहीं॥ जीवकीसंसै
...नाहीं ११८ ॥ जोनिजसारनामकों
...ते जीव सतलोक मैं आवहीं॥
...कूअवरहै नाहीं॥ सोमैंतासूं दि
... ११९॥ ब केवडे सिधिसाधिक
...के॥ बरेतयांने तेसब भटके॥ ररं
निरंजनदेवा॥ ऐसे ही निरगुनकी साध
वा॥ १२१॥ इनमैं भटकिरहे सब पं
ऐसेहीवस्तकू गमसबजांनी॥ जन्मम
छूटैनहीं जीवकी॥ बब
पीवकी॥ १२२॥
इनमैसकलनरके
वैकोई॥ बोजि
कहैकबीरगु
काहूदेरा॥
वैबिसरांमां॥
कहैकबीरस
२२

ताई॥ऐसीनामबितजमकुरंजाई॥ऐसीनी
ममूलनिजसारा॥जोपावैसोपहूचैपारा॥१
टीकहैकबीरहंसनेतेराई॥गुप्तभेद
लेहूचढाई॥सनिधरमदासभेदकीसांनी
तहांनरूपरेखनिसांनी॥१२०॥जहांनही
क्रिग्रवतारा॥पारब्रह्मपदसोहैन्यारा
हांनहीग्रादिनिरंजनदेवा॥ब्रह्माबि
मदेसूनसेवा॥१२१॥जहांनहीचंद
ग्रवतारा॥ग्रगमपुरूसबहीतैन्यारा॥
चतीनतहांनहीजाई॥ताकीगगन
पाई॥१२२॥सोहंवोऊंररंकारा॥मन
पौनग्रगमतैन्यारा॥कवनग्राया२
कवनघरजाई॥ऐसीखबरिकाहूनं
ई॥१२३॥सोमैतोसैकहूसमुझाई॥
गुप्तभेदयेकभाई॥ग्राईमूलसार
रा॥नेनहीग्राऐसबजग धा
॥१२४॥न्हस्वासातैजेतपनि
हांग्रायेस्वासाहोईगये
होईकीयेकबंधना॥तासौंन

होयेदरमरदेह॥१४६॥छंद॥सतनांमरि
जसारहै॥कहैउकारिउकारि॥जोपावैस
बांचही॥नहीसबैकालपसारि॥१४७
चौपई॥मकरतारतेंजीनीकोरी॥तह
हांकालकरैनहीचोरी॥ताकोरीहंस
चढिआवै॥सोहंसासूषसागरपावै॥१
८॥कालमहांकालनहीदोई॥तहांवे
सुषबिलसैसोई॥अमरहोईसुषसाग
पावै॥जोनीसंकटबहुरिनआवै॥१४
सतनांममूलतेंचारा॥धरमधरदा
तेंन्यारा॥सबकालबनीतिहैंलोकमै
जीवसा[redacted]कोनाथ॥सतनामजोपावै
सोकरैआपनैहाथ॥१५०॥सतनांमतें
रे॥सतदिकांनासोई॥बिनासतपहु
नहीं॥लायकपैजोकोई॥१५१॥सत
नांमनिजनामहै॥रनोदैधरमदास
जोपावैसोबांचही॥नातेजमकीफां
१५२॥सतनांमपायेबिना॥हंसतोक
हीजाई॥जोनीपिंकतसरिवा॥करिकबि

मयेर्ंपाई॥१५३॥मूलनाँमपायेबिना॥हं
साजायेबिगोई॥कहैकबीरधर्मदाससैं
मेकैंदोसनहोई॥१५४॥चौपईमूलनाम
प्रगटजिनिकरिह्नौ॥तिंहीनांसगुप्तलेधरि
हूं॥नांममूलसैंजीवउबारा॥औरनांमप्रगट
संसारा॥१५५॥मूलनांमजाकैंघटिआवैं॥सो
हंसासतलोकसिधावै॥जुगजुगमैंलीनअ
तारा॥मूलनांमसैंजीवउबारा॥१५६॥मूल
नांमगुप्तहमराषौ॥सतनांमप्रगटहमभ
षौ॥कोटिकमहंसाकैंहोई॥मूलनांमसैं
मारौषोई॥१५७॥मूलनांमऔरनहींकोई
मूलनांमसबकारैंधोई॥पांनीपवनकानै
हअपारा॥मूलनांमइनहींसैंन्यारा॥१५
८॥मूलनांमबिनमुक्तिनहोई॥लाषपांन
कथैजोकोई॥मूलनांमकापावैभेदा॥तब
हीहंसाहोयअछेदा॥१५९॥सोमैंतोकौंदीया
चिन्हाई॥धर्मदासरहौल्यौलाई॥१६०॥सभैं
जिभ्याकहूंतोजगतिरैं॥प्रगटकहीनहींज
ये॥गुप्तनांमतोकौंदीया॥लेहैसीसचढाये

॥इती श्री ग्रंथ जैदसारसंपुरण ॥१६४॥
ग्रंथ ॥ ६ ॥ सत्यकीगणती ॥ १२५५ ॥ कबीर
सारे के कबीरदेव संग्रंथ बिग्यांनसार लि
मंते ॥ चौपई ॥ कबीर उवाच ॥ सुनिधर्म
दास तुम संतसुजांनां ॥ कथों ग्रंथ निजसार
बिग्यांनां ॥ अपरमेपार पार के पारा ॥ सार बि
ग्यांन सबन तैं न्यारा ॥१॥ तबन ही आदि निरं
जन देवा ॥ ब्रह्मा बिस्न महेस्वर सेवा ॥ ज
बन ही आदि सकति निरमाया ॥ जबन ही
उरखपुरख की काया ॥ २ ॥ तबन ही पांच तत
रजषांनी ॥ तबन ही चार ... औरषांनी ॥ त
बन ही कूरम सेस बराहा ॥ तबन ही चंद
सूरगनग्राहा ॥ ३ ॥ तबन ही नाद बंदक
कीन्हां ॥ तबन ही प्रेमप्रतीति कबू ची
न्हे ॥ तबन ही बेद बेद को कर्ता ॥ तबन ही
रूप रेष कछु धरता ॥ ४ ॥ तबन ही आदिअ
तिम धिकोई ॥ ग्यांन बिग्यांन कछु नहीं होई ॥
सो तासू तन नहीं होते भाई ॥ ताकी गम काहू
नहीं पाई ॥ ५ ॥ धरमदास उवाच ॥ धरमदास

करजोरी॥ बंदीछोर ऐकंबीनतीमोरी॥त
ग्रहोतोसोनिजकहीये॥ताकहि भेदकै
लहीये॥ ६ ॥तुमतोदयावंतहौसांसी
पुरुषकीअंतरज्यांमी॥कबीरउवाच॥
धर्मदासऐकबचनहमांरा॥अपांनविअं
कोसारा॥ ७ ॥नापैदनगरमैंपुरषयेक
रहिआ॥ ताकभेदनकाहूलेहैकआ॥कालम
हाकालनहीं होई॥ताकीगतिजांनेंनहीं
कोई॥ ८ ॥होइकबूतौकालडरलागै॥न
हींतहांकोऊजैकोभागै॥नांपैदनगरकु
सरपुरषसंमां॥सतसहजकीनौयेकनांमां॥
९॥सोईसतस्वरूपहुजरहोई॥ताकीगमजां
नैंनहीकोई॥धर्मदासउवाच॥धर्म
दासकहैसुनौगुसांई॥स्वरूपहुजरसतब
सैकिहिठांई॥ १० ॥ताकौअबमोहिकहौ
बिचारा॥कहौसबनिकासिरजनहारा॥
कबीरउवाच॥कहैकबीरसुनौधरमदा
सा॥सतिसबदपुरसप्रगासा॥ ११ ॥तबनहीं
होतावोअंकारा॥पुरनब्रह्मसकलतै

न्यारा॥ तबनहीहो तार रंकारा॥ तबनही
तन मन का बिसतारा॥ १२॥ तबनहीध
या सोहं गमनोऊ॥ न्हअहरअगमपुर
गाऊ॥ आदिसुरतिघट भीतरिआई
हअहर मैं रहे समाई॥ १३॥ आदिसुर
तिसोहंप्रकासा॥ ताका है अगमपुरबा
सा॥ तासोहंसौं सबकछुहोई॥ अगम
भेद नहीपावे कोई॥ १४॥ स्वासासोहं हैन
हीभाई॥ सोहंकी गति काहू नपाई॥ पां
चततीनं गुन स्वासा॥ सोहंअसकी
याप्रकासा॥ १५॥ सोहं है ब्रह्म कै पार
सोहंसब मैं कीया पसारा॥ ता सोहं तैं नाव
निन्यारा॥ सोई भेद निज होइ हमारा॥
१६॥ चारि लोक पूरष बिसतारा॥ चारि
लोकसौं पूरसनिन्यारा॥ पुरष मोरि सब
हीकैं मांही॥ पूरषभेद कोइ पावत नांही॥
१७॥ चहूं लोक मैं व्यापक सोई॥ चहूं
लोक तैं न्यारा होई॥ ताकी समकित न प्रा
वै भाई॥ तातैं हंसा जाये न साई॥ १८॥

बिसरि बाकथ कि जाया॥ नाथ बिबेकी
जोनि है गायबनाजी प्राया॥३१॥ यह विचार
मा न्ना सरसब होबिधि रची बिचार साधन
सिध प्रगट कियो॥ नाथ प्रभु नत्तै प्रकारो॥३२॥
बंध्यो मानि चाहत छुट्यो॥ हनिश्चै मन माहि
बिचार मान ताप रस्वी॥ जन तन परना हि
३३॥ और मानर रवादि जे बात होत तिहि हेत।

दिक होय गुसांई ॥ है न्यारा के है सब ठांई ॥ कबीर
... कहे कबीर सुनो धरमदास । दि
ढ परतीति गहौ बिस्वासा ॥ २६ ॥ मति बूचन मै
... है सब मांहि सब तै न्यारा ॥ अग
म अथाह अथाह है नहीं कोई ॥ तन मन अरपै
पावै सोई ॥ २७ ॥ अकह बस्त कैसे करि क
हीये ॥ समझि बूझि न्यारा होय रहीये ॥ अ
कथ कथा कहा कहै गांऊं ॥ धरमदास मै
तोहि समझाऊं ॥ २८ ॥ धरमदास बूझो
मति हेरी ॥ है न्यारी अरु सदा नरपुरी ॥ कहा
कहुं कहबे की नाहीं ॥ सब तै न्यारा है स
ब मांही ॥ २९ ॥ धरमदास बुझि ले भाई ॥
बिन बूझे जीव जमपुर जाई ॥ धरमदास
... धर्मदास बिनती अनुसारी ॥ अहो
साहिब मैं सरनि तुम्हारी ॥ ३० ॥ बाहिर भी
तरि कहा बताया ॥ एक है रंग चरह राखो
कब हूं कै न्यारा कब हूं के मांही ॥ ए परतीति
कैसे आवै गुसांई ॥ ३१ ॥ गोरि रिकां नाम
सो भासै ॥ सम सौ भेद कछु नहीं राखो ॥

कबीरउवाच॥कहैकबीरसुनौंधरमदासा॥प्र
मगुबीहैहमरैपासा॥२८॥ताकीअबमैंकरौंल
खाई॥सुरतिदिष्टकरिलेहौबुझाई॥सुरतिदिष्ट
ध्यांनमेंआवै॥सोईजीवपरमपदपावै॥२९॥
तमैं॥मनसबपरिअसवारहै॥मनउपरिनही
कोई॥मनऊपरिअसवारहोई॥तेकहिबिरले
जोई॥३४॥चोपई॥धरमदासहमकहैहौबि
चारी॥करौसुरतिमनपरिअसवारी॥पांचत
ततीनिगुनहैभाई॥सुरतिमांहिकरौसमाई॥
३५॥बुधिचितमनसोअगमअपारा॥सुरति
मांहितनकरौपैगारा॥घटमांहिहैबहुतपसा
रा॥करैसुरतिमैंहोअसवारा॥३६॥मनऔ
सुरतित्रिकुटीआवै॥पांनपुरसकादरसनपा
वै॥वोहहोईअनहदझनकारा॥ताकेआगै
बस्तअपारा॥३७॥सुखमनिसुरतिचढीआ
[illegible] जोतिपकासा॥महा
[illegible] धरमदासपहुचैतिं
पासौं॥३८॥देषजोतिअचरजकैतम
[illegible] थहीनिजकहेऊ॥कैरैनिं

जनबहूतसनमोनां॥ पंहोपहू चेकहैक
वनजीयोंनां॥ ३७॥ धरमदास
मदासकहैनिजबांनी॥ सतगुरमोहिमिले
हैग्यांनी॥ तबैनिरंजनयहबिचारी॥ हैयेदुप
रमपुरषअपुविकारी॥ ५०॥ धरमदास तबच
लेपराई॥ आगेसारबस्तनिजपाई॥ न्हअ
क्षरनांमनिजजागा॥ कोटिमांनरूमइक
लागा॥ ५१॥ अनहदघुरैअगाधअपारा
भांतिभांतिकेरागझनकारा॥ देषिअचर
जकछोनहीजाई॥ यामेंगेरिकहांसूपाई
५२॥ अपनैप्रेमभागसिराई॥ धनिकबीर
जिंकरीरंषेयाई॥ आवागावनमेमसब
भागा॥ मेरैबडेभागअबजागा॥ ५३॥ अ
नंतजन्मकीतबसुधिआई॥ जीघरआये
तहांसमाई॥ जीवसबहीयेहघरसेंआ
वा॥ सतगुरमिलैतबघरकौपावा॥ ५४॥
अरधराईन्हअसरबासा॥ कोटिचंद्रस
रप्रगासा॥ पिंडब्रह्मंडसबैहमजांनां॥ चौ
टीघरजाऐसेमांनां॥ ५५॥ अमोलअजर

अमरघर पाया॥ धमदास सत गार इसाया॥
कबीर उवाच॥ कहै कबीर परमबैरागा॥ धं
निधरमदास तेरै बड़ भागा॥ धर्दा॥ येह खिरपं
नसार कौ पावै॥ जहां के गया बहुरि नहीं आ
वै॥ बंशा बिदत महे सन जानो॥ तहां धरम
दास अस्थानो॥ धग॥ सिध साधिक नौ नाथ
न पावै॥ और जीव की कौन चलावै॥ जहां
धरम दास का बासा॥ तहां प्रमपुरस परगा
सा॥ धर॥ धरमदास उवाच॥ धरमदास पुछै
ईक बाता॥ कहो गुसांई जीव का घाता॥
कबीर उवाच॥ कहै कबीर सुनो धरमदा
सा॥ सति बचन मैं करो प्रकासा॥ धर॥ येह
देवि संसार ही आवा॥ नहो जीवन कौ गंपा
न दिढावा॥ जुगत सार समजाये उगवे॥
समझै जीव कौ लोक पहुंचावे॥ ५०॥
जो कोई जीव नाव निज पावै॥ सोई जीव
लोक कौ आवै॥ बंस बयालीस राज मैं दी
न्हा॥ ताका काज सही मैं कीन्हा।
बचन अबक कहूं बुझाई॥ न्हअदर

षबरिनपाई॥ बंसचूरम्हारै लोक ही आवे
और जीवनांवनहीपावे॥ ५२॥ जो निजमू
लबस्तकौंचीन्हा॥ सोई हंसपयांनाहीन्हा
यामें संसैहै कछु नांही॥ बसै आई लोककै
मांही॥ ५३॥ सुनिधरमदास औरइक बानी
करिपरतीतिलेकुपहिचांनी॥ मैंतो हिंदी
न्हीवांहहमारी॥ सुतनांमतिरैनरनारी॥
५४॥ मोरीभक्तिसतिहमभाषो॥ मिथ्या
बचनकबहू मतिराषो॥ नारीहोयभक्ति
जोकरही॥ और जन्मनरदेहीधरही॥ ५५॥
नरतनहोईभक्तिजोपावे॥ सोजीवचौरा
सीनहीआवै॥ बारंबारमनषतनहोई
औरदेहनहीपावैकोई॥ ५६॥ बहुतजत
नममभक्तिबिसतारा॥ तबनिजनांमपा
वहीसारा॥ पावैनांमलोकहीआवे॥ मेरे
जीवअंतनहीजावै॥ ५७॥ ततभक्तिउरथ
मोहिदीन्हां॥ तातैंग्यानपसाराकीन्हा॥ ग्यान
पाईबिग्यानबिचारै॥ कालजीतिकरिलो
कसिधारै॥ ५८॥ साषीसहीकहैरमैनी॥

सारबिग्यांन रादन्नतिकीनी॥ग्रंथ अनेक
कहा परकारा॥सारबिग्यांन सन्न तें न्यारा
५९॥सारबिग्यांन सब्बन कोटीका॥धरमदा
स ऐसं बतैं नीका॥ऐसा भेद कहूं नहीं साखा
भेद सार मैं सब कहू राखा॥६०॥भेद सार बि
ग्यांन है सारा॥चीन्है हसत तिरै भौपारा॥ग्रंथ
ग्यांन बहुत है भाई॥भेद लहे बिन जम पु
र जाई॥६१॥सति सति सति मैं कही॥यामैं सं
सैं राखी नहीं॥लखै बिग्यांन जीव जग कोई॥
अमरलोक पहुंचैगा सोई॥६२॥कहै क
बीर सूनौं धरमदासा॥जो लै नांव टलै जम पा
सा॥नांव सार न्हकअर होई॥और नांम पहुं
चे नहीं कोई॥६३॥समै॥कहै कबीर धरम
दास सौं॥ऐक नांम निज सार॥जो कोई हंसा
पावै॥आवै लोक हमार॥६४॥कहै कबी
र ऐक नांम बिन॥सब ही है बकवाद॥सति
नांम ल्है चैकहै॥ते कोई बिरला साध॥६५॥
ईती श्री बिग्यांन सार ग्रंथ संपूरण॥ग्रंथ
ग॥सबकी गणती॥१३२१.

पएकजाप॥२४॥उत्तर महावाक्य के अर्थ
कूंनीकेसुनोवनाप॥आत्मनिश्चै होएजब
मलिनअविद्याजाय॥२५॥प्रश्न॥अवरूपा
करमोसूंकहो॥महावाक्य के भेद॥जो सम
झूंभिन्नरकर॥संसैरहनयेद॥२६॥गुरुवचन
उत्तर॥ततपदत्वंपदकहेतहूं न्यारो२ तोहे ब
पकइनमेहैअसी सोनिश्चैकरजोह॥२७॥
शिष्यवचन॥प्रश्न॥त्वंपदअर्थदयालजै
कहीयेसोसमझाय हरदेयअरुपानत
म आत्मस्वरूप सोय॥२८॥गुरुवचनउत्तर
मनबुधइंद्रीदेहमिल रह्योअप पनपोमं
न त्वंपदयातैकहेतहै ऐहनिश्चैकर
जान १९ वाचअरुपतोसूंकसो नि
श्चैकरउरमांहि लख्यअर्थअबकहत
हूं रहैभरमकछुनांहि २० जागपत्या
गलख्यएकीय हूंवरूपबिचयामेद सम

कैआत्मरूपकुं साषीसबिअद्वैत २२ ह
दैअंतरजोतिहै आत्मानिश्चलरूप देह
भिंनतेंभिनहै केवलनखसरूप २२ ती
नदेहतैंभिनकर अपनोरूपस्सजोन सो
देहसंसारसवको साषीसुषसमांन॥२३॥
सिष्यवचन॥प्रस्न॥कुंगोरोहूंसांवरो मनकुं
भ्रमनवहोय न्यारोआत्मदेहतैं दीसैं
नाहीकोय॥२४॥गुरवचन॥उत्तर॥क्रमको
करूमैकरूं देहआत्मानांहि कीयक्रम
सोदेहकै सोतुंलेअपैमांहि २५ घरह
षजोघरनहीं प्रगटन्यारोदेष अैसेंआ
त्मदेहतैं जांनोभिनबसेष॥२६॥सिष्यव
चनप्रस्न॥देहआत्माजोनहीं तोकीयेंती
कोकाह कोउंआचेरजहैसेकहै देह
त्माआद॥२७॥गुरवचन[illegible]॥अवि
द्या॥ह मिथ्यामैंजु ध्यासदीयोहैजोनकै
पोजांनतनांहिदेहअभिमांनके जन्म
मरनकोभोगहोयहैयाहतैं परिहा
बहुछुटैनाहसोगकेमांहतैं २८

० अहंकारकरतागये अधिछादीहन
हीकोय ४४ हलनचलनभोजनकि
या पानीह्वैकैहोय वस्तअधिकहुन
गहै नरअहंकारीसोय॥४५॥अरिल्ल॥
आतमअद्वैस्वरूपसर्वगतजानिये षिक
लपरहितअनूपएकप्रवानीये आतव
मकोनेगसुषरूपमासही परिहांआत
केवलरूपस्वप्रकासही॥४६॥दोहा॥क
हनसुननसवहीथको नष्पाराकनिरध
र ज्ञानआतिपरगटनयो जक्तनष्पोज
रवार ४७ कीनोग्रंथविचारकै नहचै
ज्ञान प्रकास श्रवनसुनतआंनंदहोय
मिटैद्वैतजगत्रास ४८ सारसारसवग्रं
थको संग्रहकीयोवनाय भाषाज्ञानप्र
कासतव दीनोनामजनाय ४९ गुरी
सषकोसंमादहै जोरसुनैचितलाय ह
दैज्ञानप्रकासहोय अज्ञानतिमरमिट
जाय ५० ज्ञानप्रकासप्रकासतै रहैतिमर
कछुनाहि श्रवनमननकहमदासजोधारैउर

मो हि॥ ५२॥ ईतीश्री सानपकां सह भेदा सपेत
रानाहतसंपूरणं॥ ग्रंथ ८ सवकी गणती ॥
॥ दि१६७ ॥ अथ जंबुसर की कथा लि
खते॥ दुहा॥ सो है एक धनवंत॥ ता
स के पुत्र बिजोई॥ जंबु सरतस नां
म सीलघुरजनमत होई॥ १॥ पिता
की पोबहोहत्या॥ पर न बोजा रे की
नो॥ परनुत जु करनाथि॥ ज्ञान भगत
रमुदीनो॥ २॥ हि कबली यांके धीव
शाग॥ कीन्हों तुन मतो विचारे॥
करे पिता सुं अरजा ए रव जंबुसर मारे
३॥ मेतुं कलजुग ऐ भयो॥ तुनत ऐ लागे थो
धरम बात॥ तात तव जांनि
लेर परन बा चल
बआयो॥ जंबुसरत हो परन हाथता
यो॥ ४॥ बणीये दीयो दरबवहो
वैरेन आरो॥ द्विबैडंडयुं जांनि॥
॥ चले तहां ते

आप ।। आप बैठे निजभवनां ।। तब त्रीया मतो विचार ।। कीनों ताकै ढिग गवनां ।। ग।। छिंदा ।। जंबुसर बैठे जहां ।। सुमरे त्रत्तवन नांष ।। आ तुई कर जोर कै ।। तब न ली बात ।। ६ ।। जंबुसर तुं तें सील धरम ।। तजे नोम निज ऐका ।। त्रीया तो लै तास मन ।। माथे प्रसंग अनेका ।। ऐ ।। सो प्रसंग अबक है तहूं ।। नष्ट सत्रीया तें क्रहे ।। या में संनां हिकुब ।। पटसां ची मांनि ।। त्रीया ८ कत है बिनती ।। को अरुप बल जांनि ।। १० ।। आगे जाता होयगी ।। मारु ढोर समां न ।। मारु ढोर दिकिम ।। त्रीय तुं कवीतो सोरठा ।। छलीयां गोडें बोय ।। सुरभ मोयो अकत बिन ।। कीयो बाजरो बुवार ।। मारु ढोर यें जांनीये ।। ११ ।। जंबुसर तुं कवीते तारत मांने फूल ।। डर्भीर सो दिनती ।। न लेग ।। छुटां पिछे मूल ।। तरोन क बुद जाईयो ।। १२ ।। त्रीया तुं कवीतो ।। नांह नदी कैसोय मूकट तें मांन समयो बहो लम्र

कटहोये।कीयेजलालचदेनपद॥ १३॥
जंबुसरउवाच॥कोईसहारेनांहिस्वस
गरमेडुतोरहेयो।ग्रहउंरजाये॥सोनहीकांक
जकेरककौ॥१४॥त्रियाउवाच॥भजै
नपुरमेंरांम।ग्रहसुमसोभीतज्यो॥जाकै
गेरनगांम॥बुगलीज्युलटकतरह्यौ॥
॥१५॥जंबुसरउवाच॥ईंडीह.कोस
वनांस॥जासंगनांसैरांमपद रेलो त
ग्रास।ग्योयेमुरखपांछ नै॥१६॥त्रिया
उवाच॥नृपतिसुतएकजांनि॥चल्यो
जचंदनपांनकुं॥आगेनईजोहांनि॥
फेरोग्योस्पांगिको॥१७॥जंबुसरउ
वाच॥सोरठा॥जगतसुबलोंराजांनि
ताहिगहैअज्ञांननर॥मुरखछोडज्युनां
हि॥तजीकुदालीकनककी॥१८॥
त्रियाउवाच॥येहसुनप्रसंगसार॥
सबकेमनआंनंदबढो
बचारा॥जंबुसरसुख।न
त्रियाउवाच

दीया करत प्रनाम ॥ उत्र भये सब त्यागी ये ॥
सुजस बढै है नाम ॥ २० ॥ जो बुसर कुंसा च
नाम नाम बिन नार है ॥ सुन्यो सकल तुम जो
ये ॥ एक प्रसंग अद्भुत है ॥ कहै समझाउ
तोय ॥ २१ ॥ ब हैनो ब्या ही मातापरी ॥ मात
जायो जोम ॥ तीनु तज बन कुंगये ॥ रखे
कुंन को नाम ॥ २२ ॥ अष्ट दस नां ता न
या ॥ ए हतीनु का हेत ॥ ता को प्रसंग अब
कहत हूं सुनीयो होये सुचेत ॥ २३ ॥
चौपई ॥ एक नगर मे बेस्या ता के ॥ सुत
कन्या संग जनमे जा के ॥ ता को तुरत ही
नां व कहायो ॥ सुत ताके मेरनाम सो पा
यो ॥ २४ ॥ बोटा नव त्र जन मे सोई ॥ ता है
नदी मे दीयो बिजोई ॥ को इन ग्र तत नि
कसे जाई ॥ एक महाजन लीये कढा
ई ॥ २५ ॥ वा के पुत्र है तो एका ॥ एह हरि
दीयों लीयो बबेका ॥ लरका काटे का
जरो बुहायो ॥ लरकी सहैत दरवाजे
आयो ॥ २६ ॥ देय पींजरो भोर ही बनी यां ॥

तरकी काढ लई है जनी या॥ दोऊ बडे भये
रे नुअस्यांनां॥ तांको आहने योप्रमांनां॥
२७॥ चेंवरी मांहि जो बैठे तब ही॥ सुइ का
कांनी देख्यो जब ही॥ ता मैं अंक मडे कहै
हैरै॥ बहैनी भाई सुत तांकु मेरै॥ २८॥ सु
तता सों कबि चेरदेया॥ ता को पीछे की
यो बबेया॥ भाई बहैनी बिता हैनी॥ सुल तां
तओ हथले वो जांनी॥ २९॥ लोय मैं भीत
कीयो ग्रहे त्यागा॥ बन बन बिचारे ले बै
रागा॥ पुरब पाप कोंन मैं कीयो॥ बीर ब
हैन घरवासो दीयो॥ ३०॥ सत बबेयी बु
झत डोलै॥ सुन र बचन सबन का तो
लै॥ पीछे कू मेर ही कीयो गवनो॥ हेरत
आयो बेसां के भवनो॥ ३१॥ सो बेस्या
या की महतारी॥ ता के रह्यो करि घर की
नारी॥ वा का पेट को ऐक सुत भयो॥ सु
लतां सुसा धायो कह्यो॥ ३२॥ सा सुलतां
चली वहां तै जब ही॥ बेसां के घर आई
तब ही॥ जब बेस्या सुन बचन ऊं चारे

अथ दूसना ता बिस्तारे ॥२२॥ कूगै ना
ता को भो ॥ कुन्तां गंधा चा किय
ता॥ न ग्रनायका अहे दूसरे माता मेरी
तुमसुतकी मै नारि प्रगट सासु है मेरी म
भ्रयांवंदकी नारि सोक तुमदा हमारी
तुमे तात की सुता तो ह ददी मेधुरी मम
माई की जो रित्नगै तु भावज मेरे येता
लहुनतु जिमे किन्यां किस बिध टेरे
घटनाता घट बिधि भया मांन वध
भदी या वोय ज्ञान भक्ति बेराग त्यों
जब धरम साब तो होय ॥२४॥ दोहा
भाई सुत्नता के बचन सुन ॥ पूछे नरना
मेर ॥ को है ते कही यो कहा ॥ सो अब भा
फेर ॥ २५॥ सुन्नता गंधा चा किय
बेस्यां चारे वास कहो तो हि मडवो भाई
पकडु मै तो हि तु मे धरमेरी नाद बांवं
प्रगट मोर पलै मै बधी तेरे सासु को मै
तार सै सुसरो है मेरे ममदादी को कसे
तादि बिधि ददो कहीये ऐसा चे अ

धतज्यांनिसुट [illegible] ीये मा [illegible] जे
नही येयट [illegible] ोर ङ [illegible] य
नांसिहै रजेन [illegible] ज्ञोंव [illegible]
ऐसुनिवच [illegible] ठिजन [illegible] ज्ञय
रह्यो सुन्नतो [illegible] नर [illegible] ाक
त्याडेवे [illegible]
सीसु नाडसम [illegible] ज्ञै मक [illegible] गयो
पुनि नाईकोव [illegible] यो
जोनिसोकके [illegible] निचार
ममयांवदल्हो [illegible] ाढि रहिन्हावे
दादीसुतका [illegible] किसविधितो
हिलडाइये ऐसें [illegible] चातेकेंसंगतुम्हा
रेत्पागीये ङ [illegible] गीनकाग्रेरकु
मेर। कहेहमकें [illegible] सुल्लतांमायेंफे
रि।त्यागकरोगंमहो नजो. ङ्ए। जंबुसर
बुधिवांनहीयां [illegible] ज्याज्ञोन [illegible] वियमन
ज्ञानंदवहो [illegible] ग योसकलज्ञज्ञांना॥४०॥
जंबुसरवडि नाम [illegible] धनितेरेमातापिता
जेन्मतहीगजराजे [illegible] कोडिरत्योपब्रह्य

सुं॥४१॥डिबलैनकुंचोर॥बांधीपोटजो
प्रीतकरि॥ग्यानमयोतिहिंठोर॥जंबुसूर
केज्ञानसुनि॥४२॥छ्रू नारिहेंग्याने
सुनि॥ताहीकोसंसोगयो॥चोरभये॰ग
लतौना॥सीतवांन्केवचनसुनि॥४३
ईतीश्रीजंबुस्वरकोकथासंपुरण॥३
हा॥१॥सोरठा॥३॥कवित्त॥२॥चौ
ई॥१॥सवगाएती॥४३॥ग्रंथ॥१॥
॥१४१५॥ग्रंथ ब्रह्मज्ञान लि ख्यते॥
ॐब्रह्मएकसुधचेतन मयाजु चेतनजड
मायाब्रह्मकोसंजोग जैसेंवृक्षकीछाया
वृक्षसरजीव छायासरजीवनांही वृक्ष
बिनांछायानांही मायाकीवोटब्रह्म
नहिंसुझै ब्रह्मकीवोटमायानहिं
ऊँ ब्रह्ममायाकोऐसोसंजोग माय
जटब्रह्मचेतनि मायाऊपरब्रह्म
ब्रह्मऊपरकोनांही ब्रह्ममायातनई
भई ब्रह्मकीसक्तितीनि ईछ्या१
पा २ ग्यांन ३ मायासक्ति तीन से

१ मिथ्या २ विपरजे ३ ब्रह्मकेनां
पंच ब्रह्मकहिऐ १ जीवकहिऐ २
कालकहिऐ ३ कर्मकहिऐ ४ सुभाव
कहिऐ ५ ब्रह्मकाहेतैंकहिऐ अखंड
अविनासीहै तातैंब्रह्मकहिऐ १ जीव
काहेतैंकहिऐ आपकूंआपचीन्हैनांही
तातैंकहिऐ कालकाहेतैंकहिऐ आप
कोंआपकालउपाईले तातैंकालकहि
ऐं ३ कर्मकाहेतैंकहिऐ सकलदेहवि
षैकरता तातैंकर्मकहिऐ सुभावकाहे
तैंकहिऐ यारोवाहोदुषसुषउत्पनजा
नैं तातैंसुभावकहिऐ ५ मायाकेनाम
पंच मायाकहिऐ १ आकासकहिऐ
२ सुनिकहिऐ ३ सक्तिकहिऐ ४ प्र
कृतिकहिऐ ५ मायाकाहेतैंकहिऐ ब्र
ह्मतैंसबलहै तातैंमायाकहिऐ १ आका
सकाहेतैंकहिऐ पिंडब्रह्मंडआदिकार
ण्है तातैंआकासकहिऐ सुनिकाहेतैं
कहिऐ जडहै तातैंसुनिकहिऐ सक्ति

सरीरहोय ऐकसरीरनोतत
मापाकेसरीरहोय ऐकसरीरनोतत
को ताकेनांमतीनसूक्ष्मकहिऐ
लिंगकहिऐ १ जोतिकहिऐ २ ऐक
सरीरपंदशतततको ३ ताकेनांमती
नि स्थूलकहिऐ दीर्घकहिऐ वि॰
राटकहिऐ सरीरहोई तुरियाविन
रमुक्ति अवस्था च्यारि जाग्रतसुप
सुषोपति तुरीया अथअवस्था
पांचततको पचीसप्रकितिमिल
जाग्रतहै तातैजाग्रतअवस्था
हिऐ १ नौततकोइप्रांमैनूमै तातैसु
पअवस्थाकहिऐ २ जाग्रतसुपअ
स्थाजांणैनांही तासुषुपतिअवस्था
कहिऐ ३ जीवब्रह्मऐककरिजांणै
तातैतुरीयाअवस्थाकहिऐ ४ जीव
अंतरनांही जैसैसूरजघांमदोईनांही
जैसैअग्निउष्णदोईनांही जैसैजलत
गदोईनांही जैसैकंचनकेआभूषण
चनदोईनांही जैसैब्रह्मजीवअंतर

ही जीवब्रह्मऐककरिजांणें तासुमुक्ति
कहीऐ परदोयब्रह्ममाया त्रेषनतानि
ततकारनज्ञान कुलालन्यायेतेब्रह्म म
कान्यायतेमाया मोडोमायांकूंस जीव
ह्मकौंकूंस ज्ञानब्रह्मकोंकूंस अज्ञा
नमायाकोंकूंस ताकूंग्यानसुंजीवबंधो
अथवाऐषटकरमीकहीऐ काम क्रोध
लोभ मोह मांनि अपमांनि ऐषटक
मीजीतैं तासेंजीवनमुक्तिकहीऐ बा
चाच्यार परा पसंति मधेमां बैषरी
यातीत उंनमनी ब्रह्मवाच पंछात
तकोबिनसैं नोततकोवासनोलेश्रो
तरैं ऐदोइसरीरविनसैं तबब्रह्मोए
ततप्रापतिहोई गंगाघोषन्याई अर
हटघटकान्याई कुलालचक्रन्याई
जैमचक्रन्याई कीटिभृंगन्याई लोह
चुंबकन्याई गजफीध्यानन्याई॥ई
ब्रह्ममायाकोनिरणों॥पिंडब्रह्मंड
कोबिचार॥प्रमहंसगिनांन॥इति

श्रीसंक्राचारयबिरंचितं॥ ब्र
ज्य श्री म सं भुरण॥ अ१॥ ग्रंथ॥ १०॥
वकी गणती॥१४५६॥ अथ षट्
दिको मत॥ लिष्यते॥ आत्म कोंकें
जेषनाम जाकी महिमा चितघनरोम
च्यारबेद षटसास्त्र मये अपनी मति
मामेनिरमये १ मीमांसा बैसेसक कों
बहैरि न्यायपातंजल नदैं सांषि औ
बेदांत बषांनै षटसास्त्र षटदरसन
नै २ सक्ति अनंत मत अबिनासी स
यंउतीसरबप्रगासी मीमांसाप्रतिपा
दै कर्म बिनकरणी बातें सब भर्म ३
देही बाचि करै सो पावै मीमांसा ऐसें
हरावै बिन बोयें कैसें फल षाय बि
१ नषायें कोई नांहिं घाय ४ सुभ करम
नके सुभ फल लागे जेनर सुट ते कर
ही त्यागे जेनर असुभ करम लिपटा
जैमुनि कहै तेकरि पिछिताय ५ बै
सेसक सब समैं बतावै समैं बिना क

थनआवे जैसैबीजबोवैकिसान स
नांहोयफलकीहान ६ सैंकरावै
होये यहतोप्रगटलषैसबकोय ई
दि रूपसमैंहोयफुरै करणीसमैंपरस
परत्तुरै ७ जैसैवैसैसकहैसमझावै ज्ञा
नमादिकवैसोजैसोपावै न्यायकहैमैयौं
पहिचाना करत्ताकारजिकारनजांना
८ होयसोहीसोकरत्ताकरै काजविधि
टारीनहींटरै करैकर्मसुमनमैंविचारै
कर्ताकछुऔरकारिडारै ९ बोझला
लयेभांजनजैसैं जैसेकरैहोयफुनितैसैं
याविधिन्यायकहोविस्तार गोल्लकहै
योंहीनिरधार १० कर्मजोगपातंजल
कहै जोगीहोयभेदसोलहै जोअष्टां
गजोगमगध्यावै देहीमांहिदेवसोप
वै ११ मूलबंधजिटआसनकरै उल
टिअपानप्राणसेचरै उलटैपवनगग
निदिसिजाई उपजैधुनिमनत म
ई १२ जोगजुगतिभेटैकर

कहैपातांजलसार सांषिकहैबिनज्ञा
ननपावै जोकोईकोटिजतनकुरिझा
वै १३ कर्मजोगपसाधनकौदहै सो
ऊनित्सषिनभेगीषेहै नित्यानित्यबि
बेकबिचारै राषैनित्यऊनित्यबिसारै
१४ उलटिऊापमैंऊापसमावै निर
जिसरूपऊपनेंसोपावै सांषिपान
मतहैसुषी कपलिकहैजानैंगुरमुषी १५
बेदांतसारमतकहै जामैकदूण
सुननहींरहै पूर्णब्रह्मनिरंतरआई
कैसेंनित्यलिसकहांई १६ ग्यानऊा
नकवनस्कहै सबहीस्वयंप्रकासी
तहै नांकछुसाधननांकछु तौ नां
कछुबंधणनांकछुमुक्ती १७ योबे
दांतप्रगटबषांनैं ब्यासवचनऊनमो
संजांनैं षटसास्त्रभिंन्यभिंन्यबिस्तार
ततबिचारऐकमतसार १८ जैसैंकहीं
गावनहारा रागरागणीबहोप्रकारा
जोईजोईजाकौमावै रीझरीझिप्रनि

गकूं गावै॥२६॥ बिधिनिसेदकरनसुंक
ये कही गावनहारानहै॥ तेलीसर्वेबि
धुर्णयेकाछपनैंनावहोरदौअनेक
है॥ २७॥ ज्ञानमुक्तिबैरागरिव॥ नति
तुजबहोऐ॥ तेलीप्रमपदपाईये॥अ
मुषडाजोऐ॥२८॥ ईतिश्रीछटस
कोमतंतेलीजीकृतसंपुरण॥
[illegible]॥ १॥ श्रथ [illegible] गणती॥१७७१॥
श्रथ ग्रंथ हैतेउपदेसा लि[illegible]
चोपई॥ राध[illegible]नघेराणी सतरू
पासुंकहे बखाणी बिसेषदेवनघेलारा
उं तपतकनोजबसैतिहिं ठोउं १ पाट
रूपसतरूपोरानी हंस[illegible]महासुषकी
षानी भक्तिरूपउज्जलतनसोभा संत
रूपांसतगुरपदलोभा २ मनबिच्यार
ऐसबिधिसुंरहई आठंपहरध्यानचित
अहई जोगुरमिलैतोकारिजहोई बि
नगुरजातसकलजुगरोई ३ महाप्रेम
आरतिअसभारी ऐसेनहिं अवर[illegible]

तिनयात्रगासा पोढेऊतेसयनसुषमं
ही गदीसक्तिवोरकुक्षिनाही रए स
त्यंस्वास चलीजोज वही बाहिरश्राँ
नरहीहैतवही बाहिरस्वास अप्रब
ल आइ सोइस्वास मतिनैपाई ३०
लेकैंस्वासब्रह्माकुंदीन्हा ब्रह्मातां
हप्रचेडतकीन्हा ए बिसतारकीयो
हांब्रह्मा धर्मऽधर्म रु कर्मअक
र्म ३१ ब्रह्माकहोवेदकोचीन्हों
येहैसिषापनसबनैलीन्हा च्यारबेद
कानोवसुणाया रघुजगुसांमअथर
बणगाया ३२ नलेपंडतडनीयांस
वही उतपतेनयीबेदकीजवही
अगमबस्तकैसैकैंपावै सबहीग
गतवेदनमावै ३३ निगमच्यारं
कहैं बषांनी सासकीसुनियेयह
बांणी जेहीजेताकेनामउंचारा
ताकाग्रबसुणिलेहु विच्यारा ३
४ प्रथममीमांसाजैसैबोला पति

बूताकरणीकरितोसा७ करणीकहिसन
कंबतलावै कहोजीवकैसे फलपावै
३५ इजेवैसेसककी ज्ञानीवांणी
तनसबईरबिषिसमैंबखांणी समैं
बिनासुधरैनहीकाजा समयजाणि
केरकैसमाजा ३६ तीजेन्यायकहैहै
करता मरणजीवणसबनसैश्रवरथा
करतातीनलोकबस्यकीन्हीं अगमभे
दकाकहीचीन्हों ३७ चोथापातं
जलकोजांनों कर्मजोगतीनकहोनि
धांनों कर्मजोगकरिनकैसमांनों
अगमवस्तकोसमैनजांनो ३८ पंच
संकपलिमुनिकीवांणी सांषिग्यानम
तनीकैजांणी मैजोकहोअवेबि
नां सोनिजिभेदनकाहूजोना ३
९ वेदव्यासबेदांतकहेउ येकनि
रंजनकाहूनलहेउ मेराभेदनिरं
नपारा ताकुकोपावैसंसारा ४० ये
षटकामतसबकहिदीन्हों मेरा

नकाकुनहीचीन्हा॥ ताग्रेऊगरलेश्च
मतबाला॥ येऊरूफावलगावैकाल
धर॥ सोरा॥ पंडतज्ञानीसवरहे॥ येऊग
राकरिरोप॥ आयेथकुछिलामकुं॥ चल
जमाकुंसोप॥ धर॥ [illegible]
चोपई॥ सतरूपाराजासुंकही सत
खाणीसुणीयेसही सतगुरसूहैमु
क्त हमारी ४ कहीबिसंधकीनारी ४
राजाकुंराणीसमझाया तबराजा
णेवेकुंआया सतगुरउसकीयागु
बमीना॥ बिसंधकुंतबउपज्योज्ञानी
४४॥ सोरा॥ [illegible]॥ सतरू
पांराणीसहित॥ सुणनलागेतज्ञान॥
संघाबाधेतसुं॥ कहैकबीरबलच्चा
४५॥ चोपई॥ अबसुणीलेकुपुराण
नगती त्रेमेजीवनपावैमती मेपा
पहुरांनसेती मांसखानबतलाईबे
ती धर्दे करैपापछकमनमेसुसे बु
धर्मेया मेसब म सि बेदम्यास

वेसवेग्रोपे अंतसमैंपिंडनसवरोपे
४७ पडनलगीजबजमकीमारा जब
वैग्ररुकरैपुकारा बृडैकलीनये
सैगपे वेदव्यासकरोवलनये ४
८ चौरासीबंधनमेंदीया वेदव्यासेने
ग्रेसाकीया अनेकलोकेसेकहीछूटे
वेदफंदसबहीकूल्टे॥४९॥रेमें॥वे
दव्यासग्रवतारबड॥धर्मरायेबंव
सेरहो जुलायेजीव॥सातदीपनवखं
॥५०॥ चौपई॥अवग्रवतारनकी
विधिभाखूं सतरुपातुचितगहिराखू
संगदेवबधेत्तारा तुमकेसुणीये
कचितलाई ५१ पूर्णकलाग्रसअ
वतारा कीयोनिरंजनरूपपसारा रा
मकस्तितेसेबडहोई पूर्णग्रापनि
रंजनहोई ५२ निरसेहग्रसबाव
नग्रवतारा कालरूपनिरंजनधा
रा वारेसबहीग्रसकहाई सोइनि
जनरायेपगई ५३ जमकीन्हीपे

कलाघुनंता॥ ताकुं भेजे साधक्षुरते
ता॥ इनमैमुक्तिन कैहूपाई॥ कालक
ताधरिडारैपाई॥ ५४॥ चौपै॥ सतब्रत
मांनैन्ही॥ जैवैलगपरहो जीव॥ परप
चीतिकुंलोकका॥ संधकहैते॥ हिपी
व॥ ५५॥ चौपई॥ सोई निरंजन काल
कहावै ताको योगी ध्यान लगावै सो
वैजोगी पावत नांही देषै कालरूपको
ही ५६ ऐसै मुक्तिपड्यो संसारा कैसे
पावै भेद हमारा तीनौं लोक निरंजन
राई उतपतिपर्ले करे हूं बाई
५७ ऐसे जीवमुक्ति न्हीपाई बडबे
दीनें भट काई च्यारमुक्ति निरंजै
करि राषी ताकी अब तुम लेहु स
षी ५८ है सालोक सामीपा गंडै च्यारिमुक्ति
सारूपी साजो जीनांडै च्यारिमुक्ति
जाकै घर होई जासूं लागि रहे सब
ई ५९ ताका ध्यान लनकाकुपाई
सैं जीव रहे बिलमाई कालरूप

हि
रंजनराई॥अग्निरूपसबैनकुंपाई॥६०
कीबेदकैसैअसतूती॥अनंतकलातिं
हिकैरैबिम्हली॥सिवसुतदेवताहिकुं
ध्यावै॥सनकादिकसोध्यानलगावै॥
६१॥सेससहस्रफनमेंजसगावै॥०
लनिरंजनकुंनहीपावै॥जाकैआगें
हमारी॥ताकौकवनकरैउपचारी
॥जगकाजीवनकोईमानै॥फि
चाकरिजानै॥कवनप्रवतलिप
ई॥आवागवनमिटैन्हीमाई॥६२
॥कवआपनिरंजना जिंन्ह कहो
योपसार रोकिबेहिअखंड ॥सु
दसबीरद॥दध॥चोपई॥
ब्रसंघदेवसतकपायोत्नी॥स
तगुरवस्ततुम्हारअमोली॥ताकीहम
कुंकरौलिमाई॥हमपतीतितुम्हारीपा
६४॥निरंजनताकेपारकहाई॥सो
बस्तसुंहोयसहाई॥सोईबस्तकैसैके
॥हमरैहाथिकवनविधिआवै॥

मो

सोईबातकहौहि स्वामी ॥ नक्तिमुक्ति कहीयेनिसकामी ॥ तुमऋबाहि कैछिचाहितेनाही ॥ मुक्ति काजन्त्रापे जगमांही ६७ ॥ च्यारमुक्तिकेश्रागेमुक्ती साहिबकहोताहिकीयुक्ती ॥ बातयेकमोहि श्रचरज भावै ॥ श्रबकहो जीवकेसैपति आवै ॥ ६८ ॥ केसोस्वामीदेऊदिखाई ॥ नहीतोतलफ २ जीवजाई ॥ जीवतजीवमुक्तिन्हीपहिचो ॥ मुवांजीवपीछेक्याकहिहो ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ जीवतजीवमुक्तिन्ही ॥ मुवांमुक्तिकीश्रासतेजीवचौरासीगये ॥ पडेकालकीफांस ७० ॥ कबीरउवाचचौपाई ॥ कहैकबीरसुणोबाघेला सतगुरतोहिकियाश्रबचेला सतरुपासुणिलेसत्यपांना ताकेसुणिप्रमपदधांमा ७१ श्रमरहोयजगधरैनजांमा प्रमसनेही आत्मरांमा सुणिहो नक्तिमुक्तिश्रागर सुमरोउसहंसकेनागर ७२ पहि

तै भक्ति करो चित्त लाई॥ लोक लाज त
जि मान बडाई॥ कुल करणी छांडो मन
मोटा॥ छांडो कर्म भर्म सब खोटा॥७३॥
नांव सनेही जो कोई साधु॥ लो है लाभ
अगम अगाधु॥ उन साधन की सेवा ठा
नौ॥ जो तुम च्यार लोक गति मानो॥७४॥
साधु संत लो ऐसु सदाई॥ सत लोक अ
स्थिर घर पाई॥ सत्त पाउँ जो चल त
रूपा सतगुर सु नायी॥ साहिब सू जे सुनो
ऐक साथी॥७५॥ के सा साध कहो सम
झाई॥ उन के लछिन देहो सुनाई॥ क
बीर उवाच॥ सुनि सत्त पाउँ उन के
चहिना॥ बोलै बचन मधुर सु बैना
॥ काम क्रोध रत पनै कछु नाही॥ और
भाव सुर्त जिन ल्यांही॥ लो भैं दृष्टि नि
निकट नहि आने॥ लोहा कंचन सम
करि जांने॥७६॥ सम दृष्टी सीतल गति
डोलै॥ कुटल बचन कबहू नही बो
लै॥ चंचल चित नही

तेजनसीतलसुषकीसीरा ७८ दया
भावसबईपरैराषै छोटाबडानसुष
सुंभाषै सकलसरीरबसैगुरग्यांना
जबबोलैजबनिर्मलबैना ७९ औ
सासाधहोपजगमांहीं नांवसनेही
चाहितहांही परउपगारजीवका
करहीं कालकुटलसुंनांहीडरहीं
८० नांवलखकीयेसहिदांनी सत
रूपांसमझोमनजांनी सतरूपांसम
भावतुमारा अगमपंथहैग्यांनहं
मारा ८१ सोहमतुमसैंकहाबुझा
ई गुप्रवस्ततोहिदेऊंलषाई
[illegible] सतरूपंसुषऱ्या
नहुकहिउ सोसतगुरकैसीबिधिल
हिउ ८२ कायाभेदयुक्तिमोहिकही
गोरगोरकेमारगलहीये मनश्र
स्रुतिकौनघरमाहीं मनसाल
हरिबसैकेहिठांहीं ८३ बुधिचित
मोहिकहोबिचारा हंसकरोई

नसबतैं [illegible]
[illegible] छोडि [illegible]
नतु [illegible]
सैनाही [illegible]
[illegible]
तेहिगुण [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
बिचार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

होय
हही हिरदामां हैवासामनका पांचुई
हीराजालनका ९० नेत्रमांहिंफिरैसु
कासा जहांतहांमनकीपाप्रकासा
सुणिसततरपासुरतिगिकाना तासुमा
सुभेदवखांनां ९१ श्रुतिदोयदोनुघ
रमांही येकरागनियेकश्रवणगई
मनसालहरैभेदतोहिदेउं मनतेबेग
सबैगुणलेउं ९२ सबकैसिरधरि
हैनकवङ इनडायनजुगखायोम
२ वङ चितबुधियेकघरमांही चेंच
लचितबुधिधरैनांही ९३ तीनगु
णकातीनगिकांना बहोयेकधरजा
नीजांना षटदलमांहिबिरंचिकहा
ई द्वादसमांहिबिसनहैभाई ९४ सि
वषोडसमांहिप्रकासा तीनुकीयाती
नुघरिबासा चंदसुरजदोउबीरव ९
बांह बाहिरभीतरियेकहीजांनु
९५ इनकाभेदसुवरनहीपावै
केतेजोगीजनमगुमावै ऊपरिचंद

रहैत तैसैरा॥ भेद लहैं तेवो सी पहां॥
५६॥ दषिण दिसा चंद का बासा॥ सो ब्र
संड मैं करै प्रकासा॥ बाहिर उलट घरि
होये आवै॥ इन भेद कोई नहीं पावै॥
५७॥ उत्तर दिसा सूरज का बासा॥ जंत
रहैत हां करै प्रकासा॥ बाहिर दषिण दि
स होय आवै॥ यह फेराव कोई नहीं पावै
५८॥ केता पचि २ जनम गुमावै॥ फिर
भटकै चोरासी आवै॥ दोहूं का ख्याल
नहीं कोई॥ जता आपनी सब नै कोई
५९॥ तेज सूरज देही रखवाला॥ सीत
ल चंद कर तहै काला॥ पहली सुरत करै
जंजाला॥ औ चिली सात जहो मन पा
ला॥ १६०॥ पांच तत्व को है ये प्यासा ठक
रत है सब को काला॥ सुष मनि नाड़ि भये
दो उ लीन्हा॥ ये भेयो जीव काल आ
धीना॥ १६१॥ याये ताको मनि रंजन दाई॥
भेद बिना सब बह २ मरई॥ पिन सबहैं न
तै हरि बुको मा॥ सुनि स स्वरूप मे रोता

होय
कही हिरदा मो है आसा मन का पांचुं
ही राजा लन का ९० नेत्र मांहि फिरे प्र
कासा जहां तहां मन की पाप्र कासा
सुख सत्त पासु रति ठिकाना तो सुं मा
सु भेद बखांनां ९१ श्रुति दोय दो नु घ
र मांही ये क रा गनि ये क श्रवण गई
मन सालहहै भेद तो हि दें उ मन ते वेग
स बै गुण लेई ९२ स ब के सिर ख रि
है न क ब कु इन डा य रु जु ग मायो म
२. ब कु चित बुद्धि ये क घर मांही चंच
ल चित बुधि धरे नांही ९३ तीनु गु
ण का ती न ठिकाना बहो ये क घर जा
नों जांनां घट दल मांहि बिरंचि कहा
ई द्वादस मांहि बिस्नु है भाई ९४ सि
व षोडस मांहि प्रकासा तीनु की पांती
नु घरि बासा चंद सूर जदो नु बी रव
बांनं बाहिर भीतरि ये कही जांनं
९५ इन का भेद ऊ बरन ही पावै
केते जोगी ज्ञम गुमावै ऊपरि चंद

रहैत तै स्रैरा॥ जेदल हैं तेदो सी पूरा॥
पूर्ईा॥ दषमित दिसा चंद्रका बासा सोऊ
संड मैं करै प्रकासा॥ बाहिर उत्तर घारे
तो ये आवै॥ क्रम भेद कोई नाही पावै॥
ए ७॥ उत्तर दिसा सूर्ज का बासा॥ जहं
रहैत हां करै प्रकासा॥ बाहिर दक्षिण दि
सहो पे आवै॥ यह फेराव कोई नहीं पावै
[redacted]। केता पछि र जनम सुमावै॥ फिर
भटके चौरासी आवै॥ दोरूक लाल ह
नहीं कोई॥ जनों आपनी सब नै कोई
ए ९॥ तेज सूरज देही रस बारना॥ सीत
ल चंद्र करत है काला॥ पहली सूर करै
जंजाला॥ औ छिलीयात बहो गया पा
ला॥ १०॥ छत्र तसै को है पे भाला चंद्रक
रत है सब को काला॥ सुष मनि मांहि भये
ई तेली न्यारी॥ भयो जीव का सत्रा
री ना॥ ११॥ ये ताको मनि रंजन करई॥
भेद बिना सब बहे २ मरई॥ मन लहै
हरि सु कोंमा॥ सुनि स लक पां मेरो नां

रतनीकसेआई ५ तबरामानंदमेट
जोपाई तबकबीरअपनैघरआई
मालालानीतलिकबनाई तबतैउत्म
भक्तिचलाई ६ कबीरकरैसोमायन
भावै लोगजातरीदरसनआवै क
टुमसहतसबहीमिलिरोवै व्याकुल
भयेकहैघरखोवै ७ मकामदीनाह
मरेत्पजा कलमारेजाओरनिवा८
जा जबकबीरकैलागीजाला माथे
तिलकगलमैमाला ८ कबीरतु
किननैभरमाया येपाषंडभेषकहां
तुंल्याया अपनीराहचल्यांगतिहो
इ हिंदुतुरकबुझियोदोई ए अ
चरजभयोसकलसंसारा तबरामा
नंदलगाईपुकारा मुसलमानजु
लाहायेक जिनहरिभक्तनकाप
हल्याभेष १० कीरतिकरैसोउत्तम
कौदेई बुझ्यानांमतुम्हारोलेइ त
बरांमांनंदनैतुरतबुलाया आगे

पीछैपडद्यारिनाया ११ गेर. रेउ मैमा
नसीसेवा आ कोउेनठ मैमेमा स
बबस्तपुजागे ञानी लिलसाजस्त
येकनहीञानी १२ तानिक ालिम
हैनोंही तुलसीपञनपुजनी नीली स
बकबीरलनलनवीजाने मीसेसी
येकनहीञानी १३ तुलसीदाजसे
डिकरिल्यावो आलसदेहवोञानिच
दावो तबरामानंद जैसीजानीसु होईन
सौकहुनञानी १४ समकालनालो आ
तोही सबसेनेमहमानेलेहा हमरा मन
सेगेलासैजाय तुमसेवकापहनीमुसे
आई १५ तुलसीकाका मेहलमाई
लीलीलीलीलेकलकाई ऐसेदासक
सबकोई आपीभौतिनविदेजानलेही
ई १६ गुरुसेजबदमरहोई सत
गुरकलिमेमिल्यानहोई प्रगटरसन
देवेगुसाई जन नेलीहुताई १७
तबआगाधबुद्धिकर्ड

हतनीकसेम्राई ५ तबरामानंदभेट
जोपाई तबकबीरअपनैघरम्राई
मालालानीतलिकबनाई तबतैतेम
मालालानीतलिकबनाई तबतैतेम
भक्तिचलाई ६ कबीरकैसेमायन
भावै लोगजातरीदरसनआवै क
दसमसहतसबहीमिलिरोवै आकुल
भयेकहैघरयोवै ७ मकामदीनाह
मरेसाजा कलमारेजाम्रोरनिवा
जा जबकबीरकैलागीजाला माथे
त्ति लकगलाभैमाला ८ कबीरु
किननैजरमाया येपाषंडभेषकह
हुलाया अपनीराहचलागतिव
इ हिंदुतुरकबुझिलोदोई ए
चरजभयोसकलसंसारा तबरा
नंदलगाईपुकारा मुसलमान
लाहायेक जिनहरिभक्तनका
हस्याभेष १० कीरतिकरैसोतु
कौदेई बुफ्जानामजम्हारोलेइ
वरामानंदनैतुरतबुलाया म्रा

पीछैपडदालिदाया ११ रामानंदवरैमा
सेवा जावाकीर्तनजांमैसेवा स
स्तपुजामैग्रानी बिसस्यावस्त
१२ ताबिनपुजासम
हैनोंहीं तुलछीपत्रनपुजासोंहीं त
बकबीरतनलनकीजांनी स्वामीसौ
जयेकनहीग्रोनी १३ तुलछीपत्रतो
डिकरिल्यावो ग्रात्मदेवकौंग्रानिच
ढावो तबरामानंदग्रैसीजांणीत्रुछौंईन
सोकहुनत्रानी १४ हमकबदीनीछिपा
तोही सबसौंनांमहमारेलेही हमरातिब
सेगैलामैंजाई तुमसेवगसहतनीकसे
ग्राई १५ तुमरांमकहाभेदहमपाई
मालातीनीत्तिलकबनाई ग्रैसेरांमक
हैसबकोई ग्रैसीभौतिहरिजननेही
होई १६ गुप्तभेदजबप्रगटहोई सत
गुरकलिमैमिल्यानकोई प्रगटदरसन
देवोगुसांई नदेवोत्तोगुरकीदुहाई १७
तबग्रगाधबुधिकबीरकीचीन्ही प

रागोत्वादिया दैन्ही लागावडोरांमाने
गुरपाई जन्ममरनकाभ्रमगुमाई
१८ रामानंदगुरपाईपा ची
न्हिलीयाब्रह्मग्यान उपजीभक्तिसरीर
मै पायापदनिरवान १९ रामानंदका
सिवकबीर प्रेमाभक्तकासंत भक्ति
इठावन औतरे गावैदासअनंत २०
कबीरभक्तिकरीचित्तलाय
छांडीमायामोहबडाई पहिलेतोदास
तनकीन्हां बकुलतुपभक्तनकोदीन
२१ कपडानुरोबेचिलेआवै बचन
तेयसोमायभुलावै येकदिनांहरि
तल्लीन्हों दरसनआयचोखैदीन
२२ सुणोकबीरतुम्हारोनाम
आयोतुम्हरैगांम भक्तकोभ
सोतनलीनां बसतरमांगेअति
लीनं २३ आतीफाडिदेनज
जो सारीदेहो भक्तहुनागो दी
...लीनाई तबकबीर

हीआँई २४ लाटबाटमैरहेजुकाई घ
रकेकाकुघरिलपाई दिनातीकेमां
नसमुषे बालकोवैघरेबिडषे २५
जबहरिकीन्हीऐसीदया घरबैगो
बालदितैगया जिससोंजाघरमांदि
जैतारी बरजतहीबाघरिमेंडारी २६
घरमैंधरोकबीरकीमाता देहैतनतुम्ह
रैदाता जैसोरामकहोकोदाता सुणै
कबीरकरैछपघाता २७ काहोबी
रकहासोंआयो कोकोघनजोदेनप
गयो कबजुकबीरबोलैनहीमागे
लाघटकाघरैजोआगै २८ सुणिरी
मातावातहमारी कासीबिश्वनाथ
अधिकारी जाकेदरसनराजाआयो
जिनकबीरकौंडिबिचढायो २९
दबिलेबैनहीबेटातेरा तबराजात
रिकीननिहेरा मांगीराजाबिनतीते
री जहांपगबोबाघरेमेरी ३० सौं
जमगायमैंछाकरो दोमयेकघरमेंन

ये
हीधरौं तबराजासोंजमगाई सोक
बीरघरदईपगाई ३१ घडीयेकमैंवे
चलिआवे लोगनगरकेदरसनपा
वे इतनीबातकहीहरिजबही मा
ताकैमनमानीतबही ३२ तबकेस
अद्रिष्टिहोगया अपनौभेदकछुन
हीकह्या जनोआरकबीरकैध्याइ
नीगिनीरिघरकुंलेआई ३३ स्वामी
तुमकौंभेटजोआई कैघरचोकेदे
होउगई देषीआपअपनेनैंनां त
पतीयायेपारकेबैनां ३४ कोनेदे
कहीसौंआई तबमातासबकथा
नाई तबकबीरमनहीमनजांनी
माकरीहैसारंगपांनी ३५ ठाकुर
सोऐसीकरी अबजीवडाकबड
नहीडरी तननाबुननाबांडिके है
चरनाचितलाय अबतोरामकप
री पचिपचिमरैबलाये ३६ मत
लायमहोछाकीन्हा कछुनरामो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बेककहै [illegible]

रोझांटो [illegible]

लोगनगर [illegible]

लीबे संन्यासी [illegible]

कासी. [illegible]

रकवीर [illegible]

दस्क [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नांमैहरीपराईनारी ४३ नांमैघरका
जुकाफोस्या मांनसमारिनही
स्या कीयामेहोआहमनहीभुलाये सु
इलोगतेंआनिजिमाये ४४ अबतु
महमहीदेहोरसोई जातोहमतुम
लागनहोई गीगांगी जबहीदेषी
कहुनबोलेकबीरबिबेषी ४५ अ
बतोनाजनहीघरमांही त्यातेंतुम
बैठोउसक्यांही उत्तरकरिकबीरटलि
गया जबकेसोकेमनसेंसैभया ४६
जबहरिकेसीकलाजोकस्या मांषे
इबिगेबकाधस्या सोइइबिबणी
याकुंदीन्हा अरभांतिभांतिका
साधातीन्हां ४७ मेदाचावलषां
डबहोतेरी सकलरसोईघृतघने
री जनाच्यारमजुरलेचाल्या मो
सोजलेघ्रकुंहाल्या ४८ ब्रांसन
देषिभयासुषनारी कोईनजानै
चेरित्रमुरारी जनकीमेरमांभ्र

पिकबढाई। जनीजनांकुंसेरऋढाई
४ए। येककहैकुलाहैदोलहिपारीसे
राजासौंकहोजनाईवेककहैनीको
रेनीको।निलीकरैउधारहोवजीको॥
५० बीरापानदेहसुषपायो॥लबक
बीरसबकेमनभायो।णयोज्ञोध्र जब
स्वारथआयो।धनिधौंकरलसबैघ
रगयू॥५१॥दोहा॥साचोभक्तक
बीरहै॥कालीप्रगटहआय।जोके
ईनींदाकरै॥सोहीनरककुंजाय।५
२॥चोपई॥जहांकबीरतहांहरिग
ये आपरिवीएपाजालएभये बेग
कहाकरैरेभाई कौनकबीरकेघ
रजाई ५३ सबकाकुकौदेतरमोड
जोकोईजोत्सीमांडेसोइ बाणनऋ
रसन्यासीलीन्ही यादेषिमोकुकह
न्ही ५४ सैदाघावतसेरऋढाई
घ्रतसहितऋरषांडमिगाई जेसी
सुनिसुषभयाभारी केसोरायीब

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउरि
आई हरिकाचिरवकाजनहीपाई
बहुतसौंजदेखीघरमांही ओजुआ
त्यल्लेतेजांही ५६ धनिधनिकर
तगयासबकोई तबकबीरमुखर
केगोई धनिसमरथहैकरतामेरे
सोतोकुसदाहरिकोचेरे ५७ हरि
बिनकौनबड़ाईदेई हरिबिनको
नअपनोकरिलेई तबकबीरकेता
सोलागी भईप्रतीतमरमगयो भा
गी ५८ प्रेमसहितहरिकेगुनगावे
हरिहरिकेदरसनआवे सोनारूप
कपड़ादेई दासकबीरकछुनहि
लेई ५९ भाजनभोजनइतेरात
ई नावसहतजोहरिसिदेई
कबीरराजाकोकछुनागे सोत्यां
छविकजातरालागे ६० दिन
दनभीरबहोतअधिकाई सुमरन
करतचितचितिजाई तबकबीर

येकबुधिबिचारी लोकबडाई रिसै
डाई ६१ पातसमेगनिकाकैपग्रलो
न्हेंसंगभुचेलोभया तेबाहजलबक
कैघाली गनिकामिलिकबीरसंगि
चाली ६२ जोरी नरिचरनोहिकलो
या मदकैघोखैमभिमरिपीया रैनबजा
रकेमांहीनिसरचा मानुंगपलाच्यानय
बबिसरचा ६३ हासीकरैनगरतोरै
गा भक्तनकेमनउपज्योसोगा बो
लएबोएसबैबिगोवै हरिजनदे
षिदेषिमुषगोवै ६४ भक्तिकीयो
चाहैसबकोई नीचजालपैभक्तिन
होई दिनदसभक्तिकबीरैकीन्ही
अबदेषोगनिकासंगलीन्ही ६५
चले रकबीरगयेजहा नगरकोरा
जावैसोतहा औरबारआदरक
रिलेता डारिसिंघासनआसनदेता
६६ तादिनआदरकछुनकीया स
भाबाहिरबैठिकदीया सबहीकैम

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउरि
आई हरिकाचिरतकाजुनहीपाई
बहुतसौजदेषीघरमांही जोजुबां
लएलेतेजांहीं ५६ धनिधनिकर
लगयासबकोई तबकबीरमुषरा
बेगोई धनिसमरथहेकरतामेरो
हैतोकुसदाहरिकोचेरो ५७ हरि
बिनकौनबडाईदेई हरिबिनवे
नअपनोंकरिलेई तबकबीरकेत
लीलागी भईप्रतीतमरमगयो
जी ५८ प्रेमसहतहरिकेगुनगा
हरिहरिकेदरसनआवे सोनां
कपडादेई दासकबीरकहुन
लेई ५९ भाजनभोजनइतेरा
ई भावसहतजोहसिहसिदे
कबीरराजाकोहरुत्यागे त्यों
अविकजातरालागे ६० दि
दनभीरबहोतअधिकाई सुमर
करतचितचिंतिजाई तबक

कबुधिकि चाली लोकबडाईछिसै
६१ प्रातसमैगनिकाकैपञ्ञाली
संगछुचलोभया तेलादगलव
घाली गिनिकामिलिकबीरसंगि
चाली ६२ जोरीभरिचरलोह्किली
मदकैघोडैभरि भरिपीला तेलबजा
कैमांहीनिसरचा मोनुजभानचोनस
बिसर्चा ६३ हासीकरैनगरकोले
नकनकेमनउपज्योलोगा ज्ञा
नएबांएंपसवैबिगोवै हरिजनसै
देषिमुषगोवै ६४ भक्तिकीयोर
चाहैसबकोई नीचजातपैभक्तिन
होई दिनदसभक्तिकबीरैलीन्हीं
अबदेषोगिनिकासंगलीन्हीं ६५
चलेरकबीरगयेजहां नगरकोरा
बैठेथेतहां औरबारआदरक
लेता डारिसिंघासनआसनदेता
६६ तादिनआदरकछुनकीया स
भाबाहिरबैठिकदीया सबहीकैम

तहमारी ५५ तबकबीरघरकुंउठि
आई हरिकाचिरत्रकाजानहीपाई
भक्तसौंजदेषीघरमांही औजुबा
लएलेतेजांही ५६ धनिधनिकर
तगयासबकोई तबकबीरसुषरा
सैगोई धनिसमरथहैकरतामेरो
होतोकुसदाहरिकोचेरो ५७ हरि
बिनकौनबडाईदेई हरिबिनको
नअपनौंकरिलेई तबकबीरकेत
लीलागी भईप्रतीतभरमगयो भा
गी ५८ प्रेमसहितहरिकेगुनगावें
हरिहरिकेदरसनआवें सोनारूप
कपडादेई दासकबीरकछुनहीं
लेई ५९ छाजनभोजनहेतरा
ई भावसहतजोहसिहसिदेई
कबीरराजाकोसुतत्यागे त्योंत्यों
अधिकजातरलागे ६० दिन
दिनभीरबहोतअधिकाई सुमरन
करतचितचितिजाई तबकबीर

कबुभिक्षिचारी लोकबडाई छि
ई ६१ पातसमैगनिकाकैप्रप्ता
संगिञ्चं चं लोभया लेवांदूजा
घाली गनिकामिलिकबीरसंगि
वाली ६२ जारी नहि चरलो छिकली
मदके घोलेमहि भरिपीया लेबआ
के मांहि दिसच्या मोनु भोलद्यानस
बिसरचा ६३ हांसी दरैनगारकोले
नकनकेमनउपज्योसोगा ओ
मएवां एंणसबैबिगोवैं हरिजनसूं
देषिभुषगोवैं ६४ भक्तिकीयो
चाहैसबकोई नीचजातपैभक्तिन
होई दिनदस भक्तिकरीरैलीन्ही
बदेषोगिनिकासंगलीन्ही ६५
चलेर कबीरगयेजहां नगरकोरा
वैगयोनहा ओरनारआदरक
लेता डारिसिंघासनआसनदेता
६६ तादिनआदरकहुनकी
भाबाहिरबैठिकदीया स

बहुतकह्याराजासौंभेदाहमपंडासैं
कीयेनिभेदा॥७९॥पंडैहमसौंकहि
जोसाषी॥सोहमतुमसौंकहुनराषी॥
तबराजामनबिलषतभया॥आइबु
मतिबिसरकैगया॥८०॥अबक
बीरकुंमिलीयेजाइ॥नातरकछुनहि
पलाइ॥राजाबोलैडरपैभारी॥दे
सरापकैलेयउबारी॥८१॥मइंकप
बातसमझाई॥बेगारांणीबुझोजाइ
वैमहंतहमरैमनजांणीं॥उनकछु
हमसैंलीलाठांणी॥८२॥रांणीकह्
बारकुनिकरो॥चलिकबीरकेपा
यनपरो॥कौनभेटलेमिलीयेजाई
देषिडिबतोउँगेरिसाई॥८३॥दोहा॥
गलैकुहाडीबांधिकै॥सिरलकडीक
भार॥कुटंमहतराजाचल्यो॥सबसु
गढ्यनहार॥८४॥चौपई॥अंसंघ
द्वैबघेलोराजा॥कबीरकाऐयोई
लाजा॥इरहीतेकबीरउगधाये॥र

जादेपिसुनमुक्तहोयआये ९९। हरि
मारिमायाबुझ्योकु मेरामनमैनाहीं
मानु राजासंतीडंडवतकीन्हां त
बकबीरजुंकमालभेलीन्हां ९
द येकपावराजागहेरहीया पूजाप
वरांणीसबभईया बंगसोस्वामी चु
कहमारी तुमबिनकौनकरेरषवा
री ९७ हमहीपीगिजिनदेहोगुसांई
बहुतभांतिअस्तुतीबनाई कहेक
बीरभलीतुमकीन्ही हमकंआय
बडाईदीन्ही ९८ बडाहोयसोदेय
बडाई बडासोबांटिबांटिधनषा
ई बडासोसांचकुरपहेचांने मुं
षकहाबडाईजांने ९९ तबरा
मनआनंदभयो दरसनपायअप
नैघरगयो कबीरअपणोंनामछि
पावे जुंजुंलवंतीगरमछिपावे
१०० छिनछिनदुनीमगटहोई करएं
केसैकोनीसोई ज्योंकोइअपनीक

तबडाई सुपनहीपावैजरिबरिजा
ई ॥८१॥ अपनौंकांमकरैजोमरदै
कैसौंकरिकांमनिमेटैदरदै ऐसैबि
बेसंसारदुलानां हरिजनहरिभजि
भयेसयानां ॥८२॥ बहोरिकबीरकं
चटीबडाई दरसनहुनीपांदेषन
आई बिगड्याकारजिरांमसवारै
मोजलडुबतरांमउबारै ॥८३॥ का
जीमुल्यांकरैजेपाधी बांलनबनी
यांसबे पराधी बैरकरैअरुमारन
ताकै समझिनभईमनहीमनजां
कै ॥८४॥ ऐसैकरतबहुतदिनबी
ते बारकीयेकबीरकुंनहीजीते
औरकबीरकीमातापोटी भक्तिनभ
बेपकडैचोटी ॥८५॥ बहुतसुमति
करैसबरारी धनिकबीरजोतैयत
हारी बाहिरिबैरीऔरघरमांही र
हैकबीरनांमकीछांही ॥८६॥ भक्त
कोबैरीहैसंसारा आदिअंतहरिरा

पनहारा॥ ब्राह्मन भक्तो आइ बैठा ना
उकारे मांडु सैरा॥ ९७॥ येक दिना मै
सी बनि आई॥ बिधि से जो गनसे टोजाई
स्याह सिकंदर कासी आया। काजी मुल
के मन भाया॥ ९८॥ गया पुकार बारन
ही लाई॥ ब्राह्मन बणीयो मिलि मिलि
। और कबीर की माता दोरी॥ सम
न भई मति की भोरी॥ ९९॥ सब आ
तुर करि न्याय पुकारे॥ जो तु काकु के
मान समारे॥ कबीर कीरत्या करै भग
वंता॥ सो जस गावै दास अनंता॥ १००॥
दोहा॥ स्याह सिकंदर तु बडो॥ मेटि
हमारी पीर॥ ऐसी काहु नां करी॥ जे
करी कबीर॥ १०१॥ चोपई॥ कहै पा
तस्याह कहा भयो भाई तेरा गांव पर
गनां लीये छुडाई गांव परगनां नाही
लीन्हां जुलाहे येक अमारग कीन्हां
१०२ मुसलमान की छोडी रीती और
हिंदु की कीन्ही छोती नीदै तीरथ

नीहैबेदु नीहैनौग्रहनीहैरबिचंद
१०३ नीहैसंकरनीहैमाया नीहैसा
रदागनिपतिराया नीहैग्पारसैहो
मसरंधा नीहैब्रांह्यनजगिग्रार
धा १०४ नीहैमातपिताकीसेवा
बहनभांनजीग्रोरकुलदेवा नी
हैसकलधर्मकीग्रासा षटदरस
नग्ररबारहैमासा १०५ ग्रैसीबि
धिसबलोगबिगारा हिंदुतुरक
दोउंसुंन्यारा तातैहमहीमानेनहि
कोई जबलगजुहांकासीहोई
१०६ ईतनीमेटोबिपतिहमारी तु
महीपितातुमहीमहितारी ईननी
बनतीसुनोहमारी इहैनगरमांहि
सौंदेहानिकीरी १०७ तबसुन
तसिकंदरउग्रोरूसाई हडीरा
रदोदीयपगई ग्रांनोबेगबांन
हीहोई तेमारैबिनतीकरैजेई
१०८ ग्रायपयादेबातसुनाई

स्याहसिकंदरवुलावै भाई हौसैशिक
रकैसैंजांनै कौंनकैहीकैसैपहिंजां
१०९ लेहीमाडेपजाईसरी कोजी
मुलासरूतप्रुकारी जवकाबीरस
मझिचलेमनमांही जैनचलौतोब
नतेजांही ११० सवसंतनकौदेपर
धौ तुमजिनकरौदमैरोसोभा ऋ
आतुरदोऋसुरपगाये लैकबीर
कौबेगेल्याये १११ लैकबीरजहांऊ
माकीन्हो जहांसिकंदरडेरादीन्हो
हसवारीमनबचलाजा तापरिम
लातिलकविराजा ११२ मुदतबच
नऋरनिरमलनैनो जववोलेजव
सीतलबैनो तवकाजीबोलेसम
झाई करतसलामदिवांनाभाई
११३ ऋरैमैसलामैकहाकरिजं
तुजिनकाजीहोपदिवानौं
सिकंदरऐसीबाता कुतोहिदे
दोजिगजाता ११४ राहछाडि

करीक्रूराहा॥ क्यौंबेजुलाहाबिगा
ड्याकाहा॥ अपनीराह चल्यौगरि
होई॥ हिंदूतुरकबुझिल्योदोई॥
१५ तबकबीरबोले बचनबिसे
षा॥ सकलसभामैंअदभुतदेषा॥ दो
जुगजायतुरकअरहिंदू॥ काजी
लोंबोलेमोहू॥ १६॥ हमतोमनकि
किंतुआये॥ गुरपरतापरामगुनग
ये॥ रामभारोसैगिनुनकाहू॥ स
हीराजारंकरसाहू॥ १७॥ [illegible]
राषनहारारामहै॥ मारनसकैकोय
पातस्याहसौंनाडरू॥ करतांकरैसो
होये॥ १८॥ चौपई॥ काढिकतेबु
सुणावैकाजी॥ बिचि२ बोल्यएवै
वैमोजी॥ मालातिलकदूरिकरिड
रो॥ पीछैलेपाथरसौंमारो॥ १९॥ होव
रखाईसुनैसबकोई॥ मुसलमानक
फरकैसौहोई॥ कहैकबीरसमझिबि
नकरिहु॥ तुमहीकाफरतुमहीम

कारणे।कौ जल तेव सौ गाभ कटाई
बकरी मुरगी किन फुरमाई॥ जितना
देषु आ तम षाली॥ तितना कीजस तोडै
बाती॥२२॥ राजा परजा नरक को पडिज
जीव दया नही हिरदै धरिज॥ राम क
हत जा कु भोनो हो॥ इतनी सुणि को
पो पातस्यां हौ॥२२॥ मां नुं घटा आ
वटी कडा हो॥ मांनुं काया की पुं छम
रोडी॥ मांनै सोवत सिघ जगाई॥ मांनैं
बैसांदर मैं होली होरी॥२२३॥ काफर सं
के मांनै मेरी॥ अब देषु करामाति ते
री॥ बांधि २ पग मांहि जंजीरा॥२२४॥
तब कबीर करता गहि लीन्हा॥ जांन
त षत परिआ सन कीन्हा॥ छुटि जं
जीर पडे जल मांही॥ लागो तरवा डु
बो नाही॥२२५॥ क्रोध भयो असुर यौं
मायौ॥ जल मैं रहो पणि अब कौन रायै
बकुरि बांधि मैदर मैं नायौ॥ आतपा
स पावक दे रायो॥२२६॥ भयो ते दास

आसनहोतीरु॥ हरि२ तुमैदासक
बीरु॥ कबीरकरुण हरि सुं कीन्हो॥
पडुप ब्रह्मा जहांगंड्कीन्हो॥ १२
७॥ जितिगयो मंदरराय बैंडानो॥ मई
करामाति सुरनरमुनि जानी॥ अधि
करूपनारों णकीन्हो॥ मानुदेहबि
धातादीन्हो॥ १२८॥ जैजैकारभयो
जगमाही॥ काजीब्राह्मनषरास
सांही॥ नाटकचेटकजुलाहाजा
नै॥ स्याहसकंदरतुमतिमानै॥ १२९
ईतनोसुनिमनउपज्योरोसा॥ अब
कबीरतेरोकौंनभरोसा॥ मातोहाथी
आनिजुकाया॥ अपनीछांहचुरता
आया॥ १३०॥ संकनमोनैम्हावतकेरी
सोलषिनल्यैतीपोनमेरी॥ सोंनासं
कलबांध्यारांषे॥ दोनोकुंचोडुरिसो
नापे॥ १३१॥ सोंनाअंकुसदांतमंढा
या॥ विचिर हीरामोतीलाया॥ नगरमां
हि नहीछूटनपावै॥ मांनसमारैकोदट

तावै॥१२२॥ एसैरावत मारै बांका॥ भा
ट बिरद मोषै है ताका॥ काल सैलूं मा
थैथा प्या॥ तेल सिंदूर एक देन ही धापा॥१
२३॥ पुनी वहो निसो मदल जीता॥ पंथ च
लै जब गावै गीता॥ सकल सिंगार छंदा
चौरासी॥ मांनौं ईदू सों का न्हे पर जासी
१२४॥ सो कबीर पहि ओलि चतुकाया॥
पीछै ज्याय न आवै आया॥ कहै सिकं
दर कोपे भारी॥ अब महावत जीव स
महारी॥१२५॥ दोहा॥ कालरूप होय
आईया॥ सब कोई चालै भागि॥ सत क
बीर तो नाहिं डरै है भाभ सैं लागि॥१२
६॥ चौपई॥ सिंघरूप के सोडर पाया॥ ता
तै हस्ती निकटि न आया॥ पीलवान कुं
आगम दीसा॥ मिरै आगै सिंघ ही की सा
१२७ पीछैं स्याह सिकंदर दीग कबीर
कै आगै सिंह ही बैग॥ पीलवान हस्ती क
रि न्यारा॥ भई करामाति अब की बारा
१२८॥ सां चा रांम कबीर तुम्हारा॥

आसनहीनी॥हरिरसुमसैदासक
बीरु॥कबीरकहउ॥हरिंसुकीन्हो॥
पजुपद्म पाजहांगंड्फकीन्हो॥१२
७॥जतिगयोमंदररायमंडानी॥सइ
करामातिसुरनरमुनिजांनी॥अधि
करूपनारांणकीन्हां॥मानुदेहबि
धातादीन्हो॥१२८॥जैजेकारभयो
जगमाही॥काजीबांह्मनपरास
सांही॥नाटकचेटकजुलाहाजा
नै॥स्याहसकंदरसुमतिमानै॥१२९
ईतनीसुनिमनजेपज्योरेसा॥अब
कबीरतेरोकौनभरोसा॥मातोहथि
आनिजुकाया॥अपनीछांहचुरत
आया॥१३०॥संकनमानैन्हावतके
सोलछिनव्हैलीयोनमेरी॥सौनातं
कलबांध्यारखै॥दोनोंकंचीजुरिमे
नाखै॥१३१॥सौनाजूं कुंसदातमं
या॥बिचिरहीरामोत्तीलाया॥नगर
ि नहीं कूटनपावै॥मांनसमारैकोव

असुरसिरनाया तबकबीरअपनैघरस्र
पा जहांरकहतहारदृग काजीबो
लणहोगयाकुठा १४५ अपनैघरर
आयेदासकबीर गुरपरतापभये
अमसरीर जबकबीरकैस्तागीज
ना मितिरसेनजनकुठे वाला
१४६ हरिरबोलेदासकबीर चर्न
सर्नराषेरघुबीर येतस्याहजनक्स
नीदीखो तबहेरैमनसंकनकीन्हो
१४७ जाकेभक्तनकोबलहोई जा
कमारिनसकेकोई कोटिपापहरि
भक्तनमाहैं भक्तनपीछेहरिचलि
जावैं १४८ जोभक्तसौरहैकरतार
जाकानाशीहरिरपवारा जोभक्तन
कीनिंदाकरैं तोकुंभीनर्कमांहिसो
परै १४९ जोभक्तसौंकरैज्योंती ता
कैगतजनमदेहैकोती सबजीवनमैं
राषेरांम हरिभक्तनबीनसरैनकां
१५० गुरगोबिंदअोरभक्तही

बकै राघोप्राण हमारा॥ येकाजीभ्रांत
नमरमनजांनै॥ सिरजंनहारतुमही
करिमांनै॥ २३९॥ देषि दीनताकरै
कबीर॥ जनकरराषिलीयोरघुबीर॥
सिकंदरसूबकैनहींडरना॥ तो
हरिनिस्प्रपरलैकरता॥ २४०॥ कबीर
कैरुपनैकनआई॥ तातैंअसुरस
ष्यानहींपाई॥ जोकोइआगैंअगुन
गंनै॥ जाकौसाधनलोकरमांनै॥ २
४१॥ जोजनदेषैहरिकाकीया॥ जोज
नहरिअपनोकरिलीया॥ पातस्या
हगहेकबीरकैपाई॥ अबकेसोअ
दष्टहोजाई॥ २४२॥ मांगोसांनांमांगो
पा॥ मांगोबस्तरअधिकअनुपा॥ मांगो
गांमपरगनांघोडा॥ तुमहीकोंदीजै
सोईथोडा॥ २४३॥ कहैकबीरमांगुनही
माया॥ राजारंकसबैईनचाया॥ माया
मांगैंसौमक्तनहोई॥ मनदिढराषैह
रिजनसोई॥ २४४॥ तबहाथिजोडि

नीसौंपिपालहू प्रेमकाजलहीं हीं
सांचे सो रूपटकी यो बोरहलो ॥ छ
र आये ज्ञक्तिप्रेमनां ॥ १५७ ॥ तापीहै
हरिजन चलि आये ॥ जानूं पानसहित
बादल आयो । पेडलकीसकी लिसनी
कीन्हा ॥ छत्तीस कोस लगपांजनकी
न्हा ॥ १५८ ॥ चाहिलाबीसलोक होसनश्रंत
सोजसगालेदासजूनेतबचाहेसूसूछे
नगिनती होसीगंगाके तीरमिलेसब
कोई ॥ १५९ ॥ सुनतकबीरसुखलेदेर
हीया ॥ सुनसुखहोयकछूनहीं कही
या ॥ तबबे सोऊपनाकारलीन्हा ॥ बो
टिकलाकबीरकीकीन्हां ॥ १६० ॥ डे
रा आदरलेही ॥ श्रं आकरिसोगोसो
देही ॥ कडंकना चैदकैकगावै ॥ ह
रिकाचिरतलनकोई पावै ॥ १६१ ॥ दिना
पांचमिकिमानीकीन्हों ॥ घुरमांकीप
हरातलीदीन्हां ॥ मोजमयोकबीरसु
पदेयो ॥ जीवनजनमसुफलकरि

चीन्हां॥ तातैमेराकछुनकीन्हां॥जा
कोगुरमकुनसैनाता॥ ताकुंकाल
नवावैमाथो॥१५२॥दोहा॥ जलबोर
पावकजलै॥ बिनस्यो नहीसरीर॥ज
तेउतहहरिराषीया॥ निर्भैभयोकबी
१५२॥ चौपई॥ ऐहपरकारकबीर
बार जहांतहांहरिनपैरषवारा
बहोरिसरिब्राह्मणमतोकीन्हो ज
तहैबहोतदुषहमकुंदीन्हां १५२
परपंचयेककीयाऊ नहोता छलि
लताकरिअपनीबोता ब्राह्मणचो
केमुंडमुंडाई तिनकोसीषदेगुपत
चलाई १५४ दीयोदलकबीरके न
मे असीकोसलगजतरागामा म
षमासपैछलोपषवारो नौमीकेदिन
मेलोसवारो १५५ जुगोदलदीयो
बकाफ़ बेगाबसंतपंचमीआऊ
दासकबीरमहोछागारा सबसंत
कीजोवैबाटा १५६ मोथैमांनिरदल

लीन्हौं॥पावहु प्रेम का ज्ञ न्हीं सी
न्हो॥ऐसे सो रूप रसकी यो कुं रल न्हो॥च
रस्राये जब कहि प्रेम नो॥१५७॥ता पीछें
रिजन चलि आये॥जानूं पान सहित
बाहल आये॥पैंडल बीस कीनि षनी
कीन्हें॥छबीस कोस लग पांवन दी
न्हो॥१५८॥चालि बीस लें होय न ऊंत
जस गावें दास क्रूनें तन चलें सम्हह
नती होंगी गंगा के तीर मिले सब
ही॥१५९॥सुनत कबीर गुप्त होय र
हीया॥सुन मुष होय कछु नहीं कही
या॥तब के सौ रूप ना करि लीन्या॥को
कता कबीर की कीन्हां॥१६०॥डे
आदर ले ही॥अरु छमा करि मांगे सो
ही॥कउं कनाचे के जीं कगावै॥ह
का चिर तन कोई पावै॥१६१॥दिना
च मिकि मानी कीन्हौं॥थुर मां कीप
रांव नी दीन्हें॥मां रूमयो कबीर सु
पदे ये॥जीवन जन मसुफल करि

कीजे कासी करवत लैलै मरिजे
१७४ जो लगपरमै देवदुवारा से
तुमसहै जै होवो नरतारा पेकती
तीरथ कोटिनकरै पेकछुंवाबोटि
२ कैमरै १७५ पेकज्यायहिवा ते
सीके तोर्तनजायुअपछरारीके
जो लगसुखनलैहो हमारा तोल
गमें च्याजनमतुम्हारा १७६ ईत
नीमांनौबातहमारी वहोरिनरा
बोराबोहिन च्यारी कहैकबीर
सुनौरीमाई सुरगलोकसौकौन
उपजाई १७७ कैसैकरोहमारीच
ही सोतुमनेदकहो समझाई छि
बेगीतुमलाजनमरिहो नीचदेखि
तुमसंकनकरिहो १७८ बगसि
२ अबकहूनिहोरा तेराच्यालनम
नहैमेरा कुआरकाकह्या जोकर
ही हंसमरबटिजाउं अबही १७९
तेरैहाथिनआउंमाई सिरपेमेरै

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

री उत्तोव तैलि [illegible]

काहि हि मारे [illegible]

गत्तुपरोरहो [illegible]

इ तुमसोंप्रीतिल [illegible]

ओडोमातामासहे।।२१। [illegible]

कहापरीजेजारी [illegible]

डिडेमेरी।।सुगेलो [illegible]

२८४।।हहा।।[illegible]

बुई मयाकलार [illegible] ।।

कीजे कासी करवत लैलै मरिजे
१७४ जो लगपरमै देवदुवारा
तुम सहै जे होवो नरतारा पेकत
तीरथकोटिनकरै पेकधुंवा
२कैमरै १७५ पेकन्यायहिवा
सीके तोर्जनजाय अपछरारीके
जो लग तुषनलेहो हमारा ताल
गमे ष्याजनमतुम्हारा १७६ ई
नीमानौवातहमारो वहोरिनरा
घोरा घोहिन चारी कहैकवीर
सुनौरीमाई सुरगलोकसौकौन
तुमआई १७७ कैसैकरेहमारी
ही सोतुमनेदकहो समझाई
वेगीतुमलाजनमरिहो नीचदे
तुमसंकनकरिहो १७८ वग
२ अवकहैनिहोरा तेराष्याल
नहै मेरा ऊगा२ काकलाजो क
ही हंमरवटिजाउं अवही १७
तेरै हाथिन आउंमाई सिरपेमेरै

षेतनमैंगयो श्रीसंवरसल्लअ मक्तहीन
यो क्सैसोलैलरीहैमत्ती लापीहैपाई
हैमुक्ती २०४ मरिबाकेमलिलीलाव
टी सोधिलईमगहरकीघाटी कासी
मुक्तिकहैसबकोई मगहरमैरेरालिये
होई २०५ कासीवाटैसबकापाप
जरावुहरिपरताप हीहरुबरकबिचिपा
डीछोटी तुमजानोतुमदीजेप्रोटी
२०६ वोऊवतीसफलमगाया लाके
पैपरसनकरीया सबसंतमितिना
चैगावै तालपषावजसवैबजावै २
०७ अमरभयोछांडोनसरीर गयोसं
देहीदासकवीर मक्तांकैमनअचजेरे
भया फूलदेषिअपनैघरगया २०८
एकतोसुरिनाजनयांही एकतोगव
होतपिछलांही कबीरबिनाकासीऊ
धीयारा ज्युचंदाबिनदीसैतारा २०९
ज्युंबरातिमैडुलहैनोहीं ज्युप्रतबिना
रसोईकहुनांहीं
२

मतीनं यौंकबीरबिनकासातुनं २१० जहां२कबीरचलिजाइ तहं २चोगनोबडाई सिवबिरंचेस्रमे करिलेहीं सुरपतिडारिसिंघासन देहीं २११ बिस्नुकहैबैकुंठतुम हारि रहोसदाहीनावहमार सिध सनेहकरैबहोतेरा सौंपनकहैनेडा रकेबेरा २१२ सनकादिकमिलिनोच रंगा नारदब्याससंगतिरंगा कछुकहे लागसबसुषजीते मयेसरूपीकंदे हसमीते २१३ हरिस्रपनोंगुनस्राप नगावें जनकूंजसदैप्रीतिबढावें जा नसुषेलिस्रापसुषपावें भक्तबछ लहरिस्रापकहावें २१४ भक्तनके संगिलागीडोलें भक्तनकेघटबेमो बोलें ईतनीकथाकहीहरितेरी गा वैसुणैभक्तिहोयचेरी २१५ नरना रीगावेजोकोई निस्चैसुषपावैसबकोई नासेरोगसबछेहोजाई उपजेग्यान

क्तिमनमांही २९६ विद्याहीनजोबि
आपावै कबीरकागुनलचिकरिगावै
कबीरहैकरताकीकला भक्तिहेतपहो
मीओतला २९७ कबीरकरतादोक
रिजानैं जाकीभक्तिरामनहीमानैं नर
गुनभक्तिकबीरबिचारी तातैंर्ततस्यो
भोजलपारी २९८ आनदेवसुंसरअ
नजोसा अषंडअपारताहिमनमान्या
हरिकेतागुनबरनैंतेरा कर्ताथाकिर
हामनमेरा २९९ भिरपरबतजालि
बालिमसिकीजे भारआगरेलेषनकी
जे सातसमंदकीकीजेघोली बसुध
सबकागदकीहोती सारदालषणी
आवैअंत जोजसगावेदासअनंत
॥दोहा॥दासअनंतजोकथीहै॥ह
कीभक्तिअपार।कछुककहीकबी
कीसतगुरकेउपगार॥२२१॥इतीश्र
कबीरसाहिबकीपरचईअनंत
दकृतसंपूरण॥ग्रंथ॥२२॥सबै

गणेसी॥१८०१॥अथ ग्रंथ अमृतधा
रा लिष्यते॥दोहा॥मंगलरूपसरूप
मम॥निजानंदपद जास॥नमोमंग
लाचरनयहसोहेंहैसप्रकास॥१॥क
वित्त॥जीवसीवऐककरै असीअ
सीभावधरै अहंपासबासकरै अ
मृतधर्मानिये मरनकौमैनसामो
अवपसरूपपायो बेदबिदिजोल
पाये गुरु ग्यांन जानिये मोनितजिम
निलैरे तेरोई सरूहैरेसबेअभेदान
देरेहेरे अमीयांनिये भगवांभयांनं
न मोबिनानतहैग्यांनविषयाविषे
मांनबिदितबषांनिये॥२॥कुंडलिया
अंमृतधारा ग्रंथहै ताकोकरोबष
न ताकोकरैंबषांन ग्यांनसबबि
रैं जंजलफेनतरंगअंगसबग्याप
बचारैं बुधिसुधिकरिपीवैनिरम
पुटिकाकांन॥अमृतधारा ग्रंथहै
कोकरैंबषांन॥३॥दोहा॥अमरव

है
रतौंनही अमरअमरपतिनांहि मरनजी
वनसेसोनसै लहैअमरपदतांहि ४
यहअमतअमृतसहीनमलताइकास
अंजनताअमृतनही अमृतनिरंजन
नभास ५ पिऐपीयुषजीवजुगतिसोत
जिअजुक्तिअजोन अषंडधारअूते
नकी सोअमृतप्रमांनहे॥सोरगे॥श्री
गुरसंतप्रताप॥वरनौंबुधिबिलास॥
सकल॥तजोअंनकोजाप॥जगतोई
सोईसोही॥७॥अतिलेजातेंअमृत
होईसुजुक्तिबताइये॥प्रथम चारिअनु
बंधतहांमनल्याईये॥अधिकारीअरु बि
षैलषिसनबंधरे॥परिहांपरमप्रयोजन
जांनौऔरसबधंधरे॥८॥दोहा॥कहौं
बरनबरधरनिसबि॥अधिकारीकोहेत
साधनतेंफलमिषहैजउलषहिकोप॥
ता॥९॥अधिकारीवरनन॥दोहा॥ध्या
न चारिबिचारि जुतकहियेताकौ
बैरागआदिषटअंगधनि निज

ग्रमीसौचलाइये १८ दोहा वैरागनें
मचित्तरेकयह विषियनभावअभाव
विहतमतपरमांनहै सुद्धतिमन
ताव १९ ऐकइंद्रीकोभेद सुरित
मनमेंइछाहोइ विषयकेभोगकी
मनइंद्रीकौरोकिअवसथाजोगकी
ज्योंदीपकघटछिद्रभिनसेपेषिये प
रिहांयोंमनव्रतिनिवारिपेकवलते
षिये २० दोहा ऐकइंद्रीवैरागय
ह ऐकरनिरधार मनइंद्रीअभिमा
नतजि मनमनिमनहिविचार २१
वसीकारवैरागकवित्त लोकहेप
लोकजोगत्यागिये सरूपभोगलषि
लषिमहारोगभेदसोप्रकासिये सुरन
रभोगजांनतीनतापतापमांन सबैअ
हसोकभांनिस्रुतिसैपभासिये पुनि
हतलोकजाइछीनभयेपरेआइकौ
मककहैवनाइलोभयोंनिवासिये भग
जांनभयाभांननमनप्रकासज्ञानइ

ज्ञानअभ्यासतें प्रिति तेजालिये २२
दोहा वशीकारवैराग यह इं त्यासे
पनलेष तीनि मैं इग्यासे प्रगट तेगुरम
मितैनेष २३ वशीकारवैरागतीन
प्रकारहै तिनकेनाम मंदतीवरती
व्रतर २४ मंद सो ना सुतवित
बिषेबियोगतें त्यागबुधिमनहोई छि
नाहिंगषिगाषियमैंबसै वैरागमंद यहु
जोई २४ छाजनभोजनजमामिलै
ईयहमुक्तिकरिजोन मंदमंदतुनिप
छहै तीव्ररपदनिरजोन २५ मंदक
रैसतसंगानितिपावैसुषसरूप गुरुज
तापतैंप्रगटिहै कोटी बैरागनिरूप
२६ अथतीव्ररसरूप अभिन निर
दिनधरैधियानरांमजी भजतुहै देह
प्रेहसुषधांम बोमसुतसजतहै प्राप्ति
प्रगटअभावअप्राप्ति मरमरे परिहरि
यहतीवरवैरागजांनिनिहवांसरै
२७ तीवरतरकोसरूप सोरठा

तीवर नरबैराग अबआगैबरन नकरै जाकै लाघै लाग गुरुपरता पसैपावही २८ कबित्त भुवलोक भूरलोकसुरलोकजनलोकमहरलोक तपलोकसतिलोकआदिहै अतलबित लसोतोसुतलरसातलहैतलातलमहा तलपाताल कुंआदिहै लषैलोकलोक जेतेलोकहैसंतापतेसुनैगुनैसोसबुनै भोगसुषबादिहै भगवाननरमनास्यो जीवसोवएकबास्यो आपुहीमैंआपु नास्योऊमीरसषादिहै २९ दोहा सा तलोकपुनिसाततल चौदहभुवनबि च्यारि जन्ममरनसबहोतहै सोमन मैनहिधारि ३० यहबैरागबिधान है कह्योअनपबिमलारि बिबेकउ आदिपुनिकहतहौं तीन्यो भेदबिचा रि ३१ अथबिबेकबरनन अरिल बिबपदपदप्रकासएकपदकीजिये यहबिबेकप्रमानजुगतिजाजीजि

पे वञविवेकतजिसेकविवेकाविच
रिये परिहोयहविवेक निरधारहेतम
मजारिये ३२ चौपई घटमठएकम
तिकाजानौ पटसरूपसवतंतुवखानौ
कंचन आभुषनसवएकै जलज्योंफें
नतरंगनसेकै ३३ योंहीचेतनजगत
प्रकासै स्थावरजंगमबिबधिप्रभासै
मुकरमहलज्योंबिंबअनेका सुधवि
बेकअनेकनएका ३४ वैरागविवेक
कहेसमझाई समझैतैसेसैसवजाई
अवषटसंपति भेदवतांऊ जाकेकह
तपरमपदपांऊ ३५ अथषटसंपतिवर
नन: चौपई: मनबुधिचितअहंकार
सरूपा कोमकल्पनातिनहिनिरूपा
अंतःकरनकथायनसाई समसरूपनि
रवासनपाई ३६ अरिल इंद्रियभोग
संयोगसर्वथात्यागियेतजिविकारवि
बिचारशोभनरसपागिये बाहिभीतरि
वृतिऐकनिचलनभई परिहांसमदमहै

तावर नरवैराग अबञागैवरन
नकरै जाकै माथैभाग गुरुप्रता
पसैपावही १८ कबित्त भुवलोक
भूरलोकसुरलोकजनलोकमहरलोक
तपलोकसतिलोकआदिहै अतलबित
लसोतोसुतलरसातलहैतलातलमहा
तलपाताल कुंआदिहै लषैलोकलोक
जेतेसोकहैसंतापतेतेसुनैगुनैसीसधु
भोगसुषआदिहै भगवाननरमनासो
जीवसीवएकबासो आपुहीमेंआपु
नासोअमीरसआदिहै २९ दोहा स
तलोकपुनिसाततल चौदहभुवनि
चारि जन्ममरनसबहोतहै सोमन
मैनहिधारि ३० यहवैरागबिचार
है कह्योआनपबिसतारि बिबक
आदिपुनिकहतहो तीनोभेदबिच
रि ३१ अथबिबेकबरनन अरित
बिबपदपदप्रकासएकपदकीगि
यहबिबेकप्रमानजुगतिजाजी

ये वस्तुबिवेकतजिसेकबिवेकबिच
रिये परिहोयह बिवेक निरधारहेत त्र
मजारिये ३३ चोपई घटमठएकम
लिकाजानो पटसरूपसबततुबखानो
कंचनआभुषनसबएके जलज्योंफे
नतरंगनसेके ३४ योंहीचेतनजगत
प्रकासे स्थावरजंगमबिबधिपभासे
मुकरमहलज्योंबिबअनेका सुधबि
बेकअनेकनएेका ३५ वैरागबिवेक
कहेसमझाई समझेतैसेंसबजाई
अबषटसंपतिभेदबताऊ जाकेक
तपरमंदपाऊ ३५ अथषटसंपति
नन चोपई मनबुधिचितअहंका
सरूपा कामकल्पनातिनहिनिरूप
अंतःकरनकषायनसाई समसरू
स्वासनपाई ३६ अरिल इंद्रियभ
संयोगसर्वथा त्यागियेतजिबिका
बिचारजोनरसपागिये बाहिमी
वृतिएकनिचलभई परिहासम

छिदजांनि ओरजेपरलैनई ३७ वेसा
अंतरिइंद्रित्यागासम बाहिरदमप्रका
स बाहिरभीतरिविसयतजि उपसम
यहनिवास ३८ अखिल लोकमेंहि
अहं वोहवैक नहींमांनिये असनपि
पासारूपहु इनहिंआनिये अस्तुतिनिं
दाआदिबाहिरलखमहै परिलेयह
कलपनिसवहोर मारसवसमहि ३
९ श्रीगुरज्ञांनसमांनजांन अरु है ति
नकोसुमिरनध्यानसेवनरमेटहै य
हसवआनिरधार जांनिजियतुगनरे पा
तजांवहै तैलकैसवेयामुक्ति ४०
नमाध्यांनयहजांनिआत्मानिसहै मेसे
अक्षविपरीतधरैनहिंचितहै जैसीवे
नचिलेरवैल न हेंलागेही परिहोदे
हैमाहसिदाविकोही ४१ अथअमुतु
अरगन लोहा जगकेबंधनजांनते मु
हिलेनकौआस आसवासविसवास
नहिं सोसको द्यापरकास ४२ अथअरथवे

ऋरूकोमपनिंत्याभिपदरथतीन सो
धिकारीसोक्तिकोमहोसोमीपनीन
त्र यरुऋधिकारीमोषिको साध्यानको
धिकार लिषेकहेसिनवेरुपुनि भ
प्रयोजनसार धप सोर्ठी करिअ
कारीनाव श्रीगुरुसोलघतापते पु
निश्रानंदगुनगाव भगवानभावलि
हरषसो धपू इती श्रीसुकलसारा
अऋधिकारीनेददरननोनाम भगवा
नदासनिरंजनीकषितेप्रथमोपप्ता
व १ दोहा तृतियप्रभावप्रभावके
मनमेभयोउल्लास कहतसुनतसुष
पाइये निरमलबुधिबिलास १ अथ
विषयवरनन दोहा आत्मचेतनरू
पहे बुधिसंगजीवजान गुरुसमिलिपा
नसमान मदसोईलिषेप्रमान २ जैसे
सुरजकीकिरन जलथलसबमें भास
सुधअसुधभासतदा बहेसुधसरूपप्रका
स ३ अरिल सीतकालज

अनिहस्नहैनहिताहि १३ यौंहीबुत्य
प्रकासहै सासुसुमतिप्रमानसनबं
धग्रंपानबेदांतहै ग्रानअंतकरिजं
न १४ बोधकरूपीबेदहै बोधै
जीवसरूप जीवजीवतामेटिकै ई
सहीईसनिरूप १५ चौपई दृष्टाक
रिसबद्रिसप्रकासै द्रिष्टाज्ञानद्रिष्टि
सबनासै द्रिष्टिउपेष्याद्रिष्टासार यौं
सनबंध बेदनिरधार १६ दोहा
सनबंधीसनबधहै बाचितछिप
रमांन बेद्बाचिसनबंध कहिस
नबंधितछिनिदांन १७ ग्रथप्र
योजन चौपई प्रापतिब्रह्मलखबो
जनसारग्रबकछुताकोकरौबिच
र बिधिबिसेषसोईग्रवधिकहावै
ग्रवधिजेतेधिप्रयोजनगावै १८
साषी जाकाजतनकरतनिसबासुर
सोतोपायोगावे जतनीजतनऐको
ऊईमितिया यहप्रयोजननांव

१९ जलतरंग ऐकै नई पालागलिजल
मांहि जीवब्रह्म यों ही मिल्या श्रोप्रये
जनकाहि २० चोपई जैसे कोई पा
कीपाकबनावै पाकैपाकनिपतिपा
हूपावै २१ पाकलेसकलतलनासै
यौंहीब्रह्मप्रयोजनभासै २२ गांव
नांवपूछनजोजावै नांवनिरूपनगां
वसुपावै गांवहीगांवकीयानिरधार
भयाप्रयोजनकारजसार २२ योग
रूशास्त्रसेवनकीन्हीं आतमैपरम
रूपदचीन्हीं अनकल्पश्रोरश्रोरन २
हीनासै यहप्रयोजनतिपकासै
२४ सोरठा सोसाधिकसाधनशिव
कनकरावनसबथक्या लष्याश्रन
तसोनिध यहप्रयोजनसिधता २
५ दोहा सोसरूपप्रापतिभया प्रग
टपूर्णकाम जोसरूपसोईलषो य
हप्रयोजननाम २६ ऐतेसाधनप्र
गट जुतपरमातासोजान

धकारी श्रवनकौ षटविधि श्रव
नवषांन २६ सोरठा कहे चारि
अनुबंध सास्त्ररीति बिचारिकै जौ
मंदरसंधि निगडनीवजैकोजीयै
२७ येचारयौदियाबंध बिज्ञानगान
दिढकरनकौं श्रवनसुनैतजिसंधि म
हामोषिपदपाईये २८ श्रुतिसमिरहि
अनुसार सारसारवरननकरयौ भग
वांनग्यानउपचार ममितमानजुभिन
नतजि २९ इतिश्रीअमृतधारायंथ
चारिअनुबंधबरननोनाम नगवा
नस्वरूपकथनेद्वितीयप्रभाव २
भाहोहा तृतीयप्रभावबषांनि यह
श्रवनसुननकीरीति सोबिधि२सौंबर
निहौं होइ पांनप्रनीति १ श्रवनबर
नन चोपई उपक्रमअरु उपसंहा
र अभ्यासभासअपूरबधार फलकी
प्रापतिसुनोनिदांन अरथबादउपपति
बषांनि २ षटबिधिश्रवनकरैजो

न्कौंपरसैसोई [illegible] मैव
पांनौं आगेपंच भेद [illegible]
र. जोजानिहै [illegible] पतिकै
गई आदिअंतरेकली
रमदकहि स्वहारनां [illegible]
तं आदिअंतरेकजांनै
मांनौं बुदबुदाज्यौंहै
नबिचारिये घटमठजे
गसरूपलेतेउतपतिना
धारिये जनकीजुगति
नेसहिहै पिकारनपदहि
हारीये भगवानजगजं
ग्रहमांलमध्मसधिमध
हारिये [illegible] दोला आ
है मधिहैलसोहोई बेद
ते समझै बिरलाकोई
... अभ्यासहै कहियेता
ोरूप सहजुगतिजीवजोइये
तोनसरूप [illegible] चोपई सर

कहैबेदबिचारि साधसंतमुनिकहै
प्रकारि हौहौंब्रह्म२सबसोई ब्रह्म
ग्यांनमुनिब्रह्महीहोई ए सर्बमनु
मिदंब्रह्मसब्रह्मसिवदब्रह्मदेवमितश्रु
त काषृपषां एसकलमेकेसा जैसा
हैसमुरारी इतिसंत चोपई मेरेहृदे
स्वरूपतानासी भास्योब्रह्मसर्बप्रका
सी सबस्वरूपज्ञांनदृष्टिमिनहीग्रावे ऐक
ब्रह्मसबब्रह्मरहावे १० कंचनके
भूषनहोई कंचनतामूलैभ्रम
होई गुरमितिज्ञानभयाप्रकास स
र्बब्रह्मतेपज्योंआभास ११ दोहा
मैंनिरमलनिरमलसबै निर्मलदृष्टि
प्रमांन यहअभ्यासप्रकास जबतें
बहुजानहीज्ञांन १२ ज्ञानअभ्यासे
एकहै ज्ञांनीकरैप्रमान्ह नतुकसी
कोन्हाकहै कोन्हसमोनाकोन्ह १
४ चोपई तीजेअंगमपुर्बकहौ
जाकेकहतमुक्तिपदलहौ ब्रह्मबि

नांकोईआनवतावे यहञ्रपूर्वनोमक
हावै १५ कंचनविनआभरनगोनें मा
काबिनाकलसप्रमानैं जलबिनांके
ईजगतबषानैं यहञ्रपूरबओरनञ्र
नैं १६ जलबिनफेनतरंगलगावे प
सरूपबिनसूतरहावे जलबिनांव
बूकलपैकोई यहञ्रपूरबओरनसो
१७ सोरठा ज्योंमकरीसेंसूत सांचा
रूगभेदहै योंहीब्रह्मअभूत एक
एकसबएकहै १८ कवित्त यहञ्र
पूरबजोनांमजिपएकहीं सबेब्रह्म
परमानआनहीसोकही तातेंकलजे
होई कलसोईसोडरे पारिहां जैपांसु
आदसिलएकहैतनहींकोईरे १९ न
फलतैफलजाईलाईमनतासंसों सु
रनरभावविलाई चितनिरषसंसा
अरथवरकप्ररूकोममो दीपकचा
रहै परिहांएचारयोंफलत्यागिमुफल
किनिहारिहै २०

जानितीन्हैं गुरुकेप्रतापतैं मनकौ
भ्रमनास्यो आपुहीमें आपुभास्यो
आनंदरूपमैप्रकास्योसोगुरुहके प
पतैं मनप्राणप्राण जेतदेहई
न्द्रियबुधिसेतै सुनैगुनैनासैतेतथ
कैसोउनिपापतैं भगवानभागजाग्यो
श्रवनमननपाग्योअरु२भावनामें
वच्योहृदयतापतैं ३० सोरठा घटी
वविश्रवनवयां अद्वैतब्रह्मनिरूप
रिकेगंगाएकप्रमानघाटभेदतैंभे
ही ३१ जैसेपंकजपंकनतौ पान
लववकतौ नांउभेदनहीसक यों
हीब्रह्मअभेदहै ३२ दोहा घटनि
श्रवनाविचारिकै कहौवेदअ
सारि भगवानजानभगवानहै गु
मुमुसुनिउरधारि ३३ इतिश्रीमत्
तधारा ग्रंथषटप्रकारश्रवनवर
ननोनाम भगवानदासकृतेटी
योविश्राम ३ १०७ दोहा अवचे

प्रभावसैं पंचीकारणनिरूप सिषिपूछै
सोकहैं न्रतत्तजांनअनूप सिषिकै
चप्रश्नसोरठा सिषिदैतपंच्योसां
सर्वएकहीएकहै शंसायभयोनि
न सोधन्पंडब्रह्मंडको चश्रोप
सिषिप्रशायकहिगुरदेवौचाकैपां
पचीससोहिक्योंसूझे कैसैतत्तप
ईनकीभई कैसैफेरलीनलानई
कारणकारजभेदबतावो सेरम
कोभरमनसावो गुनबिभागहिं
सबकहिये उतपतिभेदभेनकै
हिये ४ दोहा सिषिप्रश्नहि न
कीयो गुरआनंदमनभाई हरषमां
हैकहतहैं सुनौंसिष्यमनलाई
५ गुरुउवाचचौपई अहिस पंड
ब्रह्मंडबिधांनजांनतुवसिष्यरेतत
पतिभोगविलीनैं हिकरिदिषारे पं
च भूतअनतत्तव्रविद्यारूपहै परि
होसबैअव्यक्तसत्तजांनिसुखदाअ

जानिलीन्हौं गुरूकेप्रतापतैं मनवे
अमनास्यो आउहीमैं आउना
आनंदमु मैंप्रकास्योसोअहं
जापतै मनप्राणप्राण जेतेहैं
इियशुविसेतैं सुनैगुनैनासे
केयौउनिपापतैं भगवान
श्रवनमननपायौअहं
बच्योहृयतापतैं ३०
बविश्रवनबर्या अबै
रिकेगंगाएकसमान
नहीं ३१ जैसेपक
पत्नवकतनी नाउ
हीश्रलअभेद
विश्रवनाब
नुसारि भग
रमुषसुनि
मतधारा
ननोना
योविउ

नैनंबीध्यो भ्रमजानहे देसदेसमिलैं
हीकाल२ कोंहीबसतभेद२ जोंही
सैचककाचहे तचिर जासैत्रबि
हेद्जासेभगवान भ्रमनासैजीवईस
तानहे २२ दोहा देसकाल अरुबस
बंधजीवकोजान बाचि२कहित
लहि सुक्ष्ममोधिपरमान २३ देस
लअरुबसतैं जीवअरुईवरनजान
तीनप्रछेद२त जिजीवसीवपरमान
२४ तीनभेदपुनिईसमें तातैंनयाबि
प बाचिभेदमें भेदसो लषि२निर
द २५ चोपई प्रथमदेसअरु
कहिये छिनेग्रनद्जेसोलहिये
सबिराटबषानों कालबसतउ
जोंनों २६ दोहा उतपत्तिअरुसथि
कालहैतीजेप्रलैबषान तीन्यांगुनसों
सुहै सतरजतमप्र
भेदप्रछेदसोचेतन
चित्यागिकरिलषिधरि

अमूत १८ जीवईसहैबाचिहै बपे
पन्नर्ईवरनजांन तपिद्धक्तनकीएक
है ततत्वग्रसीसमांन १९ अज्ञान
एकहैभांतिकौबिह्वेपग्रवरनजांन
बिपेपग्रागेकहुं प्रथमग्रवरनजान
२० ग्रथग्रावरनशक्ति कवित्त मु
करकेमहलगहल भयास्वांनजैसेफ
टिकेकेप्रबतसौंगाजबलहास्योहै
केहरिकुबुधिरूपपस्योभ्रमजालकू
प नूत्योप्रतिबिंबनृपसंशेग्रासामा
र्योहै कपिज्योंकुबुधिमांनैकरमबंध
बंधजांनैनलनीज्योंलग्योकीरग्रापयों
छिपास्योहै योंही चितगुनभासम
याकुबुधिचिदाभासभगवानहैबिलास
होंहीहैंनिहास्योहै २१ दोहा ग्रापु
ग्रापुर्योमूलिकै छायामायामांन गुर
कहैसिषिसुनिलहै जीवग्रस्तजगजं
न २२ ग्रडिल्ल मूकेदरेबनमांहिकों
हिबंदरगह्यौ बंदरबिनांबिबेकमर

कोउखलुल्लताकरित्नेयोंमायाकृ
त्नलीसलवंधहे परिलाउखलु
खताकलिस्हैलहैसनवंधहै २३ जै
जैसेरजुकोसरपहै कृध्यातेयप्रभा
पुनिविचारउगेकैयो सतञ्जप
निदांन २४ चेतनिमैंपरपंचत्यों
रपंचतजतहेबेद नेतिश्रुतिकह
तहे त्नहतजमृगभेद २५ वाजीगर
जीकरे जगुमोहनकीघ्रास भेदज
गलहतहे योंहीभेदविलास २६
टकितबनाइये प्रथमझुलाग
लगाई योंमायाब्रह्मविकारितत्वक
हुबखकलेई २७ विधिनिषेद
करेकैकह्यो त्नसीसदोऊरूपबि
धनिषेदविसेष तजिभावलिखानरू
प २८ निषेदरूपपीलोकहे बि
षहलेप्रकास दोनोंपखितेन
तें सरगुननिरगुनभास २९
मन आकाराधंभतमितिश्रुते

रसनारसकैभोगनकरै उपस्थआं
कर्मनिरधरै ४३ दोहा अथीतत्वै
गटहैहै इंद्रीपरमान गंधज्ञाननास
करै गुदातजैमलजान ४४ सत
नकेप्रमानतै ज्ञानइंद्रीभईपंच र
गुनअंसअंसनै पंचक्रियाइंनिर
४५ पंचबाईकीछुतिहै तिनको
भेदमान प्रानअपानसमानहै
ध्यानजानप्रमान ४६ उतपति
जअंसतै पंचभूतअनुसार जो
नहोयमेहै निहचेसुनौविचार
नाहिंन प्रानकीक्रियाप्रकासहि
रथलामउपजै क्षुधापिपासविगु
केमाइकैं गुदाबसिमलजावै अ
नहैबांमजावै नाभीमेंबसैसमान
नकोपचाइकैं कंठस्वासोस्वास
मैं उद्यानहै नामनाकोब्यानव
नअंगरसअंगमिलाइकैं पंचभू
नपाइप्रगटहैपंचबाइ भगवान

-पाइकैं धट सोरग द्यो
उद्यानबाइप्रनिब
इतें प्रानतेजप्रमान समानजोनिजल
अंसतें धपु प्रथीअंसअपान अन
भवतैप्रसानहै पंचततगुनजोनइ
नमैप्रगटप्रकासहै ५० दोहा सा
धाऐ कार्ण प्रगट वृतिभेद भएपांच
पंच भूतअनसततें कर्मेंद्रिगुन के
संच ५१ सतगुनअंसप्रशेग्रातें
मनबुधिदैनिरधार अबसंधु चेतह
तहै पंच भूतअनुसार ५२ संकल्प
वृतिमनकरत है सुभप्रनिअसुभ बि
चारि नि अनिबधिप्रकारकी । बुधि
वृत्तिनिरधारि ५३ वृतिभेदतैंदैक
है हैनिजऐकसरूप पाठक पांचकबि
प्रभू कहीऐकरमनिरूप चौपई स
नईन्द्रीपांचोप्रकास पंचइन्द्रीप्रनिब
रमनिवासै पंचप्रानमनबुधिप्रकासै
दसअरूसात्तलिंगआभासे ५५ उ

लिंगदेहप्रगटभया गुरुलखायोज्ञान
कछुसिष्यकैशंशैभयो पूछैप्रश्न
दोन पूर्व्व प्रश्न पंचबाइगुरतुमक
ही पंचरहीतुनिगुढ दसबिधिके
सकदतहै दत्तकिंधोवैमुट ५७
उत्तर चौपई सिष्यकोशंशैगुरतु
नलयो तबहिहर्षकैउतरदयो
बाइतैनिकैंजोनी पंचओरतकहों
बषांनी ५८ प्रथमधनंजयबाइब
तांऊं देवदत्तकिकलसमझाऊं
कूर्मबाइनागतुनिजांनि कियाक
र्मतुनिकरोंबषानि ५९ ...तिन्ह
पेहेंह नागकरैउदगारकूर्मपल
पलनितलगावै किकलक्रियायह
जांनिछींकछिनछिनउपजावै
बबहारप्रगटजमाहाईआवै बाइ
निमत्तेककोदेहफुलावै सबे
धर्महैत्रिगुनमेंविवहार नागवांनमानिष
धहैमुक्तिमुक्तिनिरधार ६० ...

धारणाकारणहै सुक्षमऊहलनास इनको
नैजोकहै जिनविज्ञांनप्रकास ६२
कवित्तपैछंद आकासन्यासतैंप्रगटहै
बाईधनंजयरूप देवदत्तसुअतत्वतैंबाइसु
बाईअनूपं किकलतेजततसतापआपकं
रहावै पृथीततत्तैंप्रगटबाइसोईनाग
कहावै पंचभूतअनसूलहैअनमावतैं
मोन भगवांनजांनसोगपांनहैश्रोतसहै
जोंन ६२ इहा पंचवाइमेंपंचही
ततजोन कारजकार्णरूपहै ज्यूंप
निदांन ६३ लातैगनतीपंचहै
चारजोंनदसआर सुपगवनहैत मैं
है केदविदिलिरधार ६४ पंचतत्त
सबाइहै कहीपंच।ताकोभेद भि
कहीपुनिएकहि अनेकहैसंबेद
५ कवित्तपैछंद प्रथमबाइआ
सकीआनधनंजयजांन देवदत्त
ध्यानबाइकीबाइकहावै बाइकि
कलाप्रांनजांननिजतेजरहावै

बाइसमांनजांनजतजुक्तिबिचारा
नागबाइअरूपांनजांननिजपरीषा
रा पंचभूतअनुसूतसबतेंसोरां
नभगवांन प्रथमबाइआकासकी
ब्यांनछनजयजांन ६६ इहश्री
गुरजांनप्रमांनके शेसोदयोनसाये
यहैसीषशिष्यसुनितई कछुपूछन
केभाय ६७ प्रश्न चौपई सिषके
संसोउपज्योआई गुरकिपाकरिदेउ
न्हसाई मनअरुबुधिदोइकयुक
है कौबिदचितचारिकरितेहै ६८
चारिकहैसोकहनबिच्यार कैसेतुमदे
ईकीनोनिरधार इनकोभेदप्रगट
करिकहीऐ श्रीगुरज्ञांनमोक्षपद
लहीऐ ६९ उतर सिष्यकोस
सोगुरसुनिलयो तबताकोंफिरिउतर
दयौ है अरु च्यारिभेदसमझाउं तेरै
मनकोतिमरन्हसाऊं ७० सावधांण
कांणयहकहीऐ पंचभूतत्रिगुनतैं

लहीऐ खेत कहीऐकनिरधार वृत्ति भेद च्यारिबिचार ७१ आकासप्रथमअंत समनिवास च्यारतत्त्वनिप्रगटप्रकास नबुधिचितअहंकारकहावै च्यारित कीवृत्तिलषावै ७२ सोरठा चितहै सरूप चिंताबिबधिबिचारहै अहंहैअ अनूप अहंकृततहांकरै ७३ नवतपतिजहांलजांनि संकल्पवृत्ति तकितकरै जघीअंसबुधिमांन घरा धर्मधीरजधरै ७४ दुहा मुषनांम है गवन२ निरधार मनबुधिऐहैमुष गवनचितअहंकार ७५ चौपई हंकारमनमेंनिरधारा अहंसंकल्पऐ बिचारा बुधिअरु चितऐककरि जांनो चिंतातजिनिहैचैप्रमांनो ७ करनपंचवृत्तिगहै पंचतत्तजे गटलहै शब्दस्पर्सरूपरसगंधा इनहि दिबकुभोगनिबंधा ७७ कर्त्ताक्रि याकर्मअभासै मनबुधिमिलि

सोगप्रकासै पंच भेदप्रानि श्रोरत्न यांउ
पंचतत्तगुनकर्मवतांऊं ७८ कवित्त
श्राकासप्रकास मात्र जोमको सरूप
जासुअंतरइंद्रीनिवास अनमेवमां
नीऐ ताइकौसरूपकोमचित्त
इतिकैश्र लंमकोथगति तेजनोमश्रं
हतैवपांनीये सोहरूपीजलजांनैम
नसोसरूपपांनैं प्रथ्वीतैंप्रगटमयञ्जु
धरूलिंगनीऐ भगवांनमयाज्ञांनपंच
तत्वसोसमांनगुनकर्म२ जांनेसबमैस
मानीऐ ७९ उक्त लिंग२वरननकैल
त्रिविधिभांतिप्रकास जोश्रधिकारीमो
हकौ होईप्रमसुखलास ८० सोगो
सुष्मदेहसुऐह सोगुसोगाधिजोगवड
स्थूलहोइजवदेह द्वैमिलिभोगप्रसि
धना ८१ लिंगदेहयहजांन स्थूलदे
हस्रागैकहें कहैभाष्मि भगवांन सु
घसांनगुहामतैं ८२ इतिश्रीहंसत
धात्रांपलिंगदेहवरननानामभगवां

नदासनिरंजनीकथ्यतेचउथोप्रवनाव
ध १८५ छ्हा पंचमपंचाविभागसों
कहूंपांचपचीस पिंडब्रह्मंडबषांनदें
जीवशोलछनिर्देस १ अथस्थूलदेह
बरनन चोपई लिंगदेहमिलिकर्मकुर
वे तिनकर्मनकीदेहसुपावे पुनिकमैंसु
रहूपरहावे पापनकेमिअतनरगावे २
चारिषांनचौरासीजाती सुक्ष्मरूपत्रमैं
बऊमांती पिंडब्रह्मंडबिचारिबषां
नों चौदह भुवनजुगतिप्रमानों
३ पंचभूत हैकारनरूपा तिनतेंकार
जबिबिधिसरूपा दसअरुसातलिं
गमाहीं पुनिअस्थूलपचीसप्रकारें
४ छ्हा पंचभूतजेमूलहैं ईसकी
है षंड प्रगटजीवकेभोगकूं १ चौपि
ब्रह्मंड ५ सोरठा अरधअरधबिह
ई पंचहनपुनिदसभए पांचोंषरेंचे
पंचौकृतपुनिबीकीए ६

पछूहै सत भाई पांचपचीसकि भागसैं ७ प्रश्न सोरग पंचपंचकेजूंस मु प्रगवनसमझाई ऐ श्रीगुरकहैप्रसं म जूंसंसैनासैसबै ८ उतर पृथी र्यूंपञ्चतेज बाइबिलासञ्याकास मेलि कागिनइवनतपतेज संचर सुषिरप्रमानहै ए चौपई ञ्यस्तमा मञ्चह नारीजांनौं तु चारोमक्षितपंच प्रमानौं रेतपितसेद मिलिलार रक्तस हितजलपंचबिचार १० षुध्यात्रिषा निंद्राजुनिहूप कांतञ्या लसतेजञ्ञ नंम धावनधर्मवाइप्रसारा ठेगनच लनसंकोचबिचारा ११ सिरञ्चहूकं ठ हिरदैजूवकासि उदरगुदाञ्याका सनिवासि एकमुषिच्यास्यैामिलिगव ना समिहि विष्टिउपजैहै भवना १२ प्रश्न श्रीगुरज्ञानसिष्यकौदीन्हा सं मुझिसिष्यपुंनिप्रश्नकीन्हा कौंनमु पुंनिकूंनप्रवेसा भमतुवसरनि

करौउपदेसा सुनें तर सुसमुधि पायी
कौ जांनौं मोसुउदिक गवनपदि जांनौ
नारी रूप तेज को अंगा उचा रूप दे संगा
रूपसंगा १४ रोमसरूप मुनि आकासा
चारि गवन सुखि ऐक प्रकासा मेरौ रेरौ सु
ख आपकौ जांनौं पितते ज सो गवन नंब पा
नौं १५ खेदौ बाइ लार आकासा रक्त
प्रथी प्रकासा उदुधा सरूप सुष के ले
त्रिगवाइ मुनि गवन कलेज १६ नि
न भैं सुनि समांनां कां ल जल आल सहि
त जांनां धावन छमै बाइ मुपकहीए प्रस
गवन आकास हि तलीरे १७ उमय
है तेज सु भाइ चलन छवन गति आ
इ संकोचन प्रथी प्रमांनी गवन चारि
पेक रजानी १८ भेरग चारि चौलत
कुसुल नासै तें भासकीए पंच
सतनूंप कहौं सुखितनमांनतें
१९ चौपई सिव आकास मुधि करि
के रबाई सो गवन प्रमांनी कहे आका

स्थांत लघुतैलघुवस्तनकरे कार
नकांननां मि ३३ सोऽखनीदसत्स
ऐकगेरब्रह्मंड मायाजगकारजस
कारनखलस्वरूप स्व सतस
रूपहैआत्मा जातेसतसोजोइ सतस
रूपन्यारोकीये असतअविद्याहोइ
चोपई जबसतसताभिन्यकीन्ही
नहीं तबसबअस्तअविद्याचीन्ही
ब्रह्मानंदजगतयोंदीग जैसेचंनथा
हुलंगमीग २६ चेतनिसतासबमें
भासे सर्वजगतचेतनमेंबासे तूंहै
ब्रह्मज्ञाननहीजानां सबब्रह्मव
देतैजानां ३७ सर्वखल्विदंब्रह्मने
हनानास्तिकिंचन इतिश्रुत चोपई
अनसबदहैतूंनहींन्यास सबमेंतूं
सबनिरधारा जुक्तिरयहज्ञानलषायो
गुरमिलिसिष्यपरमपदपायो २८ प
रविधि बहुविधि श्रवनसेसुनायो
सिष्यकोसंसोहरनसायो सिष्यकहु

म

हैनिर

३१५ दुहा श्रवन२कैसुनिलिये

मनमनिमननविचा

सोगुरकहैप्रकास ५६ अंतर चोपई

श्रीगुरप्रश्नप्रश्नसुनिभये। मननविचा

मननसरूपजोनितुव

श्रवनजुक्तिसब अंतरलिख्यि ५१

अंतर२त्याग

भगवानजोनमनमांनियें मनन२रसपा

ग ५२ इतिश्री प्रथमग्रंथावलस्थलवेद

नाव-५ २३१

दुहा पंचप्रभावप्रभावकरि गुरुलषा

योज्ञांन श्रवआगेवरननकरों मनन२

प्रमांन १ कारजकारनऐककरि पिंड

ब्रह्मंडसंमोइ तरंगफेनिबुदर२नहीपा

तांडनिजततजोई २ अरिल्ल महाकास

घटाकासऐकहीजांनीए घटभ्रमभलै

भेदभेदनहीमांनीऐ जीवब्रह्मनिहम

मकहतहैवेदरे परिहांपिंडब्रह्मंडऋ

पेडनहींप्रहेदहै ३ कवित्त मननमन
नजोंनमननहीहैप्रमांनज्ञांनसोप्रका
समांनहैतनहींतासमैं रवितेंबिमुष
जेतेहैनिदिनकहैनेतनहैरविसंगसूंगर
हैतमनासमैं जेजनबिचारहीनकरम
कृतिसदादीनहोइकंहीनमनलीन
ब्रह्मानंदनासमैं भगवांनभयाग्यान
मननहीहैप्रमांनजीवतौसीवैसमान
वेदकैसभासैं ४ ततत्वैसीस्यामवेद
सोरठा मननमांसज्ञनहोई तबमनरू
पलपाइये मननमनमांहिसमोइ हैतसे
छिनासैनही ५ प्रश्न गुरुतनयायोग्यां
श्रवनमननवक्रोदहूं निजध्यासन
कौनांम सिष्यपूछै श्रीगुरकहै ६
उत्तर श्रीगुरप्रांप्रमांन सिष्यतहोन
हिकैवहलो निजध्यासनयहजांनि ऋ
नहोनहैसबतनहैतासै ७ कवित्त जै
सेसीवसजगमांहीमांनेमांनिरहैतांही
सूंहंसूहंतजैनाही नासभुविधारीहै

मं नमसरूपजांनेमलिरूनपसुमांबेजा
तिकुलगोतठांनेनरतानहारीहै जैसेरू
जपिंकतसोविप्रकाजेसुरूपरूपतिरू
तावबेसीकरूतमहागारीहै यहे मास।
ज ध्यासरूहैतमैदैतनासमगवान
जांनिमेदमगजारीहै ॥ रूडहा
देहश्रात्मागपांनवत श्रंतरजांनकरा
ई निजध्यालनरूष्ट्यासतें सोहंब्रह्मसं
ई ए सोहंहंसोएकहै दैतमेदनहि
सोयहसरूपरोतहै श्रयंप्रति
हिजोड १० श्ररिल्ल ततपदहैसोईस
परोक्षिहिजांनीए त्वंपदजीवहिजांन
तरूप्रमांनीए ततत्वंवततएकहो
योंजानरे परिहानिध्यासनकोरूप
हसेजांनिरे ११ देहात्मा जांनवैरू
नेदहात्मा जांनबाधित इतिश्रुति
चौपई श्रवनमननिद्य्यासनक
हौ निर्मलजांनसिष्यसुनिलौ इतै
नौजांनहृदैमैंधारयौ कछुपूछनकें

हेतबिचारौ १२ निच्यआसनउप्यार
नयौयहै ब्रह्मबिचारपसौअगमदु
है सो तातकारबिचारनआगै मिछ
सरूपसतरसपागै १३ प्रश्न सोत
ततपदत्वंत्वंपददोउपिनब्रह्मंडबिम
गइनि जीवईसस्का १३ उसिञसि
दकैरूपाइऐ १४ महाकासघटाकास
महाकासवानि कहतहै तानों नेदबि
नास एककसौसोइकहो १५ ईस्वरहे
अबउतपतिस्थितये करै जीवत
अलपज्ञ ईनहिएकताकैं तह उतर
चौपई उत्मउतरगुरुप्रकासै सुनतसिय
कोससोनासै ततपदत्वंपदतासमन
जाकुं समिहिबिष्टिकौ नेदतनपांकै
इहा जीवब्रह्म अरूईसकहि त
ततपदत्वंपदनास जीवईसकीएकत
ब्रह्मप्रसीप्रकास १८ दृष्टांत सोरठ
चूनाहरदीदोई रोचननामनपावदी
एकरंगजबहोई तबरोचनरोचनसही

१ऐ रेचनमैहैनास चूंनाहरदी भेदनही
हैपदऐकही नास असी२पद होईतब सो
दाष्टांत चौपई ततपदत्वंपद जावतकही
ऐ तावतअसीपद भेदनलहीऐ ततत्वंत्व
ततऐकमिलावै, हैपदलछिन जनिरमे
टअसीपदपावै २१ दुहा बाचि भेदमैं भे
दसै लछिन छिनिर भेद बाचिल्यागिको
लछिधरि यौंमाषतबेद २२ प्रस्न चौप
ई बाचिलछिकैंगुरसमझायो सिष्यक
लसेसु फेरिभगयो बाचिबिचारिकौंन
बिधितजीये लछिरताकैसैंभजीऐ २३
लहूनतरदुहा बाचिबाचिकरिकैंक
हे लछिकरयोनदीजाइ लछिसरूप
सरूपहे साषाचंद्रबताइ २४ साषाबा
चिसरूपहै चंद्रलछनाजांनि बाचिल
छिसंबंधकौ गोनदेछिप्रमांन २५ अ
पनलपदबाचिसरूप अहित ततपद
बाचिबिलासप्रथमही गाईरी
पदकोभेदबाचिसमझाईरी

सुनैंलहैलन रूकौ भेदरै परिहासौ बरनैं निर
धारसार जौं बेदरै २६ चौपई ततपद
सुधसरूप त्व निरबिसेषसो हैनिहे म
रमै माया भेदभे दसो स्न हीए बाचिबि
से षरनगहीपे २७ ईश्वर जनकौक
स्लजांनैं सरबरूपसेबेसुरमांनें करूं
मय भक्तनहितकारी यहै सरूप बाचेमि
रधारी २८ कवित्त बाचकौ बिसेषजा
नौ तिनि २ कै बषांनौं लषै नहीं आपरसा
नोई सबुधिधारी है दानवकौ नासनसु
षासिनसुदेवनकौ सेवककौ सेवकसु
प्रीतियों बिचारी है गोपीग्वा लनबालहे
तगिरकौं उगाई लेत निगम सुकहै नेतय
हे भ्रम भारी है बाचिकमिल्यौ है बाचि
गजगारथ च्यौ सांच भगवांनय है सांचा
नेद्राकौ भिषारी है २९ दुहा निज
बलिभ्रम सुबुजंर भयो भिषारी रूप
बाचि मिलै लहैई सता बिसस्यो ब्रतस
रूप ३० कारनता है बाचिमैं उतरगां

भाव भक्तवछलताजोनिपुनिलखौ
रूपचतुरसुजानलखी
सहीसहसरनाम सेवकसेविबिनामै
२२ जनसकलसुन
तुलमगुनअवहारईसव्याचिय
सुधसतोगुनधार २२ बाचि
मैभेदवकु कछरकहैसुनाई वचि
निर्विकलपमनुला
ई २४ बरन चोपई सिष्यकहैगुरुकते
बिचार लकिमेदकैसेनिरधार बाचि
बचनमनप्राप्तिसत बोनीमनसालहे
नलद २४
मनसासह इतिश्रुतेचोपई ध्यानसरूपी
मनहिनआवे नाममेदवाचिनहिंगावे
हूसिरूपसबछेदनिवारे
क्योधारे २६
घ्रांसी इति श्रुते अलखरूपी लध्यानजाई
ऐसीप्राप्तिकिनबिधिपाई
अरथप्रकासी मेरेमनकी

लरतुल्ल सिष्यप्रश्न तत्वकीये नीयो
रूत्तरग्रहि नदितनेष वनजुक्तिजो
पुनिकहोविचारि ३८ चौपई श्री
गुरुकहैसुनौसिषमोई वेदवचनहै
लषिकाहोई सा दात कारकी श्रुतिक
होवे निसेद सेट मनवचनहीगावे
३९ उपदेसस्रवणपुनिवेदकहतहे
मननमननकरिब्रह्मलहत है मनहीं
सेमननसुनैविचारै मनहीसुधिसरूप
नलारै ४० मनैवहूपहूंमनैवस्रातव
मनैवमंतवों इतिस्रुतेचौपई तातेम
के किमलकीजे ईस्वीगोगचितनहीं
जेसुधमनतनाहोवे ऐसी साषाचे
नीजेसी ४१ स्रवणमननाकोको
चेतनिस्रमंडिजांन निरगुणनिस
स्रंमनामिपूर्निकामसचिदानंद
नतहैसरूपजाको कूटस्थप्रमा
कोगावेगुनवेदजाको ईस्वरतै
ज्ञानहोई बिनां

श्रुतिस्मृतियहजोई श्रुतिनिरबे
दहै भगवानयहजोनिमनमानिरुवे
॥तुचहै॥
दुहा सुद्धनितमुक्तिहै निरलेपअ
चलस्वेजान ज्ञमाजअरूपचिद्रूपहै
त्वंहि ... ज्ञरणप्रमान ४३ जगकार्ने
कारननहीं अंतरजामीनाहि वाचि
वसैविसेषतजि त्वंहि रमनमांहि ४४
वाचित्वंहितिताकरिकहौ सुद्धसरूपनिरू
प भगवानगान भगवानपद ततपदल
क्षरूप ४५ इतिश्रीरमतधारग्रंथ
ततपदवाचिलक्षि वर्ननोनामभगवा
नदासनिरंजनीकथ्यतेछष्ठोप्रभाव ६
२७६ दुहा ततपदरूपनिरूपकौं वा
चलक्षिकहिदोइ त्वंपदवाचिरूलक्षि
कौं कहुपूछतहैसोई १ प्रश्न चोपई
गुरजीमेरातिमरनसावौ त्वंपदवाचिल
क्षिसमझावौ रविप्रकासज्यूंरैनिनभासै
तुम्हरीकृपाभ्रमयोंनासै

त्वाचिप्रथमसंमजांकं तापीक्षैतुनित
द्वितहांकं त्वंपदत्वाचिदेहसोंमिलै
स्पूंहपनमैंछायामिलै ३ सत्वरहैहप
नसुषन्यारा अहंममतन्नग्यांननिहारा
योंही त्वंपददेहरलावे देहमांनितुनिश्च
यिकहावे ४ अथ त्वंपदवाचिवर्नन
तुल्य पंचकोसअैअवस्था जातिवरन
आसमे जनमरनतुषदुषलहै प्राप्त
कर्मोकर्म ५ आंतन त्त्रीवेसता सुष
६ अंतजजास ब्रत चारीग्रहस्थतुनि
नप्रस्थसंन्यास ६ षटबिकारअंत
कोसके सप्रधातमयमांनि सांमग
अभिमानहैं दीर्घहस्वप्रमांनि ७ हो
रत्रिजनआदिदै चाक्षिमांनितेहोस
हसीलनषजातितुनि अंनकोसय
८ द्वंद्व सोरठा षटबिकारवे
व सप्रधातकोनामकहि श्रीगुरव
मांव लघिविकार२ननि ९ उत
लावनकहि अंनको

म विप्रलिप्योपिद सुपचन्द्र सोषरूप
तैसेंग १० कवित्त अंनकोलि कोरकेष
मट विकारके बाजेनि छदसंदे चाल
केनटदे जाइते स्मीविद्यातुदे देतुन्न
सिष्पसंजन विपरीत गुकि [illegible] २
मट है कोहीमुस्तिपुरुष सोपितीतपत
र कूस नोंहीमावतु चाराम मातदे [illegible]
कारन स्वरूप भाल कारन [illegible] विध्न
से भावेन मुनि [illegible] सनदे है २
१ उहा पंतवाई चौदसंयक [illegible]
पासान्ह हि [illegible] नर्दि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

तापीक्षेपुनि
[illegible] समंमकोंके [illegible] सेमिले
[illegible] पद [illegible] दे है
[illegible] ३ [illegible] है
[illegible] नितिहार
[illegible] निपुनिम
[illegible] है समोनिपुनिम
[illegible] बर्नेन
[illegible] जातिबरन
[illegible] ५ [illegible] है प्राप्ति
[illegible] हुतुमङ्गल है प्राप्ति
[illegible] मेमता ५२
[illegible] ४ [illegible] निमें
[illegible] [illegible] नरेन
[illegible] ६ [illegible] विकारस्येन
[illegible] गोर ५
[illegible] ७ सुरन
[illegible] होइ जो
[illegible] यह जो
[illegible] कोसयहजो
[illegible] विकारकोमा
[illegible] श्रीगुरकोल
[illegible] उत्तर उहे
[illegible] कोसप्रसं
[illegible]

त्रावित्रथमसेमजोंकुं तापीछेपुनिन
तलदोंकुं लेपदखाचिदेहसोंमिलै
हूपनमैंछायामिलै ३ मदारहैहप
मुखमारा छुहेमसतजगपाननिहरा
योंहीलेपददेहरहावे देहमांनिपुनिश्व
चिकहावे ४ जूघलेपदबाधिबर्नन
तुका पं वकोसजैजूनस्या जातिबरन
ख्रासमे जनमवर्नलेसुमडुपलहै प्रापि
कर्मोकर्मे ५ ब्रांलन दत्रीबेसता सुर
कुसंतजजास ब्रह्मचारीग्रहस्थपुनिबा
नपस्थसंन्यास ६ मटबिकारस्नन
कोसके सप्रधानमयमांनि सांमगो
श्रमिमानकै दीर्घहस्वप्रमांनि ७ सु
रत्रिजनास्रादिदे चामिमानिजेहोर
रासीलय जातिपुनि स्नन कोसयु
५ ट प्रकम सोरठा मटबिकारकै
व सप्रधानकोनामकहि श्रीगुरव
माव लेमिबिकारस्तजि ८ उत
मटभावकहि स्नंनको

म विप्रति ध्यैगिद सुपं चउंनू सो सरूप
हैं नेग १७ दोवित्त अनके दिवोल्हें हैंप
मटविकारखटबाजीनटदत्त सैवैर चौल
हैनटदे जाइहेम्स सोविद्यानद्वदेहेत्स
सिय प्रमोल विपरीत हौचीरसे प्रतेघ
मट है वीतीस्त्रित्ति श्रुबल सोपितातैंपरा
रअसलोंहीमासतुचारोलमातरतैरटनहै
कारनछुत्लपभासैकात्लविदिधिपकी
सेभगवंनसुनित्रासैचनदौसवटहै १
१ ड्हा प्रांतबाईदौधर्लयह लुच्यपि
पासाल्लाहि अमरी बनदीत्यागिदारि
उदरगंजसम्माहि १२ सवैया बाइदि
लासबिलाससवयहचौरपसौससमो
गनिसंता हाथहवैसुप चादवतैको
स्देहदतैंदिवझारसेनंता उद्यमध्यम
करमदौरैदरिद्रसमपरै आलोहंनियं र
ताओपतिव्रतल्हैयहजांनिसिंहेस्नावें
ननिरंजनदेता १३ डहा स्नेकौसहे
यौंवरनीये संकल्पहतिअनुसम जं

त्तरंगसमहैसवै सु मपुनिऋसुमबिच
र १४ सवैया मनहुतियहैजतनरूपतनहै
जितकितनहैवरूजोगाऋजोगा रहैज
सुसोइतवनरूपहोइ सबैसुपजोइतजैदुष
सोगा सुतचितप्रमानयहैसुषजानिसु
नारिनिदानपगैरससोगा नगवानस
रूपतनहैसुऋरूपतजै मुमकंपमनोमै
रोगा १५ दुहा मनसंकलपसरूपहै
छनभंगुरबिबहार मनकैआगेदुविहै
ताकोसुनोबिचार १६ छुधिमधरमय
हजानीये नहचैसोगप्रमान सुरछुरन
रछुरनागतुर सोगरूपजगजांनि १७ ज
पतपसंजमसाधिकै जंत्रमंत्रमचुत्ता
ह सोगत्यालसालगिरहै सोबिज्ञान
सुमाइ १८ सोरठा कासीकरवतलौ
जै ओकरहीरूपहुजीए प्रवेसत्रिबेनी
कीज तुत्तातोलितन सोगबसि १९ ग
नपतिगोरिनपास सिवसक्तिकौहूतव
है करै सोगकीआसि बिगपांनधरमबंध

तवक्रत २० ज्ञान दकोसबषानि ज्ञ
त्मोहैजीवसो हैग्रावरलनिदनि
नाहीनाहीकरहै २१ ग्रहिज्ञ बंधमोन -
कोपानन्दैनहीनेकही जीवइसंब ह ज्ञ
हतहैहैकही निजमुषदीरासिज्ञासिब
नबस्तहै परिहायकज्ञज्ञानप्रमानग्रप
तारसतहै २२ कुना पंचकोसऐकोसस
म जीव बाचिप्रमानि पंचकोसपंषीवं
यो कीटकोसपुनिजानि २३ तीनग्र
वस्थाबाचिपुनि ताकोकरुवखानि जा
ग्रतदेपुनिसुप्रकहि सुषपतिसुषवतमा
२४ चौदहइंद्रीदेवसब विषय भोग
कास ग्रस्थूलदेहबरुभोगजुत जा
तकोग्रवभास २५ ग्रहन सोरठा सि
षसंसोकरितेह चौदहइंद्रीदेवको
गुरुतुमऐह देवभोगइंद्रीसबै २
तर चौपई गुरुकृपाकरिज्ञानप्रका
सिषकोसंसौनासे ग्रध्यात्मग्रधि
तत्नपोके ग्रधिदेवककोभेदव

२७ श्रवनइंद्री अध्यात्मकहीए दिस
वअधिदेवकसहीए सबदविषेअधि
भूतकजांनो तीनौंमिलैभोगप्रगुंनो
२८ तुचाकरनअध्यात्मरूपा पवनदे
अधिदेवनिरूपा सपरसहैअधि भूत
नवासा तीनौंमिलैभोगप्रकासा २९ च
क्षुइंद्रीअध्यात्मजांनो रूपविषेअधि
तवषांनो रविप्रकासअधिदेवकहो
तीनौंमिलैभोगउहरावै ३० अध्यात
रशनाकरितीनो रसअधिभूतभोग
हिचीन्हौ अधिदेवकहैबरनबसेषा
तीनौंमिलैभोगसुषलेषा ३१ सोरग
अध्यात्महैघ्रांन गंधभोगअधिभूतहै
अधिदेव दूतजांन इतीयनामअस्व
निकंवर ३२ अध्यात्महैबाकि बक
तव्यविषेअधिभूतहै अधिदेवकपा
वकपाक ईनकौधर्मसुकर्महै ३३
पांनअध्यात्मजांनग्रहनविषेअधिभू
तहै इंद्रदेवप्रमांन अधिदेवकसोजां

नीपे ३४ पदअध्यातमरूपचेतनबिषे
अधिभूतहै हिलनदेवअनरूपअधिदेव
कपरमानहै ३५ उपस्थअध्यात्महोइ
आनंदभोगअदभूतहै देवप्रजापतिजे
इ अधिदेवकसौनामहै ३६ अध्यात्म
गुदजांन मलबिसर्गअधभूतसो जमअ
धिदेवकमांन कमंडीकेदेवता ३७
सोहा मनअध्यात्मरूपहै संकलपबि
षेअधिभूत चंद्रदेवअधिदेवहै तीनौ
०मिलिअनुसरत ३८ अध्यात्मसोबुधि
धहै अदभूतकसोबोधब्यासोअध
देवहै कमलनालकासोभ्र ३९ सोरग
अध्यातमचितजांन अधिभूतकचितनां
बषे अधिदेवकजिवमांन षेत्रज्ञनाम
पुंनिदासकहि ४० अध्यातमअहंका
रअधिकृतिअधिभूतहै अधिदेवक
रुद्रविचार जेलरइंडीदेवकहि ४१
चौपई अध्यातमइंडीसबजांनौ अधि
भूतकसोबिषैप्रमांनौ

दैवककहिये इंद्री लोगादेवसबलहि
ये ४२ लैह्म सतगुनतैं सबदेवहै ४
हीरजगुनजांन ग्यानहृष्टिकरिकैक
ही तमगुनविषैप्रमांन ४३ जाग्रत
कोबरननकीयो सासत्ररीतिबिचा
र यह भासमोसुपनहै दरपनमुषहि
निहारि ४४ ज्यौंदरपनमैदेषिये क
पनैंमुषकौभास जाग्रतछायासुपन
कहि सोसुषपतिमैंनास ४५ जैसैंदो
नांफूलमरि लागीबासमुबास यों
हीजाग्रतबासना सुपनांसुक्ष्मनास
४६ जाग्रतसुपनजाहांनही सोईसुष
पतिनांम जीवईहैएकहै निजानंदवै
धांम ४७ पंचकोसत्रेअवस्था जीव
बाचिपरमांन तीन्योंगुनतुनिबाचिहै
सोतुनिकरौबषांन ४८ चौपई हम
साषिकहमसांतिसरूपा हमपिंडत
हमज्ञांन अनूपा हमदाताहमम
कहावै जीवबाचिसतगुनयेगा

धर्य हमकूला हम भोगीरोगी संपति
रासुतनवियोगी तपत्नीर्थ हमजगिक
जीवजोगुनवाचिवर्तहै ५० जो
तो नयोहमहमांने निज्ञानसक
लहिचर्षाने गुरसाहलासतिकहिलेषे
तमगुनवाचिजीवयोंपषे ५१ दोहा
वेबिरानोधर्महै जीवनेतहैमानि
जीववाचिकूभिमोनमिलि भई सहूये
नि ५२ सूज्ञानश्रावरनरूपयहजी
वजीवतावास सपलजेदश्रावर्नेमुदि
प्रुनिकहोंप्रगास ५३ सपतनूवेथा
मेद दोहा प्रथमयेकप्रज्ञानकहिदु
तीयश्रावर्नेनांम त्नहिविक्षेपतातीस
पुनिपरोखिसुसश्रांम ५४ पंचमहेप
तषिता छठेसोकहेनाम ग्यानबिचा
विचारयहि सपतमसुखकोधाम ५५
रिल अवषि०कोसकोयेतश्रगपकारी
ब कुतेसुंदसस्कंद्ध भ्रमतेंभ्रमिरहे ग
तीदसेंप्रमानग्याननवकोकरे परिहां

आपआपयौं तिनोसकुधिमनधरै ५
६ ऐकञ्ऋक्षञसवारआपतिहिछि
नगयौ सबैबहाइलधायताहिपूछ
न्तयो ऐकग्पाननवमानिमिनकी
रजोइरे परिहांनवकीसंष्याकहैत
है रसोइरे ५७ दोहा बडेगुरूषयेक
हतहैं कहैकछौनिदांन सुनिग्रीति
सेवनकीयौ दसमग्रतष्यप्रमांन ५८
पंचकौसमिथ्यानदीजीवबह्यौ भ्रम
मांन पंचकोससांचेकहै आगुआगु
वहैजांन ५९ कुषसुष सोदी फिरै
पंचकोसकीपीर बिछेपसोकसंता
पतें त्यहीनसुषकीसार ६० सवैया
यौंगुरग्पानमिलैबलवांनसबैगुनहीं
नसुततत्वपायौ मर्मबिलांननहीको
ईआंनकहैसुषजांनपरोछिबतायौ
गुरज्ञांनकहैसुनिसिष्पत्यहैग्रतपिय
हैततत्वंसमझायौ कहैभगवांनसरू
पसमांनसुजांनअजांननहीकछुपा

यौ ६१ दोहा प्रथमपरोछिदिषाइकैं
तहकरैप्रतषि परोषिप्रतषिदेखाचि
जितबंधासिसुषलहि ६२ चोपई पं
ससोनदीप्रमांने जीवन्होकोरी
रिज्ञांने ब्रह्माविस्नुरुद्रसिदलेषे ०
आज्ञांसतकरिपेषे ६३ अस्मार
नगुरुवरुराधी मारि लाजनेदसीत
यो गुरुगमग्यानज्ञानयौंजाने जनम
मरनकोसोकनिसानै ६४ दोहा
रनपदप्राप्तिभयौमहनिरंकुसजांन माप्ति
लहिअभासिनहीसोत्पत्तिअनाम ६५
जीवकचिदरननकयोसुतिसुन्नतिसुव
भास भगवांनमायिसोसीनेते लषिवुनि
प्रकास ६६ जीवबाचिमेयोबंध्यो
कीरकपिभृति छितकालेकुलधूमस
जीवडस्योफलि ६७ इतिश्रीग्रंथअ
तधारात्वपदबाचिवरननोनामसप्त
भाव ७ चौपई दोहा बाचिसरूपनिरूप
कह्यौगुरूसमझाई बा सोसि

ल्लषिअजहदभुनिगुनितै जहदाज
हतीसरीकहिये करिविचारगुरगमि
लहिये १६ जहदलक्षिनांपहलैजो
वाच्यिलषिकौत्यागवषांनैं सतअस
असत्तसवैब्रह्मम जहदकैसबी
नकेषेडा १७ अरिल्ल जहदलषिनां
नमांनतुवसिषिरे पिंडब्रह्मंडअमाव
भावनहिंदिष्यरे यहनिहचैअज्ञान
नतमनमानियें परिहांयाकैआगैऔ
लषिनांजांनियें १८ अजहदकरां
षांनज्ञांनगुरगम्यतैं व्यापकरूपीब्र
यजक्तमेरमितैं कारजकारनयेकभे
नहीभेषियें परिहांअजहदयहप्रमांन
दहैदेषिये १९ दोहा जीवईस्वरन
त्यागहै पिंडब्रह्मंडनत्यागप वाचिल
हकौत्यागनहि अजहदमतयौंत्याग
२० सोरठा कहीलषिनांदोइ जहद
जहदलषांनिकैं आतमज्ञाननहोइ
[illegible]

डबिभागकैं सतअरु असतबिचार
असतअरूपजगत्यागियैं सतचेतनिउ
धारि २२ चौपई ईसबाचिसबत्याग
कीजे लखितनपिईखरकीलीजे
चित्तनित्यागकहीजे जीवलषिकैं
लषिलहीजे २३ कारजकारनबाचि
कहीये बाचित्यागिकह्लिपिजुलही
लषिडु जनकीलषिअरूपा स
आनंदएकनिरूपा २४ दोहा सत
तआनंद ईसजौसतचितआनंदजी
व वेदवेदियोंकहतहै लहत निरंतर
सीव २५ अग्निएककेतीनगुन दाहक
सतप्रकास जितनिजतोउपाधिहै ता
तितनौ भास २६ बक्रकाठजहांबारि
येतहां अग्निबक्ररूपा दीवामसालतन
सीगुनतीनौं अनुसृत २७ यौमायाअ
हमैंबडाईसकौभास पंचकअनाया
तनकसी जीवअलपपरगास २८ म
केहिदैछायाजिसी दीसैहाथपवास

कहईछाया वस्तुमें अतिसूक्ष्मपरका
२९ मायाकल्पतईसहै मायाकल्प
जीव जीवईसमायानहीसदानिरंजन
सीव ३० महाकासज्योंएकहै घटम
येकउपाधि घटाकासमवाकासत
महाकाससोसाधि ३१ साषी कोि
कहुंमच्छ्रवेलरिधरिया सबमेंदी
न मायाजीवउपाधि मिलिजीवई
रमान ३२ पहिल दोहा बिबधिनां
कीजुक्तिकरि गुरुलपायोग्यान दे
कानकंलागिये सिष्यहूंपरवां
३३ उत्तर चोपई कृपाकरिकेज्ञा
पावे जातैंसिष्यपर्मपदपावे देस
लतजिवस्तबिशेषा तीनौंत्यागिसु
लषा ३४ सोयंदेवदत्तउतीयवा
लक्ष्यते॰दृष्टांत चोपई ऐकपुर्षवे
कासीगयो ताग्रहसतकेबालकम
सोईपुर्षफेरियहआयो बिप्रसंगवे
नपनिजायो ३५ दोहा कासीकोम

कचलैोचनकोनवतोमोनि पहिमदिसा
पतिमयो सनबंधनावियहजांनि नूई
ईहांपुरूषवोक्तकृतो बिप्रकुतोतापा
कासीबासीआईयो बिप्रभेदप्रकास
७ सगेतुमारेहैंबहे मिल्नेप्रेमअनुसार
यहकोकहांतेआईयो कहितुमबिप्रा
चार ३८ जोवहकासीदेषियो सोयह
मोन देसकालवस्तु बसलतुजिण्म
प्रहनपरवांन ३९ देसदेस सोनामि
८ कालकालनहीयेक बसतबसतसों
नामिलै सबतजिगहियेसेकध० सोरवा
दसयोयेक सोअयंकरिलेषिये
पिनयेहूदेस परोछिप्रतछिकरि
है ४१ दृष्टांत योचेतनहेयेक
सतचितआनंदरूपहे छोछिअप्रो
बिसेष पंडअसंडबिभागहे ४२
गिभूहमेंडप्रोछित्यागिप्रतछि
निचेतनिलहोअषंड सोहंहंसो
कला ४३ चोपई श्रवनमनेंनिजध

सनकीन्हों साक्षातकारजुनि श्रौ
चीन्हों गुरु गमि ग्यांन गुरू सो कह
जुनत सिष्यको संसो बढ्यो ४४ दो
श्रवन कह्यो अरु मनन जुनि निदि
निदिध्यास विचार भगवांन ग्यांन श्र
ग्यांनको सिषि पूछे निरधार ४५
तीक्ष्ण अनंत धारा ग्रंथ श्रवन मन
वरनते नाम अरु स्मो प्रभाव ८
८८ सोरठा नौमैने मत भाव अग
नग्यांनकी वरति को कहु पुछनको
भाव सिष पूछे हिये हरषसों १ प्रश्न क
होग्यांनको रूप सिषि निश्चै संसो दह्यो
सो प्रश्न अनूप ग्यांन अग्यांन स्वरूप है
उतर चौपई गुरू कहै सुनि सिषि सुजांन
वरन सुनांऊं ग्यांन अग्यांन सात भूमिक
ग्यांन नसांऊं अरु अग्यांन सात व रां
२ दोहा प्रथम ग्यांनकी भौमिका कहै
रूसमुझाइ अग्यांन भेद आगें कहुं सुन
सिष चित लाइ ४ प्रथम भूमिका ग्यांन व

ता

कैकाउयो अरित ज्ञानभौमिकाकहैं
लहैगुरगाम्पतें

निरमतें तनमनसाये जोनिसत्यपुनिभूरजा
परिहासबैपदारथत्यागाअनासक्तिररजा
है ताको अर्थ चौपई सुनियेंकथाहो
नकछुदीजे तीर्थबासजाइजोकीजे की
रबैरागमुक्तिपदपाकै ग्यानभूमिकाप्रथ
मनिधाकै ७ जोइआज्ञसोइबिचारी
सुनिपुनिकैंमनमांहीधारी सोईबिचारि
होइतारूपा तातेआपत्तिसुभिसुरूपा
पंचभूतजेभौतिककहिये तेसबअसत
असतकरिलहिये तातैंसबैआसिकीन
सी भास्यौतुरीयासरबपरकासी ऐं स
सभूमिकाज्ञानलपायो वेदाअतिबा
कतैंपायो अबअज्ञानभूमिकासुनिलो
जे समझिबिचारत्यागिपुनिकीजे ऐ अ
थअज्ञानभूमिकानाम बीजजाग्रत२

हाजाग्र ३ सुपनजाग्रत ४ जाग्रतसुप
५ सुषपन ६ सुषपति ७ ताको भेद
ोपई देह भाव सब आपही मानै यातें
ोर अग्यांन न आंनै जन्म मरन देह बङ्
ोर अग्यांन आंनै जन्म मरन देह बङ्
हूपा येही बडो अग्यांन अनूपा ११ सुष
ुष भोग भोग तांन है कहो जगत सा चक
िगहे गुरको ग्यांन हिदै नही थै जीवम्
ग्यांन कहू पयो पके १२ सात भूमिका को
कबित्त सात है आपा अवसथा कहे नहे
येमा पछा स्वयं गागुरताअवसथा भेद सोव
जांनियें येक बीज जाग्रत सु जाग्रत देह
सरी सो कहो महाजाग्रत सो तीसरी भ्रम
नियें जाग्रतस्वपन चारिपचमसुपना
निहारि सुपनमांहि जाग्रतसो छवें छ
ीजांनियें सुषपति सुषमांही सातवां
मिलै नांही निरगुन सरूप जाही सो सम
प जांनियें १३ दोहा कही अवसथा
येसबै अग्यांनरूप परकास येविक
मातेंहिजे वै सातोंइ है निवास १४

सबहीकहीश्रीगुरज्ञान
भिन्नभिन्नकोअर्थजोसिषिदु
१५ उत्तर चौपई औरजपैरे
रहाई

१६ अस्तीवाचते

ममभातामम भगनीजानै
मनमैनहीआनै १७
तकहिये सुषदुषभेद
ये एकअज्ञानवक्रुत्तिबिधिनहिये
जैसेबीजवृषपुनिकहिये १८
मनसोनामकहावे
हतिरहावे जातबर्नआश्रमहीमानै
पंडितमूरषसबैरहानै १९ क
कुलगोतनिरूपा करमभक्तिपु
गऊरूपा जोगजगिसुभकरमकैरेह
म सुतदारा धनधामआदेमम २०
मतमांहिसुपनपुनिकहिये

ग्रगटलहिये मिथ्यामनतेकजपक
पावै यह जाग्रतमेसुप्रकरावै २
१ दोहा सुतबितपसुपरिवारसब नाम
बेतसुनिजांन कूलबस्तसांचीगहै त
हैसुप्रग्रज्ञांन ब्रह्मलोकहै ग्रादि
मेषतागसेग्रंत सुज्ञांनग्रवस्थास
तिकहै सुप्रग्रवस्थामत २३ चौपई
सुप्रमांकिजागृतपुनिहोइ ताकोंची
नैबिरलोकोई केतेकबेरनृपतिन
येकरे मोगबारताबक्रुतबिधिगहै
२४ डेडकुबेरबरनमनमांनै ब्र ता
संकल्पमयेबखांनै होइग्रापेपुनि ग्र
गेंकहै सुपनामाकिजागृतबोलहै २
५ दोहा ग्रापापरलासैनही बंधमो
नहींजांन चंदहीननाहींनिसा योसु
षपतिग्रज्ञांन २६ चौपई ग्रज्ञांन
ज्ञांनकीलमिनपाई गुरूकीकृपासी
बासिबपाई ग्रज्ञांनग्यांनकोरूपसुन
कों सिषपुछेसोज्ञांनगुननकों २७

अज्ञानग्यानकीभूमिकाकहीगु
मगबोतज्ञानअज्ञानसुनि
सिषसुद्धैसति ॥ मोड २९ इतिश्रीअ
मृतधाराग्रंथज्ञानअज्ञानभूमिका
बरनंनोनामनवमोप्रभाव॥९॥
सोरठा करौअज्ञानसरूपजुकिजतन
करित्यागिये गहियेज्ञानअनूपश्रीगु
रुसोसमझाइये १ उत्तरअरिल अज्ञा
नज्ञानयेजानज्ञानगुरुकहतहै सप्त
धातकीदेहएकजोगहतहै चेतनस
दाअलेपदेहवतमानिये परिहांयहइ
बडोअज्ञानऔरनहीआनिये २ आ
तमसुस्वप्रकासनिरंतरभासही अजा
अजनमाएकनित्यप्रकासी देहअस्त
अरुमांसरुधिरसुनिसुत्रहै परिहांतम
प्रकासैऐकबाहैसुकुत्रहै ३
केप्रकासभासबुयंकहै वनचतुर
दसमांहिनहीकछुभेदहै
देहमैहममतहतहै

६ नस्वरूपवेदविविकहतहै ४ दोह
देहभावजोभावयह सोअज्ञांनप्र
न संक्षेप२अज्ञांनकहि नहिमरू
लिगपांन ५ अशुज्ञांनवरनत दोहा
असुधदेहमननवतसदा नहीमोहै
नबंध अहेदेहविकालननहीं नहि
न आनुबंध ६ चौपई ज्ञांनीज्ञांनस
पमेरहै देहपेहमैममतनतहै स्वप
परमसाधूनहीकरै यौज्ञांनीदेह
रिहै ७ मानदेनहिंमानजिक्रोध
मांवांनसबसैंअविरोध गुरूसेवनस
वज्ञांननिवास मनआतमनिग्रहज
स ८ सर्वभूतजीवनहितकारी
नप भक्तिमनमैंअतिप्यारी लोनम
छतछेडनितजे ममसरूपतजिआं
ननजे ९ सर्वअखिलवेदयौगावै
ज्ञांनीगुरूपनियौंसमझावे यहज्ञांन
इगकरकरिये अज्ञांनमोहममतासे
नाचिये १० सं कोईमोनीप्रज्ञज्ञहोई

४ यौजबज्ञोनवंत
ज्ञान अज्ञान भेद तवकहै
११ दोहा जैसेंदरपनकेनिकटि तव
भास त्रैतिङ्कतैभासैसबै यह
१२ निरबासीकौमुक्तिप
हैप्रकारकीबासना
१३ अस्सचौपई सि
झाबो सुहमलीनक
वतमावो कैसैजन्ममरनभ्रमहूटै
१४ तु
मैलिनरअतिहैसबैचार
बिचारनिहार प्रथमभासप्रकाशक
रि पीछैताहिसिहार १५ लोकबासन
एकहै देहहूसरीजान अमीअंतसो
तीसरी चौथीसास्त्रपरमान १६ बासु
नाकबिन बासनांबिचारकहौं पुरु
ज्ञानज्ञानलहौ कामनासरूपहौं लं
हौरिबमतैं लोककोमिलनचाहै लै
कलाजतपताहै

मै जीवजंतमै अंतरइ ही किंतामैरूप
रंगरंगवैसै स्तुतिहैसुम्रतिप्रकामै मा
वबकुतंतमै जन्मकोदाताएहविध
हूरचीसंवारि भगवांनकौबिसारिप
स्यौजमहंतमै १७ दोहा सकलमनु
चेगुरकहै तहैसुजांनी दोइ सिषिको
संसारहनवौ भिनिभिनकहैसोइ १८
अपवासना अनंत अपमलोकवा
ना चौपई राजापरजादरसनआवै स
कीजे जो जगमनभावै गिरामो
बसत्तरनहीलीजे तजिबसतीबन
तजुकीजे १९ डब त्यागिनैनावही
थोते आसनअडगाकबु नहीडो
धनिछतिजगमाहि कहावे तोव
वासनादेहधरावै २० अपदेह
ना चोपई अहबुधिदेहमैमानै अ
भोगसांचकरिजांनै ऊबजतुजन
तुरूपकरूपा देहवासनापूरन
[illegible] २१ अभिअंतरवासना चौपई

नमें मोश बासनो चाहै मिलै नहीं नाम
मैं दाहै बाहर त्याग मांहि मन गहिये
भीतर बासनो देह सु लहिये २२ सा
बासनो दोहा सास्त्र बासना जांनि
ये यह तीन भेद अब भास एक पा
बक्र पाव पुनि अनुष्टान परकास
र गीतासह अनामपहि मानत मन
मोद नित्यनेम कछु पार करि कीजे
कलविनोद २४ चोपई भागवत
दिस्वादि पुनि स्वारथ हरिबंस पढि
संसुलहो कछु स्वारथ श्रुति संमृति
के अर्थ कहीजे यहै बासना जन्म ल
जे २५ अनुष्टान बासनो चोपई अ
ष्टान को रूप लषो के कर्म नित मति
निरूपन गोके कर्म करे कर धर्म धर
तहै जीव अविद्या रूप परत है २६
त काले करि चरनन भोवै क्राई धो
नु जल तन जोवै आपु करै सो वैतिम
ते औरस कल को लघु करि जांनै

सोरठा गुरु कहै सो निरबेद निरमत मोन
अमांन तैं सिष सुनि यहै भेद निरबासनत्र
हजिये १ प्रश्न जो तुम सांत अमानत्र
कर्म फल समि है सबै जोगजुगति की
जांन ज्ञान कहत सो जात है २ जैसे बीज
अंकुर अगनि बिनो नाशै नही रही जात
पूर जोग अगनि बिनसत न है ३ गुरु दे
ना सिष सुनौ गुरु कहत है जोगजुगति
बिस्तार वेदांत मत सो और है पातंज
न और बिस्तार ४ पातंजल मत प्रथम
कहै जोग भेद बिस्तार अरु आगे
अंत है तिन को सुनौ बिचार ५ होय ई
ज्ञान अरु नेम भेद है कहिये आसनअ
रु प्राणायाम प्रत्याहार धार
तो जो मैं ध्यान सहित समाधि वमानौ ६
ना मन सुद्धि के कहे बखानि तिन मैं तआ
ल के है सु जानि अष्ट सहित जम की जुगा
तन मांहि केतने भेद जम सु नियम के प्र
ता अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचरज

प्रत्तीन इद्दिबिधि जमप्रमानिय तं
जेजानलसुद्दीन ८ सुचिसरूपसेतो
जुत:पत्तिई स्वरप्रतिधांन स्वाध्याय
वकरिनमपंचबिधिजांन ९
आसनसाधिकैं तीनकैबक्रबि
म सिधसुखासनपद्मका चौरासीअ
१० चौथैप्रानायामकहितीन
कास उतिसमधिमदोइकहि प्रनि
लिष्ट्रस्वभास ११ पंचमप्रत्येहार
कीहृतिनिवार जितकितते मन
किये ब्रह्मभावउरधार १२ सोह
हूपुकारिये अंतरप्रीतलगाय ह्वे
तडोलैनहीं सुषधारनापाइ १३
सोहोतहै सोकहनौंमिटजाय एक
कहीएकहै ध्यानमानसुषभाइ १४
नमान अभिमानननही सोसमाधि
धि चारिबिघनसमाधिमें सोगुरु
तैसाधि १५ लयबिछेपकषायतजि
सास्वादनहीस्वाद चौथ्योबिघनिवा

तियेलोकमाध्यस्वरुप्रसाद १६ चरित्र
कोकछिन व्याखोंडछिवनजैसेकहोत
हौंमैंछलेमैलनयकैस्वरूप ऐसैंनिजम
नस्त्रांकिये अनहितमनलागोम्रानछि
स्त्रसपानैछिपैस्वनम स्वम जोगोमाविषप
मोनिद्रैं मरगुनकीसुधि स्वाविसाखाद
स्वादनाहि मोगावासनासिजानैमोकम्रा
मुसांनिये मगतोनमागजागे वामोड़िवि
ब्रुम्सांगो सोनकेमड़ःगसमोदहैनावहो
नये १७ चौपई समाधिस मैजबलिड
स्वाबे नवसमयमहछिवनकहावे समा
छिनलगिछिपयनमननांनो यहैछिवन
छिलेपरलांना १८ छिछिधि मांतिकेमो
गक्लेले हेसबनमनकेनाथेधरैते सगुण
कुलजुमसोस्वनूपा रसाखाद सोईबा
दस्वानिहना १९ मनमैं भोगवासनावे
लखस्वमिनाससुछिसुनिरमै जोगजुग
तिसोजपसेकनहीं नोकमपजायनासि
नवधी २० दोहा वाकोछिवननिवारि

उपजैसुखिसमाधि जैसैबलीचित्रकीप
वनसकैनहीबाधि २२ करसमाधिवुध
निकीय क्रमक्रमनतप्रति कर्मसंबिश्र
र्व्हैज्ञानकीगति २२ ज्ञानप
कहो जोगजुगतिकीरीति म
जोगजोगपर
तीति २३ इतिश्रीअमृतधाराग्रंथअ
वरणोनामएकदसोप्रभाव
४७९ दोहा पातोजलमतमैकहे
वेदांतमतसुननको
१ प्रथम चौपई सिष्य
वो ग्यानजोगसोजोग
सोरहकलासपूरनचंद जा
२ उत्तर दोहा
निजध्यानपरजंत

३ सोरहअंगकोकबित
देसकालअसमानो मू

रूप द्वै सब जीवन कहै ब्रह्मा सो प्रथम सो प्र
दुर्लभ सब हद कौ इता कौ जांनो स्वयंभान
द श्री अपरांनौ १६ दोहा आसन बा
सन कछु नहें कहें अगट कहि देह दु
ढ आसन सो है कह्है सिंघासन सुनि देह
१७ सुख सरूप चेतन्य है तहां कैसे आ
सन पे हृ आसन आसन मैं बैठे आसिउर
न रांम १८ अरिल्ल सिंघासन सोई सब न
तर्हि आपे यान है अब अज पद रूप सु
आसन मांन है ता आसन मैं बैठे सिद्धि प
हू पाइये पहिलें ज्ञांन सरूप अनूप तन
मन ल्याइये १९ अब नासी चेतन्य जगत
कैसें नहैं दीसै जगत अनूप ब्रह्म कौ ह
लै दे यह सब परमांन तहां मन ल्याइये
परि होत जप जोग जोग मृ नवग्रह गाइये
२० नमित ताहि हमें हृ अंग सब मोरिये त
जि हम आप अभिमांन ब्रह्म सौं जोरिये रा
हा है समिता सु ज्ञांन मधि जोइये प
रि हांदे हम अभिमांन हे कोमल कर द

होइरे २१ कोरैज्ञानकीदृष्टिब्रह्म
नोनोअज्ञानअतीलिसुनोनोहोइरे सो
दृष्टिउहारसोरसबतलहत है परि
नथैनासकाअग्रजोगमेंकहतहै २२
हा दृष्टिदृष्टिरूपनिभावतेंजोउपजै
दृष्टिसोहीपरमानहै नहीनासाग्र
द २३ प्राणायामस्वरूपानकौवरनौं
प्रमान रेचकपूरकेआदिदै पुनि
भक्तपरमान २४ चक्षुआदिजे
करैब्रह्ममेंलीन निरोधहोइ
ब्र कौ प्राणायामपरबीन २५ प्र
ब्रह्मंडअभावकरि निषेदसबेपरपं
च नामरूपसबअस्तकर सोरेचक
तसेच २६ सोहंहंसोवृत्तिकरि
सम्मोल ब्रह्मभावपूरनभयो यहपूर
कप्रमान २७ सोहंहंसोएकवृत्तिरही
दैवहराइ मस्योऊंभजलमधिज्यों
भकयहैसुभाय २८ प्राणा प्र
नयहलिहैतकोरव

पीडतकरै तेनर अक्रनिद्रांत २९ बि
षय२तामेटिकै ब्रह्म भावउर आंन म
नमंजनप्रतिहार यहयहै सोषिप्रमान
३० जहां२मतजातहै तहां ब्रह्मकरि
स्तेष्र सबसाधारनएकता सुधधारना
पेषि ३१ अहंब्रह्म अस्मि महीनिराल
बपरकास परमानंद आनंदसो ध्या
नमांन अवभासे निरालंभजो वृतिहै
ब्रह्माकार बिचार ध्यानमांनबिसरैस
बे सोसमाधिउरधारि ३३ ग्यांनसमा
ध समाधिहै यहैबेदांतजेजांन याहमै
द्वैभेदहैं सोपुनिकरौबषांन ३४ सोवी
सविकल्पहैएक निरबिकल्पसोदुस
री भगवान ग्यांनविवेकसमझै पुनिस
मझायहै ३५ दोहा षोडस अंगप्रसं
गजो कह्यौ गुरुसमझाइ द्वैसमाधिके
भेदजो सिषपुछै मनलाइ ३६ इतिश्री
अमृतधारा ग्रंथ सोरह अंगजोगबर
न।ननंनाम द्वादसोप्रभाव १२ ५१५

प्रस्नदोहा जोगजुगतिवक्तुभिथिक
हीसहीगुरत्रास दोइसमाधि२कौ
पूछनकीआस १ उत्तर चौपई
रूकेपाकरितुतरदेहु सिषसुसमाधि
कहिनेइ हैसमाधिकोभेदवतांजे
नामसरूपगुनकर्मलषांजे २ दोहा
विकल्पसोएकहै निरविकल्पपुनि
जाकोजैसेभेदहै तैसोकरौंवषान
ई ३ सप्रज्ञातिपहलेहीकहिये स
बविकल्पपुनियाहीलहिये सकलड
कोभेदलषांजे तीनभेदपुनियाके
जे ४ दृष्टांनुभेदप्रथमसोकहिये
दूजोनुभेदपुनिहूजोलहिये निरविक
ल्पसोतीजीजांनौ तीनभेदभिनपरमा
५ दृष्टानुभेदसोनामकहावै स
कलदृष्टिमेव्यापरहावै सोकिनदृष्टि
नहीकछू ही सबकोदृष्टव्यापक
ही ६ ज्यौजलफेनतरंगनमाही
तविनोवस्तुपुनिनाही केच

भूषनजैसैं दृष्टाबिनोदृशुपसबभैसैं
७ हैदृष्टासबमांहिअमूत्त सकल
दृष्टिव्यापकअनसूत दृष्टानुभेदय
हकहिसमझाई सब्दानुभेदसुनिये
सेगाई ८ अरिल्ल शब्दानुभेदव
हजानमानसबधंघरे दृष्टादृष्टिटा
बभागनहीसनमेघरे ६ असंगसब
मांहिसंगकहैपाइये परिहांअसंपु
यहजानबेदमेगाइये ए असंगोयंपु
रूषः इतिश्रुते निरबिकल्पकोरूपक
हिसमझायकें असंगनहीअनसूत
मेटिहैभाइकें सुषपतिसमकरिजान
नहीबिवहाररे परिहांनिरबिकल्पये
हजानिसमाधिसुसाररे १० दोहा स
बिकल्पवाहरिकरैश्रवनचक्षुदै आ
दि सबैकर्मकीकरनताकरतकराव
तवादि ११ निरबिकल्पअंत्तरकरै म
नमेंविकल्पत्याग दृष्टानुभेदसबदा
नु बिधिनिरबिकल्पतापाग १२ दृष्टा

दृस्य बुधिविवहार सुमतु
मोहिकरो निरधार
१२ बुधिकुटिलजबसबहती तबमैक
सोमो
१४ मनमलीनसोजबहे
तबमैदृष्टारूप करैसकल्प बिबि
दृष्टामैअनरुत १५ सोरठा
सबदानुबेदप्रतिजोन अतःकरनप्र
काससौ निरबिकल्पपदमानहो असं
गसबहिसिटिको १६ तमप्रकासनहो
एकज्ञानअज्ञानसमाननही यहईतत
बिवेकअसंगासंगयोएकता १७ ज्यो
सुपनैनपरोह जाग्रतजैसतनमेघनहो अ
हसित्याजीपजोप समनबुधिमोप्रसंग
नही १८ तीजीबिकल्पत्याग दृष्टादृस्य
बिसागनही नही असंगबैराग जोसरू
पसोइसही १९ सोईज्ञानप्रमान हैस
माधिभासेजहां जीवनमुक्तिसोनामस
बेकर्मकोनासहै २० जैसेंचुमकजो

सूपनजैसें दृष्टाबिनोदृरूपसबऐसें ७ हौंदृष्टासबमांहिंप्रमृत्त सकल१ दृष्टिव्यापकअनस्तत दृष्टानुमेदय हकहिसमकाइ सब्दानुभेदसुनिऐ सेंगाइ ८ अरित्न शबदानुभेदव हजांनमांनसबधंधरे दृष्टादृष्टिप्रतिटी बभागनहीसनमंधरे ९ असंगसब मांहिसंगाकहैंपाइये परिहांअसंगु प यहजांनवेदसेंगाइये ए असंगोयंपु रुषः इतिश्रुते निरबिकल्पकौरूपक हौंसमकायकें असंगनहीअनसत मेटिहैंमाइकें सुषपत्तिसमकरिजांन नहीबिवहाररे परिहांनिरबिकल्पये हजांनिसमाधिसुसाररे १० दोहा स बिकल्पवाहरिकरेश्रवनचक्षुदै आ दि सबेकर्मकीकरनताकरतकराव तवादि ११ निरबिकल्पअंतरकरे म नमेंविकल्पत्याग दृष्टांनुभेदसबद नु बिधिनिरबिकल्पतापाग १२ ऽ१

दृस्य बुधिविवहार सुमन्नु
मोहिकरोनिरधार
१३ बुधिकुटिलजबसवहती तबमैंक
रीप्रमान साधुसंगतिनिर्मलभई सेमो
हिकरिज्ञान १४ मनमलीनसोजवह
तो तबमैंदृष्टारूप कलैसंकल्प बिबि
धिविधि दृष्टामैंअनरूप १५ सोरब्र
सव दानुभवश्रुतिजान अंतःकरनप्र
काससौ निरविकल्पपरमानहौ असं
गसबदृसिटिको १६ तमप्रकासनहीं
एकज्ञात अज्ञातसमाननहीं यहइतत
बिवेकअसंगसंगयोएकता १७ ज्यो
सुपनैनपरोइ जागपनैसतमचनहीं य
हसिद्धाजीयजोय समनबुधिमोप्रसंग
नहीं १८ तोजीबिकल्पत्याग दृष्टादृस्य
बिभागनहीं नहीं असंगबैरागजोसरू
पसोइसही १९ सोईज्ञानप्रमानहैस
माधिभासेजहां जीवनमुक्तिसोनामस
बैकर्मकोनासहैं २०

७ इलोहहचेष्टाकरतुहै मनबुधिइंद्रीहो
य क्रियाकौरविद्वीपज्यौ २१ जीव
नमुक्तिवर्नन कवित्त जीवतमुक्तिभ्रे
सामतिदीपचित्रजैसाभ्रचलस्वरूप
तैसाचेतनप्रकासहै तपैनहीत्रीयत
पदेहकौत जैसंताप आपहीमैनहैंभ्र
पभ्रहंबुधिनासहै सुधभ्रहं२धारीभ्र
हंजपिभ्रहंजारी नानाबुधिमोनिवारी
इजौनहीभासहै जीवनमुक्तिरूपम्या
नोन सोभ्रनुपव्यापकसकलनरूप
ब्रह्ममैंविलासहैं २२ दोहा जीवनमु
क्तिसमुक्तिहै जहांमुक्तिनही वंध वं
धमोहिभ्रज्ञानमहि नहीज्ञानसनवंध
२३ वंधभ्रात्म भावहै मुक्तिसुभ्रात्म
भाव भ्रनात्मभ्रात्मभावनही जीवन
मुक्तिसुभाव २४ ज्ञानीजीवनमुक्तिप
द सतचितभ्रानंदरूप ग्यानधरनजी
वनकह्यौ मुक्तिसुज्ञान भ्रनूप २५ र
हैदेहमेदेहनही तीनत्तापविकारिभेद र

विप्रकाल्हसों यौँभाषतहैवेद २६
चौपई नरैपरैजितब्रह्मछिपोनो जीव
ब्रह्मएककरिजानो तीनकीग्रंथिजाल
सबनासा ऐसेंकमंभ्रमनहीभासा २७
प्रस्न सोरठा तीनिग्रंथिकोभेदकहिये
गुरूसमझायकैं तुवमुखबानीवेद ज्यूं
कौंत्यूंसमझाइये २८ उत्तरदोहा ग्रं
थभेदजोभेदकहि सोपुनिकहौंबिचा
रि गुरूकहैगुरूज्ञानतें सिष्यउरधारि
२९ ऐसेग्रंथिबरननसवैया जीवसिसौ
ज्ञाननहैवहदाह
आदिकछुपुनिअंतकछूकहि
कौनकहैहै जोयहये
अनेकयहअबिबेकसो
पागिरहैहै ऐसेंज्ञानतजैयहज्ञानभजै
भागवानसुलाभयहैहै ३० दोहा यहसं
सैकीग्रंथिहै कहीअल्पकरिसोइ गुरु
सास्त्रप्रतीतिनहीं निहचैकछूनहोइ
१ कर्मग्रंथिबरनन कबित्त

कछ्रौग्रंथितामैंनदैमौ महापंथ गपान
रुग्रज्ञांनपंथदृष्टिकौ सो घोलत है संचि
तसंचै प्रमांनपरार बंध भोगमांन क्रियमे
नहू तत्रांनकू लै उक्त फोलत है बनेनवु
र्मे आश्रम है महाश्रम सु मासुन कर्म हत
डोलत है भगवांन ब्रम ऊ वै कर्म को मंडा
र फूटै सबै आस बास छूटै ज्ञान मा अमो
लत है ३२ सोरठा कर्मग्रंथि पद जान ब
ज्ञत कर्म अभिमान लहि निहचै बंध प्र
मान सब छूटै तें छूटि है ३३ अथ ग्रंथि ब
रनन कवित्त अहै ग्रंथि यह जानि अहं
अहं कै बषानि पंडित सुजान जानि आर
त अनेक है अहं राज अहं रंक अहं ता
हि सब मंक अहं२ प जौं पंक सुत्र सुष जे
क है अहं साक चोर अहं२ जान भोर अ
हं सबै धर्मधार अहं२ जो औसै कौं कहै
अहं२ मांन बंध मलै जगजाल धंध भगवां
न ज्ञांन बंध तनु सो विवेक है ३४ दोहा
अहं ग्रंथि जीव यों बंध्यौ महाजेत प्रमान

मावत्तज्ञिचेतभज्ञि अदेसुडकरिजो
न ३५ जीवग्रंथिवंधनसदा कटैमुक्ति
कोभेद परैतैसुयएकहै योभावनदैदे
ह ३६ चोपई ज्ञांनीजनसोनिज्ञयसने
ऐसोज्ञानारेत्नरहांतै जैसेजन्मसेचद
अनूपा ३६ हीजीवन्मुक्तिसरूपा ३५ दे
हसहितविदेहकहावै [illegible]
सोपावे [illegible]
[illegible]
वे [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हे२ मोन त्रासै अद्वैत नही पास है मिथ्रीत
सकर जैसो हैत भ्रम कर्म कैसो भगवां
न ग्यान ऐसो ब्रह्म हि निवास है ४१ सोवि
ग्यानी ग्यान सरूप बहु सबु सपु ति बुस
है करता कर्म अनूप इछा आदि प्रभा
वजे ४२ दोहा इछा तीन प्रकार है सोपु
नि करूं पनिरूप भगवान ग्यान सो ग्यान है
निर्मल परम स्वरूप ४३ इति श्री अम्
तधारा ग्रंथ जीवन्मुक्ति बरन नतो नाम
त्रियोदसो प्रभाव १३ ५५८ ग्रंथ दोहा
कृपा करो गुरु सिष्य पर करो ग्यान प्रगा
स परारब्ध को भेद जो जीवन्मुक्ति निवा
स १ उत्तर श्री गुरु उत्तर देत है सिष को
प्रस्न बिचारि इछा है त्रिनि निछता परइ
छा उर धारि २ अरिल इछा प्रथम बषा
नि अनिछा दूसरी परइछा प्रमान लहि
त है तीसरी सर्ब भोग संजोग करत नि
र्स कहै परिहा जल जब से जल मांहि
हि लिपै नही पंक है ३ दोहा तीन भांति

कौनभोग
काकेभयो सिषसुछैतजिसोग ४ उत्तर
गुरुकृपाकरिकैंकहै सिषसुनिनिजधा
म जनक आदिराजाभयेप्राप्तपूर्नकाम
४ रीषिबदेवसुषदेवपुनि जागिवत्तकज
डभयेऽ वामदेव नाईप्रगट एषिरकपद
अर्थ ६ अर्जुनअरुऊधोनृपति औ
रजनकबहुभूप ब्रह्मज्ञानतेंमुक्तिहै
तिनहीनबंधनिरूप ७ अरित इछाज्ञान
प्रमानजानिजोजनकहै सुतबिनतापरिवा
रअरुराजकनकहै सो मदोमतछि
मेदसबकीजीतिसों परिहांमहामुक्तिपर
मानज्ञानकीरीतिसों ८ परइछापरमान
जानजडभयेहै सुषदुषभोगप्रभाव औ
रकेअर्थहै इष्टअनिष्टप्रभावनहीमन
औनहीं परिहांपरइछाबिवहारसमर्थे
मानहीं ए दोहा परइछा केभोगमें
गिवत्तकसुषदेव
मुक्तिमाऊनहीभेव १०

१० की सोप्रनि कहैं बषांनि पृथकर्नेइछान॰
० ही हूं सब वन परमांन ११ अरिन अनई
छा को भोग जोग अर्जुनहै बकुसंकल्प ना
विचारि पाप अरु पुन्य है भाषै स्वार्थ त्याग
धनंजय जो यरे परिहां हूं स्न कहै बकु नां
तस्रनइछा होइरे १२ दोहा जो अपनेइछा
नहीं परइछा ब्यवहार ज्ञानपाय सो कर्त्त
है कर्मकर्त्ते कन भार १३ सुषदेव आदि
सातिक सबै जनक रजोगुन जोइ ऋषीसा
तामस प्रगट ज्ञान भेद नहीं कोइ १४ सो
रठा जोग बिसिसट हिमांन सुतबिन ता॰
परिवार सब आत्मज्ञान मांन श्रोतार हु
पत्तिपति जहां १५ ज्ञानी जीवन्मुक्ति कि
या भेदतैं भेद नहीं राजभी सेषेमपुक प्र
रबहु करत भेद मौं १६ प्रश्न चौ
पाई जनक राज बाकुंन पद कहिये
बैराग त्याग जा कन हीं लहिये सुषदेव॰
आदि बिरक्त पद मांनी एकमु
क्ति कैसै परमांनी १७ यह संसै गुरु तुरत

नसावो जैसेकौतैसो समझावो सिषकौं
संसैतुमतैंनीसै तुम्हारी क्रिपा ज्ञानपरका
सै १८ उत्तर सिषकौसंसैगुरुसुनिलयौ
फिरताकौतबउत्तरदयो जो गभोगसा
धनतैहोई साधन भेदकहौंसुनिसोई १
९ दोहा उपसमसाधै जोगहै बैरागत्या
गप्रकास बेदांतकेश्रवनतै निरमल
ज्ञानबिलास २० सोरठा दयाधर्म दृढ
होइ सोही गुरुकी भक्तितै सबमैरामसमो
इ सूझमाननाज्ञानसौं २१ अरिल जोग
बसिष्ठसुषदेवसेवकरिजोगकीभई
भावनालगिम्हारसभोगकी तातैउ
पसमचित्तसबैध्याजेहरे परिहावेदांत
सुनिज्ञानमुक्तिबपुहेहरे २२ दोहा बै
रागदोषनिग्रहतैंहो तहां सबैकौत्याग बै
[illegible]मोदिषियेज्ञानश्रवनतै जाग २३
सनकादिकनारदरुषिबितरागहैसोइ
त्यागहोयबैरागतैं ज्ञानमुक्तिपदजोइ
जनकआदिराजाजितै नहीजोग

वैराग वेदांत कौ श्रवन करि मोक्षि क्रमी
रस पागि २५ दुरवासा के अगाट है सुमित
मागु त्ननांम ताते कोठी कहत है मुक्ति
नअमांत २६ सुषि र जो गुन जनक कै
सतगुन सो सुषदेव गुन बिमाग तै भेद सो
ज्ञांन मुक्ति नही भेव २७ ब्रह्म निरंजन जो
लियें गुनातीत प्रकास ज्ञानी ब्रह्म सरूप
है नही ज्ञांन श्रव भास २८ कबित्त ज्ञां
नी कौ सरूप ऐसो गुनातीत ब्रह्म जैसो
गीता कौ बचन तैसो सो सरूप है ऽरे माया
मन नास जो ही सत्तर जन्म को ही कि या
भेद भ्रम नांही अहंबुधि षोऽरे संचित
कुजेते वासे अहं नास कर्म नासे अनंत
दीप प्रकासे ज्ञांन मधि सोऽरे क्रिय मांन
कत हांन प्रारब्धु भ्रम जांन भगवांन मत
मांन ज्ञांन मैं समोऽरे २९ अरिल्ल संचि
त बीज भंडार धार जल की गिरै क्रियमां
न परिहांन ज्ञांन अनल मौ जरै से के अन
स मांन रहे जे भोग है परिहा प्रारब्धु भव हा

रज्ञानसेजोगहै ३० दोहा सेक्यो अंन
जमैनहीविपत्तिहोइनरकोइ ज्ञानीज्ञा
नप्रकासघनकर्मकलंकनहोइ ३१
सोरठा आपरसोइकाजकीन्हीअग्नि
प्रकासबहु जोकोइमूषसमाजरही
अग्निमैसेकिलै ३२ इहिज्ञानप्रकास
आपमुक्तिकेकारनै अहंदेहअंनास
दीसैपरउपगारको ३३ ज्ञानपद्धतिको
कबित ज्ञानीकोसरीरऐसोतेलबिना
दीपजैसोपारिबिनासीरतैसोजात्योपट
जैकहै सरकोप्रकासज्ञानमायानिसि
सबैहानभोरभयेरैनिजानसेतोनहीसे
कहै नदीतीरतरुनयाबेगसोउ धरिग
तोअबिबेकहै
तासोबेदअज्ञकहै
३४

सेउतीउतीभ्रमनासैज्ञानीकोसरूपहै
यामैनमोनतांहीजीवरस

धबुंदएक ओही ग्यानसो स्वरूपहै बंध
मोछि२गौनसुधसतावसभौननकेसु
गंकहैकौनकहांस्वरूपहै भगवान
यहग्यानवेदवेद्य सोप्रमानआपहीमे
आपग्यानश्रीरसकूपहै ३५ दोहा
ग्यानसरूपनिरूपहै गुरुलषायोग्यान
ग्यानीकोवरननकस्यो अबसुनिकरी
प्रमान ३६ कवित्त ग्यानीकोसरूपजा
नमोरमनहैप्रमानदुतीदुतीसबैहानए
कहीसुएकहै एकहैसुएकनांही दुजा
तीजानासजाहीछिछिनिषेद भ्रमतांहीं
कहैकोअनेकहै भोगभावसबैकरैक
रैमनमैनधरे अहंबुधिपरिहरैततकोछि
वैकहै भगवानमैनिसायोसिधुबुदमै
समायोवेदकैसुवेदगायोमायाचंद्रजे
कहै ३७ ग्यानीकेकर्म ऐसेसेतमतेरग
जैसेतीलनपीतस्यामतेतेवास्तवनासहै ष
तहैसुघातनांहीदेषैनहीहष्टतांहींअव
नसुनैनकोदीदीप जैसोप्रकासहैमन

केतरंग जाने बुधिवक्त
ग्यान आपु माने सब को नि बास है
इष्ट
बान भ्रम के साबु स्यामै बिलास है सु
दोहा कलास रूपी ज्ञाने वर्टे बटै लि
जाम आत्म ज्ञानप्रमान जो कलास
न काम
सुकला कहि और कलास बकाल
है ज्ञान निरूप
रूप निरूपन लाहे ज्ञान प्रमात प्रमा
मान सु औ प्रमौ प्रमान पला है आ
ज्ञान सुज्ञान सुज्ञान लह्यो भगवान सु
पव लाहे ४० दोहा अमृत धारा
पर कहो बेद प्रमान अर्जुन दास
कास गुरु तत सेव क भगवान ४१
धूम गप्रताप तैं श्री गुर ज्ञान प्रका
सुधि निरंजन ज्ञान लाहि किन्हो ब
न बिलास ४२ दुर्जन को मरदन क
न्हा परा क्रम सोह काम क्रोध अरू

३ सभ्रम निर्मलमुनतैंपोछ ४३ अग
० निरंजन जांनिये ब्रह्मानंद अनंत
जनरंजनतानहीं सोसरूपभगवांन
४ परंब्रह्मपरमात्माहैपरोक्षिपद
स ज्ञांन विपरत हकौकीन्हों ग्रं
प्रकास ४५ सैंपौकीजुगतिबिचारवै
सिषबुधिउधार इनबिचारसौमुक्ति
हिबंधबंधनिरवार ४६ जेम
मीकुटिलनरलोभीलंपटकूर तेही
ज्ञानसमीपनहिंहैदुर्वेक्रूर ४७
कुटिलिया तिनकोज्ञानसिषाईयेजि
नकोनिर्मलचित जिनकानिर्मलचि
त कबिरहितज्ञानबिचारे गुरू
रसमज्ञानज्ञान हिदैमैंधारै स्त्रुति
तनिंदात्यागसबमनवानीकरिजित
तनकौज्ञानसिषाइयेजिनकानिर्मल
चित ४८ दोहा संमतसतरसैअवा
सा संमतसंख्याजांन कातिकराटृती
याजषपनहिं पूरनग्रंथप्रमांन ४९ ग्रं

कोमखमांनूहै ज्ञेयवासमुनाम
सोग्रंथहस्तप्रगट सोभाखैभगवान
अर्थमांहि भ्रमकछुनहीं भ्रममांने
सोइ सुहमो तसोपाइहै साध्रसि
जोलेइ ५२ छंदभंगअत्तरकहि
तअर्थविपरजयहोइ छमनकीम्
बवकरैकोविदकहियसोय ५२
हममताकोछडिकेदेहबुधिकरि
तहेसभावपरभावलहि तिनह
कोस ५३ अकसमुझेजानयहस
थकोनाम बाईसअकतैअकदे
पो श्रोसतपरमान ५४ इतिश्रीअ
तधाराग्रंथसकलनबिबेकपरको
विवेकदीपसज्ञोनीकोरूपबरननतो
मभगवानदासनिरंजनीकथिते
हैश्लोकप्रमान १८६ ११०७६ ग्रंथ १४
बकीगणती ॥ २८०१ अथ अष्टांग
गग्रंथलिष्यते अष्टांगजोगवतीसा
नहून जानैसतजोहीयवि

अगतिलीला अगम अपारा धर्म का
रनधरेउसंत ओतारा १ अवरणबरण
पनहीरेषा जागति सुरनरमुनिनहीपे
षा अगतिगति कछुवरनिनजाई
सेससहस्र मुष निसिदिनगाई २ अस्तु
नकरै पार नहीपावै केहीनरजसगुन
सवगावै रहै अपारपारनहीपावै सत
गुरमिलि कछु भेद लषावै ३ ॥दोहा॥
अगतिगतिकैसैलिषै मनबुधिचित
सोहरि आपामेटिसतगुरमिलै पावै
दरसहजरि ४ ॥चौपई॥ म जोगीकर्म
गजो करिही कीयाजोग चोरासीपरि
फिरि२ आवैफिरिजाई कर्महीकर्म
फलपाई ५ होयनिहकर्मनामलो
वे तौ भौसागर वहुरिन आवै कर्म
कर्मवंध्यो संसारा कर्महीतें अटकै
तो भारा ६ देहीकेकर्मलीनउगाई
केकर्मनछुटैभाई जवलगमनके
मनधोवे तवलगमननिर्मलनहीहे

जबतनकीक्रियामिटिजाई।तबप्रभु
नैसहजहीआई।मनकीक्री
यहाहि।तनकीक्रियाकूंबीइसहाई
।।दोहा।।कहैकबीरतनक्रीयाकों
टिकैंमनकीक्रियाकोंराषि।प्यान
याअभिमानतजि।सतनामसुषमा
षि।।चौपई।।तनकीकरनीदेयबहु
मनकरनीसतनाममिलाई तास
तीनहीहोई अष्टांगजोग
सोई १९ तातेउतरोभवजलपारा स
क्रीयातेंहोयउबारा सत्यक्रीयातेंप
मपेऊ सत्यक्रियातेंसाहिबमेलेऊ
सत्यक्रीयातेंसतगुरपावै सत्यक्रीया
तनाममिलावै सत्यक्रीयातेंसंसैजाई
त्यक्रीयाजीवन्मुक्ताई।।२०।।दोहा।। क
कबीरसत्यक्रीयानिरबांणहै।सोसब
तेभिन्ह।।मनपवनालेयेकघरिसत्य
नामकोंचीन्ह।।२१।।चौपई।। अबमैसों
जोगकोंकहेऊ जोग

त्तहैकु येक२जोगकेच्यारि२त्तत्तन
जांनैसंतसोहोयसुत्तत्तन १४ अष्टां
ग जोगकोयह बिचारा सबमैयेकत
मततसारा सोहीकहीयेत्तदुनबती
सा अष्टांगजोगमैयेकोदीसा १५ अ
ष्टांगजोगसांषिकोजांनै औरत्तत्त
बतीसबषानै त्तत्तनसाधिहोयजो
सूरा सोकहीयेजोगअपूरा १६
कहैंकबीरसोजनभोसागुतिरैय
हैकरनीकरैजोसार सतकीयासत्य
आसधरि सतनामआधार १७
प्रथमजोगजांनहैभाई जाकेमि
लैपरमपदपाई निरालंभडिगनहीहो
ई सतगुरईछाहोइसोहोई १८ कर्मम
र्मतजिसाहिबजांनै भलीबुरीकछुमन
नहीआनै निर्बासीहोयबसैनहीकित
हुं जंगलबसतीयेकसमतकिहुं १९
होयनिरधारगहैतत्तसारा बाहिरभीत
रिअत्तत्तअपारा यहहैध्यानजोगकेअं

गासमकेसोजनसाधुसंगा॥२०॥दोहा॥

तसेमाया॥२१॥चोपई॥हजी
बिचारे होयनिर्मोही आपोत्यारे
म
२२ मातपितासुत
कामक्रोधमदलोभबुहावे
होयनिरबासीसाचेमेंलागे अनहद
सुनेआत्माजागे २३ देहछोडिबिदेह
मनमानो तहांहंसापावेपदनिरबा
यहमतगुरूकृपासेपावे बिनबि
चारजगमेंभमीवे२४॥दोहा॥कहेक
बीरसेबिचारिकें सापाप्रपुन्यतें र ये
कततकोंजानें जायपुर्षदरबार२५॥
चोपई तीजाजोगबिबेककहावे बिना
बबेकपारनहींपावे जाकेंसमतामत
मेंहोई भलीबुरीजायकहेकोई २६
सेमइष्टिसर्बंगबिचारे सबघट

चुसनिहारै। सबघट येक नाम समोना।
श्रोरसकल जग मिथ्या जांना २७॥
जाकै सत घट मांही कोई कहो कछु
मांनै नांही सतवंत होये सब समावै
होय बिबेकी निजपद पावै २८॥दोहा॥
जब लग मन बिबेक नहीं तब लग
लैगि तीर सो सागर कै भीतर॥ ऐसी क
थी कबीर २९॥चौपई॥चौथा जोग
सील कहि दीन्हां बिना सील नहीं सा
हब चीन्हां निर्मल होय सो सील बिचा
रै सुधि बुधि दया धर्म उर धारै ३०
मन कौं समझे जे कोइ जौ जांनै पांचों प
कड़ि येक घरि आनै मति सील गहि
तजि संसारा मति ही तैं उतरै सो पारा
३१ होय सरोतर सं चौब मांनै भली बु
री मन मैं नहीं आनै भली बुरी सब त
जे बिकारा चौथा जोग सील तत सारा
३२॥दोहा॥कहै कबीर सील छिमा न
हीं ऊपजै ज्ञान पड़ि हि नहीं आव बि

सीतलनहीकबरैकितनौकरोनुपा
२३॥चौपई॥पांचवांजोअसंतो
वधोनोबिनासंतोसबूडेअभिमो
वाहीअवेआहोइसहजभाव
होवैसोइ ३४ मानेनहीरंकअरुरा
होयअमांतकाटुसोनकाजा
केवांछैनहीकोइहोयअबा
हिवसोइ ३५ मनअस्थीरकरिर
मोपेअनहदनादसुणेचितला
येअनहदनादजपेजनकोइसं
ताहूसमोइ॥३६॥दोहा॥करै
रनिर्मलपवनप्रकासकरिसुष
हैसमायसतनामसंसैयबिना॥स
लोकनहीजाय॥३७॥चौपई॥छ
ठाकहीयनिवैरा जातेजमसौ
वेरा सबघटमाहीजाकौजानो हो
सोहीदरपनजनमानो ३८ सुषदाई
वहीकौभावे जनसरूपहोयअ
कावे सीतलहोयसतिमत

होयरमताकौपावै ३९ ॥ दोहा ॥ कहै
कबीर केचनकाचयेकसम ३२ मि
सबयेक ॥ ज्ञानावनत्र्यातै येकन
नकीटेका ४० ॥ चौपई ॥ सतनामह
जजोगहैनिका सहजभावतेजमम
जीता सहजेहोयप्रेमउपजावै पाचै
बसिकरिसहजसेनावे ४१ नहैस
से होयनामसुनावे सोभोसागरब
रिनआवे नहैसंसे होवेजोकोई संसै
कालडसैहैसोई ४२ होयनिरतेप
काकुनहीलागै सतसीतगहैअतर
जागै अंतरजागिहोयडसीयारा क
हैकबीरसहजमतसारा ४३ कहैक
बीरजगाकूवाजानै सतनामततसा
रजमाने सहजेसहजप्रगटजबहो
इ सहजेहोवेनामसमोई ४४ आव
वोसुन्नजोगहै नीका जोलगजगल
गेनहीफीका सुन्नहीतेउपजेउगरा
जा सुन्नहीमेंखासासुनिगाजा ४५

तौलौं नावैकोई अनघलषैपि
हीहोई आदिपुरषसौंजोलौंन
नतिरिकैबाहिरआवै ४६
रतिनैसुन्यसमावै सहज
रपावै यहअष्टांगजोगहै
नीकरैविचार॥४७॥दो
॥कबीरग्यानबिबेषबिचारि
सीलसंतोषसमाय नामगहैं
सैरहे सहजसुन्यघरपाय ४८ कहै
कबीरसुन्यसनेहीहोयरहो जगसौंर
स सुषसागरमेंवासकीया सतनो
बरसासा॥४९॥इतिश्री अष्टांगजोग
संपूर्णः ग्रंथ १५ सबकी गणती॥२६
अथ ग्रंथसष्टी लेइ लिष्यते॥ धर्मदि
सजनाचा॥ चौपई॥ हेग्यानी तुमग्यान
समोनां तुमसबहीकोउतपतिजांनो
घीपरवांनकहोसमझाई कैजोज
नप्रथवीनिरमाई १ जोनमांडअ
वीमेंआई सोसबउतपति

कैसें मईश्रू कामकीवोनी कैसें मईस॰
कैनतुतपोनी २ कैसें नयोकदेपरवं
नो कैसें नयेनी२ निरबोनी जहोलग
येनबककेवेबयोनी मबनुतपतितुम॰
मायोमोनी ३ श्रूलसमेर कोकदेप्र
वोनी कैजोज्तनुलेरवुनिवोनी ४
हेवोनीखिनतीकक्क मंकाकदे
बिवेय तुमसेदीसतनोककेनिजक
रिना वोनेय ५ ज्योनी मरव
हेबनेनिननिवृछिडुप्योनी
मबनेनकेवेबयोनी सककनेवमजो
जतनोनी नामनेरपुपेवयोपानी बेव
श्रूकस्मयदश्रूकासकनाया केजीत
तमबदबायुतछिमाया निमेतमबद
नदकेहोनतवोनी ६ किंचतमबदवे
रबनिवोनी ७ किंचतमबदवे
मोकनेन्हो मनीतमपूस्खजिनाछि
न्हो श्रूकनेमपूश्रूकासजोवे
मेकेवेजतवयुरकरितीन्हो ८

रिदीन्हो तेजतेंकहे
प्रगटचीन्हा करतेंनीरमिअतिकरि
लीन्हो पानीतेजीवनुतिपनिकीन्हो
९ सबतनपतिआकासतेंआई प्र
मिदासमैतोहिलिषाई नाभिकचल
मेंब्रह्मरहेऊ तिनपृथिवीविस्तारव
नेऊ १० पंचासकोटिजोजनपर
माना यहीपृथिवीकोकहुठिकाना
पृथिवीमधिसुमेरठिकाना सुमेरऊप
रिवेकुंठहिवाना ११ अबसुमेरकोक
हूपरिमाना चोरासीलाषजोजनमे
मोहिगाडाना चौरासीलाषजोजनलें
परिवहराई सबहीऊकलिकहूंसम
फाई १२ अैसेंसुमेरपरबतहैभाई स
बकरिभेदकहूंसमफाई तासुमेरप
रिअहमअगोधारा ताकोधरमुनिकहे
बिचारा १३ कोनहिकोनसुर्गहैभाई
ताकरभेदकहौंसमफाई हेमावंतस
गयेकवयेऊ

कैसैंभई अकासकीबांनी कैसैंभईस
कस्तउतपांनी २ कैसैंभयोकेद्रोपर
नो कैसैंभयोनीरनिरबांनी जहांतग
येसबकहोवषांनी सबउतपतिउम
भायोगषांनी ३ असुमेरकोकहोअ
बांनो केजोजतसुमेरपुनिबांनी ४
हेषांनीबिनतीकरुं मैंकोकहे
बिबेक तुमभेदीसतलोककेतिनके
रिभायोलेष ५
हैधर्मनिमतिहूछिउरुषांनी सब
भेदमैंकहोंबषांनो सकलममजानी
उतपांनी नांममोरपुषेधयोगषांनी
अषद्दसबदअकासबनाया बंकी
तसबदबायुउपिआया केजीतस
बदकेहोउतपांनी निमेतसबदानी
रहुनिबांनी ७ किंचतसबदचंड
मांकीन्हां समीतसहूसरजिगहिलो
न्हो अकहसहूअकासजोकीन्हां
तोहितैंबायुप्रगटकरिलीन्हो ८ बा

तैतेजसरजिकरिदीन्हा तेजतैंकं
गारचीन्हा करतैंनीरमिश्रतिकरि
नीन्हा पानीतैजीवजुतिपनि
सबजुतपतिश्राकासतैंश्राई
तासमैतोहिनिषाई नाभिकेचरन
श्रसुरहेकु तिनप्रथिवीबिस्तारब
खेक १० पंचासकोटिजोजनपर
यहीप्रथिवीकोकहुति
बीमधिसुमेरतिकाना
बैकुंठरहितोना ११ श्रबसुमेरको
परिमाना चौरासीलाषजोजनमे
डाना चौरासीलाषजोजनउं
चिहराई सबहीउकतिकहुंसम
१२ श्रैसैसुमेरपरबतहैभाई
करिभेदकहुंसमभाई तासुमेरप
श्रष्टमार्गधारा ताकोधरमुनिकहे
१३ कौनहिकौनसुर्गहैभाई
ताकरभेदकहौंसमझाई हेमावंतसु
येकवयेकै हेमावंतसुर्गनिर्मियेरौ

१४ तीत्नानांमस्वर्गायेकवयेते नील
नांमद्रुजानिरमयेते स्वातीनांमतीजो
हैभाई ऊचनांमचौथानिमाई १५ मै
खनांमपंचमांडिराई छठवांगंधनांम
निरमाई मंदोनांमसपतमांस्राई मह
नांमस्वर्गअस्टमांनाई १६ येतेअस्ट
स्वर्गपरवांनां धर्मदासतुमनिजकै
मांनां स्तुरगस्तुरगाकितअंतर आई
सोसबभेदकहुअरथाई १७ त
छितछिजोजनअंतराई सोमैभेद
कहुंसमजाई सुमेरपरबतपरिब
धजभाई तहांकोबिलासकहुसम
जाई १८ जगिदांनवहांनित्यकरा
ई गनगंडफमुनितहांरहाई पुन्यप
धांनरहतहैंभाई पापनयेकरतीव
हराई १९ सुमेरकेदछिनजंबुद्वि
पुआई लछिजोजनबिस्तारहाई
ताकेफेरनहसतीसामांनां धरमदा
समैंकहूंनिधांनां २० ताफेरनकौ

सचुवतहैभाई डारपालहोयनीचो
डारपालहोयमुनमसावे सोर
समानसरोवर आवे २१ तारससो
उलपानी सबकोईक
होनी तारसपरैतैं कंचनधाता
कहूमैंसबविख्याता २२ जं
बजंबुदीपहैभाई जमराजातहोबा
कराई पूरबदिसमथ्यैखंडरहाई
करनातहादीनहितहाई २३ इना
तखंडकहूपरवाना रामखंडहैता
विकाना हरनाखंडहवैसहिदाना
भद्रवनिखंडसहीअसथाना २४
केतमालपुनिखंडकहाना उत्तर
कुरुकहोपरवाना नौउखंडमैंकहे
बखाना धर्मदासतुमनिजिकरिजो
२५ अबसातदीपकरिकहूवि
वाना लोकबेदसबकहै
नकौनवहदीपहैभाई
समझाई रहै कहै

१४ नीलनांमम्रगीयेकठयेते नील
नांमदुजानिरमयेते स्वातीनांमतीजी
हैमाई जेचनामचौथ्यानिमाई १५ मै
लनोमपंचमांडिलाई छठवांगांधनाम
निरमाई मंदोनांमसपतमांश्राई मह
नांमम्रगीअष्टमांनाई १६ येतीअष्ट
सुरगपरवांनो धर्मदासतुमनिजकै
मांनो स्युरगसुरगकितअंतर आई
सोसबमेहकहुं अरथाई १७ त
छिलछिजोजनअंतराई सोमैमेद
कहुंसमजाई सुमेरपरबतपरिब
धजमाई तहांकोबिलासकहुंसम
जाई १८ जगिदांनवहांनित्यकर
ई गनगांडफमुनितहांरहाई पुन्यप
धांनरहतहैंमाई पापनयेकरतीठ
हराई १९ सुमेरकेदछिनजंबुदि
पुआई लाछिजोजनबिस्तारहाई
ताकेफलनहसतीसांमांनो धरमद
समैंकहुंनिधांनो २० ताफलनको

रस चुवत है भाई डारपात होय नीचो
श्राई डारपात होय मुनसमावे मोर
समान सरोवर श्रावे २१ तारसेसो
जमनो तत पोनी सब कोई कहै पाप
कीहोनी तारसपरते कचन धाता तु
मस कहु मैं सब बिख्याता २२ जंबुत
तजंबुदीप है भाई जमराजा तहां बा
सकराई पूरबदिस मध्येषंड रहाई
करतो तहा दीनहि ठाई २३ इना ब
तषंड कहु परवाना रामषंड है ता
हीविकौना हरतो षंड हवे सहिदाना
भद्रवति षंड सही श्रसथाना २४
केतमाल पुनि षंड कहोना नतफ
षंड कहौ परवाना नौउषंड मैं कहे
बषांनी धर्मदास तुम निजि करिजा
नी २५ श्रबसात दीप करि कहुं वि
कोना लोक बेद सब कहै बषांना कौ
नकौन चह दीप है भाई ताकरि भेद क
हौ समझाई २६

दासा द्वीपनोमेमैकाई प्रकासा प्रथम
सिद्धलद्वीपलयोनो पहेलाक्लद्वीपइस
र असंख्यानो २७ तीसरासि:लमलिद्दी
पलिद्योनो चौथापुनिकुसद्वीपबयानो
उतकाद्वीपए बमठहेरोनो जंबूद्वीप
मतहमोनोनं २८ तहां श्रायहमद्वी:
मोयोनो सपतमो क्षारं द्विद्वीपबंधानो
येतोसपतद्वीकहिदीन्हो श्रबइनमे
इकहैमैंची ल्हो २७ कोटिजोजनगं
बूद्वीपबनोवा तहांपुनिमारसमुद्रि
होवा मारसमुद्र ब्लिब्लिबसैजोगाई जं
बूद्वीपहैतोहिकेरनाई ३० तीनकोटि
जोजनपरयोनो द्वीपपरनबहहवेसवि
होनो तहांवहांइक्षुसमुद्ररहाई जो
ननामहवे बकेराई ३१ पंचकोटि
जनजोरहिया बहबिषिसि:लमलि
वहिक्रहीया महासागरतहांनिर
बैक:नाम जोजनहैमाई ३२ सात
हिजोजनकुसकोनो घृतसागरमें

बधांनां ऊंचदीपनवकोटिनिधांनां
तहांषीरसागरपरवांनां बाराकोटि
कजोकहीया तहांदधिसागरनिरम
या ३२ तेराकोटिपुष्करनिमांई श्रु
यसागरहैभाई सातदीपमेंक है
बधांनां तिनकेनामकहै अस्थांनां र
त्नमतीदीपगरड़ अस्थांनां गरुड़
जत्तहांकरैनिधांनां॥ ३४॥ दोहा॥
कबीरधर्मदाससंू ऐसवकरिक
सातदीपसागरसपत॥ सब
अ्रसथांनां रहै॥ चोपई॥ ततमनि
रिमनआसनकीन्हां मनकेपरिपव
नहिदीनां पवनकेपरिपातालदि
पातालकेपरितेजनिरमावा ३५
जकेकुपरिसतगहिदीनां सतकुप
सनधरमकीनां धर्मकेऊपरि
जटीन्हा रजकेपरिकुर्मआसन
८ कुर्मापरिजलनारिनिधांनां क
रायणरूपबधांनां पुर्षप्रतापसक

स्तहमजोंनां धर्मदासतुमनिजिकरिमा
नां ३ए कुर्मविसतारकितनोंहैंमा
ई सोसबभेदकेहोसमझाइ कहैंक
बीरसुनिधर्मनिबांनी सर्वभेदमैंक
हूंबषांनी ६० जोजनकोटिमुखहैं
भाइ कोटिपचीसजोपीठिरहाई को
टिपचीसकूंपिटभाइ जोजनकोटि
कीग्रीवांरहाई ६१ कोटिसातकोम
स्तकठिटाइ सो सब भेदकहूं श्रवण
ई कोटिकोटिकेनैननिदांना जोज
नकोटिकीजीभहीजाना ६२ च्यारि
च्यारिकोटिजोजनजांना कुर्मकेच्या
रयूपावनिथांना कोटिकोटिजोजन
उनमांनां कुर्मकोदसु श्रोगुरीजाना
६३ [illegible] कहैंकबीरधर्मदाससूंक
हूंबचननिजिसारउपीसहूनोंकुरम
हेपुषकेरभंडार ६४ [illegible] कहैं
बचननाघूनिजिसहंना तुमसूंभेदकहैं
समतूला कुर्मकोमुषपूर्वहिसश्राई

६५
उत्तरदी
चारूदिसचारूपगम्रा
येताकूमकेरपरवाना जिनदेष्यासो
६६ कूमकीपीठिम्राष्ट
तिनकोभेदमैकहूंरिमा
तिनकीसंष्याकेतक म्राई धवम
६७ कहैकवीरसु
दासा सकलभेदमैकरू प
प्रथमतोम्राहितोपिंडरीपाई
ताकोभेदकहूंम्ररथाइ ६८ तीस
जोजनकेचा पेडालम्ब
चो
म्राशिताषुभेदसुनोचित्तला
।६१~
मोहिदेहोल
मकहोम्रनुसारा॥५०॥कवी
रवैवा च॥साठिकोटिजोजनविस्तारा
म्रैसेम्रातुलबेवारा म्रावृदिसाकूम

चापिरहाई प्रथवीकेरिहुपानहैमाई ५
१ किंचितकूर्मजोतुलनैटैमाई तरनध
रतीऊपरिहोय जाई कूर्मकीपीठिमस
बैवाई ताकैमस्तकसहश्रडिठाई ५२
होयसहस्रनेतरजोजोनी यहीबिधिपु
निकहुबषानी पंडहकोटिजोजनके
लेषा इकइकफन बिस्तारबिबेषा ५
३ सेसोपरिसूकरबैवारा सबप्रथवी
कोदीनोंमारा बराहडाटपरिप्रथवी
माई काहेमांटीनागिरवाई ५४ ऐ
सेंप्रथवीदेषिहोजोनी माषोंबचनले
होपहिचानी प्रहकुलीपरबतनिरमाई
तिनकरपरगाटतोमडिठाई ५५ रत
नैचलनपरबतइकमाई हजादेमाच
लनजुरहाई तीजाकरबिजीयाचल
नोजै चौथ्यानदीयाचलनजुरहोजै ५६
ऋसताचलनपंचमदेमाई मतीयागि
रछठेवांनिरमाई सतवांषानदांननिरम
ई हरमदपरबतऋष्टमवांजै ५७ ऋ

कुलीपरवतपरवोंना धर्मनिजुमसै
कहेनिधोंना जलकेमधिरसातलवा
। तेहिमध्येपातालप्रकासा ५८ म
तालनालिअनूसारी जुगकु ती
कहेपूकारी रिलिडंडमभावेंप
वोंनो चालिसनोमप्रथमजुगजोंनो
ए अलधिनोमदूजापदिचोंनो तीस
नोमदधीचपरवोंनो जुलिमनोमजुग
भाषा दछिकनोमपांचवोंरावों
अंधनोमछवर्वोनिरमांडै प्रेमन
मजुगसतवोंफिटाडै कैयनोमअष्टम
निरमोवा आडैनोमनौमावहरावा
२ लंगोसनोमजुगदसवोंवोंनी गोषदजु
गयेकादसजोंनी गोचनोमजुगद्वादस
गनों त्रयोदसतुंमनोमजुगमेंनों हिर
लधनोमचतुरादसवोंनी आदिनोम
पंचादसजोंनी तिवरीनोमजुगषोडस
वोंनो त्रिविधिनोमजुगसत्रहवयोंन
२ अष्टादसत्रिकटीवहरोंनो उगा

सावमतीतसुमजाोनी नामनिकोतबीस
वोवानी इक्कीसावदीजाजानी ६४
अवबुद्धनामबाईसपरवानी सधीर
नामतेईसवोगानी घोरनाम चौबिस
वामानी सोसबतुमस्टेकहेवपानी ६
५ नामपसेवपचीसवहराइ मेघसेव
षटविसनिरमाई तिनवनाम सतबीस
बषानी बटछुनाम अवबीसागनी
६६ अमिलनामगुणतिसनिरमावा
अव्वातिजुगतिसवावहावा घटनी
मडकतिसवाकीन्हा कुन्हनावेति
सवाचीन्हा ६७ नुन्हनामतेतीसवा
मपेठे ठेकिनामचोतीसवाव ६८ पेठे
पैतीसजुजनामबमानी बटतीसाअ
सुनामाजानी ६८ [illegible] कहैकबीरधी
रमदासस् जुग छतीसपरवानं येताजु
गहमनामिठे कहेननामनिधान ६८ए
भोगाजुगछतीसहै कहैकबीरसमजा
ये निजकरिधरमनिमानीयो मैनाषे

ऐपरी। अब आगे स
धर्मदास देखु नियौ को
चार पुरी सुमेर के बाई तिन कर मे
कहूं अरथाई ७१ पूर्बदिस अमरा
तेहि बिस्ता कहूं तोहि
चौबीस जोजन सहस्र बिसतारा
७२ तहां कोरा
देव तैतीस कोटि बैठा
सहस्र अठ्यासी रषी सुर बासा देव दे
७३ तेहि पुर काम
ऐरापति हाथी तेही द्वारा
पापरती
७४ देवकन्या तहां ह
दुंदुभि तपात करत तहां
रंभा निरत करै तहकारा
७५ ऐसा इन्द्र नगर पर
जोनो भाषि कहे तु मनुमैं सु जोनो

सावसतीतगुराजोनो नोमनिकोतबीस
वोवोनी इकबीसाबटीजाजोनी ६५
अदबुदनामबाईसपरवोनो संधीर
नोमतेईसवोवातो धेरनाम चौबिस
वोमोना सोसबतुमस्तकहेवषोना ६
५ नोमपसेवपचीसवहराई मेवसेव
षटबिसनिरमाई तिनवनोमसतबीस
बषोनो बटछुनामअठबीसागना
६६ अमितनामगुणतिसनिरमोवा
अबालिजुगतिसवोवहाना षटनो
मइकतिसवोकीन्हा कुन्हनोबेति
सवोचीन्हा ६७ तुन्हनामतेतीसवो
समेते तेक्तिनोमचोतीसवोव पेते
पेतीसजजनामबषोनी षटतीसाअ
सुनामाजोनी ६८ [illegible] कहैकबीरध
रमदासस जुमछतीसपरवोन येताजु
गहमसामिते कहेतनामनिधान ६९
मोगाजुगछतीसहै कहैकबीरसमझा
ये निजकरिधर मनिमांनीयो मैनाषे

चित्तनाये [illegible]
बकरूंबमांनो [illegible]
नो चासूंसु [illegible]
दकहुंसत्यह [illegible]
ती ऋवतीत्राह [illegible]
नाई चोबीसजो [illegible]
धर्मतोहिकहो [illegible]
जम्बुनिदुडकोह [illegible]
ई महष्वस्थानं [illegible]
वंगताकरैंति [illegible]
वेतुबिस्तारा [illegible]
कलनपहुहको कहंदिकनां [illegible]
नहीरहैंनिम्रांनो ७४ देवकेन्यांतक्हांह
रथबिसेषा इंद्रप्रतपालनकरतन्तहां
देषा रंभानिरंतकरैततकारा सोभावहं
तरंगतहांधारा ७५ ऐसोंइहनेगरपर
बोनो भाविकहेतुम्हसुनैसुजोनो दषि
दिसिजमपुरीसुवोरा जोजनयेकस्
हस्रबिस्तारा ७६ तहांजम

भाई जेमकेनामकहे समझाई बेब
ननामजमहै परमाना कसीनामजम
कहे बघोतो ७७ नीननामजमना
धूमाई सुमनामजमटेंचीन्हाई स्र
स्तनामजेमकहे बिचारा परतिनाम
जमकहे बरीयारा ७८ श्रेपनामज
ममहाबिकारा जोजीवश्रेपधुपक
रिडारा ७९ धनामजमजीवमतावे
बकारनामजमलेममावे ७९ बिल
ननामजमकरे चुर्णाई मुदगरनामज
म हूंद ढवाने जोकोईजीवसबटूम
मावे करै हूंदतहांटिकननपावे ८०
नामकुटारजमहै अधिकारा नामनु
संडजमहै बरीयारा करिबरीयारसो
जीवमुनावे हाथबसनलेजीवबिका
वे ८१ हडफोडाजमसासतिदेई क
रिसासतिजीवहिहतिलेई सैसेनामजम
हैबिकारा जीवनुनावनसंभारा ८२
परमनामजमहै अबिकारी स्रगतिन

जमअगनिजचारी अगनिजचारिदे
देई येहविधिजीव हद बिधुलिहे
८३ नासबिकेदरकरिबिकराई हा
भावकरिजीवकेलिवाई जोगपेनी
सबदसमावे भीतरिपेविरिडुसीत
वे ८४ कालनामकलपतिहेड हि
रिरहेसमेई ग्यानीहायकरिक
टउचावे करतकपटजमदावदिषा
८५ निद्रानांमजमनिद्राओनी गुर
सावननिद्रावांनी घातकरेघुनि
चरलेई मेटिगुरजीवजमकेदेई ८
नामअहंजमअहंपसारा लयत
मजमकरहिबिकारा नामजा
बरीयारा चित्रगुपतजमहेसि
दारा ८७ दूतनोंजमपुरकोपवोनो
सबभेदमेंकहोबषांनी दषिनदिसिब
नावतीभाई तहांकोराजकुमेरकरा
८८ पंचासतजोजनबिस्तारा ता
निसुनोबिचारा मेघबरषातहां

५ पैभाई कोटिन्ह आए वैसे पर हाई ७९
।० नदेवकी आयस होई तबहीं मैं पुनि
रसैसोई येतो बहू न पुरी परवांनो जो
पासो कहा बषांना ८० सो रा सहस्र
जन तेन मांनो पुरी तने का अति सुष
नो तहां देवता राज कराई जगि अ
मेद होत है भाई ८१ पुरी तेन का धरम
रहाई पापनि का रिरहु रिबहाई इतनी
चारि पुरी परवांना धरमदास तुम नि
करि मांना ८२ उदीयाचल गिरते
करावे सो सुमेर की ओटि रहावे अस
ता चैने मैं अस्त करावे तास भेद बिर
लाजन पावे ८३ ॥ दोहा ॥ कहै कबीर
धरमदास सूं ॥ तुमसूं कहूं बिबेष
रचलन मैं भाषिहूं ॥ सत्य सत्य करि नै
ष ८४ ॥ चौपई ॥ सूरज चलन कहूं अ
र्थाइ ताकरि मरम न जान्यो जाई नरकी
पलक ये कज घराई दोइ सहस्र जो ज
न चलि जाई ८५ सूरज चलन कहूं मैं

तोरी धरमनिजोनितेहोनिजसोही जो
जतनतहिरध्यजचोरहाई श्रवरकुमेरसु
नोतुमभाई ए६ पुरीउतेकाजबरथ
जाई दोयपहरिदिनतबरिचढाई ये
तासरचलनगतिसोई बिबिधि भांति
करिनाधातोरी ए७ धरमदासउवा
च॥धरमदासतबोरेनिहोरा॥ भेदश्राः
कासकहोबदीछोरा॥कबीरउवाच॥
धरमदासतुमपूछिउनेपा सोमेतुमसे
कहूंबिबेपा ए८ धरती श्रकासको
भेदबतावें तुमसेधरनिकहूनदुरावें
श्रटुतालीसनहिपदमा तोजानु छ
बचोबीसजतरिश्रद बसानु ए ए को
टिसतारणवेपसबिनाषा सहश्रपचा
शवइतनोश्राकासा सरजिकेरकहूंप
रवांना सोइभेदतुमसुनोनिघाना १००
नोमितेजितनोतेजरहाई
कहूं श्रस्थाई जोजनतहिउतेचौदैभा
ई जोजनतहिबिस्तारहोई १०१
मंडत्ते कहुविकोना

तेग्रवांनो सूर्जितैलनछि जोजनचंद्रग्रा
ई इतनौहीबिस्तारहै भाई १२ चंद्रसू
मंगललनूछि जोजनभाई इतनौहीबिस
तारहै भाई मंगलसूबुधिजोजनलाष
इतनौहीबिसतारहु भाषा १३ बिसपत
बुधसूलनछि जोजननाकै इतनौहीबि
सतारहाकै गुरुतैसुक्र लछि जोजन
भाई इतनौहीबिस्तारहै भाई १४ सुक्रतै
लछिजोजनभनि ग्राई इतनौहीबिस्ता
रहै भाई सनिचरसेलछिजोजनग्राई
तहां ब्रह्माकीपुरीरहाई ब्रह्मापुरसजो
जनलाषा ग्रागैसिवकीपुरीजुराषा १५
सिवपुरीसूं ग्रागै चलिजाई बिस्नपुरीलं
छिजोजनग्राई बिसनपुरीमैधरमरब
ई पापमारिकैहरिबहाई १६ बिसनसं
जोजनलाषा तहांवांसमरूसिसुमाष
१७ लषलषजोजनग्रंतररहाई तिन
परिग्रनंतपंथहैभाई ग्रनंतपरिजटा
पंषग्राई जटापंषिपरिगरुडुरहाई १
०८ गरुडपंषिपरिसुंन्यरहाई सुंन्यौपरि

दमासनआई परमोपरिजासनगा।
रूडोपरिब्रासनभाई १०९ ब्रसास
केआगैजोई ताकुपरिसिघासनहो
सिंघासनपरियेकहैअंडे अंडकैऊ
रियेकहैडंडे ११० डंडकेऊपरिधजार
तेहिऊपरजोसुन्यकहाई तेजक
वात्हासुन्यकहाई सुबरनपिंजगासो
बिछाई १११ अजबपुर्षतहांहेप
चांनो बिसनसरूपीआपनिधोनाहे
बेहीसेअगमबिकोनो बिरलाहेसा
बधांनो ११२ सबहीदेवतामनत्रस
रूपसरूपकछुनहीवेही सबेनि
कपुर्षपुरांना केवलपुरसअर्ष
तजांना॥११३॥दोहा॥कहैकबीरधरम
सुनिसुनौ तुमसौकहूंपुकारि॥ अबभाषु
सावलौ॥ हिरदैकरिहू बिचारि॥११४॥
जचनलाप्रथमआदिबिसनही बिसन
रानीसुन्या सुन्याकोपुत्रअषं अषं
पुत्रसिवलिंग ११५ सिव

त्रिवुधि त्रिवुधिकीरांनीजलसमुद्र
लसमुद्राकोपुत्रअतिल अतिब
रांनीसावत्री ११६ सावत्रीकोपुत्रमह
सुद महासुदकीरांनीसुलहैमकी सु
लहमकीकोपुत्रईसुर ईसुरकीरांनी
त्रिपुरासकी त्रिपुरसकीकोपुत्रकेसो
केसोकीरांनीगोतमदेवी गोतमदेवी
कोपुत्रवेवैरिष वेवैरिषकीरांनीहिर
मरदेवी ११८ हिरंमरदेवीकोपुत्रसोम
रिष सोमरिषकीरांनीमधिमा मधिमा
कोपुत्रब्रह्मा ब्रह्माकीरांनीवंधनी
११९ वंधनीकेपुत्रकासिव कासिव
नीचोदह ताकीउतपतिसकसमार
प्रथमरांनीउद्यानकी उद्यानकके
पुत्रतेतीसकोटिदेवता दुसरीरांनीदेव
त्री देवत्रीकेपुत्रदैतअरदानव तीस
रीरांनीकादैत १२१ कादैतकेपुत्रअ
ष्टकुलीनाग चोथीरांनीविनता विन
ताकेपुत्रतीन अरुन गरुड सकी १२

पंचईरानीसुबरनभजा सुबरनभजाके
पुत्रनिछत्र छठमीरानीसोमवती सो
मवतीकेपुत्र चंद्रमा १२३ सपतमरा
नीसुलतानदेवी सुलतानदेवीको
पुत्रसुरजि अष्टमीरानीकुसमाल कु
समालकेपुत्र नोग्रह १२४ नवमी
रानीमवहान ताकेपुत्रख्यानवे को
टमेवमाला दसमीरानीपदमावती
ताकेपुत्रअठ्यासी सहस्र रिखर
१२५ ग्यारहीरानीरूपावती ताके
पुत्रअवारा भारवनासपती बारईरा
नीजोनता ताकीपुत्री चोसठिजोग
जोगनी १२६ तेरहीरानीरूपसाला
ताकेपुत्रच्यारि पांती च्यारि बानी चो
दईरानी अंबका ताकेपुत्र अंधका
कूपा॥१२७॥येतिवंसावली॥ चौपई॥
अवसतजुग करकऊं वषांनो लष
सालासहस्र अठ्ठाइसजांनो अवतार
च्यारसतजुगमैंलये

नरसिंघारयेत्री ॥ १२८ ॥ सुर्जिपर्वेतसह
असुरतीसा ॥ चंद्रकेपर्वसह अचा
तीसा ॥ मानसतानेइकीसप्रमाना ॥ अ
रवलिबरस्कनाथकी जांना ॥ १२९ ॥ स
त्यहीसत्यबातपुवांना ॥ सत्यचालसो
चलहीनिधांना ॥ सोरठा ॥ सत्यमातसत
हीपिता ॥ असतनहीकोईगये ॥ कहे
कबीरधर्मदासस ॥ सबयेकहीमन
ये ॥ १३० ॥ चोपई ॥ असत्रीकरसतयेक
हीबारा तीर्थधामकहीयेनेमधार
नसांदेबीकहीयेबुसांमांनी पुनिजो
बीसवाबीसबघांनी १३१ पापनही
जोयेकोगाई सबकोईनावेसीसबना
ई येकबारजोबोवेनाई सातहीबार
तुलेसोजाई १३२ सतजुगमेराजाद
सनाई तिनकरनामकंकुआयाई
श्यामसमानधातापुवांनां राजाकुसम
दुसराजांना १३३ भीमराजतीजाजो
बघांना इंद्रमोहचौथापुवांना पंच

मवारिराजाबडकीनों सबहीऽघ
वीऽदयाकरिचीन्हों १२४ घटहरा
जाम्रिपुरवाई सपतमहिरनोंकुस
वडराई जाकीसमसरनाहैंसन्हारी
राजकेपसैकहपुकारी १२५ सबे
देसजितकीयाउजारी उतोनपाल्त
वमाबलकारी दसवोबूराजादसरे
घाइतनाराजासतजुगपेघा १२६ द
सराजासतजुगप्रमोनो अववेताको
कहुवषोनो सहस्रछिनवबाराव
घजोनो अवतारतीष्ठितिथनवेतिवो
नो १२७ वांकनपरसरामश्रीरामो ये
अवतारकहेउसैन्येना सपेवसोन्तन
हेश्रमयेउ चेउपवेसदयतीसोइद
येउ १२८ सोतघताल चोदहपरवो
नो वर्षेहजारदसआयुजोनो अस्व
मरहवारतकहेहे औरेवातकहे
जोहोई १२९ कुन्नजोविसवापडक
होई विसवापोनजुपापरहई

कहेबोरनजोजोनी ग्रुगग्रुगबालक
हुंमें बोनी १४० येकवारबोवैजोभा
ई तीनहिवारनुणेतेजाई राजावी
तहां भयेभाई तिनकरभेदकहेस
मकाई १४१ प्रथमराजारघुग्रतिनांके
हजाघुंधमालनतेहिंगाके राजाग्रंधक
कहुंबषांनो राजाग्रीछितकहुमहि
द्वांना १४२ राजालरकुलनकहुबड़रा
ई राजाहिरचंदसतबडभाई राजारो
हिकेंकहुबडभारा रुकमांगदमैंकहुं
पुकारा १४३ धरमांगदराजाप्रबोनो
राजाबलिमैंकहुंबषांना राजासतीत
कहुंप्रवोनो राजासंत्रीतकहु
बषांना १४४ राजादिलीपकहुंब
डराई राजानलीसकहुंबडभाई रा
जाभूपरकहुंप्रचेडा राजाप्रजाडुप
ग्रतिबलवंडा १४५ राजाबिश्वामि
हुग्रपारा ग्रजेपालमैंकहुंपुकारा
राजादसरथहेबडभा री राजाराम

चंड्अधिकारी १४६ राजाबैणिचक्कै
नयेके छदवनिराजाविसवांवयेतै
येराजात्रेतापरचांनी अबद्वापरकोक
हूंबर्षानी १४७ वर्षआवंनमचौस
विहजारा होयेअवतारमयेनिरधारा
कूमभुधहोयेनांमकहेकै बारेहजा
रसहरपर्वमयेके १४८ चंडपर्ववीसह
जारवऐतै मानसमसाततालत्रिमयेतै
आरवलनवरसहजारवर्षानी असत्री
परसतवारत्रिमोनी १४९ कुंभजोवि
मवाआववर्षानी बारेविसचापापधु
चांनी येकवारबोवेजमाई होयेवार
खुणितैजाई १५० तीयेदेवीकहियसु
रचंडा राजा भयपचीसप्रचंडा प्रथ
मराजसोमकवलवीरा राजापेड्अधि
कहैधीरा १५१ नलघोपजुकहोयेवस
भाई राजाजरजोधनवडराई राजाचं
डविजैसिरदारा राजासैनसमदअधि
भारा १५२ राजासेतुतकहूबर्षानी

कहेबोरनजोजोनी ज्रुगज्रुगबातक
हेमैं बोनी १४० येकबारबोवैजोभा
ई तीतहिबारतुंगैतैजाई राजाबीर
तहां भयेभाई तिनकर भेदकहेस
मझाई १४१ प्रथमराजारघुत्र्प्रतिनांके
ह्रजाधुंधमारतेहिंवोके राजात्र्प्रंधक
कहेबषांनी राजाप्रीछितकहेसहि
दोना १४२ राजातरकुरनकहेबडरा
ई राजाहिरचंदसतबडभाई राजारो
हेतकहेबडभारा रुकमांगदमैंवकजो
उकारा १४३ धरमांगदराजाप्रवांनी
राजाबलिमैंकहेबषांना राजासतीत
कहेप्रवांनं राजासंत्रीतकहे
बषांना १४४ राजादिलीपकहेब
डराई राजानलीसकहेबडभाई रा
जामुघरकहेप्रचंडा राजाप्रजाद्रुप
त्र्प्रतिबलबंडा १४५ राजाविश्वामि
त्र्प्रपारा त्र्प्रजैपालमैकहेप्रकारा
राजादसरथहेबडभारी राजाराम

अधिकारी १४६ राजाबेणिचक
मयेके प्रदवनिराजाविसबोवयेनें
राजात्रेतापरबोनो अवद्यापर
बषांनां १४७ बषेआवलनबचो
हजारा होयेअवतारमयेनिरधारा
अनुधदोयेनामकहेके बारेहजा
रूरपर्वमयेके १४८ चंद्रपवेवोस्त
ऐवे मानससातताल्लनिरमयेहे
बल्लबरसहजारबषांनां असत्री
सत्तबारत्रिमोनो १४९ पुन्यजोवि
बाआवबषांजी बारेविसवापापव
येकबारबोबेजेमाहे होयेवार
तैंजहि १५० तीथेदेवीकहियम
डा राजा मयपचीसप्रचंडा अप
मराजसोमकचलहीरा राजापडुअवि
कहेधीरा १५१ नलबापज्जुकर्हवक्क
माहे राजाजरनोबनवडराइ
अविजेसिरहारा राजासेन
मारा १५२ राजासंतत्तकहू

कहेबोनजोजोनी जुगजुगबातक
हूंमैंबोनी१४० येकबारबोवैजोभा
ई तीनहिवारनुणैतेजाई राजाबीन
तहांभयेभाई तिनकरभेदकहेस
मझाई १४१ प्रथमराजारघुश्रुतिनांक
हृजाघुंधमानतेहिनांके राजाकंधक
कहंबषांनां राजापीछितकहेसहि
तांना १४२ राजातरकुनकहबड्रा
ई राजाहिचंदसतबडभाई राजारी
हेकहंबडभारा हकमांगदमैंकहु
पुकारा १४३ धरमांगदराजापबांनां
राजाबलिमैंकहुंबषांना राजासतीन
कहंपवांनां राजासंत्रीतकहे
बषांना १४४ राजादिलीपकहूब
डराई राजानलीसकहंबडभाई रा
जामघरकहंपचेडा राजापजाकुप
श्रुतिबलबंडा १४५ राजाबिश्वमि
ह्श्रपारा श्रजैपालमैंकहूपुकारा
राजाहमरषहैबडभा री राजारांम

चंद्र अधिकारी १४६ राजा वैणि चक्रवै
नयेकै छद्वनि राजा बिसवांवयेर्त
येराजात्रेतापरवोनो अब द्वापरकोक
हूंवर्षानो १४७ वर्षे आठ नव चौस
ठिहजारा होये अवतार भयेनिरधारा
कृष्णबुधहोयेनामकहेकै बारेहजा
रसहस्रपर्वभयेकै १४८ चंद्रपर्वबीसह
जारवर्षे सोतसमसात ताल्लत्रिभयेर्ते
आरवेनवरसहजारवर्षानो असत्री
परसतबारत्रिसोनो १४९ पुंन्यजोवि
सवा आठवर्षानी बारेबिसवा पापव्
वांनी येकबारबोचैजनाई होयेवार
खुणितैजाई १५० तीर्थदेवीकहियस्
रचंडा राजा भयपचीसप्रचंडा छप्प
नराजसोमकवलनवीरा राजापट्ट अधि
कहेधीरा १५१ नलघोपर्जुकहोयेवड
भाई राजाजरजोधनवडराई राजाचं
डविजेसिरदारा राजासैंनसमद अति
भारा १५२ राजासंतुनकहूवर्षानी

हेबोतेनजाजाँनी जुगजुगबालके
मे बोनी १४० येकबारबोवेजोमा
तीनहिबारउँतेतेजाइ राजाबोत
हो मयेमाइ तिनबार मेदकेहेस
मजाइ १४१ प्रथमराजारघुस्रुतिनांके
हजाबुँधमानंतेहिजांके राजास्वँधके
कहे ब्रमाँनी राजाश्रीछितकहेसहि
वेंना १४२ राजातरुङ्गनकहेबडरा
ई राजाहिंतबेदमतबडमाइ राजारो
हकेहे बडमाता हकमागदमैकडु
पुजामा १४३ धरमोगदराजाप्रबोनी
राजाबलिमैकहेबमाँना राजासतील
कहे बबाँनी राजासंत्रीतकहे
बमाँनी १४४ राजाहिंनीपकहेब
हसाइ राजानलीलकहेबडमाइ
जाले मरकहेब्रचेडा राजाकुजाउ
त्रुतिबनबडा १४५ राजाबिश्वा
पुत्रुमा त्रैतेमानमैकहेपुकार
राजादमरपहेबडमा री राजा

चेड्ऋषिकारी १४६ राजाबैणि चकैचे
नये कै प्रद्वनिराजाविसबोवयेनै
येराजात्रेतापरबोनो अब द्वापरकोक
बषोनो १४७ बर्षआवनपचौस
होयेअवतारमयेनिरधारा
बारेहजा
१४८ चेड्पबेबीस्व
मोनससालतात्तनिरमयेरे
असत्री
१४९ पुन्यजोबि
सवाआवबषोनी बारेबिसवापापष्ट
येकबारबोचेजनाई होयेबार
१५० तीषेदेबीकहियम
डा राजा भयपचीसप्रचेडा प्रथ
राजापहऋषि
धीरा १५१
राजाजरजोधनबडराई राजाचे
राजासैनसमदऋति
१५२ राजासतुत्तकहु बषोनी

राजाचत्रभुजकहूंअतिग्यांती राजा
बिचत्रकहूंपरवीना राजामोरधज
सत्यबयांनी १५२ राजासत्रुसत्रुनके
राउ राजाहरिचंदसतकहाउ राजा
डुधीष्टरतधरमकोपूता राजाधनक
सारअरजुनबिष्याता १५४ राजाजु
गधीरकहूबडराई बीरभ्रदाराजा
अधिकाई राजा [illegible] श्रीछितअतिअ
धिकारा जनमेजयपुनिकहू सुवा
रा १५५ हनदतमहाबाहुपुनिब
हीये हंसधुजराजाबडनहीये राजाच
डबिजेअधिकारा राजाकरनपनुअ
तिनारा १५६ राजाभीमकहूअति
राउ राजाकेसमहाबडराउ इतनारा
जाहांपुरनमेउ धर्मनिचितसमकि
रितियउ १५७ अबकलिजुगाको
हूंबिचारा ज्यारिताचकती सहस
रा कलिजुगपर्बहते निरस येउ स
जिपर्बसहंस्रकहेउ १५८ चंदपर

सहेश्रहोयभाई मानसलालजोयेकहि
हाई साढातीन आपनैंहाथा लुसम्ं सै
दुकह्लिख्याता १५ए आहूबीसासो
परमोलो लिरत्नाकोई लुगातैतिथोलो
असत्रीपरलतहकईसबारा गंगासा
रतीर्थेविचारा १६० धर्मजोबिसबा
चारिकलाई कर्मरुधरमलुगातरहा
ई सोलाविसवापापअधिकाई बोवै
सातयेकलुगोंजाई।।१६१।।गुरुपुनिधूत
सिपक्हंजोली।।सिसपुनिधूतगुरुपहिबो
ली।।दोहा।।बापजोधूतपुत्रकुं।पुत्रजोधू
तहीबाप।बाहेकलीसबहीबहे।तातै
सहेसंताप।।१६२।। चौपई।।बहकलिजुग
कीकहानिकोली सकलमरमजोहम
हीजोली अलराजलकरनीमसुनोउं सर
बनामकहिकेसमजाउं १६३ सातल
बोहाएकहीयेबडराई सक्तिकेवारक
हीयेतिहवाई राजाइंद्रदवतिबडराउं
राजापोष्टहंसलेहिवाउं १६४

उनमांनी राजाअस्याकरनुतपांनी राजा
छदवनहैबडजांनी राजाबाहकेरनुत
पांनी १६५ राजाहरपहरनबडरांनी
राजाबिक्रमकररजधांनी राजामहद
पुतिकरूबषांनी राजापनकपारसर
जधांनी १६६ राजासुन्नपानकबड
राउ राजाछत्रपानरजवाउ राजानी
जबडेअधिकारा राजाछत्रधरकहि
सुवारा १६७ राजारोहितकहुउवांनी
राजाटहिककहूबषांना राजाबाक
हूउवांनी धरतराजमैकहूबषांनी १
६८ राजाइंद्रजीतपेकनांउ राजाचंद
कहूतेहिवांनु इतनेराजाकलिजुग
नयेउ धरमदासमैतुमसौंकहेउं १६९
औरराजागिनतीनहीं आवा धर्मदा
समैतोहिबतावा चौनागरुअपराध
जोकरई पहलीपितापुत्रजोमरई १
७० गुरनहीमानैआछिरनेई सोजीज
नआछिररहैतेई बिइबेदकीतिइ

ही तातेबिश्वबिस्वालहीभरही १
१ बिहीनबिपजोबेदहिहोई तातें
द्याजायेबिगोई कलिजुगत्रीया
तमेंजोनी श्रोरभेदमैंकहूंबघांनी
१२ कलिजुगत्रीयाबक्तलपुतिबक
घटमैबुधिस्त्रधिपुनिखरई गुरुके
चनसेंदूरिहावे गुरुकेबचनसु
बहावे १७३ अपनामननेंबकृत
ती गुरुभ्ररुसाधसवाजीवांनी
लेगारन्नेश्रापदिलधरई गारन
कीयेंनरकमैंपरई १७४ गुरुके
बिनमुक्तिनहोई कोटिनरपांन
किनकोरि बकुतगरनकायाको
ही गुरुसंकपटकरि नरकेमेंपर
१७५ रपांनीहोयेगारमनहीतोरा
गहेंसबदकाडोरा ब्राह्मनबेद
डाकरई क्षत्रीहोयेसंग्रामन
१७६ कलिजुगश्रेसीरीतहे
नीभ्रपतीकरेबडाई बा१

मातुपिवतावैं नरकंवरिवरिनीपमंग
वै १७७ कलिजुग ऐसी बातीपण
री पुत्रबापकूंदेहैगारी निंदाकरि
जुगावदोउनिकरई सबदअब्रजायेकान
होधरई १७८ कलिजुगऐसाकहेऊ
पूता बापछताउनिमरिहैपूता कलिजु
गकेमाबेचैवापू करिअभिमानजोप्पा
पेऊ १७९ येहीबिधिप्रानीनर्कमेंव
हेई करनीबिनानरकवहू सदेई सब
दपारनरकरनीकरिहै निश्चेप्रानीमो
जलतिरिहै १८० सहस्रमधेहोयइकै
ई सचूकीरितिपकरिहैसोई सहस्रम
धिकोइहैसरा सहस्रमधिपिंडहेश्रा
१८१ कोटिनमध्येजोगीहोई कोटिमध्
यप्रानीकोई ॥१८२॥ दोहा॥ कहेकबीर
धर्मदाससों॥सबकरकेहेविबेप॥व
चननहीमानीपरे॥ सोहिपुर्षकेपदेस॥
१८३॥ इतिश्री उग्रगीता संपूर्णं॥ग्रंथ
१६॥सबदकीगणती॥३०३३॥ ग्रंथसं

रघलांघ्रजी कीबुफनि॥गोपैनैबा
॥चौपई॥कौनसागुरुकौनसाचेला
नसारमताम्रकेला कौनसासिध
नसीसाघा कौनसाचूल्हकौनसीदिन
नम्रवनीकौनसुमरनी कौनसीकं
नसीकरनी कौनसातिलककौन
पा कौनसाम्रनहदबाजे बाजा
नसागुदडुकौनसाधागा कौनसुई
वन्दनागा कौनसीनगरीकौनसापंथा
नकमंडलकौनसीडीवी ३ कौन
सभोजनकरोवी कौनसाम्रासाकौ
साबासा कौनपुरसकलाकैरैतीवासा
नसाम्रासनकौनसाछला ४ कौन
मनित्तिम्रपरमभत्ता कौनसाडिमके
साफडा कौनकपाटकौनबुरंदा कै
सीसेलीकौनसीसीजी ५ कौनसुरघ
नेबेहुरगी कौनसीचकमककौ
चुरा कौनसाकायाकौनसापुरा कै
नसीपघरीकौनसाकाफा कौनसरेसर

जांमगीराघा कौनसाकुत्तककौनसी
छुरी कौनपुरसबोलैननरहरी कौनडै
राकौनसातोरा ७ कौनआडबंध
कौनलपेटा कौनबावरीकौनश्रंग
छा कौनसीडाडीकौनसीमुच्छा कौन
सापैंजोपुस्ता ८ कौनमेरमत्ताराघोनु
स्ता कौनपावडीकौनसीघुनी कौन
जगोटा बोलैमौनी कौनसावेदकौन
कत्तेबा ९ काकछुलेबा काकछुदेबा
कौनसीछुरीकौनसाम्पांन कौनसब
दलैबैठोदीवांन कौनतोबकौननगा
रा १० कौनपुरसबजावैनहारा कौन
करतालकौनसहनाई कौनलफीरी
कहेनभाई येताजोकोईजांनै ताहे
गोरषबंबपांनै ॥११॥ कबीरउवाच ॥ चौ
पई ॥ कैश्रवधु सबदगहसुरतिहेचेला
रमताराम जोरमेअकेला सिषहैसाष
सुत्तहैदिन्हा सारश्रवना १ सोहंगजुमर
नी ततहैतिकनामहछापा सबदही

अनहदबाजेबाजा गमहैगोदड़ अम
हैधागा ❀ सहजसुईलेसीवेणलागा
१३ कायासीनेगरीसतलोकसापंथा
ब्रह्मकमेहलमेत्याडीबी शंणपुरस
भोजनकरेगोबी सुमसा आसासुमसा
बासा १४ अनपेजहांकरेनोवासा हि
जेहेडेडा मरमहेऊडा चोदहकपाट
अकीसुखसेडा १५ सालकीसेलीसं
थोककीसीगी सतपुरसबोलेबेहारं
गी चित्तहैचकमकचोकाहैचुरा रमे
सकायरमजेसपुरा १६ प्रेमकीपथारी
रूमकाकाफा लोतमसरेसरजोमगी
राघा क्रोधहैकुत्तकछम्माहेचूरी सत
पुरसबोलेनंदरी १७ डरडोराकोपकी
पीन तकडतोडाफकडफैंटा अंमत्रा
डबंधमायालपेटा बरनबाबरीसरन
अं गोठा
करहेकुबरीपेजापुसता
राघोनसता फ

जांमगीराषा कौनसाकुत्तककौनसी
छुरी कौनपुरसबोलैनरहरी कौनडै
राकौनसातोरा ७ कौनश्राडबंध
कौनलपटा कौनबावरीकौनश्रंगो
छा कौनसीडाडीकौनसीमुछा कौन
सापैजोमुक्ता ८ कौनमेरमलाराघोत
त्ता कौनपाचडीकौनसीधुनी कौन
जगोटा बोलैमौनी कौनसावेदकौन
कतेबां ९ काकछुलेबा काकछुदेवे
कौनसीछुरीकौनसाम्यांन कौनसब
द लेबेठे वांन कौनतोबकौननगा
रा १० कौनपुरसबजावेनहारा कौन
करतालकौनसहनाई कौननफीरी
कहानमाई येताजोकोईजांनै ताहे
गोरषंबषांनै ११ ॥ कबीरदेवजी कौ
प्रर्द ॥ ॐ अवधु सबदगहसुरतिहै चेत
रमतारांमजोरमैं श्रकेला सिषहेसाध
मुक्तहै हिन्धा सारश्रवन १ सोहंगमुमर
नी ततहै तिकनांमरुछापा सबदही

अनहदबाजेबाजा गमहैगोहड्डआम
हैधामा सहजसुईनेसीतणनामा
१३ कायासीनगरीसतलोकसापघा
ब्रह्मकमेहलपुष्पाडीबी पांणपुरम
भोजनकरेगोबी सुखमाआसासुन्यसा
बासा १४ अलपेजहांकरेन बासा
जेहेडंडा भरमहैफंडा चोहलकपाट
अकीसुखलेडा १५ सीलकीसेलीसं
थाककीसीगी सतपुरसबोलेनहार
गी चितहैचकमकचोकाहैचुरा १६
सकायरनजेसपुरा १६ प्रेमकीपथ
रमकाकाफा नोतमसरेसरजांमगी
गाया क्रोधहैकुतकछम्याहेबूरी स
पुरसबोलेनहरी १७ डरहोराकोपक
पीन तकडलीडाफकडफेटा अम
डबंधमायालपेटा बरनबावरीसर
अ गोछा दयासोडाढीमुक्तिसोछा
करहैकुबरीपजापुसता ग्यानमेरम
गमोनमग फतेफावई

जांमगीराधा कौनसाकुत्तककौनसी
छुरी कौनपुरसबोलैनरहरी कौनडो
राकौंनसातोरा ७ कौनआडबंध
कौंनरतनपेटा कौनबावरीकौनअगे
छा कौनसीडाडीकौनसीमुछा कौन
सापैंजापुस्ता ८ कौनमेरमतारापोत
स्ता कौनपावडीकौनसीचुनी कौन
जगोटा बोलैमौनी कौनसाबेदकौन
कत्तेबा ए काकछुलेबा काकछुदेव
कौनसीछुरीकौनसाम्यान कौनसब
दलैबेवादीवान कौनतोबकौननगा
रा १० कौनपुरसबजावैनहारा कौन
करतालनकौनसहनाई कौनतफीरी
कहानभाई येताजोकोईजानै ताहे
गोरषंबपानै ॥ ११ ॥ कबीरउवाच ॥ बे
नती ॥ ॐअवधुसबदगहसुरतिहैचेला
रमतारामजोरमैंअकेला सिपहैसाष
मुलहैदिल्ला सारअवना १सोहंगमुमर
नी ततहैतिकनामहळापा सबदही

ागामी विदेहंस० २४ जपोनामनि
कोसदाईकबीर मिलैलोकवासाहै
कालपीर अभैवासजाकोसोहैअंतर
जामी विदेहंस० २५ हरैमलैमलाकरै
हे अनंदा नबारंनबारंम्हाकालफंदा
अभीरंग कौ हैस ललांती कबीरक
बीरकबीरनमामी २६ करीअरजदा
सानसुषलालनंदासा सुनोप्रभुमेरेकबी
रधरमदासा कबीरकृपालम्हासुष
धामी अोहंअोहंकबीरनमामी २७
कबीरग्रहकृदसकेकहैसुषमानी
सुनपफ़लैमलाप्रेमबांनी पहेलेसुद्ध
...वेसुनावे कहैदीनदासोनिफंद
नआवे॥२८॥इतिश्रीकबीरसाहिबको
प्रथमोअष्टकसंपूर्ण॥१ अथकबीरसा
हबकोद्वितीयेअष्टकलिष्यते॥ओंआ
दिब्रह्मअनूपअनाम भईआप इछा
रचेसबेधाम नजानामकोनकरैकोन
ध्यानं नमोहंनमोहंकबीरकृपालं १

रक्तुरे तओ भमे नाले ॥ नमो हं० ॥२५॥ स
मु॥ दास पै तो कृपा पुं बि आरो ॥ या कब
हुपै ह दे डी लिधारो ॥ तजो स्वामी ऐसो
सोहं निहू भाले ॥ [illegible] नमो हं० ॥२६॥ क
बीरा हू कंजे सुनै वो सुनावै ॥ पटे प्रेम गु
का सो मुक्ता कहावै ॥ धरै सत गुरू तें करे
कं चमाले ॥ नमो हं० ॥२७॥ बिनै दास म
सजम हू की चित दीजे ॥ प्रभु दास को
दास तो मोहि कीजे ॥ सदा दीन के तो ह
रे दुष जाले ॥ नमोहं नमोहं कबीर कृ
पाले ॥२८॥ इति श्री छिंतिये कबीर स्त
वक संपूर्णो ग्रंथ ॥ १०॥ सब की गणती
३०५२ ॥ अथ स्वहू कवती ये लिख्यते
नमामी कताती तको मादि रहीत ब
रिह [illegible] स्वबरियांन बीजां न महत्तं एं
कार मासि मसा कालं धुनं रमंते इति
रांमाने दानभेतं १ स्वयं साम्भूतं केव
लं ज्ञेये सरूपं निजानंद मरवितं मरवं
डं स्वरूपं सुधा ज्ञानपुजं मिदं स्त्र केइं

दं सदोदित्तमुर्त्तुदै सत्तेजार्विंदं २ गुणं
निर्गुणंबर्णाश्रमरहितं स्थितप्रजगु
हंसमचित्तसततं महदादिमे॰कोगु
णात्तितनित्यं षट्चतुष्टस्वरूबदां
दबितं ३ पृथ्वीतेजआकासतोयेस
मीरं नचकिंचदांतरव्यापकंकबी
रं मनामेमनादिश्रुतीहेबदंत्ति कबी
रादिआहूंगिरानिगदंति ४ उदअस्ति
तीतंपरापारमीसं तुरियादिमेकोस्फु
र्तेबागीसं दयाआदिदैधर्मसपन्नसो
नं सोसाबिरागादितमनासमोनं ५ म
वंमममनेनिर्गुणंनिर्बिकारंअनादिम
ध्यंगगनोपिकारं पर्स्पानपसेनच
दैशकालं नमामीकबीरंगिरासुचेम
लं ६ ईदंजक्तसर्वंमहाईडजालं
मृगावारिपर्वपत्रमेवजवालं ३नो
वरदयालंजनोनंदकारी मत्तंसबद
बिश्वैचपोषंअधारी ७ बुहीमेकब
रानपादाविंदं नमोपूर्णानंदमेकार

चिंदे सदादासन्हरंमुनेग्रेनकाहे म
होराञ्चपरुंपंजनात्वेममाह् ६ त्वयादा
ञादाशास्पपादानुरेन्ह् सतांधन्पतसंक
रोतीचपांने कीयोबलनकधीसंचतत्व
तज्ञोने मह्ममोहडुस्तरसुगोपदूपरोने
एपाटोदिकेक चूसुस्पांनपाञ्चं बि
नेञ्चापकंसास्वतंबिन्हेसकाञ्चं जिता
वादकासीसनिंदाञ्चसारी ञ्ञोत्ममयेम
ध्रछिजपादवारी १० महारोधघोरंनरेम
नमीसा तोयेचवारिजनहनिदनीसा म
हाघोरमधिमतंगमतंगचधीसा मगाधे
सपस्पेकरीत्राकूचीसा ११ महामेचसुन
तांनसिरजाबजाई कदमखारवकिव
लेसुदेत्वंबुदाई मुरसदमहरवांनसा
हबहिंसार गुन्हेगारबंदाहतकसीरवा
रं १२ तुहीहकमुरसिदमदफीलमेजा
तुहीरव्वञ्चानेमनफतसोषगांजा तुही
गुफतगोयेम तुहीजिंदपीर तुहीञ्चा
फतावकरीमाकबीर १३ बिनयेमेक

सतते चकरूनोनिधानो॥सदासंग्यसंत्तो
चयेयचज्ञानो॥गम्पछिसंवंदीछोरंन
पामी॥सहानंदरूपकवीरं मज्ञामी॥
५॥इतिश्री त्रतीये अष्टक संपूरणं
ग्रंथ॥२॥सबकी गणली॥३१९॥
अथसबदपारखानि रूपते॥ चौ
पई॥निसदिन अनहदसींगीबाजे सद
रहेउनमुनिकैलाजे सुरतिसबदमैंरहे
समाई कहैकबीरआनतानकहाई १
बहोतदीनोकासुताजागया बोलकपा
टतोमसैंलागया धनिसतगुरजिनराहब
ताई कहैकबीरसबबिपतिमिटाई २
घटमैं भयानोमकाहेला मुलगा द्यानव
खेलमखेला मोहमायाकीकाटीपासी
कहैकबीरमटीचोरासी ३ स्वामीसो
ससारसुन्यारा सोसाहिबका कहीयेप्या
रा आसात्तजिकराहैनरासा कहैकबी
रतबदेखेतमासा ४ हाथवीकरागलमैं
कंथा निर्गुणहोयकरपकडेपंथा ज्ञां

नचराकीघटमैंजूपी कहैंकबीरसोहु
क्तिसरूपी ५ फाटाटुटाकंथापहरै
मनसाममताघटमेंघुरै माकीचौकी
मांनबडाई कहैंकबीरयहदेहगवाई
६ मनराजाअगुणमेभीजै ज्यूंबाली
घटीककुंधीजै निर्गुणमैंनाजामरही
कहैंकबीरवेकैसेंतरही ७ फासीलीं
यांहाथमैंमाया ज्युंबांधणवकराकुं
पाया पडीगुसाबिनावेरोई कहैंक
बीरऐसासुपहोई ८ मायाकाजोरा
हैंयफंदा कोईकोईनवस्यापासेंबंदा
स्वासउसासैसुमणसुनागा कहैंकबी
रबिषैसबभागा ९ जैसैअपणीकी
याकुंडाला कोईकोईवचावै
जनटाला कहैंकबीरकुंडाला
मेंतै निमैंहैयग्राजुगमैपैलै १० पो
मैंमारकुंडालामाहीं तासैंअपणीघरघ
रषाई कहैंकबीरकोईबाहिरआवै
ताकुंमायानहीसतावै ११ बेवारकरेंम

॥सतनाम॥१॥

अथ ब्रह्मग्यान: परापसंतीमधिमा बहरव
री ये च्यार बांणी ग्राकोनानी अस्थांना
पसंतीकूं हिरदेजांनो मधिमा कंठसथ
नो बइषरी होठमें मानो ग्राको स्थानब
रए पसंतीको रगतबरए मधिमाको पी
तबरए बहषरीको स्त्रीतबरए बेदस
बदकी बहषरी सोहंस हूकी मधिमा श्री
नहस सहकी पसंती सारसब्दकी प्रा तंप
द: ततपद: असीपद: परमपद: तंपदमा
या: ततपदजीव असीपद ब्रह्म प्रमप
द आप अस्थूल लिंग: कारण: ईश्वर: ह
रणगर्भ: अक्षमाकरत: अष्टगगन: गगनिकै ऊ
परे परमतत परमानंद अव्यंत: गगनिकूं जो

ततनमतसाचे कहेकबीरऐव
आगाछे १६ सुरतिनिर्तसुंनटगणीछ
ततसे भारतआगोपगामेरते असी
नानामज्योआचे कहैकबीरसोह
हावे १७ अंतरनगीकमेकी
ठीदसुदसासुसुरतिजोफाड़ी देगा

नमेदीनंसबबीता कहैकबीरयु
हगयरीता १८ जगसतावीअब
कासावे टालाटोलीमेदीतबोवे छ
हअनेकएककुंभावो कहैकबीर
निभैहोयजावो १९ वोकागदकोव
गालीजे पिछानैहिपिमाणादीजे स
नमवजे ऊसोईसरा कहैकबीरम
हिबकापूरा २० सारजाबकाप्याल
ऊते निरभैहोयपयाजुगमेयेते कहै
कबीरक्यासेसैकीजे नाम पीयाला
भरभरपीजे २१ आवपहरजोनाम
कारे घटकाबेरीचूनचूनमारे अ
गमपंथकीराहबुहारे कहैकबीरनु
हजमकेसारे २२ मबहवदनकहै
मारा हीहलरकदीनसं मारा उज
कीराहेलीजे कहैकबीरधयानही
भाई २३ हंटबाटसुमारारहता नि
हिनसाहबसाहबके ना कहैक
रसमुजकरदेखो आंनवस्तसेनांहि

सुरतिमइ
त्वत्वाणी॥मनकीडुबध्यात्वदीभा
णी॥२४॥साखी॥

जाय।
।सबदपारख्यासपूरी
गणती॥३५४॥त्रुटी

निके
त्रिगु

बन

।इसनामरोगकेबीचमें

वनाा

तोमेदीनंलखीला कहैकबीरगु
रहगमाहीला १८ जागलताखीम्रबि
कासे.वे टानाटेनीमेदीतमोवे छो
इञ्चनेकेपकेकुंस्याबो कहैकबीर
निमैसेवजाबो १९ वोलागटकोंवे
गालीजे पिछानैहिपिमोगांदीजे स
नमुपजे जैसोइहरा कहैकबीरम
हिलबाप्रा २० सारग्राहूकाम्याने
जैने निरनेहोयघातुगमैथाने कहै
कबीरवयातसैकी जै नाम पीमाने
सरनरबीजे २१ श्रावपरजीनांम
फूकोवें घटकोखेवी चूनचूनमारे भ्र
गमपथकीराहबुहारे कहैकबीरत
हजानकैमारे २२ मूसहलवेदनकहैन
धाग डीहुतरकहोवू हूंस्पार उजड
कीयाहैनीजे कहैकबीरचमानही
मांहे २३ इंदरपादसंन्यासाहना निर
हिनसोइवलाहेलके ना कहैकबी
रसमुजकरदेषो श्रोनवलसाहेनोहिने

सो॰ २४॥ सुंनमंडलमै ताली लागी॥ सुर्ती
सुरति मंडल के दे जागी॥ कहैं कबीर पीय पा
लव लागी॥ मन की दुबध्या तबही भा
गी॥ २५॥ साखी॥ कबीर डोरी लागी
करम सो॥ नादर ह्यागरगाये॥ सुरति ब
हागति होय रही॥ घरघर ध्रुत न जाय॥ २६
इति श्री सत्यंवाद पारख ज्ञान संपूर्ण ग्रं
२१॥ सब्द की गाली॥ ३२३२॥ अथ
लिला॥ सबही खलक मे हम फिरे॥ देख्या
है खूब पिछांनि कै॥ ऐक रोग मलिव
खलक मैं छा यो है जालिम आनि के
रा दे ष्यो है खूब पिछांनि कै॥ ये ही आग
घरघर जरै॥ इस नांम रोग के बीच मै॥ दे
खी सभी दुनियां मरै॥ २॥ देख्यो है सु खना
न पिछांनि कै॥ दिल बीच मैं ध्यान की
या॥ इस नांम रोग के बीच मैं मुये है बुज
रक औलिया॥ ३॥ असी सहंस एक लाख
इस रोग मैं मरि मरि गये॥ कलनमा है ही
नाम अपना॥ भिन्न भिन्न करि कै धरि

कमैं॥ बनषंडमैं अदेषहैं॥ तहतीक
करिदेषोसज्जन॥ यहरोगाइनकैएक
है॥ १९॥ स्त्री॥ सीकीआसहैपतकमै
सुतिकैवकाइषुसरहै॥ नु॥ सीकीसुरा
तहैस्यालोकमै॥ देवतसनीबावृकरै
२०॥ नौना॥ पचौमीसि॥ षेफकस॥ दूताफ
सहसरोगमैं॥ अपनेनामकैवातें॥ गो
रषफकसेहैजोगमै॥ २१॥ सनकादिकब
सिद्धव्यास॥ जसविगानेंस्रुतिकहैं॥
नकसेनहींइसरोगसैं॥ बहेतैफको॥
उनमहै॥ २२॥ रपां॥ नीहैंसकरपलकर्ने
इकहीरोपीनहीं॥ कहनेकेताई
कहोक्याकरू॥ इसगलीमैंनिकसानि
ही॥ २३॥ कुरानबेदछै॥ सा॥ नो॥ अष्ट॥ द
सबषानिये॥ येसबनिसानीनामकी
इनमैंनफामतिजानिये॥ २४॥ काजीर
पंडितपलकमैं॥ येइनमबेदबषांन
ताकरतेहकीमी सबनपे॥ अजरा
नहीजानते॥ २५॥ कहतेसकेतजंग

रोगीया।पित्तइलाजसनका कैसैलहती
ककरिलैदेखैनही।इसरोगमेंहमहीम
रैरहै।इसरोगमैंघरमेंरहै।औररजस
महोहादोनदे।इसरोगसेसुनियैसजन
घरछोडिकेवैरागलै॥२७॥मातापि
ताकौछोडिकै।तर्ककरैकुलकोमेंप
आठोपहरमरतासजन।अपनेगुरुके
नामपै।२८।इसरोगसेजपतपकरै।इसरो
गसेमीनचढै।इसरोगसेमौनीरहै।इस
रोगमैविद्यापढै।२९।कयाकहुंसुनिये
सजन।इसघलकमेंगफलतपरी।दीद
मरकमकोतजिदीया।सुनिंदपैंनिछ्रैक
री।३०।जिसरोगमैंफसिफसिमरै।करते
नहीमामलेहै।सुनिदपैंकायमरहै।जा
सैघलकमैंन्हलिहै।३१।उमतिअचार
जओलिया।येसबअकलिसेहीनहै।
इसरोगसेमजफसबै।इसरोगसैदोहीन
है।३२।दिलसैइकैसैछुटै।आसक
कोईऐसैकहै।इसरोगकोंखगार्यकैस

मु

जन देषोतुइ फिरकितहै ३३ रता
हमारायेसजन उलफतिनिद्दारीना
कैरैं फांसीकटनकीहमकहै मानैद
रदत्तोक्याकरैं ३४ मेरासुषनहैमेह
रिक्ता कारकैनेजरेपहिचानितु षुसी
तेरीहैसजन मानिञ्ज गारनामानितु
३५ इसकजारूसमझिकरिदिलसैं
कै जा लदीबुहार मेरेमितनकासेव
है इसरोगकोतरजलडार ३६ षूबीस
भीकै मत्तिलीये देषोसजनतुमध्यान
धरि वेकिमतिहोनाहैतुजैं सबषबी
योपैंतरककरि ३७ दोजकमितदि
तसैंगिरी मोलागिसैरीसबगई मोंना
जिसैकहतीचलक आपहैदीदमतुहै
३८ मेरेसुषनकोंसुनिसजन इस
रमजकोंपहिचानिये इसचलककी
अपनीष्वावमैंनाजांनिये १ मेरेसुषत
कौसुनिसजन परषोरमजकोंतौलिकै
कौननेराकौनतू देषी चसमैषोलिकै

२। अ्रजबहरचसमैंरटकिकैछोभिपै
परबस्तीतहतीककरिदेखोसजन।५
सोकोनतेरासोबत्ती।३।आयेहोसंगा
तकौनकी।रहनोहैसंगातिकौनकी।त
हतीककरिकेदेखतु।चलनाहैसंगा
तकौनकी।४।आयेतुम्हीरहतेतम्ही
चलनाहैआपोआपसौइसफनकमे
आयेसजनरोतेहोकिसकेवासतै।५।
जोदोस्तसोयआपनारोनातुजेजररहे
नहीदोस्तआपनातोरोवनाक्यामंजुर
है।६।तुंजाततामैतुंमसियारतुं।मोनत्त
दितमैसही।तहतीककरिदेखोसजन
हैसतेरीसबगडै।७।इसतकबेकोंआ
पनाजानतातुसाचहै।तहतीककरि
केदेखितु।आपरकेताईयाघावहै।८।
आसिपसुफनसम-ज्यानही।जाहरो
मैंम्हटकतो।भतिअपनीआदिकोंद
रदराफिरैहोभटकतो।९।कभीहंठते
म्हजे दमसीतमै।कबळकेमकेजाय

न

है। प्यारहोनैमिलतानहीं॥ आवतेहै
ननंमायकै॥ १०॥ कमीठतेकुरान
नैमिलनतकरो॥ ताकोसो॥ घातनिक
हैआवकोतोसोनामिलैकिताकोसो॥ ११
कलिखेउनमकोतालेवी। पटिकैउन
सआनिमकुवारस नमिम्मानुदायको
आनिमकुवालोक्याकुवा॥ १२॥ तुमप
टेहै। नमस्केकौमे रोसनकारनको
नानहै। उसमानीमैतुनि सजन॥ पुद
रकोयम॥ कोमनैहै॥ १३॥ रे जैनिकाजेतु
सकरो॥ औरसु जोछोमासीतमें॥ तद
नीककरिदेमोसजन॥ अपनेमेरेके
चिमे॥ १४॥ प्यारतासेंवनीकसुदायकै
नमसरेलीविवनेनावतो॥ सुनिकौ
है॥ माहेसजन याकुजाकिमैसुनाव
ते॥ १५॥ तुनिकौउनमझेसेकुवा
नकैक जैसेचोरकोअपनीग जव
वासेतोकनलतेहो आरको॥ है॥ तु
कौ मेनकुवाजैसेमनवेग॥ कोगै

आवतेहजातादैम्रिकै तुमगॅंजे
आपनी १७ बंदगीकीटहीकरी
सीकरीकुरानकी म्हरे आईनो
तुजिकोपराईज्यानकी १८ मैं
मैं सोधीनहीदे नरैनकी
तामुसापरदेषिकै चरचा
की १९ मृत्मैहार तामिस्त
जेकर तेतुमचले किसमति
वथी रैतेके अंदरहमभिते २०
वहीमिनके मृत्तीफिरे रैताहैव
फेरका रैतावतावैहमजुकैजो
ह्यातमाते औरका २१ करिकैमु
दआपनी तकदीरपैकायमकी
परिकैइल्मकेबनमे नमीदी
कहदीया २२ नहूछूताहैपुरीदू
को मुरसदमुकैवक्तनाइये दो
जाहलेकहेकु येडनकोक्यासम
झाइये २३ तसबीफेरैदस्तमैं अह
जामबंदगीकरै पीयानदेख्यासूाव

[illegible]

[illegible] ने [illegible] करै २४ [illegible]
[illegible] जगावते [illegible]
[illegible] नही [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २७ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २५
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ती २ सुषनहीसुनिनैत्रली
तजिदौ ली मेरेसुषनकौसुनि
मतिहोयजातमपोैती ३ नि
दोनानही लैकोमनच्याकी
श्रा सक्रौकेतजिसुष मेट
मेकीगती ४ इसना ख्या
लै कुमियारहोयदेषोजुर्त
षरावीनोमही जोसवु ति
गती ५ इकबीजत्र नाश्रै
रोगजौलमवरपस्या चोदेत
राजकरि मंतोषबिनरोज
जिसस कौ केमसमका श्रै
गालिवजवा जिसकोदवा
ती छै चारनोईषनजवा
रोकीदौ तीवैजनीसमफिपे
तीनकालसुषहैनहीं मोत
मोनिये ८ श्रनंतहकम
तनगयारहनातष्पा सर्वभ्या

ग्रा सरमछिकम जालिमनसमकीय
हु सजा जोनहीससमकैरमजकूं उस
मेतो कहेना क्यारवा १० हैग्रोसुमन
सर समेलो गाकलेनमडी समजान
हो हैमेसनी श्रालेनसछड़ी सिरक
ग्रा वल केलडी ११ जो नेब्या मेद
नावलो मसी स्मागर च्छरकोनबो
रामा सिरला गठे सिरसमेस पबीम
२ रनसमेके हैमेती श्रोसको हेताद
१२ मेहेलो श्रेमा हेरहनाप्रलेको
नामेहवो क्यारवा १२
करनागुरुली क्यारवा

३२१२ जीवनो

सुजाम जा रतकोग बिरेबो
कोग सुट स्रतिदेबलकोग
जरनाखोनो समारकोग सतगु
कोगहितेकल गरलाईक ला
ग्रा कम नरकोग ललबेगा

ए कर्तापुरस बुधिवान्कहाकरे
ऐजन्ममर्नेमिटे मोछिब्र्छकोची
न्हा ग्यान जानिबोकहा सांछि
साछियेकहा मनपवन सुचिको
ऐई लैसजम पिकतकोए सत्रुमि
समि बेरीकोए आलस अध
ए क्रोध सुराकोए कामक्रोधजित
अन्तर्जनपीबोकहा हरिक
था संतउपदेश रसनांसुमंत्रतपा
बोकहा मिष्टवचन नूसतभावी
हरिकथाज्ञान उपदेस गरबा
ए निर्लोभी दालिद्रकोए अस
बी चतुरकोए डिष्टिपदार्थसुचि
नकरेसो सुषिकोए सुषदुषादि
आत्मबितरेक जानेसोसुषी
षीकोए सुषदुषसीतउसनषुध्यापि
साहरबसोगइनसुमित्या जोगोसे
धनकहा जोबन चंद्रमासंसी
लकहा संतजन नर्ककहा गं

बं
वास धनकहा पराधीन मुक्तिकौ
ए स्वाधीन सुषकहा सतसंगत
संतकौए परनुपगारी मित्रकौए
जोपापकर्तारासे बचनकीसोभा
कहा सतबैन छुटेकए हरिबि
मुष तिरेकूए पुनवत चिंताक
हा सरूपजांनिबेकी जानिबोक
हा संसारमिथ्या पूजियेकहा सत
गुरतमकहा प्रीतनिमाहिवो सुमरि
बुकहा रामनाम तजियेकहा प
रद्रोगुए पापकोमूलनकहा लोभ
आधिकोमूलनकहा रस दीरघरोग
कहा जन्ममर्न उपाइकहा ग्यान
भक्तिबैराग दुषकोमूलनकहा मूर
षसूप्रीत तीर्येकहा सतसंग सुनके
हा सबसोमित्रता धनकहा सद्बि
द्या मृत्युकहा क्रोध जस करियेक
हा मनबसि पटीयेकहा भागवत
बचन सुनियेकहा हरिकथा जी

नपैकहा॥ लो नमोहा मिनषदेहकी
।भाकहा। हरि भजन। मतीको मर
कहा। बीछुड चे॥ तपको नेकहा॥ ६॥
डीबिषै। साधुमिल्यां कहाहोय। बुधि
निरमल। बोवेकोण। मांनबकाइत
रैकोण। परमात्मा॥ ९॥ इतिश्रीप्रस
नोत्तर। संपूर्ण॥ ग्रंथ॥ २३॥ सबकी
गती॥ ३२ २६॥ अथपंचीकरण
लिषते॥ ॐ बृह्म आत्मा तीनमुक्त
आत्मासु आकास आकाससु बा
यु बायुसु तेज तेजसु जल जलसु प्र
थ्वी आकासरो एकभाग सबदबा
युमे होय भाग बायुमे सबद सो आ
कासरो भाग जांणजे सपरस सो बा
यु तेजमे तीन भाग आगनि जलरा
बद होयसो आकास चमीगरमता
गेसो बायु चमकैसो अगनि जल
मे च्यार भाग जलमे सबद होयसो
आकास वंको गरमता गैसो बायु

ग्तजंतको

नमकैसेआगनि पृथीमैसब

दहोदसेआकास गंधीगरमंनगे

सोबायु दीसेसेआगनि [illegible] बा

दसोजंन गंधमगंधसोपृथी आ

कास सि [illegible] हिरदे उदरकी

[illegible] बायुप्रकृतिपंच

बर [illegible] संकोचनेबंनन

आवतपसारो संकोचनेबंनन

तेजप्रकृतिपंच आकासप्र

[illegible] जलप्रकृतिपंच

[illegible] पृथीप्र

[illegible] सुखनाडी

तांचक [illegible] आकास

पंच नाग आकासम [illegible]

[illegible] आपरे [illegible]

[illegible] आर [illegible]

[illegible] हरि [illegible]

[illegible] दीसे [illegible]

[illegible] आपरे

[illegible] आरगोती

[illegible] परसंत

[illegible]

उष्णतनो
यौ [illegible]तेजनुदीयौ [illegible]तनो
सेको चलप्रथीनुदीयौ
जभाग आधौ आपरैराषीयौ सुद्या
षी आधौ भाग आरोनु [illegible]
दीयौ निंद्रा आकासनुदीवी त्रिष
बुनुदीवी कांतजलनुदीवी आ
नस यौ जलभाग आधौ
रा बिंदु आपरैराषीयौ
[illegible]तौ आकासनुदीवी [illegible]वायुनु
पीत्ततेजनुदीयौ रक्त प्रथीनु
यौ प्रथीभाग आपरैराषीयौ [illegible]
आपरैराषीयौ रोम आकासनुदी
तुचा वायुनुदीवी नाकतेजनु
मांसजलनुदीयौ अंतहकं
आकासरो सरूप श्रोत्र आका
सरूप सबद आकासरो सरूप
वाक आकासरो सरूप मन
सरूप तुचा वाइरो सरूप पांणी
सरूप सपरस वाइरो सरूप

नतेजतेसरूप नेनुतेजतेसरूप पगते
जतेसरूप रूवतेजतेसरूप नुधज
नेतेसरूप त्रिभ्ना जन्नतेसरूपः ल
टजन्नतेसरूपः लिंगः जन्नतेसरू
पः नासका:ऋषीतेसरूपः गंधप्र
षीतेसरूप अहंकारऋषीतेसरू
पः गुलत्रषीतेसरूपः मन्तु
देवता मनसं कनेतिकल
वेदृदेवतांनुभितिसु ऊ ऋ
वों तलकोसुमना स्रुदेवता स्र
हेकारमः सरूदृदेवता सेत्र
स्नेम्नसही समटसेहींस्त्रमनुत
डम. हिंसादेवता येही वकुटोयेही
मतनुवास्त्रमा.मसही सवरम
स्नुदमुत वायुसहीहेदेवता येही
नेकुटोसहीमुत नेत्रस्त्रमालसही
हीरसही स्वदमुत मोगलहीहेदे
वता यही वकुटीसहीमुत जिम्ना
सहीहेदेवः वाहतसहीस्वदमुत प

ऋषि

रणेंसही हैदेवता। येही त्रकटी येही
सुत। प्राण अध्यात्मसही। गंधसही
अदभुत। असनी कंवार हैदेवता
येही त्रकुटी येही सुत। ऽ ति ज्ञान ऽ
डी तिरनीये। बाक अध्यात्मसही। व
कवादसही अदभुत। अग्नि सही है
देवता। येही त्रकटी येही सु। हस्त अ
ध्यात्मसही। धरनेण अदभुत। ऽ ऽ
सही हैदेवता। येही त्रकुटी येही सुत
पग अध्यात्मसही। गवनसही अद
भुत। उपो ऽ सही हैदेवता। येही त्रकु
टी येही सुत। लिंग अध्यात्मसही। भे
गसही अदभुत। परजापत हैदेवता।
येही त्रकुटी येही सुत। गुदा अध्यात्म
सही। मलसही अदभुत। जमसही है
देवता। येही त्रकुटी येही सुत। ऽ तिक
रमऽ डी निरनीये। मन अध्यात्मसही
संकलप सो अदभुत। चंऽ सही हैदे
वता। एही त्रकुटी येही सुत। बुध अ

तेजरोसरूप नेत्रतेजरोसरूप पग
तरोसरूप रूपतेजरोसरूप बुध
तरोसरूप जिम्याजलरोसरूप
रजलरोसरूपः लिंगः जलरोस
वः नासकाःपृथ्वीरोसरूप गंधप्र
थ्वीरोसरूप अहंकारपृथ्वीरोस
पःगुदापृथ्वीरोसरूपः मनु
देवता मनसं कर्ताविक
चंद्रदेवताबुधिनिस्चे ब्रह्मा
चितकोसुमरण क्षेत्रदेवता अ
हंकारगर्भरुद्रदेवता सोत्र
आतमसही सबदसोही अंतर्भुत
डगासईहरदेवता येहीत्रकुटी
सुतलानुचा आतमसही सपरस
रुद्रभुत बायुसहीहेदेवता
त्रकुटीयहीसुत नेत्रआतमसही
सिहसहीरुद्रभुत भोंणसही
वता येहीत्रकुटीवेहीसुत जि
सहीहेदेवता बोटसहीरुद्रभुत

ग्रूकि

रतोसहीहिदेवताधेहीत्रकुटीयेही
सुतध्राणग्रध्यातमसहीधेघसही
ग्रदमुतग्रसनीकेवारहैदेवता
येहीत्रकुटीयेहीसुत।5तिज्ञालई
डीतिरनीवेनाकग्रध्यात्मसही
कवादसहीग्रदमुतग्रग्नि
देवतायेहीत्रकुटीयेहीसुहस्त
ध्यात्मसहीधरतणग्रदमुत
सहीहिदेवतायेहीत्रकुटीयेहीसुत
मनग्रध्यात्मसहीगवनसही
मुतजपी5सहीहिदेवतायेही
टीयेहीसुततिगग्रध्यात्मसही
गसहीग्रदमुतपरजापतहेदे
येहीत्रकुटीयेहीसुतगुदाग्रध्या
सहीमतसहीग्रदमुतजमसही
देवतायेहीत्रकुटीयेहीसुत5ति
रम5डीतिरनीयमनग्रध्यात्म
संकलपसोग्रदमुतचंद्रसहीहे
वतायेहीत्रकुटीयेहीसुतबुध

आत्मसही निश्चैहे अदमुत ब्रह्म
सहीहैदेवाता येहीत्रकुटीयेहीसु
त अहंकार अश्या त्मु सही है मैं
सो अदेमुत रूद्र सहीहैदेवता येही
त्रकुटीयेहीसुत चित अध्यात्म स
ही चितवनसो अदमुत ईश्वर स
हीहैदेवता येहीत्रकुटीयेहीसुत॥
इति श्रीपंचीकरणम् भरणा॥ अ
२०॥ ग्रंथ॥२४ पंचीकरणी गराली॥
२५॥ अथ लिख्यते लछण ब
मैर है केतो ग्रहमोही मोनिरहै के
दूरगावे केत बैठिरहै कछु नाहि
ले केत बे बिनाछांडिके उठि आवे
केत अनत जेपी बैठीरहीके केत
ांत अपान गगनिछावे कबीरक
है स्वबिबेक बिनां कछु नांहि पारे
तेरे हाथि आवे १ केत सरहोवे जीते
ुडीडोंकों केत कायरहोके हारि
जावे केत दांन देवे कछु नांहिं तेवे

तपतिमाथापिकेसनलावै कै
गापहोवैकछुनाहिजोवै कैतूनी
थेकैटपाविन्हावै कबीरकहै
विवेकबिना कछुनाहिप्यारेतेरेहा
थिआवै २ कैतूराजकरैभवन
नकुका कैतूराजकेकाजकौत
जभागै कैतूनाहिपोषैतननास
कैतूतनपोषैबहुकरिरागै कै
पासराषैकछुसंचहीकै कैतूहो
यनिरासकोपीनत्यागै कबीरक
हविबेकबिना कछुनाहिप्यारे
तेरेहाथिलागै ३ कैतूकासीब
सकरितनतजै कैतूहारकाजाय
केदेहदागै कैतूनामलेवैलहिने
हीसुं कैतूनामबिसारिकेध्यान
गै कैतूसोयरहैसुषनीदमाहीं कै
नीदतजेआगैजामजागै कबीरक
हैस्वबिबेकबिना कछुनाहि
रेहाथिलागै ४ कबसुयसहै

आत्मसही निश्चै है सुदमुत बुद्ध
सही है देवता येही त्रकुटी येही सु
त अंहकार अध्यात्म सही जो मैं
सो सुदमुत रुद्र सही है देवता येही
त्रकुटी येही सुत चित अध्यात्मस
ही चितवनसो सुदमुत ईश्वरस
ही है देवता येही त्रकुटी येही सुत।
इति श्रीपंचीकरणसमर्पण॥ ५
३०॥ग्रंथा॥२४॥[illegible] गारनी॥
३२५६॥ अथ लिखते लक्षण ब
नमें रहे केती गृहमो ही मो निरहे के
तहेरगावे केत बोरिहे कछु नाहि
छोरे केत बैरिनाछांडिके ठिआवे
केत अनंत जेपी वेचार ही के केत
जोत अपानगन निहावे कबीरक
हि स्वबिवेक बिना कछु नाहि पार
तिरेहाथि आवे १ केत सरहो वे जीते
छड़ी औंको केत कायर होके हारि
जावे केत दान देवे कछु नाहिं तेवे

तषतिमाथापिकेंसनलावै केत
गोपहोवैकङ्नांहिजोवै केत ती
थेकर्षटप्पाविन्हावै कबीरकहैस्व
विवेषबिनां कछुनांहिप्यारेतेरेहा
थिआवै २ केतराजकरैभवनतं
नकुंका केतराजकेकाजकीती
जभागै केतनांहिपोषेतनत्रासदे
केततनपोषैबहुकरिरागै केत
पासराषैकछुसंचिहीकै केतहो
यनिरासकोपीनत्यागै कबीरकहै
स्वविवेषबिनां कछुनांहिंप्यारे
तेरेहाथिलागै ३ केतकासीबा
सकरितनतजै केतहारकाजाय
केदहदागै केतनामलेवैलेबिनेम
हीसुं केतनामबिसारिकैध्यानपा
गै केतसोयरहैसुषनींदमांही केत
नींदतजैश्रागैजामजागै कबीरक
हैस्वविवेषबिनां कछुनांहिंप्यारेते
रेहाथिलागै ४ दुषसुषसहैकछु

ोहिकहै मीतलरहैतजिकोपहै
ती नांनां मेयमबनाघृतिलकछु
धु कंठीमालागदड़ीटोपहैजी
त्रैभ्यांनगुफामैंबेठिहींकैं त्रिब
ोंकीयासबलोपहैजी कबीरकहै
रहनीग्यांनबिनांवेकामजूफटी
तोवहैजी ५ जेमेघटाबांधेसरबि
तां नहींघेतकेंहोवेवोपहैजी जे
सेसूरहोवेनहीरणबिना कटसती
बंधेघोपहैजी तीरथबरतम्राच
रकिया सबभ्रेसाहीयाटोपहैजी
नहींसाधहोवेबिबेकबिना कबी
रप्रगटनागोपहैजी ६ जुपतंमी
वैयेकनीरहींसो नहींफलहोवेर
कसारहैजी याटा मीयामिस्रतको
ई तीबन कोईकटुखारहैजी पटतें
सबैयेकगुरसेती घटघटसुभाव
निम्यारहैजी कोईम्रखीधमीको
नामेली कबीरकोईनिराधारहै

७ अंजनदेवे कोंनजाहीको
गनीकेनेनबिशालहेजी देवे
रुचिरतामोरपंषो सोहेमा
लहेजी श्रीपंकमेकोनसुगंध
वे बाहेसबहितपालहेजी देवे
नबिबेषबिबेषीयो को कबी
स्वभावकाष्यालहेजी ८ सूरोकं
नसिषावताहे रणमाहिअसीव
नांजी जुवतीनकोंनसिषाव
संगस्वामीतनकाजारतांजी
सोकोंकोंनसिषावताहे नीरक्षी
काभिन्नबिच्यारनाजी कबीरयो
नसिषलावताहे तत्वतुकोतत्
धारतांजी ऐ नहीआपबि चा
बिबेषकरे धोषेकोसबहीध्यावं
कहीयेकोंनसेतीसबयेकही
तैसहीतेहिवःजावनेहे बेकुं
गलोककोश कथा नेमेसब
कोसमझावनेहे कबीरकहैह

हैकौनतबुझै नागेहरकेठौलस
हावन्मेहै १० दोकंदीनम्ने फि
रैनाहिफिरै तागे उतहीकेसब
जावन्मेहै करै ग्रास ग्रैसीकहैग
रजैसी देवांसें जायनहीफिरन्प्रा
वनमेहै निसदिन उगननामही
कों मनमा दैकरिकै नावन्मेहै
कबीरकहैहहैकौनबुझै नागे
हरकेठौनसवांवन्मेहै ११ भोज
नहैदेखिकनुमिसेजु नांनरूपजु
देजुदैगाईयेहै कंडीकरवाताहि
बुष्या ना जोबुझै ताहिबंईयेहै
ना नांनरूपुकंदेषिनहीमुनीये जी
सबयेकहीनुमितैगाईये येहै तेसी
भांति च्यास्यौं चिदानंदमयीकबी
रतेसीमैगाईयेहै १२ कहतेहैपटजु
तंतमयी पटमाहीजपेतंतन नयाईये
है न्याडाहूयातंतरबिच्यारनीया
तबपटकानामनगाईयेहै जैसैनां

से
गयातैरूपनही अग्यांनमैग्रवक्त
येहै कबीरग्रेसो सधेजोनिके
ग्रात्मभेजक्तनपाईयेहे १३
ऐक के ग्रेक ग्रने कहावे भि
भिनसबोकारूपहेजी बेमातको
सेजमातनिये भिनसबहूमेतरू
जी भिन ग्रेकजैसेजगचुत्मतैसे
व्योपोनिग्रत त्रपग्ररूपहेजी
बीरबिबेकसेजोनलीजे ... दृष्टि
दसोई नमैकंपहेजी १४ बिबेप
चारकीगमनहो ग्ररूऐकही
स्नबतावते हे गुरूहदकेफंदमैं
दरहा देखो कैसी कबातबनाव
ततमनबिछेमेरमिरह्या निरप
न्यारासुबचावते हे गुरज्ञानक
बिचारकहे सोतोफोकटज्ञा
कहावतेहे १५ हिंदुप्रभात ग्र
छान्नकरे माटीकेमहेराकुंपूज
हे मुसलमानफजरनिवाजपढे

बेठमसीलमैंगुंजताहैं छेदकते
तकीफेरछोडी पंछबोलतेकान
हीबूझताहै कबीरकहैयहजक्त
अंधाहुआ सो निसहसनहीसूझ
ताहै १६ उरमहोवैजैसेजलमेती
फिरजलहीमांहिसमावतीहै जल
हीमेंमोतीनकोलोलकरै जलछो
डिनहीकहंजावतीहै जलछोड
नहीकहूओरहोवै हिसदसहूमे
फिरआवतीहै कबीरकहैदेही
तेखिलीजे देहीसोदेहकहावती
है १७ जलकीतरंगतोजलहीहै
नीकेकरिदेखोनदीओरहैजी इ
जातामतरंगसोफेरनही कहैसो
नसबेसिरमांडहैजी तैसेसबदमो
चिदानंदहीमे चिदानंददेखोसब
गरहैजी कबीरबिबेकसोजा
नतीजे नामरूपतोमनकोदूर
जी १८ स्रवनतुचाद्रगघ्रांनर

ऐसोपांचुइडीसोनहैजी बा
पोन औपारउपसतद्व
डीपाचप्रधानहैजी मनबु
ध्र चितअहंकारच्यारउ
नेअस्थानहैजी दसचारचो
कोसाषीजो कबीरसोईनिरषी
१९ सबद्वापरशहपरस
ध बिछैसोनइडीकीजानियेजी
के अग्रहणमौनभौनदबिस
डीबिबेकमैमानियेजी संकउ
प्रै अनुसंधानगरभअंतदक
बषानीयेजी कबीरकहैतब
वै तबईनमैचितनआनी
२० श्रवणकीकेबिनासुने
बिनाडिंडिमनके जानीये
साषीकौबिनाभ जैसे बिना
अछरबषानीयेजी रलागोप
केबिनागातिजैसे बिनानय
नाम्हैचाठनीयेजी पटना

काकबीरतैसैं विनहीमनोहरबो
नीयैजी २१ व्यंजनकीकेविना
तौनजैसें गिरवरफीकाविना
ब्रोतिहैजी निसपतिफीकाबि
तोनितजैसें सरसीफीकाविना
पीतीयैजी जुगफीकेविनासर
जैसें विनारूपभूषनकोनाति
येजी पहनाफीकाकबीरतैसै
विनहीमनोहरबोणीहैजी २२
कुरंगकापराजनादसेती चो
तजकाश्वोनीनीरसैजी दीपग
सेपरापतंग की योहीराकाजैसे
हीरीसैजी नागापनकवल्का
नोतसैंजू सिसुकानिहारबु
रसैंजी परान्नवसैदेपामीतक
जूसतरामकात्कबीरसैंजी
२३ साखी तेईसंतजनसुखडेहै
जीनीमध्यजिकोंन सारासारबि
रहे पनमध्यतजैजीन १ हरिक

जो

सोरे त्नकरी मीना ५जि सोरे नीर
जी मकरी जोसत्त कत्त जि म
स्तां जो रनमें छीरक जी त्व
त्याग चकोर करे हंसा मान
नरतीर क जी मकेटम जी
छाडिदेवे तोसत्तराम कद
कजी २४ साषी जोंकुरंग
तजे चात्रक स्वाती नीर
वकतजे पतंग जो तोसत्तराम
कबीर ॥ चात्रग की यापन स्वा
जी उसे छोडि नही श्रौर चाह
है कि यापतपतंग चिराक से
वारि फेरि केतनक दाहते है
सो आपन नही पन छांडित्ते नरतो
प्रेकेपन को वाहते है ना त्तिन
सकी नरदेही कें कबीर जि हांनि
श्री कहैते है २५ साषी मीनच
कोर मराल मधु पमुहायत जेत
नेह नरहाय त्त जे कबीर जे ।

केमकुंडैपेट ३ पणछोडिच
जगजीवनो तिसमेरनाहीब
रहकहैजी घरकघरगदे
श्रोत्मसार ईसजीवनेमे
चाथबहैनी मिटिजाउसैसे
नजीवतेसे लगोलाजर
किनलकहैजी मनछोडिगरी
तहाथडोरी कबीरसांईजगज
कहैजी २६ साषी जोपलगयो
ाकहारसौ कहैकचीसंसार
कजीवबिनजीवनो अरह
निचिरकार ४ साषसंगगुरस
जमिल नित्यानित्यबिचार व
हैहितकबीरजे तासोपणज्रे
चार ५ श्रातसकी श्रावतेए
कसीहै मतिपकरोकोईसाने
केजी अपनीबिरानीनागनौ
जरिजैहौनीज्यामानिकैजी को
मनिबिसांनीश्रापनीक्यातजी

नसौं

कहेंधनजोनिकेंजी डोजग
कैं भैयोजावे कवीलकेंछाये
कैंजी २७ माखी सोइलियकै
पनो सोइलघपहिलाहि को
चायेमरे नहिकोईओंलो
हि है वैरीलोहाकें चनकेंथी
तेंयेकहीवंधतजोनीयेजी नें
क्या आपनीपारकीहैं डोजे
कफहूचीनोन्येजी ज्यागनही
लयेकहोव डोजगदोउंनकों
मानीयेजी यातेहोयंउनासबंग
गत्तीजे कवीरजासुवकीपोनि
हेजी २८ साखी सोईचेडुलोर
की सोइकेंचनजोनि डूपदा नो
हैएकसी विडुजववकेंववयोनि
७ कोईवेविनत्वमेंजल्सैनने
वे कोईपंचअगतिनतउकाम
तेहें कोइस्वबाक्षु अकाम्प
नी कोईजावयुकांक्वमेंत

ईहोयगईमुरी अर्धफलै कोई
तीरथ बरतौं फलते हैं कबीर क
हैं आत्मग्यान बिना ए सब धोषे
मैं धसते हैं २८ कोई मूल बांधे
करै सिध आसन कोई ध्यान अपा
न के गहते हैं कोई इगला पिंगला
स्वर फेरै कोई नासा अग्र लखते
हैं कोई फेर दिष्टि पै त्रिकुटी मे
कोई अनहद मे चकित रहते हैं क
बीर कहै आत्म ग्यान बिना धो
षे के नेह मे बहते हैं ३० नरनारि
को छांडि उदास फिरे सोतो रह
ते मन सा नारि जोगी अन्त पके
प्यास ... बिह मारी तन छीन रहे
जैसे पिउ रोगी उर्ध्व प्रान प्यारे को
सुष्म नहीं भोजन के बसि मन
रोगी कबीर कहै कोई नाहि बू
के येतो मन के जोर भए जोगी ३१
गुरु प्रेम का अंक पढाय दीया त

बपटमेंमेंकछु नाहिबाकी बोव
नचिरागजरायदीया परयोलि
महलमेंदेषुफोंकी चारिवेदतष
तआसपासिबने रवसमबेदअ
रआसनजोकी सततामबेन्वर
कबीरभएसबफरासभऐबंदे
नरषाबी २२ दीदारदेषोरोसन
प्यारे गुलजारषेदीअरेर नहींको
ई दरगाहमेंपीरमुकामसदो तु
मसेंन्वरहोछोडिदिलदोई आ
पना आपमेंरूपत्वषो जीवजा
निजमाहिंचेतनहोई ओजूद
मोजूद कबीरबोले पहेचानि
अवाजकायमसोई २३ कोई
ज्ञानकथें कोईध्यानधरे गुरू
मंत्र चारिसुनावताहे कोइजोग
करेकोईमौनिरहे अनहदअ
लेषबतावताहे सुरकिनरकि
केमरत्तिपरे घटघटका भेदन

पावताहै २ है जीव चतुरगतिके संसदया
कायंसकबीरब॥ तावताहै ३४
तपुतकम्पांहे ऽ ड चाॅमकोज्ञी दोनं
पांनीका भेषा लगावताहै मल्लनीर
करैतोकुमांसबटै आपरकृंपस
बढावताहै नादबिंदकेबी चाक
लो लनकरै सोतो आत्माराम कह
लावताहै अस्थांन येहीकहांठु
ते हैदया देसकबीरबतावहै ३५
संसारमे साध गुरसिष जेतेसुघ
रामकहैकौरजपमाला एकनां
महिको मनध्यां नधरै पीवैजो
गजुक्तिकहूंप्रेमप्याला सनआप
ही आपकै न्हलरहै भूएनामअ
मलमेंमतवाला जेसनामकी ९
आदिखो लै सोतो बांझकापूत
बेचनबाला ३६ घटघटमैराम
काधांमहै तुमढूंढतेरामकाभे
मकूजी गुरग्यांनसेती पबर॥दी

रनदी तुकै देषत्ताहुवे ऋारोमसं
जी मज्लमुकामनिहानकं जा
कुंगे जांनतेनदीदिलज्ञांनकं
जी सतगुरुकबीरकंपीकरो ।
नसदिनरहो ऋारामसंजी ३७
बंदीछोडसाहिबकेयादिकरो पू
दीछोडजिहांनकाध्यावनाजी
ऐसेमारगमेरगमिलायेलीये ऐ
साफेरगुजरनदीपावनाजी पां
च चोरकाजोरहमेसहोवे देषोपु
रनमेघरमुसावताहे कबीरकहै
पढिताबोगजी देषोकाचका
बासनफूटताहै ३८ तनमसीत
मेमनमुला [illegible] चितकैबोतरे
बांगदेवे ऽमानमसीतनिर्वज
म हेहवाहककीतसबीहाथले
वे कोऽसेवगतातबदारहोवे क
फर [illegible] काषोजषोवे ऋका
नकुरानकषोजलेवे ऋलष
कायमकवीरविचारिकहे अगमसुकाममेगम्यू

होई॥ अरु अंग सकल तुमें आपि रहु जो
तम मध्य मत न छैं न कोई॥ ज्ञान सम
न कच्छांन करि सोवती॥ तीपतेपो
तते तच्छान कोई॥ सतक बीरगत
तो न गुरु ज्ञान में॥ वेद अस्ता चीन्हे
सो तत्व होई॥ ४५॥ अदहमक फकी
र की जाति पूछै॥ अदहमक सो जाति
बतावत है फकीर स्नेह करै अ
हमको॥ अदहम कसो नेह मिटावत
है फकीर से और कहै अदहमको॥
अदहमक सो और कहलावता है॥
फकीर की जाति अजाति ही है नी
के जांनि कबीर जनावता है॥ ४६॥
कोई कहै सिव लोक कं जाय है को
ई गऊ लोक का धांन है जी॥ कोई क
है ब्रह्मा लोक कं जाय है॥ कोई बै
कं वबधा नि है जी॥ कोई कहै सत
लोक कं जाय है॥ कोई कहै मिरतु
मु कांम है जी॥ कबीर कहै प्रतच्छ

विना सबबातनकेएकबातहैं
जी ५९ भुसाकीआदिकेबरन
है दादरसंमांड प्रमानिये जी ऐसी
गीरिपसोतोम्रिगानीजेने कीर
तैंप्यासबमानियेहैजी बाल्मी
ककी आदितोबाजीहैसकरपि
नाको जेसे पेसेजी कवीरक
त्रैलनसोकोनलक्ष
चलगतोमोजच
पूहानहीहाथि
कितरोघरक
कैबेछिजावे
सोईबातनसु
रिमुहाहास
बलगाकछ
५० गगनिमेंदानचोगा
नकचोहटै यारफकीमेगतरह
शाबूकपायकेसतकेध्याय
के सेषभगवंतकीसरनरहनो
रतुम

सरनकेबीचमेंआपसाहिबबसै
है घटीद्वारकछुनाहिकहनां क
हैकबीरसंसारहैपथनीगुरु
देवकेसब्दुमेंगारकरहता ५०
बंधनछुतबमुक्तहुबा जबको
नतरे जाकोंकनत्यारे आहेका
रतजेनिरबेरहोवे जबकौनमरे
जाके कौनमारे मरनाजीवनातप
रसकेहै जोआपके आपबिसार
डारे चेतनहोवेताविजानदेसो
दयादीपकजोतिकबीरमारे ५१
कोइजोगीहोवजोगसातेहै कोइ
बेनतजनमेंमझारहैजी कोइपंच
अग्निमानीतरपबाकू कोइती
रथवृत आचारहैजी कोइबु
सचोरी डमीवांनप्रस्त कोइरहे
तेहइंद्रिवोहैजी कबीरबिसारके
आपकोके सबेनतीठयासिरमां
रहेजी ५२ तुमजांनतेहोहमको

नहैजी तुमपूर्वहमकोपहिचान
तेहो हमबिनातुमहूकोकहै पु
रभेदकेतोतुमजानतेहो तुमह
ममेंहोहमतुममेंहुसे अबमे
दकाहेकेमानतेहो कबीरक
हैहमतुममेंभ्रांतिके बैठेकेमे
दबखानतेहो पूर मिमांसाबादी
कहैकर्ममेसही विसेसबादीसमे
कहतेहैं बादीन्यायकहैकर्तार
मांन पातांजलीजोगगहतेहैं सं
षिबादीनित्यअनित्यगावै बेदांत
बादीब्रह्मलहतेहैं कबीरकहैं
[illegible] हदबेहद निरहदसोईतजि
रहतेहैं पुंध अप्रापति चीजको
क्यात्यागे प्रापतिजैसोईत्या
गीहै सरसौसितुरंगके क्याफेरै को
र तरफेरैसोईबागी है जगभोग
का गावनाक्यागावै अएभोगा
ग्रहबेकीबासना

सरनकेवीचमैंग्रापसाहिबबसै
ट्सदीदारकछु नाहिकहंनां क
हैंकबीरसंसारहैपषनं गुरु
देवकेसहु मैगरकरहंतो पु
बंधनछुतवमुक्तहन्ना जबको
नतेरे जाकोकनतारे आहेका
रतजेनिरवैरहोवे जबकोनम
जावं कोनमारे मरनाजीवना
उसकेहै जोन्नापकेन्नापबिसा
डारे चेतनहोवाउ िजानहंवे
दयादीपकजोतिकबीरसारे पु
कोईजोगीहोवजोगसातेहै के
बैठेतनमंभजरहेजी कोईप
निमानीतरघबाद कोप
रपकू तिन्राकारहैजी कोई
सचोरीडमीवानप्रस्त कोई
तेहदन्नोहैजी कबीरबिस
न्नापहीके सबतनोबग्रासि
रहेजी पूरन तुनजानतेहोहम

हैजी तारानैसेजैसे चंदसोंहै
वतमेजैमैसेसिवहैजी बेदका लेख
पिंडरुचा कबीरकीकछनी
वहैजी ५८ तीरथसेर्मेंसबसं
नीहैजी होमेनदीकलुन्हायै
षो प्रितमासकरकीजटहै
जोलेनदीबुन्हायदेषो पुरा
कुरानसबवातहैजी याघट
पंडदावोल्लिदेषो च्रनमेोकी
हिकबीरकहै ए
टेहपोल्लिदेषो धूपसूत
हसेतासूतहैजी सूतश्रुलवहम
कोयं लोएतोसूत
तहे कहाजीहूसराकिसतरसोयं
सीकानामफेरिकेबहुलवस्या
केकहेंक्यासतपोयं इतनाही
सबजक्तश्रोरबुझमें ज्ञानकहि
यिकबीरायं ६० भातकापात्र
भातहैजी भातश्री

मोहस्पृसंत
कोऽहैजी ६६ यरमोहस्पृसंत
कोहैग्रहैगु यो चहतमेव
ग्रुभोवतैहै स्पृस्रानतेस्पृर्थहोय
तैहै ता.ग्रढभर्दे.नीराल.तोबते
है स्हाक्रिसीको.हु.नहीमि
डतोहै प्रंतस्मापनाहीकछुबो
बतेहै ग्रोहितस्पस्रोनत्पहै.त
गिरहै उ.नोग्रहैतसमैवहीसोवत
है ६७ नहमततयाकतालब
होके सतक्षेत तवगताकोऽहै
जी ग्रुहे.उर्प्रज्ञाप्रमसेती पु
ग्रोहे ... तागोकोऽहैजी ग
...ताबताहै त
नतहै सि.तलेजावताहै स
...नाकोऽहैजी स
स्प्रनहैन...कोऽहै ३
...रूहैजी ६८
...हैमतोहै
...नहैतीजावनाहै
...वनाहै डोर

फेरि समोवनाहैं ग्रा... ती
कछु करनाहैं मैंतैंकों ... ते
वनाहैं दरियाव ग्रुषं... है
ती नदी होवनाहै नदी ... जो
है ह ए जैसें लोनकी ... देप
तेहो सागरके घ्याह के ... वती
है ग्रहां जायकें ग्राव ना ... नदी व
है ग्रापने रंगमैं रातीहै ... जाय
रहे समकें नदी वहब्रिर्लैंक बि
चारमैं मातीहै सागर ग्रघ्याह लो
गाहनदी वह बी चली बी चलि रा
वतीहै १० हरहंगी ही जे नविरा
हली जे ईसराहक रिसाई यापाइ ये
जी कुफसुफसूं ग्यारा होयर हैं
निनिहसियेय लिये गाईयेजी म
चैंयुक्तिकी ग्रासकैंसी जीवतमु
क्तिकें नपाईयेजी ग्रेत समय ग्र
हजोचनाहैं ग्रली ग
हीजाईयेजी ५१ घर

गुनहैकीसा हमैंकात्यागनांस
रहैजी घरबारकहैकहाकहत
है हमैंमेमरवेभुरहैजी हमैंके
जोईत्यागिरह्या सोईत्यागनास
रविचारहैजी श्रुज्ञानीमतमैं
सुषकहाउन्तीज्ञोनहीसुषतिक
सहैजी नुर बरफकीपूतरीस
बैउनी कैसाजोगकुमार्यरह्या
श्रज्ञानकेनीरकेटपनेकूतन
उपरिजायकैंश्रापरह्या बांनपु
सतपसाधुजकरै टै वैदेवतास
बेमनाथरह्या जिनज्ञानकासर
जसंगिलीया उनी [illegible] श्रापमैंश्र
पसमायरह्या ७३ मंगनरहैनि
तिश्रापनेहालमैं श्रोरकेष्याल
मैंचितनलावै लावैगचितरहै
नहीहित बटैश्रनहितकेतासम
कावै तोहिकहहमनी श्रुरबु
रीसंसुहिकनासंश्रापबचावै

जनसत्तरोमगहोएहधानी और
पायनहीसुखपाको ७७ ाकरन
न बेत अला याराईसदहीस
तुम जानतेहो करकमापटोकु
नपटो पटिपटिकेमूबकषो
तेहो यारबेग्रामहसी चतेरे अ
यारसयारी जानतेहो कबीर
देदरबेसहोके अपनेबेसकं
हैं पहिचानतेहो ७५ मुटीसो
मुटायके याहिकरो पटापाक
हिबकाफलनोजी केतफल
है केतेफलिगाए एकरैनिकाहे
नापेषनाजी कातेहिलजोसाड
यासेती हमहेनेहजोग्याजहो
नोथो सतगुरुकबीरबिचा
कहे क्याकूलरोमेंगुडफोडेड
या ७६ जागिजागिमुहागा
चाहीयेर पेगमगुरुनेनस
दीआ पीया नागिबेरा

नागमुलै दिबिङहिपुर्ये येजा
पुचीन्हां घटघटसुघटनिहारे
देषो आपसाहिबजहांबासकी
न्हां फाडिफहिफटकिमिलो
यहकहतनां आपकबीरकोन्हे
७७ नांवकाषेलअलेपहेरे।
लषपावैसोईजानताहै तनमन
कीमिलताहरिकरै सोईपुमसु
षपावताहै कैहैकबीरगुगनू
निरष्या मानामोहरसूलगुमा
वताहै ७८ बुंदतेरघटअंडको
नबोलै उसबोलताकेपहिचा
नजारे तुम्हाकथहोआपाकहि
जायगाकहांकहोजानवाले चे
कंवोरतेनरबरमताहै येकबुंद
कीजिंदजगतसारे तेरेघटपेरा
असवारपवना तुदेषिभेदांतमे
बांतन्यारे छिनन्यारिबोजातकी
छेलनारे देषेकोनजीतेदषे

हारे देषेकिसका आमन्द
नाकघोरा देषेकौनमेदानमें
हे मारे बाजी ८ आयुलगी सब
जेरकवा देषेकौनाहमतिस
घडारे ज्मामें आपकबीर
वाजिलीया उसेजानताहैंजग
रै ७८ लमलपजुवानलु
बीर हकहककीयमेंहकहेरे
हफेकुन्हेमिलायकहे
डिडुला अहमदहेरे आप
आपमें लायरहा यातनहीमें
लबहेरे लौलायकबीरके
यादिकरो दमदमसाहिबखर
हेरे ८० कोईजोगीजगम
रे कोईसिरडीसिपतीबकते
कोईपीयाकेमागरआयला
बादिशिनितरितकतेहैं को
सोफीआलमदहैतेहैं को
मनमेंबकतेहैं

चियारो हमतुमन्हीहोसकतेहैं
८१॥ अपुज आत्माजुं कातुउली
येमनअनेकसाहेयेरह्या चंता
चाहिमैसारबि सारदीया मतिही
नदेषोगतिपोयरह्या घृतहाथिय
केन्हीआईयाजी देषोनारविलो
यरह्या सोबिचारबिनाकहांप
ईयुजी अविचारसंमरषहोयर
ह्या ८२ पापअरुपुन्यकेबीज
देई चिगंधानअगनिमेडारियजी
पांचचोरविषेपसंबसकीये ।
बचारनगरमेमारियेजी चिदानं
दसागरमेजायेउली मनचितदो
उलेडारियजी जबआपकहांअ
रुओरकेते मोजलनकेपारउतारि
येजी ८३ देसदेसफिरेफिरिथा
के संतोषकादेसमेसुषपाया संते
षबिनाउलीसुषकहां मनजहांत
हांधेहजाषआया जितितितहां

देदलादयह सो निचात्त्रिनेमको
संगपाया पंचप्रपंच अनित्यजो
त्यो चेतनसरूपसुषिलत्याया ८
४ सोई आपसूं आपमें आपलूका
सोईसाथ अगाधअथाहहेजी पा
पनपुन्यन आपजहां तहांपरमतो
जतराइहेजी अछेत्तअषंडअपा
रजहां त्योंहित न दूरकी चाहहै
जी नजीकतहरिहजुरिसदानली
पारनपारनथाहहेजी ८५ चिंता
चाहि केहाथिबिकायरह्या सोई
देषिसदासोताजहेजी कोटिलोजन
केतुंमबीचारिदेषो तस्मालसूंने
कहाकाजहेजी उलीकालिह्हि
कालिहकीजांनीयेजी हरिनजले
कादिनआजिहेजी साधसंगमेजन
नसुधारिलीजे कहांकहांकिसी
कीलाजहेजी ८६ कोईरांमरही
नकरीमकहे अरहं

मेषाहे हिंदुतुरकजैनी जेपाल
रम्यानका एक परेषाहे बेद कतै
तेव पुरान कुरांन सबनका एक
विवेषादे अमरकबीरकेदीनदे
यासमता पैरमैनी लेषाहे ०७
होतसुरचलैसोभावसेती नामै
सुवलेटाआवेताहे विकिगा
लापिसलातीननारी सुषमनिते
मोजनपावेताहे पूरकक रैकुंभे
कलैरेचकककरसे फेरिजावेता
हे कायंतकबीरकाफनताजी
देषामूलनिपरेपिछितावताहे ०
८ मुंणीदिलसदस्केदेषियजी
जोपदमकाकोमुजबकीता आ
वोबोलताथा आध्याचालताथा
देनहेमजमायकेदमलीता नाई
देहरीदमकोप्रीतिबोछी प्रांनव
नतकाबांकेडारिदीता मूणीमन
कीछोड्अजमयारो कायागढमे

नेदलीता दासकबीरबि
ज्यानेदमराष्ट्राजानेज
जोधिको
भोपारे सि
नी
कीहिदेविचधारे दीर्घसे
कोनहे श्रुतिश्रोरस
श्रोषधिकोनहेता
जनसततरामहेबुद्ध
बचारे ए० जाकेबस्योनुरता
को तामतिधीरकोपार
बिरक्तहोकुकीग्रह्आश्रम
नी
चक्रनंचकोबोरानहीकाक जो
नजेजाकोनासेअंधेरा जनस
श्रोरनि
बेराए पाकजी
तिमजान
केहसराकोंनहोवे कसरतकरै

२

सुनमटनेके सुघटमकैसेगादी
दा होवे कोइचूनकहैवे चूनक
है जीवजांनिकै आपकेआप
माहै दुरंजेककबीरकोदया
हैहुतमेएककाएहोवे ए२
जातेदीदारसुरतिहैनहीसुन
नेहरी आरजोती आपविस
रकधांनधरे टके जोतजांइसा
तोमनमाती असलके छोडन
कलगहै कैनेमआचारसुत
कधोती कबीरकहैएकनाम
बिना पिंनलसूनेपटिपढिपो
ती एड सतनामकबीरकाधो
महै नाम ... मुकाम
तदेसहैजी जबकतनासतमह
कलनाहल सेतोममुकामतो
सहैजी आतीया अमीयागोर
कुतेजीया एहतोराहसबपेस
हैजी कबीरकीराहपरकोई

॥ सोईसो चादरवेसहेजी ऐ
ध दरवेस सुल्तू हैतकमेटकरे
जवरासीत उपरेवचितराषे ज
रषतवांदरीके जोरसेती वहुप्र
पहतामुदाम चाषे इस लोक
के प्रेमकु छोडि करे अजावस
बावदोतेनाषे सतकबीरदया
कों जोसाचसषुन हदनाषे
सोपु साच्च जानेजबसाचनहीत
जीयेहक्क ऊवजेहानवहायदे
वे तनमनकु साबुतकरे दिल
दारके दिलकु हाथ लेवे जोनम
जहानिरासकरे प्रेमप्रीतली
यागुरगोमसेवे उसदीनगरीब
कीनावकु सतगुरकबीरजो
आपषेवे
गाइये

कजी

बुगकागाकी चालमिटायकै सतनांमसुनायकै हंसकीया धरमदासकबीरकै बुजनीया विषह्योमि अमरतअघायपी ले गु अमरतअघायकेपजीय होईजांन कैसबेरसमारदीजे गुरगमतें नांमकै जपीयरै प्रेम हीतसदासंभारकीजे टरपो महलमेजाइयैरे अमरमयाजु गजुगजीजे कुरषकैपगकेपर सिकेरे कबीरसेंजायअरसेव लीजे ऐठ अरसपकबीरसुजा नमिलो तबकालजंजालसब दूरभागे प्रेमप्रीतहीयामेरापी रै सुरतिनिरतसं मन रागो पी संगमदअनंदकरै विषयाके संगमेनाहिराषे साहिबकबीर दयाकरै जोसांचसुबनहरदेमे भाषे ऐए सतगुरकबीरबता

नरनीरगंभीरजोहांत
सरबीरसरारमेबोजघके व
चेदम
सब्दकी
गहोकोरसूरत
कबीरकेचरनमेंमा
१०० अजीक्याबकनेक
कहूंनपलेच
कहूनेहराने सां
बकबकघकेबु
बुझहारे कायमकबीरकाफ
जी एहपीचहुकेताकेपंथ
१०१ सतगुरकबीरसुप्रीत
गी बेदनामजगतमेंहायरहा
कहूमारतमुलकसुकामनाही त
नमन ली आपनाबोघस्हा भेला
लोकफिरै हंसआसकी कुहंसआ
सकी कादिनदोपरहा सतगुरक
बीरसुप्रीतलगी

सामुहला १०२ संपतके गटके
हला सकुंवारसमुदकानीरया
जी जाके बीसमुजादससीस
हला कुं सकरनसाबीरयाजी
कुब्रा. सेजासनखेठताया उज
मगजडानेका. सीरयाजी असम
नकहैकानेके. केदीया जी
दामके सनकानीरयाजी १०३
नीरहकेसकानीरयाजी हिको
के. रहेसु. नके नहिसाहिकों
तेरे नागसनेरहेमीनी हु
कोनको सहिब्रोहेयमारे बो
नीरके सन कामै उहिचलो गा
फिलगुमीनसकेकानीहैं तेरेमे
नागनीसनेमी धरम
समगा जलानीकेलसी सतगुर
दानकेहै ने सुतसखेह १०४ गाव
हलानेसाना नी
हवाडागजरा. जरुमै नेबेतं
सोनापुरावनेको नेजाकोजे
सी ने नरकिकेहै रागरंगाकां
सी वे नरकिहे

नगावनेका॥जो केलावेनल
संगचलै॥भूपतिसबैमनभावने
धरमदासकहै चेतचेतभू
कदीनसू नैकैनैही जावनेका
१०५॥गढकोटबजोलाधरेरहैगे
रहैगीबाईयांतोबसीना॥सिबे
सिपाईका जोरनही॥नगाव
नगौनहीकोकजोनां॥कीयेकर्म
संगचलै॥जमरायकेसंगलोज
रजोनां॥धर्मदासकहैतेरीकोन
चलौ॥कहैकितगयेरावणरां
णा॥१०६॥मसतकमुडायकेसाधकुवा
रेकुवाकमेंआचारजूकी॥तीर
थजावेपसारलावेकंठीमालासूं
रसारहैजी॥घरघरदेवेपूजालेवे
काकूपैनहीकरतउधारहैजी॥क
बीरकहैफिरग्यानकथेआवैनही
धुकारहैजी॥१०७॥कंठीमालापसा
दकुंवेचकैजीजोरिप

गायरहा॥१०२॥ संवतन के गढलंक
हता चक्रं वो रसमुद्र कानीरथा
जी जाके बीसमूजा दससीस
हता कुंभकरन लाबीरथा जी
सुभ्रम सिंघासन बैठताथा जेग
मगजडा वका लीरथा जी धरम
दास कहै काल कै किदीया जी
निरंकस कालीरथा जी १०२
करि बेम्रा लिक पाहि साहिब की
तेरे मागम ले नरदेह मीली सु
लतान की साहिबी देषि प्यार वो
भी एक पलक मे गेघि चली गा
फिलनु मानक्षकतीहे तेरेमे
रपरगाजता कालबली धरम
दास कहै चेत चेतछे सतगुर
बतावते बात मली १०४ गाव
टघोडा गाजरा जहमे नौबत नि
सोनघुरावने का नेजा फौज
ली चकर किहे रागरंग कतं

चेत गावनेका॥जाकेल्गावैनेसव
रसंग चलै॥भूपतिसबैमनभावने
का धरमदासकहै चेत चेत कुंअ
रकदीन कू कहै ही जावनेका
१०५॥गढकोटसबजोना धरे रहेंगे
भरीरहैंगीभाईयांतोबयौना॥सिले
पोससिपाईकाजोरनहीं॥लगाव
नगेनहींकोकबोनां॥कीयेकमें
तेरे संगचलै॥जमरायकेसंगतोज
रूरजानां॥धर्मदासकहैतेरीकोन
चलीं॥कहैंकितगयेरावणरां
णा।१०६॥मस्तकमुडायकैसाधकुवा
करेहैंवाकमेंआचारजूकी॥तीर
थजावेषसारल्यावैकंठीमालासूं
दरसारहैंजी॥घरघरदेवैषूजा।लेवै
काहूपैनहींकरलउधारहैंजी॥क
बीरकहैंफिरग्यानकथैआवैनहीं
धकारहैंजी॥१०७॥कंठीमालाषसा
दकूंवेचैकैजीजोरिपईसानाजकूं

तेहैं॥घरघरमैंगुजरांनकेरेस
गाडिजमामैंदेतेहैं॥महंगाहोय
नमोलिवेचेगिणगिणदेवैगुडे
कितेहैं कबीरकहैफिरमांनक
येहमबालाहीपनकेचेतेहैं॥१०६
चुपचुपरहोगईकरजावोवडेक्ष
हमीहोकरमालपाई॥चतुराईजा
हरफिनकरोतेरीबोलीमेंपहिचा
नपाईअंधकंधमेंजनमगुमावते
होमानध्यांनकीमूलिजुडगहीहै
सतकबीरबिचारकहैगंधीबोल
ताहैजेमेंमांगपाई॥१०९॥मेंडीयां
मंडफछांडिदेवैटकबनमेंकूप
डाखावटटीका रूपसिंगारजिनू
कूंचाहीयेजीसोतोसाहिबकहोप
लटीको॥सकासकाटुकेडाबाय
केजीकालालहूलाकरैयेपटपटीक
ककीरीराहबावनिजलीपगधर
हैलिकेसेंत्र्यछतीका॥११०॥कूंपाहे

काचीचांमकाजी।जिसकेघीवडूंसलकोईयावलेहै।चांमपकायचडसकीया॥जिसकेनीरकोंदोसलगावलेहैजरद्‌कपीडाकूंत्यागदेवैमोथमुसककूंयावतैं कवीरकहैवेमूलिमारी॥लजिसुद्धिसुषकोपावतेहै॥१११॥कोइरामिजराशिरघाथमेलेकोइऔहिवागंमररहनगाकोइगूदडीछापातिलकदीयागैलेकंठीकंवमुजडूंडदगा॥कोइकानफड्ड्यमुझाजपहरेप्रेहसांनफिरेविरहविरोगपगा॥कवीरकहैंअपसोचयारोबायडंडफिरेमांनोंमूलनगा॥११२॥वांवीबंधेनगपूजनेनेसीवीसिवगमैंअटकेहैसीयासूंलीबंधेरोजाकसैरसवादीरसपरवटकेहै॥रांमांजपूजाआचारबंधेजेनीप्रतिमामुषपटकेहै॥कवीरकहैंसवमेंदवादीवेकेदसोही।जिनकटकेहै॥११३॥॥॥

२ अथ ग्रंथ भोपालबोध लिष्यते । चौपई
धरमदास बिनवै कर जोरी ॥ सतगुर
सुनो बीनती मोरी ॥ सो ब्यौरा कैसी बि
धि छूटै ॥ जम बंधन कैसे करि टूटै ॥१॥
सोइ ब्यावहार नहीं पारा ॥ तामैं अट
क्या सब संसारा ॥ सोइ ब्याव कूं सो बि
धि ध्यावै ॥ पार पुरष कौं कैसें पावै ॥२॥
कहूं भगति कैं जोग कमांऊं ॥ देहूं
दान कै तीरथ न्हांऊं ॥ कहूं जप कै
हूं डीसा धूं ॥ बरत करूं कै हरि आरा
धूं ॥३॥ कहूं अचार साधना साधूं ॥ बा
हरि फिरूं कैं मन कूं बांधूं ॥ जो तुम क
हो सोही मैं करिहूं ॥ बचन तुम्हार हि
रदा मैं धरिहूं ॥४॥ भौसागर दुष मेटो
मोरा ॥ छूटै जनम मरन का फेरा ॥ संसै
रहैत करो मोहि स्वांमी ॥ तुम सब घट
मैं अंतरजांमी ॥५॥ सुनि धर्मदास मैं स
ति बतांऊं ॥ भवसागर को मर्म मिटांऊं ॥
संसै रहित सदा तुम होऊ ॥ तुमरी राह

रोकेंकोकाई।करोनगतिलोबंध
टोजनममरनकीसेसैमेटो।भावः
गतिकरोचितलाईसेवोसाधत
मानबडाई।७।सुनिधरमनिमगती।
टकेचाईनसीटीकोईनहीपकं
जोगीजोगसाधनकरहीमोसम
नहीतिरही।८।दानदेयसोही
लपावे।मोसागरभोगणकूआवे
रथन्हायेंजोफलहोईसोसबः
षिमुणेकेतोही।७।जनमलेयः
तेजालतनपावे।धनबंताहोयजोनी
आवे।कंचेघरलेवेओतारा।बांसः
णछत्रीकरेबिवहारा।१०।इंडीसाधन
नीका।बिनांग्यांनजोनिस
।इंडीसाधेंतमहोयभारी।तांमस
तेजकोधअधिकारी।११।कोधकीयां
गतिमुक्तिनपावे।भक्तिपदारथहा
नआवे।बरतयेकभगतीकापूरा
ओरबरतसबकीजेहरा।१२।औरव

रतसबजमकोफांसी॥ भक्तिबरत
मिलीयाजुबिनासी॥ हरिआराधन
कीयाबाता॥ कछुभेदतोहियात
नजाता॥१३॥ हरहरनामसदासि
वकेरा॥ तासूंमिटैनमोकाफेरा॥ ब
होतश्रीतिसूंसिवकूंध्यावै॥ रिधि
सिधिसबबहोतसोपावै॥१४॥ मन
चितसूंनहचेकरियरही॥ कैला
सबैसोबासाकरही॥ फिरकेका
लकूपैठेजाई॥ नारिदेयमोसाग
रमांही॥१५॥ तैंसेंछूटैनांही॥
भवसागरभरमैंजीवजाई॥ सिव
साधनकीहेयागती॥ निरभैपद
नहीपावैरती॥१६॥ जाकुंसुमरैजो
जीजती॥ चौरासीनरमैंउतपती॥ हि
रहरकीयाकथासुणाई॥ आगैंजो
सुनांऊंभाई॥१७॥ साखी॥ सिवसा
धनकीयागती॥ सिवहैमोकारूप॥
किनांसमझियाजगतसब॥ पत्या

कं॥सा॥१८॥चोपई॥हरिहरिनां
बिस्नकाहोई॥बिसनबिस्नमांमेंहि
कोई॥बिस्नहीकंकरताजगतलोके
कहेजीवकेसेफलपावे॥१९॥हल्के
मांही॥बिस्नबिराजे॥प्राणीनांसी
बिसनहींगाजे॥सकलभोगबिस्न
लेही॥भोगकरेजगमहमेंदेही॥२०
हरिहरिनामबिस्नकानामा॥सुभग्र
अशुभकरमदोराधाइननैंकारे॥
लोलसदाईकरैभोगजीवनमह
माही॥२१॥बहोतप्रीतिकरिबिस्नको॥
वैसोजीवबिस्नपुरीमेंजावे॥बि
पुरीमेंफिरमेंनांही॥फिरआवेमें
मांही॥२२॥हरिहरिनामबिस्नका
मी॥२३॥वहरिकोतुनिश्चोंकरसाखी
इसाषी॥हरिहरिनामबिस्नका॥
नजीवकीयासबजेरचोरासीन
,दामिटेनभवकाफेरा॥२४॥चो
ईतुनिसैधरमदासतुमसाधु॥

जीमलिआराधूहरीहरब्रह्मा
कोहैनांउं रजोगुनब्यापरह्यौसब
गकं २५ जगतकहैंब्रह्माहैक
रता नरममांहिसबही बहमरता
ह्मां ह्मणक्षेजेसंसारा सोजीवतै
पनमोसंसारा रहीपटिरबिच्यु
जगनरमावै नगतिपदारथह
खिनन्हावै कोइपावकरैदिनरा
ती एसबहीमर्मकीउनपाती २७
आपनरममैनिरमैनांहीं बहेजा
त नरमकेमांहीं औराकूरसिपाप
णदेहीं तासूंमिलैनपरमसनेही
२८ पापपुन्यकालेबाकरिहीं बि
तां नगतिचौरासीपरिहीं येब्रह्म
कीहैकरतूती ब्राह्मणजेहोय
नमुक्ती [illegible] सरगुननगति
हैजगतकी निरगुनलिबेनकोय
सरगुनिरगुनदोमिटै नकिरह
निघरहोय २९ यात्रिगुनकीनकि

पई॥धरमदासमुनिसंतसुजांनां॥नि
रगुनकाअबकहेंबखांनां॥निरगुन
नांमनिरंजनमाई॥तिनैंसबजुगपति
बनाई॥४॥निरगुनसंमयाॐकारा
तासैंतीनौंगुनविसतारा॥निरगुनसैं
नयोमनअचंडा॥ताकोवासमकल
ब्रह्मंडा॥२॥ॐकारमनआपनिरं
जनानांनांबिधिकेकीयेमंजन॥भांति
भांतिकाघाटसवारा॥कहांलगबर
नूंवारनपारा॥३॥धंधाकेअंसमकल
अोतारा॥रांमकृस्नतामैंसिरदारा॥सु
रणआपनिरंजनहोई॥तामैंकेरफार
नहीकोई॥४॥पूसरगुननिरगुनकीक
रैसेवा॥भगतिकरैअरुपूजेदेवा॥
करैअचारविचारनजांनैं॥सोमैरै
मनकअरथमांनैं॥धींमनबोधेअनमु
हिसमावै॥बिजमनकूंकोईनहीं ५॥

मन कौं धोध करै जो कोई ॥ मन पहौं
चावै पकुचै सोई ॥ ३७ ॥ जाय निरंज
न मांहि समावै ॥ आगैं मन का ह्
पावै ॥ ऐसैं तीन लोक सब लूटकै
घरै सब लोनैं सबही नटकै ॥ ३८ ॥ रिष
मुनि गन गंद्रफ देवा ॥ सब मिलि क
रै निरंजन सेवा ॥ सिध साधिक साध
जो नवैक ॥ इनकै आगै को इन ग
वैक ॥ ३९ ॥ बहोत प्रीति नक्कि विभ्भा
री ॥ मिलन २ मिलै अधिकारी ॥ जा
य निरंजन सें होय भेटा ॥ काल लू
पधरि करैं समेटा ॥ ४० ॥ याही निरंज
न केर पसारा ॥ तामैं उरभ्या सब सं
सारा ॥ जहां तहां राखे बिलमाई ॥ र
चनां अनंत अपार बनाई ॥ ४१ ॥ धर
मदास तुम नगति सनेही ॥ इनमें जि
न अटकावो देही ॥ जनम धरत बू
टै नहीं नाई ॥ तातें आय कहौं गह
राई ॥ ४२ ॥ गुपति भक्ति जां लैन हीं

कोईसुरतिसनेहीपावैसोईधनूहो
हा इनसूंभगतीउपजिहैअरमलिसुनैं
सुजांनाभगतिकरैभरमैनहीसोही
भक्तिपरवांना४४चोपई।हिसांमी
मैंनाहिनजांणीउपतिभक्तिमोहिन
होवखांणीतुमव्याभक्तिकहांसूंआं
नासोहीबातमोहिकहोसुजांना४५
तुमरीभगतिकोणबिधिपावैकोण
भांतिकीभक्तिकहावैकीजैभगति
कौनप्रकारातकेस्वांमीकहोबिचा
रा४६भक्तिरसबजगतबखांनैंभ
जांनैंसोनिष्ठैमो
हा।भोवारीभर्मैंडढ
भक्तिकसं
६
२कहैकव
तै९

...ई ... ह्यादि नाकेसिव
तु ... नगाई ... नजुगमेकेरी
लोगी केरी नसीगुवतनजुगमेकेरी
जोगकेजरु नगतिकुमाके छवि
... कनोमधुनिस्मा ... नि. ऋतुहै
... करनामधुनि ... नकसारा
... रेकाय ताके ... नाम
रहैधरबूलनकेने ... हैमरी
ताके ... नावे ... ताहै
... सारी ताकेको जाते संसारीता
... जीवनी
के जगखरन ... विवसे ... कन
... बनावे ... निवल ... जोगे
... जाते ... नीताति छ ... को ...
... ... गनबतावे ती ... नरे
... ... जोते ... नहमारे ...
... नीतेब ... ने ... नबे ... रनहीम्र
... ... नगनेबले ... रनछव
... ... कहं वरनछब
... नेधरम ... चरना ... नन
... ... लेबेले ... दिव
... ... नारा ननाका ... कान
... ... द ... वजवडकान
... हैरह ... नसेक ... पार

केलाव्र स्मालेवहीपणयक्त
सकादि कसोनहचलरहे स। औतस्त
रनिरंजनमांहा। निरंजनसंवेन्यारेला
हो।धर्मीमेरा सेदनिरंजनपारा। ताके
अंससकलअोतारा।इहांलांईकोइ
विरलाजांने।आगेकहोंकैपाछिछिमां
भगलिकरेनरलोइहे
भगतिनजांणेकोई।भगतिकुने
।निरसैघरकंपावत
।पथानगतिकरैतनभगतिकहा
भगतिसंरहितनकोईपावे।भगमु
भगकेमां
हो।भगसन्यारा कोईनांहो।सारीजुग
तुमकुदिषलाइनहांसुरतिरहे
।भुगतेभगअरुभग
फिरिजोंणीसंकटऋोवै
नक्रिमुक्तिकोजांनां।ताकाअ
वागवनमिसांनां।ईश

तबहोई॥ बिनाभगतिसबजायबि
गोई॥ भगतीभेदबहोतहैभाई॥ नि
रमलभगतिनकारूपाई॥ ६२॥ तुमसं
जोपूछीभगतिप्रकारा॥ ताकोभेद
सुनोअबन्यारा॥ भगतिहोयनहींनां
चेगाये॥ भगतिनहोवैंघंटबजाये॥
६३॥ भगतिनहोवैमूरतिपूजा॥ मूरति
पूजिकहातोहिसूझा॥ बिमलरंगा
वेसूकरोवै॥ छिनइकप्रेमजनम
सोवै॥ ६४॥ नैसैंसाहिबमोंनतनाही
येसबकारनरूपकीछांही॥ मनहींगा
येमनहींसेवै॥ मनहींजागेमन
वै॥ ६५॥ जोलोंभीतरिलगननिला
गोलगसुरतिकबूनहींजागै॥ सति
साहिबकीखबरिनपाई॥ कौंणकी
भगतिकरोरेभाई॥ ६६॥ गोरखिकों
णिजांणतनाही॥ ऊंहीमगनरहे
मनमांही॥ कहैनसुननकोभगति
कहावै॥ भगतिमावस्तुमनैनहीं

वो।ई७।ऐमत्तजगनिविन जगतेन
संगतिपावेनहीकोई।ग्रवतांसा
कौनहीजांनों।जिनदेष्यांसलक
षोनो।ई८।ऐसेंमूलिमरोसंसारा।
जन्नपारातततभगतिकूंनाहीं
ऐसेंहैसबजीवसूत्ताग।ईए।धरम
तुमहोवुधिवंता।भगतिकरोसंति।
वोसंता।येकपुरषहैत्रगमऋ
सबघटब्यापकसबसूंन्यारा।७०।ता
कूंनहीजांनैसंसारा।जाकीभगति
नसारा।भगतिकरेउतरेनोपारा।सु
तिनिरतिकरिसेवेसारा।७१।या वि
गतिपदाछूपावै।मुक्तिहोयजोवहो
रिनआवै।भोसागरसूंउतरेपारा।फिर
जंगनहीलेऔतारा।७२।ऐसीज
मुक्तिकोदाता।जाकीगतिनहीलिं
विधाता।भगतिहीभगतिभेदबहो
याहैभक्तिसबनसूंन्यारी।७३॥
हाभक्तिपदारथऋ्यासफलातु

रिरहिवार॥पावेपूरणगुरसकंज
नहीलेश्रोतार॥७४॥चोपई॥घस
कहेंसुनोंगुसांई॥पूरणगुरषबसेंकिं
ग्री॥केसीबिधसोंसेवाकीजे॥केंसें
रणकेंवलचितदीजे॥७५॥कौण
तिसाधूसोंनगती॥सतगुरमोहिं
तावोजुगती॥सतगुरुवाच॥पहिं
प्रेमजुगमजोल्यावे॥साधदेषिंदु
पुषहोयधावे॥७६॥चरणधोय
रणामृतलेवे॥प्रीतिसहितसंत
नकंसेवे॥अंतरछोडिकरेसिव
॥याबिधिमोकाडषमिटाई॥७७॥
जोसाधूप्रमगतिजाणें॥तासाधूकीसे
वाणें॥प्रमपुरषकीमतिदिटावे
तिनिरतिकरितहांपकुंचावे॥७
॥तासूंप्रीतिकरेचितलाई॥छांडो
रमतिकुलचतुराई॥तबहीपार
षकोंपावें॥मोतरिकैंजगबहो
रिनआवे॥७८॥मोतिरणांसंसान

हौतौहीजोछलनहौपुनिसौजौमैसौं
किसीबातकौसंकटकहनं।तिसौ
मगतिन्हचेकरिलिस्तौ।छ।अंतरमें
दासभईचितलाईसिकलभेदमो
हिदेहोलिषाई।निरगुनसहितसा
रानंतांकैसेंजानिकरौं।तिहिमांहं
८शहेस्वांमीयाकेउचरजवाला।निगं
तिकरनकोहालजाला।सरगुननि
त्रिकेरेसंसारा।निरगुणजोगेस्वरं
आधारा।८राइनदोन्नंकैपारवतांय
तुमकैसीविधितहांमनलांयां।सति
बातमोहिकहेगुसांईकैसेंगुरति
लगोउधाई।८।निरगुनिरगुनपा
रनकोई मैरैमनवडसंसेहोई।सत
गुरसंसेदेहोनिवारी।मैंजाउतुमरी
बलिहारी।८॥निरगुनसरगुनभेद
बतावो।तीसरन्यारामोहिदिषावो
मेरैमनपतियावतनांही।वहोतफि
करउपजीमनमांह

म समर्थ सांई डिट करि१ करि मे
रावांही सरब जुगति दिखलावो
मोही अंतर कछु नराखो गोई तु
म हो सत्ति सत्ति तुम बाता मैं जाच्य
क तुम समरथ दाता देहो मोहि मैं
मांगू सोई सोही क्रिपा वो मिटै दि
त दोई ८७ सतत समर्थ
धनी सत करो प्रकास सतलोक
प डंका पडै छूटै नो की त्रास ८
८ सुनि धरम नि सब क
हूं संदेसा तुम कौं होय न नोका
न्हे सा भोस्यार ए संमरथ है म्या
रा ताकूं नही जाणै संसारा ८ए जो
गेस्वर जि हीन तिनही पावे सिध
साधिक की कौण चलावे भगति
होय जगत मैं भारी ध्रुव प्रहलाद स
दा अधिकारी ए० और भगति नही
इन सम कोई रानक अप्रगट नही
गोई होत नूं जनां देवबरत साधा ए

कएक इहू आराध्या॥ए भ्रन्दभुगा
भगति करी धूराजा॥नी ब्रजर भ्रुसल
देहसमाजा॥निकस गलसूं नाहरि
गपेउ॥नारदकै उपदेस मेधे उ॥ऐर
कुठेमांस प्रगटहि सिद्या॥राजदी
यावैकुंटपगया॥माटिलजारकरस
कीयाराजू॥राजजोडिलै कुंडलिराजू
एरा॥एकद्योसफिरि प्रलैआईनहां
सूंफिरि देह गिराई॥सांमीजी मुक्ति
दीनी॥परमपुरषगति तो ह्नै चीली
एधांकालपुरलसबराछैरी॥अमर
पुरषगति जामन हेरी॥सो भगति
नयेजुगमांहीं॥सतपुरषगतिपावै
तनाहीं॥एपुंसरगुनभगतिकरैया
पावै॥निरगुनमांहीं नांहिसमावै॥जो
साजोजहीगतिपूरी॥देवनिरंजनजा
महजूरी॥एईजोतिसरूपीताकानां
उं॥च्यारिमुक्तिहैताकेठांउं॥सालोकी
सांमीनीकही॥सारूपीसाजोजीलही॥

९७ आरिसुकतिजाकैंघरहोइ ताकोपारनपावैकोइ ताकैं पैसी रंग्रसथांनां कैसीभगतिकहांक हूंग्यांनां ९८ सोरठा धूकीगतिसों कही धरमदाससुजांन अपर मपारनपावही पूरणपदनिरबां ण ९९ चोपई सुनिधरमनिधा कथ्यानन्यारी बडीभगतिप्रहला दनिन्यारी दरसनांकुसदांवनवं लकारा ताकैंघरलीनौंअवतारा १०० तपकैंकाजगयेबनमांही कोईबातनकोसंसैंनांही दूसबंत होतीतानारी इंद्रआयसुणीअ धिकारी १०१ नवबांणीलूनइंद्र आजा इंद्रसणकोलेहराजाहर नांकुंसघरजनमधाराई लेइंद्र सणलेहैजाई १०२ इंद्रकुंसंसैं उपजीभारी ग्रभवाससंदेहंडा रीयाछलइंद्रकीयोअधकारी

अपणें देस लेग मो मारी ॥१०२॥ तन लि
न नारद आये तन हां दुस हमको
न हां इन को भ्रम न चीरो ना ॥ जा ति
हो घसबको सुभ दाई ॥१०४॥ नहीं मां
हिम्पांनत हां दीनों। नारद एकुकामन
दुकीनों। दिढ तालो नभ्रम कै मांही
बरघह जा रहे ते ठांई ॥१०५॥ फिरि नारी
अपनें घर आई। इन कों जी लिह रनां
कुस पाई। जहां जनमली नों प्रहलादा
रांम रटन रस ला ले सुवादा ॥१०६॥ औरं
सौ रटन लगाई मारी। तास मन गति न
को अधकारी। केतो कष्ट हो सि
र अपनें। तो कन कुछ व्याप्यो सुपनें
१०७॥ हरनाकुस के नन नैं आई तेरो
रांम मोहि दे हे बतलाई ॥ थंभ फारि ली
नों औतारा। निरसिंघ रूप नहांत अप
रा ॥१०८॥ फिरि कें इंद्र सत्रप कुंचाया।
सरग भांति जो ति समझाया ॥ औसा वर
तरांमह ठ गही आ। लोबी इंद्रासन सु

लहीया ॥१०८॥ जैसे नगारि नये ज
मांही ॥ ताकी गतितुम कूं समझाई
॥ इस एकोराजसुणांतं ॥ महा भोगन
लेसुषपात ॥ ११०॥ सतरि हो यज्ञलोक
सुभमनाबंधनमोका हो जनतुक
ता ॥ बेहलोगतिकी कथासुणाई ॥
ज्योंग्रोरकहै तोहि नाई ॥ १११ ॥ दो
कहूं इराजसुष लोगपकें ॥ कीरिम
ज्यूं ॥ सागरमांहि ॥ आसरगुनकी मग
लिसंवा निरमैकवहूं नांहि ॥ ११२ ॥
नौपाई ॥ धरमदासतुबेइचितलाई
सतगुरसंसैदेहोमिटाई ॥ सरगुन
भगतिमुक्तिनहीं होई ॥ है नाये
कहैं वेदोरे ॥ ११३ ॥ ॥ या संदेह मिटा
वो मेरो ॥ तुमसमरथ मैं बंदा तेरा
कोसरगुनको निरगुण कहीये ॥
लिम्यभिनभेदतालहीये ॥ ११४ ॥
सकलनिहकाहेसूंनये ॥ यह
निनजुगतिनका ॥ कहै ॥ जो म

दयातुं नाहिं सो [illegible]
येहुं प्रति विचारी॥१५॥ पैसें साम
हां सो आया कों एब्रह्म है कों एहे मा
या छैं तर छोडि निरंतर भाषो॥ नों रं
नेदक छू नहीं गहो॥१६॥ भगति ने
दक हे मोहे स्वामी॥ सुमध नैसें अंत
जामी॥ जीव का निर्मल जल मांही
अब मो कें कलुस लैना हीं॥१७॥ सत
गुर मैं आधीन तुमारा॥ तुम्ह हीं मो कें
तारनहारा॥१८॥ दोहा॥ निरसंसैप
दक है मोहि समझो समझाइ फिरि
मो में नर मूं वही नहीं रहैं लौ लावा॥१
१९॥ कहैं सुनें सुभक्त पुजै मो मैं आवै
नांहि॥ सो घर मोहि लिखाय हो का
रहैं सिरनाय॥२०॥ चोपई॥ कहैं क
रसुणो धर्मदासा॥ अब निज भेद
प्रकासा॥ सुरति लगाय सुणो मम
णी॥ छांनि त्ते हो ज्यों जानो पाणी॥२१॥
सुद्ध भगति अति भारी कीणी॥ सो ज

पलहीया ॥१०९॥ जैसे नगति मयेज
गमांही ताकी गतितुम कूं समजाई
इंद्र सणकोराजसुणाउं महाभोगम
लेसुषपाउ ॥११०॥ सतरिहे यलोक
कीसुगम बंधनमोकाहो अनसुक
ता बस लगतिकी कथासुणाई
पूछोजोरकहूं तोहि नाई ॥१११॥
इंद्रराजसुषलोपके किरिम
वसागरमांहि आतरगुनकी मग
तिसंनिरमैकबहूं नांहि ॥११२॥
धरमदासनकौं जितनाई
सतगुरसंसेदेहो मिटाई सरगुन
भगतिमुक तिनहीं होई है नाय
कहै दैदै ॥११३॥ यासंदेह मिटा
वोमेरा तुमसंमरथमे बंदा तेरा
कोसरगुनको निरगुण कहीये
लिम्न लिन्नभेदतालहीये ॥११४॥
सकलसिष्टकाहे संनमेतउ यह
नितजुगतिनका कहेउ जोमै

देषाजुनारीसि[illegible]नाई
ऐतुगतिविचारी॥११५॥जैनिसार
हांसोऽश्रायाकोंणब्रह्महैकोंणहैसो
याअंतरछोडिनिरंतरभाषो॥मो
नेदकछुनहींराषो॥११६॥भगतिभे
दकहोमोहेस्वामी॥तुमघटमेंअंत
जांमी॥जीवकाजआयेजगमांही॥
अबमोकेंकछुसंसैनांही॥११७॥स
गुरमेंआधीनतुमारा॥तुमहीमोके
तारनहारा॥११८॥दोहा॥निरसं
दकहोहेमोहिकहोसमझाइफिरि
नोमेंनरमूंव्हींतहांरहौंलौलाय॥१
१९॥कहेसुनेसुषकपजेनोमेंआ
नांहि॥सोघरमोहिलिषायहोका
रहैसिरनाय॥१२०॥चौपई॥कहैंक
रसुणोंधर्मदासा॥अबनिजभेक
प्रकासा॥सुरतिलगायसुणोंमम
णी॥छांनिल्लेहोज्यौंजांनोंपांणी॥१२
सुछभगतिअतिभारीकीणी॥सोज

गनंहिनंकाहूचीनी॥ आदिनतत

तनमाधिनमाया॥ ततपतिग्रलैहि

तीनकाया॥१२२सुंनसिषरनही

ततनमूला॥ कारनसुक्षमनहीअ

सथूला॥ आदिब्रह्मनाहीकें का

रा॥ नहीनिरंजननहीओतारा॥१२३

नौओतारनवोबिसरूपा॥ सुंन

पापनकाहूथापा॥ सुपेब्रह्मनहि

सोहंजापा॥ कालअकालनआ

पंआपा॥१२४नहिंतबसुंनसु

मेरनभारा॥ कुरमसेसनाहीअ

तारा॥ अछिरएकनहीररंकारा

निरगुनरूपनहीबिसतारा॥१२५

संगतिनजुगतिनआदिनवांनी॥

येकनदोयनसांनअपांनी॥ जा

पनथापनअजपाकोई॥ ब्राह्मन

सुवालकछुनहीहोई॥१२६॥ अक

थकथा॥ बिप्रीतिबषांनी॥ सुनिध

रमदासन्तैमसपांनी॥ नहींतब

नोधरमदासकहेंसुनोंगुसांईइनबु
ननवनवेकीनाहीं॥१२८॥कीयाजु
डासयेकसवगोरा।तुमहलैकेकोई
औरा।सतिसतिसतिमोहिकहीयो
मेंसेरहितसोई१९टलहीयो॥१२९॥अव
चाकरिपूछौंस्वामी।साधसंततुमअं
पगुसांई।कहैंकबीरसुनोंधर्मदास
सकलमेहमैंकीयाप्रकासा॥१३०॥
जोप्रतीतहोयजीवतेरा।तोकंमेहि
र॥ रहोंमेरे।धरमदासओहोसबमा
अस्थिरअमरअखंडितकाया।१३
नभक्तिमुक्तिअभजीहेजासू।प्रेमलव
निलगावोजासौं।अबमैंतोहिलठ
ऊंजागा।छूटेजनममरनकाधागा।१
२।जनममरनहेअतिदुषभारी।ता
हंतेतोहिलेहूंउबारी।मेंआपके

या मूंनांही देषिलेहोतुमबाहरिमें ही १३३ सो० अबतोहिभेदबतां ऊं निरमलगोरनिमार सबकेंपरें सबनकेंऊपरितहांहैयेकंकार १३४ सो० पुरषकहौंतोपुरषं क्रनांही पुर्षभयाअयाभौमांहीं सबदकह्रंतोसबदक्रनांही सब दहोयमायाकीछांही १३५ दो० बि नहोयनअधरअवाजा कहौंक हाऐगाजअगाजा इंमरतसागर वारनपारा नांजांनौंकेतोबिसता रा १३६ तामेंअधरभवनइकगा जअछूहनांमअछरइकलागा नांमकह्रंतोनांमनजाका धरतीनो मकालहैताका १३७ हैअनांम- अछरकेमांही नहअछरकोजां णतनांही धरमदासतहांबासह मारा कालअकालबारहीन्यारा १३८ ताकीनगतिकरैजोकोई

नोसूंछूटे जनमनहोई१२३।णदोहा
नोसागरनरमें नहीयाप्रतीतिहमारा॥
न्ह श्रेकरिकेंमानीयोतुरतउतारेपा
र१४०॥चोपई॥हेस्वामीयेअकथक
हांनी॥आगेमुणीनकाहूजांनी॥जो
गेस्वरनहीपावेपारा॥मैंकहाजांनों
जीवविचारा१४१॥अचरजगतितु
मनोहिबताई॥ताकीगतिकाहूनही
पाई॥ताकी नगतिकरूकौणभांती॥
रूपसरूपनपूजापांती॥१४२॥कोणजु
गतिसूं नगतिकरीजे॥अगमठोरकेसें
करिलीजे॥तुमजांणोंमोकूंलेजावो॥
जनमनछोडिदेहसुखपावो॥१४३॥अ
बकछुमोहिसुहावतनांही॥सुरतिस
माय गई तुममांही॥यहांवहांतुमस
मर्थदाता॥मोकूंजांनपरीयावाता
१४४॥नांमकबीरधर्योसोकाहे॥क
हाकारणदेहधरिआयेसतकबी
रनांममेंजांणा॥सोनांमेंकहूंकीयो

दोसहैमाई धरमरायरायेञ्रु टकाई गुपतमसाराहै ञ्रुति मारी ताहिञ्रुजं नैं नरञ्रुहनारी १५८ सिवगोरषसेषा रनपावै ओरजीवकाकोंएचलावै नौनाथचौरासीसिधा समझिबिनांगु गमैंरहे अंधा १५९ रिषीमुनीञ्रुसं मनभेषा सतिकोरुपनैनहीदेषा जोकहूंतोपतीयावतनांही बहो तकहूंसमझायमनमांही १६० को ईकहैजोगजुगतिमधमाता कोईकहैह मतिका बिधाता कोईमुनिदिसाम नलाया मूनीहोयकैंमूलगुमाया १६१ सतिपुरषकीजुगतिनपावा हि रदैधरैंनसतिकोनावा कोईकहैंह महैमजनीका काजञ्रुकाजलिये नहीजीवका १६२ कोईकहैहमप हेपुरानां ततञ्रुततसबेकछुजानं कोईकहैबिद्यापरबीनां सकलबि द्याहिकीसाहमचीनां १६३ कोईक

हसतपवसिराषा।त्तिपहै मूलकोर
बसाषा।कोईकरसकूं कहै सुमिका
करमहो सूत्रतलैंगेपारा।१ई४।कोई
कहै भमालिष्या सो हो झी।मागलिष्या
मैटैनही कोई।कहीं लूं लेक कैयाही
सबकही।भेदहंमारा कोइन लहीं।।
१ई५।सबसंहारि मांनिहसु बेला।येस
बजीवकालघरपेला।१ई६।दोहा।।
सोहीकालसोहीकृता।नगलिमुक्ति
ताहाथि।मेरोकहोनमानैपरपंची
बनसाथ।१ई७।निरंजनहैनिरबांण
पदकहतबडेबुधिवंता।जोगीजती
तपीसिनासी।कोइनपावैअंता।१ई
सातसुंन्यमैंरमिरह्या।सुरतिसात
साथि।ऐसीत्रगमअपारगति।
नाथा।१ई८।चौपई।।
सुंनकासकलपसारा।
कोइनन्यारासातसुं
बतोजेतामैंग्यांनसक

उतपनि भर तैयाके मांही॥ याग तिसूं कोइन्यारो नाहीं॥ प्रथमञ्जमी सुरति निज ठेरा॥ तहां निरंजन की नौ ठेरा॥१७१॥ वहांजायञ्जमी लेञ्जाया॥ तासूं ञजर बीज उपजाया॥ सोही बीजर ककैमै धरिया॥ ऐसी बिधि सूं उतपनि करिया॥१७२॥ बीजही जलका रंग कहाया॥ तासूं रचीसकल की काया॥ दू जी मूल सुरति तासें गा॥ घटघट मांहि बणावे रंगा॥१७३॥ तीजी चुंमक सुरति को ञपारा॥ नौ नारी में कीया पसारा॥ को गतहां बहतर करही॥ रूंम रूंम ञग तिसब धरही॥१७४॥ चोथी सुंन्य सुर तिहै भाई॥ धरमदास में तोहि लिखा ई॥ पांचमी सुरति ञ्रवण के गंई॥ बि गरी फिरे जहां कीतहांई॥१७५॥ छ ट्ठी सुरति द्विकां नां भाषूं॥ वां मवां स्वाद तहां चा षूं॥ सो तो रहै केव के दूरा॥ वांणी भाषें करै उचारा॥

हरदासौं
कुंन्यारी नांहीं॥ब्रह्म रूप धरि लहां

कोइ न जांणैं ता का मर्मे॥ग्यांनी ध्यांनी
सब ही भर्मे॥सात सुरति का कह्यौ वि
चारा॥धरमदास कछु वार न पारा॥१७
८॥सप्त कंवल का भेद बतांऊं॥कंव
ल२ की जुगति लिखांऊं॥मूल कंवल
है मूल दुवारा॥च्यारि पांषरी का बिं
सतारा॥१७९॥तहां बिनायक देव
बिराजा॥च्यारि पांषरी कंवल अस
छाजा॥ता ऊपरि कंवल है दूजा॥ष
टदल मैं ब्रह्मा की पूजा॥१८०॥तीजा
कंवल पांषरी आठा॥नाभी मांहि ना
लि सोसाठा॥चौथा कंवल हिरदै अस
थांनां॥लछमी सहित बसैं भगवांनां॥
१८१॥पांचवां कंवल ठिकांनां भाषौं
कंठ द्वार सिव सक्ती राषौं॥छठवां कंव
ल कुटी तीरा॥सोहल मांहि बसै दो बीरा

१८२ चंद सूर एककासा घट का। ये सब
म्यान निरंजन न टका। सात वांके कन
ब्रह्मंड के मांही। तहां निरंजन इसरनां
हीं। १८३ सात कंवल का कह्या भिं
नां। धरमदास बड भागी जांनां। १८४
दोहा सात कंवल न्यूर सात सुंन्य सा
त सुरति अस थांनां। अकी स ब्रह्मं
ड लगा। आप निरंजन ग्यान। १८५
च कवराज निरंजनां। गांव गांव नर
पूरि रसातल ब्रह्मंड लगा। कंकनि
कटक डुंहरि। १८६ चौपई। धुनि ध
रम निस बजु गति बषांणी। तुम आप
ने दिल मैं कहु जांणी। आदि अंत सब
तोहि लिषाई। उतपति प्रलै की गति
पाई। १८७ उतपति प्रलै सिरजनं
हारा। मेरा भेद निरंजन पारा। जा
सूं जगत न का हूं मांनां। जासूं तोहि
कहौं मैं ग्यांनां। १८८ जो को इ मांनै क
ह्या हमारा। सोही हंस निज है य हमा

रा।।ऋमरकंसूंकिरिमरननहोई।।ता
कोषूंहनपकरैकोई।।१८७।।किहि
केनहीजनमैंजगमांही।।कालकष्ट
कालतहांडपनांही।।सुखसागरसु
षमूलनबताई।।बडभागीहंसाकोई
पाई।।१८८।।संकरीजीवहोयहम्मा
रासो।।नोसागरसूंहैन्यारा।।प्रेमप्रीति
करैमनल्लाई।।ताकूंयापददेऊंलि
षाई।।१८९।।सुरतिवंतसाचाजीव
होई।।सरनितुम्हारीगहैसोई।।१९०।।
दोहा प्रथमदिढप्रतीतिहोयहोय
नगतिअंकूरा।।भावप्रीतिसेवाक
रेदेहैअंपाननरमूर।।१९१।।चोपई।।
अहोस्वांमीमैंकेंचीकीं।।आदिअंत
कीसबसुधिलीन्हा।।तुमहीवारतुम
हीहोपारा।।तुमहीसृष्टिपज्यासंसारा
१९२।।तुमहोसकलजगतसूंन्यारा।।
तुमहीहोनिजपैलीपारा।।उपतग्र
टहमसबबिधिजांनां।।तुमहीहोज

हो वदनिरखोने १८५ ऐसीजन्म
गमनहोनोही मैजूपनेबूझीमन
मांही हरखदयाकरीतुमसांई मे
रेमनकृतसेसेनाही १८६ मोल्हा
रणतुमहसतवारण धरज्ञधरको
ऊकेधारण लमरवसबगतिमाई
नेरी सबलबससेनागीमेरी १८
७ नसेनाथतुम्हारेज्ञायो मा
याबटिपरपदपायो छुटाका
लनिरंजनमोरा जनममरनको
हनहोरा १८८ सबमेमोमब
लोकिल्लोने तुम्हरेचरणकेवन
क्षिनवोजे मेलोज्ञुगतिनकाहूपा
ई लालाहिनतुममोहिसुनाई १८९
जोनिपरीतुमरीसाहिबाता तुमस
होहरखोरनहीतारा चौरासीमे
कीलेनाश लखाहनेजनममनकेव
ताश १९० समजिबूझिकाहेसि
लकाई छोडीकुलकोलाजबजा

रहलोरिदीयाछिलमांहीजगमैंको
काहूकोनांही।२०१।सु पायैंक स्वारथ
न्नायेपिरमारथकाजुहिरत्तैपाये
येसवजगतनिरंजनमायापांच
तीनसूंसवउपजाया।२०२।पांच
ततीनूंगुनभारी।इनसूंजुगतिदि
याईन्यारी।पांणीपवनजमीआका
सा।सवमैंतेजकीयापरकासा।२०३।
राजससांतिकतांमसजांनांब्रह्मा
विस्नमहेसवखांणां।२०४।दोहा॥
पांचतीनमूंरैनिरंजनायेमायाका
गा।तासूंसवरचनांकरी।नांति
नांतिकाघाट।२०५।चोपई।कहैंक
वीरसुनोधर्मदासा।सकलभेदमैंक
याप्रकासा।लोसूंत्रकछूनराषा
जोकछुहुतासोसवभाषा।२०६।
अवतुमभगतिकरोडिढताई।छो
डिदेहोकुलकाजवडाई।प   कु
लमरजादाबांवेभोसंर

कोकहेंसिवबिरंचनहींजोनिगु
रसतगुरकंचीन्हकैंापकंचैपदनि
रबांन।२१४चोपई॥धरमदासमु
णिजुगत्तिबत्तांडं।चोकाआरती
तुमकंलियांनं।अग्रचंदणकाचो
कादीजेजोतिबरायआरतीकीजे
२१५पांचतत्तपांचहेबाती॥बा
रिनीतरिजोतिसमाती।मांणिक
दीपककाउजियारा।एकबातसं
गविसतारा।२१६।सेतहीनरियर
सेतसुपारी।सेतपांनिलेहोसुबना
रीसेतमिगाईसेतकवारा।याविध
चोकाकरोविसतार।२१७।मेवाकं
कपूरमगावो।कदलीदलसोनीले
आवो।पहोपफूलसुगंधसवारो।
भांतिरबिंजनअनुसारो।२१८।तन
मनधनसबअरपणकीजे।प्रेमस
हितलेसोसुपलीजे।पांचतत्तकों
भोजनदीजे।व्रतआत्माकूंउपति

कोसुबसेहे.
। २१७ कानमाधन.कोसुबसेहे.
सुसक।रिकेमिलैमिदेही मिले।
हरहरा.कि.रनाही कुफलेहे।
२२० सुबकहलोकेना
नहीमांई.
रहो सुर.तिहतीसि.सवहे.कही
ल गरकां.नाही नजागर नाबिध
नलेरे मोकोसागर २२१ स.तिसतिः
या नगातिहमारी जे.कैड समकिक
नरनाही नतिकरेसुक.तिकलना
व हमरहतिः.कमेह्ये २२२ की
हि.पीररिमोधरीदास. वहेकमेन
हिं.धीररिमोधरी दास. नरमक
२२३
रमतनकोति.
रमनेभारसव हीवानारमंफकि
सनगुरकायरतायन्ने सिटिगवास
मनसुरकायरतायन्ने २२४ ग्रंथ
सेर्दे.से २२४ कं.नि.रबद.
सलगुरकोनुवदेस जेमांनेप्र
निकरि सायकुंकेदमहेस २२५
सुपननेवदनाधिगिदाम
धनदीस्यापनयापुकासा सनन

२२६। नह अक्षर संक्षर माया। अक्ष
र आदि अमी उपजाया। आदि अमी की
या अमर पसारा। केलि रह्या काक्ष नहीं
सारा। २२७। सोहं कला अमी केमांही। सि
त बीज कल केतिहिंमांई। सेत बीज मू
लहैमाया। तासेरचीसकलकीकाया।
स्वैमयउपारख
।२२८। दोहा। पारख

आवैजाय। उपतप्रगटजोउपतहत
या। २२९। नहअक्षरसंक्ष
अक्षल

नसंमायाकपजी। माया तरगुणरूप। पां
ततगुनमेल[illegible]बांधोसकलसरूप। २३
माया ब्रह्म जीव तत। सतरजतम त्रैदेव

नब्लीन कें छोडकें करिनदन्क्र
व २३४ गै चाहे सेहां मिले मांनोमो
विचार याही भेद जांणां बिना कोइ
गुलैरपार २३५ नौ बार मर्म लखि मिले
सिसकनन होय हंसा हिरे मरहोयत
क पक्तानपकेरे कोय २३६ कैरेकबी
रधर्मे दासन छूटनही संसार यामेरीझ
तीनिकरि लाल संकुलवार २३७

मोन नहीय
कूपरनहीं स्वलमौन ह्यबिसरी
रती छ भादीया कीग कहीं बिसरी
म संम्वर्द कहिसमजायके १ नहीब
जां कर मूलहिरन होवानहीं कहे
कों नवतूर गकनडतीवानाहता
कहपानीसमांमर्थसाई
चलसरविधारनवनांही नहीनव
रनीस्वरदक्रकासा चंदसूरनांही
लाला ग नहीं कुम्रमसेसलालहा

नादिनहिंगाहजोगाहा।दिसंहिसा
पौननपांणी।अगमगमकाहूनहींजां
।धरंपानननधांननलगी।समाधी।धर
नहींउपज्याबादी।नहीं।निरंजननं
तारा।चोदाजमनहींकीमापसारा।
ड़ससुतनहीं।रचनां।राच्या।कालन्न
नफूवननहीं।लांचा।।लकलिनभगति
गउपजाया।।मननांजननांधननांमं
यांईं।ब्रंसनहंसलवंसनकीनां।चीन
चीननकाहूचीनां।मैंनहीं।तूनहीं।मो
हनमाया।कारनसुछमथूलनकीया।।
।।नां बाहरिनांभीतरिहोशीपांचत्ती
मैनहींकोशीजोतिननूरनरूहनर
कती।स्वासासोहंसुरतिनसकती।।६।।न
सुषमनालागीकोरी।अधरतारकहां
जोरी।।ए:होहायेतीवसततनतांह
।नहींतहांयेकोदोयमैंकाहेसंऊप
।या।अचरजहैमोहि।।१०।।सेनष्ट उवा
८ पद।।अधरमांहिइकनिकस्यातारा

गैबअवाजभईतिहिंबारा॥नापिदहुदुकजागामोरीअधरसूंयेकआईडोरा॥११॥कोरीमां हींबाससमांनी॥अग्रसुगंधअमीकीषांनी॥जागाबहोतअनूपअमोला॥तहांआयकेंबांणीबोला॥१२॥बेठिककरणकूं कर्गीइकखासा॥याहीगेरमेंकरिहुबासा॥बासाले केंआसासाधी॥भनआसाइककरीसमाधी॥१३॥करिसमाधिलोलागी तबही॥आसातपनिकीनीजबही॥तुदीअवाजगेबसूंबांणी॥जबआसमेंबासबसांणी॥१४॥नीतरिहीकीनांबिसतारा॥कीनीसुक्षमअगमपारा॥आसाअमीबीजअंकूरा॥आसाउपजीआपहजूरा॥१५॥नीत्रहीकीनांबिसतारा॥पांचअंमीकपरअसवारा॥आसातपनिकीयातपांनां॥तासूंउपजआपांनबिग्यांनां॥१६॥आसारंरकारप्रगटीरंकारअधरसूंजा

मी॥आसाॐकारबणाया॥आसासूंउप
माया॥१७॥आसानांमनिरंजनधा
याबिसतार॥आस
यहोयबेग॥कालरूपसबनसूं
॥मी॥
मीरअकुलानी॥तबआसाकूंब
नी॥
१९॥आसाउतीयाकीयापसारा॥येक
दोयहोयअंतरकारा॥याआसाकीक
कथकहानी॥आसाबोलीइमृतबानी
२०॥येतीजुगतिसमझिहोग्यांनी॥गुपतं
भेदमैंकहूंबषांनी॥अबबाहरिउमक
रोबिस्तारा॥कुकमहमारेकाजसवारा
२१॥दोहा॥संकृथकायाकुकमहे॥कीयो
ग्यांनबिसतारा॥ताकीजुगतिनगंमहे॥र
चनांअगमअपार॥२२॥चौपई॥ग्यांनीगु
रमिलायादोभाई॥रचनांअगमअपा
रबनाई

३ पवनपच्यासीकीनां॥अगमभेदकाह्न
नहीं चीनां॥पाछेजलकारंगवणाया॥
याभेदकाह्ननहीपाया॥२४॥जलरंग
मांहिभयाअंकूरा॥तामैंमदनघुरस
कान्नूरा॥एकबूंदअमीकीआई॥मद
नघुरसकेंआणिजमाई॥२५॥मदनघुर
सदेख्यामुघतूला॥अमीअकघांनकं
मूला॥जलरंगमांहिअमीजमाया॥सो
हीबीजमदनकीकाया॥२६॥कुरमं
घ्यांनीकेंलीयाबुलाई॥जलरंगकों
पूछोतुमजाई॥तेहोसबदहमारा
मांनी॥रचनारचोमिलोतुमघ्यांनी॥
२७॥कुरमकुंकमकरिलीयाबुला
ई॥सोलोजलरंगघ्यांनीकेपाई॥तु
मलेजावोसतिप्रवांनां॥रंगछतीसं
कीयाजलघ्यांनां॥२८॥जलकोरंग
कीयाछतीसा॥सबकायाकोजल
हैईसा॥पवनपच्यासीजलकेसंगा॥
भांतिभांतिकाकीयाहैरंगा॥२९॥बसु

धामनैकूरमकेपासातनहीलहैलव
आवैआसासुणेंग्पानीइकमसलिसो
रीतुमहीअछरत्यावोमोरी॥२०॥नहार
चोसमर्थेअसथांनो।कहैकूरमसुनों
अस्थिरग्पांनो।देहोवसुधाजोमांगेतो
हीसंत्रथकुकमनयाहैमोही॥२१॥कू
रमसक्तिअतिभारीमाया।रचनारचे
सुधारोकाया॥वडीअपरवलसकति
हमारी।अधरमांहिरचीफुलवारी॥
२२॥तिसमृथअतिसुषपावे।जोरची
येसोसमर्थभावे॥२३॥दोहा।कहैग्पांनी
विनतीसुनों।कूरमतुमारोनांवजलनां
हीवासोकरोतहांतुम्हारोधांम॥२४॥चो
पई॥कहैकुरमसुनोंग्पानीविचारा।ए
कलैतनिजसुनौहमारा॥वसुधाजमाह
मारैपासा।जवदेहूंजवआवैआसा
२५॥कूरलतुइकीनों... ...सा...
निकसीडकस्वासा॥तातासा...
रा भाईसमतपत ... ...

सोहं सोहं बोलै बांणी ॥ स्वासा जलके
मीन्ह भ्रांणी ॥ तामैं निकसै चंद सूर सरि
रा वहो तत्व प्रकास भया ॥ विधि पूरा ॥ ३९
सैस बाराह उदसूं आया ॥ या विधि रची
ते पांची काया ॥ धरती कूरम उद सूं
आई ॥ तापी छै निज आधर रहाई ॥ ३८
तेज अंग कूरम तन वभय उ ॥ विजली
निकसि बाहरि हो गय उ ॥ उडगण नि
कसि पवन प्रचंडा ॥ नौलख उडगण
करे ब्रह्मंडा ॥ २९ ॥ ब्रह्मंड की सोभा
भारी ॥ जुगलि२ कीनी कुलवारी ॥ सब
सूरज्योतिगगन के मांही ॥ स्यारे मिले
की या जहां तहांई ॥ ४० ॥ सब ऊपर संत
पत्र स्यांनी ॥ तहां गये कूरम उरग्यां
नी ॥ समरथ मुख प्रगासी बांणी ॥ ये रच
नां के सी विधि गांणी ॥ ४१ ॥ सुणों कुरम ग्यां
नी संक कहांणी ॥ जल रंग सूं कहीय अस्
ल बेनां ॥ समरथ कूं कै सकीया है ॥ जैसा
करो ता ग्रंजे सा है ते सा ॥ ४२ ॥ जल सूं व

यो कुरमके तांई जेठेपु
त्र श्रोरको नांही ॥४२॥ तासूं छोटा हे ष्पां
नीपूता। दोनूं मिलिकै साधो जुगता ॥ जल
रंग तुम हो पुत्र हमारा। संम्रथ कुं कलक
रो बिस्तारा॥४४॥ चंद सूरदोयवीर बना
ई। इन सूं रचना होय सुधका ई। ये तासं
म्रथ कह्या समफाई। ष्पांनी कूरम नैं वं
चन सिरली या चढाई॥४५॥ दोहा॥ सं
म्रथ का असथांन की। सोभा अगम अ
पार। जो ऐ कूरम अरु ष्पांनी। श्रोर न पावे
पार॥४६॥ चोपई॥ वे संम्रथ हे अगम अ
पारा। गुपत प्रगट का सिरजनहारा। त्रा
सिपा सिव हो दी पव्न णया॥ तामें नग नि
सुक स्तित्त पजाया॥४७॥ सुरति सात का
कह्या असथांना। संम्रथ नैं तहां दी लोष्पं
नां। अंमी सुरति मूल के मांही। मूल सुरति
सूं निकसी व्हांही॥४

जोतिसुरतिकीनांप्रकासा सुंन्यस
रोवरजलमेंबासा ४९ जलकीसुर
तिपवनकामेला तेजसुरतिऋगनि
काषेला सातसुरतिसंमृथकेपासा
ऐसी भांतिभयाप्रगासा ५० ताकें
तलैसकलऋस्थांनां जलजाणेंके
कूरमऋरूण्यांनां सोऋसथांनऋबं
कहेंसमभाई कुरमग्यांनीजलरंगी
मनभाई ५१ चौपाई कुरमग्यांनी जल
रंगी येतीनूं सिरताजा संमृथनैंमाथे
धस्या दीयाऋभैपदराजा ५२ चौपाई
चलेकुरमजलरंगीग्यांनीविचारा
धरेविकांणिंकरेसंम्हारा सतसुकति
गतिभारी गगनिमांहिइकैऋटारी ५३
तहांसंमृथकीनोऋसथांनां कुरमग्यां
नीजलरंगीगतिजांनां सातसुरतिसं
मृथकेपासा तासूंभयासकलप्रका
सा ५४ ताकेंमांहिसातहैसुंन्य सात
हंसबैठेंउनमनि ताकांतेंसासकलऋ

याकेँकारस्थाइन
केँकारसँसबकुल्हिकीनाम

का

केतलेइदर

व

कुरसकी

सबकीडो

मदासबूझो बड भागी ये तो है ॥ अधर
॥ कासा ॥ अधर नाम कहीये आकास
॥ र ॥ कुरम कला कछु वार न पारा ॥ दे
॥ ही को भाषों बिस्तारा ॥ देही जो जन को
॥ दे ॥ अग्र ॥ एवे ॥ रसा तल सुरग पताल
॥ तां एवे ॥ ६ ॥ २ ॥ रूप ती देषो सो मैं भाषी
॥ तुम सूं गोय कछू नहीं राषी ॥ ६ ॥ ध
॥ सत लोक सूं आयत ॥ देषत सब
॥ बिसतार ॥ सो मैं तुम सूं भाषिहूं ॥ सक
॥ ल कूरम सिर भार ॥ ६ ॥ ॥ अ
॥ हो साहिब पूछों कर जोरी ॥ या तुम क
॥ ही अधर की मोरी ॥ कहो सुमेर के तो
॥ बल तारा ॥ कौ ॥ एह सकुरी कएहारा
॥ ६ ॥ ६ ॥ सो स्वामी सब कहीये बात ॥ तु
॥ म सब देषी संग्रह थरा ता ॥ कहै कबी
॥ र सुणो धर्मदासा ॥ अब सुमेर का सु
॥ णो प्रकासा ॥ ६ ॥ ३ ॥ कंचन पुरी सुमेर क
॥ ही जे ॥ भिंन्य २ का भेद लही जे ॥ तहां को
॥ राज निरंजन करही ॥ महा तेज पुर अव

रही।ईषाताकोराजसिंघासनरहही।
रहही।चोकीएकम्र
ताकीर
॥यारचनाष्ठुदिस्रापसवारी॥
गैहीरालालजवारनमोती
उडगणकीजोती।येतोहेचोकीवि[illegible]रा
बहोतरूपबकुतउजियारा॥७गैबडी
सोभानिरंजनराया।स्रादिसक्तिराबी
तिनमाया।दोमिलिकीयासकलबिस
तारा।इनकीरचनाअगमअपारा।७१
मुकतिच्यारकपरिरचिराषी।ताकीते
हिसुणोउंसाषी।सालोकीसोमीपीनां
कं।सारूपीसाजोजीगेउं।७२।च्यारिमु
क्तिनिरंजनकेरी।अगमबसतकाहू
नहीहेरी
।महिमासबजुगकहही।७२

हाबषांणो कैती सक्तिरो कही बाटा हंस
चलेत्त हांञ्लो घट घाटा ७४ जो कब्लसं
सैं होयजी वत्तेरे पूछो फेरि मिटांत्रं फेरै
ञोर सुमेर गत्तिञ्ञगमञ्जु पारा देषिस्स
त्रमाह्या बिच्यारा ७५ तो हि कही संछे
पसुणाई बहोत कहै तो को पत्तियाई
जुगका जीव न जांणे कोई तेरी भात्ति मो
ही सं होई ७६ सत्ति कही सत्ति समजाई
धरमदास ममतिरा षिछिपाई ७७ दोहा
धरमदास तुमों किहो पासुमेर बिसतार
संत्र थकाघर हरिहै ञ्लागे ञ्लगमञ्जपा
र ७८ सुनि धरमदास तो सें कहुं सत्ति
करिके प्रतीत्ति तीन लोक जिन बसि
कीया याही निरंजन रीत्ति ७९ जो है
धरमदास सुनि बचन हमारा तुम
जिन मूलो या बिवहारा रूके जीव
कलपावे पारा तुम होह संहंस पत्ति
सारा ८० जिन्ह रतो हि कहुं ति न्ना
रा करो हंसहन सवहू मारा प्रगि

सनुतर
डैइकबाता
तमसंमूणशलाङ्कुरसक

सबकेतलेकोन
सबकेऊपरिकोनबिश्र
गयेश धरतीतलेकोनअसथानां नि
जकेमोहिसुना बोप्पानां ६३ केसीबि
धहैसोसब भाषो लोसुंक्षत्र कहूनरा
बा ६४ होहगा कहैकबीरधरमदाससं
सुणितलकोबिसतारा जिम्र २ लोसें
कहरचनांअगमअपारा ६५ चोरह
धरतीतले कहीयेपाताला ताकेतले
तलातलताला ताकेतलेकहीयेश्रा
ताला ताकेतलेचोतालपचताला॥
६६ ताकेतलकहीयेषटताला तले
रसातलसात तांनाला रसातलत

६७ पांणीहेआकासअधारा

जइहैरसातलधारा सातलबकपाः
णीआधारा यारचनांहैआगमऋपा
रा ५८ काहूकीजांणनकीनांहीध
रमदासराबोमनमांही पांणीरगकु
रमअकमांना यारचनांसबहीजन
गांणी ५९ औरकहैंबिनदेषीकोइ
लाकीकहीलतिनहोहोइ आकलि
होरकहुकांमनआवे देषीजुगति
कहाकोइपावै ६० येतोहैबिसता
ररसातल कुरमकलाहैअकलिक
लाकल पांणीधरतिपांणीआकासा
पांणीमांहिकुरमकाबासा ६१ कुर
मपवनअचंडअपारा जलमेंपैठि
कैआपसवारा रसातलब्रह्मांकञ
कांसा सबकौपिताकुरमहैईसा ६
२ कुरमपिताकोहूनजांनां तातेजी
वजयेहैरांनां प्रलकासमैंआयसमा
नां आगमभेदकाहूनहीजांनां ६३
नां अबरचनांसबउतपतिकेरी ता

तिनका स्नेही॥ याते कुरम अं
मीत पजाया॥ ताके नीतरि छिद्र पाया
॥४१॥ सुद्ध सरूप स्वो बलना॥ तब
ही जपत्यो भीतर यो नो॥ तासुं जगकी या बि
सतारा॥ सो अब नाषों जुगत सुधारा॥४२॥
यासब रचना कुरम बनाई॥ कुरम सक
लके पिता अरु माई॥ बसुधा॰
काती॥ अपरम पार गुण लेबाही॥४३॥ ई
सेबाय कुपरवूं न्श्याया॥ तिसबको णि
रम कीन्या॥ सबकी कोरि कुरम संत्ला
गी॥ कुरम कोरि अष्टसैं पानी॥४४॥ अ
धर कोरि सैन्य थ घर जागी॥ धरमदास
सौं बड भागी॥ ऐसब भेद बताया तो
अब तुम चीनि लेहो निज सोती॥४५॥
यहां वहां इसर को नाहीं॥ आप ही बा
हरि आप ही मांहीं॥ यासब बूझए
बाता॥ सुकृत हंस कोई कोई राता॥४६॥
अब सुणिले तू और बिचारा॥ तपज्या
कुरम जगत बिस्तारा॥ ताको तो

८ कबिचारा। बूझै तै होवै निरवारा।१००
[illegible] कुरमसकतिअत्तिअपरब्रह्म
भेद लिषै नहिं कोय। पांच तीन सूं ज
गमया भाषि सुनाऊं तोय।१०१। [illegible]
[illegible] कुरम कला तब करी अपारा। ता
का अब सुनि लेहो बिचारा। येक समै
तेज घर आया। तासूं सक्ति भई म्हामा
या।१०२। माया सूं भया ॐकारा। ता
सेती त्रिगुण बिसतारा। ॐकार तैं म्ह
तत होई। ताका भेद न पावै कोई।१०
२। पांच तत्त ॐकार बणाये। आदूं मि
लि तीनूं पुर छाये। जे अस्थूल भये
जग मांही। इन आठन सूं न्यारा नांही
१०४। इन आठन कीया बंधानां। अय
म भेद काहू नहीं जांनां। च्यारि षांनि
चौरासी लाषा। सो सब जांणौं कुरम
की साषा।१०५। सब घट व्यापक कु
रम बिराजा। ये सब ठाठ कुरम का
साजा। कुरम भेद पावै जो कोई। सं

थघरकूंपकॅचेसोही॥१०६॥बिनाकु
वाघरनहीजाई॥सिद्धसाधिककरे
रितपाई॥सुनिधरमनिकडसतसं
सा॥जीवनकूंकूलनवादेसा॥१०७॥दो
हा॥संमर्थलगपहोंचेनहीं॥बिचहीरहे
लाया॥कुरमभेदजाण्यांबिना॥काल
ऊंघुरघाया॥१०८॥चोपई॥ऋहोसा
हेबकरजोरी॥निनगुरसैमेंमेटो०
मोरी॥केसैततभयाउतपांनी॥निंन्यभि
न्नभाषोमोहिबांनी॥१०९॥सुनिधरमा
नसबजुगतिवतांऊं॥ततनकीउतपनि
तांऊं॥तीनगुणकाकहूंविचारा॥ये
कएकगुणिन्यारान्यारा॥११०॥न्यारिषां
निभाषूंमेंतोही॥लहूंत्रेकरितुमजांणों०
मोही॥प्रथमततकहीयेआकासा॥ॐ
कारसूंभयाप्रकासा॥१११॥तासूंपवन
ततभयाभारी॥सबमेंबरतिरह्योनरना
॥तासूंभयातेजअधिकारा॥ताकोहेज
गमेंउजीयारा॥११२॥तासूंजलततजुग

अपारा॥ ताकी रचना है संसारा॥ तासौं
प्रथीत तनिरमाया॥ ये सब रचीकुर
म की माया॥ १३॥ तीनूं गुण का कहूं से
देसा॥ रज सत्त तम तीनूं गुण भेसा॥ रज
गुन जोग्द नया है ब्रह्मा॥ तासूं धरम क
रम भया भर्मा॥ १४॥ सतो गुन बिस्नरू
प सब जागा॥ भोग अनेक भोग ऐलाग
ग॥ तमो गुण म्हादेव प्रचंडा॥ व्रंड पिंड
व्यापक ब्रह्मंडा॥ १५॥ तीनूं गुण का क
हूं बिचारा॥ तीन पांच मिलि भया प
सारा॥ च्यारि षांनि सम फेंधर्म दासा॥
ऐसी भांति भया प्रकासा॥ १६॥ प्रथ
म अंड चलषांनि है भारी॥ तापीछे अंड
ज अनुसारी॥ पिंडज उदभम जपीछे
होई॥ भिंन भिंन रेदत्ति येन ही कोई॥ १
७॥ कुरम जड सब की उतपाती॥ जीव
जंत कुरम की जाती॥ कुरम बिनां धरैं
नहीं काया॥ जो मिलीया सो मिलन तच
लिआया॥ १८॥ ततप्रकि गुण मांही॥ व

कारचनोकुम आपणी छापका।
सीभांति बणाइ संसारा।।धरमदास
मकरो बिचारा।।१९।।उतपति परलै
बजुग होई।संम्रथ भेद लिषैनहीं
ई कालकरैसबकोसंघारा येको
वहोयनहीन्यारा।।२०।।घृस्नेमांहिप्र
नबहोई।संम्रथ सरनि कुरमरहैसो
।केतीबेरभयाछैकाजा।।फिरि२कु
मकीनयेसाजा।।२१।।आदिअनादि
नारकेपारा।संतैनगहैबासहमारा
रमदासतुमजांणीबाता।कुरमपिता
संमर्थ दाता।।२२।।जिहिं२भांतिभ
यासंसारा।सोमैंजोसोसकलबिचार
अधरडोरिबैनमेंदेषा।उतपतिप्रलै
गोलेषा।।२३।।भेदबिचारिसकल
मोहिभाषा।कुरममूलजोरसबसा
षा।संम्रथमूलकुरमकाहोई।ताका
रमलिषैनहीकोई।।२४।।कुरमभेद
कोइपावतनांहीं।हंसाजायकुरम

मांही ॥ अधर कोरि को पावत नांही भर
में जीव चौरासी मांही ॥ १२५ ॥ अधर को
रि लागी असमांनां धरमदास येसम
को गमनां बिच्यही मड्या बषेड़ा भा
री कोइन पावै नर अरु नारी ॥ १२६ ॥
अंमरघर संम्रथका भाई सो मैं तुमकूं
दी पालिषाई ॥ जुगति बिनां जीव पा
वै नांही बहे ज्याय भरम के मांही
१२७ भर्म ही भरम बह्या संसारा ॥ सं
म्रथ को घर पैलै पारा ॥ धरमदास तु
म करो बिचारा ॥ को संम्रथ है सिर
जनहारा ॥ १२८ ॥ [illegible] भरम करम
ता दिन नहीं ॥ नहीं मरति का मूल
धरम निरंजन तब नहीं नहीं कुर
म अस्थूल ॥ १२९ ॥ [illegible] धरमदा
स पूछत है बाता ॥ कहो स्वांमी तुम
संम्रथ दाता ॥ ता दिन संम्रथ कैसे र
हेत ॥ तब कछु बोल बांणी नहीं क
हेत ॥ १३० ॥ तब कछु तपनि हती मा

यांम्या लतिन्यार ॥ कोकहहसलेलेग्नि
गम अपारा॥१२२॥ मैदेवी जुफहूं सस फ
डीमोकं संमृ थदीयालि पाहीतोसंग्रु
गतिसकं नहमसाखी॥ एरखें मकहुन
राखी॥१२३॥ दोहा॥ लस्लप्रकाघरहरि
हो॥ अधरमोरिकेपास जिनदेवी जिन
हीकही॥ कोनकहैसके बिचारा॥१२४
चौपई॥ धरमदासलोहि कहूं बिचार

जीतअडोलअगाधा॥ जिरससेपद
कीएधागा॥१२५॥ पुरुषतिसुहसगतिको
हनजांणे॥ जिनदेवीकहांकोणबखा
डि॥ ह्रिमहिमेंआवेनाही॥ सुरतिनि
॥१२॥ ही सुरतिनि
रतिजाकी किटधारासोही

अगमबिचारा सुनिधरमनिकअस
तिबाता सबकेउ परिसंम्रथदाता
१३७ अंमीसुरतिमिलेअंकूरा मूं
लसुरतितारतहांपूरा मूलसुरति
अंमीधारसूंकीनां तबसंम्रथनेअ
मीकूंचीनां १३८ अंमीमांहिइकअं
कउपाया तासूंरचीकुरमकीका
या अंमीमांहिबेठिकतबधरिया
याबिधउकमकुरमकूंकरिया
१३९ कुरमकांमधेनिउपजाई अं
मीपीवेसदासुषदाई अंमीपीवेअं
मीछुएकरही अजरबीजतहांउ
तपनिकरिही १४० अजरबीजम
दनकरिआया मदनपुरसकूंआ
णिजगाया जागेमदनउपारेनैनां
सुनतरहोसंम्रथकेबेनां १४१
संम्रथउकमकुरमसिरधारा ब
सुधादीनीदीयोसिरभारा संम्रथअं
मकुरमकूंदीनां कुरमअंसहंसस

वकीनां॥१४२॥जलतरंगफुलझलीयाबु
लाईरचनां॥अधरअधारचलिआई॥
इसविधपसुसलगावन्धुणनया॥अगमभेद
काहूनहींपाया॥१४३॥सलपरअसमं
यासबफैली॥उतपतिअंसीहोयनांसै
ली॥सबबसुधाहैबीजकेमांही॥अगम
भेदकोपावेतनांहीं॥१४४॥घटघटमेंगह
रादरियाब॥जनिरमैजुगतिकोईनहीपा
वा॥संमृथअंसहंसलभयेवाकुरमपं
नीमदनसेगरहेता॥१४५॥अधरधारसें
अमृतन्हाया॥धरसदासमैंलोहिमुणं
या॥गुपतप्रगटजाणौलबमाया॥अंस
हंसफैलिगईकाया॥१४६॥दोहा॥अध
रकोरिकातारमैं॥लागपानारअपार॥सि
धसाधिककोगमनहीं॥क्याजाणैसंसा
र॥१४७॥कालकरमतहांबहांनही॥न
हींपापतहांपुन्यलगापहीसंमृथयेक
ला॥नहींसुंन्यमहासुन्य॥१४८॥चं॥

कगणिघांकेकीधारा चलतैं२सब
थाकिमरै १कंचैसुरतिनिरतिनहीं
करै१४९ निरभैहोयधरैते पाउ तहां
वहांजमकोलगैनदाउ सुनिधरमी
नइकअगमबिचारा कायाभेदक
धारा१५० एकबूंदसूंकाया
जांणींकुरमकेंसमूथधणीवूं
मांहियेवस्तसमाई ताकीजुगी
तनकाहूपाई१५१अधरकोरिसं
मूधअस्थांनां ताकेभीतरिअद्भु
तग्यांनां येलेज्ञानकुरमकूंकीनां
उपजतकुरमग्यांनकूंचीनां१५२
ग्यांनकुरममेंआंणिसमाया तासूं
तिनईम्हामाया मायाकोरिलगी
तारा सोहंसोहंकरैपुकारा१५
३सोहंकोरिआईघरमांहीसुधमी
नतारलगाईतहीं तहांऊंकारअ
स्थांनांधरमदासनिरनैकरिग्यांनां
१५४त्रिगुनपांचततऊंकारा अ

पीजरासवारा।आठमिलेत्तोमत
यपूर।याहीजोतियाहीहेनूरा।१५३
दसूरत्रिकुटीकेघाटा।सुषमनिको
सवारीबाटा।होयदोयलगनिएकव
आगमभेदकोइपावसनांही।।
१५६।जेमनिप्रीतिमोहिइकसंगा।जगप
हैकेलगीरंगा।घाटतीनत्रिविधरूकी।
।तीनसक्तिसेउपजीमाया।१५७
लापीगलासुषमनिनारी।चंदसूररा
षवारी।चंदसूरस्वासासंबंहेर
होयभेदसोकहेंही।१५८।चंद
गनिबीजजोआई।पुरुषमांहिकं
हेप्यभाई।सूरलगनिबीजजोप
ही।जानोपुत्रदेहसोधरही।१५९।
सुषमनिघरजोबीजहरिआया।होय
नपुंसकताकीकाया।ऐसेंसकल
गतजतपाना।धरमदाससमझोय
ज्ञाना।१६०।औरअनेकजुगतिकीका
।धरमदासजोपौसबमायासंमृथह

रकोजांणतनांही॥ येब्रांणीसमझोम
नमांही॥१६१॥ चौपाई॥ धरमदासतोसं
कहौं॥ कोयाकरैबषांण॥ सबकोउ
रषाकौंणहै॥ तोहिपरीकछुजांण॥
१६२॥ चौपाई॥ हेस्वांमीमैंजांणीबा
ता॥ तुमहीसतगुरसंमृथदाता॥ श्री
रबतावेतवारंबारा॥ सोस्वांमीया
कौंणबिचारा॥१६३॥ देहधरेप्रगट
तुमस्वांमी॥ रहेबिदेहकाहूनही
जांणी॥ सोकारणतुममोहिसुणाया
मैंजांणीमैंतुमरीमाया॥१६४॥ रहेश्री
देहयहांतुमतबही॥ अबमोहिश्री
लिसुणांईसबही॥ म्हापुरषपूरणप
दतेरा॥ सबसंदेहगयाअबमेरा॥
१६५॥ तुमबिनसंसैकौंणमिटावे॥ अ
कोऐसीबिध्यमोहिसमझावे॥ अ
मनिगमतुमसबेतिम्याई॥ नहचे
ततुम्हारीपाई॥१६६॥ तुमहीवार
रसबजागा॥ तुमहीअधरमांहिस

गा।अधरकोरिसूंमोहिलषाया।जो
परीसबतुमरीमाया।१६७।अधर
रिमैंतुमकूंदेषा।यहांवहांजांनि
या।सबलेषा।अचरजगतिकछु
हीनजाई।ऐसीसंम्रथकोरिलिषाइ
।१६८।दोहा।।अधरतारकेतारमैं।।
नम्यातारइकओर।चलतैं२सबथ
।अगमअगोचरठौर।१६९।चोपई
सुनिधरमनिमैंसबगतिजाणी।अधरल
सूंआईबांणी।सोबांणीसहजघरमु
ही।कुरमनामकीयाहैतांही।१७०।सो
सहजसुंन्यसूंचलीजोधारा।सहज
घरसूंभयापसारा।सहज२सबज
गतबषांणी।सहजभेदकोईनहींजा
।१७१।आगमपहरिलोलागीरहै।स
हजनांमताहीसोंकहै।सहजसुन्यसं
बांणी।तीनलोकप्रथीमैंजा
।१७२।ताबांणीअटकेसंसारा।कैसैं
पावैभेदहमारा।अधरकोरिजांणैंन

हीकोई बिनजांन्यांसबगयेबिगोई
१७३ कुरमबैवेसहजघरमांहीजां
लोंग्यांनीओरकोनांही च्यारूंबेदस
हजसूंआये सोहीबेदब्रह्मानेपाये
१७४ पहिलेउतपतिभईअपार
निगमनांमतातैंअनुसारा बेददी
याजगकूंचरमाई ब्रह्माकीनीच
राई१७५ संम्रथसोंकहींइसएन
हीअंतसमेंकोकरैसहाई आप
धओरसैंसमझावै याहीबातमोहि
चरजआवै १७६ बूडेजातभरम
मांहीसलिकूंअकछुजांणतनांही
वनअनपबहोतअहंकारा स
नांहींमूढगवांरा १७७ मेंमेरी
मेंफूल्याफूंवहीलागिसकल
भूल्याधरमदासतुमकरोउक
जोसमझैसोउतरैपारा १७८
मेंनाषीसत्यबांणीतुममेरीग
मेंहीकीनांबहोत
...जांणीमेंहीकीनांबहोत

रा।काहेभूलिरह्यासंसारा।१७९।।कउ
लोफेरिनमानैकोई।डरमतिहुसरक
छ्नषोई।येककहेंमुषसूंसबनाई।
कहतं२जुगगयासिराई।१८०।जैसें
येतेसैंगयारहेजीवसोब्रह्मनभये।
ब्रह्मब्रह्मसबहीकहेभाई।कोणब्र
ह्मसोषबरिनपाई।१८१।एकब्रह्म
रंजनराया।तीनलोकमैंताकीमाया।
येकब्रह्महेॐकारा।रिषमुनिदेव
सबकरेबिचारा।१८२।एकब्रह्मसे
हंसबमांहीं।सेमथकूंकोजांणतन
हीं।येकब्रह्महेररंकारा।त्रिदेवासे
याहीप्रकारा।१८३।सिवसमाधिल
ईतांहीं।एसेमथकूंजांणतनांहीं।ब्र
ह्माबिसनबषेडामांहीं।करिपालेता
कीगमनांहीं।१८४।त्रिदेवायेब्रह्मक
वे।ब्रह्मभेदकोईनहीं।पावे।श्रीब्रह्म
तलहेपांचा।जिनकायाकूंकरिमांनं
सांचा।१८५।निरगुणब्रह्मनिसरनं

आवे सरगुण कूं सब ब्रह्म बतावे केते औतार जगत में लये। राम कृष्ण सब कोई के है। १८६। एता ब्रह्म है अगम अपारा। ब्रह्म भेद इन सब सूं न्यारा। सो निर्लेप सबसे सारा। सत्य सत्य मैं कहूं पुकारा। १८७। धरमदास तुम अस हमारा। या संसार सूं होऊ निन्यारा। धरमदास मैं तो हि सुणाया। ये सब ही समरथ की माया। १८८। समरथ इन सब ही सूं न्यारा। धरमदास तहां बास हमारा। सो ही गोर तुम कूं पहुंचाया। बहुरयौं जग में धरै न काया। १८९। जीवन मुक्ति ताहि कोनां। समरथ कूं जाणे सब गांनां। पहिले समरथ कूं पहिचानै। आप जांणि सब ही में जांणै। १९०। ऐसे ग्यान रूप करि जांणें सब घट मांही येक पिछांणें। आप कूं जांणत नांही समरथ पूरि रह्या

सबमांही॥१७१॥जोजेबाहरिसोकिस
पावे।फिरिजीवगर्भमेंआवे।१७२
दोहा॥चौरासीबंधणकठिणकहीन
मानेंजीव॥समरथकूंकेसेंमिलें॥ब
रुनिरंजनपीव॥१७३॥चोपई॥धर
मरिकाकहूंविचारा॥जोजांणेंसोउ
तरेपारा॥बिनजांणेंसबजमकाच
राकबहूंनोसुहोयनन्यारा॥१७४
धरमदासतुमकरोपुकारा॥कहेंक
बीरहंसहोयसारा॥हंसहोयकेंघ
रकूंजाई॥होयहिरंमरमोरडहाई॥
१७५॥सुषसागरजोंणदघरपावे॥ड
बडरमतिकूंनिकटनआवे॥हर
णततज्ञांनसबनाषी॥तोसुंअंतरक
छुनराषी॥१७६॥समरथपदधरमदा
सतोहिदीनां॥जुगजुगअमरअटल
तोहिकीनां॥याहीजुगतिमुकतिको
मूला॥जासूंमिटिजायससेंसूला॥१७७
सीलसंतोषदयादिलआवे॥सोहंघ

७ रसंम्रथकोपावै धीरजग्यांनहोय
वैराग। वहोतगरीवी आत्मजागी।
१९८ सुरतिसनेहीसांचाहोई ता
सूंवसतधरोजिनगोई अधरमेरि
ताहि देहोलिषाई हंसहोयकेघ
रकूंजाई १९९ धरमदाससोहिदी
नलिषाई संम्रथकीगतितेसवपा
ई कहैकवीरसुनोधर्मदासा संम्र
थसूंभयासववप्रकासा २००
संम्रथगतिज्योतिनिरमलो निरम
लज्योतिप्रकास निरमलतनग्यानि
रमलभया कोईकविरलादास
२०१

सुनसमानकहे उपदे
सा आसे।भेदलू भवकालहेसा
संतनहि संतनसा कुलकरलेषा गये
गीहोयसोकैरविवेषा १ सुनसमान
हो कहैतेसाधधरमदासतुमकरोवि

चारा अहो साहिब पूछो मन लाई म
ल ग्यान गुर देहो बताई ॥ रात बनहीं
पवन अकास तब नहीं पांच तत
सात बनहीं रजतमसत औ
तारा तब नहीं आदि अंत बिस्तार
॥ आदि अंत दोनूं है बानी मूल ग्यान
बिरला जानी ॥४॥ दोहा ॥ कहै
कबीर धरमदास सूं तुम गहो मूल
नाम सब माया के ऊपरै कहुं जोस
समान ॥४॥ चोपई ॥ कहुं अपार
रजो पावे मूल ग्यान जाके घट आ
मूल ग्यान मूल है बानी मूल ग्यां
न का कुं बिरले जानी ॥६॥ मूल ग्यान
णि जो पावे अजर अमर होय लो
सिधावे नह अछर है बानी स
ब तें मूल अगम है ग्यानी ॥७॥ दोहा ॥
है कबीर धर्मदास सूं गहो मूल
सार सब ग्यानन के ऊपरै मूल
निज सार ॥८॥ चोपई ॥ ताहि मूल

ाई बांणी तीन लोक प्रथीम
णी) है बांनी) ऋट के सब कोई
ग्रम् ्न रा मी निज गाई ९ रामी
न फ्ल न हीं काया ऋग्रमूल री
निज दाया काया लाग रहे स
ग्रांनी मूल ग्यांन का कबिर लेंगी
ी १० मूल ग्यांन जांनि जो पावे
ग्यार ग्यांन मन कबून ऋावे मूल
ग्यान ऋगम है बांनी) ऋौर ग्यांन स
बकूठ ब बांनी ११ जहां लग बांनी
क छै सरीरा मूल ग्यांन हे गहर गंभी
रा नहीं बोली भाषा में ऋावे नहीं का
सद जांनें मन बांवे १२ लखे
पटे नहीं ऋावही) भाषा में नहीं ऋा
हि कहे कबीर धर्मदास सू कैसे पा
वेताहि १३ ताकी खोजक
ऐसो कोई पावे मूल मूल सोहोई हो
मूल के ठ्ठक नहीं ऋा नहीं प्रथी
मे नांम धरावे १४ धर नांम संसार

लागा॥अधरकलहैअगमअभिमा
।अधरधारमेंरहैसमाईखोजीहो
सोपाई॥१४॥दोहा॥कहैंक
।सोजिहोसकलजि॰
नामूलशब्दपचैकरै।पावैपदनि
र्बांन॥१४॥चौपई॥मूलग्यानअग्र
बांनी।औरग्यानसबथूलजांनी
लगमूलनपावैभाई।तबलग
हंसालोकनजाई॥१५॥मूलग्यानहै
अगमअपारा।धरैनामअरूटकेसंसा
।इनकाखोजकरैसबकोई।अग्र
मूलरागोनिजगोई॥१६॥दोहा॥क
बीरधर्मदाससोंछोडोसकलज
रा।मूलशब्दनहचेगहोभ्रतरो
लपौरा॥१७॥चौपई॥वारपार
कछुनहींहोई।अग्रमूलखोजेजोकोई
जोखोजैकोइअगमअगाधा।नाम
रहेनबाधा॥२०॥ताके
ग्यांननिर्भयजासायीर

सूअशाईबांणी॥तीनलोकप्रथीमैं
जांणी॥तैबांनीअष्टकेसबकोई॥
अग्रमूलनराषोनिजगाई॥९॥राषो
मूलफलनहीकाया॥अग्रमूलनर
षोनिजदाया॥कायालागरहेस
बषांनी॥मूलग्यांनकाकबिरलैजां
नी॥१०॥मूलग्यांनजांनिजोपावे॥
औरग्यांनमनकबूनआवे॥मूल
ग्यांनअगमहैबांनी॥औरग्यांनस
बकूरबषांनी॥११॥जहांलगबांनी
कछेसरीरा॥मूलग्यांनहैगहरगंभी
रा॥नहीबोलीभाषामेंआवे॥नहीक
गदजोलेषेलषावे॥१२॥सोरठा॥लषे
पटेनहीआवहीभाषामेंनहीआ
हि॥कहैकबीरधर्मदाससूं॥कैसेंप
वेताहि॥१३॥चौपई॥नाकाषोजक
रेजोकोई॥पावेमूलमूलसोहोईहै
यमूलकबहूनहीआवे॥नहीप्रथ
मेनांमधरावे॥१४॥धरेनांमसंसार

जोलागा॥अधरबस्तहैअगमबिभा
गा॥अधरधारमेंरहैसमाई।योजीहो
यमूलसोपाई॥१४॥दोहा॥कहैक
बीरधर्मदाससूं।योजिहोसकलजिं
हांनमूलशब्दपरचैकरै।पावैपद
रबांन॥१६॥चोपई॥मूलग्यानअग्र
हैबांनी।औरग्यानसबकूंमजांनी
जबलगमूलनपावैभाई।तबलग
हंसालोकनजाई॥१७॥मूलग्यान
अगमअपारा।धरैनामअष्टकेसं
गाइनकाबोजकरैसबकोई।अ
मूलरापोनिजगोई॥१८॥दोहा॥
हैकबीरधर्मदाससूं।छांडोसकलत
रामूलशब्दनहचैगहो।उतरो
लपार॥१९॥चोपई॥वारपार
कुनहीहोई।अग्रमूलबोजेजोकोई
जोषोजेकोइअगमअगाधा।नांम
रहैनबाधारचे।ताकेस
र्पानिरमयउसाषीरमेनीप

सबभयेउ ॥ श्रोरध्यांन सब पालीफ
रा ॥ ताको सुमरन करै संसारा ॥ २१
सोरठा ॥ कहै कबीर धर्मदास सूं ॥ ला
खापत्र कछु नांहि ॥ जैसो तत को
पावही ॥ सोहं सोहं मम मांहि ॥ २२ ॥
चौपई ॥ धरमदास कहै कर जोरी ॥
कहो मूल मूल की फेरी ॥ कहो फे
रि ता परिचै हि जोउ ॥ तो मैं दरस तु
म्हारा पाउं ॥ २३ ॥ पायें मूल रहै सु
पना सा ॥ लोक बेद की छूटै आसा ॥
कहै कबीर कुल जा निगुसावो ॥
पेहो मूल बहोरि नही आवो ॥ २४ ॥
नही तहां माया पंथ अकेला ॥ न
ही तहां गुरु नही तहां चेला ॥ नही
तहां ध्यांन ध्यांन की षांनी ॥ नही त
हां अलख सबद की बांनी ॥ २५ ॥ नही
तहां पांच तत्त का बासा ॥ नही तहां
पांनी पवन अकासा ॥ नही तहां
पवन नही तहां गंउ ॥ बसती ऊजड न

हीतहांनाउरईदोहा॥ कहैकबी
रधर्मदाससूंजेसोतत्तहमाराजो॥
कोइहंसापायेहैसोहीउतरैहैपार
२७॥चौपई॥धरमदासतबविनती
लाई॥अरथसहितगुरदेहोबताई
देषूंपुरषरकीदेहा।कौनजतनवे
रहेबिदेहा॥२८॥रहेबिदेहकाकु
नहिजांनी।देहधरेतुमप्रगटेआंनी
अहोधरमनितोहिकारणसंसारही
आवा।सकलग्यांनमैंतोहिसुनावा
२९॥कहैकबीरकहूंजोसही।जो
षोजैसोआपहीअही॥आपहीगुरुआ
पहीचेला॥आपहीपंथआपहीमेल
ला॥३०॥आपहीआसनआपहीमंड
ला॥आपहीकलीआपतहांफूला
आपहीमालीआपफलसाई॥अर
जरदेहआपनिरमाई॥३१॥कहैकं
बीरजांनैजोकोई।आपहीगुरुआप

अपनहीअजरसिष्टिकरनेही ३२ अपनहीअजरकायानिरमाई अपहीदरपनसुमकहाई अमरपुरपुरतिहोयआई कदलबुलतबहीनिरमाई ३३ तबबुहमांकहोतानहींपांनी तबनहींजीवसीवरजधांनी ३४ ॥ सोरठा ॥ कहैकबीरयातततहे सबततनकोसार पंचततजोआईया प्रगटभयासंसार ३५ ॥ चौपाई ॥ मूलग्यांनपावैजोकोईअजरअमरहंसाजोहोई अजरअमरहैअगमठिकांनां पावैमूलसबदनिरबांनां ३६ नहींतहांधूपनहींतहांछांहीं तहांग्रहद्वारमायासुतनांहीं ऐसोततहवैतिहिगईकहैकबीरमूलसोआई ३७ अजरअमरसोहंसाहोई ऐसोभेदपावैजोकोई अमरहोयबहोरिनहींआवै ऐसोमूलसबदकालेषापा

...धरैचितलाई मूल

पापछो:पीफ्ल:क
डा:सात:

ाई येनामाचीन्हे
ाहिमूलहैसोईऊ
टजोदेषै कहैंकर्
|षे करैबिबेषले
वैनिकटकोइरिब
|जैसोआपहीआईसं
|कहाई आपहीमरै
|या आपहीसंसैमाया
|थआपहीडरैआपनर
हैततअततकहाई।आ
न्हतैता।आपहीनिगमक
करिमंता।४२।कहैंकबीरज
|कोई।आपहीसिष्यआपगुर
ाई।इरिकहंतोबहोतसुषपावै
निकटकहंतोमारनधावै।४२।
निकटबस्तपावैनहीकोई।अग
निगमनटकैनरलोई।निकटब
नरचितफुलावै।अस्थिरहोयन

१ सदि पावै ४४ पावै वस्त जो अगम
अपारा अजर अमर है लोक हमा
रा उतीया लोक और नहीं होई बो
लनहार जगत गुर सोई ४५
कहैं कबीर तब पावै हो तब धरि
हो चित्त पोय सो हंसा गहर गंभीर
है ताकूं यह मत होय ४६
गहर गंभीर कहावै सोई मूल ग्यांन
जाके घट होई मूल ग्यांन का पावै ले
षा अगम निगम सो करै बिबेषा
४७ नांव कूं गयान नांव कूं आया
जो देषै सो ही ठहराया देषन हार
सही है भाई जिन अगम निगम की
सब सुध पाई ४८ कहैं कबीर ये
ग्यांन हमारा सब हम ही मैं हम न्या
यारा इतनी बात लिषै जो कोई लो
क बेद तैं न्यारा होई ४९ नांव गांव
का भेद जो पावै अजर अमर हो
य लोक सिधावै पावै लोक देषै सु

सबासा। अगमति[illegible]
वासा। पुनि सोहा कहैं कबी[illegible]
सबतलनको सार औरु[illegible]
हे। बोलनहार अमान। ५१। [illegible]
डी। वाके रूपरे अनलौ [illegible]
ई जो लैके कहै [illegible]
लै पान[illegible] किंर स
बूस लगु[illegible]
कासकी। वोनी। [illegible]
वे संनौ। [illegible]
कहै कवी [illegible] डांनी ति रहे। ५३।
सुनिकै [illegible] मानी। [illegible]
मस्थांन उप[illegible]नी। [illegible]
नी सब को [illegible]
[illegible]
ई [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मूलग्यांनहै मूमसंतोमा ५ई चौपाई
कहैंकबीरसुकारिकें मूलग्यांन
कालेख कोइ कोइ हंसापायहै
जाकेंहिरदैबिबेषा ५७ चौपाई
मूलग्यांनअगमहै ग्यांना औरग्यां
नसबकूंगाजांनों मूलग्यांनज
सपूरनचंदा औरग्यांनतारा य
नफंदा ५८ फंदिजावेकोइ पार
नपावे मूलग्यांनबिनजनमगुं
मावे जहांलगनांवदीपकी बां
नी तहांलगदेषोजमकी षांनी
५९ तत्तकेजीवमुक्तिनहीं पावे
मूलग्यांनलेषा नहीं आवे कहैं
कबीरसुनोंधर्मदासा मूलग्यांन
हमारे पासा ६० धरमदासबिन
वेकरदोऊ कहोमूलबहोतसु
महोऊ अजरमूलसबनसमझा
ई कहूंमूलबाहरिनहींजाई प
वरतिग्यांनकु महेहोसुनाई मूल

५६१

पतछिपाईमूलग्यान
नकूं भाष्या॥ सकलतिग्यानतुम
तिराया॥ ६ ॥ ज मूलग्यानप्रगट
होई॥ हंस तुम्हारे जैनहीं कोई
निजुम्हारे घर होई॥ तातें
जायजिगोई॥ ६ ॥ मायाबसि
बहोतहीधावे॥ तातें हंसालोक
आवै॥ याही बिरोध हंसनपरप
ही॥ कहैं कबीर कैसें निसतरही
४ बहोत जीवनरक कै पानी॥
धरि बोलै नांनां बानी॥ लेत्र क
तरनी बहोत अभिमांनी॥ ते जीव
नरक निधांनां॥ ६ ॥ कहैं क
बीर सुनौं धर्मदासा॥ तिन जीवनको
मथुर बासा॥ हंस बीयालीस तु
होई॥ मूलग्यान बिनजाय
। ६ ॥ हंस बीयालीस राजमैं भाषा
लग्यान अपनैं घरराषा॥ जहां जे
तहां ले सातांनां तहां २

षांनां ६७ सांचाघट षोजिजो ले
ही तहंग्यांनपुनितेसादेही जाघ
टदेषोवहोतसमाई तहांग्यांननु
मदेहोदिखाई ६८ कहैंकबीरजां
णोंजोकोई तनमनधनअरपैपुनि
सोही मूलग्यांनजाकैंघटहोई जो
जनजायलोकमेंसोही ६९ दोहा
तनमनवारेसंतपरे करेनसोचअ
सोच मूलग्यांनहिरदैगहैं सबघट
ाकेलोच ७० तनमनअरपैसंत
पर सोहीसंतनिजआय मूलग्यांन
गहेभौतिरे फिरिनहींजनमेंआ
य ७१ चौपई मूलग्यांनजोपावे
भाई सोहंसासतलोकसिधाई मू
लग्यांनगहोअगमअपारा धरम
दासतुमकरोबिचारा ७२ करो
बिचारपरमपदपावो तबमूलग्यां
नकालेषसमावो पावेग्यांनध्यांनकी
षांनी मूलग्यांनकाकबिरनाजांनी

ज्ञम्यांनजांणीलेमाजोमकहैसोहीज
गमेंगुरुकहावैविनपरचेदरणिहा
करहीवंसतुम्हारलिंकन्नुसरहै
धनिच्यहीगुरुन्नापहीहोईविन
चैसबजायबिगोईंॐ॥दोहा॥
हैकबीरधर्मदासस्नंतिभरमेंसं
साराम्रापहीगुरुकहावहीतेत्रवं
महारा॥ईचोपई॥ब्रूटकेजो
पारनहीपावैसहीसहीकरिज
भरमावै॥त्नल्यानग्रगमकोत
नां॥चित्स्नाहंसपावैपरवांनं
पायव्रवांनांतनमनधरहीक
कबीरसोप्रांनीतिरहीपावैग्यांन
मकोवांनी॥कहेक
॥ददा॥त्नलग्यानबांणीहेसारा
बीसबरजुगमांहिंपसारा॥ग्रंथ
मैंनीजुगसमझावोसुमरनप्रवां
नहंसनबरम्रावा॥७॥साधुसाध
मकरिलीजोमूलग्यांन

दीजे मूलग्यांनतुमदेहोदिढाईकरी
याकरितबदेहोसुनाई ८० कहैंक
बीरसुनौधर्मदासा मूलग्यांनहैअग
मनिवासा हंसहोय़शबदजोपावै
द्रुतीयाभावकबूनहीआवै ८१
कटषोजकैरेनहीकोई ह
वैनरलोई कहैंकबीरमूलजोपा
वै डारपातसबहरिबहावै ८२ ह
महीफरहमहीहैंमूला हमहीक
लीकंवलमेंफूला आपहीधरती
आपअकासा आपहीअगनिआ
पप्रगासा ८३ आपहीपवनआप
हीपांनी आपहीअंकूरधरिआर
बांनी कडं मू द्याकडं प्रगटपुक
राकडंमुनीहोयमुनिजोधारा ८४
आपहीकांमआपहीजोवनआ
पअंकूरआपबिनसावन कहैं
कबीरजांनेंजोकोई आपहीअ
जरअमरहेसोई ८५ आपहीअम

ओत रिया॥आपही ग्यान प्र
गुलिक रिया॥आप से आप लिये
कोई॥आप ही देही आप बिदेही
॥साषी सबद मूल नर लोई॥मूल
ग्यान जो जे नहीं कोई॥मूल ग्यान
तन के पासा॥साषी सबद जग में
गासा॥६१॥मूल ग्यान तुम ले हो
चारी॥पावो ले अक रोक पिहा
॥कहै कबीर मूल जो पावै॥औप
तिर लै आर जीव मुकतावै॥६२॥जे
या चढै अकासा॥बिना मूल
नहीं बासा॥ऐसे जीव फिरे बिन
ला॥ऊंठा ग्यान कथे सब मूला॥
॥मूल एक कुरम है भाई॥
थूल तहां ते आई॥कहै कबीर सु
धर्मदासा॥बिना मूल पावै नहीं
सा॥६४॥अब भाषूं काया अस
थूला॥भाषूं ग्यान अगम निज
पद मये क कुरम को का॥अष

रमतहंगेतेंआया ॥८१॥ सातूंसागर
सप्तपताला ॥ चोदाभवनमधिह
जुवाला कहैंक बीरसुनोंधर्मदा
सा ॥ इतनोंमेंनहींपावेवासा ॥८२॥
अडसठितीरथदेवतेतीसा ॥ दा
तायेकमंगतासबदेसा ॥ मांगीमु
क्तिकहाधूपावे ॥ बिगसेंकुंभजल
मांहिसमावे ॥८३॥ चोदाभवनमा
थेहैपांनी ॥ अगनिपवननहींमांहि
समांनी ॥ तामेंपांचततगुनतीनां
बसतयेकअगमोहिदीनां ॥८४॥
आगेंबसतकहेंतभाई ॥ कहोवे
आरकौनउपजाई ॥ कहेंकबीर
सुनोंधर्मदासा ॥ मूलग्यांनमूलप्र
गासा ॥८५॥ अष्टधातकोसबेका
या ॥ कहोअस्थूलकहानिरमाया ॥
अष्टकुरमवेतहांरहाई ॥ कहाभई
उतपतिकरिभाई ॥८६॥ पांचततवे
केसेंभयेउ ॥ तीनंगुनकेसेंनिरम

येअतवनहींकायाकेअस्थूजान
बकहांरहेंततकामूलाछ॥आतब
येकायाहतीनभाईलछेकहांर
हेसमाई॥जोयेलानहींपावेलेखा॥कहे
कबीरमूलकहांहेभा॥४॥ततारामें
इलसबकोईभाषेमूलपांनकेसे
जीवपावेमहोलकतारहेंश्राका
सा॥एकचेंहनोंमेंकपूगा॥सा॥१००॥
ऐसापांनपावेजनकोई॥मूलपां
नसंपूचाहोई॥बिगूमैरविचंदाकहां
जाई॥चंदासदेखिकहांसमाई॥केसे
भयोदिवसकेसेभईराती॥केसेभ
ईकमलकीफूलपांती॥इतनोंपांन
बिचारेभाई॥कहेकबीरमूलनि
जपाई॥१०१॥एककुरमकीबरनों
काया॥बारापालंगदेहनिरमाया
कुपालंगऊपरसिरवांरा॥तीनलो
कधरमकाथांनों॥१०२॥पालंगती
सहजकूंदीनां॥पालंगती

हांकीनां निरमलपवनतहांरहैस
माई कहैंकबीरसुनिधरमनिभाई
१०३ कहैंकबीरसुनोंधर्मदासाग्
ग्यांनमूलसुषबासा एककुरम
काकहूंवषांनां सप्तकुरमतहां
गुप्तछिपांनां १०४ एककुरमकी
उतनीकाया येही भावसबऊपर
आया जेताकुरमपदमऊस्थूल
मूलग्यांनकेंवलकोफूला १०५
तहांफलफलजोलागा ऊसकु
रमतहांपुनिजागा ऊसकुरमत
हांभईकाया च्यारिकुरमच्यारि
कासाभया १०६ कहैंकबीरसुनौं
धर्मदासा मूलग्यांनहैअगमनिवा
सा च्यारियांनितनहींतेआईकद
लबृक्षतनहींनिरमाई १०७ पद
मयेककुरमऊसफूला तहांहै
कदलबृक्षकोमूला उपजीनालि
षकासहींआई लहलहकेंवल

तहां निरमाई।१०८। जहां २ कवलत
हां २ फूल न भये ३। तहां तहां कायानि
र भये ३। कहै कबीर सो ही भल ज्ञा
नी। मूल ग्यांन जाके हिरदै समानी॥
१०९। ए कांया ग्यान लिये जो कोई हस
ती पंछी चीटी होई। सो इसैं लभैं स
रूगाई नरदेही सब ऊपरि आ
ई।११०। नरदेही जो पावै ग्यांनी। गहि
ग्यांन जो अगम निसांनी। तां चतत
हां छिक रि लेही। लीनूं गुन प्रचा क
रि येही।१११। छल बांनं अगम कहावै।
सो ही सो जन समझै पावै सोही। पां
च तत लेहां छि समो दो लीन लोक
कीनां तहां छि जो आवै।११२। मूल
ग्यांन लाऊ पर रामा। तिहि पावै को
ई संत सुजांना। कहै कबीर सुनो न र
प्रांनी। मूल ग्यांन मूल है बांनी।११३।
ता तै अक्षर तत निभये। ता मूल
ग्यांन सब ही।न१

हांकीनां निरमलपवनतहांरहैस
माई कहैंकबीरसुनिधरमनिभाई
१०३ कहैंकबीरसुनौधर्मदासामू
लग्यांनमूलसुषवासा एककुरम
काकहूंवषांनां सतकुरमतहां
गुपतछिपांनां १०४ एककुरमकी
उतनीकाया येही भावसबऊपर
छाया जेताकुरमपदमअस्थूला
मूलग्यांनकेवलकोफूला १०५
तहांफूलफलजोलागा अस्थूलकु
रम तहांपुनिजागा अस्थूलकुरमत
हांभईकाया च्यारिकुरम च्यारि
कासाभया १०६ कहैंकबीरसुनौ
धर्मदासा मूलग्यांनहैअगमनिवा
सा च्यारियांनितनहींतेआई कद
लमबलतनहींनिरमाई १०७ परद
मयेककुरमअसथूला तहांहै
कदलबुसाकेमूला उपजीनाति
ञ्छकासहीआई लहलहकेवल

तहां निरमाई।१०८। जहां२ कंवल त
हां२ फूल नये॥ तहां तहां का या नि
रमये॥ कहै कबीर सोही मनि जा
नी मूल ग्यान जाके हिरदै समांनी॥
१०९॥ काया ग्यान लिषे जो कोई हस
ती पंछी चींटी होई॥ घोडा बैल मैं
सरु गाई नरदेही सब कथि लिआ
ई॥११०॥ नरदेही जो पावै प्रांनी॥ गह
ग्यान जो अगम निसांनी॥ पांच तत
हाथि करि लेही॥ तीनूं गुन प्रचा
रि येही॥१११॥ छठवां अगम कहा ले
सोही॥ सो जन सम के पावै श्रोही॥ पा
च तत ले हाथि समावै॥ तीन लोक
की बात हाथि जो आवै॥११२॥ मूल
ग्यान ता ऊपर राषा॥ तिहि पावै को
ई संत सुजागा॥ कहै कबीर सुनो नर
प्रांनी॥ मूल ग्यान मूल है बांनी॥११३
॥ ता तै अरु रंग उपनि नये॥ मूल
ग्यान सब ही निरमये॥ मूल बांन

७ मूलहैकाया।मूलसबदतैंलोकब
नाया।११४।जोषोजैसोपावैमूला।
पावैमूलअगमअस्थूला।परचा
होयसबदसंसारा।बिनपरचैब
हाकैरेगवारा।११५।बिनपरचैलोक
नहींआवै।भरम्याजीवपारनहींप
वै।११६।दोहा।लोकलोकसबक
हतहैदेषिनकायाकोय।मूलनां
वनिजगहरहो।आवागवननहो
य।११७।चौपई।वारपारसबपर
चाहोई।पावपांनअगमनिजसोई
साधूसेवाजांणैजोकोई।अगमपां
नजाकैघटहोई।११८।अगमपांन
कीजुगतिजोपावै।सोसाधूकीसेवा
ल्यावै।जोसाधूकोभावपहिचांनै
सोसाधूकीसेवाठांनै।११९।दोहा।
साधूसाधपहिचांनहीं।सोहीलो
कनिवास।तनमनअरपैगुरुकौ
जगसूंहोयउदास।१२०।चौपई।मू

ग्यानबोजिहोभाइ।सोसाधूनिज
बदसमाइ।ताकेदेहनहींहेकाः
।जिनमूलग्यानकालेषापाया॥
२१।पावैलेषासाधकहावे।सोसाधू
बंनमुक्तावे।कहैकबीरसुनोधर्म
।साधोसबदकायाकेमासा॥१
२२।कायानजाणैजोकोई।सोसाधू
प्रसथिरघरजोई।सथिरहोयबहे
रिनहीआवे।साधकुमाईजोचितला
।१२३।साधकुमाईअगमअपारा।
हीसाधजिनतनमनमारा।कहेक
बीरसोसाधकुमाई।साधेनलआरछि
दकाई।१२४।जानिकेकरेशबदसेले
षा।मूलग्यानगहहिरदेविसेषा।रहेले
बहोरिनहीआवैजोम
लेषापावे।१२५।मूलम
ईजुतीयासावक
दासतुमलेषालेहो।भ
डादेहो।१२६।भरमेहं

। उनियाछेमाहि नारचढावे हंस
मारालेश्रापावे सोहीहंसलोक
कुंलश्रावे १२५ वंसतुमारागुरुकहा
वे सो चकलेतोमारणश्रावे १२६
कहेकबीरधर्मदाससंस
बदकुंबोजिबलाय बिनासबद
केहंसा उठेजमदुरजाय १२७
ग्यानिलोनिकुलश्रावेदोई
ग्रहसकेधोलेनाहोई हंसहोयजो
वनमुखो फंदाकाटिलोकलेजा
वे १२८ कहाकंसारामानेकोई सो
हंसानहीजायबिगोई ग्रहपरके
जोकोइपावे औरग्यानसबहीबि
नरावे १३१ कहेकबीरसुनोधर्म
ल सोजोग्यानतुमकूनामनिवाह
धरमदासलेजग्यामांनी टेके
रनबुसमहंक्यांनी १३२ नबो
रनबुंबिलतीलाई जगसमां
नसमाई कहेनबोसबद

सेवा॥कैसैंकरंतुमारी सेवा॥१३३॥
जिहिंसेवापुरषसुषहोई।सेवापुर
षबतावोसोहीतनमनलेसैंआगे
धरिहोउबध्यानाद्वकलूनहीकरि
हो॥१३४॥कहैंकबीरजोरेमनआई
सोहीकरोजातेंजीवेंजाशे।एकबूंद
सेंसबकीकाया॥कऊंपुत्रीकऊं
पुत्रकहाया॥१३५॥कऊंमाताकऊं
बिटीयाहोईभैंरीसुतहोयबैठीसो
हीकऊंसुनाकऊंबहनकहाईक
ऊंनोंनांकऊंआजीयाआई॥१३६॥
एकबूंदतेंयेतालगा।ऐसैंसब
देहमारापायो।तोराकुलपायोंउ
श्रभिमानी।सेवापुरषमलकरि
नहीजांनी॥१३७॥ऐसीचालचलैं
जोकोईकालदलातांकूंनहीहोई
कहैंकबीरसुनोंधर्मदासा।सेवासु
षिपुरषप्रगासा॥१३८॥अपजेलहरि

ाचढावै ननमनवौरमैचलिखा
वै नबचढिवैडीगुरुपदपावै १३
ए मूलध्यानजाकेघटहोईवोरत
नमनदीनकुलखोई १४०
ननमनवौरमैनपर मूलध्यानसु
खहोय कहैकबीरधर्मदाससौं
कायामायाहोय १४१
मूलध्यानघटदरसैस्रावै काया
मायाखोनिचढावै कहैकबीरसु
नौधर्मदासा तवकारमैनीकहुप्र
कासा १४२ दूजाभेदनहीतबक
हीजा मूलध्यानयेहामतरहीया
मोहीलबदमेजोहैध्यानी मूलध्या
ननहोपानिखानी १४३ मूलप्रवं
नसुगमहैभाई मूलध्यानकाज्ञा
नीभाई कहैकवीरधरमनिसु
निलेहो मोहीभेदसाधनकंदेहो
१४४ धरमदाससुमकरोविचारा
सोजोध्यानमूलटकसारा वाहीम

लतैं आई बांनी॥ आई आयो सबद सहि
दांनी॥१४५॥ जो पावै सो हरनाम न
हीं तो जाय को नरक लहुला॥ मूल ग्यां
न कपरै निज आई ओर ग्यान सब
चलै बहाई॥ धर्म मूल ग्यान संतन
के पासा॥ को दिये यांन जग में प्रकासा
॥ हो साहि ब सिष जिनती लांछ मूल
ग्यांन का लेखा पांछे॥१४७॥ कहैं कबी
र सुनो धर्मदासा॥ सत्त सबद जुग मां
हि प्रकासा॥ आदहो साहिब वेनती क
र जोरी॥ मूल सुक्कह हो सबद की मेरी
१४८॥ कहो लोरि तापर चहे आं
जो मैं मूल लुमारा पांछे पांछे मूल
अगम कहानी॥ तब प्र मोध चौहां
नी॥१४९॥ च्यारि षांनि पर अछर
आ वानुर षांनी काहू बिरलै
नर पांनी है सुछम काहा॥ तामैं गषां
न बसै औ गाहा॥१५०॥
मवहोत नड षांनी बं

वे
हदांनी अक्षर मांमां सूक्ष्म रहाए
कबीर पावै जो कोई १५१ तो
ांवे जाकूं पुरुष जो देही अक्षर
रयेक कलि लेही मावे भेद तनैर
पारा ग्यान रहै काया स्वारा
ुर लेहो बिवाणि पार पद पावे
ोसाधु सलिर घर आवै अस्थि
घर की आगम है कोरी लोचे हंसा
यात किरोरी १५३ कहै कबीर सो
प्रगट अमोला सतसबद साधु
अबोला सतसबद सुनै जो कोई
निरंतर होय कै लागै सोही १५४
टेढ्यां नहं फला लेवा माया मदः कै
कुल कुल लेखा असतु मारा मदः
कूं भावे बिगड़े हंस लोक नहीं सा
वै १५५ सांगि सांग कलि नले ही
ग्यानां हंस कालके देही पंथमें ह
लग्याय कलि लारा करै सहार दोजग
बिललात १५६ केः बाबी कैसे निसत

है।बहेतभांतिचो[illegible]ल्ही।
जसबनीयांहलवा[illegible]ही।बोलै
बसलदगाजो[illegible]आसंग
चे होरिहरिजो[illegible]सेसाकणि
हारदगाजोचल[illegible]होहाकेहै
कबीरधर्मदास[illegible]लाहोयकणि
हारकहां[illegible]हिकोंअटके
जमकेहा[illegible]चोपई।पहरीद
तकणि[illegible]संगीसाथी।गो
हनल्या[illegible]भगतिकालकी॰
ईजम[illegible]सैनांचेभाई।१६०।अ
पनो[illegible]रिनरीयरमोरा।बाप
धनीबोको[illegible]नानिहारा।ओधानरअर
अंधीलारी[illegible]नकिनहीआयहमा
री।१६१।[illegible]ननासिकामसतगकोना
भूलेफिरैभ्रमनहीजानो।बांधिजी
वजमकोंधाकीनो।अंधेनरपुरषनहीं
चीनो।१६२।येसबबणीयांकरेपसा
रा।अैसेलोभअटकेकणिहा

नाकरैवहोतविसतारा धरमही
नताकरहीपसारा १६३ आपर
तहांकहैंसवांनो सबदसभाका
कुनजांनो चोकारोटमिटाईनं
नां येहीजुममैंआयसवांनो १६४
सबदहमारनमायहै ऐ
सेसठनगुणांन बिनजांनेनांकब
है कहैंकबीरसुजांन १६५
येसबबनीयांकरैपसारा वे
चनबसतनन्योवैपार ऐसेसुग
धग्यांनसूंनलेमांणिकहीरेकं
करमनचूंलेमांनिकहीरेकंक
रमनमांनां कंकरलादलसबैहि
हंनां मनचालकंकरकाहूनजां
नां कंकरसूंसबजगलिपटांनां
१६७ कहैंकबीरभूलेकर
तिहारा मेदनकाहूपाय अपनो
लालव्यकारीं चोकाकैवनाय
१६८ चौकाकोबिसतारबना

सब्द का लेषा औ[illegible]पावे सब
ले षाषो जे जो को नो सार सब्द न
अछर सोई [illegible] अछर में नह
अछर सारा [illegible] हे को इ हंस
हमारा हंस [illegible] सनवां
अछर सब्द [illegible] चानी ॥१७०
अछर [illegible] हाराा न हअ
छर गहि [illegible] राप के हे कबीर
हनि [illegible] आपति रे औरन
के सारे [illegible] तीन लोक जम जाल
पारा ने [illegible] करम अचारा
अछर भेद [illegible] नी भुलानी ॥स
बद [illegible] का कुन हीं जानी ॥१७२॥
[illegible] सो हंस होई ॥ तीन जीते पुनि लोक
ई [illegible] हिं ते हंस लोक कूं आवे ॥
अस्थिर पांन मांनु मजो पावे ॥१७
र निज भेज बिचारा ॥ सो
हंस है अगम अपारा ॥१७४॥ इ
[illegible] पांन संपूरण ॥

ष्वुबंमीरसंगाकरिसांनै
हरति सूरति बुधिगाढेबांनी जतनं
जतनकरिकीयोचितेरा नबस
बसकल्लसंनाल्याडेरा १ सबको
जरसंबांस्चालीका वे..जबकेमं
हरमतुसपीवका स्छिबूंदतैंछ
छिकीजूं रिजमोतिमाछेलिमदी
न्हां २ करीम्मारलाजबजीवमल
पांचमहीलांमुमक,लिमेना जवरस
गनिक वदून चाबी लूंबलपाव
कोंलबिंअगमी ३ स्वरधेपावस्त्रो
ष्ठेमुवल्हीया स्वरजलापनीमी व
लूकलीया ल्याडीजलोयपुकारतुका
रं स्वबतेसाहिबपललबिसारू ४
स्वबकेकाटोमेरै लाई निसदिनछि
जमलिकरं गुसांई डुनीयांसतैं
तेहनल्यातें द्विनचरिलितेरगु
गुलगांवंपीयाप्रेलसं
सांई ५

नेंकसेकाराड
यातकक्षांतिष
कोलकोलकनि
नीयांमिलिकी
बावजबलागं
लक्ष्मामीष
वेजोहिजेनि
दोयच्यारिमेक
डीघुघरनेला ॥
नहींजानेनि
नेनाम्हकार
रंकएककोनि
बोईलनड़काग्
तिच्यारिनेनीलेही
गईतक
मजांके
११चोपई
कांमकों
नेरांक

नवजूरकी
चोपई
गहासनड
लीयांहेनि
नाम तुको
मंगलगा
रावेदिन
लाकरीघो
नरेषवरि
हा मेंतो
मानेराजा
ऐसीविधि
कनखेरम
लड़काईऐसे
पीवनेकनां
जानीकेजीव
त्रीयासेलोरे
कजोरेगलीयों

ोले १२ बदसूरतिबदख़ूमलन्
वे नेंकीनिजरैकासंग नमावे
ाजीवनांतेंमरनांखूब फरामोस
ीन्होंमहबूब १३ जोरकरेवहदो
ेन्गाकरती जांननांहीबरयांमर
ी गजतुरंगपटंमरमेवां नेनघवा
समाहिलीलेवा १४ केतेजोषमां
हिदिलदीया कीदरख़पनांयादन
कोया सदीपकरेख़ांहनिहारे द
मिखासीमूछसंवारे १५ दीनखो
सिडनीयांदिलदीया जहरघोरि
मूत कूरिलीया ख़जबख़वाज
एकनहींमांनी मेलीसमालिवेवा
प्रांनी १६ रातिगुमाईतरनीसंग
हिनदुनीयांमेकेल्योरंगा हालवे
दरैखासाथाका मरनगुमांनकेव
कावो १७ ज्यांनीमोईजिस्माकीये
हारासाहिबख़पनांकचूतसंभार
पकडेंनाडे सीसकरकंपे बल

बलनवे रिसुगत्र
याजबड़रजनके — के
वसमचुवेपानी — किस
लरानी कंचे — तीमूडे
कहैं ओरओर — श्रा
जीजसकुल — गाई॥
साविन तब — लक
छीनघरली — केरारी
न्हो २०॥ भार — बके
उघरेत्र — लेटाव
कबीलो — लोकि
नरहे॥ २१॥ — रेय
कीकबीर — याबु
वबरके — नकैसे
रा॥ २२॥ आदु — सती व
नीरहा — मिर
चरे — २३॥
अजरा — ल
हेवानबलतपछितायाः२४ ।
— तजुमके

लसबमेरा॥२४॥रोकेहलकसास
नहींआवे॥एकरेसीसबकूतउप
पावे॥कहांवेसेजकांमनीसुषा॥
तेराकौन बूटावेदुषा॥२५॥कहांवे
सेसपरोहितसंगी॥सेजगत्नीचासे
जांचंगी॥कंटसलीतातोबदमांमा
कहांवेमालचंद केजांमां॥२६॥चु
वाचंदनजगसुषआसन॥तेलते
बोलकहांवेबासन॥प्रभुबंदगी
लबनहींकरी॥कौनछुनावेमुस
कलिपरी॥२७॥तबतुमकांमकुमा
केऐसा॥अबगाफिलसुषचाहेके
सा॥दिलकामालिकदिलमेंसुने॥
सांवांबोयगेहूंकहांलुनें॥२८॥की
याआपनांआपहीपावे॥साहिबकूं
कांदोसलगावै॥रोवेबचावसना
ससबचाहेकैंनछुईबंधनपरेग
हे॥२९॥अजरायलसोंकहांबसा
ई॥कौनसरी दरदकोनाई॥कौ

गारोत्मोकरैसवको आज्ञाप्रापत्तीस
वमेंषोडीरंगोतवदेमारमलेहीआ
येतोसापासानुरत्नभिलोंकेसव
लेषोस्पापाषमेंहीयुसंगाचल्पासे
जीवतकीया॥२१॥दोहा॥मातेरीवुर
न्यादिहेवंदेदिलमैंराखोजोया॥करो
कमाईखूबसी॥साहिबजोसिलहोय
२२॥कछुनरलेसंसारमेंफनाफनी
करिजो॥जिनाखियाोकीवंदगी॥
यागेसुमैंदोलाइशानवेकहावेत्तस
करीसलललस्करकूंजायासेलधम
कासोसहोलेआगोरीषापार्३४॥इति
श्रीनसीयतनामाग्रंथसंपूरणः॥
अथमूलकोसीहीलिखते॥चोप
ई॥धरमदासजबविनतीकीन्होंअपा
नीभेदकेंशिष्यनीको॥नरीयरकेर
कहोलिखआत्मलेषामूलभेदमेंपा
जाश्रक्षहोधरमनि
केजंसः

गुपतनांमजोऊगमऊपारा नहीं
कोइपावेषोजगवारा २ गुपतनां
महैपुरषहीकेरा पावैहंसञ्जामैज
मकेरा ६ज्ञानैयनांमनहींपावैफि
रिफिरिचोरासीमेंज्ञावै ३ पावेमू
लपुरषकेहीरा गहनकालविष
मकीतीरा मूलनांमहंसनिसतारा
पावैगमजजहोयसम्हारा ४ नांम
प्रतापहंसजोपावे षोजैमूलसत
लोकसिधावे ज्ञहोसाहिबइतनी
गमजीवकैसेंपावें कैसेंकेसतलो
कसिधावे ५ लैषामूलमेंज्ञगमही
भाषा ज्ञांनभेदमेंगुपतहीराषा पं
चतत्तगुणतीनसमांना कैसेनरज्ञां
नेषुनिसांनां ६ ज्ञहोधरमनिषोजी
होयसोसबकहुताके षोजमूलपु
निजमसंवाचे ७ नांमप्रताप
भेदमहीहै चीन्हौकोइनजाय क
हैंलखीरसोजानहीं गहैमूलचि

तलाया॥८॥ चौपई॥ अलोनाहि लाग न
नीगम जो नही पावै॥ नाम नकार निस
दिन लौ लावै॥ औरग मल्ग को जल क
रही॥ सो प्रानी वैसे जिन्ह करही॥९॥
तीन जीव के सैं मुक्त लावै॥ पोसा हिव
मोहि भेद बतावै॥ अपना नाम मंने
हो बचाई॥ तुम्ह ऐसा रन पहिरं ने
लाई॥१०॥ अहो धरमनि हम से नाम सं
मुक्ति न होई॥ जो पै हंसा जाप चि गो
ही नाम हमारा हंसन के नाई डनने
हंस लोक न ही जाई॥११॥ छंद॥ सम मदपा
नाम हमारा कैसैं हंसा उतरै पार॥
जब पावै मूल नाम परवांनो हम गनो
मल्ले करै पयानो॥१२॥ मूल बिन हम
ही लोन्ना है सो हंसा नो कन्है अंव
पावै मूल जु निलै पैक दा॥ सोई ढंप
मौजल्ल तीरा॥१३॥ फंद दल पदव
सतारा सहा पैंक डेपु निकेस
१४ वे ल कैहकवे रट ह

मूलअपार॥जोकोइहंसापावहीम
कुंचैलोकहमार॥१५॥चौपई॥अहे
साहिबजुगनरतुमहंसमुकाई॥ता
हिनमूलकौनसीगांई॥जुगनरतुम
हंसउबारा॥हेताकहांतबमूलने
न्यारा॥१६॥अहोधरमनितुमकछून
जांनां॥बोलबचभाषोअपांनां॥जु
गरमूलउगटेआई॥मूलहीहंसब
हंसबचाई॥१७॥बिनांमूलएकोन
हीबांच्या॥फिरिरचोरासीमेंनांच्या
प्रथममूलजोपुरषबषांना॥जुगजु
गमांहीहंसछुटांनां॥१८॥जुगरतेषा
मूलबषांनां॥हंसापकुंचैलोकठि
कांनां॥अहोसाहिबचटिकेमूल
प्रवरतिसमाई॥ताकागुनमोहिदेहु
बताई॥१९॥केटूबेकेबांचेमाई॥
कौनभांतिलेहोमुकताई॥चटिके
मूलप्रवरतिसमाई॥सोसाहिबके
सीगतिपाई॥कैसेभांतितजीवकी

होईी।जो चटिकै मूल प्रकारति जिन
देहीं।ऋहो धरम जि [illegible] मूल प्रवर
तिग हलेई।स्य [illegible] प्ली ता
देई।।४१।।दिह [illegible] करजोगे
धरमराय कै [illegible] ।।पुछा छोडे ड
बल्येय ठवाई।। [illegible] चौरासी नरमें
नांई।।२२।।बार [illegible] पडे प्रन बसेरा
येको [illegible] डा।जहां लग
जौणी है [illegible] ।नरमें जीव पुनि
बारु बारा।। [illegible] चूकि मरक
बिसि परा ई।।सब मरकट मिल तै
कै जांई।। [illegible] हां जाय तहां तहां
।बहो [illegible] कै रित्रास दिषावे।।
धा [illegible] हीसं कनां करही।ज
माल [illegible] मरकट बिसि परही।।
चूके [illegible] सरीरा।।तब मरकट
नि [illegible] सरीरा।।२५।।ऐसैं मूल चू
नरक परा ई।जैसे मरकट भाधी
बुमाई।।२६।।दोहा।।चारिबो

मूलअपार जोकोऽहंसापावहीप
कैचैलोकहंसार १५ अबे
साहिबजुगन२ तुमहंसमुकाई ला
हिनमूलकोनसोगाई जुगन२तुम
हंसउबारा हाताकहातबमूलनं
मारा १६ अबोधरमनितुमकछुन
ओंनां लोलन्धचलाबोअपनां जु
ग२मूलउ तोटलाई मूलहीलंसब
हंसबचाई १७ बिनामूलएकोन
हीबांचा फिरि२चौरासीमेंनांच्या
प्रथममूलजोपुरषउचांना जुगजु
गमांहीहंसछुटांनां १८ जुग२लेया
मूलउबांनो हंसापकैचैलोकवि
कोनो अबोसाहिबचहिकेमूलन
प्रतरनिसमाई ताकागुनमोहिदेहो
बताई १९ के दुवेकेवोबेमाई
कोनमोनिलेहोमुकताई चहिके
मूलप्रवर्तनिसमाई सोसाहिबके
सोगतिपाई केसोगतितजीवकी

दोहै॥ जो चहिकै [illegible] रोगे [illegible]
देहै॥ [illegible] चहि [illegible]
तिपहल्लेहै॥ [illegible] नोडराप्रसो [illegible]
देहै॥२२॥ देहमल्लो ता [illegible]
धरमराय के फ़ल्ले में [illegible] को [illegible]
पल्लेयु उगाई॥ लभचोरासी मरै [illegible]
नाहीं॥२३॥ बार बार पड़े भ्रम बसेरा
पके जनम होय नमे ड्राजहां लग
जोणी है बिसतारा। नरमैं जीव धुनि
बारुबारा॥२३॥ फ़ाल सूं चूकि मरक
टबिसि पराई॥ सब मरकट मिलहै
कै जाई॥ जहां जहां जाय तहां तहां ध
वो बहोत भांतिक रि त्रास दिखावै॥
२४॥ ऐसें गुरद्रोही संकनां करहीं॥ ज्रा
स फ़ाल चूकि मरकट बिसि परहीं।
जो चूके दुष सह सरीरा॥ सब मर [illegible]
नि छांडि सरीरा॥२५॥ ऐसें मह [illegible]

॥ दोहा॥

७ ऋटेहेसा मनमेंश्रामनमसमायम्र
ननेकेखुकेहेसामनरमें जमकेहा
छिखिकाय २७ खुदीश्रासास्नं
बदका नगीकानर्कोमोरि क
हैकवीरमेंकहाकले. कंदमेंप
ड्राबहोरि २८

श्रकलिपीरहे मनमुरीद
है श्रसलिगदाई ननमईद विच्यार
श्रोनीका छिमवाम छानीदोजगी ही
मनिफिनाथु नकफवरडममन गुमा
हाम हव.हनान नपमसेतान
सेदानबोदाक ईमानहेहीनान
नः कनहीनांदनद्री दरदखंदर
नेम बेदरदकमाई मनीगाफिल
दुदांगुमरा बेरनोमा बेयेरबकोन
ईमानमुसलमान बेईमानबेकुफर
बोन नारीजुनम मोन्नुनिस्त दे
जगहाम हेलमयंम हेजोमहरम

।ननी की।। बिजदवंदी
जोरी पत्नीती।। हूक जारूपाना
बानांरूपा रखादे जातिबिर
रिनेगांनी मरसांनी।। हूदलिपात्त
साही दमैं बरक लिसावालूती
कतिम्हबेतंबेगुलांमाबसीन
कंसलांमालांमोंओहरी।। बीनां
सरा।। अकलिकंकलांमाकलांम
कूंसलांम।। महरमा सूरासाहिबनू
राजालनमहरासाहिबबेहदांराह
पीरां।। बेराहबेपीरां।। बरदीना।। बे
सबरेबेदीना।। मुरीदा हिजूरीनां हजू
नांमुरीदां।। फकीरी सबूरी।। नांस
बूरीनां फकीरी।। बाबाआदम।। मा
माहवां।। मक्कामदीनें चढ्यातवा
पहलीरोटीफकरकूंरबानांदे
फूटेकूंका हूटेतवा।। फकर
देसे अपनीहवा।। माईयांक
सांईयांजनानां।। हाजरां।

८ जूरि साहिब नरपूर गरुसा॑ति ‍ ॥
सदहक दिनदरीयावमहेबति
बेवाहदीदारस्पनाह सुपाकमहं
मद एकबात षेरा हूमांनमुसलमां
न जिनकामनमंजन जिनकाबेड़ा
पार सुनताहैयारां फकीरांकुछि
कहताहै पढीएहिंदसधांनी हैसा
वधांनी पढोमुसलमांनी रहेश्राब
दांनी करारकेमाथेदरार दरार
केमाथेलकरी लकरीकेमाथेफ
कीर गुरुमहरवांन चेलापह जवां
न भगतिकबीर कुदरतिकमा
ल श्रावैमोजेकरेनिहाल

संतदासननगुरकेचरणा तिनको
गहंमोहिटकेसरणा जानेज्ञमजे
मांनविचारा छोडेकरमभरमव्यं
तरा ॥ बजरंचोजनकरजमनाही ॥

ौ।तिनकोनिजानंदप्रकासो।जिन
कोआस्वादिरहेहैं।सोलोकहितार
थभाषाकरूं।।श्रीभगवानब्रि
च्यहीभाष्यो।।सोबिरंचनारदसौं
भाष्यो।।सोनारदव्यासहीसमझा
यो।।व्याससुषदेवरिषुमहीपढा
यो।।सोसुषदेवजीपरीछतआ
।।गे।।दिलसुपलसोजागोसोही
तत्त्वजहंतिस्मन्तैरोसहंमत्व
सीरिषमन्त्रहै।।श्रीभगवा
आपपढ्यौभाष्यो।तातैंनामभागवत
राष्यो।।आपमिलणकोपंथबना
यो।।सारगवङतनहिरपायो।।
हो।।व्यासदेवजीभागवत।ना
दसस्कंद।।तिनमेंयेकादस
नैंनलहैस्पष्टंधाईचोलई
कादसइकतीसअध्याय।तिनको
रोकहौंसुनाय।।दकुलनास
सेगायो।।बहोतभांति

तुपायो ७ हरिसुरपंथ कह्यो तुनि
चारी जनकही जोगेसुरन बिचारी
सोनार द बसुदेव ही कह्यो पाये
ग्यांन सूंम पद लह्यो ८ छोरे कम
उह्ह वपु त्याव तेईस करि निज पा
नसुनाव ह्वैयादव बिनास बिसत
र येइकतीस ग्यांन निजसार ९
श्रीसुषदेव करत उचार मन श्रोता
नृपति लह्यो हिगत जिन्ह नातवसु
प्रजीये कीयो बिचार ग्यांन बिनां
नांही उद्धार १० तातें ब्रह्म ग्यांन
समुझांउं प्रथम हीं दिढ बैराग
उपाउं पंपीन्ह डैं पंष ह्वै जेसे ग्यां
न बैराग मिलें हरि ह्वै से ११ राजा
सुनौं जगत सुष जेसें जिन्ह संना
म्य मरमत तन रह्यौ सें म येको दिन
पन कुल यादव ज्यूंघ न घमंड
रुं हि समादव १२ तिन्ह को बल जो
मांति बिसतार गिनती करत न

।निवनकाप कै। कवलांक
निवनिधितहाँवसेशालीयो।१३
हरिसुधरमाश भाऔजाशी।बे चे
हाँब्यापैका र्श।सिनकीसमता
जांतीनलो।चनौंकहं॰
नपांऊं।१४।तिलकीबातकहतऊ
बऊसी।पलकमां।हिसुपनांकीजै
।च्यारिघरीमेंसबसिघारे।ऊंबु
दबुदापवनकेमारे।१५।रांमकम
तहांकोलिकलारे।ऊ।पहीऊपस
कलनसिं ह्ला लै।बिप्रआपकोकी
आज।धेिलबकस्मदेवकेकाज॥
१६।लोगनकोबेरागजनायो।ऊधुव
ऊदिहारौंसुमुकायो।प्रथमभीम
ऊरजुनहैऊनी।ऊननृपतिऊर
साहनी।१७।यांबिधिनृकोभार
लाख्यो।नांवरूपजसकौबिसता
।जाकूंगहैपकूंचे भोपार।ऊगै
नहीदेखपार।१८।बिकत

त्तिकरिअद्भुतकरमा।पाम्पोजग
तनागवतधरमा।याविधिसबके~
काजसंवारे।तबहरिजीवेकूंटप
धारे।१९।दोहा।अैसासुनिअद्भु
तकथा।यडकुलकोईजआप।
ब्रह्मकरीराजातहांलमिबेतिन
कोपाप।२०।चोपई।राजाउवाच
तेतौविप्रनक्तसारे।प्रमदांनोअ्र
रूसेवकनारे।विप्रकोपकीनोंकंू
पूरन।जातेंनासनयेसबतूरेन।२१
केंनंनिमतश्रापसोकोंन।कहोकर
पाकरिकरुनांभोंन।येकमनाया
दवतेसारे।आपहीआपकोनबिधि
मारे।२२।श्रीशुकउवाच।नृकोमा
रहरनकेकाजा।नृअवतारलीयो
ब्रजिराजा।बहुविधिभूकोभारउ
तास्यो।तबमनमेंगोपालबिचास्यो
रह्योजोलगहेयादवकुलसारो।ते
लगनहीभूभारउतास्यो।ममआधी

नरहैंकैसेरोसोतैंनिक [illegible] नैकल
मरोसहीहजोलोईि [illegible] असाहीं
तातैंकीजेजन [illegible] शेप्रंयथ
बांसलेटैनुनमाहूंगी [illegible] जनिमहै
पायघरमांहीं [illegible] नापमेंन्न
गनिकदोनोंनि [illegible] जल
रिजाविसोहीं [illegible] ज्ञाप
कोधस्त्रालि [illegible] आपारई
करिलिस [illegible] लायेव ह
रायोक [illegible] आयेसकल
रिषीख्नरसौ [illegible] कोटेमेत्रकर
वायोगौंनारशाचिवनन्नोगीराबि
स्वाभिनाह्नि बासाभ्रगुन्जनेन्नगति
कसिपलोमदेवनजरूनारदान्न
वरवकुन्तरिमलकुन्तविसारद
रणतहांसवैमुनिसूवैठे.यरकु
मारतहांठलकरिपैठे.
नितासैबवनावोविसा
न्न्रषिकायो.२७०जति.

चरननलागैं।पूछैंप्रसनषरेतिन
आगैं।येवनितापूछैंद्विजेराजा।
सुनमुषहोतलगेअतिलाजा।२०।
निकटिप्रसवआयोहैयाको।क
रोबिचारआपमैंताको।तुमत्रि
कालदरसीसबजांणो।कहाज
णैसोहमहीबषांणो।२१।तबकरि
क्रोधबचनअसभनें।कुलनास
कमूलयेजनैं।जातेंतुमसबकुमद
समाते।उपबुधिहोउसबयहोते
२२।बेनसुनतमनमैंभेआयो।त
बहीताउहीछिटकायो।देष्योत
हांलोहकोमूसल।तबतिनजांन्यौं
नांहींकूसल।२३।तेसबबकुतनां
तिपिछताये।लीयेंमूसलराजापैं
आये।उग्रसैनसूंबोलेबैंन।अतिम
लीननहींजोरेनैंन।२४।सुन्योंआप
अरूमूसलदेष्यो।जीवनसबनग
योकरिलेष्यो।मूसलरेतिचूरणक

रवायो॥कृस्नतहंचैलेइकबर
यो॥२५॥रितितरह्यो॥कोस्रतिवुल
ताकूंनिगल्यगयो॥इकसकातिसू
रनलहहरिनकेन्यो॥साकेतीरभ
येत्रंण।नारेहरी॥जैनरदेकजा।
नविसतस्यो॥त्रितलरतमहसे
म्यो॥ताकेउछलोइसोन्हायोभ्रा
धियेकसोजातलुनायो॥२७॥हरिजी
बातसकलसोजानी॥बकृतसंगी
हिरदामैंआनी॥जादीपेजोगमकन
थाकरणें॥धूंमनमांहिसकलसंह
रणें॥रचायेविधिसकलआपमन
भोई॥ताकूंफेरिसकैकहूकोई॥नि
श्चयजैसेथापी॥व्यापूंगहसंन
सोउदिजकेआप॥२८॥दोहा॥ती
रागनिरूपीयो॥गांनकाजेकुरसैं
ग्यांनकहैंश्रवजोलहो॥नार
वसुदेवभ॥२९॥इतिश्रीभाग
पुराणेदशमस्कंधसहस्र॥

संहितामेंएकादसस्कंधेजनुक
लस्वरूपनिरूपणोनांमअष्टमोध्या
य ॥८॥श्रीसुखोउवाच॥ द्वारव
तीश्रापजहांपालक॥ तहांनदमि
श्रापकोतालक॥ नारदतहांनिरं
तरश्रावै॥ कृष्णदेवकोदरसनपा
वै॥१॥ जीवनमुक्तिभजैनितिजाको
बंध्योजीवतजैकैंचौताकुं॥ जाकोस
कललोकमेंकाल॥ जहांतहांनि
सदिनबेहाल॥२॥ मांनवतनइंद्री
नराजा॥ यहतनहरिसेवाकीसाज
बंछैजाहिब्रह्मसुरराजा॥ कृष्णदे
वसेवाकेकाजा॥ श्रैसीदेहभा
गसूंपावै॥ हरिकीसेवाकूंछिटक
कावै॥ पलमैंकटैकालकेपास॥
हरिकूंपावैहरिकादास॥४॥ येकं
वारसुदेवकेभौन॥ नारदकीयो
कृपाकरिगौन॥ तिनबहुबिधि
जाबिसतरी॥ तापीछेंबांनीउच्चरी॥

५॥ब संदेह नाचा॥ [illegible] जो तुम
रोश्रा [illegible] कै कुम
को भवं नांव [illegible] नको दे
जे जिन के इस सक [illegible] यक्षीजे
ई॥ श्रोर है वहै [illegible] कौं॥ तुम
ससाधु [illegible] वो॥ जिनके
हिरदे विराजै राम॥ [illegible] मैं होहि
कोन [illegible] काम॥ ऐसे फल
दायक सब देवा॥ तेतो लहै जै सि
करि सेवा॥ जो कर लेइ पण को
कोई॥ आप करै [illegible] ना सै सोई॥ त
तुम ससाधु [illegible]॥ जिनकी
महिमा कही न जाई॥ जदपि इस
मैं नयो [illegible]॥ पूछौं देव त
थापि [illegible]॥ जो भागवत
धरम सुनै जीवा॥ जनम मरन तजि
पावै पीवा॥ जिन आचरन ने तुम
के देवा॥ हरि प्रसन्न सो भाखो भेवा।

मोहोसमकिनपरी॥तबमैंहरिहीतुत्र
करिबस्यो॥ताहीतैंकूंनांहीउधस्यो॥
११॥तातैंऽबमैंतुमरीसरनां॥सोकः
छूकरोमिटैज्योंमरनां॥कहांलोक
कूंजगतकेउपा॥जाक्तेंसुपनैंकूंनहीं
सुं॥१२॥जहांजहांजायतहांतहांका
ल॥हरिबिनजीवसदाबेहालतेैं
सेबचनसुनैंजबनारद॥तबतोबे
लेप्रमबिसारद॥१३॥श्रीनारदउवा
च॥धनिबसुदेवधनितुवबांनी॥जा
करिपूछेसारंगपांनी॥कोईहोयस
कलजगघातक॥बिप्रधरमतैंरह
नपातक॥१४॥श्रवनकीरतनध्या
दरध्यांन॥अनुमोदनजुकरैसयांं
नः॥सोपुनीतहोवैतनकाल॥वहोरि
परैनहींजमकेजाल॥१५॥तुमयेक
योबडोउपकार॥मोहिसुमरायोसि
रजनहार॥जाकोश्रवनकीरतन
ऐसो॥अंधकारकूंसूरजिजैसो॥

२ हैं तुम [illegible] लहान॥
जोतैं [illegible] रिष बेदं
वस्तुल [illegible] तिनसैं [illegible]
जनक [illegible] लोक [illegible] ब्रह्मपर
न भयो॥ [illegible] लोक सबगये
अबत [illegible] तिनकी
सरन [illegible] तिन कों॥१८॥
सोयं [illegible] जा॥ता
कोतन [illegible] ॥ताको
अगनि [illegible] ॥तिजन
मनाही [illegible] ता कोरिष
बदे [illegible] ॥तिन [illegible] यो
ब्रह्म॥ [illegible] ॥ता [illegible] कसत
मय [illegible]
नारणा॥ तिन [illegible] सेलोग
जाकें [illegible] जानें
भरत [illegible]
नाम तिन [illegible] प्रथम
तभोगा [illegible] ॥समकि

लीयोजोग मनक्रमवचनकरी
हरिभगती तीजेजनमसईसु
निमुकती २२ तिनमैंन वनव
षंडनरेस एकरहअसीकरमन
वदेस नवतेमहाभागअधिका
री सबतजेमेवेसदामुरारी २२
तजेअनरथअरथविसतारे
याविधिवहोतजीवतिनतारे
देहअतीतदिगंमरचेषसदा
हिरदामेंयेकअलेष २४ कवि
हरिअंतरिषप्रबुधपिपलाय
नअविरहोतेद्रुमडरमलच
मसकरभाजननाम इननवकी
येबहुमेंधाम २५ जापत्र्यादि
संसारपसारा सबकूंजानेंसिर
जनहारा द्वैतभावसबकीनों
षंड याविधविचरेसबब्रहमं
डमांरहीसुरअरु सिद्धअसुरगंद
वाकिंनरयच्छनागनरसरबसि

कललोकमेंअधिकारी॥आइ२८॥
हितसबमेंअधिकारी॥[illegible]
नामजनककेसआ॥एकबार[illegible]
नकीनीजआ॥रविसी[illegible]
नकीदेह॥आवतदेखै[illegible]
देहा॥२८॥राजाविप्रअ[illegible]
यो॥आगेह्वैलेवेकूंआयो॥[illegible]
मआनिधरेसिंघासन॥[illegible]
कुनतेवैवेआसन॥२७॥[illegible]
केमैपूजाकीन्ही॥करिदंडे[illegible]
दछनादीन्ही॥सर्वआभरन[illegible]
तरबहोरंग॥तेसबसोभित[illegible]
केसंग॥२०॥पानविचारबु[illegible]
ऐसो॥ब्रह्मपुत्रसनकादिक[illegible]
तबकरजोरिभयोनृपगाढे॥[illegible]
लोबचनप्रेमअतिबाढो॥३२॥दोहा
तबनृपकेंआनंदबढ्यो॥[illegible]
रहीसंम्हाल॥प्रेममगनहोय[illegible]
योबानीपरमरसाल॥३३॥चोपई॥

जिहिहेतुकाज तुमपारषद प्रभु मैं ह
रिजीके मैं जानैं सबही न मैं नीके
जीवनके उधरिबेकाज स क
त्तलोकमैं बिचरे आरज ब्र
धनिमें धनि मेरो अवतार। जातें
पायो दरस तुम्हारा नां नां जोनि
जीव यह पावै। मानुष जनम कब
हूंय कआवै ॥२४॥ याबिधिनर दे
हे बहु गहे। दुःख न साधु संगतिन
ही लहे। जिनके संग मिटै भव बं
धा। मैं न अनंत लहे नर अंधा ॥२५॥
प्रांननाथ हरि हिरदै बिराजै। छू
टै करम भरम न यनाजै। आधा बि
न होवै सतसंगा। सोक करै जग
त भयमंगा ॥२६॥ तातें समस देह
मिटावो। प्रभ षेम सो मोहि सुनावो
भगवत धरम कहो बिसतारी। जो
मैं हौं सुनिबे अधिकारी ॥२७॥ जिन
तैं मिटे जगत भै नारी। बहुरि आपकूं

तमुरारी॥येसुनिलैंनवनसुखमन
बो॥तबहीमनोजसैंवैलसुनायो
६॥दोहा॥नृपकैंमनमेंआनंदभयो॥
गोमनमेंअनेसा॥तबसुराजाकुलनकरी
बोल्योकविंजोगेसोरस्या॥कविहरु
वाचा॥चोपई॥राजाअब्रमकरीतु
ऐसी॥अबतुमकीसुकलहैजैसी॥नि
मैपदयेनकैंदेखा॥हरिकेचरण
लगीलेदखा॥धनीनाकूंछोडि
नरजोई॥ताकूंकेकुलनहो तहेसे
होंतहेतनामनहोउनमारी
फांसिकैकंटरैनदारी॥४१॥
नातैंकहौंभागवतधरमा॥मिलै
हूहैंसैंजनकमा॥श्रीमुखश्रीभग
नसुनायो॥आपुमिलणकोपंथ
बतायो॥४२॥नरयहहोवैकोई॥ जो
नपंथलपावैहरिसोही॥अ
होयविलंमनहीलागे॥भ
सलोजीयजागे॥४३॥०

दित ध्यावे कोई याहरिपं घनकछु
मैहोई हरिकी भगतिसबनतैंन्या
री कोटि बिघनतैंटरैनटरी ॥४४
हरिमिलनेंको मारगयेहा हरिम
जिमुँकतिहोयेहदेहा मनक्रम
बचनबुधिअरुचित्त होयसुनाव
क्तैंजोनित ॥४५॥ सोसबहरिहीस
मरपनकरै ॥ यो भगवतधरमबि
सत्तरै ॥ जबयेजीवहरिहीबिसरयो
तबहीहरिकीमायाअवरयो ॥४६॥
तबेआपनोंसरूपभुलायो आपमां
नितनमैंमनलायो ॥ हेत नावतबही
तैंउपन्यो ॥ ताहीतैंयेमरिमरिजनम्यो
४७ तातैंबुधिसेवेहरिचरणं जातैं
मिटैजनमअरुमरणं ॥ सोधिलेयत
तमगुरदेवा हरिकूंजांनिकरैतासे
वा ॥४८॥ सोज्योंज्योंआचरणबतावे
त्योंहीत्योंहरिसूंहितलावे ॥ कपटन
भजैतजैसबकांमा छूटैजगतमिलै

तबरांक प्रथ ठेन [illegible] तनह
राजा [illegible] नास्रो [illegible] राज।
जैसेम्र रामनोर [illegible] हीज
रतेदे औत्रपलां [illegible] हुलही
परिहे ओसोहे [illegible] एसब
मोहे तोसंकल्प [illegible] हीकीजे
मनदिढराखि [illegible] हरि ह
रिकेजलपक [illegible] मुनैक
हेप्रुमरैसलजा [illegible] जहोवे
नहसंगासम [illegible] रिकेरंग
प्ररान्निसेंलज [illegible] कावे।स
बतनरोमांचे [illegible] दगदस
बदत्रहर्पहिदे [illegible] हितजल
बरषेनें [illegible] ढैसुर
गावे।क [illegible] हिजावे।
लोकवेद [illegible] तौत्र
नमत [illegible] दसोदि
ससरिता [illegible] रविससिता
रहिसज्ञ [illegible] नलपावकप

नप्रकासा॥ जो कछु देषै सो हरि
सा॥५५॥ हरि को रूप सकल में
ौनैं॥ जहां तहां प्रनाम होवा नैं॥ क
लहू मूलि न भासै ज्ञान नां॥ भयो
ज्ञनन्य मझें भगवांनां॥५६॥ जौ
ज्यौं बैठे कह्म ज्ञनुरागा॥ ज्यौं त्यौं
ज्ञौर सकल को त्यागा॥ ज्यौं त्यौं ज्ञ
ज्ञनुभव ज्यौं प्रति ग्रासा॥ तोष पोष
ज्ञरूनूप बिनासा॥५७॥ या बि
धकरते साधन भक्ति॥ हरिजी सों
बाढै ज्ञनुरक्ति॥ तब कछु ज्ञौर
मूलि न ही भासै॥ तब ही हिरदै
त्र प्रकासै॥५८॥ ब्रह्म एक दस
ढूंढि स देषै॥ द्वैत भाव करि कदे
नलेषै॥ भजि भगवंत भये तउ ल
पा॥ जांनै सकल येक निज रूपा
पुल्य॥ ज्ञैसें ज्ञंग भागवत मांही सो
हरि में है जग मैं नांही॥६०॥ दोहा
युनि कबिजी के बचन॥ कीनी

रमबिदेहा।न्रुन नहीं भागवत
रुणबिलास हिबिदेह
बाच॥चौपई॥ भजी कहो भग
तलछिण॥जिनहरिलीबेरमबि
ण॥कीरति सम्हिबदेहिदर
कीनन्त्रा चरैचित निधि माधे
रावैंथानु मालतिलनलिनकै॥
भावनाहीं श्रवलिनबेंरा॥बोले
रियोजेगुरुजनौलूनकेनचनव
होतचित्रिभलाईश्वाहरिरुवाच॥
थावरजंगमकुतिलमलायेकद
सलतंकोमूलालोइकञ्र
ज्ञाधमयो आत्मा असंगर
निराकारयाहं भे हरिजीतेउपजये
दोई॥न्नजानुरिहीमेहोशीता
अबहुहरिकोजानो॥देतभाव
कबहु नहीं आनो॥ईश्वज्योसागर
बुरबुदातरंगा॥योंसबजगतजग
पतिसंगा॥याविधिजोनिभ

वनग्रकासा॥ जोकछूदेषैसोहरि
दासा॥ ५७॥ हरिकोरूपसकलमें
जोंमें॥ जहांतहांप्रनामहीठानेंके
बहमूलितिनभासेंग्यांनां॥ भयो
ग्यनन्समजैभगवांनां॥ ५८॥ जौं
ज्योंबटैहरिग्रनुरागा॥ त्योंत्यों
ग्यौरसकलकोत्यागा॥ त्योंत्यों ग्य
नुभवज्योंप्रतिग्रासा॥ तोषपोष
ग्यरुरुषविनासा॥ ५९॥ याबि
धकरतेसाधनभक्ति॥ हरिजीसों
बाटैग्यनुरक्ति॥ तबकछुग्यौर
मूलिनहीभासे॥ तबहीहिरदे
ब्रह्मप्रकासे॥ ६०॥ ब्रह्मएकदस
हूंदिसदेषै॥ दैलभावकरिकदे
नलेषै॥ भजिभगवंतभयेतद्रू
पा॥ जांनेंसकलयेकनिजिरूप
॥ ६०॥ ऐसेग्यंगभागवतमांहीस
हरिमेंहैजगमेंनांहीं॥ ६०॥ तोहू
यस्रुनिकविजीकेबचन॥ कीजैं

प्रमविदेह॥अबभाषोभागवत

वा॥चौपई॥प्रभूजीकहीऍ

हिरदेदिहरा
छेनाळे
णसुभावनिरंतरतिनको॥
॥बोले
रियोगेसुरहूजो॥नृपकेवचनव
हरिरुवाच॥
येकव
अ

४॥हरिजीतेउपजेये
देोई॥अंतलीनहरिहीमेंहोई॥ता
तेअबहुहरिकोंजानें॥द्वैतभाव
कबहूनहीआनें॥६४॥ज्योंसागर
बुदबुदातरंगा॥योंसबजगतजग
तपतिसंगा॥याबिधिजानिभयोजो

धीरा॥ सोहरिजनतनमहैंबीरा॥
ई ई॥ जाकैहरिसौंनहचलप्रेमा॥
सूरहरिजनसंगतिनितनेमा॥
सबजीवनप्रकरुणांआंनै॥ सब
उधरेहिरदैयोंजांनै॥ ई७॥ जाकोश्र
तापरहोयग्रहीगंनै॥ ताहितजेकैंऔ
सौवांनै॥ निसदिनरहेरांमरंगराता॥
सोहरिजनमधिमैहैंताता॥ ई८॥ जोमू
रतिमैंहरिकौंजांनै॥ मनबचकर्म
आंननहींआंनै॥ जाकौंपूजेहितचि
तलाई॥ कछूनमांगेसहजसुभाई॥
ई९॥ पैहरिजननजेहरिजांनै॥ स
तगुरबिनानहींपहिचांनै॥ सबश्र
तमांनहरिकेजांनै॥ सोप्राकृतिज
नसाधबषांनै॥ ७०॥ बडरिकहूं
तमहरिनक्त॥ जाहिप्रषिकृजेश्र
सक्त॥ डसप्रसतैंकारजसारै॥ तेहरि
जनभवडपनिवारै॥ ७१॥ कष्मं
बसेताकेउरमांही॥ श्रोरसतिक

कूजानैनांही॥जोकछूकहैसुनैअ
रु देषै॥इंद्रीयकृतमायासबलेषै
॥२॥सोहरिजनजुतमहैदेवा॥तातै
मिलैनिरंजनसेवा॥जोजनब्रह्मवि
चारही पायो॥आपसमकिसुषमां
हिसमायो॥३॥जनमरुमरनदेह
केजानै॥छुधात्रिषाकूंप्राणंहीमा
नै॥त्रिस्ना बुद्धिअरुभयसोमनकौ
यहलछिण उतिमहरिजनकौ
॥४॥करमबासनांअरुसबको
मां॥तिनकोमूलिनजांनैनांमां॥
बासदेवमैंकीन्हौंबाससोकही
येउतमहरिदास॥५॥जिनके
जातिबरनकुलकरमां॥लोकं
नबेदनहीआश्रमां॥मूलिदेहअ
भिमाननआवै॥सोउत्तमहरिदा
सकहावै॥६॥किसीबसतम्रम
मतानांही॥अरुतनकोअभिमान
नमांही॥सबभूतनप्रसमताआं॰

कस्योंदुषतहोयभवरोगा॥भूतातें
मोसौंचितलगावै॥मेरोनिजानंदष
दपावै॥मगनरहैमेरेआनंदा॥बहु
रिनहीं व्यापेदुषद्वंदा॥दीयाहीतेंव
हभवबिसतास्यो॥भीतरिअंसआ
पनोंडास्यो॥इंद्रीयदसअरुमनबि
सतारे॥बहुत भांतिकेबिषेपसा
रे॥३॥सोयहअंसइंद्रीयनमनसों
भोगभोगवैसबहीतनसों॥आउभ
ति भोगनमनदीन्हों॥तबअभिमां
नदेहकोकीन्हों॥४॥भोगनिमति
करमबिसतारे॥तिनकेफलदु
षसुषभयभारे॥तिनकरमनितें
जोंनिअनंता॥जनममरनकोंलह
नअंता॥५॥तैअबधिलोंनरमैं
निरंतरलीनहोयपुनिमायाअं
तरसृष्टिसमैंबहोरंतनपावै॥भ
वसागरकोअंतनआवै॥१०॥भर्म
तभर्मतपुनयअबधिआवै॥तब

सबनासकालमनभयोनवस
तबरषनदुषेजलधारानिजुसंमित
होद्वादसदिनकराउरानकहयोअ
गनिसेसमुषनिसरेउपलयपवन
मिलिजहांतहांपसरोसारेलोक
नसमततबकरोनकहयोयुरलयमे
घसंचरोउ२हाथीसूंडिधार
वरषेयोअघंडबीतेसतवरषे
तवहोवेबिराटकोनासाउअस
करेप्रकितिमेबासाउ३जोअन
होवेबृह्माकीलोकब्रह्मांहिन
होगकीजेहरिनिकिहरिहीतेंभा
वेउयोरप्रकितिमेसकलसमावे४
पवनकरेतवगंधहीबीनाउभूमि
होयतबजलमेलीनउरसहीरसकूं
हरेसमीराउतातेमिलेतेजमेनीराउ
रूपअंधकारजबरूपहीहरेउते
जतवेपवनहीमेचरेउबकरिसप
रसहीहरेअकासाउपवनकरेतब

नेमैबासा १९ कालकीयोतवस
वरहीम्रानां तामसग्रहंकारनं
नलीनां तामसग्रहंकारमनमिले
राजसग्रहंकारदेवगिले १५ इंद्री
राजसग्रहंकारहीसत्वग्र
यग्रूराजसग्रहंकारहीं बुधिदेवसा
हंसोकीग्रहंकारहीं बुधिदेवसा
निकग्रहंकारा इतनकीन्हांसं
हारा १६ महतत्तप्रतिहीमिले
यात्रिधिकालसकलकोगिले
ऐसीहीत्रिधिकारंबारा उतपनि
परलैत्रलनपारा १७ ऐसवहरि
कोमायाकरै उपजावैपूतिपालै
हरै नितुमकंसंबैपसुनाई वड़ा
होकरेपूरमननमाई २०
ऐसीसुनिमायापबलतउपज्यो
नृपकेमीत नतहीग्राधीनवै
तानरिलेकीनीति २१
ऐसीप्रबलनइसकीम
या जिनयेसकललोकनरमाट

ताकूंतुमसेगंपानीलिरैौ।हमसेदेही
कोंनिसतरो।२शताको।तुमहिंनिरे
येदेवा।सोकरिकपावला।वह्ममैन
येसुनिवचननिरपतिके सुला।त
बबोलेचौथेपरबुधा।२३।प्रबुध
वा।चसकलमनमहुमा।लिकै
जा।करैकरसब्सारनहीरम
तैकेबलनइमम्रूपारा।मुद
ग्रेरुत्रागेंबिसला।।२४।ा
धनबडुमम्रपारा।।निस
चिंताकोअधिकारा।सोइ
तिङरलननहीत्रावै।जोत्र
नोथिरनरहावै।२५।नहीं
कुटमसुतदारा।पलकमां
हिटहिजायपसारा।ज्यौंपंथमां
मिलानाहोई।घरीकमांहि
छेरेसबकोई।२६।जेकछूय
करमकमावे।तिनतेंजोंनि
निड्डमपावे।इनमेंकोईन

नछुडावे आपआपकूंसबकोइ
जावे २८ याहीविधिनरस्वरगुर
लोकाथिरनरहैविधिजेवोका
छोटेबडेनीचवहोनातीतिनके
मनकीमिटेनकांनी २९ मदमछ
रअरुचाहेमांनां कांमक्रोधअरु
लोभसमांनां त्रिस्नाबंधेकछुन
हींजांनें आपआपमेंजुधहींवं
नें २ए कालहीपायउहांतेंपरे
बहेरिआयअयहांहीअवतरे
योंबिचारिबेरागजुपावे तबही
साधुगुरसरणेंआवे ३० सबदब्र
ह्मसकनजोभावे पारब्रह्मनित
हिरदेराषे ऐसेगुरबिनग्यांनन
पावे तातेंसाधुगुरपेंआवे ३१
ब्रह्मजांनितासेवाठांने आलस
कपटकांमनांभांनें तातेंसीषमं
किकेअंगा तिनतेंहरिजीतजेन
संगाद्वरसबतेंमनकेसंगमित

वो।त्तलहिसाधुसेव[illegible]जोवे॥
थलदीननपरि[illegible]नैं।स
मभित्रता[illegible]तम[illegible]नौरश॥
सोचपाटनयमो[illegible]हि[illegible]।वहे
विधिलेवेगुरसे[illegible]।तूल्मच
येश्नरुकौमि[illegible]हेस्यात्मा
गहेदसबस[illegible]कोयेको
थ्राममनहो[illegible]इक के
बनकन[illegible]लहांचेतन
थात्मदेखो[illegible]निर्यतालै
श्रेरपागे[illegible]सरह्याकरे।नि
दीरागदोस[illegible]हेदिहबचनज्ञ
समन[illegible]दमसतसंतोष
नछेमै।[illegible]नमकरमश्नरगु
नहरिजी[illegible]सुनैत्रधारनजी
कोसोही[illegible]हैनिरंतरध्यावे।सोही
करेहरिहीजोभावै।[illegible]पतप

दारासुतभ्रांतां।जोकछुसोस

रहीनबेदे याबिधिसकलनकरम
कौंछेदे ३८ थावरजंगमहरिमये
जांनें परिसेवासाधनकीगनें मि
लेंप्रसप्रहरिगुनगावें निसदिन
कहतसुनतसुषपावें ३९ पल
पलप्रीतिबढेहियेफूलैं गुनन
संम्हालतनकौंभूलें हजोमा
वनकबहूउपनें प्रेममगनज
गनसुखसुपनें ४० ऐसेंप्रेमम
निकौंपावें पलपलननपुलक
तठैंआवें कबहूंहरिचितवन
तेंरोवें कबहूहंसेंआनंदतहो
वे ४१ कबहूनांचेंकबहूगावें
लाजरहितज्योंज्योंमनभावें क
बहूगुनंसुमरतमितिजावें स्वा
सउसासबाहरिनहींआवें ४२ या
बिधिलेवेगुरसूंसदा गुरुसिष
निकीयेहप्रथा ब्रह्मपरायनं
लाजनकेरे मायानलिनआवें

॥४२॥ दोहा॥ येक मिल चन बिरे केंद्रि देवदो॥ सोरठा॥ इमक ब्रह्मकी ज्यौं कहै नव फंद ॥ बिदे हजु बाच॥ चोपई॥ ब्र तातिनमैं अधिकारी॥ तुमहो हमैं कह्दे विचारी॥ ताते कहो ब्र कोरूप॥ जो नेंजा हि मिटे भव ताप॥४४॥ प्रश्न॥ श्रोता ब्रह्म भगवा नां॥ येसब येक कि श्रौ हैं नानां॥ स बजीवन कुं ऋषि करुना यन॥ त बबोलै पंच स पिपलायन॥४६॥ पिपलायन उबाच॥ सुषम थूल सकल संसारा॥ जाकी सकति सक लेबिसतारा॥ उतपति प्रलै करै व हया को॥ कारन तै जन मन ही ता को॥४७॥ जाग्रत सुपन सुषोपति तुरीया॥ चकु मैं सदा येक रस तुरी या॥ इंद्रीय देह कु देन्र रुषानां॥ चेतनि कै वरतानां॥४८॥

येजहलोहाबरतै चूंमकसंग
बकृतबिधिफिरतै सोभगवांन
ब्रह्मपुनिसोही सोग्रमातमजांनै
कोई धर्य मनअरुबुधिचितअ
रुप्रांनांइंद्रीयेदेहसबदरसमि
मांनां कोईताहिपकृचिनहीस
कैजातजातवारहीथकैं ५०
जैसेपावकलोहतपायो पावक
समांतेजतिनपायो सबप्रकासे
सबकूंजालैपैपावकपरजोरन
चालै ५१ योंसबइंद्रीयरुदेहचे
तन ताकेसंगहतैंकैचेतन ओ
रसकलअरछनकोंजानैं कोन
सकतिजोताहिपिछांनै ५२ लैलै
अरछबिचारैवेदा परप्रतछिन
जांणेंभेदा येनहीयेनहीयेनहीहै
ईयाकेपरेसत्यहैसोही ५३ सु
षमथूलनजावेबरनी गगनिप
वनपावकजलधरनी नहीमनबु

चित्तअहंकार॥छिदालेदम
पार॥४४॥छानांसोबाल
ज्वान॥नांसोबिरधसैंनासो
॥तिरीयापुरषकलीलनहोई
नरनागअखरनहींसोहीं॥४५॥
कतपीत॥सेतअस्तिलनहरिता
तिबरनअश्रुभनहींधरता॥॥
नउसननचैंदनसूरा॥दिव
नरा॥तिनिकटनहींहूरा॥४६॥
षडधरहिलबसेसनुमांहीं॥आप
आपलैपेकऊंनांहीं॥बंधमा
आतमअंसा॥सुन्यसरोवरबि
लसैहंसा॥४७॥गगनिपवनपाव
नीरा॥धरनिबंधसबकीये
रा॥पंचबस्तयेपांचौंबंधा
परसरूपरसगंधा॥४८॥इंद्रीय
रसअरुतिनकेदेवा॥सांत
सतांमसलेवा॥मनबुधिचित
हततअहंकारा॥येकप्रक्रि

५ येजड लोहा बरतै ॥ चूंमक संग प्र
बकृत बिधि निरतै ॥ सो भगवान
ब्रह्म पुनि सोही ॥ सो आतम जांनै
कोई ॥ ध्यं ॥ मन अरु बुधि चित अ
रु प्रांनां इंद्रीयं देह सब अरु भि
मांनां ॥ कोई ताहि पछांनै नहीं स
कै ॥ जात जात वा रही थकै ॥ ५० ॥
जैसैं पावक लोह तपायो ॥ पावक
समौं तेज तिन पायो ॥ सब प्रकासै
सब कूं जारै ॥ पैं पावक पर जोर न
चालै ॥ ५१ ॥ यों सब इंद्रीय अरु देह अचे
तन ॥ ताकें संगहूतें कै चेतन ॥ औ
रस कल अरथ न कौं जांनैं ॥ कौन
सकति जो ताहि पिछांनै ॥ ५२ ॥ कैसे
अरथ बिचारै बेदा ॥ पर प्रतछिन
जांणैं भेदा ॥ ये नहीं ये नहीं है
ईया के परे सत्य है सो ही ॥ ५३ ॥ सु
षम थूल न जावै बरनी ॥ गगनि प
वन पावक जल धरनी ॥ नहीं मन बु

धिचित्तअहंकारा॥चिदानंदमय
सबकेपारा॥५॥नासोबालनवृध
नहीजूवा॥नासोबिनसैनासोहू
वा॥तिरीयापुरषकलीबनहोई॥सु
रनरनागअसुरनहीसोही॥४५॥
रकतपीत॥सेतअसितनहरिता
जातिबरनआश्रमनहीधरता॥
सीतनउसननचंदनसूरा॥दिव
सनराति॥निकटनहीदूरा॥४६॥
षड्उरहितबसैसबमांही॥आप
हीआपलेपेकछनांही॥बंधभाव
सोआतमअैसा॥सुन्यसरोवरबि
लसैहंसा॥४७॥गगनिपवनपावक
अरुनीरा॥धरनिबंधसबकीयेस
रीरा॥पंचबस्तयेपांचौबंधा॥छांस्
सपरसरूपरसगंधा॥४८॥इंद्रीय
दसअरुतिनकेदेवा॥सातकरा
जसतामसभेवा॥मनबुधिचितम
हततअहंकारा॥येकप्रक्रिकोस

कल्पसारा॥१५॥ येकबृत्त
रण बिनश्रं छ्रासबकोबिसतारण॥
ज्यौंभूवमेंबहुघटउपजावे भूव
रहेभूवमांहिसमावे॥६०॥ तेसबघट
दीसेबिधिनांनां॥ तेभूवछोडिनहींकु
छुश्रांनां॥ त्योंसबजगतश्रादिमधिश्रं
ता॥ श्रोरनकछूयेक भगवंता॥६१॥ सो
नहींउपजेबिनसेनांही॥ बालजोवा
नीपरेनहींछांही॥ बढेनघटेचलेन
हीडोले॥ राधनतोष मोनिनहींबोले
॥६२॥ जहांतहांपूरणप्रमश्रनूपा॥ चि
दानंदबिगपांनसरूपा॥ देहभेदबहो
धासेसोहे॥ प्रांनबिनांसारोजगमोहै॥
॥६३॥ जेसेंपवनयेकहीप्रांनां॥ दसइंद्री
यसंगदीसेनांनां॥ उदभीजस्वेदजरा
युजश्रंडा॥ च्यारिखांनिपूरणबूतसंग
॥६४॥ लिंगदेहजहांदेही जावे॥ प्रांण
बायतहांश्रांणिसमावे॥ सबदसपर
सरूपरसगंधा॥ मनश्रहंकारबूधिचि

धाईश्रलिंगदेहइस्कोलवकोहै
मिलैनिरंजनसोहै॥निज्ञावसि
यपतिजवश्रावै॥लज्येदेहलिंग
छिटकावेईहै॥सहंकारसिगताक
नांहीमनश्रलबुद्धिचितसवजा
तवश्रछैतयेनहैसोहै॥हितभाव
नकोई॥ईज्ञानबुद्धिचित
श्रहंकारनरहै॥जागेंब्रह्मसत्तसो
॥जोकरनौहोसोलीयो
पाछेलीनोंहीयाईजातेंसोह
रिजोननहारा॥सोहिलीजेब्रह्म
॥सेवासलसहितही रहे
तातेंदेहफिरिकहिलेहै॥ईपलि
रसहिलवासकोनाहिमिटेन
वसासना॥तातेंवारेवरलनचि
वै॥श्रोरसकलवंधनछिट
वैयाविधिसबैचितमलनासे॥रि
मानिलवब्रह्मप्रकासै॥
थमभक्तिनहीजानें॥तोवहकर

जोगकैं बैं नैं ॥ ७१ ॥ करमयोगतैं उपजै
भगती ॥ तब हरि चरन बढै अभ्यासकी
तातैं होय ब्रह्म प्रकासा ॥ छूटै काल
जाल भव पासा ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ ये पिप
लायन बैंन सुनि ॥ करी प्रस्न मथले
स ॥ करमयोग अब करि कृपा ॥ कहै
म प्रयोगेस ॥ ७३ ॥ चौपई ॥ बिदेह जना
नृ ॥ करमयोग अब कहो गुसांई ॥ मैं
आयो तुम्हरी सरनाई ॥ जाके कीयें
कटै सब करमां ॥ उपजै ग्यांन होय प
नहमरमां ॥ ७४ ॥ द्रुती ये प्रस्न कहो तु
मये हा ॥ याको मेरे अस्रुति संदेहा ॥ ब्र
ह्मपुत्र सनकादिक चारी ॥ ब्रह्मप
रायन ब्रह्म बिचारी ॥ ७५ ॥ ये क बा
र कृपा करि आये ॥ पिता समीप इस
मैं पाये ॥ ये प्रस्न मैं तिनसों कीन्हीं ॥
उत्तर न दीयो हिरदै धरि लीन्हीं ॥ ७
६ ॥ नहीं बोले सो कौंनै कारन ॥ ये भा
षो भैसागर तारन ॥ ऐसें बचन नृप

से॥७३॥आविरहोतउनाचा॥
राजासुंनौंकरमगतिगहनौं।जातें
जहांतहांवनैनकहलां।यहजौं
हैसौंबेदकथोंनौं।तातैंयाहिन
कोईजांनें॥७८॥विकटकरता
हरिदेवा॥रिधसिधसुरमूलहैक्यों
नेवा॥नेवलहैबिनमिटेनमरनं
लहैनेवपावैहरिचरणं॥७९॥
तातैंतुमहोसेतवकाला॥तातैंक
सोनकरमछिसाला॥सबमैंक
रूसुनौंचितलाई॥जांनैंजाहिमां
नअधिकाई॥८०॥करमजोगहै
तीनप्रकारा॥करमअकरमविक
रमपसारा॥हरिनिमतिसोकरहीमे
करमं॥हरिबिहीनसोलकलबि
करमं॥८१॥सोअकरमजोदोक
गै॥

२७ तुपजैग्यांनमिटैसैभरमा ८२ कर
ता मत्तजनकौंकरमग्रहावै तातैंबेद
नसमभ्योत्र्प्रावै पहिलेंस्त्रुगादिक
फलभाषै ग्र्प्रागैंसकलहरिकरि
नाषै ८३ जैंसोकोइबालकरोगी
होवै ग्र्प्रोषदिकुटकनांवसुनिरो
वै ताकूंलाडूपितादिषावै ग्र्प्रोष
दिकाजलोभउपजावै ८४ ग्र्प्रोष
दिकोफललाडूनांहीं ग्र्प्रोषदिपी
येंरोगसबजांई सोसुरगादिकलो
भदिषावै करमनासकूंकरमक
रावै ८५ सुरगादिकफलपढ्प
तिबांनी तोरैपहोपहोतफलहांनी
तातैंकरैबेदकेकरमा हरिकेहे
तबडोयेधरमा ८६ ग्र्प्रोरकछूफ
लमूलिनजांनें हरिकेहेतकरम
सबठांनें मैंकरतायोंकदेनभाषै
जोकछुसोहरिकोकरिराषै ८७
याबिधिप्रेमभक्तिउपजावै तबस

बकरम आपही जावै॥ तबही प्रगटै
ग्यांन प्रकासा॥ मिलैरांम छूटैनव पा
सा॥८८॥ बेदकपंथ कह्यो मैंतो सो॥
अबसुनितंत्रपंथ पुनिमोसों॥ हिरदै
गोविकाटीजो चाहै॥ सोबिधिसों पू
जा अवगाहै॥८९॥ बेदमिलत नाथ
तहोंपूजा॥ जातें मिटैसकल भरम
दूजा॥ श्रीगुरतें प्रसादही पावै॥ सोजैं
जैसबबिधिहिबतावै॥९०॥ जाम्र
तिपरिश्रेआहोई॥ हरिही जांनिकें
पूजैसोही॥ अतिपवतरहोयकरे
असतोनो॥ मनकीलजैबासनोंनोन
॥९१॥ बायअपांनछीकजमुवाई॥ अ
रपवनयुनरहनकोई॥ सनमुखबै
ठिकरैतनरछा॥ अंगन्यासमंत्रप
हिअछा॥९२॥ आसनसोधिसोंजुमे
वाकी॥ सबलेबैठतजैनबाकी॥ बि
स्नरूपभूतमांमैंजानें॥ अरघपाटअ
ठबिष्टरतानें॥९३॥ मूलमंत्रक[illegible]

करै॥ औरनकहूबचनतचेरै॥सक
लऋंगहरिजीकेआवे॥संषचक्रग
दापद्मसमनल्यावे॥ ८४॥ भूषनब
सनपारषदसहितताहित्तबंदनदे
षतहू षहरिता॥ बिबधिभांतिऋ
सनानकरावे॥ बकुसुगंदमाला
पहिरावे॥ बकुतभांतिकरिभोगल
गावे॥ गंधधूपआरतीसवारै॥ धंव
आदिसबदबिसतारै॥ ८५॥ याबिधि
मंत्रनसोंसबकरै॥ तापीछेअस्तुति
बिसतरै॥ बकुरिकरैडंडोतप्रनामा
पढैमंत्रलेवेहरिनामा॥ ८६॥ बहरि
बस्तमिलैतेआनै॥ औरसबमनसें
पूजाठानै॥ तनमैनयेनिरंतरसेवे
वहप्रसादमाथेसोलेवे॥ ८७॥ बकु
रिदेवकोंहिरदैधरै॥ मूरतिसयनप
टोरेकरै॥ याबिधिहरिकैआतमाजां
नै॥ जथासकतिसपर्यीवानै॥ ८८॥ ऐ
सेंसेवेतउपजेग्यांनां॥ बेगैआएमिले
हि

गती॥ग्यंनपायतकहोवैमुकती॥
१००॥जेसेव्रतमांहरिकीसेवा॥सा
धूव्रतयिकसोहरिदेवा॥१०१॥दोहा॥
येसुनिबचननिदेहकैं॥अग्रेम
नमेंप्यार॥तबगुनअरुकरमनस
हितपूछेहरिअवतार॥१०२॥३॥
तश्रीभागवतेम्हापुराणेयेकादसं
स्कंदेबसुदेवनारदसंमादेजायंती
पाख्यानतृतीयोअध्याय॥३॥२२४
राजाउवाच॥चोपई॥अबअवतार
काथाबिसतारो॥गुनअरुकरमस
हितउचारो॥जेजेलीयेलेहिगेआगे
अबहेंसबभासोअनुरागे॥१॥मेसु
ननृपतिजनकलेबेनं॥कृपासिंधु
करुनाकेअेनं॥तबसातयेंद्रुमलि
सेनांम॥बोलेबचनप्रसंनअभिरांम॥
२॥द्रुमलिउवाचजोअनंतकेगु
नअवतार॥तिनकोनृपतिलहेको

करै औरनकहुबचनउचारै सक
लअंगहरिजीकेभावै संषचक्रग
दापद्मभनल्यावै ॥५४॥ भूषनब
सनपाटपटसहिता हलबदनदे
मतहू महरिता बिबिधिभांतिअं
सनानकरावै बहुतुगंदमाला
पहिरावै बहुतभांतिकरि भोगल
गावै गंधधूपआरतीसवांरै घंटा
आदिसबदबिसतारै ॥५६॥ याबिधि
मेवनसोंमनकरै ना पीछेअस्तुति
बिसतरै बहुरिकरैदंडोतप्रनामा
पढैमंत्रऐसेहरिनामा ॥५७॥ बाहरि
बस्तमिलैनेआंनैं औरसबमनसौं
मूजानैं ननमैंनयैनिरंतरसेवै प
वहप्रसादमाथेमोलेवै ॥५८॥ बहु
रिदेवकोंहिरदेधरै प्रीतिसयनपि
छेकरै याबिधिहरिकैंआनमाजो
हैं आश्रमकतिसपयोवांनैं ॥५९॥ ऐ
सेसबतजपैजोप्रानी बेगैंआनमिलै

नगवां नाँ ग्यानकाजियत्तसाधुनर
गंती ग्यांन पायत्त न होवै मुकती॥
१०६॥ जे भै प्रत्तमांत हरि की सेवा॥सा
धू प्रत्तछि कसो हरि देवा॥१०७॥ दोहा॥
येसुनि जु चलति देहवैं ज्वा ग्रोम
नमें प्यार॥ तन ग्रत्त ग्रलकरसनस
हित॥ प्रछे हरि अवतार॥१०८॥इ॥
तश्री भागवते म्हापुरांणे येकादसत
स्कं देबसुदेवनारदसंमादे जायंती
पाख्यांन त्रती यो अध्याय॥३॥२२४
राजा उबाच॥चोपई॥ अव अवतार
काया किन्नलारे॥ गुन अरु करमस
हित उचारे॥ जेजेलीये लेहि गे आगे
अबहें सब नां सोअनुरागे॥१॥ मेंसु
ननृपत्ति जनक के बेंनां॥ क्रपा सिंधु
करुनां के अैनां॥ तब सातयें दुमत्ति
सेनां सो॥ बोले बचन प्रम अभिरांम
सो॥ द्रुरमति उबाच॥ जो अनंतके

९ मारा ज्यूं मिरेनूं करि कोई गनैं सो
हीकहा सकलगुन मनैं रहरिके
गुन अवतार अनंता बालबुधिजो
चाहै अंता तातें कछु येक मैं गावै
तेरह दैन संसैरा सो ४ पंच भूत
निरमल ब्रह्म कारा ध्यो नीर मांहि
ज्यौं अंडा तामें अंस आपनौं धारा
सोहै आदिपुरष औतारा ५ जिन
की देह कृतें सब देहा देह मांहिब
रतें सब येहा तिनके अंगन तें सब
अंगा इंद्रीय अहंबुधिबहोरंगा ६
सतरजतमतें सकलपसारा उत
पति अरु पालन संहारा प्रथमहि
रजतें ब्रह्मा कीयो सातिक जनमबि
७ स्न कौं दीयौ तांमस करि संकर उप
जायो तिनसौं सकललोक निपजा
ये ब्रह्मा रचै विस्न प्रतिपालै हरै स
द्यौं भवपंथ चालै ८ बहोरि सुनौं
हरिके अवतारा भवसागर के तार

नहाराश्रमपिलाजलल्हलिमात
तहांनरनारायणजिआसत्रथआ
तमपानमक्तिलिसतैआसैांला
गजीवलिसतैराप्रदैहूं प्रगटकैहै
आचरनांआरहाद्विलिषिसेनेचर
नां।१०।पिकवारसुरपतिमनआंन्यौ
ममलोकहिलैहेयोंजांन्यौ।लवति
निकोमहीआग्यादीन्ही।कामसंगि
सेनांसजलीन्ही।११।रंभादिकअप
छराअपारा।निरषिछिपवनवसं
तपसारा।अङ्गीअंडसबैचलिआवे
नरनारायणबैठेपाटै।१२।निरिभ
रिबांणनिहलेसरीरा।निरफलभ
येअगनिज्यौंनीरा।तवतेसंमरूस
थहेरांलेौ।श्रापत्रगनिजीवनगति
मांलो।१३।हरिश्रापधइंद्रकरतजो
न्यौं।हसिबोलेतिनकोभयभांन्यौं
मतिनेकरोपंचसरबीरा।देवनारि
नवपानसमीरा। ।वे

तिथकरावो हमञ्जाश्रमसुफल
करिजावो यसुनिश्भेदांनकेवे
नां तेसबजोरिसकें नहींनेंना १५
लस्पानारनिवायेसीसा बोले
बचनजांनिजगदीसा हेप्रभूये
कछूनहीऋचंभा तुमहोपूकति
पुरषकेथंभा १६ निरबिकारनि
रगुननिरभेदा जिनकौजांनिसकें
नहींबेदा निजानंदपूरनमुनिसा
रे तेसेवतहैचरनतुम्हारे १७ तुम
रेचरनसरनिजेन्आवे तिनकोंसु
स्वहोबिघनपगावे तिनकोलोक
दाबिपगनीचे गयेचहेतुमरेपद
कंचे १८ तातेंबिघनकरेंसबदेवा
मिटतीजांनिआपनीसेवा औरकि
सीकूंबिघननकरहीं तातेंतिन्हेंदं
डसबभरहीं १९ परितुवजनहिन
बिघनसतावे बिघननिसीसचरए
देजावे जोत्रिभवनपतितुमरबवारे

कहाकरैजोबिघननिचारी।२०।ता
हिंतुम्हरोकहाअचंभौ।भुष्यात्रष्ठ
भूरुआलसनिंद्रासीतउसनजर
माअरुतंद्रा।२१।जिह्वासिसनादिक
बिसतारा।इनकेगुनतेजलथिरूप
रा।ताकोंबहोतकष्टकरितरैंगोप
दकोधबूडतेमरैं।२२।तिनकोतप
सबमिथ्याहोईउद्धकुंलोकमैंयेकन
कोईता।तातैंसबसाधनक्रंकरैं।तुम
रीभक्तिबिनोनहींतिरे।२३।याविधि
देवबचनउचरैं।तबहरियेकअ
चंभाकरैं।अतिअद्भुतछबिनारि
अनेका।मनमोहनीयेकतेंयेका
२४।तेसबसेवाकरतदिषाई।मां
नौरंमासखिनसौंआई।तिनकेगं
धरूपसबमोहे।चंद्रजदेखउडगन
ज्यौंसोहे।२५।तिनसौंहरिजीबोले
बैनां।यनमैंयेकलेऊतुममेंनां।सु
रगलोककोभूषनरूपा।जातैंयेस

बहुमच्छनूंपारह्यौ॥तिनसबहरिकौं
कीयोप्रनांम॥लीन्हौयेकत्रवसी
नांमो॥करिप्रनांमस्तुनिबारंबारा॥
पहुंचैसकलइंद्रदरबारा॥२७॥ति
नइंद्रहीप्रसंगसुनायो॥बिसमय
त्रासइंद्रमनआयो॥बहुरिलीयो
हंसअवतारा॥च्यारिभयेसनका
दिकुवारा॥२८॥दत्तकपिलअरु
पितांहमारा॥आठकुंब्रह्मरूपबि
सतारा॥हयग्रीवमधुदांननिवारे॥
ताकरिहरिबेदकधारे॥२९॥सतेब
रतराजाहरिभक्त॥ताकौंहरिजीकी
योबिरक्त॥बिनहीप्रलयप्रलैदि
खायो॥मच्छरूपहोयग्यांनसुनायो॥
३०॥बहोरिबराहरूपहरिधार्‍यो
हरिनाक्षअसुरतिहिमहीमार्‍यो॥बोरी
हुतीमहीजलमांही॥करिउपायध
रिआंनीजहांहीं॥३१॥कूरमहोयमंदगि
रधार्‍यौ॥अंमृतकाढिसुरकारजसा

।ग्राहगह्योगजिराजसुकाल्यो।ति
रिजीततिनकालिउबाल्यो।छं२४।।
बालखिल्यादिकजेरिषराजा।छं
गुरुसमयओंकारबिराजा।कसि
केकाजेइकबारा।समिधेनिदोते
बनहिंपधारा।२५।तहांगायकेपग
मरिया।तिनमेंआपअपसब
रिया।हांसीकरेइंइतहांअरो।त
तिनहिरदेहरिहीसंभरो।२६।ज
बआतमकौंकोईनांही।तबतुम
यउधारेनमांही।तातेंअबहम
अनाथा।करुनासिंधगहोक
रिहाथा।२७।इतनीसुनिआरतिक
।तहांउठिधायेसारंगपानी
तबहरिकरगहिसबनउधारा।ला
लखिल्याउधरनअवतारा।२८।बू
सहत्याभयइंइसंभार्यो।तबहीह
रिंप्रगटउधार्यो।सुरबनिताजबअ
।तबतैंहरिसरनिहीअनुं

सरी ३७ तबहरिजीतेसकलतं
धारी असुरमारिसबबिपतिन्वि
री ३ नि नरसिंघरूपहरिधाऱ्यौ
असुरहिरनांकुसिजिनमाऱ्यौ ३८
जनप्रहलादलीयोहैराषी जाकी
प्रगटकहैसबसाषी जबजबअ
सुरप्रबलअतिभये देवनकेअस
थलहरिलये ३९ तबतबसबम
निंतरमांहीं विस्नकलाअवतार
धरांही मारिअसुरसबदुषमिटावे
सरनांगतिसुरनरसुषपावै ४०
बांवनरूपइंद्रकेकाजा मिस्या
कुलछलीयोबलिराजा तीनलो
कलेइंद्रहीदीये बलिकीभक्ति
आपबसिभये ४१ बहुरिअघर
नीन्रपजेराजा परसरांमप्रगटेति
नकाजा इकईसबारकरीन्हिपि
थी भूमिकहूंनराषीछत्री ४२ ब
हुरि भयेदसरथसुतरांम जैहैप्र

सैलजिनतारे।रांवण।आदिकसं
हारे।४३।आगैरामकृस्नअवतारा।
भक्तोंप्रबलहरैंगेतारा।जङ्कुल
जन्मकरमतेकरिहै।जिनसूंनाम
जीवनिस्तरिहै।४४।आगुरदेवि
जगपनकेकरता।जीवनजारितज
केनरता।वैधिरूपहरिजीतवध
रिहैं।जगपनिदापाअइङिस्तरिहैं
४५।बडरिधरैंगेकिलकोरूपा।
अतिअपराधकरैंगेभूपा।कलि
केअंतसकलसंहरिहै।ङडरि
प्रवृतिसतजुगकरिहै।४६।ऐसे
बिसमकरमअवतारा।कोईकहै
तनपावैपारा।कहूयेकमैंतुमसूं
कहे।औरकोटिअनंतनरहे।४७
इनकूंकहैसुनैंअरुगावै।प्रेमस
हितनिसबासुरध्यावै।सोभवसाग
रमैंनहींरहै।पावैगंनिरमपदलहै।

सरी ३७ तबहरिजीतेसकलउ
धारी असुरमारिसबबिपतिनिवा
री अुनिनिरसिंघरूपहरिधास्यौ
असुर हिरनांकुसिजिनमास्यौ ३८
जनप्रहलादलीयोहैराषी जाकी
प्रगटकहेसबसाषी जबजबअ
सुरप्रबलअतिभये देवनकेअस
थलहरिलये ३९ तबतबसबम
निंतरमांही बिस्नकलाअवतार
धरांही मारिअसुरसबदुषमिटावे
सरनागतिसुरनरसुषपावे ४०
बांवनरूपइंद्रकेकाजा भिस्या
कुलछलीयोबलिराजा तीनलो
कलेइंद्रहीदीये बलिकीभक्ति
आपबसिभये ४१ बडरिअधर
मीउपजेराजा परसरामप्रगटेति
नकाजा इकईसबारकरीनिछत्रि
नी भूमैकछुनराष्योछित्री ४२ बह
उरि भयेदसरथसुतरांमां जैहैप्र

श्रीरामसागरकेपीरे
कुष्टसे
५३ श्रीगोरामकृपामेंश्रव
कुल
जिनसूला
निसतरिहैं।५४।गुरदेवि
ताजीवनमारेउ
बेधिरूपहरिजीतबध
गधनिरापायंडबिसतारिहैं
बड़रिधरैगेकिलकीरूपा
प्रपराधकरैगेभूपाक
पतसकलसंहरिहैं।बड़रि
जुगकरिहैं।५५।श्रीसे
श्रवनासाकोईकहै
तनपावेपाराकह्योयेकमैंतुम
हे
हैंसुनैश्रुरुगावैश्रेम
सोमवसा
२

४८॥दोहा॥येबैनोसुनिद्रुमलिके
कीनोप्रश्ननिरंद॥प्रभुजीतिनकी
कौनगतिजेनभजेगोबिंद॥४९॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेयेकाद
सस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेजा
नकीयोगसंवादचतुर्थोध्याय
४॥अथपञ्चमाविदेहउवाच॥चौपई॥
जेनहींकरैंहरिजीकीसेवा॥जिन
कीकहोकौनगतिदेवा॥तिनके
उपतिनसुपनैंआवै॥निसदिनजे
स्मान्नगतिजनावै१परिजोबहु
बिधिधरमउपजावै॥तामोहिकहो
कछुसुषपावै॥येकहिबचनज
नकजबरहे॥ऋषभमैंचमसनाम
नवकहे॥२॥चमसउवाच॥हरि
जीबिप्रबदनतेंकरे॥बाहुनतैंछि
त्रीबिसतरे॥जांघनतैंवैसउप
जाये॥सुद्रतिनमैंचरनतैंआये॥३॥
येहीभांतिकीयेआस्रमा॥तातैं

नजनसभनकोधरमो॥तेश्रापही
करैघतपाला॥श्रापही पोषैदीनद
याला॥४॥त्रैसेघ्रभुकोंजेनरबिस
रें॥तेश्रपारश्रपराधनिकरें॥जेगुरद्रो
ही पित्रद्रोही॥स्वामीद्रोहहैकितिघ
नीहोई॥४॥तिनश्रपराधनिश्रधमे
गतिजावे॥कवहूनूरिरसुपनहिंन
पावे॥सुद्र जोधितान्नेंस्नजश्रादी॥
तिनकोंदूरिकपाश्रवनादी॥६॥ते
मनमैंश्रभिमाननधरैंताते ंतुमसे
कपाकरैं॥यातेंइनकोंहेउधारा॥
परिकंचनकोवारनपारा॥७॥बिप्र
रुष्क्षत्रीवेस्यत्रैबरना॥उपनयना
दवेदमैंषकरना॥इनसबहीनके
तेश्रधिकारी॥तातेंहौंहिबहुतश्र
हंकारी॥८॥नातपुजकोंजानैनांहीं
सुहीपितबानीमैंभरमाईं॥बिस्नभज
नतसश्रधिकारा॥पायोताहिनलगें
बेगवारा॥९॥करमश्रकमबिक्रम

दषांनो जग्य मांहि नांहीं कछु स्रा
नां २१ बहुरयो वहां कृते छुडावे
ऐसो तात पद जैसो पावे हरि कीसर
में आवे कोई सारी विधि समकै इक
साई २२ कैजे तिनकी सर नहीं आ
वे अमिप्राय सारो सो पावे वे हरि
जन अरु हरि ही न जांनें आपुही कुं
पंडित करि मांनें २३ तातें तात पर
जन हीं जांनें पढि पढि बेद अनर
थ हि गांनें धन ऐसो जो करे उधा
रा सो धन षोवे वृथा गवारा २४
जो धन हरि के काज लगावे सो त
व प्रेम भगति को पावें तातें हो यं
ज्यांन प्रगासा तब हरि मिलै मिटै भ
व पासा २५ ऐसो धन ते मूढ लषां
नां देह काजि षोवे नरमनांनां का
ल निरंतर हर तन देषें बहु मद
मंत हरि करि लेषे २६ मद मांस म
षि मैं आंनी जे और नित्ति कहुं नांव

तहां कै आपुले ईस मांना
पांन मांन तें अधगति होती कह ॥
बनिता रितु दांन नही देवे लोल सू
लिकऊं नांवन लेवे सो ऊकौ लग त
सुत होई सुत के न येतं कीये ला ही
वास्ते सो सकल बरन को भरला ॥ ता
ललिन पावे मरमां भलपहां न श्रु
ति बषांने मूरष आप हीपंडि
मां ने २ ॥ ता तें बकुत करम आरे
शीयम नहि कबहू लहि धर्मे ॥
जीव न मारे तें बहु ज
नमति न्हे संहारे ३ ॥ यादव सत्य मस
बघट मांही ये के हरिहि जो को ई नांही
तिनको द्रोह करेतन पोषे दारा सुत
आंनि संतोषे ३ श्रा नहीं मूरष नहीं
रपांनी पठि पहि ग्रंथ है लिंग अलि
ते असाधि रोगी सब जांन ॥ ति
सौंग पांनन मांडे पांनी ॥ तसे तें सब क
आपनो घाता सुपने हूं न लहे कुस

यनयविक्ता॥४३॥रक्तबरनत्रेता
जुगमांही॥त्रगुनमेषलागलिपहि
राई॥पीतकेससरवादिकहा
रुगजुजस्पांमत्रयमयनाथा॥४
तबतिनहितजग्यादिककरें॥बे
वहितकरमनबिसतरे॥सर्बदेव
मयहरिकोंजांनें॥तबहरिसबयें
पूजाठांनें॥४४॥प्रसगयनजरगाय
कहीजे॥बिस्नुरूसाकपिजग्य नं
नीजे॥सर्बवेदअरुकरमबिजयं
ता॥असेनांमकहेसबसंत॥४६॥ह
रपीतबसनघनस्पांमां॥संषादि
कआयुधअभिरांमां॥च्यारिबाहि
भृगुरूनताधरनां॥लक्ष्मीचहिनब
क्रतआभरनां॥४७॥चंवरछत्र
आदिकसेंनां॥म्हाराजेलच्छण
सुषदेंनां॥बेदतंत्रपथसेवाकरेंस
बअरुपनपूजाबिसतरें॥४८॥बासु
देवसंकरषनदेवा॥प्रधुमनअनि

रुध्ध्र सेवा नारायण अगमो नर॥
नंता जिनकी कोई लहै न अंत॥१॥
४९०॥ विस्वरूप बिस्वेसुर स्वामी॥ स
बो तम सब अंतरजामी॥ बहुत भांति
अस्तुति अनुसरै॥ बिधि सौं ध्यान धरै
जाक रै॥१॥ कलिजुग पीत पितंम
र धारी॥ कृस्नदेव घनस्याम मुरारी
सहित पार षद बहुत श्री भरनो॥ स
रवन कीरतन पूजा करनो॥४॥२॥
डीय मन बहु नरै बिकारा॥ तिन
तैं राषै चरन तुम्हारा॥ सब बिधि
सब तीरथ को वासा॥ सुमरत ही पु
रवै सब आसा॥ ५२॥ सिव बिरंचि मु
नर सुनि ध्यावै॥ जाको भेद बेद न
ही पावै॥ रा यि लेत सरन नहीं तो आ
वै जनम मरन सब दुष मिटावै॥ ४३
केवल दीन हेत उद्धारै॥ नव सागर
के पार उतारै॥ ऐसे चरन तुम्हार
रो गायो॥ ताकी सरन नहीं दूजै आयो॥

५४ अतिदुरलभसुरवंछेजाको
ऐसोराजछोडिकरिताको दसर
त नतके बचनसतकरनं बनको
गवनकीयोजिनचरनं ५५ हेम
मृगदवंतामन भायो जोजाके
पीछेउठिधायो जोभगतनकेयों
आधीनं ऐसे चरनसरनमेंली
नं ५६ ऐसोबिधिकलिअस्तुति
करे बहुबिधि हरिनांमनउच
रे सुनेकहेंसुनरेअरुधावे ते
ततकालततकें पावे ५७ य
बिधिजेजुगजुगहरिसेवे तिन
नकोहरिग्यानहीदेवे ग्यानप
यनिजतत्वसमावे जहांजाय
बहुलोनहीआवे ५८ जेकलि
गकेजनकोजानत तेबहुबि
अस्तुतिकोठानत जैसोपमस
कलिमांही ऐसोओरजुगनै
ही ५९ सतजुगध्यानजगपे

हीहापरप्रतिमांपूजेरामहीःक
केवलनांमंदिकगावे सोसो
फलततकालहीपावे ६० यान
वसागरमांहिनिरंतर उपतजीव
परेनहीअंतर तामेह [illegible]
मरचारन येक [illegible]
कोतारन है [illegible]
लिमांही [illegible]
हीतमें [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
सुहा [illegible]

जेउपजेंतेभक्तिहीकरें तातेंनहीं
बकनउधरें ६५ अरुजहांतांम्र
परणीकृतमाला कांवेरीपयसु
नीबिसाला अरुसरसुतीबछि॰
मबांहनी गंगाआदिहरिजुयदं
हनी ६६ जेमांनवपीवेजलइनको
हरिहोयहिरदैमलतिनको तेस
बैथाहोतिहरिनको साधुसंगहो
यआसनको ६७ मृतकुटंमपित
रहियदेवा इनकेरिनीकरैंसबसे
वा सोनरिनीहरिसेवाकरही जेस
बतजिहरिकोअनुसरही ६८ जो
बिधितजिहरिचरननआवे तिन
कौमनहरिहरिवहावे वडुयोंम
ननपजेनहीकोई उपजेकदहरे
हरिसोई ६९ तातेंसबबिधिकोफ
लयेका गहीयेहरिपदछांडिअनें॰
का सबकेप्रभुसहीसुषदाता सब
कांगतिपालकबिख्याता ७० जबज

वजोजोसरनेंआयो।तवहीं। ...
नत्तिनहरिपायो॥तातेंक्ष ...
परहरे ये।श्रीभगवानक ...
रि।ये॥७१॥ऐसेसुनिकें ... ज
नकहिरदेंश्रत्तिनद ... सं
मेद्योसकलनमो ... ज्ञा
नसतोसोजागें ... नकीव
कृपजाकी॥१॥ ... हितप्रदा
छनंदीनी॥ ... पायेस
बही।स्रं ... वही॥७३॥
जनकवि ... सबत्यागें।हरि
केचरनन ... अनुरागें॥याविधि
ब्रह्मप ... नयो।तरिभवसिं
धुब्रह्मभे नयो॥७४॥याहीविधितुम
हुंवडभागी॥हेकरिहरिचरनन
अनुराग॥ औरसकलकोतजिकुसं
गातव ... यहोब्रह्मप्रसंगा॥७५॥अ
स्तुमतो ... वकीबसुदेवा।भयेकि
रथकरिहरिसेवा।तुम्हरे ...

जगसारा॥ जिनकेंहरिलीनौंअवता
रा७६॥ असनआलिंगनआलापा
आसनभोजनसैंनमिलापा॥ हरिं
सोंपुत्रजांनिचितदीनौं॥ तातैंसुफ
लजनमतुमकीनौं॥७७॥ कपटबा
सुदेवरुसिसपाला॥ दंतबक्रस
ल्यादिकराला॥ बैरभावकृस्नहीं
चितधास्यो॥ तिनकूंकौंहरिदेव
उधास्यो॥७८॥ कंसमरनअतिमं
नमेंआंन्यों॥ कृस्नबैरनिश्चैजीवजां
न्यों॥ पूतनांआदिसबनयेबिडषा
पायेमुक्तिमिटेसबडषा॥७९॥ ते
जोप्रेमप्रीतिसोंसेवें॥ तिनकोंक्यों
नपरपददेवें॥ अबतुमपुत्रबुधिम
तिआंनौं॥ कृस्नदेवकौंब्रह्मजां
नौं॥८०॥ मायाकरिधरीनरदेही॥
पारब्रह्मतुमजांनौंयेही॥ बढ्योदे
ष्यभूमेंअघभारा॥ मेटनकाजधस्यो
अवतारा॥८१॥ प्रमपुनीतजसहीबि

सत रहौ॥जासौं लाग्य जो वृनि सन
हौ।जेजे हनसौं हेत लगावे।ते ते स
कल परम पद पावे।८२।ऐसी मुनि
नारदकी बांनी।बसुदेव देवकी
अद्भुत जांनी।आपही इकंतमि
करि ज्यो।हरिमें भाव सुद्धको
मांन्यौ।फ़ुन्यो इतिहासक आगे
गावे।सावधांन सुनि हृदि दे राखे।
सोसब भव बंधन छिदकावे।हु
पजे ग्यान परम पद पावे।८४॥दो
हा॥येगाथ्यो संषेपसो।हरिमिल
को द्वार।हरिउधौ संमाद अब।वा व
रनौं करि बिसतार।८४॥इतिश्री
भागवते महापुराणे येकादस स्कं
देवसुदेव नारद संमादे.जायंतीयं
पाख्यांन पंचमोध्याय॥५॥इति
नारद बसुदेव संमाद समापता अ
थ कृस्न उधौ संमाद प्रसनाव प्रार
ये तत्र॥श्रीसुक वाकि॥

बकरिसुनौंनृपज्ञात्मविद्या॥जाके
जांनेमिटेअविध्या॥मिटेअविध्या
ब्रह्महीपावे॥ब्रह्महीपायफेरिन
हींआवे१॥तबब्रह्मासनकादिक
संगा॥नारदादिरंगेहरिरंगा॥सक
लप्रजापतिभृगुमरीचादिक॥मह
देवलीनेभूतादिक२॥सुरसमुह
संयुतसुरपती॥पवनअरुवह्नी
सुतग्रहपती॥बसुअंगीरासुरऊ
रिभूदेवा॥सांध्यादिकअरुविस्व
देवा३॥रिषीगंध्रबपितरअरुना
गा॥चारनसिधमरेअनुरागा॥अ
पसरअरुगुह्यकविद्याधर॥किं
नरयक्षादिकमायाधर४॥कृष्ण
देषिबेकारनसारे॥आनंदितह्वारि
कापधारे॥केईनांचेकेईगावें॥के
ईबाजेबजनबजावें५॥केईजेजय
सबदउचारें॥केईकृष्णजसहीबि
सतारें॥नानिविधिकरैबन्दनहा

हरिप्रेमप्रवाहा।ई।श्रीभ
गवानमनुजतनधारी।दरसनसक
नहरनमुरारी।लोकनमांहिजसं
बिसतारे।श्रवनादिकनिसक
लअघजारे।३।निधरिधिरनक्षा
वती।जाकेंसमनहींश्रमराज
जामेंब्रह्मादिचलिश्राये।।क
देवकेदरसनपाये।४।सुरग
लनकीमाला।छादितकीने
नदयाला।पावतदरसनृपतिल
होवै।चित्रलिखेसेसंमुखजोवै
ए।चित्रपदनिबद्धश्रस्तुतिकरैंउ
तमश्ररथनिजसबिसतरैं।सहित
बीनतीश्ररुपरनांमां।दरसभयेसब
पूरनकांमा।६।देवाऊचा।हे प्र
भ्रूचरनसरोजतुम्हारे।मनक्रम
बचनचितश्रहंकारा।इंद्रीयबु
धप्रांनश्ररुदेहा।बंदतहैंहमपर
टयेहा।११।जाकोंप्रांनबचनमन

साधै॥साचध्यांननिसदिनआराधै
॥साचसहितअभिअंतर ध्यावै॥तेउ
पाबिधिप्रगटनपावे॥१२॥धनिधा
नंहमधंन्यभागहमारा॥प्रगटदेवे
इसतुम्हारा॥जिनकेध्यांनकीरत
नश्रवनां॥बकरिनहोवैआवागव
नां॥१३॥तुमअद्वैतद्वैतयेकसो
ऽपनी मायासबबिसतर्यो॥तुम
हीमेंउपज्योसंसारा॥सदारहैतु
मरेआधारा॥१४॥तुमहीमांहिलीं
नसबहोई॥तुमकोंप्रसिसकैनहीं
कोई॥रागरहितआनंदसरूपा॥
अजितअमितचिदरूपअनूपा॥
१५॥बकअध्ययनश्रवनअरुदां
नां॥कीयाउपासनतपअसनांनां॥
त्यागजोगजिग्यादिकजेते॥आत
मसुद्धकरैनहीहीयेते॥१६॥तुवग
नश्रवनप्रतअघनासैं॥ज्योंतमम
हिसूरजिप्रकासै॥तातैंजनमक

रमगुनधारो दीनबंधु दीनक ऊ
धारो १७ जो तुमचरनकं वनमु
निध्यांवे भवभयभीतनपल त्रि
टकोवे अरु निजभगतनिरंतर
सेवे नयनहीमुक्तिनहीक ट
लेवे १८ अरु येक निबेकुंट नं
मिंता हिरदैधरेतुव चरननि न
चिंता बकुरियेकसेवेसह कामा
येक नये चाहेनह कामा १९ जा
वनमुक्ति नयेइकसेवे प्रेम ना
वसुअतिसुखलेवे येकेंजिभ्यादि
कनसें नजो सरबदेवमय तुमकू
उजो २० येकें बरनआदिआश्रमो
तुमरेहेतिकरेंसबधरमा येकेंये
करूपकरिध्यावे द्वैतभावक ब
रु नहीं लावे २१ येकें तुम प्रति
मांकूंसेवे येकेंनामनिरंतर लेवे
येकेंश्रवनकीरतनध्यानो
येविधिनाना २

साधै॥ सावधांन निसदिन आराधै
भावसहित अभिअंतर ध्यावै॥ तेउ
याबिधि प्रगट न पावै॥१२॥ धनि धी
नें हम धन्य भाग हमारा॥ प्रगट देव
इस तुम्हारा॥ जिनके ध्यांन की रत
न श्रवनां॥ बकरि न होवै आवाग
वनां॥१३॥ तुम अद्वैत द्वैत ये कसो
अपनी माया सब बिसतरो॥ तुम
ही मैं उपज्यो संसारा॥ सदा रहै तु
म रे आधारा॥१४॥ तुम ही मांहि ली
न सब होई॥ तुमको प्रसि सकै नहीं
कोई॥ रागरहित आनंद सरूपा॥
अजित अमित चिद रूप अनूपा॥
१५॥ बकु अध्ययन अश्रवन अरूदं
नां॥ कीया उपासन तप असनांनां
त्याग जोग जिग्यादिक जेते॥ आत
म सुद्ध करै नहीं ही येते॥१६॥ तु बग
न श्रवन प्रतक्ष घनासे॥ ज्योंतम मं
हि सूर जिप्रकासे॥ ता तैं जनम क

मगुनधारो।दीनबंधु दीन[illegible]
धारो।१७।जोतुमचरनकूं[illegible]
।निवभयभीतनपलहि
टकोवे।अरुनिजभगतनिरंतर
सेवे।भयनहींसमुझैनहींकछू
।१८।अरुयेकनिनैकूंचनिः
ता।हिरदेधरैतुलनावरनकिनि
ता।बकुरियेकसेवेसहकांम
नयेचाहेनहकांमो।१९।जी
नमुक्तिनयेकछूसेवेप्रेमला
अतिसुखलेवे।येकैजिमाहि
नसोंमनेसिरलदेवसयतुमकूं
२०।येकैबरनआदिकआश्रमा
रेहेतिकरैसनधरमा।येकेंये
करूपकरिध्यावे।द्वैतभावकब
नहींलावे।२१।येकैतुमप्रति
कूंसेवे।येकैनामनिरंतरलेवे।
श्रवनकीरतनध्यांना।कहां
येविधिजांनां।२२।यो

तुमयेसबकेकरतानपजीवन
प्रतिपालनहरतातुमआधारस
कलकेस्वांमीतुमफलदाताअं
तरजांमी३४जोकछूहोयसक
लजुगमांहींतुमकरताहूजाको
नांहींपरिकछुलिपतिहोकनहीं
देवाकोईलषिनसकेतुवभेवा
३५सोल्हसंहंसयेकसोल्लागाजि
नकेहिरदेप्रेमअलिकागाहाव
भावसंप्रीतिबढावेंमदनबांन
वङभांतिचलावें३६तुमतोद्य
वसिहोवोनांहींनहचलनिजांन
दपदमांहींओरछोडिहूबैठेको
ईकरतबासनांबंधेसोई३७ये
हैनदीप्रगटतुमकीनीजिनकी
महिमांपरैनचीन्हींयेकगंगच
रननकोनीराप्रसतनेरमलक
रैसरीरा३८दूजीतुवकीरतकी
सरिताविमवनजहांतहांबिसत्त

ताश्रवनकरतअतरमलनासैं
निरमलहिरदैब्रह्मप्रकासै॥ ज्य
ब्रह्मप्रकासनयेमैनांही॥ थिलैये
कमेकमिलमांही॥ येद्वैनहीन न
जैजेपंडित॥ तिनकौकालकरैन
हीपंडित॥४६॥ तातें कृपानाथश्र
वकीजै॥ साधूसंगहमकौंनितदी
जै॥ जिनमेंकथानहीहमपावें॥
जातेंतुवचरननचितलावें॥४१॥
सूतउवाच॥ यौंलेसिवसकौंदिक
संगा॥ अस्तुतिकरीबहुतप्रसंगा
बहुसौंबिधिइकबचनसुनाये॥
जाकेकाजसकलमिलिआये॥४२॥
ब्रह्मउवाच॥ हेप्रभूहमतववि
नतीकीन्हौ॥ धरनीभारभरीतवची
न्हौ॥ तातेंतुमलीन्हौंअवतारा॥ स
कलभतासौभूकोभारा॥४३॥ मे
टिअधरमधरमबिसतास्यौ॥ सव
संतनकोकारजसास्यौ॥ अरुकीर

तिबकुबिधिबिसतरी॥नवसाग
रतिरबेकोकरी॥४४॥नेअवतार
अूपयहूबंसा॥सकलजननकोमे
टोसंसा॥बकुबिधिकीन्हेकरमअ
पारा॥जिनसोंलागपजेहेंभवपारा
॥४५॥अरुयडकुलछिजआपबि
नास्यो॥नहिंरहिहैंदिनहुहैनास्यो
तातेंदेवकाजसबकरयो॥करबे
कुंकुछिनांहीडबरयो॥४६॥गयेब
रषसतअधिकपचीसा॥तातेंहम
बिनवेंजगदीसा॥अबकरिकृपाच
लोनिजलोका॥करतस्तुतीतहमा
रेवोका॥४७॥हमहैंदासतुम्हारेदेवा
निसदिनकरेंतुम्हारीसेवा॥असीसु
निब्रह्मांकीबांनी॥तबहसिबोलेसा
रंगपांनी॥४८॥श्रीभगवांनउवाच॥
मेंसबसुनीतुम्हारीबांनी॥तुमरो
कारजभयोयहजांनी॥पैंयहकु
लयौंहीपहेंरों॥तोनासससकलनू

मैंकरसो।भए।यहसबयाछक
मदमतातियेरहैसोसेरीकला।
नजेंसबप्रलयतौनेंज्यौसा
मरज्ञादा मोनैं।।भूणे।।तातेंवासहे
तनुपजायो।आपसजनहिप्रनहे
यो।।अबइनसकलकौनिन
कों।पीछेतुबलोककोंसबकं
पुत्रनसेसुनेहरिजीकेबेनां।।हिर
बडेसबहीनदेचेंतांकरेप्र
पतिबिनती।सोरे।अपनेलोक
पधारेपुरातिजनरथलिकीसभाम
कारी।बिवेयदुकुलसहितमुरारी
द्वारावतीतेंछेउतपात।।तिनकूंदे
पिकहीहरिबात।।धुर्ना।येउतपात
उठेचक्रकोरा।अतिभयदायकदे
रा।अरुद्विजशापभयोकुल
तातेंभलीदेषीयेनांहीं।।पुष।
तातेंअबयहांनहींरहीये।।तजी
जीयेजोचहीये।अतिपुनी

तिबहुबिधिबिसतरी॥ भवसाग
रतिरबेकौंकैरी॥४४॥ नरअवतार
भूपयहबेसा॥ सकलजननकोमै
च्योसंसा॥ बहुबिधिकीन्हेकरमअ
पारा॥ जिनसौंलागपजैहैंभवपारा
॥४५॥ अरुयहकुलद्विजश्रापबि
नास्यो॥ नहिंरहिहैंदिनद्वैहैनास्यौ
तातेंदेवकाजसबकर्यो॥ करबे
कूंकछुचिंतानांही॥ तबसौं॥४६॥ गयेब
रषसतअधिकपचीसा॥ तातेंहम
बिनवैजगदीसा॥ अबकरिकृपाच
लोनिजलोका॥ करतपुनीतहमा
रेबोका॥४७॥ हमहैंदासतुम्हारेदेवा
निसदिनकरैंतुम्हारीसेवा॥ ऐसीसु
निब्रह्मांकीबांनी॥ तबहसिबोलेसा
रंगपांनी॥४८॥ श्रीभगवांनउवाच
मैंसबसुनीतुम्हारीबांनीतुमरो
कारजभयोयहजांनी॥ पैंयहकु
लयौंहीबहैहै॥ तौनाससकलहै

कोमैंकस्रो॥४५॥यहसबयादवब
कुमदमत्ता॥नयेरहैंसोमेरीसत्ता॥
मोहितजेंसबकुलनयगनैं॥ज्योंसाय
रमरजादानमानैं॥४६॥तातेंनासहै
तउपजायो॥आपसबनबिप्रनतैं
पायो॥ऋबइनसबइनकोंबिन
सांकों॥पीछैतुवलोकनमैंआंकं
४७॥ऐसेसुनेहरिजीकेबैंनां॥हिर
देबढ्योसबहिनकेचैंनां॥करेप्र
निपतिबिनतीसारी॥ऋपनेऽलोक
पधारे॥४८॥तबनरपतिकीसभाम
फारी॥बैठेयदुकुलसहितमुरारी
द्वारावतीउठेउतपाता॥तिनकूंदे
षिकहीहरिबाता॥४९॥येउतपात
उठेचढूंवोरा॥ऋतिभयदायकद
सेघोरा॥ऋरुद्विजश्रापभयोकुलं
मांही॥तातेंनलीदेषीयेनांहीं॥५०॥
तातेंऋबयहांनहीरहीये॥तजीये
बेगपजीयोजोचहीये॥ऋतिपुनीतवै

त्रप्रनासा तहां बेग चलि कीजे वा
सा ५५ येक बार द्वञ्मापही दीपो
सिसी के रुई रोगत बनयो जबसे
सिसप्रनास हीन्हयो स्यु द्योञ्चाप
परमसुषपायो ५६ तातें ञ्जवञ्ना
सचलीजे जहां जाय ञ्जसनानक
रीजे तिरपत्ति देवपितरन कौं क
रिये बिप्रभोजन बक्र बिधिबिस
तरिये ५७ तिनकौं दांन बक्र तबि
धिदीजे सरधासहित प्रनांम हीकी
जे तिन प्रसाद दुष परहरीये जौ
नाब नसौं सायर त्तिरीये ५८ ञ्जैसी
सुनि हरिजा की बांनी सब जादव
नमली करिमांनी तब चलिबेकों
सकल बिचारे ञ्जपनें २ घन सबा
रे ५९ तब उद्धव हरि कौं निजदा
सा देषि सकल बिधि भयो उदासा
चलियेकां तहरि जीपें ञ्मायो चर
नतिषरि कें बचन सुनायो ६०

त्वकी च देवदेवई श्वरजो ग स
भ्रवनकी रतनहरनकलेसाभ्ड
कुलकूं संहार हि करिहो॥भ्रत
मृत्युलोकपरहरिहो॥ई॥तिन
श्रापमेटनसेमरथा॥नहीमेदोसो
कोनभ्ररथा॥मेरेजीवनचरनतुम
जिसेमीनउदिकभ्राधारा॥ई॥भं
ना यभ्रवभ्रेसीकीजे॥संगभ्रापने
कोलीजे॥तुम्हरेसबभ्राचरभ्र
पा॥सबकोभ्रतिकल्यानसरूपा॥ई
जिनकोपायभ्रोरसबत्यागो॥जिनव
बडुबसेलागो॥भ्रासनगवनभ्र
सनभ्रसनानां॥जागतभ्ररुसोवतजि
श्चिनानां॥ई४॥सदानिरंतरकोमेदासा
कोपलतजौतुम्हारोपासा॥यहमाः
या भयत्तेनदीकहो॥तुमबिन२
निमबिनहीरहो॥ई५॥गंधवसनमा
लाभ्राभरनां॥तुवकृतीरनकोमेध
म्हाप्रसादनिरंतरपोष्यो॥दसेप

१७ सबकविधिसंतोष्यो ॥ ६६ ॥ सोमेनि
जदासतुम्हारो माया करि है कहा
हमारो माया नयज्ञलतुमरे हेता
हो हि दिगंबरस्थूलउरधरे ता ॥ ६७ ॥
इंद्रीय देह प्रांनमनसा धे सावधा
नतुमकोंआराधे ब्रह्मविचारसदा
मनलावे तेजिनरूपतुमारोपावे
॥ ६८ ॥ हमकचुकर्मअकरमनजांनें
ज्ञानध्यानबैरागनआंनें तुम्हरे म
गतनकेमिलसंगा भवतरिहैंसुनि
तुवप्रसंगा ॥ ६९ ॥ तुम्हरे कर्मबचन
परिहासा आसनगवनरूपप्रका
सा कहतसुनतसुमरतसुषमांही
भवसागरहमरहिहैनांहीं ॥ ७० ॥ ता
तैंमाया नयनहीं आंनों आपुहीसु
दामुक्तिकरिमांनों परितुमबिनाप्रे
नतजिजांहीं तातैंमोहि छांडियेनां
हीं ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ एउद्धवनिजभगति
के सुनेंबचनगोपाल तबकरुनां

यकरि कृपा॥ बोलेन चनरि सा
५२॥ इति श्री भागवते महापुराणे
ऐकादसस्कंदे श्री भगवत
संमादे षष्टमोध्याय॥६॥ ४३
श्री भगवानो वाचा॥ चोपई॥ सत
गत्रहवयह यो ही॥ सोतें कहै
बात है सो ही॥ सिव बिरंच सब कर
दि वेसा॥ बैठे मम बैकुंठ प्रदेसा
॥ भूमै भार वढ्यो जब भारी॥ तब प्र
पासि दुःकारी॥ ब्रह्मादिक ने बिन
ती करी॥ ताते मनुज देह मैं धरी॥ च
क्रको सब उतार बल सो॥ सकल
न को कारज सारयो॥ सकल कोनो जग
सनारा॥ तातें जीव जाय भव
॥ यह कुल श्रापत्नी यो तुजि पा
श्रापत्रापसे के है नासा॥ श्रा जिहं
सप्तम दिन माहे॥ सिंधु द्वारिका रा
॥ धाज बहा मैं तजि होय लो
॥ तब पावे गो इह सल

नजुगन्धोनिश्चभिषृतहोइ जातेंच
वकरिहैंसक्कोई ५ तातेंसुनिऊ
वबडभागा ऋवतुमकरिसबही
कोत्यागा मोमेंसदाचित्तथिरकरो
सम्मद्रिष्टिहोयमैमेंविचरो ६ जोक
छुकहनसुननमेंआवे ऋरुमनबु
धिजहांलोंजावे सोयहसबमनको
कृतजानो मिथ्यागुरमायाकरिमा
नो ७ जिनयेसकलत्यागकरिजानो
जिनकेभेदनयोहैनाभो तामेंदाहि
नसमकरिनहिजानें विधिनिषेदता
हीतेंठाने ८ विधिनषेदजोभाषेवे
दा सोताकोंजाकेंहैभेदा भेदमिटै
बिनकरैंनत्यागा तातेंयहेकीयेबि
भागा ९ ऐसोजोतजेसुधीत्योहोई
तातेंवेदवतावैदोई ऋागेजायकु
डम्वैसारे जेऋापहीकुतेंविसतारे
१० तातेंयहसबमिथ्याजानें ऊंच
नीचगुनदोषनमानें ईश्रीयऋरुम

निहचलनकरोअहंकार
रिहरो।२१।सुषिमथूलसकल
।येकहीआतमकेआसरा।।
आधरब्रह्मकेजानो।कैसीवि
नयमानो।।२२।।याविधि
अरथकोजानो।ब्रह्मरिष्टिदेनह
लकरिआनो।दोऊलोकलोआ
छोडो।याविधिअंतरायसलहै
मो।।२३।।जितनीयाकेआसाहोई।
तितनो।बिघनकरैसलकोई।ज्यो
बेआवेत्योंत्योंमिटेबि
केपासा।।२४।।जबयेहोयआत
मा।जबकछुनहीआसाकोधामा
घनकेकरतादेवा।तेही
नहिकरैतासेवा।।२५।।तातेविधि
येदसबनामो।आसाछोडिकि
हरिराषो।येकब्रह्मकरिसब
षो।।इज्योकबहूभूलिनलेषो।।१
जिनपायोब्रह्मगीया

बिधिनषेद नहींनानं परितिनके
नितही बिधिहोई कदे निषेह न
परसे कोई १७ वेसुषडवगुनदो
षनजांने बालकसमआचरनन
गेने परिबिधिसारी सेवाकरै
अरुनषेधआपहीपरहरै १८
सबउसुकदेसदाअतिसांति ग्यां
नबिग्यांनसहितनितदांति सब
जगब्रह्मजांनिथिरहोई बकुसे
जनमनपावेसोई १९ श्रीसुकज
[illegible] श्रेसेसुनिहरिजीकेबेनां
अतिडस्करअरुअतिसुषदेनां
तत्वसुननकीबाढीप्यासा तबबे
लेउहेनिजदासा २० उधोवाच
जोगसरूपजोगउपजावन जोगद
नजोगेसुरभावन तुमयेत्यागक
होमेरेहित सोडुसकरआवेनां
हींचित २१ क्योंहोवे बिषीयनक
कोत्यागा पुत्रकलित्रादिकअं

।यह तनये धनये सुत जैसे
ह बनिता ये ग्रह ये चेरे ॥ त्यागि
बिभ्रिम मम अहंकार समुदाय हि
रह्यो मैं मति को च्छु ॥ ता
अति नरमायो ॥ ता तें
नहीं आयो ॥ र
पदे सो मेरे
प्रवेसो ॥ ता तें
कवो मम
जा तें सब तनितुम कों
बऊरयौं जग तजन मन
हूजो है सो नहीं कोऊ ॥ जा तें ना
को हो
धारी जे तो तुव माया बसि कोये
ते ॥ ता तें या जी कों देसो करम
जोग भले करि ले सो ॥ र ॥ ता तें मैं
नहमरी सरनो ॥ सो कीजे पांऊं तु
॥ सुख सार गसम फै तब जे
॥ हे तुम कहो तुम तेसें ।

म बिनकहाञ्ज्ञोरकोग्यानो
ततगुरतुम भगवानो देवसिध
निकोइनदेखो बिषैबुधिम
तिनकी लेषो २८ केईगुरउ
सीलकेमूढा सबदञ्जगाधन
मफेगुढा केईगुरुसेवतमरि
नाई तिनसेवतकछुफलनही
पाई २ए येकगुरुनिपेरष्यानही
ई तिनकेसिषनसमफेकोई केर
ईञ्ज्ञस्यानभ्रष्टगुररूपा सिषन
कोबोरेनवकूपा ३० केईपव
रतिपूरनुव पूरन केइधरम ही
नबिषैकेचूरन केइगुरञ्ज्ञंधके
इगुरकानो केइगुरलोनमोहगर
कानो ३१ भ्रमग्यानयेसमफे नां
ही बिषैबंधसंमारसमाई तुमरे
ञ्ज्ञदिनञ्ज्ञंसनपारा ग्यानरूपस
बहीनतैंन्यारा ३२ सोहीतिरेग
होकरजाको मायाकछुनसकैक

१०७॥
जैसें आनि कृतैवंकदीनाइ
सदा रहे तुम्हरे आधारा ॥ कि लिख
ठिपो षो सिरजनहारा ॥ ऐसे भग
कों सेवे नांही ॥ तातें परे प्रमज्ञ
ही ॥ इध ॥ या नेवके इ वकतेनजा
पस्यो निरंतर मैं तिनमांही ॥ ज्ञनसे
कों सरनां गति जांनों ॥ दे करिम्नाम
नकल भेन्नानों ॥ इग्रमेरे तन मन
प्रनतु व चरनों ॥ मनव ज्ञ करम क
यों में सरनां ॥ ऐसे सुनि ज्ञो केवे
नां ॥ हसिक रि बोले अंबुजनैनां ॥
रु ॥ श्री भगवांन उवाच ॥ उद्दव मैंक
हे दे अपांनां ॥ सत्य कहत हूं नांही
आनां ॥ या जग साध भये हैं जेते ॥ आ
पही आप उधरे तेते ॥ २१ ॥ आपही
भलो बुरो पहिचांनें ॥ छोडे बुरो
भले कों ठांनें ॥ गुरु आपनों आपही
होई ॥ पसु पंछी

रिनरतनश्रेसोहैनीको ब्रह्माग्यां
दिसब निकोटीको जातेब्रह्म
बिचारहीपावे वक्तस्योंजगतज
नमनहींग्रावे ३प ऽकपदहै
पदत्रेपदयेका चोपदादिबक्तपा
दज्ञनेका मेंवक्तजातिमिथिबि
मतारी तिनमेंप्रीयेनरदेहहमा
री ४० सोहिपावेसोयाकरिपावे
श्रोरसबनिद्रसुष जोगावे या
मेंमेरोकरैबिचारा साबधानहोय
बक्तप्रकारा ४१ जाइयेतोजट
हैदेहा ईद्रीयादिग्रूलसकलसनें
हा ग्रपनेग्ररथनिगहैं सोयेसक
तिकोंनकोलहैं ४२ ग्रलसोवत
जब्रसुपनापावे तबतोईद्रीयतन
छिटकावे सुपनमांहिसुषडुषकूं
लहैं जागेंबानसकलकोंकहै ४
३ जातेंमैंनोयेतनमांही मैंतोबास
कःयोयामांहीं तोबनितासुतबि

नेंपरवारी।मेरेतो।नहींसकलप
सारों॥४४॥येतोसकलदेहसंग
जांई।सोयेंदेहकदेमैंनाहीं।तामैं
सुपनमांहिनहींकोई।इहांतोस
कलश्रौरहीहोई॥४५॥श्रलनाई
मैंतोवहनांहीं।जोलनदीसैंसुपनो
मांहीं।जातैंवहऊथिरनरहावै॥
वाकोंतजियामेंफिरिश्रावै॥४६॥वा
तैंयहयातैंवहफूटी।यहउठलाग
गह्योमैंमूंठी।जोइनदोऊदेहकौंलहै
ईहीनकैसबश्ररथनिगहै॥४७॥इ
दीबुद्धयादिकश्ररूनांनी।जाकोंको
ईसकेनजांनी।सोमैंनित्यनिरंतरये
का।उपजेबिनसैदेहश्रनेका॥४८॥ता
नाईसमैंकहांतैंश्रायो।किनतलत
दीनौंकिनउपजायो।श्रवतोमैंहैंदे
हश्रधारा।सलकौंरहिनसकेनिरधा
रा॥४९॥मेदोऊकतजिकामेंरह्यो।सोहै
सत्यताहिदिढगह्यो।

करैबिचारा ॥ मांगे देहादिकपरि
वारा ५० ॥ सोजहांतहांतैंत्नेवेगमा
नां ॥ कब्रह्मकछुनजानेंत्यांनां ॥ या
बिधित्र्यापुत्र्यापुकौंतारैं त्नेहैब्रह्म
मेवडमनिवारैं ५१ यहबिच्यारि
मांनवतनहोई दूजात्नूंलिनपावै
कोई ॥ तातैंतैंमांनवतनपायो ॥ क
त्नूएकमैंतोहित्नषायो ५२ तातैं
तैंजासकत्नकौंसंगा मनक्रमब
चनहोकुमिहसंगा सबतैंपरेंत्र्याप
कौंजांनौं सोत्र्याधारब्रह्मकैमांनौं
५३ जहांतहांदेषोउपदेसा ॥ यांबि
धिब्रह्मपरबेसा ॥ त्नैसैंजहांतहांलें
वेसांनां ॥ बक्ततकसंतनयेपरवां
नां ५४ तिनमेंकहूंयेककीबाता
जोइतिहासकथाबिष्याता ॥ ढतेदि
गंबरत्र्यरुयडुत्नूपा तिनकोहेसंबा
दत्नूंपा ५५ ॥ सुनिउह्वत्र
तिहारत्र्यबांनांबौंपरमत्र्यनूंपाव

तात्रियजहोअरुत्रस्मक
रीयडुनृपापूर्द्दीचोमद्दी॥एकसमय
नृपतियडुनामां॥गयेसिकारछो
डिनिजुधांमा॥तबतानगरनिकटि
हेसूता॥देष्योयेकपरमअवधूता॥धूप
निरमेनिहचलइआचारी॥तिननि
धांनतरुनतनधारी॥करिप्रनोमब
हुतपरकारा॥जडुनृपतिजबवच
नउचारा॥धूगजडुरु ज्ञबाचा॥हेप्रनृ
पूरनपरमदयाला॥कहोकृपाकरि
होऊकृपाला॥ऐसीबुधिकहांतुमपा
ई॥जातेंबिचरोसहजसुभाई॥धूप॥
नयेअकरताअंआचारी॥बालक
समसबचिंताटारी॥सबजगनिस
दिनयहबिचारे॥धरमरुअरथको
मबिसतारे॥देंगेसोकनहींउपजेदुष
पावें॥तिनसोंलगिसबअाग्रुमांवे
तुमसंमरथसबही॥बिधिजांनो॥कृपा
निपुनप्रीयेबेनवषांनो॥हेश्रमलत्रि

सरसत्तरुनतनसुं ३ तुरुप्रकी
तिपेनहुं ३ नाकुछिनछोनाकु
किरो जुतनमत जमीपैनिच
ईर ३ जाकामलोमदैलागी
सकललोगदाकैंतिनआगी तुम
नं दमैदफोनाहीं ज्यौगयंदग
गदिकमाही ईर देहअरथसब
हीकेस्वागेरहोऊ निदतसोकितन
संग न कोई देषोंदेवा कोईलह
नसकै तुवनेवा ई ४ तातैंकहोक
नाकरिनाथा भवजलबूडतपकरो
हाथा यौजु नृपबीनती करी त
बहुबधूतगिरा उचरी ई ५
पुनियऊ नृपपरमब
उमागी जाकीमतिहरिसैंअनुरागी
बहुतहैमेरगुरदेवा जिनतैंमैजा
सोसब नेवा ई ६ परिमैमतोआप
तीनी तिनमैमोसोंकिनऊनचौ
तौहैगुरसकलसुनौतुममोसों

रिजनजोनिकहतहौंतोसौ।६७।अरु
जोगानिपवनअरुपांनी।अनल
अंबरत्रिकपांचहीजांनी।अजग
रसिंधुपतंगरुभृंगा।कुंजरमधु
हरैतारुकुरंगा।६८।मीनपिंगलाद
कौरलबाल्या।कन्यासरकरताअरु
बाल्या।मकरीभृंगीयेचौबीसा।
इनतैंसीष्योसुनिकुनरेसा।६९।
प्रथमधरनीमैंगुनदेष्यो।सोमैंप्र
मतल्यकरिलेष्यो।सबैरहेधरनीअ
धारा।तापरिभूलकरैंअपकारा।७०।
गेरबोरअरुतिउसमअंगा।तिनकूं
कैबकुतबिधिसंगा।ताकेपरव
तहूदलअनंता।परकुपकासेंवेव
रतंता।७१।परअपराधकछूनहीं
जांनैं।उलटिआपउपकारहीठां
नैं।ऐसीसीषधरनीकीलेवै।जोन
नहरिचरननकौसेवै।७२।प्रांनवा
यजैंलेयअहारा।स्वादकुस्वादन

ोई प्यारा ओंहरिजनअहारहोले
स्वादकुस्वादनहींचितदेवे ७३
वेनअहारबिचारनआवे स्वाद
कुस्वादनमनलहरावे तातेंयेतो
लियअहारा जेताहोवे आंनअधारा
७४ अरुजोपवनफिरेजुगमांही
सुधअसुधलिपेकछुनांही नांनां
भेदनमेंसंचरे आयअप्रीयेगुन
दोषनधरे ७५ योविधिइनगहेले
छुजोगी मनकरमवचननहोवेसो
गी भेदअनेकनमेंअनुसरे परिक
छुभेदछिदेनहींधरे ७६ अरुजो
पवनगंधसंजोगा लिपतनयोजां
नेंसबलोगा परिसोपवनसदाइ
करूपा लिपेनकबहूसोअनं
पा ७७ पंचभूतनिरमलजोदेह
सकलविकारनहींकोगेह ता
जोमालिपतनहोई अरुलिपलज
होई ७८ जोसबहिनमें

अकासो॥अरुसव तिनको ताहि
बासो॥सवजगपजेबिनसैवरताई॥
गगननिलिपैकालतिकुलो ज्यो
ज्यौंवकुविधिसवजगतपरकासा॥
निदेषेआतमआधारा॥जोकछ
दीसेजडहैसोही॥जाकेसंगतेचेत
नहोई॥६०॥ज्योंआनमदेहनसेहैं
आतमजहांतहांलेषौ॥लेक
ननकहंआवर्तुलो॥लिसेनहि
मनहीमरतो॥६१॥सोपरमात
आतमदेकानुदेनदेषेत्रलिअ
ज्योंजोगगनिपूरनसैंहोई॥
बाहरिभीतरिजहांतहांसोई॥६२॥
हिबेकोदेनातरदेकोग्यौंआत
मरुबुद्धिलिकाज्योंवकमेदप
दंभनीदुरषैवकुतासुरजोम
नी॥६३॥परिनमलियतिकदेनहीं
ई॥औरलिपतिजानैसवको
आतमसैदेहकर्ता॥

तैंपावेत्र्यंता ८४ परिग्रातमलि
तिकछुंनांही साधुबिचारैयौम
समांही ग्रेखरगुनतोहिसुनायो
ग्रबनाग्रेजोजलतैंपायो ८५ बि
तनिरमलग्रोरनमलहरै तापमे
हिसीतलताकरैं सबसुषदायक
सीतलनरसवंत ग्रेगुनजलकेसेवे
संत ८६ तेजवंतग्रतिदीपतिजुका
चोमरहितजहांतहांनिरमुका
स्वादरहितसबभद्दानकरै ग्र
गिनिलिपैसंचनहींधरै ८७ सौं
हीग्रांनतेजमयहोई ईंद्रीयादि
दी कसंपतिसोई जदिपबहुबिधि
भोजनकरै स्वादरहितगुनदो
मनधरै ८८ काहूकेतैंचोननहि
होई काहूंकेगुनमिलैनसोई
स्वमांनरोयग्रहारा कछुय
जांमेंसंचयसारा ८९ गुनरहै
कीन्हेंप्रगटप्रग

के आवे। परन्तु आत्मा कृति कोई लि
ई तिनके पाप रहे नहीं देई॥ ज्यों
मैं मुनि गुप ति आपु ते रहे। सो हि तैसे
ताको भ्रम देहे। तैसे मनो जन्न लिग
क होई। परन्तु आ तैं लेवे सो ना नि
सो अगनिये करसये को। धक्र लि
धि दीसे का सूत्र नेका। त्यों आतमा
एक सब मांही। नेर देह हत जाते
नांही॥ ज्यों दीवा मसाल प्रगट सौं
होई। ज्वाला जाति तिवे सब कोही।
परि ते दीसे मोके त्यों ही। घति दिल दे
ह जात हे यों ही॥ ज्यौं जेसे सि तलके
टेक रुना। त्यों त्यों दीसे दिन दिन तल
अरन के करि दिन दिन नासे। सकल
मिटैं ने नहीं प्रकासे॥ ध्यों त्यों बाला
दि अवस्था आवे। होकरि तन कब
क महीं कम जावे। तब आतमां दे
धीये नांही। परि है सदा काल तिहुं मांं
ही॥ ध्यौं ज्यों रवि किरनि नसो जल ले

ई वै समयपायबडुस्यौंसबदेवै प
रिकवकूअभिमांनअंतौनें लीये
दीयोआपहीन हिंमांनें एई योंमु
निकहैसुनैअरुदेखैं सकलअ
र्थईश्रीयकृतिलखे नितआतमं
अकताजांनें सबतजिबसाबि
चारहीमांनें एउ ज्यौंचूटजलअ
तिबिंबतसूरा लिपतिदेषीयेप
रिहैहूरा त्यौंआतमांदेहसनबं
धा धूलदृष्टिजांनतहैअंधा ए८
अबकपोतकीकथासुनांउं लेरै
मनकोभरममिटांऊं येककपो
तकपोतनीसंगा बनमेंकीनोंग्र
हग्रसंगा एली आपआपमैंअति
आसक्ता आठपहरमैंपलनबि
रक्ता मनसोमनअंगनसोंअंगा नै
ननिनैनबद्योबडुरंगा १०० आ
वनगवनअसनअस्थांनां सयन
बेनसारीबिधिनांनां मिलेसकल

नकौंकरैं॥निरभैरहि[illegible]
डरैं॥१०१॥सोकपोतबनितातें लि
यो॥हावभावतनमनहरिलीनौ
नितजोबंछैसोल्यावै॥कछुसदि
विधिपावै॥१०२॥सोअसजो
स्योंतुमराजा॥अपनौंलैदै[illegible]
काजा॥तनमयलग्यो[illegible]
ध्यानलैकैतैंताहिध्यायक्योहै॥१०३॥
ताकीत्रीयाअंडरूपजायो॥तिनमैं
नहनौंमिलिलायो॥तबहरिमाया
निरमयोकोमलअंगसमतेन
॥१०४॥तनदेकमिलितातिनकोपे
बकुलमांतिकिसदिनसंतोषै॥
कोमलनचंनसुनैसुषदसौंअप
अंगनसौंवेप्रसौं॥१०५॥हरिकी
बहुतभुलायो॥आपुआपुमैं
लहुभायो॥पुत्रसनेहरहेअ
॥हिरपरिकालनलियेअम
गो॥१०६॥येकबारबाल

सो मानव तनु न गुमावै ॥ जाकरि दे
व निरंजन पावै ॥ ११८ ॥ दोहा ॥ ये ना
बी गुर ज्ञानकी ॥ सिष्या मैं तुव दास
सुबुध वरनकी कहत हैं ॥ जंच
है मनव प्रकास ॥ ११९ ॥ इति श्री मानव
ते ज्ञानसुरोदे ऐनमा दसमकं है मंग
लत उपदेस संपूर्न है अथ भूतोप
निहसो पापकोनाम मन लोभ्य
सुत ॥ ॥ चौपई ॥ अथ सुतक बाच
चौपई ॥ जेई इंद्रीय सुष कछु कहा
वै ॥ ते तो सुरग नरक तें आवै ॥
सोंसुकर कूकर सुष मांही ॥ सोई
देव और कछु नांही ॥ १ ॥ अरु जो सु
ष ज्ञान तें आवै ॥ करम लिष्यो स
कोऊ न मिटावै ॥ सो कोई दुष कोंन
हीं चहै ॥ परि दुष आय आप ही रहै
२ सोई सुष आप ही तें आवै ॥ बि
न जांने नर बहु दुष पावै ॥ तातें बु
ध सुष नां मन ल्यावै ॥ होय अकरता

हरिपदसेवै॥३॥स्वादकुरंगा॥ह न
क्तकें थोरा॥जोहरिजीपलंवैतिस
बौरा॥ताकौंनचितरहैउदर॥अ
गर हृतिगहै हरिदासा॥४॥जो
अहारन आवै॥तोथिररहैन
नल्पावै॥करमअधीनदेहकौंजां
नौं॥मनकर्मबचनतहिमानैं॥
॥श्रुतिसंमर्थइंद्रीयमनदे॥
कबुउदिमकरैनथैहा॥
त्तनिरंतरसेवै॥यहसि
रसौंलेवै॥६॥इसनप्रसनप्र
रा॥अधिकअगाधपानसेन॥रा॥ता
रपारकोइथाहनलहै॥थैगुनसुनि
सागरकेमहै॥७॥जोंबरषा
नीरप्रवेसा॥सायरकबहूबहैन
रहैसा॥ग्रीषममैंकबहूंनघटनहोई॥
सदासमदै आपतैंसोही॥८॥त्योंको
ईबऊबिधिअरचावै॥भोजन
वैं॥

हवे वहुत भांतिबहुतैंमिलिसेवे
प स्वरूपकेरनेजाहितारी निंद
दिक वंनेइक भारी परिनारायन
ामुनिमु नमांही रागदोषकछु
उपजे नांही १० वनितावस्तुकन
कस्त्रानरनां वहुविधिमायाके
स्राचरनां इनमेंस्त्रायपरेजेको
ई स्वगिनपतंगसमांनिसोहोई
११ जोलगिमुनिसमकेनिजदेहा
जाचिस्त्रहारलेयबहुगेहा जातें
कहुं स्त्रनुरागनवटै महसिष्या
मधुकरतैंपटै १२ छोटेबडेबहु
तबिधिग्रंथा तिनतैंसारगहेह रि
पंथा ज्यूंमधुकरवहुफूलनिमां
हींबासगहेफूलनिकोंनांहीं १२
सोमधुकरहै बिधिकोकहीये दोय
हुपासितेंसिष्यालहीये वहुतग्र
हनतैंलेतस्त्रहारा तइप्रमांनयेक
हीबारा १४ हूजेदिनकछुसंचनवे

।निरनैब्रह्मबिचारही करै।सं
मूलिकरैजोकबही।मधुमांखी
बिनसैंतबही।१५।कुत्तली
कीजोहोईपगकुबुधपरसैं
।परसकरतहोवेदितलंघ
करिद करनीसंबंधो।१६।मू
निबनिताकुंलजोपंडितकुम
मूलिनमजे।भजतेंहोवेकुटिल
।येकहीमिलिमारहीगजेंजा
७।जोकोईधनसंग्रहकरैसोकोई
औरैंपरिहरै।ज्योंमधुमांखीमधूसंग्र
मधूहोसोऊदिमबिनुल्यहे।१८।हरि
गीतसुनेनहीऔरा।गयोसहैजो
रिकीठौरा।औरसुनतहोवेगतिऐ
गीतहिरणकीजेसी।१९।सु
गतिसुनिबहुरंगा।अंगीरिष
गनिकासंगा।अबलाधीनमुक्ति
।तिनकेसबदसुनोमतिकोई
।मुनिजि ह्वाआसक्ति

कुस्वादसकलपरिहरे जिह्वारस
तैं होवै काला जैसें मीन मरै तत्काला २१ जे मुनि सकल अरथ नपरि
हरै जाय स्कंत बास कूं करै सह
जै हो यइंद्रीय सबमीनो परिरस
नां नहीं होय न्रधीनो २२ रसनां
सबकूं फेरि जिवावे तबही रस
संजोग ही पावे जो सब इंद्रीय जी
तें कोई परि रसनां कर मैं नहीं हो
ई २३ तोल गसकल हू था करि
जांनी रसनां जीति जीति करि मांनी
तातें मुनि रसनां बसि करे और रस
कल साधन परिहरै २४ यो जे ये
कये कबसि भये ते सब जनम के हा
रे गये परि ज्यो ये क पंच बसि होई
ताके डम जांनैं गा सो ई २५ वकरि
ये क नई गनिका पिंगला तातें मैं
गुन सीष्यो मला सो तुम सों भाषत
हैं राजा जातें सरै तुमारो काजा २६

जनकविदेहपुरीमैंवासा।जो रवि
गलारूपनिवासा।येकवारउद्या
रवनाय्यो।धनीपुरथमनमैंउछाये
२७।बेगीनिकसिनवनकैहाल॥
आगेचलेलोकबाजारा।कोईल
लोआवतोदेष्योयहआवेगोयेक
स्लैषे।२८।जबवहआगेकोंचलि
जावै।तबैपिंगलाओरकोंध्यावै॥
औरैंआयआयचलिजांहीं।सोसों
ऽषमावैजीवमांही।२९।कलहउठे
नीतरिकोंजावे।कि बहुव्याकुलवा
हरिआवै।अरधरातिऐसीहिषिप
यो।लोगबजारचलतथकियो।
३०।तबदैभगनमनोरथभई।चिं
ताउपजनलअनुभई।अपनोंनि
सकारकरिमांन्यो।सबतेंहीनआ
पकोंजांन्यो।३१।तबताकोईवडभा

गभहीउपजेनिरवेद।

कुस्वादसकलपरिहरे॥जिकारस
तेंहोवेकाला॥जैसेंमीनमरेतत्का
ला॥२१॥जेमुनिसकलअरथनपरि
हरे॥जायस्केतबासकूंकरे॥सह
जेहोयइंद्रीयसबषीनां॥परिरस
नांनहींहोयअधीनां॥२२॥रसनां
सबकूंफेरिजिवावे॥तबहीरस
संजोगहींपावे॥जोसबइंद्रीयजी
तेंकोई॥परिरसनांकरमेंनहींहो
ई॥२३॥तोलगसकलवृथाकरिं
जांनी॥रसनांजीतिजीतिकरिमांनी॥
तातेंमुनिरसनांबसिकरै॥औरस
कलसाधनपरिहरै॥२४॥येजेये
कयेकबसिभये॥तेसबजनमकैहा
रेगये॥परिजोयेकपंचबसिहोई॥
ताकेडबजांनेंगासोई॥२५॥बकुरि
येकनईगनिकापिंगला॥तातेंमें
गुनसीष्योभला॥सोतुमसोंनाथत
हो॥राजा॥जातेंसरेतुमारेकाजा॥२६॥

जनकविदेहपुरीमैंवासा।नांमपिं
गलारूपनिवासा।येकबारअंगा
रबनायो।धनीपुरषमनमैंहरायो
२७।बेगीनिकसिभवनकैद्वारा॥
आगेचलैलोकबाजारा।कोईन
लोआवतोदेष्यौयहआवैगोयोंक
ल्लैषै।२८।जबवहआगेकौंचलि
जावै।तबैपिंगलाऔरकौंध्यावै॥
औरैंआयआयचलिजांई।स्योंस्यों
उसपावैजीवमांही।२९।कबहूंउठि
भीतरिकौंजावै।कबहूव्याकुलवा
हरिआवै।अरधरातिऐसीविधिन
यो।लोगबजारचलनथकिगयो।
३०।तबवैभगनमनोरथभई।चिं
ताडुषअनलअनुंभई।अपनौंत्रि
सकारकरिमांन्यो।सबतैंहीनआ
पकौंजांन्यो।३१।तबताकौंउवडभा
गा।जातैंउपज्योदिढवैरागा।जोल
गनहींउपजैनिरबैदा।तोलगनहीं

हरिचरनां जातैं मिटै जनमऋरु
मरनां जाकौं नजेब्रह्मासिवसेग्रा
परिसोतिनहूंकेंदेन देषा ४४ ऐ
सेप्रभूकौंजेनरसेवें तिनहूंरीजि
ऋापकौंदेवें ऋैसोप्रभूमेंनहीं
ऋाराध्यौ कीयोऋनरथऋरु ध
नहींसाध्यौ ४५ ऋबमेंऋापनि
वेदनिकरौं ऋौरसकलतरतेंपरह
रौं ऋपनेपतिहरिजीकेसंगा सद
रमौंज्यौंश्रीऋरधंगा ४६ कहांऋ
रसुरनरप्रीयकरिहैं जेबापुरेऋा
पहींमरिहैं ऋरजेसुषकोईथिर
नांहीं देषतसकलपलकमैंजांई
४७ मेरेंइछ्यासुषीसबऋावें काल
ऋधीनकहांसुषपावें तातैंमेंसब
नहचलजांनी क्रुपाकरीहैसारं
गपांनी ४८ जिनमेरैवेरागतपायो
ऋपनेचरनकंवलचितलायो
यहहरिक्रुपाबिनांनहीहोई जोवे

रागलहै नरकोई।धूपं।जातेंसव न
वबंधन नासें।फिरिदेरमापति आप
प्रकासें।मैंतोमद भागनी ऐसी।त्रि
भवनमांहिनहीकोइजैसी।५०।ता
कोंकेसोहरिको मजनो।केसोका
लजालकोतजनों।पतितेदीनबंधु
गोपाला।पतितउधारनपेमदया
ला।५१।तिनहीआपकृपायेकरी
जिनमेरेउरऐसीधरी।अबलैया
प्रसादहीसीसा।निसदिन भजोंच
रणजगदीसा।५२।जितनेयादेही
निरबांहो।सोकैनहीआरे नसमों
कंं।सहजमांहिजोहरिजीन्पावे ना
करयादेहीवरतावे।५३।या नव
कुंभपरयोनितिष्ठानी।विषयआव
रणयेदिष्टिछिपानी।तापरिअजग
रकालगिरास्यो।योंनरवकतपां
सिसेंपास्यो।५४।ताकोंहरिविनकौ
नछुटावे।आपहीकोंनहीं।छूटनपा

३ वे अरु आपही आपकौं रामै जब
सब बस्तु हरि दै सौंनामै ५५ जब
ही हरिकी सरणि ही आवै तबही
आपही आप कुं न पावै वे पंडित निज
नंद मय देवा कहा करै कौ तिनकी
सेवा ५६ परि सब जगत का लछिद
कावै हरिकी सरणि आप सुष पावै
तातैं औरस कल कुं तजौ प्रेम ना
व हरिचरणन भजौ ५७ या बिधि
आपही आप उधारं अवन ही
भवसागर मैं डारुं यौ पिंगला प
र मगति पाई ५८ लोककी आ
स मिटाई ५९ सीतल ह्वै सज्या मैं ग
ई प्रम अनंद ही प्रापति भई यह
ध्या मैं तातैं लीन्हीं भली जांनि
स्थि अंधेरकीकी ६० जो लग आसन
रे नर कोई तौ लग सुषी क दे नहीं
होई जबही सकल आस छिटका
वे तब ततकाल परम पद पावै

६०॥ दोहा ॥ यह गुरु सब [illegible]
सिष्यनि मैं सकाम ॥ अब [illegible]
कहत हौं सुनियौं चित चि[illegible] ॥
६१ इति श्री नागवन [illegible] ॥ [illegible]
दसम स्कंध नागवन [illegible]
[illegible] [illegible]
तानौं [illegible] ॥६१० ॥
अब [illegible]
तक रिसंग्रह [illegible]
[illegible] जिन [illegible]
वौतन [illegible]
रपंथिक [illegible]
वकत हि [illegible]
लिडुघर [illegible] नव
नयो [illegible] करतेंपाई ॥
जातैं संग्र [illegible] कोन काई वकु दिसी
पवा [illegible] मेर वर जातैं स
तिआई ॥ [illegible] मान [illegible]
जानौं चित [illegible]

मिमजातें॥१५॥ औलोगानतडरतु
वंगा॥बसेंगुहामेरहेत्र्यसंगा॥साब
धांनत्र्युत्तिघोरोबोलै॥गसादिक
त्र्यंतरनहीबोलै॥१६॥ग्रहत्र्यारंभड
सकोमूला॥जेत्र्यारंभैतेनरमूला
सरपपरायेग्रहमेरहै॥याहिबिधि
मुनित्र्यहिसिद्धागहै॥१७॥येकत्र्य
पनिरंजनदेवा॥जाकोकोईलहन
भेवा॥त्र्यापहीतेंमायाबिसतरे
सतरजतमबऊभेदपसारे॥१८॥
बऊरित्र्यापहीसबसंग्रहे॥निजानं
दमयथेकेरहे॥नातेंयेसबमिथ्या
जांनें॥याकोकरतासोसतिमांनें॥
१९॥येसिध्यामकरीतेंलेवें॥सबमें
परेब्रह्मकोसेवें॥जहांतहांयेमन
कोधारे॥निसबासुरकबऊनहिंट
रे॥२०॥रागदोषभेक्योंहीहोई॥होत
रूपताहीकोसोई॥भृंगीकीटऊतें
येलीन्हो॥सोमनहरिचरणनथिर

कीन्हो॥२१॥ये चौबीस गुरुनकी सिक्षा। तासों में नाथी दिढ दिक्षा। अबलत नलेस ही भ्रमसो कहों तिरेस बक अपांन ही रह्यो॥२२॥मेरी देहस नेहिसमुफावे। फिर दे अपांन बैरागल्र पजावे। ज्यों बाला पन गयो बिलाई। सोही अबये जोबन जाई॥२३॥ आवे जुरा मरनता आगे। बकु बिधि दुषदेहसों लागे। स्वांनस्रंगाल नकौये भषि। तासों प्रीति न जोरे दषि॥२४॥पुत्र कलित्र अरथपसु गेह। कुलकुटंम बकु सेवक जेहा। तिनसों मिलिजा देही सेवे। सोही अंतम्हादुष देवे॥२५॥आगे कोंव कुकरम उपावे। अब जम के दरबार पठावे। रसनि मति षिंचे नित रसनां। प्रांण सदा चाहे जल असनां॥ २६॥ नैन रूप अरु स्रवद ही श्रवनां। इंद्रीय चहै नारिको रवनां। तु चा सप

रसनासाबकगंधा चरनगवनकर करिहै धंधा २७ याबिधिसबमिलि कैताकौं बंध्योदेहसूं देषेजाकौं तातैनेहदेहकौतजिये सदानिरं तरहरिकौंभजिये २८ हरिजबमा यागुनबिसतारे तबनानाबिधिदे हसवारे तिनतिनमनसंतुष्टनभ यो बहुरचैमानवतननिरमयो २९ ताकौंदेषिबहुतसुषपायो ता मेंअपनोधामबनायो तबहरिजीबो लेयेबानी ज्यौंपरगटहैबेदबषां नी ३० मोहितहैसोयाकरितहै या करिसबसुषबंधनदहै जबमेरहि तकरैउपाया तबमैंयाकौंकरूंस हाया ३१ तातैंअतियेउत्तमदेहा श्रीभगवानरच्योयेगेहा अतिदुल नकेकजतननपावे जोपायोतोफि रनरहावै ३२ प्रतिदिनमृतिनिरंत रग्रासै येकदिनांतनकालबिनासै

जुररोग न्येसोकनिधांनां।जाभैंप
नकसुषीनहिंप्रांनो॥३३॥तातेंना
हिपायकरिराजा।करिलीजीयेञ्र
पनोंकाजा॥जातेंयह छूटैसंसारा।
जाकेदुषकोवारनपारा॥३४॥निस
दिनदेवनिरंजनभजीये।द्वै नेभी
तबिठेसबतजीये।बिषीयाभांन
पांनसुतदारा।मेस बदेहनिबारं
बारा॥३५॥तातेंत्यागसकलकोकी
जे।हरिकेचरनकंचत्तचितदीजे
याविधितनेंतेंसिच्छापाई।तबमें
ऋोरसकलछिटकाई॥३६॥भूमें
बिचरोंद्वैनहसंगा।यातनकूंको
छोड्योंसंगा।सदारहूंहरिचरननि
वासा।बहुबिधिदेषोंसकलतमा
सा॥३७॥बहुतगुरुनतेंग्यानउपांनां।
जहांतहांलेवेसाधुसुजांनां॥छूटैञ्र
हंकारञ्ररुममता।हिरदेञ्रांनिबि
राजेसमता॥३८॥निरगुनसरगुनभेद

सावधान होय जो नै ॥ बरणाश्रम कु
ल मिथ्या मानै ॥ जे जब कुछ आरंभ न न
करै ॥ सु पञ्चा है निस दिन उद्यम न रै ॥
॥ आगे कौं बंधन भ्रम जावै ॥ जिन
के संग जनम हारे जावे ॥ यो बिचारे
आरंभ न तजै ॥ कै न ह कामचरन
मम न जै ॥४॥ जहां लग है नाना बूधी
सो सब उठ्ठव जानि कुबधी ॥ हूँ तना
वसो भरम करि जानै ॥ सुपन मनोर
थ सम करि मानै ॥५॥ तातैं करम
ओर सब तजो ॥ नि तिनै मतिक कु
यक न जो ॥ तै उक छु सत्य नहीं जां
नैं ॥ करै तो करै नहीं तो नांनै ॥ ई ॥ न
गति मांहि जो अंतर परै ॥ जो जा सैं म
न अंतर जांनै ॥ तो ता समै सहज मैं
वांनै ॥७॥ जम न मांहि न ह चल चित
धरै ॥ नि जम न कौं भावै सो करै ॥ ब्र
ल बिग पगुर सर न हीं जावै ॥ जा तैं मै
सकल न को पावै ॥८॥ जम अरु नैम

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मों देऊ तैं मारा दोऊ प्रकास दोऊ
आधारा जौं येक का वस्तु नत्तप
रजेरे सोऊ जै परकासत करै १५ प
रिसो अनल दोऊ तैं न्यारा स्वयं प्र
कास आतम आधारा बऊ विसोब
ऊ कावनिसंगा पांवै उतपति थिर
अरुभंगा १६ जौं है तन येमाया
कीये ते आतम मां आप करि लीये
तिन बसि जनम मरण दुख पावै
लहै अनंद जव ही छिटकावै १
७ तातें बऊ बिधि करे बिचारा
आतम जानैं सब तैं न्यारा येक अ
जन मांऊ रु अ बिनासी चेतन घ
न पूरण सुष रासी १८ तन उपजे
बिनसैं बरताई परम अनुस व सु
ऊ न ही कांई सकल बिकारन के
संघाता प्रगट दीसे आवत जाता
१ए मोसों यासों के सोसंगा मैं चेतन
ये जड बऊ रंगा यों बिचारे त्यागे त

ममता॥ आतम द्रिष्टि सकल मैं
सा॥२०॥ या विधि हिरदै होय थिर
नां मिलै ब्रह्म छूटै भर्म नांनां॥ अ
न्य रीत अस थिर गुर देवा॥ हृ जा हि
य करै नित्य सेवा॥२१॥ गुर के बचन
श्रवन मंथा नां॥ या विधि उपजै ग्या
न ग्यांनां॥ उपजै काठ नन के गुन दहै
करम बीज कोई नहीं रहै॥२२॥ तन
जौं पावक तेज समावै॥ ईंधन जितां
न फल करहा वै॥ सो ग्यान ताल सम
य होई॥ ईंधन करम जरा करि सोई
॥२३॥ अरु जे मुढ यह विधि जानै॥ ते न
बहु बिधि करम नकोलो नै॥ ते कर
मन के फल भोगावैं॥ जलम मरन को
अंत न पावै॥२४॥ जहां जहां जाय तिहि
तहां काला॥ निस दिन सदा रहै बेहा
ला॥ ये जग दीसै ज्यौं को त्यौं हीं॥ परिये को
पल रहन यो हीं॥२५॥ औरै और होयें
साकारा॥ तिन संग...

।कबहूंपांनहिरदैनहींआवैजन
म२मरिमरिडुषपावै२६करमञ्रू
तोकरमनिआचरैसुषञ्रूजोसु
षभोगनकरैयेच्यारूंदीसैपरत
त्रातातैंसबतजीयेयहमंत्रा२७
जेपंडितस्रुतिसमृतिजांनैंतत्वल
हैंबिनकरमनिठांनैंतेमूरषदेहा
भिमांनीआपहीआपकहावै
पांनी२८हरिजनसंगनकबहू
करैतत्वनसुनैंकरमबिसतरैति
नतैंभलेजोकछूनहींजांनैंतत्व
बचनसुनिहरिहिरदैआंनैं२९ज
दिपअंतसुषनिकेंजांनैंअरुषि
ननेंगुरदेहनिमांनैंपरिसोतत्वन
समझैतहजातैंलहैनतकिकोनै
न३०आयूछीनयेंकरैअनागे
रांनहींनबिषेसंगजागेकरमसंग
येंजनमैंमरैफिरिफिरिकालपास
नवपरै३१कालमृतितांकैंनितिः

ग्रसे।ताकौंकहोकहासुषदेखै जैसै
कोईमारनकौंलीजे।सूलीनिकटि
आनेकीजे।।२५।।अरुताकौंलेभो
गभुगावै।सोसुकहोकहासुखपावै
अरुत्यौंहीनसुरपुरलोका।मरणप
रनिंदानयसोका२६जिनदेहैसि
अतनबहुकरै।सिद्धिनहोयविघन
अतिपरै।ज्यौंषेतीमेंविघनआवैगा
त्यौंसुरगादिलहैकोईयेका।।ऋषि
रुजेलहोतेकथिरनांही।देषतवि
नसिजायपलमांही।यांलांजपक
रैबहुकोई।।अरुजोअंतरायनहीं
होई२७थांनवसोसुरगलोककौंजावै
केकरिदेवदेवसुषपावै।।अपनेपु
न्यानकोउपजायो।तिनमजानविमा
नहीपायो।।२८।।बहुगंडलगांनकं
करै।बहुसुंदरीनारिमनहरै।।अं
त्याहैपलहांचलिजावै।सहितविमां
नविलंबनहूंपावै।२९।अंमृतपांन

१ होंनितिकरै बस्त्रा भरणादि इहबहु
धरै यौनितिमगानबहुतसुषपावे
मरिबेकौकछुचिंतनआवैं जेतेपु
न्यंहोंकोहोई तेतोरहै सुरगमें
सोही पुंन्यषीनहोवेपुनिजबही
कालनतहांतेंटारैतबही ३९ सो
सुषकहोंलज्योकियेंजावै तासुष
कौकछुकहतनआवै रह्योचहै
परिक्यौंकरिरहै कालअधीनम
हाडुषलहै ४० कोईसुषपावेक
छुकेतो क्षीनिलयेंहोवेदुषतेतो
सोतजिसुरगभूमिमैंआवै पीछैजो
निअनंतनपावे ४१ येनाषीबिधि
कीगतितोसों अबनिषेदकोसुनी
योंमोसों जोकुसंगमैंप्रानीपरैतोब
हुभांतिअधरमनिकरै ४२ बंछै
कांमइंद्रीयआधीनअरुत्रीलंपट
लोभीदीनबहुजीवननकोहंस्याक
रे प्रेतभूतगण तुसरै ४३ मेंही

स्यो सबमोही॥ तिनके डेलव
मैजांही॥ बकुरि आय धावर लन
जनम२ बकु संकट दहैं॥४४॥ ता
जेकरे जेसबजनमन
परे॥ करमकरैं तिनतें न नरे॥
धरे धरि बकु दुषसैं मरे॥४५॥ जाते
ह तिमैं सुष नांही॥ जा दे कुं सलोक
जांही॥ लोकपाल सब लोक स
येते रहें ब्रह्म दिन जेता॥४६॥ सो
ब्रह्मा के अंत न रहै॥ लीन काल का
गहै॥ स्वर्ग निरहै मैं है मांही
न बहै नहचल ना लैत हैं॥४७
चंड्येकरस चले॥ जल दा
सिंधु नट ले॥ मृत्यु निरंतर जन्मकों
सेम्मेरकाल रूप तें ज्ञ॥ सो४८॥ ता
न सुष पर बरतो॥ सुष चाहे सो
गहै निरबरतो॥ स्तरु ये इंडी यकरम
कपावै॥ सो ज्ञातम ईंडां बसिहोई॥ ता
नें दुषसुष पावे सोई॥ परि ज्ञातम

२ करताजोंसों भोगरहिततातहीतैंमा
नौं ५० करमरुभोगादिकहैंजे
ते ईंद्रीयरूरूगुनकृतिसबतेतै
जोलगयहईद्रीयगुनबंधा तोल
गमिटैनतनसनबंधा ५१ तनसन
बंधमिटैनहैंजोलौं नांनांभावब
कृतबिधितोलौं नांनांभावरहैज
है बलग पराधीनआतम तबलग
५२ पराधीनतबलगयेरहै तोल
गकालनिरंतरगहै तातैंजेपरहू
तिरतहोवै जुगजुगजनमरतेरोवै
५३ प्रथमकुलोंमेंयेकनिरंजन
नाहीतेंउपज्योयहअंजन काल
आत्मालोकरुबेदा धरमसुनाव
बकृतबिधिभेदा ५४ येसबमाया
सतिनकोई तातैंबुधिअनुरकैन
होई येकनिरंजनआतमजानें त
बसबसंकटनयकेभानें ५५।
लोकरुवेदवासनांतजे ईंद्रीयदे

हबिषैनहीं॥जोमनपढंचैसोलिष
लेषै॥मनअतीतसोजहांतहांदेषै॥
४८॥ब्रह्मरूआतमयेकबिचारै॥
याबिधिसकलउपाधिहीजारै॥तब
हीयहब्रह्मकोंपावै॥छूटिहैतबहो
इनहींआवै॥भूआयेआलसजलदेह
बिबेका॥याकोंजोनियेककोयेका॥किं
सबचनकहेजबरूआतमबनदाय
करीजबब्रह्म॥४९॥अथोजबाचाकेज
नूजोयेसारोनरमा ईनीयहेतातिसै
गुनकरमां आरूआतमसनीहवर
बंधा ताकौंजयोकोंनबिधिबंधा ५०
अरुजोबस्योंप्रांतकोंलहै छोडिउ
पाधिदेहमेंरहै सोकसोंकोंनिपति
नहोई॥अरुकोंकारिजांनीयेसोई॥
५१॥कैसेबिचरैकैसेरहै॥कैसेजीवै
कैसेंकहै॥कैसेंपहिरैकैसेंसोवै॥कैसें
सुनैंकोनबिधिजोवै॥५२॥अरुआतमां
येकहैनांहीं

करताजांनौं॥भोगरहितताहीतैंम
नौं॥धु०॥करमरु भोगादिकहैंजे
ते॥ईंद्रीयअरुगुनकृतिसबतेते॥
जौलगयहईंद्रीयगुनबंधा॥तौल
गमिटैनतनमनबंधा॥धु१॥तनमन
बंधमिटैनहींजौलौं॥नांनांभावब
कृतविधितौलौं॥नांनांभावरहैज
बलग॥पराधीनआतमतबलग
धु२॥पराधीनतबलगयेरहै॥तौल
गकालनिरंतरगहै॥तातैंजेपरह
तिरतहोवें॥जुगजुगजनमरतेरोवें
धु३॥प्रथमकृतमेंयेकनिरंजन॥
ताहीतैंउपज्योयहअंजन॥कालक
आत्मालोकरुबेदा॥धरमअुभाव
वकृतबिधिभेदा॥धु४॥येसबमाया
सतिनकोई॥तातैंबुधिअनुरकन
होईयेकनिरंजनआतमजांनैं॥त
बसबसंकटभयकेभांनैं॥धु५॥
लोकरुबेदबासनांतजे॥ईंद्रीयदे

हविमैनहीं॥ जोमनपकैचैसोलिप
लैमैं॥ मनअतीतसोजहांतहांदेषै॥
५९॥ ब्रह्मरुआतमयेकविचारै॥
याविधिसकलउपाधिहीजारै॥ तब
हीयहब्रह्मकौंपावै॥ छूटिदेहजहां
पिनहींआवै॥ ६०॥ येआतमअरुदेह
बिबेक॥ याकौंजांनियेककोयेक॥ दि
[illegible]
करीजबप्रश्न॥ ६१॥ उधोउवाच॥ दे
नृजोयेसारोनरमां ईंद्रीयदेहानिके
गुनकरमां अरुआतमाअनीहअरु
बंधा ताकौंजयो कौंनविधिबंधा ६२
अरुजोबस्यौंप्रांनकौंनहै छोडिउ
पाधिदेहमैंरहै सोबस्यौंक्यौंलिपति
नहोई॥ अरुक्यौंकरिजांनीयेसोई॥
६३॥ कैसेबिचरैकैसेंरहै॥ कैसेंजीवैं
कैसेंकहै॥ कैसें
सुनैंकौंनबिधिजोवै॥ ६४॥
येकहैनांहींयेकमु।

करताजानो॥ भोगरहिततााहीतेम
नो॥ पू० ॥ करमरू भोगादिकहैजे
ते॥ ईद्रीयऋरुगुनकृतिसबतेन
जोलगयहईद्रीयगुनबंधा॥ तोल
गमिटैनतनसनबंधा॥ पू१॥ तनसन
बंधमिटैनहीजोलौं॥ नांनांभावब
कृतबिधितौलौं॥ नांनांभावरहैज
बलग॥ पराधीनऋातमतबलग
पू२॥ पराधीनतबलगयेरहै॥ तोल
गकालनिरंतरगहै॥ तातैजेपरह
तिरतहोवै॥ जुगजुगजनमरतेरोवै
पू३॥ प्रथमकृतोमैंयेकनिरंजन॥
ताहीतैंउपज्योयहऋंजन॥ काल
ऋात्मालोकरुबेदा॥ धरमसुभाव
बकृतबिधिभेदा॥ पू४॥ येसबमाय
सतिनकोइ॥ तातैंबुधिऋनुरेकन
होईयेकनिरंजनऋातमजानै॥ त
बसबसंकटनयकेभांनै॥ पू५॥
बसबसंकटनयकेभांनै॥ पू५॥
लोकरुबेदबासनातजै॥ ईद्रीयदे

।जैसेमनपङ्केचेस्केन्व

त्रिच्यारे

वव

॥७८॥७८.८.

। ईऽप्यदेहविये

अस्यातमान्नीजहुत्र

ताकौंजयेकौंनविधिकैसा प्र

कौंहेउ

साधिदेहमेंरहे सोवस्यौकौंनिपनि

नहोइ स्थूलकौंकरिजानियेमाऽ ७

कैसेबिचेरकैसेरहेकैसेजावि

कैसेकहेकेसेंपहिरिकेसमावकैसे

सुनेकौंनविधिजोवेः

येकहेनांहांयेकमुक्ति

र

येकैं बंधेकौंयेकै मुक्त॥ येतौ बक्र
येक कैंचोंउक्त॥ ६२ गुनअनादिअ
तमांअनादी॥ नातेयेतोबंधनआदी
नितिमुकतिक्युंकहीयेदेवा॥
मोहिबतावोभेवा॥ ६३॥ येतो ये उ
धवनिजभगतिके॥ सुनिकरिनिरम
लबेन॥ ताकोंप्रस्तुउतरकह्यो॥ हरि
जीकरुनांऐन॥ ६४॥ इतिश्रीभागवते
महापुरांणे येकादसस्कंदे श्रीभगवं
नउधवसंबादे जोगनांम दसमोअ
ध्याय॥ १०॥ ७२०॥ श्रीभगवांनउवा
च॥ चोपई॥ सुनिउधवअबपरगी
नां॥ जातेंभेदमिटैतुबनांनां॥ बंधरु
क्तितोहिसमझांउं॥ तेरोसबभ्रमपा
नमिटांउं॥ १॥ बंधरुमुक्तिजेकहीये
कोई॥ सोतोसकलगुननतेंहोई॥ ते
गुनमायाकेजांनों॥ इनकेपरेआत
मांनों॥ २॥ सोकरुमोहजनमरुसुख॥ भे
अरुमरनांदिकबकदुख॥ येसारेमां

आतमलै

ज्यौंसुपनेड्डमसुम्न

का तिनमैंआतमकौंनहीयेका ॥

सबबुधिरुमनकौंहोवै ॥ ईंड्री देवे

प्रगटतेसोवै ॥ धामनबुधा दि

हीरहे ॥ जाकौंप्रगटसषोपतिकहै ॥

तबआतमांनिरंतरहोई ॥ परिनाकौं

सुषदुषनहिंकोई ॥ ४ ॥ ज्यौंसुषपातहैं

आतमरहै ॥ तो विवहारपीछलै ॥

परिताकौंकोइनहिविकारा ॥ यसं

माया केविवहारा ॥ ६ ॥ परिआतमा

आपमैंमांनैं ॥ तामैंसुषदुषवडा ॥

जांनें ॥ परिआतमांयेकरसनित्या ॥

भ्रमोमियेसकलैंअनित्या ॥ यहद

जांनौंमेकआविद्या ॥ आरुदूजीजो

हीयेविद्या ॥ येदोकहैमेरीसकती ॥ ८ ॥

नमैंसबहै ॥ कोआसती ॥ पाविधन

करयो चाहूंनैंजाकौंप्रेरितविद्या

पवंकंताकौं

कं ताको बिश्वास कौ परतीत
जे दोऊ मुक्ति अरु बंधा तेभ्रम स
तिनके सबंधा ज्ञातमहैसोमै
रूपा सबतैंन्यारो परमअनूपा
१० सोसिसके प्रतिबिंबअनेका
नरितेबडतनहीसबयेका अरु
जाजाकोघटबिनसाई सोहीसोम
सिमांहिसमाई ११ सोसबआतम
मेरोअंसा परिघटसंगलहैउंसा
बिश्वासकिंजाहिह्वोजबही घट
कोनासकरैसोतबही १२ सोइसो
तबमोकोलहै औरसकलतोही
मैरहै अरुप्रतिबिंबघटनकूंमांही
सदाअलिपलिपतिकऊंनांही
१३ परिघटसंगलिपतिसोहोवै
अरुसोलिपतिऔरकूजोवै सो
आतमसोसकलतैंन्यारा सदाअलि
पतिनलियैत्रिकाला १४ प्रदिया
नैसैआपबंधीतो ताकेसंगल

नोंनो।त्र्नमैंबंधमुक्ति कहो
सबसेंदेहहिरहौ।१४।आदि कहे
मैंहूंकोबासा।परमातम श्रनर
पासा।ज्यौंहैपंषीरहेतरुमांहीं
नैं।तिन्निपतिकेंङ्गनाहिं।देत
चेतनियेकसमानों।सरलारुलोक
हीसथांनों।आपङतैंतिनलासा
कायो।तिनमैंयेकतरुहो।चितला
यो।१६।देहबंरंषेकेसुषफलपावै
तातैंडषआपहीआवै।तबतामका
जकरमबङकरैं।तिनमेंजुगजुग
जनमेंरुमरैं।१८।देहमरैमरतैंक
रिजांनैं।देहजनमतैंजनमहीमां
नैं।ग्रैसेंसदाबङतडषपावैंहैमैं
सोआतमाकहावै।१९।प्रमातमा
देहतरुमांही।सुषफलकबहूंषा
वैनांहीं।तातैंकछूकरमनहीगहै
निजानंदमयेंन्हेचलनरहै।२०।यौं
परमातमज्ञानमजांनैं।देहश्रनी

२ तदोऊतैमांनै सुषफलनआसआर
ननितजे सुक्ति होय परमातमत
जे २१ ज्यौंतनमांहि मुक्ति परमात
म विश्रापायबसैंत्यौंज्ञानम नन
मैंहैपरितनमैंनांही आपहीजांनि
मयोथिरमांही २२ सुपनदेषि
ज्यौंजागैंकोई सोसोसुपनबिचारै
सोही परिसोसुपनदेहअरुसुपनां
मिथ्याजांनैंभरमतैंतपनां २३ अ
रुज्योंसहितअबिद्याहोई सोतन
मैंनहीपरिहैंसोही ज्योंसोवतसुप
नांतनपावे ताकौंआपजांनिमं
नलावे २४ तनमैंबंधमुक्तिजेजी
वा बंधजीवमुक्तासोसीवा बहुरौं
कहूं मुक्तिकेलछण जिनकूंजां
णेहोयबिचछण २५ हैजैसेमुणैं
कहैंकछूकरै सोकछूकदेनहि
रहैधरै सकलनअरहपूइंडीयकृति
जांनैं आपहीयेकअकरतामांनैं

रहीग्नरव करमञ्ज धीनसर
करमकरैईंडीयमनसीरा
वासकायोनहींजांनैमूरख
सहीकरतामांनै।।२७।।बकुरि
तिजैसीरहै।अहंकारयान
दहै।आसनअसनअटनअर
इसपरसअघ्रांनकवेनां।।२८।।
इंडीयनकोंबरतावै।आपनक्षे
कुनहीलिलगावै।रहैमांहिपरि
पतिनहोईज्योंअर्कासपवनहो
तोही।।२९।।बिद्यानांमसहृथीपा
दिदवैरागसांनिधस्वाई।तासंक
टैसंसयसारे।जाग्यसकलमङ
दनिवारे।।३०।।इंडीयप्रांनबुधि
नमांही।कवहु कलू वासनाना
हीं सोजदिपतनक्रंमैइसै।।पारसा
प्रकिनतनहींप्रसैं।।३१।।एकउसत
नपीडाकरै।येकवजतप्रजा।बिस
तरै।परिवुधिरोयतोयनहीं।अं

करनदेहकृतिमिथ्याजांनै॥२२॥बि
धिन्मषेद्जोकोईकरै॥किंवाकहै
ग्रंथविस्तरै॥मुनिकछूभलोबुरो
नहींदैषै॥गुनअरुदोषरहितस
मलेषै॥२३॥विधिनषेद॥नाहीं
कछुकरै॥नांकछूकहैनहिरदै
धरै॥निसदिनरहैब्रह्मरसमंत॥
इच्छामैंज्योंजडउनमंत॥२४॥जै
सेचहनमुक्तिकेमांनैं॥अरुमुचि
कोसाधनजांनै॥मुक्तिभयोजोचा
हैकोई॥येसबसाधनसाधैसोई॥२५
जिनसबसबद्ब्रह्महैजांन्यो॥प
रिनिजतत्वनहींपहिचांन्यो॥इनस
धननिमांहिरतनांहीं॥जाकेश्रम
सबमिथ्याजांई॥२६॥शबदब्रह्मब्र
ह्मकेकाजा॥हरिजीअरुहरिमग
तिनसाजा॥तातेंब्रह्मबिनांश्रमजै
सें॥बंझ्यागायसेइयेजैसें॥२७॥बंझ्या
गायदूधबिनहोई॥पराधीनतनुरा

मैकोईअसतीनारिपुत्रअनाईं
धरमबिक्रैमौधनअधिकाईसंप
त्रौंइनमैंदिनदिनबढ़ौंकाज
नरूसुखपावेनहीकोईनोहि
बिनोत्यौंसबबिधिवांनी
बंधनहीकोजांनी
तपतिसंहारासबप्रतिपाल
बिबधिप्रकाराकिंवा
रमबकुतेरेजावांनीमैंनां
रेधरैमेरेत्वांनोबिधिसबंधा
वांनीमैंनांहीबंधा बंधा
हिबिचारेन्हफलजांनि
धरैधरयाविधिजांनि
कारांबहुतभांतिकरि
चारजहांनहांतैंमनदीनि
परणयेकबुझमैंधरैधरा
जिहतेनांनांअरथमत
न्हींसंमरथसोममहेत
बकरै

करनदेहकृतिमिथ्याजांनै॥२२॥बि
धिन्मषेदजोकोईकरै॥किंवाकहै
ग्रंथबिस्तरै॥मुनिकछुनलोबुरो
नहीदेषै॥गुनऔगदोषरहितस
मलेषै॥२३॥बिधिनषेद॥नाही
कछुकरै॥नांकछूकहैनहिरदै
धरै॥निसदिनरहैब्रह्मरसमंत॥
ऽस्थामैंज्यौंजडउनमंत॥२४॥
सेवहनमुक्तिकेमांनै॥औरमुमु
कोसाधनजांनै॥मुक्तिभयोजोचा
हैकोई॥येसबसाधनसाधैसोई॥२
जिनसबसबदब्रह्महैजांन्यौं॥प
रिनिजतत्वनहीपहिचांन्यौ॥ऽन
धननिमांहिरतनांही॥जाकेश्रम
सबमिथ्याजांई॥२६॥शबदब्रह्म
जाकेकाजा॥हरिजीऔरुहरिनग
तिनसाजा॥तातेंब्रह्मबिनांश्रमजै
सें॥बंझ्यागायसेईयेजैसें॥२७॥बंझ्या
गायदूधबिनहोई॥पराधीनतनुरा

डीन्ह्रसतीनारिपुत्रअन्धारौ
मबिकृतैाधनअधिकारी॥घ
इनमैदिनदिनदुषहोई॥क
कृसुषपावैनहीकोई॥मोहि
नोसौसबविधिबांनी॥केवल
धनहीकोजोनी॥उणमौतेजल
पतिसंहारा॥सबप्रतिपालन
केबधिप्रकारा॥किंबाजनमब
मवकृतेरेजा॥बांनीमैंनांहीमे
॥धन॥मेरेनानोविधिसबंधा॥जो
बांनीमैंनांहीबंधा॥बंधाबांनील
चोरेन्हफलजांनिनपंडित
॥धरया॥बिधिजांनिबकृतप्र
॥कृतनातिकरिबहोतबि
जहातहांतैमनहीनिवारै॥
एयेकब्रह्ममैधारै॥धरजोल
दृजेमांना॥अरथ॥मनधा
नहीसंमरथ॥सोममहेतकरमस
बकरै॥प्रेमभगनफलजसपरिहरै

७७ ४३॥ औरैकरमअकर्मनिःकरमां
बंधनजांनितजेसबनमों॥ जाही
तैंतपजेममनक्रि॥ ताहीमैंराषै
अतुंरगति॥ ४४॥ सरधासहितसु
नैगुनमेरे॥ जिनतैंकरमनआवै
नेरैगावैसुमरैअसतुतिकरै॥ प्रे
मसहितनिसदिनविसतरै॥ ४५॥
जेकछुधरमकांमअरुअरथ॥ करै
सकलसोमेरेअरथ॥ ममआधीन
निरंतररहै॥ मनक्रमबचनआं
ननहीगहै॥ ४६॥ याबिधिहोवैनहि
चलभक्ती॥ मनबुधिमोसौंकरै
आसक्ती॥ तबमेरेनिजरूपहीजां
नै॥ तातैंनांनानेरहीमांनै॥ ४७॥
तबताहीपदसमावै॥ जातैंजनम
फेरिनहीपावै॥ परियहसतसंग
तितैंहोई॥ सतसंगतिबिनुलहन
कोई॥ ४८॥ भगतनबिनांभगति
नहीपावै॥ भगतिबिनांनहींमोमैं

श्रावै।तातैंसतसंगतिकौंकरै।इ
ओजतनसकलपरिहरै।४ए।तैसा।
ऐसैसुनिहरिकेबचन.मनमैंवा
ढीप्यास.तवभक्तनभ्रमनक्तिके
लषिनपूछेदास.५०।[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वोनेहा[illegible]
गते[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
षिमं[illegible]
रहित[illegible]
फि[illegible]
थिर[illegible]
दाचार[illegible]
है[illegible]

विचारही करै॥ धरम अपनैं हित
धरै॥ सावधांन अरु रहित बिकारा॥
धीरजवंत दयाअधिकारा॥ ५५ सोक
मोह अरु छुधा पिपासा॥ जुरा मृत्यु जी
तै षट पासा॥ आप मांन अपमांनन
जांनै॥ औरनकौं बहुमांन हीठां
नैं॥ ५६॥ जो कोई सरनागति आवै॥
ताकैं ज्यों त्यौं ग्यांन उपावै॥ सबकौ
मित्र अु भाउ न जांनै॥ ५८ बिसवास
सकल करम भांनै॥ ५७ मम आधी
नदीन होय रहै॥ साधन केवल क
देन गहै॥ मोही कौ करता करि जांनै
क बहु भूलिन आपा आंनां॥ ५८
जद्दपि बेदरूप मैं गाये॥ बरण अम
कुल धरम बताये॥ तोहू बिधि निषे
द सब तजै॥ ह्टनिष्ठ मम चरनन
भजै॥ ५९ सो भगति निज भक्त क
हावै॥ ताकेसंग भक्ति कौ पावै॥ वे
सरु कालरहित सब बोतम॥ चिदा

दमयप्रभूप्रमानम।ई०।ऐसोजांनि
जांनिमोहिनजैाओरसकलसंक
लिपैंतनजै।सोमेरोकहीयेनिजमन
तासैंनितसुजैअनुरक्त।ई१।अस
जेऐसोमोहिनजांनैं।परिअसत्तेनई
तिकौंवांतैं।लैकरिमोहिसकलपरे
हरैं।तिजनमोहिआपुनसिकरै ई२
ये नगतनकेलच्छणकहीये।मेरी
कृपाकृतैंतेलहीये।तिनकूंपाय
नक्तिकौंपावै।भक्तिपायममचर
ननआवै।ई३।तातैंमोहि चहजो।को
ईममसेतंनकूंसेवै।सोईअवमेंक
हूंभक्तिकेअंग।जातैंपावैमेरोसं
गा।ई४।ममघ्रतैम्भैंमोकौंभजै।मन
कर्मवचनफलादिकनजै।हितसूं
दृसमरसपैंचरिया।असतुतिअरु
दंडवतसपरिया।ई५।मेरीकथाकि
मैअतिसरधा।मोबिनकछूनकरै
पलअरधा।मेरेजनमकरमगुनगा

ए वे सदा निरंतर मोकों ध्यावें तनु त्य
रुतनु के पीछें जे ते मोकूं सकल
मरपे ते ते जन्माष्टमी आदि जे प्र
बक्त तउछाह करें ते अवा ई ए नि
रतिगीत अरु बक्त विधि साजो
कीरतन बक्त विधि चरचा जो गर
गांदिक बक्त विधि अरचा ई ६
जैसें बक्त भांति उछाहा सब
रवरिस बबिधि निरबाहा मधुर
दिक हरिधांम न जावे बक्त नां
करि प्रेम बढावे ई ए और न कें
रचाही सिखावे गेरवेर श्रुति मांप
धरावे बक्त विधि करें बाग फूल
ई क्रीडा सथांन सहित चतुराई
पुरमंड बक्त भांति करावे ज्यों ह
अरु हरि न कन भावे आप मांहि
जो सकति न होइ तो कृत दिमवं
सोंही ए१ बक्त विधि महिमा कहैं क
हावें और न सों मिलिकें करवावें

मेंरादिकबड़भोगनिबुहारै।बड़
बिभुसीचेभुलिनिवारै॥७२॥चित्र
बिचित्रचोकाबिसतरैहोंकरिदा
सन्यापहीकरै।मोनरहितकछुडिं
भनऋांनेंजोकछुकरैसोनहींब
ग्गांनें॥७३॥मोकौंकरैऋारतीजासैं
ऋौरकछूनहींदेषैतासों।ममपरस्प
रप्रीतिसैंलेवैं।प्रीतिहीनजीवनन
हींदेवै॥७४॥यौंहीज्यौंज्यौंउपजैप्रेम
त्यौंत्यौंअधिकबढ़ावैनेम।ममभक्त
नकेरहैअधीनं।तनमनधनसौंनि
तलौलीनं॥७५॥ऋरुमैंकादसठौर
निमडा।ममपूजाकरिहैरैऋभडा
सूरजिअगनिबिप्रऋरुगाई।भक्त
नैषऋाकासरुबाई।ऋौजलऋरु
धरणीऋापमैंत्यौंही।सबनिमोहिमम
पूजायौंही।बिधात्रयीसूरँकीपूजा ज
मोकैंछोडिनजानैदूजा॥७६॥बरषा
राजसकरिउपजावै।सांतिकसीतस

बरतावै ताम सग्रीव मनस्य नबि
ासै सकल जगत कौं आपुत्र कासै
८ ताते मेरी परम बिभूति हे सैं
जांनि करै अस तूति पावक मांहि
होम करिजजै बिप्रन्हि भति षि मा
वसों नजै ७७ ति णि जलादि गाय
नकी पूजा भक्त मेय मै औरन हू
जा भक्त भेष निज बंधव जांनैं अ
ति प्रसन्न होय पूजा ता नैं ८० ज्यों
अपने बंधू संबंधी तिनसौं प्रीति स
वनहै संधी तिन कौं बक्त मान्हि
रि सवै तन मन धन नैह चल करि
वै ८१ ज्यों ही भगत आपनै भाई
जांनि करै अधिकाई तन मन धन
सौं प्रीति बढावै जिनतें मेरे भेद
पावै ८२ हिरदै अकास ध्यांनसों
सेवै श्रव अधार पवन चित दे वै
जल कं जल अरु फूल फुलादी
भूधर णी पूजें मंत्रादी ८३ भोगन सौं

हीभजें।मोबिचित्रं नरदेहें
।सबभूतनमेंमोकोंजानें।स्व
सनयहपूजावानें॥८४॥इनसब
निपूजाकरे।मेरोरूपहिदेखें
।रूपचतुर्भुजआयुधधारी।स्यं
मरीरपीतंबरधारी॥८५॥सीस
कटसुभकुंडलकरणां।कौस्तुभ
बहुबिधिआभरणां।ऐसोरूप
ननिमेंध्यावे।सावधांनव्हैप्रीति
।८६।यानिधिवायकुंपसरव
।जपतपदांनदयाबरतयाग।मेरे
करेसोकरे।मोबिनऔरहिदेहे
नहीधरे॥८७॥इनसाधननिकरेनर
जोई।प्रेमभगतिममपावेसोई।येसा
धनकरतेंबहुभांती।साधुमिलाप
होयदिनुराती॥८८॥तिनतेंऐसीजुग
तिहीपावे।जातेंग्यांनभक्तिउरआवे
तातेंग्यांनभक्तिकोकारण।येकभग
तभवसागरतारण।८९।नो

नमोंचितलावे जिनतेंमेरीआनिहीं
पावे तिनकेबिणजनभक्तिकोनित
कबहुकऔरनआवेचित ५० मेंउ
नकोवेमेरहेसोई ऐसानेहनजांणें
कोई जोकछुकहेकरेंमेंसोई ज
हिपमेरेमननहीहोई ५१ मोहिमि
लणकोयहउपाया बहुबिधिमो
जनऔरनपाया साधसंतमिलिन
क्तिहीकरही सोहीयेकजगतजल
तिरही ५२ भक्तनबिनांभक्तिनहीं
पावे भक्तिबिनांनहींमोमेंआवे मो
मेंआयेबिनांजहांजाई नहांतहांका
लनिरंतरखाई ५३ येअतिगोपिम
तोहेमेरो अलमेरेअधीनचिततेरो
तातेंयहमेंतोसोंकह्यो आगेकह
बेनांहीरह्यो ५४ ... बहुरिगो
पिअपनोंमतो कहंतोहिसमका
जातेंछूटेजगतभयमोमेंरहेसमा
ये ५५ ...

येकादसस्कंदेश्रीभगवतउ
सं वादेयेकादसमोऽध्या
॥ ११॥ १५॥ श्रीभगवांन उवा
॥ चोपई॥ उद्धवमतोगोपिसुनि
पावैमोहिमिटैनवतेरोत्राप
लणकोपंथदिषांऊंत्रोरैस
कुपंथपियांऊं॥१ जोगकहीं
प्रकार॥सोरिवद्धकतिन्ह
बिचार॥बहुविधिव्रत
धरमां॥सकलत्यागहोवैतिह
मां॥राबेदादिकविद्यावहुप्राव
होंलगहेतपत्रतिन्ह॥ हें
सरबापीकुंमाकंलातांनसमय
नुरूपा॥२॥येकादसीत्रादिव्रतजे
गुप्ततमंत्रमेरेहेकेते
जाऊंचरणांतीरथत्रटनानि
मजमकरणां॥४॥ औरोंसमदस
रिकजेते॥सा ६ जसकलमुक्तिकेते
इनसबहींनतेंमोहिनपावैंसा

सोंचित्तलावे॥ जिनतें मेरीभा
वे॥ तिनकेनि॥ ए॥ जनभक्तिकोनित
कबहुंश्रौरनश्रवे चित॥ ए॥ मे
नकोवेमेरहेसोइ॥ श्रेसानेदनजांणे
कोइ॥ जोकछुकहेकरेंमेसोइ॥ ज
दिपमेरेमननहीहोइ॥ ए॥ मोहिमि
लणकोयहउपाया॥ बहुविधिबो
जनश्रौरनपाया॥ साधसंतमिलिभ
क्तिहीकरही॥ सोहीयेकजगतजल
तिरही॥ ए॥ भक्तनबिनांभक्तिनही
पावे॥ भक्तिबिनांनहीमोमेश्रावे॥ मो
मेंश्रायेबिनांजहांजाइ॥ तहांतहांका
लनिरंतरषाइ॥ ए॥ येश्रुतिगोपिम
तोहेमेरो॥ श्ररुमेरेश्रधीनचित्ततेरो
तातेयहमेतोसोंकह्यो॥ श्रागेकह
बेनांहीरह्यो॥ ए॥ दोहा॥ बहुरिगो
पिश्रपनोंमतो॥ कह्यौतोहिसमझाय
जालेंछूटेजगतभय॥ मोमेंरहेसमा
य॥ ए॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा

तोयेकादसस्कंदेश्रीभगवतउ
द्धवसंवादेयेकादसमोऽध्याः
य॥१४॥६१५॥श्रीभगवांनउवा
च॥चौपई॥उद्धवसतोगेपिसुनि
मेरो।पावेंमोहिमिटे [illegible]
मिलसाकोपेंछदिपांकें [illegible]
कलकुपेंछापिकें [illegible]
ऐसप्रकारे [illegible]
सुरयविचन [illegible]
मधरमों [illegible]
स्मो रकें [illegible]
जहां [illegible]
[illegible]

नपलमांहिमिलावे ५ गुनतेंमनको
गनछूटै ममचरननमेंचितन्हे
वहोंटे तातेंमोहिनपावेंगुनतेंपा
वेंबचनसाधकेसुनतें ६ साधूनके
सेंबचनसुनावे सत्रुमित्रसुखदुख
जनावे सारअसारकालनहिकाला
साधुहिपावेंसोततकाला ७ सब
तेंमनकोसंगमिटावें मेरेचरण
कंवलनिपटावें ऐसीबिधिनव
सागरतारे मेंरजनततकालउबा
रें ८ जेतेतिरतिरेंगेतेते अरुबड
तिरतहेंकेतें तेसबसाधूसंगतें
जांनों दूजोऔरउपायनमांनों ९
कामृगजातुधांनअसुरादिक चा
रणसिद्धनागगुह्यादिक अपसर
बिद्याधरगंध्रबखा जिनजिनपाय
तेतेसरखा १० वैसमुद्रअंतजिअ
नारी बहुराजसतांमसअधिकारे
जगजगजेसतसंगतिआवें तिनकें

तिनमेरेपद्पाये ११ [illegible]
यवांकांनां [illegible]
गजांनां [illegible]
गजश्र [illegible]
तुलाध [illegible]
मनकी [illegible]
नीबि [illegible]
[illegible]

मनकौंऐसीविधियेकनिकौं
येकनिसाधुरूपव्हैधारौं॥१७॥सा
मनकेमलनहरूं॥सोमनअपने
ननधरौं॥ऐसीविधितिनकौंउ
जहांत्यारौंतहांमैंहीत्यारौं॥१८॥
संगसोमेरोसंग॥साधूसकं
मेरोअंग॥तातेंदोऊसाधूसं
केदोऊमेरेतनमांनौं॥१९॥
गायहुतैनगनागा॥औरमूढबु
बडभागा॥समसतसंगतिप्रेमतिन
बांध्यौ॥भावनतिंमोकूंआराध्यौं॥
२०॥औरंकहूसाधननहीजांनौं॥
अवरनब्रह्मरूपकरिमांनौं॥परि
नकोहितमोसोंभयो॥तातेंसबम
नकोमलगयो॥२१॥अमहीबिनां
नमोकौंपायो॥अतिअपारभवउ
दधिमिटायो॥जाकौंजोगसांखिबहुत
नां॥जपबेदबिद्याबिधिनांनां॥२२॥
करिसंन्यासबहुतडषसहे॥तेऊ

मोकोंकदेनलहेंसोकोतिनदुःख
मैंपायो।जोकेवलमोसोमन॥७॥
२३।रांससहितपाम्योमोहिलब॥
चलेव्रजकूरमधुपुरीतवहीता
गोपीमेरेहेतपायमूरछानईव्रजेत
रघवजल्योसमकिम्हादुखनाने
निसवासुरममचरननध्यावें।ते
हिछोडिसवदुखमयदेयें।ले
दकुलकछुनलेयें।२४।जेनिमन
संगपलसीवीतें।तेहीतिनकुं
लपविदीतें।मेरेगुणनिसुनें
गावें।लीलारूपहिरदेमेंध्यावें।रहे
कवलविरहम्हादुखरोवें।कल
तपेदसोदिसजोवें।कवहुं
जनकीभाषें।ममदूसनआसतेरा
में।२५।नीदभूखतिसकल
औरदेहसुणरह्योनकाई।तिनकेदु
खतेंईपेजानें।केमैंतीजोकहादयां
नें।२६।विरहेप्रचंडअनलअति

कारा सकलविकारनयेजरिआर
प्रेमप्रवाहसकलमलछारे यों
मोबिचिकेअंतरटारे ६५ तब
येउपजीपरमअनूपा मूलीआप
नईममरूपा ज्योंजोगेसुरब्रह्महि
ध्यावे द्वैकरिब्रह्मआपबिसरावे
२० अरुज्योंसरितासिंधुसमावे
नांवरूपगुणभेदगुवावे ज्यों वैन
ईरूपसबमेरो हैतनावकछुर
ह्योननेरो ६६ पापजोंनिअबला
तेसारी अरुश्रुतिकीमरजादाट
री निजपतिछांडिकीयोबिभ
चारा अरुतिनमोकोंजांन्योंजा
रा ६७ ब्रह्मनावकबक्रनहींजा
न्यों तिनप्रभुरूपमोहिनितमांन्यों
परितोकूमवसिंधुमिलायो सत
सहंसरणीममपदपायो ६८ नारे
सुनितद्धवबडभागा लोकबेदस
बकोकरित्यागा जोहेसुन्योंसुनन

कोंजोई।परदतिनिरहतिलोक[illegible]
होई।३४।सवतनियेकसर[illegible]
आवो।है तनावमनतेंदिसलवो
जहांतहांममरूपहीदेखो।[illegible]
रकछूओरनकनेपोछि[illegible]
करिमोकोंपैहो।[illegible]
नहींसैहो।योंहरिजीवां[illegible]
रीतवछहृवआसं[illegible]
[illegible]
कोकहै।मोसे[illegible]
रोम[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नां जातेतुवचूटेनर्मनांतां ब्र
आपनिरंजनयेकां ओरकछूनहीं
कुलो अनेकां ४०॥ बकुरिकीयो
याबिसतारा रच्योदेहबकुअंग
कारा तामेंआपप्रवेस कीयो ओं
रुसबदसंगकरिलीयो ४१ सो
बदचक्रआधारा प्रानांमकीनो
आगारा मणिपूरकपसांतीनां
चक्रबिसुधमधिमांधामां ४२
रिप्रगटबैषरी बांनी जेयेलोकरु
बेदबषांनी सुरलघुमात्राअछर
जेते नांनांभांतिबिसतरेते ४३
लोकमांहिथोरेबिसतारे बेदमां
तिरसचिहेसारे परितिनकोंबकु
बिधिबिसतारा जाकोकोईलहन
पारा ४४ जेसेंअनलकावमथिका
ढ्यो ईंधनपवनसंगबकुबाढ्यो यों
ममबांणीकोबिसतारा जातेंप्रगट्यो
सकलपसारा ४५ ज्योंबिसतारस्व

जामैं चेतनरूप हमारे॥ ऊं
दस परकारा॥ सुत्रै रूप
बुधि चित अहंकारा॥४६॥ सत्त्व
माया गुन जानौं॥ सब [illegible]
को मानौं॥ जो अहै तदेक
धारा॥ तिनकी है माया विस्तार
॥४७॥ तिन मैं मैं बहु जौं तिन अंश
॥ सत्त्वमधिमनौ चप्रकास्यो [illegible]
धतातें करि लयो सुषडुम है मि
फल नयो॥४८॥ ये संसारवृक्ष है
मैं ऐक बीजतें बहुतन जैसें ता
आधारा॥ त्यरु ये कही
लै पसारा॥४९॥ जैसें वसन
मय होई ओतपोत ह्वै जो नहीं को
ऐसो यह भव तरु है ऐका॥ [illegible]
न फल रस साखा अनेका॥५०॥ यह स
तन आधारा परितो कृ चेत
तें न्यारा॥ सो चेतनि है मेरो अंसा
मूलिन मांनूं संसा॥५१॥ ये सं

हे॥ ऐसें मैं नाषत हों॥ सुनीयो॥ तैसो॥ पा
परु पुंन्यबीज है। याके॥ मूलनु पार
बासना। ताके॥ ५१॥ आदि हीं के त्रिगु
ण त्रिय साषा॥ तिन तैं पंच भूत परं
साषा॥ ३पसाषा॥ मन इंद्रीय दस॥ सब
दादिक सरवे पंचौं रस॥ ५२॥ कर्मश्च
स्वात पित्र त्रिय बल कल॥ सुषअ
रु दुष प्रगटये है फल॥ तामैं है पंषी
को बासा॥ प्रमातम अरु अंतम पा
सा॥ ५४॥ जे मूरष ये भेद न जांनैं॥ ते ब
हु भांति बेद बिधि गांनैं॥ तिन तैं हो
वे बहु बिधि बंधा॥ जुग जुग दुष पावैं
ते अंधा॥ ५५॥ जे ये देह वृषि करि जां
नैं॥ आपही पंषी न्यारे मांनैं॥ बेद सु
मृति सब माया देषैं॥ सकल अतीत
आप कों लेषैं॥ ५६॥ तब ये बिधि नि
षेद छिटकावैं॥ सुष अरु दुषके नि
कटि न आवैं॥ सकल मांहि आप ही
कूं मांनैं॥ भेद देह कृति माया जांनैं॥

।चेतनसकतिब्रह्मकरिदेहैं।ञो
रभ्भकलमायाकरिलेषे।पिरिकलस
कलनेदलत्रपावे।जबसतगुरकी
सरणहीआवे।धूछासतगुरजिलोन
पावेकोई।व्रह्मादिकभावेसोहोई
तातेंगुरकीसरणहीआवे।दिलन
पासनोभक्तिबढावे।पूण।गुरसेवा
कोईसोप्रभाव।जातेंजपजैमेलेभा
व।गुरसेवातेंपावेभगती।गुरसेवा
तेंसकलविरकती।६०।गुरसेवाते
ज्ञानहीलहे।गुरसेवातेंकरमलेन
हे।गुरसेवातेंभ्रमप्रकासा।गुरसेवा
मभ्रचरणनिवासा।६१।मोहिनिल
णकोयहजपाई।गुरसेवाबिनञौ
रनकाई।तातेंगुरकीसरणहीआवे।
तनमनधनसौंहितनलगावे।६२।
तातेंजपजैग्यानकुठारा।सबपोसिन
कोंकाटिनेहारा।त्रिगुणलिंगसरीर
जपाधि।जोआतमकूंलभीव्याधि।

ग्यांनकुंगरसकलसोहरैयाविधि
आतमनिरमलकरैपीछेंग्यांनध्यां
नसबत्यागैनिसदिनयेकब्रह्म
अनुरागे ६४ तबसोब्रह्महीमां
हिसमावे॥अरुकैसेंजगतजनमन
हीआवे॥तातैंतुमसबसाधनत्या
गो॥निसदिनयेकब्रह्मअनुरागो॥
६५॥दोहा॥येउद्धवतोसौंकहो॥
भवमोचनममग्यांन॥अबअरुकहुं
साधनसहित॥ताषोपरमनिध्यांन
६६॥इतिश्रीभागवतेमहापुरांणे॥
कादसस्कंदेश्रीभगवांनउद्धवसं
वादेग्यांदसोअध्याय॥१२॥८८१॥
श्रीभगवांनउवाच॥चौपई॥सु
निउद्धवअबपरमगियांनो॥जातें
पावैपरमनिध्यांनो॥जातैंग्यांनहो
यसोकहौ॥याविधितुंवअरुग्यांन
हीदह॥१॥सातिकराजसतांमस
येहैं॥उद्धवतेगुणमायाकेहैंसुष

उपसवति नही के जांनों। तिनतें दरे
श्रातमां मांनो। २। तातें नरसांतिक
गहे। सांतिक करि रजतम कों दहे।
पीछे ब्रह्म मांहि थिर होई। सांतिक
तिऊँ मागे सो ही। ३। ऐसी बिधि तीनूं
गुण दहे। तब है ब्रह्म ब्रह्म में रहे
ज्यों ज्यों होय सांतिक अधिकारा। त्यों
त्यों प्रेम भगति बिसतारा। ४। सकल
बसतु सांतिक जब भजे। तब ही ते
सांतिक गुण उपजे। सांतिक ज्यों ज्यों
त्यों त्यों न की। त्यों ही त्यों अन्य त्रनिर
की। ५। तब रजतम दोऊ मिटि जावे।
तातें तिन के गुण नही आवे। हरयर
सोग मांन अपमांनां। निंद्रा आलस
प्रमादु मांनां। ६। राग द्वेष आदिक हैं
जेतो। हूं दस कल रजतम के तेतो। ता
तें जब ये रजतम जाई। तब तिन के गु
ण उपजे नांही। ७। तातें सांतिक संगति
करे। रजतम की संगति परिहरे। मूलस

त्नकोसंगतिकारण॥ संगतिबीरे
गतितारण॥८॥ देसरुकाल्नपुत्रं
ल्नपांन॥ ग्रंथरुकरमजनमञ्जम
॥ तो॥ग्रभाधांनादिकसंसकार॥ मं
जापयेदसपरकार॥ ए॥ येदस
कोहोवेजैसे॥ गुण बिसतारे ता
कौंतेसें॥ सांतिकतोसांतिकउपजा
॥ राजसतोराजसउपजावे॥ १०॥ ता
सतोतामसबिसतरे॥ जैसेंयेदस
सैंकरे॥ जाहीजामेंजोगुणहोई॥
तेमजाणेंसोही॥ ११॥ परिसा
तेमसाधबषांनें॥ सोवेसांतिक
तेमजांनें॥ जोल्नतिनिंदितमोगुं
सोहे॥ जोराजसकछूमधिमजा
॥ १२॥ तातेंयेदससांतिकसेवे॥ रा
सतामसनांमनल्नेवे॥ राजसतां
सजोहितहोई॥ तोहूसबछिट
वैसोही॥ १३॥ सांतिकसंगतेंउ
जैसेल्व॥ त्यों॥ त्यौंल्नहैंनगतिकों

त्व॥जोल्लगदिढभपजैलिपांनां॥
थैसकल्लयेकचगवांना॥१४॥
भ्रूरदोनोंदेहनिभरमजोलैसत
क्सितारसुपनससमोलैंल्लल्ल
भ्रूसमांहिथिरहोवे॥पांतिकक
कीवीरनजोवै॥१५॥ज्योंजांसननैंज
पजेभ्रनल्लभ्ररुहोवेमारुतनैंप
रवल्लासबबांसनिकोंदाहेहोनं॥।
भापहीबकरिउपसमतहोई्मौं
साधनयातननैंहोवे॥होयप्रचंडया
तनकौंबोवे॥बक्रऐसोभापजदसं
मनहोईसाधनल्हेसरहेनहींकोे
ई॥१६॥उणांतीतसोकहीयेजोगी
लीनूंकाल्लब्रह्मरसभोगी॥सोबक
सोंभवमैंनहींभावे॥मोहिमिल्यामो
मांहिसमावे॥१७॥ताँतैंसबसाधनछि
टकावे॥येकनिरंजनमोकोंध्यावे॥
तबहरिकीसुनिभ्रदभुतबांनी॥
नऊबयेप्रसबयांनी॥१८॥-

[illegible] हे ब्रह्म यहां ऐसो कहीये
पांनां दिक तजें सुख लहीये परिजे
निबय सुखन कों चाहें तातें बजे
ग्रारंभ समाहें २० तेबा पुरैस
दा दुख सहें कबहु न लिन सुख
कौल हें परितेतो बिषय निडर
जांनें जांनि बुझि क्यों उदिम ठांनें
२१ ज्यों बकरा मारन कों लीयो ले
चुरी न मैं डोडा कीयो वह निज
जक छू नहीं जांनें तिनसों मिलि
त्रषया दिक ठांनें २२ चूर जेसे
गर्द मचूर कूता तिरसकार तें
नहें बकूता सुषके हेत सब निज
नां सदा हिरदे डर बलन्ध तिदें
नां २३ वैतो मूढ कछु नहीं जांनें
तातें बिषय उदिम नि ठांनें येतो
नर जांनें सब बाता देखें ज्यान चे
ज्यों सब जाता २४ प्रथम तो सुख
[illegible]

ईस्रुरुजेहिनांआरिरहिजावैक
कुंतैंतोमोलनपावै।२५।कालनि
रंतरग्रासलजावै।येकदिनाऊग
हारपं गावै।तहांनरकहैंलक्रुग
मरकारा।जिनकेडुषकौंअंलान
रारहीं।आगेंचौरासीमयभारी।।न
मयनकौंबकुडुषविसतारे।।प
मवजलकेडुषअपारा।कलौंल
हौंलौंवारनपारा।२७।असैलल
विधिमांनवुजांनै।तोहकौंआर
ननिवांनै।आपआपकौंडुषनप
जावै।आपआपजमहारपगावै
२८।सोयहसकलहकपाकरिकहीं
मेरेडरकौसंसौरहौ।यौंकहिकैंन
दवजबरहे।तबहरिजीप्रत्यडत
रकहै।३०।श्रीभगवांनउवाच।।
उद्धवयेआलमअविनासी।ग्यांन
सरूपसकलसुषरासी।सोनवह
यातनमैंआवै।तबस्वाधीनविये

षपावै ३० वक्रचौंतनहितउदि
मगहैं नहीपावैतोउषकौंलहैं
याविधिसुषउषजवहीजांनैं त
वहीदेहआपकरिमांनैं ३१ जै
सेंवटेदेहअहंकारा तवहीराज
सकोअधिकारा राजससहित
जवहीमनहोई तवयेहीसुष जं
नैंसोही ३२ तवसंकल्पविक
ल्पनिकरै निसदिनहिरदैविषै
रसधरै तवजासुषहीसुनैंश्र
देषै तववसिकै निजसुषकरि
लेषै ३३ तवहिरदैमैंवाटेकों
म ग्यांनविचारनराषैनांम ता
तेंवक्रराजसअधिकारा राजस
तेंमनगहैविकारा ३४ तवराम
सकोवेगप्रचंडा ग्यांनहीमारि
करैसतषंडा तातैंग्यानसुनैंश्र
जांनैं अरुओरनिसौंआपुवषां
नैं ३५ परिसोकांमनहीवहरावै

लोकरिपकरिकरमकरतौवैं।हरि
जरिपयानरकीवुधी।रजतम्लैन
हीपावेसुधी।२६।तिह्नकिसदिनदं
ऽ.बिचारो।उरतैंसकलकांमलां
ठारै।सावधानआलसनहींकरै।।
कम कसममचरननचितधरै।२७।
आसणजीतकरैवसिप्रांन।।निनहि
नभरमतैंमधांन।।जिसममहि.र्द
चारमनकादिसकलतत्वम्यां
ननकीआदि।२८।तिनबिचारिकै
रिजोगही भाष्यो।सोतोयहैऔरसव
नाष्यो।जैसोंहीजैसोंमनहूजीतजै।न्र
रुजौंज्यौं ममचरणनिमजै।२९।
याहीतैंनबमिटैविकारा।याहीतैं
लहैसंसारा।याहीतैंममचरण
नपावै।नकस्यौंजगतजनमनहीं
ठावै।३०।जातैंपरमजोगयेराष्यौ।
जातैंसैरैरिषनिभाष्यौ।जवयेतोनी
कोलैकसालर्द उद्धवजनकोजी

प्रश्न ४१ उत्तर उवाच हे प्रभुजी
कौं समैं किंहिं रूप तुम नाथ्यो येग
न स्वरूप सनकादिकनि कौंन
विधि लिन ह्यो क्यो पूछ्यो कैसें तुम क
ह्यो ४२ ग्यान सहित सब मो सौं क
हो मेरे उर को संसै दहो जब ये उ
द्धव कीन्हौ प्रश्न तब बोले करु
णामय कृष्ण ४३ श्रीकृष्ण उवा
च ब्रह्मपुत्र सनकादिक च्यारि
मन तैं उपजे ब्रह्म विचारि जन्म
ही तैं जिन गही निरवृती मन ब
चि कर मत्त जी परवृती ४४ प्रश्न
करी तिन ब्रह्मा आगें यसो भेद जे
सोवत जागे श्रुति सुत्र मजां नी न्हि
परे उत्तर कहौ कौंन उचरे ४५
सनकादिक उवाच हे प्रभू ब्रह्म
ब्रह्ममय देवा याको हमें बतावो
भेवा विषे बासना चित ही गह्यो
चित प्रीति करि कैं मिलि रह्यो ४६

होकमिलेआपमेंजैसें॥नीरक्षी
रपरसपरजैसें॥भिंनि भयेंतिनंउ
रुमनहोई॥क्यौंकरिभिंन्नहोयये
दोई॥४३॥येबांणीब्रह्मांतरधारी
उतरदेनकौंबहुतबिचारी॥परि
तौऊतरनहींआयो॥जातेंकर
मनमेंमुरझायो॥४४॥तबब्रह्मायें
बुद्धिबिचारी॥जाहिनहिकोईतो
हमुरारी॥तातेंकरौचितवतमेरो
हंसरूपमेंप्रगट्योनेरो॥४५॥हंसरूप
तातेंदिषरायो॥जातैंयहआसयस
मुझायो॥कैजोहंसवृतिकौंगहै॥सो
होयाकैनेदहीनहैं॥४६॥तबतिनि
मोहिदेषिसुषपायो॥ब्रह्मामिलिउ
हिमाहान्निवायो॥करिविनतीतब
बचनबषांनें॥हेप्रभूतुमकोहम न
हीजानें॥४७॥तबतिनसौंमैंजोकछु
कह्यो॥तिनकेउरकोसंसोदहै॥
ही बचनन्हैंसुनतोमोंहि न

र नकैसुनियोमोसो॥४२तुमकोहै
योंपूछ्योजबही॥ग्यानकह्योतत्व
मैंतबही हंसहरिजबहसिकरि
बोले कृपानिधांनतबब्रह्मतर
बोले॥४३॥मनकोसंसैसबैमिटा
यो॥बिद्यमांनिपरब्रह्मबतायो
हंसउवाच॥बिप्रकृप्रस्नकरीतु
मजैसी॥करणैनहीसंभवैतैसी॥
॥४॥बस्तबिचारिहैतनहीकोई
तायाकोउतरक्यौंहोई॥ग्यरूजोदे
हरूपककहीये॥ताकूकछुहैत
नहीलहीये॥४५॥पंचभूतनिरम
ततनसारे॥जेकछूजहांलगबिस
तारे॥तातेंसकलयेकहैनाहीं॥दू
जोकौनबिचारोमांही॥४६॥पुरषप्र
ह्निदेवैतैंयेका॥प्रकृतिद्रिष्टकून
हीअनेका॥तातेंप्रस्नकरीतुमजैसी
बकतनिसांहिकरीजेजैसी॥४७॥
रुजोदीसेंतत्वबिचारा॥तोनहीप्रक

तिपुरयविसतारा।जो कछूदीसे सुनी
येकहीयेमनअरुबुद्धिजहांलौंल
हीये॥५८॥सोसबमैंहीहूजोनांही॥
अैसोग्यानधरेंअंतरमांही।नांमरूप
तेसकलविकारा।आदिअंतमधि
मोटीसारा॥५९॥त्यौंहीआदिअंत
मधिमांही।मैंहीयेकद्वैतकछूनांहि
द्वैतदृष्टसोदुषकोकारण।ब्रह्मादि
ष्टनिजसुषविसतारण॥६०॥लगेअं
गनसंदुषलहेतवसुषजवतेत
जिजलगहै।त्यौंहीद्वैतदृष्टसोदुष
येकदृष्टसोहीनिजसुष॥६१॥अरुतु
मप्रश्नविरंचिहीकरी।सोमैंहिरदै
आपनेंधरी।विषयनमांहिचित
मिलरह्यौ।अरुविषयनचितहीद्रि
ढगह्यौ॥६२॥यहेसुनयेयौंहीसत्यापरि
तेआतममांहिअसत्या।विषयचित
येदोऊमाया।आतमतत्वनिरंजन
राया॥६३॥विषयनसोंजबचितल

र गावै॥ तबही चित निसमुखपावै॥
॥ तबबिषयनके मांनहीधरै॥ ति
नके हेतकरमबिसतरै॥ ई४॥ ता
तें येकमेक मिलिरहे॥ ग्रैसे जन
मजनमदुषसहे॥ ताते ग्रातम
रोग्रैसा॥ मेरीसरनिगहेतजिसं
सा॥ ई५॥ बाहरिकतें बिषयपर
हरे॥ ग्ररुचिततें चितवन नाक
रै॥ बिषयरु चित ह्वथा करिजा
नें॥ तिनतें परे ग्रापुकों मांनें॥ ई६॥
ब्रह्मसरूपयेक ग्रबिनासी॥ ग्यां
नरूपचेतनसुषरासी॥ मनग्ररु
बुधिचित ग्रहंकारा॥ इंद्रीयबिष
य देहबिसतारा॥ ई७॥ येभ्रमरूप
सकलहे माया॥ नित्तिग्रातमाग्र
पबंधाया॥ ग्रैसेंजांनिसकल छिट
कावै॥ ग्रापहीमाहियेककरिध्या
वै॥ ई८॥ जाग्रतसुपनसुषोपतिब
षांनें॥ तेग्राचरणबुधिकेजांनें॥

॥सदायेकर
सपरमअनूप॥ ६५॥सांतिकहै
जापनहोई॥राजससुपनलहैस
बकोईसुखपतितांमसगुणतैंञ्
अरुबुद्धिमक्कं पाये॥ ६६
नरूपग्यानसतिकुं मेंही॥साषी
लिपैकछु नांही॥तातेंतिकुंतु
नैलैंन्यारो॥निजानंदमयरूपहर
॥ब्रह्मामेंथिरहोयकरेंजि
सहजैछूटैंत्रिगुणरसमा॥ हिंरहि
जैसैंमिलनांतातैंसेलसंग
नोनां॥ब्यातैंनिज्ञानंदनिरु
कालसबसैंसैरसमपा
सैंजांनिरजैंसीसमानांकहैन
रेकूपनिकोधोंजांहहूंसिहोत
तिरैंकरेंनिरखोआंवोथेमखलांथे
मनानिजसहजैनेनांहिसमा
अतोहिकहेंनहींपायो॥७४॥
हो॥जिसजैसै

नांनां विधि करै अवरनि मांहि व
ऊत विधि जागै परि जो जांनि है
त नहीं त्यागै पशु सो निति सोव
त जागत जांनौ ताकौ मैं दृष्टांत
बखांनौं जैसैं सयन करै नर कौ
ई। सोवत सुपन लहै पुनि सोई।
उहां बहुत भांति करै बिवहार
लैन दैन जल पांन अहारा बहु सै
रै निद्रै तैं सोवै। दिवस न देखै सो ही
... सोवै ७७। जैसैं ईके ...
... जागत सो वहस कल बिनो ते
न करै वैह जैसी मति आंनै रा ति
... बस की निद्र मांनै ७८ क हे
... सो जागत रहै सावधांन अल
... है। जैसैं काज आपनौ ...
... विकथन कौ नहीं ...
... जानि ...
...
...

जागेसोसारा॥८०॥आपहीसबमिथ्या
करिजांनैं॥कबहूंनलिनसतिकरि
मांनैं॥सोहीवेदधरमआचरणं॥
अरुजेसुषजिनकेहितकरणं॥
८१॥तिसबसुपनरूपविवहारा॥पं
डितछोडैंसकलपसारा॥भ्रमतैंह
स्यौदेहअभिमांनो॥तातैंबरणंआ
मतेनांनो॥८२॥तातैंकरैंबडतवि
धिकरमां॥सुषनिमतविसतारैंधर
मां॥परितैसकलहथ्याकरिजांनैं॥
सुपनजागणसमकरिमांनैं॥८३॥
जोदेहादिकसकलपसारा॥चेतं
नकरिबरतावनहारा॥सुषदुषजे
ताकैंअरुजांनैं॥आपहीसुषीदु
षीकरिमांनैं॥८४॥बडसोंजवहीसु
पनकौंपावै॥बडविवहारनसोंम
लावै॥तबहूंजांनैंसकलपसारा
आपापरिसुषदुषनिवहारा॥८५॥
बडरिसुषोपतिमांहि॥नजाईम

नबुधिचितअहंकारनकोंईतव
आतमांनिरंतररहै।आगेंसकल
आतकोंकहैं।८६।नीयोंदीयो
अरुआयोगयो।जहांलगैपीछैं
अनुभयो।सोआतमांथैंकरत
रहै।तिहंकालकीजातनिक
है।८७।योंअविनासीआतमथैं
क।८८।जोमायामेंहअनेक।तीन
अवस्थातेहैंमनकैं।तिनतिन
कंलीं।त्रंगुनजेहैं।तीनंगुणमाया
केतेहैं।ऐसोविधिनिश्चयसोजं
नैं।निसदिनहिरदैविचारहिं
मैं।८९।सकलउपाधिनकोंअ
भास।ग्यानदृष्टिकाटैअहंका
र।हिरदैमांहिसेंताकोंनजे।सा
धीनहेकदेनतजे।९०।येसारे
जगनसकरिजानैं।मनकोकृति
केथ्याकरिमानैं।सोयेकनिकौंउ
[illegible]

नपैमें॥ए॥शसोहीरीतिसकलसं
जांनैंसुपनसमांनेहिरदामेंसांचे
अगनिसहितजैसैंलकरीहोइंज
लकलेकरिफेरैकोई॥ए॥ताको
भांतिहैदीसैओरो॥थिरपरिचंच
लसबही॥हीरा॥थिंयेजगतरहैंमि
रचिति॥परिआतिचंचलसद्गुन
अनिति॥ए३॥येकब्रह्ममेंसकल
भास्यौ॥त्रिगुणपायनकभेदसक
सें॥सुक्तिरूपउरणमेंजोंमोगी॥सें
नकभांतिनिचारेजोगी॥ए॥भानातें
जगतैंहितहितनोरे॥सोचतुजांनिहि
रदैनहीधारै॥निरमाछोडेनेश्रवन
रहैं॥मननचकरमकछुकरन
गहैं॥ए४॥ठीहांरहितब्रह्मरतभो
गी॥निजानंदसैहोवैजोगी॥कैंसैंहि
रथाजांनिसवत्यागेन्हिचलहिर
देब्रह्मअनंतरागे॥ए॥सोजोहैदेह
रूमांहीनोरुकिरिमरनकनगेजो

ही ॥ जोपै देह जाय जो आवै ॥ वैसै उगेप
वे न रूप पावै ॥ ९८ ॥ ज्यौं रूं कछू कैरवि
वहारा ॥ परि सो सिद्ध न जानै सारा ॥ नि
ष्कल रहै निरंजन मांही ॥ देहादिक
कछू जानै नांही ॥ ९९ ॥ ज्यौं कोई तनव
सत्र निधरै ॥ बकस्यौं सुरापान कौं क
रै ॥ सो निज वस्त्र निजानै नांही ॥ वृथ
म बंधे तातै नही जांई ॥ करम [illegible] रै है
या तनके जो लौं ॥ सहित ई श्रीय नि
वरतै तो लौं ॥ करम सहित ताके तन कूं पे
षे ॥ पान पान सौं निलिस तौ षे ॥ १०० ॥ ये
जो ब्रह्म मांहि थिर रहै ॥ देहादिक की
सुधि नल है ॥ जैसैं सुपन देषि करि जा
गे ॥ ता सुपनां सौं नहि अनुरागे ॥ १०१ ॥ तै
सैं मोह निसा तैं जाग्यो ॥ कछू न लिपै
ब्रह्म अनुराग्यो ॥ देहस्थ कां ब्रह्म मि
लि रह्यो ॥ भव के बीज सकल तन द
ह्यो ॥ १०२ ॥ सो भव मैं बक स्यौं नहीं आ
वै ॥ ब्रह्म मिल्यो सो ब्रह्म समावै ॥ तातै

देहआदिविसतारा।भरमकृतिजो
त्रिगुणमयसारा।१०३।त्रिगुणअ
तीतब्रह्मकोंसेवे।विषयनकोक
बहुनांमनलेवे।विषयचितहोऊ
त्रमजांनैं।ब्रह्ममांहिरहिदोनैंभा
नैं।१०४।संकल्पअतीतआपकोंदे
षो।सबपरयेकहैतनहींलेषो।।
ब्रह्मरूपआपयेककरिमांनैं।हैतभा
वकबहुनहींआंनैं।१०५।निसदि
नब्रह्मविचारहीकरो।परिब्रह्मम
रोउरमेंधरो।ममआधीननिरंतररहो
याविधिजगतबीजसबदहो।१०६।
जातैंबहुरिनभौमेंआवै।ब्रह्मरूप
होयब्रह्मसमावै।येमेंतुमसौंकह्यो
बचारा।सांखिरुजोगसकलकोसार
१०७।मेरोगुह्यमतोअतिजांनैं।बहु
तभांतिहिरदामेंआंनैं।तुमरोहित
मनमांहिविचार्‌यो।मेंहूंविसदहंस
तनधार्‌यो।१०८।मेंहूंब्रह्मसकलको

१८ दोहा॥ येक उत्तर वृतो सौं कह्यो
ग्यांन निज सार॥ याकौं गहे निज प
दरत है॥ छूटै सब संसार॥१२१॥६
श्री भागवते महापुराणे येकादस
स्कंधे श्री भगवांन उधव संवादे
हंसगीतायां त्रयोदसमो अध्याय॥१
श्लो॥१०००॥श्रीशुकउवाच॥
चौपई॥ ऐसो सुनि हरिजी को ग्यांन॥
किउधारक भरम सब भांनाये
ह्रदै उर हिट करि धरी॥ परिक
छूप्रस्न कृस्न सौं करी॥१॥उधव
वाच॥ परम दयाल दयानि
कं बडो बतायो मैं वा भांति
तैं पईये हरि चरण॥ छूटै ज
त जनम अरु मरण॥२॥ परि अब
येक प्रस्न कौं कहो मेरया संदेह
हि दहो जे बहु विधि श्रुति समृति
जांनै ते तो बहु साधन निवयांनै
॥मुकति हेति बहु पंथनि कहै॥२

बंकुतैंमिलिगहैं।तातैंते
[illegible]सैंथा।भक्तिसमाकेकल
जाजापंथतुम्हैंप्रभुपईके ८
कुसौंभवसागरनहींत्तईहे।
पंथकृपाकरिकहौ।सिरी
कलमूदतांदहैं।धा।तुम्कहि
नहीकहै।ज्यांनलहैंतेतु
तैंलहैं।उधवकौसीखदीवांनी
उतरकौहि[illegible]।
भगवांनउवाचउधवकलपत
जबभयो।हिवटेतत्वजांनके
यो।पुनिमैंहिसैयहगांनां
मासैंसुरतितत्वदवांनांथाते
रतिपुलिद्रखापदायो।प्रगवा
सायंभूंपाठौ।सातव्हारिय। ४७
गुजिनआदी।हरसांयभूम।
हौतिनअष्टनतें
नांनाविधिकेभेद-
नरअसुरसिहरा-

दोहा॥ येकउधवतोसोंकहो॥
ग्यांननिजसार॥याकोंगहेनिजप
दहै॥छूटैसबसंसार॥१२४॥इ
श्रीभागवतेमहापुरांणेयेकादस
स्कंधेश्रीभगवांनउधवसंवादे
हंसगीतायांगमांदसमोध्यायः॥१
२॥१०००२॥श्रीगुरुभोजनाचा॥
र्ज॥जैसोसुनिहरिजीकोग्यांन॥
भक्तिउधारकभरमसबमांनाये
उधवउरदिढकरिधरी॥परिक
छूप्रस्नकहसोंकरी॥१॥उधव
वाच॥परमदयालदयानि
धोकंवडोबतायोभेवा॥भांति
कूतैपईयेहरिचरणं॥छूटेज
नजनमञरुमरणं॥२॥परिञ्रव
येकप्रस्नकोंकहो॥मेरेयासंदे
हितो॥जेबऊबिधिश्रुतिसमृति
जांनैं॥तेतोबऊसाधननिवयांनैं
३मुकतिहेलिबऊपंथनिकहैं॥२

रुतेरूवकुतेमिलिगहैं।तानैते
पंथअसेय।भक्तिसमाकेकवूर
सौ।धजाजापंयतुम्हेंप्रभूपई
वकुसौंभवसागरन्हीत्रई
सोसोपंथकृपाकरिकहो।मेरी
सकलमूढतादहो।धू।तुमबिन
येह्जोनहीकहै।गयांनलहैसोतु
मतैंलहैं।छ।कवृसैसीमूढीबांनी
तवउतरकीहैजनबषांनी।ह्दी
...नउवाचउद्धवकलपस
...वनयो।नवयेतत्वलीनकै
...मुनिमैंसृष्टिसमैंयहगांना।
...सुरनितत्वबषांनो।सि
ईसुरनिमुनिब्रह्मापठायो।मुवा
दिकस्वायंभूपायो।सातन्हरिषं
भूगुजिनआदी।त्रस्वायंभूमं
वेमनवादी।तितिनअष्टनतेंयेबि
सतारा।नांनोविधिकेभेदअपारा।
नरअसुरसिद्धगांदवा।बिद्या

धरजत्साहिकग्रना ए सपतदी
पनरबद्धपरकारा किंनरकिंपु
रषादि अपारा सतरजतमतिन
कीउतपति तातैंबद्धविधिमई
परकृति १० तिनतैंनयेबद्धत
विधिमेद तिनतैंसोहीजानैंवेद
बेदतत्वसोकिततूरह्यो आपस्व
भावसमातिन्किह्यो ११ ज्योंज्यों
तिनकेनयेसुभाव त्योंत्योंजांन्योंपु
रतिकोभाव त्योंही त्योंआचरनत
करें त्योंत्योंआपसुमृतिबिसतरैं
१२ परंपरायजे तिनतैंहोवें तति
नकेकृतसंमृतिजोवैं तिनतैंआप
करैबद्धग्रंथ नांनाभांतिचलावें
पंथ १३ ऐसीबिधिउपजेपाषंडा
ममसायां
ग्यांनधरमहोवैसतषंडा
करिमोहितहोवैं तातैंतत्वपंथनउ
हींजोवैं १४ अपनीअपनीसुचिअ
नूंमांनां करैंकरमअरुनार्मेग्यांनां

नांबिधिसाध॥न॥कर॥गावें॥तिन॰
नकल्यांणबतावे॥१५॥येकेंबडु
बिधिधरमनिरूपें॥तिनतेंमुक्तिसु
कि्कंअरूपें॥येकेंकहेंजसहीबिस
रीये॥जातेंसकलदुषनतेंतिरीये
१६॥जाकोजसयाजगमेंजोलौं॥सो
नररहेसुरगमेंतोलौं॥येकईहांही
कांमबषांनें॥आगेसुरगनरकन॰
हींजांनें॥१७॥जोतनईहांकरेभोग
नकों॥यहांहीछोडिजाययातनकों
आगेसुषदुषलहनकोई॥तातेंभो
गकरोसबकोई॥१८॥केसेंग्रंथन
कहिभरमावें॥धरमरायकीषब
रिनपावें॥येककहेंसमदमअरु
सत्य॥इजेसाधनसकलअसत्य॥
१९॥जोगग्रंथबहुसाधिबषांनें॥
तिनतेंमूढमुक्तिकोंमांनें॥सांमरु
सांमडंडअरुभेद॥इनकोंगहेंये॰
कपटिबेद॥२०॥न्यायसहितसब

तदिमकरै ॥ तितिमधरमजांनितर
धरैं ॥ दांन भोगतत मकरि भाषै ॥ २
हैमुक्तिसाधनकरि राषै ॥ २१ येकैं
जससदांनतपगहै ॥ येकैं जमनेमनि
मग्रहै ॥ येकैं तीरथबरतमनधैं
कष्टकहांलों बहुबिधिकरैं ॥ २२
तिनतैं सुरगादिकफलपावैं ॥ ब
नतयेयहांफिरिआवैं ॥ बहुरयो
नीचजोंनिबहुलहैं ॥ नरकनि
जुग मेंकेईदिनरहैं ॥ २३ ॥ सुरजब
हैंसुरगकेमांही ॥ तबहूंकछुसु
षपावैनांहीं ॥ कांमक्रोधनिदांन
पिमांनां ॥ रागदोषवछंछ्यामिमा
२४ नां ॥ इत्यादिकनिग्रसेनितरहै ॥ ता
तैंकोनभांतिसुषलहै ॥ भगतिबि
नांबिधिलोकहीजावै ॥ कालतहां
हूंतैंछिहावै ॥ २५ ॥ तातैंतहूंवन
रमहैंसारा ॥ सुषमनचरणनिके
आधारा ॥ जिनमेरेचरणनिचित

धर्‍यौ।साधनसौंथिसकलपरहरै।
रहे।तिनकौंउद्धवजोसुषहोई।सो
सुषकहूंनपावैकोई।सोसुषकहे।
मुझैंनहीं।आवै।सोहीयेजानैंसोपा
वै।२७।सोपावैसोमोसौंपागै।औरस
कलआसैंकौंत्यागै।।ममआश्रीन
निरंतररहै।इन्हींसकलबासनांट
है।२८।सकलवस्तुकौंकीन्हौंत्याग
अंतहकरणधर्‍यौबैराग।समद
रसीनितिसीतलचित।ममचितव
निहिरदैदिढचित।२९।ताकौंदसं
दिसासुषरूप।सोसुषजोअतिपर
मअनूप।जोजनमेरेसुषकौंजानैं
ताकोमनकितहूंनहींमानैं।३०।ता
केसबआधीनैंरहैं।परिसोमोबिन
कछूनगहैं।ब्रह्मलोककौंकदीन
लेवैं।ईंद्रलोकपलाचितनदेवौ।३१।
सबभूराजनैंननहीं।देषैंसमपमा।
ल्सुषनितिरणलेषैं।जोग

माहिकछुजोगीजिनहितस
कछुउरातिनहूंकौंकबहून
हीलेईआपकूतैंनितसेवैतेइ
ङ्किनिकचहीरहैसदा२ परिमे
जनकुवेनकाइ२३मैंहीयेक
प्रीयेताकोममचरणनिचि
जाको ताहीतैमेरप्रीयसे
ईतानिनऔरप्रीयेनहींकोइ
२४त्यौंमेरोसुतबिधिनहीप्यारे
नहींसंकरओरूपहमारोनहीप्री
येत्योंसंकरषणभाइश्रीअरुग
त्यौंनहींसाइ२५पोनहींप्रीयमे
रीममदेह जैसोतुमसोंपरमस
नेह तुमसेभक्तमहाप्रीयमेरो
ताकेरहूंनिरंतनेरो२६ईआर
हतअरुसीतलहिरदयसमनिर
बेरसबनिपरिसुहिरदयब्रतइष्टि
देषैसबमांहींब्रह्मविचारतजेपल
नांहीं२७मैंताकोव्रथमहैंयौकं

सो त्रिगुणपासबंधनविसतरे॥ परिताकेऐसोबलभारी॥काटीमा यासक्तिहमारी॥३८॥येतेपरसबत्रे गुणतजेउलटिआयममचरणनि नजें॥ऋरुसबसुषताकेबसिरहैं सोतजिमोहिकछूनहींगहैं॥३९॥ बऊतनकेभवबंधनरहैं॥नामप्र प्रगटकरिमेरोकहैं॥तिनतिनकैं ममचरणनिल्यावैं॥सदासबनितैं आपछिपावैं॥४०॥अहंकारमम तानहींआनैं॥मोहिछोडिद्रजोन हींजानैं॥गुणंतीततजनकेंपाहै येतनधरैंकिरूमैंआछैं॥४१॥सोत्रि कगुणधारीयहदेहा॥करैंसुद्रता चरणनिबेहा॥नहकंचनतनक नहींरक्त॥मोहीसोंनितहीअनुर क्त॥४२॥सीतलहिरदैबिगतअभि मानों॥कबहूंकांमचलैनहींबूधि मोहिसेयपाईअतिसुद्धि॥४

किइतैं ति ति तिसपृहरहै।तेजनमे
रेहसकौंलहै।तासुषकौंसुषजा
हे।ऐरसकलसमफैनहीं
हे।तिसपृहजननिस्पृह
हा।वेतकैनिकटिनआवे॥
अपनकेअभिमांनवहोई॥ईशी
सौ।तिसकैनहींकोई॥४४॥परिआ
गहोयममजबही॥विषयक
गकेसकैनबही॥विषयसत्रु
मैसकलनिवारं॥आपमिलांतं
वेनयहारं॥४१॥पावक व
सोलेभूसमहोयपृ
स्म॥ पृग
रेपापरहै ४
पापको
पमोहिसो
ष्टांग॥बक्र
४८॥सांषि
बेदपठेदेवे

ईंद्रीयमननांधै।औरसकलनधरम
निकौंसाधै।तोइमोहिकदेनहींपा
वै।भक्तिमोहितनकालमिलावै।।
एकभगतिमोकौंबसिकरै।दूजैतें
अतिअंतरपरै।४०।सरधासहित
करैममभक्ति।तासोंमेरीअतिआ
सक्ति।मैंब्रह्मादिसकलनकोईस
मोबिनऔरसकलअनीस।४१।।
सोमैंभगतिनकेआधीन।तेमोसों
मोंजलसोंमीन।जोचंडालभग
तिमैंआवै।ताहीतननिरमलता
पावै।४२।बरणआश्रमपदबंद
नकरै।तापदरैणिसीसपरधरै।ती
नूंभवनसदाबसिताकै।मेरीभग
तिबिराजैजाकै।४३।विद्यापढैध
रमबहुकरै।जीवदयाबहुविधि
बिसतरै।सतवंतअरुदिढसंतोष
रूबहुकहूंकरैनहींरोष।।
एसहितपूरंनतप

यदेहादिकबांधे॥
देजेते॥सब्ब्याचरणकरैजोतेते।
५५॥परिज्ञोमेरीभक्तिनहोई॥तोनि
रमलनहीहोवैकोई॥बिनरोमांचद्र
वेबिनचेत॥आनंदाश्रुकलाबि
ननेत॥५६॥तोलैंसाधुभक्तिनही
कहे॥भगतिबिनांतरसुधिनलहे॥
द्रवैप्रेमतैंजाकोचेत॥कबहूरो
वैमेरेहेत॥५७॥कबहूगदगदव
णीहोई॥कबहूऊंचैगावैसोही॥
कबहूमुधरमुधरसुरगावै॥कब
हूप्रेममगनरहिजावै॥५८॥कबहू
निरतप्रेमबसिकरै॥कबहूहसे
गुणनिबिसतरै॥लोकबेदकीला
जनजांनै॥स्योंतनमतसकलयोंगं
नै॥५९॥जोऐसोमेरोजनहोई॥त्रिभ
वनसुधिकरतहेसोई॥सकलभव
नकेपापनिवारै॥सकलभवनकौं
सोजनस्यारैहै॥६०॥जैसैंहेममलिताहे

ई।अंबकुजलमांहिसोईयेसोई।ज्यों
रजतसंबकुतविधिवाजे।हेसही
नहोर्भकसोटीदीजे।ई।पाकेई
विधिगुरुनहोई।कोटिजतनकेक
रेजोकोई।सोईहैमस्भिनिमेंहै।है
देकरिफूंकतपतिभंति [illegible]
तातेंकोईमंत्रनहिंनिहैं [illegible]
रूपकोगहे।तौभीजतन [illegible]
कोई।परिवानमांन [illegible]
ई।मेरीभंतिमंगि [illegible]
सबकरममलिन [illegible]
मलहोय।लहै।निजरूप [illegible]
तजेभवकूंप [illegible]
तिलिकरेमेसुत [illegible]
रेश्रवणभीरत [illegible]
जोजीओरवा [illegible]
तोहिरिदैपकां [illegible]
रेसवश्रान [illegible]
है।निरमयनिजा [illegible]

नैंननिमांहिरेगजोहोईतातैंक
छूनदेषेसोई सुनिसोंजोंऽभ्रेष
हिहिलगावे सोसोडिष्हेतनि
तस्पाहेहेंईए सोसोसकलबस्त
कोंदेषे अपहींपरमसुषीक
रिलेषे तातेंभक्तिरूपदिटअंग
न जातेहेंषे देवनिरंजन ई५
जोसंसारसुषनकोंधावे सोसंस
रमांहिबहेजावे अरुजोधावे
मेरेचरणं पावेमोहिमिटेनवम
रणंई६ तातैंसबसाधनभ्रमजं
नोस्वपनसमांनिहैसकरिमांनैं
मनक्रमबचनसकलकोंत्यागे
निसदिनममचरणनअनुरागे
७०जेयाजुवहेंचहैंछिटका
येोअरुचाहैममचरणनिअाये
तेतिनकीसंगतिपरिहरैजेनरजु
वतीसंगतिकरै७१जुवतीसुषनि
सुनैनहींश्रवनातेंतननदेषेकरै

नगवनां।कवक्तमूलि हिरदैनही
ओनैं।मनक्वचिकरमनिरंतरआं
।७२।ऐसोबंधनकहैनहोई॥
कोटिनसंगकरैजोकोई।जैसैंनोऽ
तरुजोपितासंगी।बंधनकरै
होतपरसंगी।७३।तातैंतिनकेसं
गहीतजै।सावधांनममचरणनिं
नजै।निरनयगोरकरैअसथांन।मो
बिनुसंगतजैसबग्यांन।७४।मेरो
ध्यांननिरंतरकरै।प्रेमसहितहि
रदामैंधरै।कृस्नवचनसुनिहिरदे
राये।उद्धवओरप्रस्नकोंभाखे।उ
धू।उद्धवउवाच।हेप्रभुतुम्हेकोंण
बिधिध्यावे।कोंनरूपमेंचितलगा
मैतोमुक्तिसेईतुवचरणं।परिजो
हैमिथ्योमरणं।७५।दीकृपासिं
मंकरुणंकरो।ध्यांनजोगबांणी
सनरो।सुनिउद्धवनिजजनकी
तबश्रीहरिजीआपबखांनी।७७।

श्रीभगवांनउवाच॥मेरोरूपजोग
तूजांन॥जोगबिनांनहीउपजैग्यां
न॥सबसाधनकोसाधनरूप॥जीव
ब्रह्मकोहोयसरूप॥७८॥उद्धवतै
कोध्यांनसुनांतो॥जोगसहितसब
अंगबतांतो॥जोगसहितसोध्यांन
हीकरै॥तोमनबेगरजहीपरिहरै
७९॥समआसनमैंअस्थिरहोई॥जं
घनपरराषैकरदोई॥देहसमांनि
चलैनहीडोलै॥नासाद्रिष्टिकछू
नहीबोलै॥८०॥इडापूरिकैंनक
घिरधारै॥पुनिरेचकपिंगुलानि
मारै॥बङ्कस्योपूरिपिंगुलाहार॥इड
निसारैबारंबार॥८१॥मेरोहेतहिर
दामैंधरै॥ईडीयअक्षरथसकलनप
रहरै॥उद्धवहैबिधिजोगकहावै
ताभेदहीसतगुरतैंपावै॥८२॥मं
त्रसहितसोनांमसगरभ॥मंत्रबिनं
सोकहीयैअगरभ॥तातैंजोगसगर

सेनोमासोउनमहैप्राणायाम॥८ ह
पूरेरायरेचककरे॥ॐकारसंनत
रधरे घंटानादतुल्यउरधाटे॥त
सोमिलिकेंप्राणचलावे॥८४॥ यो त्रि
कालत्र्यासेकोई॥प्राणमांसली
मेथिर होई॥कुम्भो रूकैकेंवल कु
भावे॥त्रयपांपुरीसोलिगमावे॥८५
उंहमुषतेंउरहैकरै॥नाकेसुषिस
रजिहीधरै॥स्वरजिमेंपूरणमक्रा
ऐ॥तिसमेंअनलतेजमयमाने॥८
ई॥अनलमध्यिमरूपहीध्यावे॥त्र
मप्रीतिसोमनहीलगावे॥ईरगूट
सानिवञ्जभुजरूपी॥तिसीतलपु
परांनिअनूपं॥८६॥नीननसजलमे
घतनस्यामा॥तडितुल्यअंबरन
ईपांमसदलालिसोभानिधिकोनि
नमकराकृतकुंडलसुनकांनन
रू कंठकोस्तुभमनि
ई ऐसतालचितवि

रुचक्रगदाअरुपदम॥हस्तच्यारि
हसोभासदम॥८ए॥हेममुकटही
रामणिजस्यो॥श्रुतिलोभायमान
सिरधस्यो॥भालितिलकश्र
वरनैन॥भक्तिप्रसादसुधाको
न॥ए०॥करकंकणअंगदमुद्रि
का॥पगनूंपरकटिमैक्षुद्रिका॥
अंकुसवज्रधजाअरविंद॥चि
चरणदेहेउपदंद॥ए१॥नखमणि
गणअतिप्रभाप्रकास॥तरअ
नअंधतमनास॥औरसकलअंग
निबङनूखण॥जिनकेध्यानमि
सबहूषण॥ए२॥बेसकिसोरप्रम
सुकुमार॥नखसषध्यावैबारंबा
चरणनितैप्रतिअंगहीध्यावै॥
गहैयेकहीछिटकावै॥ए३॥यूंते
नखतेंसिखाप्रयंत॥निसदिनहरि
ध्यावैसंत॥औरवासनासबपरै
रेमेरेरूपअडिगचितधरै॥ए४॥या

विछिजबमननेहचलहोई।तबफि
रिश्रृंगनभावैकोई।अतिसुंदरमु
खमैंमनधारै।औरसकलचितवन
निवारै।५५ याविधिमनअर्पनेंत
सिहोई।तबहिरहनैवारैसोई।म
कलकिर[illegible]मनजानै।मोनें नि
[illegible]

कोई॥१००॥बकरिसुगनिहीमांहि
समावै॥तबहीपतंगानांमगमावै॥
ऐसेंआतमब्रह्मबिचारै॥येकजां
निकेहेतनिवारै॥१०१॥ऐसीभांति
बिचारहीकरते॥निसदिनब्रह्म
मांहिमनधरते॥त्रिगुणाकारसक
लनरमभागे॥होयब्रह्मसोवत
सोजागे॥१०२॥होकरिब्रह्म
मितिजावै॥जहांतेंबहुरियोन
हीआवै॥ऐसीबिधिबकउपनिद
हैं॥मेरोनिजानंदपदलहैं॥१०३॥दे
हयेपंडोतासोंकहौ॥जाकरिहि
पुरजाय॥परियामैंबिघनअनेक
हैतेनाषोंसमुझाय॥१०४॥इति
भागवतेमहापुराणेयेकादसस्क
देश्रीभगवानउधवसंबादे
रहसोअध्याय॥१४॥११०६॥श्री
उधवाच॥चौपई॥उधवजे
पंथसमुझाऊं॥तामैंबकतेविघ

[illegible]जोई ऽ।समन प्राणही बांधे

[illegible]मनो चिंतना कौं सिधि वि[illegible]
[illegible] निता जो तिन सिधिन कैं परि
[illegible]सो मम चरणनि कौं अनुसरै
[illegible]तिन सौं कबहीं रहे तु नाहीं सो स
मसकल दृष्टा ही आही अैसे कृ
[illegible] मन धारि उधव कीनी प्र
[illegible] चारि २ उधव उवाच कै प
[illegible]धारणां देवा अरु सिधिनि कौं
[illegible] विधि नेवा तिनके नाम कृपा क
रिके हो जोगनि के बिघन कौं द
[illegible] अनुव आधीन सिधि है सकल ना
तुम्हरी कृपा होय जन अकलां उध
व श्लहि रदै मैं धारी तब बोले गो
पाल मुरारी ५ श्री भगवान उवाच
उ नसिधि अष्टादस कही ये मम
धारणां करि जे लही ये तिन मैं अष्ट
सिधि प्रधान दस मधि मते के [illegible]

कोई॥१००॥ वक्र रिस्यु गनिही मांहि समावै तवही पतंगा नांम गमावै॥ ऐसें आतम ब्रह्म विचारै येक जांनि कै द्वैत निवारै॥१०१॥ ऐसी भांति विचार ही करतें निसदिन ब्रह्म मांहि मन धरतें त्रिगुण कारसकल नरम भागे होय ब्रह्म सोवत सो जागे॥१०२॥ होकरि ब्रह्म ब्रह्म मिलि जावै जहां तें लें वहां ही आवै ऐसी विधि वक्तु पनि है मेरो निजानंद पद ह्है है॥१०३॥ ये पैंडो तोसों कह्यौ जा करि है हरि पुरजाय परिया मैं विघन अनेक है ते ना बोस मुझाय॥१०४॥ इति श्री भागवते महापुरांणे येकादसस्कंधे श्री भगवान उधव संवादे चतुर्दसोध्याय॥१४॥११०६॥ श्री भगवानुवाच॥ चौपई॥ उधव जोग
[illegible]

बलोकं।जोईडीयमनप्रांणहीबांधै
सावधांनव्हे जोगहीसाधे।४।मोमें
धरेआपनौचित।ताकोंसिधिवि
घनहैंनित।जोतिनसिधिनकोंपरि
हरे।सोममचरणनिकोंअनुसरे
५।तिनसोंकबहीरहेंनुभाई।सोस
मसकलदुःखहीजाई।ऐसेंद
मवचनमनधारि।उधवकीनोप्र
मविचारि।२।उधवउवाचकेप
रकारधारणंदेवा।अरुसिधिनिकों
केविधिसेवा।तिनकेनांमकृपाक
रेकहो।जोगनिकेविघननकोंद
होप्रभु।तुवआधीनसिधहैंसकला।
सुन्दरीकृपाहोयजनअकल।उथ
वउरमहिरदेमेधारी।तबबोलेगो
पालमुरारी।पु।श्रीभगवानउवाच
उधवसिधिअष्टादसकहीये।ममध
रणंकरिकेलहीये।तिनमेंअष्ट।
सिधिपरधांन।दसमधिमतेकरुबखां

ई जानें देह लक्षण होई कि
कूंनहीं आवरण कोई अणिमां
ांमसिद्धिये जानों अमोहनीमा
यामांनों ९ जोतनकरैमहाबिस
तार जहांतहांकछुवारनपार म
हिमांनांमसिद्धिसोकहीये कबत
थूलिन ताकोंगहीये ८ जोयादेह
स्तिनयूकरै सुक्षिन आवैदिस
नपरै सोयहलघुमांसिधिकहावै
समजनयाकेनिकट नआवै ९
जेजेइंद्रीयभोगनकरै जहांतहां
कछुविषयनपरै तिनसब भोग
निताकरिलहीये प्रापतिनांमसि
सिधिसोकहीये १० ऐकठोरहबैठर
हैदेमेसुमेसकलनकीकहै नाहि
गोचररहनकाई सोप्रकासिकहि
छिकहाई ११ ईद्रीयदेहबुद्धि
प्रांणि तिहींलोकजनकोअस्थां
ऐसेंप्रेरेसोजांनें नाहि

रतासिधिवसांनैं।१२।विषयसुष
निकौंकदैंगहैं।जातेंअतिआंने
तरहे।नांमअवसितासिधिकहा
वे।मेरोनकिंनिकटिनहींजावे॥
१३।जोजोअंत्रआमनमेंल्यावे।सो
सोसकलपलकमेंआवे।वसित
नांमसिधिहेसोही।मेरोजनआदरै
नहींकोई।१४।अष्टसिधियेअतिप
रधीना।यनतैंमधिमनाथैंआंनात
नकेगुणआपैनहींकोई।नांमअनु
र्मिकहीयेसोई।१५।दूरिश्रवणसुनैं
सबबैना।दूरिदरसदेषेसबनैंनम
नकेबेगमैंनोजवधावे।कांमरू
पबहुरूपबनावे।१६।परिकेतनमें
करैप्रबेसा।सिधिछठीपरकायाप्र
बेसा।निजअंगछांतेंतजेसरीर।सोस्व
छंदमृत्युहेबीर।१७।त्रि.कि.अ.प.स.र।
नबिचरैदैना।देषेतिनहीजोहेनिजने
बा।सोसुरकी.ड.दरसन ..

फल है कदेन गाहीये ॥१८॥ जो संक
ल्प करै सो होई ॥ यथा संकल्प
ये सोई ॥ जहां गयो चाहै तहां जावे
अप्रतिहतगत्ति सिधि कहावे ॥१९
ये दस मिलि अष्टादस कहीये ॥
और पंच तुछ न हिये गहीये ॥ ब
रत मांन अरु भूत भविष सब
कछु जांनैं लख्यन अलख्य ॥२०॥ य
हे सिधि त्रिकाल ग्यान ॥ आगे सि
धि बषांनों ग्यांन ॥ सीतल उसन
आदिक जे हुं द्वंद ॥ तिन ही निवा
रै है अहं रद ॥२१॥ बिष अरु अग
नि जल थंभा ॥ जातैं होवे चि
सो अचंभा ॥ प्रतिष्टा सो सिधि कहा
वे ॥ हरिजनता के निकटि आवे ॥
२२॥ वे अष्टादस अरु ये पंच ॥ मि
लतेईस सकल परपंच ॥ ये में मू
ल रूप ज चारी ॥ सा ध्यान कृत नही
बिसतारी ॥२३॥ मम धारणा करै तैं

आवै योगीनकूं बकु बिधि विचलाः
वे जो तिनतैं बिचलै नही कबही॥
तो मम चरणनि पावै तबही॥२४॥जा
धारण कै तें जो आवै जैसें जोगीकूं
बिचलावै सो सब उपद्रव तो सोंक
हूं जोग पंथके बिघननि दहो॥२५॥
सगुणरूप जो कछु निसतारा॥सो॰
नां नां बिधि रूप हमारा॥ताहि ताहि मा
हि मन ल्यावै॥ तैसी तैसी सिधिही पावै
२६॥सबद सपरस रूप रस गंध॥ पंच
भूतके सुपम बंध॥ तिनमैं जा जा मैं
मन लावै॥ताता के रूप ही मिलि जा
वै॥२७॥ महतत्तुमैं मन ही ल्यावे॥पंच
भूत साषा करि धावै॥ जाजा सापामैं
मन धारै॥ नहां ही तहां मन देह बधा
वै॥२८॥ पंच भूतके जे परमांनुं॥ तिनमै
जोगी धारै ध्यांनुं॥ नाता समें लघु देह
ही करै॥ कोइ संक कूं गहो न परै॥२
९॥ सातिक अहंकार मन धा

मेरोरूपबिचारै।तबजेईद्रीयनेग
न्यकरै।बक्तमांतिबिषयनबिस
तरै।३०।तेतेसुषयेजोगीपावैसो
वहप्रापतिसिधिकहावे।मेरोस्त
ररूपमनम्रानै।तातैंत्रिभवनकी
गतिजानै।३१।जैसोकरदीवालेघर
देषै।यौंत्रिभवनम्राचरणपेषै
मेरोकालरूपमनधारै।सबब्या
पकसबईसबिचारै।३२।तातैंसि
द्धिईसतापावै।त्रिभवनजंतैंस्पी
वरतावै।जाहीसोंजोहीकरवावै
ताकेऋंतरस्योंउपजावै।३३।श्र
दिपुरषसोमेरोरूप।तामैंधारैचि
त्तअनूप।तातैंसिधिहवसथा
पावै।बिषयनबिनआनंदबढ़ा
वै।३४।निरगुणब्रह्ममांहिमनधा
रै।सबकरतासबईसबिचारै।ता
तैंबसितासिधिहीलहे।सोहीसब
हैंजोचहै।३५।सुधसत्वमयमोहि

बिचारै।तामैंजोगीमनकूंधारै।ता
तेंसुद्धआपकूंहोई।घटन्तरमैंन
व्यापेकोई।२६।गगनिआधारप्रां
णमनधारै।सबदरूपअंतरमांहि
बिचारै।तबजहांलगैंपवनआ
कासा।सुनैंतहांलौंबचननिवा
सा।२७।नैननमैंसूरजिकूंधारै॥
अरुसूरजिमैंनैंनबिचारै।अप
रिछिमा हेकौंलेषै।तबसौतिहूं
लोककूंदेषै।२८।पवनसहितमो
मैंमनधारै।जहांतहांममरूपबि
चारै।ऐसैंमनकौंजहांचलावै।।म
नकेबेगजहांहीजावै।२९।सारेमे
रोरूपबिचारै।तिनहीतिनमैंकौं
धारै।चाहेजयोरूपतबजोई।।बार
नलागेहोवैसोई।३०।कस्योप्रवेस
हीचाहैजामै।ध्यांनआपनोंआंनैता
मैं।तबलाननमैंजावै।ऐसैंप्रंगक
लहीमां होजैसौ।३१।मूल

वंधलगावै॥प्रांणचलायसीसमैंल्या
वै ब्रह्मरंध्रहोयगवनिहीकरै॥जो
मनहोयताहिअनूसरै॥ध१सुरग
देवसुरवनिताध्यावै॥तवतेसहित
बिमांनहीआवै॥तायोगीकोसुष
उपजावै॥सोजोगीआनंदबधावै॥ध
२॥जोजोबसतुहिरदामैधारै॥ताता
कोग्रनूमोहिबिचारै॥सोहीसोपा
वैततकाल॥जबहीचाहैकालअ
काल॥धध॥सकलनियंतासबको
ईस॥नितस्वाधीनसकलकोसीस
जोगीऐसेमोकोंध्यावै॥ताकीआंन
नकोईमिटावै॥ध४॥ग्यांनरूपसब
अंत्रजांमी॥ध्यावैमोहिसकलको
स्वांमी॥अपनीजांनैजनममरण
की॥ग्यांनत्रकालरुसबकेमनकी
ध६॥प्रकृतिगुणनितैंन्यारोजांनैं॥
अरुतिनकोंस्वांमीकरिमांनैं॥ध्या
वैमोहिसदाअद्वंद॥तबकोईनहीं

आपैहूं द्ा॥४१॥सबमैंब्यापक सक
लअतीत॥लिपैनसूरअगनिजं
लसीत॥ऐसैमोकौंध्यावैजोई॥ऐ
सोलषिएपावैसोई॥४८॥जोमेरे
अवतारनेध्यावै॥आयुधछत्रच
वरमनलावै॥लांछंकछंनपराज
यहोई॥सबहिनमांहिविराजैसोई
॥४९॥योधारणांकरैमनजोई॥सिध
नपावैयोगीसोई॥परियेअंतरा
यहैंसारे॥मेरे भ[illegible]निवारे॥
५०॥मोतैंपेइननेमैंनाही॥तातैंमू
जननिकहिनजांई॥मोहिनलहै
जेइनहीलैवै॥मोहिनजैंतिनकूंय
सेवै॥५१॥मोहिसोंउतपनिसबहीं
की॥मैंशक्तिमान्नकरूंतिनतिनकी॥
ममआधीनसिधिअरुजोग॥सांषि
रूग्यांनधरमधनभोग॥५२॥सबकी
जीवनसकलनकी॥स्वांसा॥मैंसबहि
नकोअंतरजामी॥स

४१२ तरियेक तैसैं वरतैंसकलनसूने
[illegible] तसबभूतनमांही
[illegible] तरिहूजानांही स्योसब
[illegible] झांनइष्टसोही
[illegible] तातैंहैतभावनहीं
[illegible] सकलकरिजांनैं
[illegible] नकलनरमतजैं
[illegible] तरनजैं ॥५५॥ मम
[illegible] रणानिआवे ॥ इति
[illegible] इइमि [illegible] तो

नंदः विष्पांनप्रकासी॥ आदिनअ
तमधिनहीजाको॥कोईमेदनहै
नहींताको॥१॥तुमहीसकलजगन
उपजावो॥तुमप्रतिपालोतुमवि
नसावो॥तुमसबवाहरिअरुसब
मांहीं॥सदाअलिपतिलिपोकछुन
नांहीं॥२॥जहांतहांतुमहीहोयेक॥
येसवभरमजोदृष्टिअनेक॥ हेप्र
भूयेजगअतिविसतारा॥ऊंचरु
नीचविविधिप्रकारा॥३॥अरुयाजी
वसतिकरिमांन्यो॥विषयनसोंव
हुभांतिवंधांन्यो॥याकेयेकदृष्टि
क्योंआवे॥कैसेंसकलब्रह्मकोंध्या
वे॥४॥ध्यानवंततुवजनहैतेते॥ब्र
ह्मदृष्टिदेषतहैजेते॥तातेंतुमअ
वकरुणाकरो॥निजविभूतिमा
सोंविसतरो॥५॥तिनमेंदेषिसव
निमेंदेषेंतबअद्वैतब्रह्मकरिलें
पें॥मुनिउद्धवकेउतसवैनावोले

हरिजीकहत। ऐसेंनहीं

अथब्रह्मसमतोत्रु
मक्तानी नानेंपरैब्रह्मगतिचौ८
नौ। यतब्रह्मअरुसुनहींकरी
नामोमेंजाविधितरी ७ ताही
विधिअरुअनोहितुनांकें ऐसेंव्र
ह्मदृष्टितपजांकें कैरवअरुणा
ड्वलुरयेत जवहींजुरेमारथ
केहेत ८ नवअरुनकेवेसव
हेंधे सकलबंधवअपनेकहिले
ये यनसबहिनकोंजोमेंमारें
आपहीआपनरककूंडारें ९
ऐसाविधिमूंमोंअहंकार आप
होमांमोंमारनहार नवमेंताहि
अपोनसनफाओ नाकोंसबअगमा
नभिलाषा १० ब्रह्मकरीअरुजुन
नवऐसी तुहमसेंकीन्हीहैजैसी
नानेंतनरकोंतजेंमें सविधिब्रह्म
दृष्टिकोंकरौं ११ ब्रह्मवेंसवहिन

कोस्वामी॥ग्रुरुसबहिनकोग्रंतर
जामी॥ग्रापकृतेसबकोउपजाउं
सबपोखेसबकोंबरताउं॥१२॥स
कलरहेंमेरेग्राधीनो॥मोहीमेंस
बहीवेलीनो॥तातेसबमेंहजानो
हीयोबिभूतिजानमनमाही॥१२
परिसेसोंवसेखकरिकहौतेरी
हेतहृरिकोंदकं॥सबरषिकनि
माहिरिषिक॥तिनमेंकालसक
लनेलषिक॥१४॥सोमेंप्रकृतिनगु
एकालादी॥पंचभूतमेंमेंभूता
दी॥सलरसकलबेदनमेंजानों
बडेनमांहिमहतत्वहीमानों॥१५॥
सबसुष्ममहिमांहिजीवदेषो॥
सबदुरजनमांहिमनलेषो॥वे
दजपनमेंब्रह्माजानों॥ॐकारा
पंचनिमेंमानों॥१६॥टं.....कमांहि
गायत्रीलहौ॥मेंअंकारग्रघहारके
विरंदासबदेवनिकेमधिसेंद्र॥

सकलनवसुनिमैमेंवैसंदर॥१७॥ती
नकंवयेकादसहरमै॥विस्मनामह
दसदिनकरमै॥तिनमैनृगुजेसपत
न्हारिष॥तिनमैमनूंजेसबैराजरि
ष॥१८॥देवरिषनमैनारदजोनोंको
मधेंनेधेनिमैमानों॥सिधनमैमैक
पिलसरूप॥पंषिनमांहिगरुडम
मरूप॥१९॥प्रजापतिनमैमैंदक्ष
षि॥तिलमैमकरजहांलौमैंझि॥बा
दनमैस्थ्यातमबाद॥सबसुर
निमैमैप्रहलाद॥२०॥सबपरका
सकमांहिदिनेस॥जषिरषिगण
मांहिधनेस॥तिनमैसोमसकलजे
उडुगण॥सबधातनमैमैंहूंकंचन॥
२१॥गजनिमांहिमैगजऐरावत॥
मैंहूंनगजेसिहिषरूपजावत॥तहां
बुहु॥जेसबजलजंत॥नागनमैमैअं
नंत॥२२॥नरनमांहिमेनरूप
जेस॥श्रवनमैबासि...रहेता...

ऐरवत हैयनमैंजांनौ।दंडधरनतिन
मैंजममांनौ।२७।सकलमृगमैंमैंमृ
गराज।सरितनिमैंगंगासिरताज स
रवआश्रमनिमांहिसन्यास।वरण
निमांहिविप्रममवास।२८।सकल
सरनमैंरूपसमुद्र।सकलधनुक
धारिनमैंरुद्र।मैंहूंधनुकआयुध
नमांही।परमनिवाससमेरुतेंनांही
२९।जेअतिगहनहींमालयतिन
मैंमैंपीपलसबबनासपतिनमैंमैं
परोहतमांहिबसेष्ट।तहांवरहस
पतिजेब्रह्मसिरेष्ट।३०।सेनांनत्मन
मांहिसेनांनी।धरमप्रकृतिकौंब्रह्म
जांनी।सकलअवधदिनमैंजव
गोहिजांनौ।पितरनिमांहिअरजं
मांमांनौ।३१।ब्रह्मजगपसबजगपन
मांही।बरतअडोहसमिकोनांही
[illegible]अगाहिजलसू निवांनी।अ
[illegible]मनयेमटसो[illegible]कमांनी।

तुरदेहज्ञातमाबिचार॥ब्रह्मचा
रीनमेंसंतकुमार॥ऋसत्रीनमैंस
तरूपारांणी॥पुरषनमैंस्वायंभू
मनूंजांनी॥२८॥सावधांनतिनमें
संबंतसर॥ऋमयगेरतिनमैंउर
श्चंतरमैंहूंधरम॥ऋमयकोदां
न॥गुह्यनहींप्रीयेमोंनिसमांनि॥
३०॥तिरीयापुरषसंयोगीजेते॥
ब्रह्माहूंतैंउरेंसबतेते॥सकलबां
नरनिमैंहनवंत॥कृतिनमांहिमें
मरूपबसंत॥३१॥मारगसरमांसनि
मेंजांनो॥निषत्रनिमैंऋभीजितमा
नो॥देवनऋसरहितजेहंद॥क
मलेकोसबबहिनमैंसु॥३२॥जु
गनिमांहिसतजुगसेनाम॥बेदन
मांहिबेदमैंस्यांम॥व्यासनिमांहि
व्यासद्वैपायन॥तिनमैंतुमजोबि
स्मपरायन॥३३॥कबिनिमांहिक
बिकुलहींउंजोसकिबिसंतन

महतनमांनौ।बिद्याधरतिनमांहि
सुदरसन।पद्मरागतिनमैंजेमनिग
न।३५।सबबनएणजातिनुमैंकुसजां
नौ।हौमबस्तुमैंगोघृतमांनौ।तिन॰
मैंधनजेसबबिवसाय।जयमारग
सबतिनमैंन्याय।३५।अंगसमाधि
योगअंगनिमैं।मैंहौंदमांछिमांव
तनमैं।धीरजमैंहौंधीरजवंतमैंब
लतिनमैंजेबलवंत।३६।छलनि
मांहिछलमैंहौंजूप।मेरेहेतिकर
मममरूप।बासुदेवसंकरषनबी
र।प्रद्युमनअनिरुधसरीर।३
७।नारायणहयग्रीवमहीधर।।
नरहरिअरुजमदग्निपुत्रबर
मृगहरचनमैंपूजाजांनौ।बासु
देवतहांमोकंमांनौ।३८।तिनमें॰
थिरताजेसबभूधर।फूरबचितनां
मसैंअपसर।मैंहुंबिम्बाकसुगंध
वे।धर।णीमांहिगंधमैं

रसजलमांहिसबदआकास॥रि
बससितारनिमैंपरकास॥तेजत्व
तूमैंपावकजांनौ॥बिपुमगतिनि
मैंबलिमांनौ॥४०॥बीरनिमैंग्रसु
नबक्रमांनौं॥तेतपतिग्रसघितं
मोतैंकरिजांनौं॥ईंद्रीयमनबुद्धि
दिकजेते॥मेरीसकतितैंबरते
तेते॥४१॥सबहिनकैसबअरथ
निगहौं॥तेजडतिनमैंचेतनरहौं
सबदसपरसरूपरसगंध॥तिन
तैंपंचभूतसैंबंध॥४२॥ईंद्रीयम
नमहतत्वअहंकार॥त्रिगुणसहि
तयेप्रकृतिबिकार॥प्रकृतिपु
रसजहांकछूजेतौ॥मेरोरूपसक
लहैतेतौ॥४३॥मोबिनकछुक
छूहैनांहीं॥मैंहीप्रगटरह्योसबमां
हीं॥जोप्रमांणकरैंमैंकबहीं॥तो
तिनपारहीपाउंतबहीं॥४४॥परमे
मनिरमलजेब्रह्मंन॥तिनकौंगिन

तपेरे मही येड।तातें कहौं बिभूति॰
कहां तौं। जो कछू मेरो रूप तहां तौं॥
अध॥ अरु अब युगति बिभूतिही क
हूं हेत डिढ़ ऐसी बिधि दहौं। अ
ज्ञाते जहं मो धन दांन। सुंदर तीय
सुवर जरूप्यांन। धई बलसौ भाइ सु
धीर जजहं। मम बिभूति जांनौं तहां
तहां। ये बिभूति तौसों कछू कही।
अति अपार कहिवे कों रही। अध
मन थिर स्काज करण ये जांनौं। यह
अपांन क देमति मांनौं। ईंडी य बु
धि देह मन प्रांन। निश्चल करि देषो
भगवांन। धठ॥ मन तैं सब आकार॰
उतारो। चेतनि मेरो रूप बिचारो। ये
क अखंडित जहां तहां सोई। आपा
पर दूजा नहीं कोई। धए॥ ऐसो ज्ञांनि
बूझ कौं पावो। बहुरि नहीं याम जगत न
हीं आवो। अरु तन मन ईंडी य अरु
प्रांन। थिर करि जिन जिन ध्यो मम ध्यां

ना॥५०॥ ताकेबक्रतनांतिआचरनं
जपतपदांनबरतादिककरणं
काचोककतसभरयोजलजैसें॥पल
पलसरवीजावेसबतैसें॥५१॥तातें
बचनकायमनध्यांन॥सबकौबं
धिकरैममध्यांन॥मोहिध्यायमोमां
हिसमावै॥तबसंसारमाहिनहीं
आवै॥५२॥दोहा॥जोउद्धवतोसौं
कह्यौ॥येबिभूतिकोग्यांन॥त्यौंही
सुषिमस्थूलसब॥देषोश्रीभगवांन
॥५३॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणे ए
कादसेस्कंधेश्रीभगवदुद्धवसं
वादेबिभूतिकथननांमषोडसो
ऽध्याय॥१६॥११२६॥श्रीकृष्णउवा
च॥चौपई॥दासनिमेंउद्धवनिजदा
स॥जाकेहिरदेग्यांनपरकास॥तिन
जीवनकीहितमनधरी॥तातेंप्रस्नं
कृष्णसौंकरी॥१॥उद्धवउवाच॥प्र
तुमकहनपश्चादितचाल्यौ॥भक्ति

निमतिधरमविसताऱ्यो।वरणाश्र
मऱ्यादिकनरजेते।तिनिधरमनि
सेलागेतेते।२।तिनमेंकोईनगति
हीपावे।कोईकरमसिंधुबहजाव
वे।तातेंतुमकरुणांमयदेवा।मार
यो।नरधरमनिकोभेवा।३।करम
करतजोंउपजेनकी।तुमरेचर
नबढेंअनुरकी।छूटेकालजाल
नवकूपा।नहेतुम्हारोब्रह्मसरूप
४।जद्यपितुनिविधिसोबिसताऱ्यो
जबबभृहसरूपतुमधाऱ्यो।मरि
बहुकालकहेतेभयो।तातेधरम
लीनह्वैगयो।५।हेंकछुऔरक
हेंकछुओर।तातेंजीवनपावेठौ
र।तातेंतुमकरुणांकरिभायो।व
देआनतेजीवनराख्यो।६।अरुयह
तुमहींमांझेंदेवा।तुमबिनदूजोल
हेनभेवा।तुमहीकहोसुनोंउरधरो
तुमहीरा।सोतुमहीहरो।७।

इकीस नामं कारी ॥ वेद जहां निति
मूरति धारी ॥ तहां कुं यह कोई न
ही जांनें ॥ त्यौं बंधे त्यौं सब वेद बषांनैं
८ ॥ श्रूलये कैसें करि मन श्रावे ॥ क
रम करें तैं मक्ति ही पावे ॥ श्ररु तुम
याही कौं तन धारो ॥ जातें निज धरम
निबिसतारो ॥ ९ ॥ जो बेकुंठ पयां
नौं करिहो ॥ ये निज धरम नहीं उचर
रिहो ॥ ता पीछें कोई नहीं कहिहैं ॥
ये निज धरम गुपत ही रहिहैं ॥ १० ॥ ता
तें श्रव तुम करुणा करो ॥ यह निज
धरम बेगि बिसतरो ॥ श्रैसी सुनि उध
व की बांनी ॥ श्राप न बोलें सारंगपा
नी ॥ ११ ॥ श्री भगवांन उवाच ॥ धरम
धरम उधव जन मेरे ॥ जो नहीं बरा
बरि तेरे ॥ मेरो निज जन कहीये सोई
है तन पराये बरतै जोई ॥ १२ ॥ तातें तुम
परकास अकरयो ॥ मोतें परम धरम
बिसतरयो ॥ उधव परम धरम मम

नकी।औरसकलतेंकरैनिरकी॥
१३॥भक्तिबिनाजोकोईधर्म।सोस
बजानोंपरमअधर्म।जबमेंप्रथ
मकीयोसंसार।तबनहिंकछुतोकर
मबिसतार।१४।जोईजेमांनवतन
धरैंसोहितस्वपतेईतेउधरैं।छिकक
सकल्लहेममधामो।तातेंसोक
लजुगसेनामो।१५।ॐकाररूपल
बवेद।ऐसेंकछुकतेंनहीभेद।स
बईश्वियमननिश्चलकरै।मेरोध्यां
ननिरंतरधरै।१६।ऐसेंसबपापनि
सरहरै।सबमेरेचरननिअनुसरै।
तेताबिषेनयेमतिमेंदा।बिषयन
तेंमांग्योंआनंद।१७।नितनिमतिअ
ऊतरिमकरैराजसतेंपापनिबिस
तेरो।तबतिनहेतबेदबिसतारे।ब
ऊतभांतिकैकरमनिधारे।१८।बर
णाश्रमकेभेदउपाये।न्यारेन्याकर
मगृहाये।आपनोंधरमत्यागिजोकरै

सो नर जाय नरककैमें परै १९ ऐसैं ब
हुविधि भये दिखायो घोरेक्रमनि
मैं ठहरायो तामैं नाथ्योत्रालमम
जन मोबिन और क रमकोतजन
२० बहुरयो बहुत्रारंभनन बहैं
राजसतैं नहीं निस्वनर हैं तिनके
हेतजन्म उपजायो बिस्मरूपक
हि सबनिसुनायो २१ बिस्मजनम
कीजे तामांही हैं लक्षि ग्यानिजेत
हैं मेमुयक्ततैं बिप्र उपजायो चत्री
बाहुनेक्रतैं बनायो २२ जंघनि
बैस पदनितैं सुद्र पदनी बैत्रौ
सब छुद्र पुनि गृहस्थ जंघनतैं
कीयो ब्रह्मचरयउरसंभव कीनो
यो २३ बनस्थल उपज्यो बनव
स मस्तकहुतैं संन्यास तातैं
सकल बितामैं येक मोतैं उपजे स
कल ल्येक २४ तातैं मोहि मैटि
जोकरैं सो सो सब बंधन बिसतरैं

जाजा अंगकुनैंजोउपज्यो।त्योंत्योंन
कोलखिणनिपज्यो।२५।कुंचेअंग
कुतैंजोकुंचो।नीचेअंगकुतेंसोनं
चो।तिनकेवकुविधिभयेसुभाव
नातैंउपजेनानांभाव।२६।समदम
सत्यखिमासंतोष।सदादयाललनउ
पजैरोष।तपअरुसौचनिमृत्तम
मनक।इनलखणनिविप्रअनु
रक्त।२७।वामांतेजबलउदिमधी
र।सूरउदारअचलगंभीर।विप्र
नकमेरोदिठभाव।येखत्रीकेभ
येसुभाव।२८।वृषिअरुलीकैंदान
अरुंभा।विप्रनकउदिमअरुरंभ
वेसनमोलीन्हैयेलखणमंदवु
धिफिरस्वाविचखण।२९।गाईरु
तिहूंवरणकोंसेवे।तिनतैंकछुल
हेसोलेवे।सत्यसंतोषकपटता
नांहीयेलखिणसुद्रनिमांही।३०।
मिथ्यावादअरुसोचिअरुचोरीवु

ह्निासत्तिकहिरदैकगोरी॥कांमक्रे
धअरुलोभनविकार॥वरणनीच
केयेपरकार॥३१॥कांमक्रोधमदअ
स्मारहित॥सत्यक्षिमांपरस्वारथ
सहित॥जीवदयाअरुजेअधर्म॥
योसबकोसाधरणधर्म॥३२॥ब्रह्म
चरयकेधरमहीकहं॥तातैंनक्रि
उपाईचहैं॥विप्रखत्रीबैस्यत्रिब
रण॥इनकौंसकलवेदविधिकर
ण॥३३॥प्रमाभ्रलादिकसंस्कार॥
तिहूंवरणकोंयेआचार॥जवतैं
बहुरिजनेउपावै॥तबतैंगुरकेनि
कहिरहावै॥३४॥बहुविधिगुरकी
सेवाकरै॥वेदपठैअरथनिउरधरै
जनेउमेषलाकरजपमाला॥डंड
कमंडलअरुमरगछाला॥३५॥
दंतबस्त्रतनमलनिनिवारै॥सीस
जटाहस्तनिकुसधारै॥आसनचं
लकदेनकरै॥लोकवारताहिरदे

नथरें उदी मुत्रपुरिय [illegible]
लोमरु [illegible]
में व [illegible]
क [illegible]
दव [illegible]
हीडारे [illegible]
व [illegible]
करि [illegible]
रेत्रिद [illegible]
विड [illegible]
कराउं [illegible]
ल वच [illegible]
गुरको [illegible]
थिकद [illegible]
यगुरुक [illegible]
रननदई [illegible]
जोई [illegible]
१ जब गुन [illegible]
[illegible]

की

तजात॥भोजनसैंनरातिइभांति॥
४२ नीचभांतिगुरुसेवाकरै॥
अंजुलिसोंपीछेअनुसरै॥ऐसें
बरतअखंडितधारै॥मनहूंमेंन
हिंभोगबिचारै॥४३॥ऐसेगुरुकु
लबरतेसोई॥जोलगिवेदसमा
पतहोई॥पुनिब्रह्मकेलोकही
चाहै॥तोगृहस्थतानहींसंबाहै॥
४४॥गुरुकोंदेहसमरपणकरै॥
वेदबिचारहिरदेमेंधरै॥गुरुअस
आपअगनिसबमांही॥सेवेमोहि
अवरकछुनांही॥४५॥जुवती
अरुजुवतीनुकेसंगी॥इनकोंक
दीनहीयप्रसंगी॥दरसपरसबां
नीपरिहास॥त्यागेदूरिमांनिअति
त्रास॥४६॥सौचअचमनअस
अस्नांन॥संध्यापासनगतअभि
मांन॥तीरथसेवाजपतपनिष्या
तजेद्रसर्वभावसमणइष्या॥४७॥मन

अरुबचनदेहबसिकरै।मेरो भज
नहिरदामैधरै।अरुममभजनस
र्वकोधरम।भजनबिनांसबधर
मअधरम।४८।ऐसैंब्रह्मचर्यब्र
तधारी।।दिढतपनिसदिनबेद
बिचारी।।बिगतपापऐसीबिधि
होई।मेरीभक्तिलहैतबसोई।।४
९।।ऐसीबिधिभवसागरतजै।मे
रेपरमपदकूंभजै।अरुजोकहूं
होयसहकांम।तोसोकरैजुव
तीअरुधांम।५०।कैनहकांमग
हैबनवास।कैअधिकारपायस
न्यास।अरुजोतपजैमेरीभक्ति।।
तोनहीकरैकछूंआसक्ति।५१।य
हहैब्रह्मचर्यकोधर्म।यातैंइजो
सकलअधर्म।अबग्रहस्थको
धरमसुनांऊं।सकलग्रहस्थनकूं
समझांऊं।पूराब्रह्मचर्यजोनहीव
रौबे।तोग्रस्थआसममैआवै।ग्रुर

तिंबेदपढैसबजबही॥गुरुदषिण
दियपुनितबही॥पूत्र॥पुरतैंग्राश्रा
लैजरध॥रै॥तबबिधिसौंग्रसनां
नहीकरै॥तबदेषैउतमकुलल
षिण॥करैबिवाहतिरीयाबिचष
ण॥५४॥जैसोंदेषेग्रपनौंग्रधिकार॥
सोंहीकरैबिवाहबिचार॥बिप्र
बिवाहैच्यारूंबरणां॥बिप्रछोडि
षित्री कोकरणां॥५५॥बेसिबिवाहै
बेस्यग्ररुसूद्र॥सुद्ररयेकईतुंचि
तछुद्र॥उतमसोजोयेकैकरै॥बहु
तनकष्टनहीबिसतरै॥५६॥सुरति
ग्रध्ययनजजनग्ररूदांन॥तिहूंबर
णकौयेकसमांन॥दांनग्रहनजज
करवांवन॥ग्रधिकबिप्रकैंबेद
पढांवन॥५७॥परियेतीनबरतहै
जैसें॥ग्रगनिमध्यजलबरषाजैसें
इनतेंब्रह्मतेजनहीरहे॥तातैंइन
कौंबिप्रनगहै॥५८॥करिकैंसिला

देहनिरबाहे।तातेंअधिकोनहींस
बाहे।बिप्रदेहपूरनतपपईये।सो
बिषयनसंगनहींगमईये।पुणीबज
तभोतितपकष्टहीकरीये।हरिज
निहरिहीकोंअनुसरीये।सिलाब्रर
तिकरिराखेदेह।नहींममताजुवती
सुतगेह।६०।अतिथपाल्नौंरजतम
नांहीं।मोहीकूंदेखेसबमांहीं।जीवन
मुक्तिहोय।सो बिप्र।मेरेचरननपावे
बिप्र।६१।जोकोईममभक्तिहीकरे।
ताकोंकष्टआपदापरे।सोआपदा
मिटावेकोई।सोमेरोहितकारीहोई
६२।ताकूंमेंउधारूंऐसें।नावनैसें
अंभोनिधिजेसें।परिब्रित्री।निजधर
मविचारे।सकलपालननांहिरदेधारे
६३।पित्रीसबकेदुखनिहरे।सक
लजीवप्रतिपालनकरे।सोखित्री
सुरलोकहीजावे।नासवसहितम्हा
सुखपावे।६४।जो आपदा

तो सो अबनिकू बरतिकौं कैसें जद्यपि
मृदंग बरतिहूं ऊंची परि सो सुति
हिं सातें नीची है ५ जो मित्री कौं परै
बिपती तो सो गहै बिन जकौ बरती
किंवा चित्र बरति कौं गहै अथवा
मृगया करि निरवहै है ६ बैस्य दी
परै आपदा कबहीं सुद्र बरतिसू
टारै तबही अरु जो बिपति सुद्र कौं
परै तो फलि लोमैं बरति हाथ धरै ६७
याबिधि जब ही मिटै बिपती तब
ही गहै आपनी बरती पंच जज्ञ ये
प्रतिदिन करनें ग्रहस्थनकौं नाहीं
परिहरनें ६८ करिकै पाठ रिषनकूं
जसै करि कछु होम देवतनि सै
नृननि बलि करि सराध सौं पितर जल
स्रनादि सब कनि में सो नर ६९ गीति
न सब दिन में मोकौं जानें और सब
न परि करुणा आनें जो मह जदकि
कूं धन पांवें किंवा न्यायकू कैसें उप

आवै॥७०॥तासौं लोग आपनौं पोषै॥
और जतन करि मोहि संतोषै जितौ ला
गति ग्रह में होई तितौ ही खरचै ऐसो
ही॥७१॥ और सकल मम हेत लगावै
भूलि न दूजे मारग जावै जद्यपि रहै
कुटंब ही मांही तोऊ लिपै कदे कछु
नांही॥७२॥ निसदिन हिरदे करे वि
चार मिथ्या मांने सब परवार॥ स्त्र
री पुत्र बंधु सब ऐसें॥ जल के निक
ट बटाउ जैसें॥७३॥ ये सब यों प्रति दे
ह लिआवै ज्यौं निद्रा में सुपनौं पा
वे॥ ज्यौं जोगें वारंवारा॥ तैसे ही
सुपन मे हारा॥७४॥ कोई ये प्रति
तेह ही आवै देह तजें सब जित ति
त आवै॥ अरु मोही सुर गादिक लो
क॥ पायें हरष गये अति सोक॥७५
तातें सकल वासनां दहै॥ अति
समान भवन में रहै॥ अहंकार मम
ता नहीं राखै॥ सब माया तें [illegible]

जानौं ॥ इहां सखी कै रमनि मेरे हित
करे मो बिचित्र नराय परहरे प्र
म भाव दिट उर मैं राषो ॥ औ रस क
ल हिरदा संतो ॥ ७७ ॥ ये कहौ
नमैं बन जावे ॥ किंवा ग्रह ही
मां हिर हावे ॥ ऐसो ग्रही मुक्ति क
र मानो ॥ और कछु हिरदै न हो आ
नौ ॥ ७८ ॥ गुरु जो होय न वन आस
जुवती सुतादिक न सो अनुरक्त
बिषया लंपट उर सम ताखा हुराग
न रहित करमनि मैं चातुर ७९ ॥
नहीं पर बिसता हि न जानौं ॥ और न
की चिंता उर आनौं ॥ माई बरघ
न है मेरे मो बिन दुष न है बहु
रे ॥ ८० ॥ ये अबला तन घु संत नि जा
मो बिन ले युक हृ गति ताकी ॥ ये
ना थ मो बिन स ब बाला ॥ ज्यों क
जी वै क रि के हाला ॥ ८१ ॥ मो बि
जी वै न पुले पाले ॥ को न बिधि

कूंटालोऐसेनिसदिनऔनेंचंता।
कहूंनहींहोवेनहैचंता।७२।करे
नसुखपावेयालोक।ग्रसोरहेचित
बहेसोक।याविधिचिंताकरतत्र
ऋपार।नरकहीजावेबारंबार॥
७३दोहा।ब्रह्मचर्यग्रहचर्यको
मैंभाख्योयेधरम।यातेंउद्धवऔर
कछूसोसबजानिऋधरम॥७४॥
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेयेका
दसस्कंदेश्रीभगवदउद्धवसंवा
देवरणाश्रमधरमनिरूपणोनाम
सत्रदसमोऽध्याय॥१७॥१३७६॥॥
श्रीभगवानउवाच॥चोपई॥अब
मैंकहूंधरमबनवास।ग्ररुग्रधि
कारसहितसंन्यास।जातैमेरीभग
तीपावे।भक्तिपायममचरनहीग्रा
वे।१।वरसपचासहूतैंउपरंत।त
बबनजायरहैइकंत।नारीसुत
नमेंरहेनदेही।जोवेदेख ग

लेही र कंदम नफल हूनिहीक
रे बनकन्मृगछालातनधरेत्
ापणोनिकीमेजमेवारे ईडीयन
केसलब्रथनिवारे ह केसरो
मनबहूरिनकरे हेहदतमलन
हीपरहैं मूमिसैनक्रिकालसना
नामलनक्षतारैमूसनमनतांध
प्रीथमरिनुदचाक्षनिधिमधेनर
गोमेंछायानहींनांहैसीससकन
जनधारामहैसैनकालजलसा
धीरहै धूत्रैसीनांतिकरेतपञ्च
कर हंदनमार्देजोजनपुकेरा
ञ्जगनिपछरिनुभक्कफनादीमे
जननघूपवित्रछनाहिईमसल
तुमलकेपायोन केंदननिसों
थोहेधांनदेहजोबकाश्रापहीगं
नेञ्चछिकनगहेनमनवयजानेउ
तिनहीतिनसोमोकोंजेश्रीरज
नलनलासीनजे ञ्चमितहोनञ्चरु

एमास।स्योंरीइसञ्जलचातुर
मास।८।इनसबहिनकोंममहित
करे।सोबिनञ्रोरक्रिदेनहीधरे।
योंतपकरिमोकोंञ्राराधे।।प्रांएदे
हइंद्रीमनबांधे।।ए।योंहैसुध
त्तहैममभक्ती।।ञ्रोरत्रिगुएविस
तारबिरकत्ती।योंतबहीममच
रएनिपावे।।केक्रमब्रह्मलोक।
हैञ्रावे।१०।ञ्रसजोञ्रैसेकष्टही
करेपरिकामनांहिरदामेंधरे।ता
समम्रखहूजोनांही।ताकेबथो
सकलश्रमजांई।११।योंपचहन
रिबर्षनिपाहो।गहेसुद्धसंन्यासही
ञ्राछे।सकलक्रयाकेत्यागही
करे।मनसोंममसेवाञ्रनुसरे।१२।
कर्मरचितसबलोकनिजांनें।ता
तेंपिएभंगुरकरिमांनें।ताहीक्रनें
करेसबत्याग।मनबचकरमसों।
रिदबैराग।१३।वेदबहि

ाकोंजजे॥कुत्विजकोंसर्वस
जे॥जबकोईसंन्यासहिकरै॥तब
हिसुरबिघननिबित्तरै॥१४॥परिये
बिघनगणोंकछुनांहीं॥मेरेचरणध
रेउरमांहीं॥जोकछुकस्वत्रहिय
थे॥तोकोपीनऋोरसबनाथे॥१५॥
दंडकमंडलकरमैंधारे॥ज्योंमल
त्योंनहींऋोरबिचारे॥रषिदेषिध
रणीपगधरे॥वस्त्रछांनिजलपान
हीकरै॥१६॥सत्यवंतबांनीकंबो
हिरदैबिचारिकदैनहींडोलै॥मो
निधारिबांनीकूंदंडै॥ऋरुकाया
केक्रमहींषंडै॥१७॥प्राणयामम
हीवसिकरै॥सबईंद्रीयऋरथ
रैपरहरे॥ऋरुचंहननहीतामा
भेषधरेंजतीसोनांहीं॥१८॥मि
करैसत्रघरबिप्रऋोरकरू
कुगहनद्विज॥सोकविप्रचतु
भिजेतेजांतिरहैं॥निसाकोंते

१९ विप्रकहीजेदसपरकारा।ति
नको तुमसोंकहूंबिचारा।देवबि
प्रबिप्ररिषिहीजांनों।विप्रविप्रछ
त्रिबित्रीमांनों।२०।बैस्यसुद्रछ
मेकबिंडालना।१मूरुम्लेछबिप्र
चिंडाल।भिखानिलछरुपटैप
ढवैसकलनछरथछनतत्वबता
वै।२१।जतईडीयसीतलसंतोष
देवविप्रसोनिरगतरोष।नपछ
रुसमछलंस्याकरै।दिनदिनघट
करमनिछनुसरै।२२।कालनोप
कबहूनहीहोई।रियोर्षेस्याएक
हीयतुहैसोई।किनहिंस्यापनम
लेनेलावै।तिनहांमिटदरै।वर
तावै।२३।बरखामीनअमनमदन
ले।बिप्रबिप्रजिनिप्रभाहिमते।क
स्वादिकनिकरैलागेर गाविंदन
जैतनमोह।२४।र्वबिप्र
चारंनहताबि

अरु जो उत्तम वनिज ही करै ॥ पसु
राखै षेती विसतरै ॥ २५ ॥
ब्राह्मण कहीये ताते लेनि रहोत
नहीं गहीये ॥ तेल लोंण हु तहु धरु
लक्षा ॥ तिल अरु नील महीमधु
मक्षा ॥ २६ ॥ इनको वनिज करतु
है जोई ॥ सुंदर विप्र कहीय तु है सो
ई ॥ सब भूतन के द्रोह है ॥ करै सब
के छिद्र निदेषत फिरै ॥ २७ ॥ प्रति
दिन हंस्या सों अधिकार ॥ विप्र क
हावै सो मंजार ॥ भक्ष्य न भक्ष्य
कार ज कार ज ॥ गमि अगमन ल
षै न नारि ज ॥ २८ ॥ कृतघनी सकल
पसुनि के लषिण सो पसु ब्राह्मण
कहै विचक्षण ॥ वापी कूप तलाव
वबुरावै ॥ वन बागादिक नास क
रावै ॥ २९ ॥ संध्या अरु सनांन न जानै
॥ ऐसो विप्र मलेछ बषानै ॥ निंदक
लोभी परधन हरै ॥ निरदय क्रूर पि

सुनताकरै।३०।मोचिंडालविप्रक
रिमांनौ।जैसैदसविधिविप्रजां
नौ।तातैंउतम।मेसाकरै।औरस
कलहरिपरिहरै।३१।मातघरन
तैंभिक्षापावै।ताहीकरिसंतो
षउपावै।सोलैजावैनदीतडाग।ता
तैंकछुयेकरैविभाग।३२।कोईमा
गेताकोंदेई।कैजलमांहिप्रवाहक
रेही।बिचरैधरणीकैन्हसंग।क
देनकछुसंवारैअंग।३३।तनम
नइंद्रीयनिग्रहकरै।मेरोरूपहिर
दामैंधरै।निसदिनरहैग्यानमारं
मो।बिषयसुषनकोसुनैनकाम।।
३४।समदरसीग्रसधीरजवंत।स
दारहैनिरभययेकंत।मेरैमावन
योग्यतिसुद्धमगंविवेकीजोजन्मह म
ध।३५।ग्यापुहीमांहिविचारैयेक।।
कदैनदेषैमूलिरूपनेक।ग्यानमग्रं
नत्तमकोजांनै।४५मुं।.रो

म्मांनैं॥ त्र्हि॥ बेधनजबईड़ीयनृ
बसिहोइ॥ मुक्तिईड़ीयनबंद्दैस
ई॥ स्त्रैसेजांनिईड़ीयनजीतैमो
हिसुमरितैंकालबिदीतै॥ ३७॥
दोहृलोकतैंहोयबिरक्त॥ तिन
कूंनहींहोबैस्नासक्त॥ पुरग्रांमा
दिक्नाथेजोपरै॥ भिक्षास्वरथप्र
बेसहीकरै॥ ३८॥ देसपबित्रसेल
बनिसरिता॥ बांनप्रस्थजहांस्ना
चरिता॥ तहांतहांनितहीचलिजा
वै॥ तिनस्त्रासमैंनभिक्षापावै॥ पू
तिनतैंलहैसिलाकोस्नंन॥ तातैंहा
वैमनप्रसन्न॥ ताहीतैंनिरमलनतूल
त्पजेज्ञांनसकलमलदहै॥
४०॥ ईड़ीयस्वरथनिसत्यनदे
॥ स्याग्नंगुरसबनसुरलेषै॥
तैंसबतैंगहैबिरक्ती॥ नहीउ
द्यमनहींबिषैस्नासक्ती॥ ४१॥ ये
कारकतजांनैंस्नात

मक्षिपैसुपनसममांनैं।कदेनहिरदै
चितवनिकरै।मनबचकरमहूरि
परहरै।४२।ऐसीविधिजबतपजे
ग्रांन।हेय्यविरक्तजेसबग्रांन।।
मेरीनगतिहिरदैमैंग्रावै।तबसब
बर्णाश्रमछिटकावै।४३।विधिन
षेदरोऊभरमजांनैं।वेदश्रुमृत्य
कीसंकनमांनैं।श्रुतिपरिबुधिना
लैंसमरहै।विधिनषेदकछुकहत क
नगहै।४४।सबजांनैंपरिज्यौंउन
मंत।चेतनइमदीसैंजडवंत।प्रवि
तबाँरतनहीहोई।कबहूबादन नी
गनैंसोई।४५।बाहरिमधियेकस
मरहै।कबहूकोईपथिनगहै।ज्यौं
ज्यौंकहैसुनैंत्यौंत्यौंही।तत्वसतो
नहीत्यागैक्यौंही।४६।काहूतैंउद
वेगनआंनैं।स्थूलकाहूकौंआपन
जांनैं।निराश्रादिसहैडरवैंन।
धरैंनिरंतरचैंन।।४७।

पमांननकरै मनकरमबचनम
नखिसनरै पसूनमानिबैरादि
बांनै सकलबिकारदेहकेमांन
४८ ज्योंआनमअपनेतनमांही
सोहीसबमेंइजोनांही ज्योंवडघ
टनिमांहिसलिलयेक घटनिसंगजं
नीयेअनेक ४९ तातेंइमअनिम
होकरै सोसबआपहीकूंबिसत
रै तातेंआतमबुधिहीराखै भेद
देहकृततेसबनाखै ५० समय
समयभोजननहींखावै तोकिक
छुनमनमेंल्यावै करमरचितस
बदेहजानै तिनहीतेंसबसुख
समानै ५१ तेसबसुबडुपकर
सरीरमोआतममेंजोसुगनार
नलअहारहीननहींनाखै त
मलकोरिआतमहीराखै ५२ प्राण
राखेहैवबिचार नहैमोहिबू है
नार जोमेरी ऊंजोतेंआवैन

नममधिमसोकत्तुपावे पुत्रयोंकू
सनकसुादिकचहे जैसेंमांकेन
सोगहे प्रीयेत्रपुयेकेच [illegible]
मैशोकमिथ्याडकरमात्रे [illegible]
के कटेकनम [illegible]
रसकलपर [illegible]
सखसनंनो [illegible]
ननोनो ५५ [illegible]
रेमोक [illegible]
रैश्रुतिको [illegible]
मितुहैमांवे [illegible]
रमनिमानर [illegible]
नमैधेर [illegible]
हो विधिन्दर [illegible]
५७ [illegible]
कनिके [illegible]
नेरडिहिक [illegible]
मन है [illegible]
है नोमें [illegible]

बक्रस्योंसो नवमें नहीं आवे मेरो
निज निरमलपद पावे पूर्ण स्व
जाके उपजे बेराग कस्यो चे हेय
न कको त्याग परिमम नजन यु
गति नहीं पावे सो सैत गुरकी स
रण ही आवे ६० सरम ही बिना
न है सो नकी पावे मोहि हेय न
व मुक्ती गुर कं ब्रह्म रूप करे देखे
मां नव बुधि कदी नहीं लेखे ६१
सरधा सहित अ स्यात जे मनक
मे बचन निरंतर भजे जो लग बू
विचार ही पावे तो लग गुरु तजि
क कं न जावे ६२ पीछे ज्यों चा
सो रहे परहंस के धरम निगहे
परि जिन पद रिपु जीते नाहीं ६
व अरण बिचारत मांहीं ६३
च लबुधि न ग्यान बेराग ताको
कलह या है त्याग नेष दि
जीव का ककरै ताको दोष कल

हीपरे।६४।देवपितरियभूतनिनं
थे।तिनकोऋणअमणोसिरराथे॥
अंतरगतिमेंताहिछिपावे।आपही
बंचेबेदउपावे।६५।सोसुषकोंन
लहेयालोक।अरुसोंनृछहोय
परलोक।येहेबरणअमकेधर्म
इनतेंभगतिलहेदहिकम।६६।
अबच्यारोंकेधरमप्रधान।न्यारेन्या
रेकरोंबषांन।समअरुअहंसासं
न्यासीको।श्रुतिविचारतपबनबा
सीको।६७।ग्रहमेंदयाजज्ञमयक्ष
माब्रह्मचरयगुरसेवाधर्म।ब्रह्मच
रयतपसोचसंतोष।सकलसुह
ररक्तिजनहिरोष।६८।मेराम
जनसकलमयकारण।येसबति
नकेधरमसाधारण।ग्रेहीदेहबा
नितारतिदान।भूलिनगयनक
रेहिनआंन।६९।यां ब
अपनेधरम।

रम॥सबमेंजानैंमेरोभावकाह
परिनहींधरैंभावा५०॥सोप
मेरीढिटभक्तिऔरसकलतैंक
रैबिरक्तिताते५पजेमेरेआ
देषेमोहिमिटैसबअ्ञान॥५१॥
सोद्वैपावैममरूप॥नकरिन
वैयाभवकूप॥जेहैंसकलब
आश्रम॥तिनकेयेमेंभावध
५२॥भगतिसहितयेमोहिमि
भक्तिबिनांभवसिंधुबहावे॥
सोतत्वलहैतेतिरे॥औरसक
नितजनमैमरे॥५३॥दोहा॥
हवतासोंकह्यो॥वर्णआ
धरम॥जातेंममभक्तीलहै॥
बंधनकर्म॥५४॥इतिश्रीभा
महापुराणेएकादसस्कंधेश्र
वद्उ्धवसंवादेवरणाश्रम
निरूपणनामसप्तदसमो
नाय॥१७॥श्रीभगवान

च॥ चौपई॥ उद्धवये वरण अरु आ
श्रमा। तिनके मैं सब भाषे धरमा॥
इनमें रहे मम भक्ति उपावे। तातें
मेरो ग्यांन नहीं पावै॥१॥ ज्ञांन नहीं पाय
सकल भ्रम जांनैं। वरण आश्रम मि
थ्या करि मांनें। सब साधन तजि मो
कें आवै। और कछू हिरदै नहीं ल्या
वै॥२॥ ज्ञांनी के मैं ही हों साधन अ
रु मेरो ही नित आराधन मो ही क
रि मोकैं आराधै। तन मन इंद्रीय
मो सें बांधे॥३॥ मो बिन सुरगादिक
नहीं लेई। मेरे ही चरण नि चित दे
ई। मो बिन मुकति कदे नहीं गहै
मो बिन सकल बासनां दहै॥४॥ मैं
ही हित मैं ही ताको प्रिये। मो बिन
ताकें अति अप्रिये। जो है सहित
ज्ञांन विग्यांन। तेही जांनैं मोहि सु
जांन॥ भू ग्यांनी तें मेरे प्रिय नांही॥
सदा वसे मेरे मन मांही॥ मैं ता

रोहै सो ऐसी है। जो नहीं पर सपर कोई
ई जप तप तीरथ बरत अरु दांन
कहैं कहां लगते विधि नांनां ते सब
करैं नहीं फल अैसो ग्यांन कला तैं
होवै जे सो ७ ताते ग्यांन हिरदै मैं धं
रो ओरे साधन सकल निवारो स
बमैं रूप आपनो जांनो मोहि जांनि
प्रभु सेवा ठांनो ८ हो करि सहित
ग्यांन बिग्यांन ९ दैबे सकल ये कभ
गवांन। बक्तै निज मम रूप समायै
जहां जाय कोई नहीं आयै ए जब
ही प्रांणी ग्यांन ही पांवै तब ही मम
निज रूप समावै ग्यांन बिनां नहीं पा
वै मोहि। ये निज मतो कहतु हूं तोहि
१० उद्धव तो मैं बिबधि बिकार ज
नम मरण सुष दुष बपरकार ते सम
स्त याही तन के जांनो सो तन माया
मकरि मांनो ११ आप ही सुद्ध निरंज
न देषो है तन अतीत ये ककरि लेषो

येजैसकलप्रगटदेहादि।तेअज्ञान
मेंमैंहतेनआदि॥१२॥अरुअंतनकि
रहेकछुनांही॥अरुअग्यानकुंनं
बरताई॥ज्ञानदिष्टकरिदेखैजब
ही॥त्रिगुणरहितआपहैतबही
१३॥जैसेंरज्जुमांहिअहीकहै॥आदि
नकुंतोअंतनहीरहै॥भर्मतेंमध्यमं
दमतिमांनै॥हैनांहीपरिहैसोज्ञान
१४॥स्योंदेहादिकसकलभ्रमदेखो
आपहीसदाकुलमयलेखो॥ऐसो
सुनिहरिजासौंज्ञानहीं॥उद्धवज
नभूल्यौभगवांनही॥१५॥[illegible]॥हे
प्रभूग्यांनकृपाकरिकहौ॥मेरेनां
नांभर्मबैदहो॥अरुस्योंहीनामोवि
ज्ञान॥भक्तिआपनीपरमनिदांन
१६॥जाकौंचाहैसकलमहंत॥जा
तेंहोयजगतकोअंत॥जाबिनज्ञा
नध्यांनकछुनांही॥साधनसकल
वृथाहीजांई॥१७॥जाकौंपाययमुक्त

तिनहीलेवे॥ओरसुषनिपरिद्दिष्टि
नदेवे॥ऐसी भक्तिकृपाकरिक
अपनेजनहि॥औरेनिरवहे॥१८॥
यभवसागरविकटअनंत॥
भरमतनपावेअंत॥तापरितपेत्र
विधिसंताप॥तिनमेपरेआपही
आप॥१९॥तातेजीवमहादुषपा
सुषवांनेसोदुषकेआवे॥ताकौ
जोरदिकनांही॥मेबिचारिदेषा
रमांही॥२०॥तुमरेचरणछित्रसिर
धारे॥सोसमस्तसंतापनिवारे॥ताकौ
दसंदिसअमृतबरषे॥ताकेदस
औरसबहरषे॥२१॥ज्योंकाहूकं
गालहीलीजे॥ताकेसीसछित्र
जेसोकैनपम्हासुषपावे॥पुरुओ
रनकेदुषमिटावे॥२२॥स्योतुवच
णछत्रसिरधारे॥सोआपनेसबदु
निवारे॥निरभैतीन्योंलोकनिमां
तासमऔरकहूकोनांही॥२३॥

रजोताकीसरणहीआवे।तेतेसक
लपरमसुखपावै।यामनवकंपप
सौवेहाल।तापरिडस्योमहाअती
काल।२४।तातैंविसईविखैसुख
जांनै।तिननिमतवक्रूरदिसगांनै
तातैंसदाश्रमितपावै।जाकोकव
हूंअंतनआवे।२५।ताकौंकृपाक
रिपियुखपीवावौ।काढिकंपतेंमि
रतकजीवावो।वचनअंमृतकी
बरषाकरो।अपणोगुणनिवांधिन
रहरो।२६।तुमहीजगतपिताजग
स्वांमी।जगपालकजगअंतरजांमी
ऐसेबचनसुनेभगवांन।तबउध
वसौंभाख्योंग्यान।२७।श्रीभगवांन
उवाच।।उद्धवश्रमकरीतुमजोई
धरमपुत्रकीन्हीतिनसोई।सरसज्ञा
नैंनीश्रमपरे।हमकौंसुनलवचन
उचरे।२८।तेईआवमैंतुमहीसुना
ऊं।भक्तिग्यानविज्ञांनजनाऊं।एर

तिनहीलेवे॥ औरसुषनिपरिहिये
न देवे॥ ऐसी भक्तिकृपाकरिकहै
अपनेजनहि औरेनिरवहो॥१८॥
ये भवसागरविकट अनंत जामैं
नरमतनपावे अंत॥ तापरितपे त्र
विधिसंताप॥ तिनमेंपरेआपही
आप॥१९॥ तातेंजीवमहादुषपावे
सुषवांनेसोदुषहेआवे॥ ताकौं ग्र
जोरछिकनांही॥ मेंविचारिदेष्यौ
रमांही॥२०॥ तुमरेचरणछित्रसिर
धारे॥ सोसमस्तसंतापनिवारे॥ ताकौं
दसंदिसअंमृत बरषे॥ ताकेदरस
औरसबहरषे॥२१॥ ज्योंकाकूके
गालहीलीजे॥ ताके
जेसोकैंनपम्हासुषपावे॥ रुजे
रनकेदुषमिटावे॥२२॥
णछत्रसिरधारे॥ सोअपनेसबदु
निवारे॥ निरभेतीनोंलोक
तासमऔरकछूकोनांही॥२३॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हिनवेदे॥प्रेमसत्रुउरगूंथेहीनेदे
औसेंजबममभक्तिहीनहे॥तबत्रू
सेषकछूनहीरहे॥५२॥साधन
नहेसोसकल॥कालनकरमतेहीन
अकेंन॥जबमोविषेचितकों
जबकेसांतिकरजतममारे॥५३॥
रमेंस्वर्जज्ञांनवेराग॥इनकोंसह
जिलहेबडभाग॥अरुजोमेरीयु
क्तिनपावे॥देहगेहसोंचितलगावे
५४॥तबहोवेरजतमअधिकार॥
धेअधर्मपरेसंसार॥बंधमु
तहीकारण॥बोरेचितअतहीताप
ण॥मोमेंधारेमोकोंलहे॥भवमेंधारे
वमेंबहे॥तातेंधरमज्ञानवेरागइ
रताआदिकजेंभाग॥५५॥तेसमस
मेरेआधीन॥तातेंहोवेममलोली
सेवतमोहिसकलयेपावे॥मोवि
नकोइनिकटिनआवे॥५६॥मेरी
क्तिकहोवेधरम॥उधवहजोस

मै

अधरम।येकअसदरंमनसोगंना॥
आदिभिओरसकलअज्ञान॥१८॥
अरुतहवसोहैबैराग।जोममदाबि
षयनकोत्याग।अरुयेश्वर्यसिदि
आणमादि।ममसेवककीसेवकआ
दिपुण।तातेंजेममसरणहीआवे॥
तेहीमुक्तिमुक्तिसुषपावै।१८।तिन
अैसेअद्भुतबेनजबकहेइसप्रक
रिहरि।तबउधवजनहरषिकरि
कीन्हीहरिसौंप्रस्न।१८।उधवउवाच।
दोहा।हेप्रनप्रणतकरुणाकरे।जैते
हें।जविविधिजतनें।जोनमहंतन
भक्तिकतनाहें।अद्भुतिहिकैं[illegible]
नहीरायेहै।१८।अरुबैरागादिक
जाएभेद।अबसंदेहमिटाय।जैसें
सकलतत्वसोभायो।सोकअन्त
रिकरिनायो।१८।यमकहो[illegible]
परकारअरुत्यौंकहौनम[illegible]
रानुसमकौनकौनहमरे[illegible]

नथिमांअरुहूँतिकोनेवा॥६४॥कौंन
नसूरताअरुतपदांन॥कौंनसतिः
कोफेववखांन॥कौंनत्यागकोधन
हेइहा॥कौंनजतदविणबैरिहा॥
६५॥बलअरुदयालाभअरुसुप
बिद्यालजासोभाइया॥पंडितमू
रखग्रहसतपथस्वरगनरकसु
रबंधुकुपंथ॥६६॥कौंनदरिद्रकौं
नधनवंत॥कौंनकृपणकोईस्वर
जवंत॥अरुरनतैंउलटिहैजेती॥
अरुसमअरुदमआदिकसबतेती॥
६७॥मोसोंदेवकृपाकरिभाषो॥राष
तत्वअरुतत्वहीनाषो॥योंसुनिबड
उद्धवकीप्रस्न॥तबकरुणाकरि
बोलेकृस्न॥६८॥श्रीभगवांनउवा
च॥हिंसारहितसतिःअसतेयासंग
बिवरजितसबकोहेयं॥लज्जामोनि
अ(?)सतिकथीरः॥ब्रह्मचर्यअरुनि
भा(?)ग्नेरः॥६९॥धेदमनसयमगहेनि

हतौ।अरुत्यौंहादसनेमप्रहतौ।सो
चस्कपटरहितधरमादर।जपत
पअरुममपूजासादर।७०।तीरथ
अटनअतिथकौंपोषै।गुरसेवा।
अरुदिढसंतोषै।परिउपकारहैं
मविसतारै।भुक्तिमुक्तिचाहैसोधा
रै।७१।समजोमोमैनिस्टाबुधी।दम
इंद्रीयनिग्रहमनसुधी।जोहूमनि
उपजाबैकोई।तिनतैंजाकोंदुयमन
होइ।७२।सकलनसैंहैकछुमननहीं
आनै।ताकौंसमजनधिमांवषानैं।जि
नाईंद्रीयचंचलनहोई।तिनदोस्यौ
कौंधारैजोई।७३।रसअरुअवलंब
कौंनहींगहै।जाकेमैंरेजनहैतिक
रै।भूतजीहत्यागसोदांन।सोगतज
नसोतपनहींग्यांन।७४।सोहीसूर
जोजीत्येस्वभाव।सोहीसतिसक-
लममभाव।सोकौंलीयेवचनमे
सति।सोविनुंबोलैसकलअसति

७५ करमनिमेंजोहेयञ्ञसंग॥सो
वेहे परसोवहेञ्ञ्ंग॥सोहैत्यागत
जेफलनकरम सोधनईश्वरमःम
मधरम ७६ जगपरूपमेंहैंनही
ग्यांन सोदछिणांदेयममग्यांन॥
प्रांणायांमप्रमवत्तनकहीये॥जा
करिवडोमतुमनगहीये ७७ भ
ग्पजोममयेश्वयैहिपावे चेतनि
जानंदकैग्यावे मेरीनक्रियेकये
लाभ नक्रिविनांसोसकलञ्ञलाभ
७८ जातेंभेदमिटेसोविद्या उधव
ह्लीसकलञ्ञविद्या लज्जामांनि
ञ्ञकरमनगहे ममजनताकूंल
ज्याकहै ७५ नहकेंचननिरपे
छितिरलोभा इत्यादिकजेगुणते
सोभा सोसुधःजोसुखदुखअतीत
दुःखजनयापत्रञ्ञनहीसोत ८० वि
षयनकीञ्ञञ्ञा दुःखञ्ञनो गुणसं
पनञ्ञाढ्यासोमांनो वंधमुकतिकी

उक्तिरिजांनैं।समजनपंडिततांहिं
बसांनैं।८१।अहंकारजाकेजगञ्चा
शि।अपनेकहेदेहैगेहादि।सोसम
स्तमूरषहीजांनैं।यातैंश्रौरमांतिम
तिमांनैं।८२।जाकरिमोहिनहेसो
पंथ।जोपरनरतिसोसकलकुपं
थ।नितिसंतोषीसीतलहिरदय॥
सुतिकथतसबनपरसुहृदय।८३।
ऐसैसरगसुषकोभंडार।नरकनि
मैतमसबधिकार।सतगुरएकहि
तूकरिजांनैं।श्रौरसकलयेवैरीमां
नैं।८४।सतगुरहैसोमेरेरूप।जानैं
जीवतजैपरकूंप।सतगुरबिनबं
धुनहींकोई।सतगुरबिनसोवैरीसो
ई।८५।मांनवतनसोहीग्रहकहीये॥
ताकेग्रंहेंग्रेहीकैरहीये।सोदरिद्र
सोत्रसमांवंत।कृपणईडीयनब
सिबरतंता।८६।विषयनअनासक्त
सोईस

व

स इतनी ग्रन्थ कही मेतो मैं जाजा
विधि नु म इच्छी मो सों ८७ विधिनवे
धके न धिगा जैसे महापुरष जांनत
है तैसे विधिनषेदकों जो लौं जांनै
कंचनी चक्षकु मेद निमांने ८८॥
सो वह सकल निषेध ही जांनो ने
दछि हू में विधि मत निमांनो विधिरू
षेध निषेधे देषो दफ्तें परे ताहि बि
धि लेषो ८९ विधि निषेध पस्मांन
व मांने पंडित कदे है ते नही ज्ञांनै
तातें विधि निषेद न रम जांनो मेरो
प सकल करि मांनो ९० विधि
न भेद न म जांन नो ज्ञान कह्यो जव
कुल भेद वचनन व सुम रिके
वकी नी ग्रन्थ ९१ ... नानवत
... ...
... ...
... ...
हे वन्नजी तुम कल्प करो मे

सोपेसंसयपरिहरो।तुमरीआगमाक
हमेभेदा।ताहीमैंदोयतु:हैभेद॥१॥
बिधिनभेदसोवेदबमानैं।ताहीतें
सबकोईमानै।तुम्हरीआगमाकौंभ
मैलेषे।जातैंबिधिनभेदनहीदेषै
र।अरुयेप्रगटदीसेदेव।बिधिनभे
दकेबहुबिधिभेव।परगटबिधिव
रणरुआश्रम।तिनकेबिबधिमां
तिजेक्रम॥२॥जिनकेप्रगटफलसु
रगादी।अरुकोनहींयेपंषसनादी
अरुनयेदप्रगटप्रतिलोम।त्यंव
र्णादिकजेअनलोम॥४॥वरणनिमें
संकरहैंजेते।अरुतिनकेक्रमैंपुनि
तेते।तिनकेफलपरगटनरकादी
कहेजुतेंफलजायनबादी॥५॥
जाकेफलहिवेदऔकहैं।ताकौं
करिनरसोंहीलहें।अरुत्यों द्रव्य
देसघयकाल।प्रगटबिधिनियेद।
आपात्र।अरुलोबिधिनिभेद

हीसत्य॥तोसुषसुरुडषफलबड
सत्य॥कोईस्वरगनरकनहीजावै
तोबकुक्रमकरिबिधिनकरावै॥
७॥सुरुकहाकहीयेबारंबारा॥तु
म्हरेबचननज्ञानप्रकारा॥येतोके
हौतुम्हारोबेद॥जातेंबिधिनभेदको
भेद॥८॥देवपितरमुनिमांनवजेते
बेदनयनकरिदेषैतेते॥बिधिनि
षेदतिनकेफलजांनें॥सुरुसोंही
सोतेकवांने॥९॥सकलतुम्हारी
आग्यामांही॥ज्योंज्योंथापेसोबर
तांही॥सोमिथ्याक्योंकहीयेबेद॥
याकोमोहिबतावोभेद॥१०॥हुबिधि
बचनबढेसंदेह॥वेहेमतिकिधो
भ्रमयेह॥येसरणसंदेहमिटावो॥
एकांतिकेबचनसुनावो॥११॥
याबिधिपरस्रानबिसतारो॥प
नेरचेजीवनिसतारो॥सुनिस्रेसी
ह्रदेकीबांनी॥तबबोलेश्रीसारंग

पंनी॥१२॥श्री भगवानउवाच॥ उठ
वु पर ग्यान अवकहौं तेरे सब सं
देहहीदहु॥ मैं भायेहैं तीन उपाइ
क्रम भक्ति ग्यान सम झाइ॥१३॥ ज्यौं
जाको देख्यो अधिकार॥ ताकौं तैसो
कीयो विचार॥ जो भाखो सबहिन सों
ग्यान॥ तेन विषई तजेन आन॥१४॥ ता
तें क्रम क्रम सकल तु डारे॥ तेऊ
ग्यान मधिवहरां जे॥ तातें वचन सक
ल मम सत्य॥ विछिन भेद तु नहीं अस
त्य॥१५॥ परिये सकल ग्यान के कारण॥
जोन लहै तें सकल निवारण॥ ये तुम
सो दीवु सकी जांनौं॥ तातें कहु सं दे
हु न आनौं॥१६॥ जिन नवसुख सोहै
सो जांनें॥ वुह लोक लौं नस्वर मानें॥
तातें तिनके उदि म दहे॥ औरस क
लन तजि थिर ह्वै रहे॥१७॥ तिनकौ ग्या
न योग अधिकार॥ थिर ह्वै करण॥ व
सविचार अरु जिन विषय इ यन

हीजांन्यौं॥ अरुतिनकेउद्दिमनही
मांन्यौ॥१८॥परिममगुणसुनिकरि
सुषमांनै॥मेरीभजनस्लोकसि
नैं॥ताकैंभक्तियोगहितकारी॥
सोजांनैंतत्वबिचारी॥१९॥अरुजो
बिषयनकेआधीनां॥तिनकेउद्य
मसैंनवलीनां॥कथासुननकेंन
अवकासा॥अरुममप्रीतिनहीअ
भ्यासा॥२०॥तिनकौंकरमयोगसुष
दाई॥इनतैंओरनश्रेयउपाई॥ते
तीन्यौं भाषतहूंतोसौं॥निहश्च
लचितह्वैसुनीयोमोसौं॥२१॥प्रथ
महिकरमयोगबिसतारैं॥बिषइ
जीवनकौंनिसतारैं॥मेरबड़ा
बिधिगुणबिसतारा॥कथाप्रसंग
बिबिधिपरकारा॥२२॥तिनमेंप्रीति
नउपजेजोलौं॥ममजनसंगकरैन
हींतोलौं॥अरुजोलौंनबढैबैराग
बिषयनकौंनमिटैअनुरागा॥२३॥

तौलौंकरमयोगनहीतजे।करमनि
ह्नीकरिमोकौंभजे॥अपनेधरममांहि
थिररहै।कबहूमूलिनयेदनिग
है।२५।जउमहौछावकुविधिकरै
सकलकरममममहिनविसतरै।म
नतेंइछासकलमिटावै॥सोजनसु
रगनरकनहींजावै।२५॥ऐसेग्यांन
भक्तिकौंलहै।तातेंकरमकालिमा
दहै।उहवयेमांनवतनऐसो।सक
लसिष्टमेंनांहीजैसो।२६।सुरगनर
कके वंछेयाकौं।परिकैौहीनहीपा
वैताकौं।ज्ञांनभगतियातनकरि
लहै।औरसबनकरिभवजलव
है।२७।जोऐसोमांनवतनपावै सो
समस्तकांमनांवसावै।तजैनथेद
मकलई कमलाग्रहकांमनांहेन
जेधर्मेपनाधमकफिरिनहीवंछैन
रदेहा।प्रमरतननहीपावैयेता।ज
द्यपिवकुत्सौनरतनपावै।परिक

जांन्यौ॥ अरु तिनके उद्दिम नहीं
ांन्यौ॥१८॥ परिमम गुण सुनिकरि
सुषमांनैं॥ मेरो भजन न लोक सि
हीं॥ ताकौं भक्तियोग हितकारी॥ श्र
जो जांनैं तत्व बिचारी॥१९॥ अरु जो
बिषयन के अधीना॥ तिनके उद्
मसैं न वलीना॥ कथा सुनन कौं न
अवकासा॥ अरु मम प्रीति नहीं श्र
ासा॥२०॥ तिनकौं करम योग सुष
दाई॥ उन तें और न श्रेय उपाई॥ ते
तीन्यौं ना यतहू तोसौं॥ निहश्च
ल चित है सुनी यो मोसौं॥२१॥ प्रथ
म हि क्रमयोग बिसतारो॥ बिष
जीवन कौं निसतारो॥ मेरे बड़
बिधि गुण बिसतारा॥ कथा प्रसंग
बिबिध परकारा॥२२॥ तिनमें प्री
न उपजै जौ लौं॥ मम जन संग करै न
हीं तौ लौं॥ अरु जौ लौं न बढै बैराग
बिषयन कौ न मिटै अनुरागा॥२३॥

तोलौंकरमयोगनहीतजे करमनि
हीकरिमोकौंनजे अपनेघरममांहि
थिररहै कबहूंनिनछेदनिग
है २४ जजमहोज्ञानविधिकरे
सकलकरममनहितविसतरे म
नतेंइछासकलमिटावे सोजनसु
रगनरकनहींजावे २५ ऐसेग्यांन
मक्तिकौंलहै तातेंकरमकालिमा
दहै।उदवयेमांनवतनऐसो सक
लसिष्टमेंनांहीजेसे [illegible] सरगनर
ककेवंछेयाकौं।[illegible] [illegible]नहीपा
वैताकौं।ग्यांन [illegible] [illegible]
लहै।औरसवल[illegible] [illegible]
है।२६ जोऐसो[illegible] [illegible] वैसो
समस्तकांमनां [illegible] [illegible]नछेद
सकलईकम [illegible] [illegible]हैत
जेधर्म।रत्नाग्रहो [illegible] [illegible]
रहैहा।प्रमरतन [illegible]
इ्यपिवकस्योंनरतनपाई।

थे॥मेरेगुरानामनिजनाथे॥ थु
यौंजद्यपबिषयनरहै॥परिम
बचक्रमत्यागचाहे॥मोनिति
त्रियोगसोंजजे॥मोबिच्यंतर
तजे॥भूपातेत्रंपंथपजानिस
रै॥ससहितजोकछुतोसबकरे
बिधिसकत्नबासनानासे॥मेरो
रूपहिरदेमरकासै॥ई॥तातेब
रूपममजानेहेतजावमिथ्याक
रिमाने॥ससयकरमभरममेममा
हंकारतजिसोबतजागे॥ई॥अ
हामोहीकोदेषे॥मोबिनऔरक
नलेषे॥त्रैसोकैममरूपसमाे॥
मऔरनहीपावै॥ई॥ता
केमेरीभक्ती॥निसदिन
पानअनुरक्ती॥ताकोजग
नाहीज्ञाना॥रुनाहीबैराग्य
नाई॥तातेसोमोकौअनु
लिउसतरभवसाग

मकेधरमनकरै॥बक्तनभांतितप
कौंअनुसरई४॥निसदिनसांषिहि
ग्यांनबिचारै॥गहिबैरागसकल
अघडारै॥साधैजोगअष्टपरका
रा॥दांनबरतादिकबहुपरकार
ई५॥येसबआपहीतेंचलिआवै॥
ममजनकेआधीनरहावै॥मेरीभ
क्तिसकलसिरताजा॥जैसेंसकल
नरनिमेंराजा॥ई६॥भुक्तिमुक्तिपं
लनहींपरिहरै॥ममजनकीनितसे
वाकरै॥अरुजचपिमेंबहोबिधिक
रूं॥भुक्तिमुक्तिकछुदेनीचहूं॥ई७
परिमेरोनिजजननहींलेवै॥सकल
त्यागिममचरणनिसेवै॥निरपेषित
परमहैश्रेय॥मोबिनसकलबसत
कोहेय॥ई८॥निसपृहतायेसुषअ
पार॥जहांनकालकमअधिकार॥
मैंनिसपृहनिस्पृहजोहोइ॥मेरोभग
तिकहीजैसोइ॥ई९॥मेरेसमलषिए

तासुप्रकैसो।सकलविस्वमैंनांहीजैं
सो।तिसप्रहजनमेरेंसुखपावै।स्प्रह
वंतकेनिकटिनआवै।७१।जेयेका
तभक्तहेमेरे।तिनकेपुंन्यपापनं
हीनेरे।रागदोषहूजितसमदरसैं।
त्रिगुणातीतब्रह्मकोंपरसैं।७२।जै
सेंतीनपंथविसतारे।इनकैबहु
तजीवनिसतारे।जेईजेजनइनमैं
आवै।तेईतेमेरोपदपावै।७३।यो
गभक्तिअरुसांष्यियेतीनां।तीनूंए
ककहैंप्रवीना।इनकौंपायेमोकौं
पावै।येबिनपायेमोमैंनहींआवै।।
७४।येसाधनहेंतीन्योंनीको।इन
बिनुऔरनतारकजीवकौ।येसाध
नहेमेरेरूप।इनतेंततनऔरअनू
प।७५।मेरोगोपिरहस्यिहेयेगा।जीव

अन्नकौंअसंयोग अरुसैसक
लब्धिविद्याभोग कोनज्ञानलहै
संसोरोग ७६ [illegible] इनवध
नकौंतजै करैकरमञ्छेदकार
तिनपरजीवनकौंकहैविधि
नभेदविस्तार ७७ [illegible] भाग
[illegible] हैरुपा
[illegible]
[illegible] मनोरुवान
[illegible] ध्यानतिकरजोगउपा
ईध्यापत्तिनकौंदीखेवताईप
रिजेध्यानिहीरत्रध्यान इनिकूं
छोडिकरैकरुध्यान १ अज्ञतकै
मनांहिरहैधारें तिनहितअज्ञतर्भ
रमनिविसनारे तेमरुडमनिरंतर
भवप्रवाहमांहिबहिजावै २
तिनहितविधिनभेदउचारे तिनके
अहकारंभनिवारे अपनोअपनो
अधिकार नामें वरतैतजिविं

मतारा।३।उंचोनीचोसबपरिहौं।अप
नेकरममांहिअनुसरै।सोसोतिनति
नकौबिधिजानैं।तातैंओरनभेदहूं
मांनैं।धर्येकछुबसतुबुधिमतिदे
खो।पसूजीवनिकौंबंधनलेषो।चप
जीबसुसमस्तअसुध।परिकहीभा
षेसुधअसुद्ध।धिकमकमसकलछु
डावनकारण।मैंयहकीयोभेदउचा
रण।पापछुडायधरमग्रहवाकें
याबिधिबकआरंभछुडाकें।दीये
समस्तजगकौबिवहारा।यातैंजग
कोवारनपारी।छितजलतेजपवन
आकास।सिबजगपंचभूतपरकास
।३।ब्रह्मादिकथावरपरयंति
पंचभूतकरिसबबरतैं।अरुयै
कैंआतमसबमांही।तातैंभेदक
हिकछूनांही।बापरितथापिमैंभा
ष्यो।बेद।ताकरिकीनैंनांनाभेदति
नकैस्वारथसुधकेहेत।बिबधि

उचारेफल्लनिसमेत।८। हेसकाल
एद्रव्यसुभाव। इनकेनामनानां
व। येकनषेदयेकविधिमाये
संकोचमानिसबरावे।१०। जोन
सकलमृगतहांनाहीं
दुजिसेवानकरांहीं। परिजोकु
मृगबकुरहे। परिमलेछजहांब
सागहे।११। अरुजद्यपितुरकत
नांहीं। परिमृग छादिकति
केमांहीं। अरुजोमृगधादिकपि
रे। परिकदरजताहूरिनकरे।१२
रुकदरजतामेंटोहोई। परिजो
वेकुसरसोई। सोसोदेसनिषेद
कहीजे। तिनमेंबासादिकनहिं
जे।१३। तिनतेंअोरदेससुचिजां
तिनबासादिककोंवानें। अरुजे
कालधरमकोनांहीं। सतकअों
भयेजामांहीं।१४। सोसोकालनषे
कहीजे। उतमसोजामेंविधिकीजे

ध्रबचननेस्योंही।संदेतेंपुष्पादि
कयेंही।
नक्रुकालकोहोयत्रसुधा२६।कही
न
था।नुमेंजोबरथाजलहो
व
संक्तिअनुमान
वृतहेमादिअनंता२०।
जलमाटीबाईजथाजोग्पहोयसु

चारेफल्ननिसमेता॥ए॥ इसकालमु
द्रव्यसुभाव॥ इनकेभाखेनांनंभ
॥ भेकनमेदयेकबिधिभाखेये
कोचमांनिसबराखे॥१०॥ जेनदे
कर्मभूगतहोनाही॥ कूरजह
भूजिसेवानकरांही॥ परिजोकर्म
भूगबकुरहे॥ परिमलेछजहांबा
भागहे॥ ११॥ अरुजहांपितुरुकतहां
नांही॥ परिमुग[illegible]दिकतिनु
केमांही॥ अरुजोमुगधादिकपरि
॥ परिकदरजताहूरिनकरे॥ १२॥
कदरजनामेंवीहोई॥ परिजोहा
वेकुसरसोई॥ सोसोदेसनिखेद
कहीजे॥ तिनमेंबासादिकनहिंकी
जे॥ १३॥ तिनतेंअवरदेससुचिजानें॥
तिनवासादिककोंवानें॥ अरुजो
कालधरमकोनांही॥ सुतकआदि
नयेजामांही॥ १४॥ सोसोकालनखेद
कहीजे॥ उत्तमसोजामेंविधिकीजे॥

दिकजलादिकनिसुध
दिकतेंहोयत्र्प्रसुद्ध॥१५॥सुध्रत्र्प्रसु
ध्रवचनतेंस्योंहीं॥स्नेंघ्रेतेंसुघ्यादि
येंहीं॥तबहीपाककस्योंजो
बहुकालकोहोयत्र्प्रसुध॥१६॥कही
त्रेंमिमसांनत्र्प्रसुध॥बकुतकां
सुध॥भूमैंजोबरसाजलहो
॥बकुतकालतेंसुधसोहोई॥१७॥
मोतिश्रोरतजांनेंसुधत्र्प्रसु
मेदपहिचांनें॥बिनुसनानसुद्ध
लादिका॥स्नानदिकसुद्धजुवानां
दिका॥१८॥जीरण॥बस्त्रत्र्प्रधनकोंसुध
वंतकोंश्रमत्र्प्रसुध॥श्रौरैंसंकल
किंत्र्प्रनुमांनसुचित्र्प्रसुधहीकीयें
बषांन॥१९॥सोसबदेसकालत्र्प्रनुस
बिधिनषेदकोकीज्योबिचार॥
पात्रबसत्रगजदंत॥तेलस
मादिंत्र्प्रनंत॥२०॥कालत्र्प्रग्नि
लमाटीबाईजथाजोग्यहोयसु

सुष

पावैमर्म ॥ ३३ ॥ षेमधरमसबहित्यं
येहमेटैसोकमोहसंदेहयानिम
तिमैंभेदसुनाये थोरेथोरेमेंवहरा
ये ॥ ३४ ॥ पीछेनरमकहिसकलनि
वारे ऐसी भांतिजीवनिसतारे ज
बनरबिषयनतमजांनें तबतें
नमैंआसक्तिहोवांनें ॥ ३५ ॥ तातेंहिर
देउपजैकांम ॥ तातैंतहांकलहैको
धांम ॥ ताहीहूतेंक्रोधउपजावै ॥ तब
अबिबेकआपहीआवै ॥ ३६ ॥ सोअ
बिबेषहरैसबग्यांन ॥ तातेंप्रांणी
तकसमांन ॥ तातैंकाजअकाजन
जांनें ॥ निसदिनबहुबिधिचिं
तें ॥ ३७ ॥ सबदुरषारथहोवेहीन
निसदिनरहेदुषतअरुदीन ॥ ता
तेंसमकेआपनआंन ॥ मिथ्याजी
वेंबरषसमांन ॥ ३८ ॥ ज्योंहोवेलुहा
रकीषाल ॥ स्वासलेतयोंमोवें
ल ॥ कूंचिभरैअरुमेथुनकरें ॥ गृ

मीसूकरैंनरकहीपरैं॥३९॥उकु
करककरजैसें॥बिषयभोगनर
सौंरततैसें॥मिष्टाबिषैसूकरसे
मी॥बिषयलागभूलेनरस्वामी॥
४०॥कुटंबभारनरबहिबहिमरे॥
नरकचौरासीमैंपरैं॥परउपुओं
लदेअग्यानी॥बिषैउमीकोंकहे
बखानी॥४१॥येनरतननहींबिषैमु
गईये॥याकरिब्रह्मविचारउकरी
॥अरुपुनिकहेकरमफलजेते॥
गादिकनांनाविधिकेते॥४२॥
कहिकहिरुचिउपजाईमेटिन
भेदनिबिधिकरवाई॥जैसेंओषदि
पीयायै॥बालककौंलाडू
रायै॥४३॥ओषदिकोफललाड
नाहीं॥ओषदिकैतैरोगसबजाई॥सु
हेतजोकरमनिकरै॥पुनिसुनि
स्वफलनहीपरिहरैं॥४४॥तबअ
तजिअरयहीपावै॥मोमैंकैनिह

करमसमावे अरुएजबतेंजनम
लीमावे तबतेंआपहीविषयक
मावे ४५ पुत्रकलित्रकुटंबसुग्र
नांडनकेहेतचहैसुषनांनां आप
आपकरैंअनरथ तिनकोंमूर
षजांनेंअरथ ४६ ऐसेंयानबमें
निति नरमे कहेनजांनेंसुषकेम
रमें अरु तिनकोंजोभरमतहेवे
सदानिरंतरदुषितलेषे ४७ सोति
नकोंकबहूनबहांवे अरथसबां
मनकहेनहिंहांवे नातेंमैंनोसबबि
धिजांनों केमैंकरमरु अरथबषां
नूं ४८ परिजेकछुसुरतिमांहिसुन
य अरथधरमअरुकामबनाय
तेतेसकलनछुडावनकारण हित
बिचारिकीन्हेंतजारण ४९ ऐसो
भेदतत्वनहीजांनें मूरषपुरुषत
केनबषांने फलनिहेतआरंभेक
रम तिनकोकहेनछूटेभरम ५०

कांमीक्रिपणलोभअधिकार
सनांअकुलसदाबिकारी।पु
मांहिफलकरिमांनैंकांमवि
तत्वनहीजांनै।४१।मैंनिनवे
हिरदेमांही।परितोफतेज
जोलैंयहसबजगतपसा
समस्तजाकेआधारा।४२
सक्तिपायसबकरतैं।चूंम
लोहज्योंनिरतैं।जाकीआ
हीमांनैं।कोईमरजादानही
४३ ऐसोमैंपरगटसबईसजै
लदेहमैंसीसापरितेकोंमकर
मंत्रंधानामोहिदेखैंअरुनहीं
पध।जैसैनैंनरोगमयहोवै।आगे
तबस्तनहीजोवै।यौंअपांनअंध
रमेष्ट।देखैनहीनिकटिमैंइष्ट।४४पा
तेमोबिनुममतौनजांनैहनिजीव
निजजातिकमांनैं।नेफिरितिनहींहि
नेप्रलोकजनमजनमपावेंभयसों

रमसमावे अरुएजवतैंजनम
ीमावै तबतैंआपहीबिमयक
ावै ४५ पुत्रकनित्रकुटंबरुअं
ाइनकेहेतचवैसुषनांनां आप
आपकुंकरेंअनरथ तिनकोंमूर
अजांनैंअरथ ४६ ऐसेयानवमें
निति नरमे कहेनजांनेंसुषकेम
रमें अरु तिनकोंजोनरमतहेमे
सदानिरंतरउषितनेमे ४७ सोति
नकोंकबहूनबहांवे अरघरुवं
मनकहेनहिंहांवे तातैमेंतोसबवि
छिजांनों कैसेंकरमरुअरथबष
नं ४८ परिजेकहुसुरतिमांहिसु
य अरथधरमअरुकामबनाय
तेनेमकनहुडावनकारण हि
बिचारिकीन्हेंनहारण ४९ ऐसे
वेदलवनहींजांनें मूरषपुरुष
वेनवसांने कननिहितआरंभे
रम तिनकोकहेनहूहेनरम पु

।ति।

धूश्मैंतिनकेनिति

गतपसाराग्ररु

।जाकी

चूंमकसंरप

।कोईमरजादानहीमांनै॥

ऐसोमैंपरगटसबईस।जेमैंसक

त

मऋधा।नामोहिदेषैग्ररुनहींवैध

पथ।जैसेनैनरोगमयहोवै।ग्रागेहो

तवस्तनहींजोवैयोंग्ररुपानऋंधक

रमेष्टादृष्टैनहींनिकटिमैंइष्टा॥५५॥

तेमोबिनुममतोनजांनैहनिजीव

निजज्ञादिकगंनैं।।नेफिरितिनहींके

नेप्रलोक।जनमजनमपावैन्यसो

॥५८॥ जब यों के बहु हिंसा देषी॥ह
तिह निजीव जीव का पेषी॥ तिन
ति कही ये बांनी॥ हिंस्या जग महि
हि बषांनी॥५७॥ पसु बध ये क
माष्यो॥ सूरु समस्त हू रिक रिता
॥ जब यों एतामें वहरावे॥ तब सु
नि वेद ही सकल मिटावे॥५८॥ यानि
तिपसु हिंसा नाषी॥ सो मूरष न त
रि राषी॥ ता तें बहु विधि कर
करै॥ बहु को मन नांहि रदै न धरै
॥ पसु हंस्या क रिकें बिवहार॥ जे
बहो परकार॥ देव पित्र भूतनि
॥ तनें सुषम्यं मानही
६०॥ सुपन तुल्य सुरगादिक भोग॥
तिन कों तत मसु नियालोक॥ तिन
श्रेंम्मा हिरदै धारे॥ इम्म षर
रमनि बिसितारे॥६१॥ बिषनहो
ऊकरमनि मांही॥ सुरगादिक ऊ
नांही॥ ज्यों कोई सायर पार ही

धनहितग्रहकेधनहिलगावै
रपीछेपरैविघनजेकोई।तोदो
सोई।सोजेवक्रविधिक
उपावै।तेपस्त्रहकैलोकतेंजावै
रें।सोतिकजेतेदेवनभनेंजहा
कनराजसीजजें।तामसभूतप्रे
तकोंसेवै।तिनमनधनलेतिनकों
वैंईध।यहांजगपवक्रतविधिकै
विप्रनिवक्रतदपिणादीजे।ता
सुरगादिकसुषपईये।तहांवक्र
विधिभोगभोगईये।ईंधषुनिज
होवैतिनकोंअंत।नवक्रजेन
मैंधनवंतऐसीनोतिकोंमनो
रैं।तिननिमतिकर्मविपनतें[illegible]
तिनकैंमेरीवाननलावै।नकिक
तैंहिरदैआवै।जद्यपिवेदकम
चारैधर्म[illegible]कोंम[illegible]
ईंछ।मि[illegible]
कमकम[illegible]

क ५६ जबयाकेबहुहिंसादेषी॥ ह
निहनिजीवजीवकापेषी तिनके
होति कही येबांनी हिंस्याजग्यहिंसा
हिबषांनी ५७ परबधयेकजिन्न
मैंनाष्यो खलसमस्तहरिकरिना॰
ष्यो जबप्रांणीनामेंगहरावे तबतु
निबेदहीसकनमिटावे ५८ यानि
मतिपसुहिंसानाषी सोसरबनत॰
लकरिराषी तातेंबहुबिधिकरम
निकरै बहुकांमनांहिरदेनधरै ५
९ पसुहंस्याकरिकेंबिवहार जेजे
पावेबहोपरकार देवपित्रमृतनि
कोंजजे उनरैसुषलेसमानहीरजे
६० सुपनतुल्यसुरगादिकभोग॥
तिनकोंजतनमसुनिथात्नोक तिन
कोल्हेंस्साहिरदैधारै उभयपरचि
करमनिबिस्तारै ६१ बिघनहोंति
बहुकरमनिमांही सुरगादिकफु
पावेंनांही ज्योंकोइसायरपारही

र परमुक्तिकोआसयनहीजांनै
कछुओरैंओरबषांनैं ६८ स
ब्रह्ममहाउरबोध ताकोप
नपावेसोध सुषिमथलरूपहै
के सोबिननेदलहैकोताके
प्रांणरूपपरासेनांम पस्यंतीव
नमेंधांम तीजीकंठमधिमांम
धीपरगटबैषरीछूल ७०
तिनकोकोईनहीजांनै तालें
ओरबषांनै अंतपारकोईन
वे ज्योंसायरथाहोनहीजावे
तिगंनीरअरघहैयाकोकोई
नजांनेजाकोमैंसबहीनमैं
मी सक्तिअनंत हकलकोसं
७२ सबमेंव्यापकब्रह्मसरूप
पतनिकबहूरमन्तरूपासो
पकसबहिनमांही सबदरू
जाकोनांही ७३ कंमलनालि
त्रजैसे सबदरूपसबमेंरेंक्षे

आगेतेम्हछिरांशो[illegible]
थी।तेगनहदउ[illegible]
अपरमतत्वनिरखि[illegible]
वीसमोअध्याय॥२४॥[illegible]
वाचा॥चौपई॥हेदेवसत
केतेकहोक्रिपाकरिमोसोंतेते
नकोरचितसकलसंसार॥जो
सेनानाबिसतार॥१॥तुमतौअष्टा
वीसततकहे॥तिमैंद्रिढकरिमन
।परिखइतेरिषबहुबिधिकहे।
अरुतिनितैसुनिसौंहीगहे॥२॥के
कहेतत्वछवीस॥अरुसौंके
पचीस॥केईकहेषटकेईच्यारि
कहीनाथसमप्रतिच्यारि॥३॥केईनव
कहेबिबेका॥केईनाथेदस
अरुयेक॥केईतत्वबतावेषोड
सौंयेकेकहेत्रीयोदस॥४॥के
नाथेदसअरुसाता॥येरिषमततेसु
तिबिख्याता॥कोनपरीयोजन

लेभाषै अपनेअपनेमतहीराषै
५ कृपाकरोनिजबेनसुनावो स
मम तोसों मोहिजनावो सुनिउ
वकेबेनरसाल कृपासिंधुबोले
गोपाल ६ श्रीभगवानउवाच
हेउद्धव ज्योंयेसबभाषे जितने
जितनेतत्वनराषे ते तेसबतुम
जांनोंसत्त तत्वबिचारेंसबेअस
ति ७ मायादेषिकहेसोजेतमा
यामांहिसतिहेतेते मोहिदेबिजा
तिनकोंदेषै तोसमस्तईमिथ्याले
षै ८ मायामांहीयुक्तिबिचारेंअ
पनोंअपनोंमतउचारें येयोंयह
योंयहयोंनांही कहेसबेमिति
आपुनमांही ए यहयोंहीहेज्यों
मेंभाषों तेरीकहीसतिनहीराषै
याबिधिममायानरमाये तिनन
नोंबिधिपंथचलाये १० ममभाया
कीसक्तिअनंत तिनकेपंथनकोन

अरु अन्य समंद अनुसरैत अन्य
तिन वये भेद सकल मि दिजावे।
१। जेते तत्व सकल माया के जिन
ये मते ताता को क्रम क्र
गये। सो तो भेद बहुत
भये। १२। जैसे येक बरष बिस
ताकी संपति बहु परकार।
साषा बहुतै परसाषा।
तिन के बहु बिधि उपसाषा। १२
तिन को बहुत भांति बिसतार।
नफ़ल बिबधि परकार। अरु
बरणौ कोई सो ज्यौं
तिसौं होई। ४ ध्यौ रेहो हिक
बहुत होहि मिलिये पर
साषा उपसाषा मिल्य बहु बिधि
होवै। तेसब पंथ सति करि जोवै। १४।
संसार बरष बिसतार माया
कारा तत्व सकल
परसाषा अरु तिन के बहु बि

षिसाधा १६ ताते ज्यों वरणों त्यौं सत्य
परिसब्रू माया सकल न्ह्रसत्ति ज्यौं
हीं ज्यौं जिनके मन न्ह्रायौ सौंही ‹
सौं तिन व्रू रणि सुनायौ १७ माया ‹
करि वंध्यौ न्ह्रातम जातें छौरैसो
परमातम ये है न्ह्ररू जड चौबीस
तिनकौं मिलें सकल छवीस १८
न्ह्ररू जे मुक्ति वंध है दोई ते नरममा
यासमत्ति नकोई तातें जीवब्रह्म
है नाहीं यौ पचीस जानौं मन माहीं
१९ सतरज तम गुण है जेते जडस‹
रूप माया के तेते रज उतपति सा
त्विक प्रतपालना तामस रूप ग्रसत है
काला २० राजस हूतें करम न्ह्रपि
कार तामसतें न्ह्रविवेक न्ह्रपार
सात्विक गुणतें उपजे ग्यांना ये है
माया के गुण नांनां २१ इनतें परे न्ह्र
तमा मांनौं तातें ब्रह्मरूप करि जा‹
नौं पंचवीस ताहि तें कहे न्ह्ररु सौं

सुनिश्रौसैंगहो।२२।सोहैकालगु
निबिसतार।सुत्रसुभावसोसक्ति
सार।तातैंकालरूपहरिजांनौंत्र
सुभावमहतत्वहीमांनो।२३।ता
तत्वअधिकनहीगहो।पचबीस
छबीसहीकहै।परक्तिपुरषमह
त्वअहंकार।तनमात्रातैंपंचपर
कार।२४।करनरुतुचानैनरसघ्रां
।येपंचोइंद्रीयहैग्यांन।पायुउप
एकरबांणी।पंचकरमइं
द्रीयहजांणी।२५।मनदसहूइंद्रीय
कौरजा।जाकीसक्तिकरैसबका
।छितजलतेजपवनआकास।
अगाईसतीनगुणपास।२६।गतितत
गकैमअरुबचनो।येपंचोइंद्री
यफलरचनो।तातैंत्रसप्तबीसतेत
अधिकनभाषैंग्यांनीसत्व।२७
छिआदितेमायायेक।पुरषस
क्तितैंभईअनेक।तनमात्रा।स्न

इतत्वअहंकार॥येहैंकारण
रकार॥१८॥पंचतूतअरुमन
कीयहसा॥कारयरूपउतिये
सा॥सतरजतमयेतीनपर
र॥१९॥सकलविसतार॥र
कारणप्रकियेजांणि॥
मतिरुसाषीमांनो॥१॥अस
षतेंपावे॥मिलिसमस्ततवस
उपावैं॥२०॥सपतधातको
॥ज्ञानमहिंपाकेआधार॥
कलतत्वसब्रहिमेंआवे॥ता
निसबबताये॥२१॥पंचतू
उपजाये॥तिनकेनजुविधिदे
बनाये॥आपुब्रवेसकीयोहरि
में॥चेतनदीसतहैंजिनजिनमें
॥२२॥ऐसीविधिघटकोबिसतार
आपुमांहिबहुकरैबिचार॥
आपतेजजेयेतत्व॥अरु
तसबसत्व॥२३॥याविधि

सतार ३ चौनीचौसकलसै
भूततनमात्रापंचमिच
द्रीयमिलिसबपरपंचा २ धाम
आतमामिलेदससाततत्वस
तदसजानौतातमनआतमयै
करिजानौतेजनषोडसतत्व
षानै ३४ पंचभूतअरुइंद्रीयपं
ब्रह्मजीवमनकोपरपंचाऐ
रिपंथचलावैतेरहकोस
जगतबतावौरहीइंद्रीयपंच
चईभूतआतममिलिसबजग०
ताऐसीबिधियेकादसक
लौसुनिहिरदैग है ३५ पंच
तमनबुधिअहंकारआतम
लिनवकोबिसतारऐसीबिधि
हैमारगकहैयुक्तिबिचारिहिर
दामैगहै ३६ प्रकृतिपुरषकोलहै
बेषाइनकौजानियेककोयेक
सुनितत्वनकौगंयानतह

ओपरमसुजांन॥३९॥ ब्रह्मक्रिया
कीहे श्रृंगीयेज्ञांनसुनायो॥मे
रेउरकोभरममिटायो
नरूपऋबिनासी॥सुद्धानंदपर
मपरमपरकासी॥४०॥ऐसे॥
तमतुमरोरूप॥परैगुणनितेंप
रमअनूप॥जडबिनासमयश्रम
ऋसुद॥उपरूपपलसुषनसुद
४१॥ऐसीप्रकतिपुरषसोंन्यारी॥
लोकमईपरसपरप्यारी॥प्रकति
मांहिआतमभिलिरह्यो॥इस्यो
तमपरकतिकरिगह्यो॥४२॥इन
मेंभेदनजांनेंपरे॥येकमेकके
अनुसरे॥इनमेंप्रकतिकहालो
कहीये॥कौनआतमाजोदिढगहीं
ये॥४३॥करिकरुणबांणीबिस्ता
रो॥बचनबांणसंसेंपरिहारो॥तु
वमायाबंध्योसंसार॥तुमहीकूते
होयनउधार॥४४॥तुमहीमायाकी

नो।कृपाकरोतबतुमही
।बांनीसुनीनकतिन्त्रमनेकी।
श्रीकृमविबेकी॥४४॥श्रीन
उद्धवयेग्पांनत्र
कोईएकलहेममसाध॥सोयह
नसुनाउंतोहि॥तूहेसदान्नन्नूबर
हि॥४५॥उद्धवप्रकतिरचेसंसा
रसुषिमथूलनिबधिपरकार॥उ
जैबरतेंहोयबिनास॥तामेंश्रातम
परकास॥४६॥उद्धवयेहेमेरी
॥तिनसतरजतमगुणउप
त्रिबिधिसकलबिसतार॥
कछु वारनपार॥४७॥त्रि
धिकहनकोपरिबहूभेद॥जिनं
लहेंनितषेद॥श्रध्यातम॰
धिदेवत्रदभूत॥त्रिबिधिरूपसब
त्रदभूत॥४८॥जगश्रध्याल
त्रदभूतरबित्रधिदेवलमिलि॰
दभूत॥तीनोमिलेपरसपरजबही

तिनकोकारण नसीकेतनकी ५०३
मैंबिनांकछु नहीहोइ तीम्योंमिन
बरतेमनकोइ नु नामसपरसपवन
म्योजांमैं करणरूसनदहिसाकरि
मांनौं ५१ नासासुगंधश्रवनीसुता
जिह्वारसरूपलेचनजलतुता चि
तचेतनांश्रंतरजांमी बुधिबोधनांत्र
स्वांमी ५२ अहंकारअहंकृती
रुद्र मनमांनिबोचंद्रलता चंद्र यावि
धिविविधप्रपंचअपसार सकलपरै
आतमांनिजसार ५३ इनतीम्योंबिन
जगनहोइ तेआतमविनरहेनको
ई आदिसकलनकीआतमयेक जां
नेमेनिहोयअनेक ५४ आतमअ
यंप्रकासअविनासी चेतनरूपसक
लप्रकासी मेसबजगनमकेआधार
अर आतमसकलनकेपार ५५ बि
न आतमांकछुनहिहोई असआत
मजांनेकोइ म्हतनतेअसमोरि

न

सोकहूहियेनहीउपावी

ऐ

प्रकाराईगापरिजोत्नौ
नजैतोत्नगनिजरूपं
ननतजोजबहीमेरसरणहीश्रा

रथकोप्रान उद्धवजीनीप्रस
नवाद्रिजनप्रसमुजानदेरा
व्याप्मर्इत्तुमकरिरहे
तबुधिहैजिनकीकहीयेदेवको
नगतितिनकीसकलनबियापीउ
तमएकहीकैसेंकरिपावेदेहऊने
काईरामसमुमनऊसुनकरमहे
जेतेत्रिगुणरचितकहीयेसबते
तेतिनकरमनिमहकरमबंधा
वेकैसेंकरिजोनिऊजोनीआवे
ईधानजमरमरेकैसेंकरिदेवाया
कोमोहिबतावोसेवायेतुमबिना
नकोईजानेजद्यपिविद्याबेद
बषानेहैधूजोकछूपढेबंधसो
होईतातेतवनजानेकोईयाबि
धितद्धवप्रभुसोंजानतबहसिबो
लेश्रीभगवानहैश्रीभगवानउ
वाच उद्धवयहमनपरमबिका
रीसबइंद्रीयनमांहिअधिकारी

इंद्रीयनछैमनईसबकरेसुषहि
तबकृतदिमबिसतरे॥६७॥सोत
नतजि इजेतनजावे॥तहांईतहांग्र
तमाग्रावे॥जिनजिनसुषनसुनेग्रर
दिषे॥तिनतिनकोंजन्मकरिले
षे॥६८॥तिनकोसोमननिसदिन
ध्यावे॥येतनथीनमयेतहांजावे
बहुतनपायबिसारेयाकोंजनम
मरणकहीयेतुहेताकों॥६९॥जा
तनमेंबांधेग्रबिमांन॥छोडेपूर
बतनजोग्रांन॥जनममरणयात
नकोंसोई॥इजोजनममरणनहीं
कोई॥७०॥जैसेसुपनमनोरथजा
वे॥येतनछोडिग्रोरमेंग्रावे॥तब
यातनकीबुधिनरहे॥वाहीतनकों
ग्रापुहीकहे॥७१॥जनमग्ररुमरण
सुमृतिकोहोई॥ग्रातमजनममर
णनहींसोई॥ग्रोरकष्ट्रग्रातमनहीं
मरेग्ररुकबहूनांहीग्रवतरे॥७२॥

मैंमनकोअभिमांनां
तनउपजतहैनांनां तेसबअ
केआधारा तनमनबुधिचित
॥७३॥ तिनसंगतिअ
मकेंादुष तिनहेंतजेबि
हीसुष ॥७४॥ वसकलदेहहैजे
सदासकलबिनसतहैतेता॥
कालनदीपरवाहप्रचंड॥
रिपलकपरतनहींषंडा जे
नदीनिरंतरबहै परिदेषन
हीरहै॥७५॥ अरुज्योंअरचिनि
तरजावै॥ परिदीवादिकतिमेंर
अरुजैसेंसबबरतनकेफ
सेंत्योंपरिथिरनहीं ॥७६॥
सबदेहनिकोंजांनों॥ कालनही
ग्रसतनिरंतरमांनों॥ जद्यपिअव
जातीलेषै॥ बालकुंवांरजु
द्धिकदेषै॥७७॥ परितोकुमर
हीजांनें॥ मेंवहईहोंयोंकरिमांनें

चाल्ग्ररु

दारु

श्रवतारा बाल

।सोहीतेउ

रवसिपरें छोडिसवगयो॥८३॥

नबबरमन देषैचलनसोही॥नैन न
रमतेज्यौंकोइ देषै॥तबसबधर
णीभरमती लेषै॥ ८५॥ जैसेंयेज्ञा
तमथिरजांनों॥श्रौरसकलचंच
लकरिमांनों॥निश्चलमनकरि दे
षैजबही॥निश्चलब्रह्मरूपतबस
बही॥८६॥ जैसेंसुपनमनोरथमृष
यौंसबजगश्ररु बिषयातृषा॥प
रिजछपिजगसत्यनकोई॥तोश्र
क देनिबरतनहोई॥८७॥जैसेंसुप
नसतिकछु नांही॥परिजोलौंहै नि
द्रा मांही॥तोलगसकलसतिहैजां
नै॥सुषदुषपावैउदिमठांनैं॥८८
ज्यौंश्रग्यांननींदबसिजोलौं॥जनम
मरणभैमिटैनतोलौं॥तातेंउदव
सबभरमजांनौं॥महाश्रनरथरू
पकरिमांनौं॥८९॥बिषयनकोउदि
मछिटकावो॥श्रुरुजेहैंतेसकल
मिटावो॥जोलगश्रापहीसमफैनां

हीतोल्लगहैतोनांनैमांही॥१००॥ आपहीसमकैनहिंजोलौंमम
आधीननहोवैतोलौंममआधी
निरंतररहैजगतपहासंसीस
बसहै॥१०१॥केईयेकक रैअप
ईगहिबांधेअंग्यांना॥केई
धूकैतनमें॥डारैधूरिनीयकें
नमें॥१०२॥येकेडहैकेमूडडिगा
येकेनिनिदेचोटलगावै॥ऐसें
बिधिडंभउपजावै॥बकबि
यकेबेनसुनावै॥१०३॥परिजोअप
अयबिचारै॥सोयेकोमनमें न
धारै॥बकतकष्टतेमनतें
॥सोनवतजिममचरणनआवै
१०४॥मेरोमंत्रयद्रुगकोधारा॥जो
डिगेसोउतरेपार॥हरिकेबेन
करजांनि॥उद्धवब्रह्मकरीमय
मांनि॥१०५॥उद्धवउबाचा॥हेप्रभूउ
येबेनसुनाये॥सोमेरेउरडंकर

ये जोऽत्रसा भूलेका जिसतें ता वै ता
तेंसहहेकोंन बिधिजांवे ॥१०६॥ मेरेहि
रहैप्रांन ठहरावो ॥ सहनतपाय
मोहिसमझावो ॥ तेसहनोंउतमक
रिजांनें ॥ अरुत्यों ओरनि पासिबखं
नें ॥१०७॥ परितेआयपरेनहीसहे
अंतप्रकृतिकेबस्यह्रैरहे ॥ केवल
जेतुवचरणअधार ॥ तिनकेकोई
नहीविकार ॥१०८॥ ते निति निश्चल
सीतलरूप ॥ नितिअनंदितप्रेमअ
नूप ॥ तिनकोंकदेतिपेकछुनां
सदाबसेतुवचरणनिमांही ॥१०९
ओरसकलप्रकृतिअधीन ॥ सदा
कारनिआमेंदीन ॥ तातेंतुमहम
रुणाकरो ॥ ग्यांनादिकममहिरदै
धरो ॥११०॥ दोहा ॥ ऐसोकीन्हीप्र
जब उद्धवपरमसुजांन ॥ ना भ्रमोस
नउपायतब ॥ भव नंजनभगव
॥१११॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरांणे

इसस्कंदे श्रीभगवदउद्धवसंवादे
बावीसमोअध्याय२२॥श्लो३९ ॥
श्रीभगवानउवाच॥चौपई॥हेउद्ध
वअैसोनहीकोईदुरजनवचन
जुमित्तनहिलेदुरजनवचनबां
नजोसहै [illegible] नवचनदोभि
नहिलहै [illegible] सोसाधकहा
वै [illegible] नहिपावै
[illegible] बाना [illegible]
हैमरम [illegible] ते [illegible]
होय [illegible] वचनबाणनि
तैजैसो [illegible] पुनाऊ
सह [illegible] ३ सो
सोसुने [illegible] जाने
हिरदे [illegible]
नमय [illegible]
बी [illegible]
मांनो [illegible]
नबतानि [illegible]

तिअर्पनीसबदीदही५ सोअब
नौसुचित होयमोसें निजजनजा
निकहतहै तोसें मालवदेसर
है घरजाको घेती वनिजजीवका
ताको हैं कोधवंतलो भीअस्कं
मी विप्रनिकेअपजसकोनामी
जाकैहोय द्रव्यअधिकाई अरु
जोनहीदेयनहिषाई ७ आपन
कोपीडाउपजावे पुत्रादिकषोनें
नहीपावे देवरूपेतरअतिधन
हीपोषे वहनमांनजीकबहुन
संतोषे ८ सोकदरजजोऐसोहो
ई तातेंनीचोओरनकोइ सोकद
रज इजिऐसोभयो सबजगमेंजि
नअपजसलह्यो ९ ज्ञातिअतिथ
बंधवनिजतनकों १० नहीहेतनष
चैधनकों पुत्रादिककलपेउष
लहै सातिभृतिडरबेननिकहै
१० पत्रकलिवअस्कंमाभाई ज

वितहेताकोधरमको

,त्वागपतेज
धरानमाहीबिसतस्यो
धाकछराजनिग्रहतेगयो यो
बूकनोतिषीणमबनयोजबता

यो॥१२॥बकत

ताचिताविसदिनबस्योहिरदामें

सबकरैंबिरुद्ध॥ आप्रुआप्रुमैंजं
नैंजूध॥१८॥ द्रब्यकाजिअतिक्रो
हीकरैं॥ तिनकौंमारैंआप्रुनमरै॥
नहितस्रीयप्रांणनिछिटकावै॥
एहीमूढनरकमैंजावै॥१९॥ ताकू
देवब्रह्मतबिबिधआवै॥ परियानर
देहीनहींपावै॥ सोनरतनतामैंहजि
देह॥ करुणामयेहरिजीकोगेह॥
२०॥ ताकौंपायअरथनहींसाधै॥
सबतजिहरिकौंनहिंआराधै॥ मह
अरथअरथकौंगहै॥ सोनबसिंधु
आप्रुतैंबहै॥२१॥ तातैंहूजोनहींम
तिमंद॥ परैदुषमैंतजिआनंद॥ देव
पितररिषभूतसहाई॥ पुत्रकलित्र
आपहितभाई॥२२॥ धनहींपायजो
इनहिनपोषै॥ औरनह्कौंनहीं
संतोषै॥ सोसबत्यागनरकमैंजावै
तहांमूढनानांदुषपावै॥२३॥ सोत
नधनमैंहूथागुमायो॥ नवडषतैं

आपनचायो॥जाहिपायलु
सीकरैं॥तातेंवकरिनज
३४॥सोनरतनमेंहृष्यागमायो
ड्यो॥रथअनरथअपजा
बलआपुसकलभ्रमगये।
सेषवृधिअंगसवभयेश्य५॥अ
मेंअरथकोनविधिसाधूा॥उरा
धकेसेंआराधूं॥नाईजेअनरथ
वेजांनें॥तेककोंअरेननवांनें
ही॥छांडेअरथअनरथअपावें॥
पआपडुमपावे॥परिये
नहींस्वतंत्र॥सकलदेषीयतु हैं
त्र॥३७॥तेजाकीमायाकरिमो
।नटबाजीकेसमिसवसोहे॥
सोप्रभूबडोवलिष्ट॥ब्रह्मा
आदिसकलकोईस॥३८॥जेधन
अरुजेधनकेदाता॥जेकाम
कामविख्याता॥अरुवक
क्रमहैंजेते॥मातपितासुब

इकेतो ३(०) कहोकहांतैहितस्रोच
रैंमूरनूयस्तजेनहींपरिहरैं काल
रूपसत्त्रूहैजाकों कहोकहांकोसु
षहैताकों ४० परिजेदीनबंडुन
गवांन करुणासागरपरमसुदान
तिनहीमोकोंकरुणाकरी जातै
ममतरस्रेसीधरी ४१ भवसागरतै
तारैंजाकोंदेहिनांवबैरागहीता
कों तातैंमोहिदीयोबैराग मेरप्र
गटेपूरणभाग ४२ अबजोस्रायु
होयकछुमेरो ताकरिनजनक
रौंहरिकेरो यातनकेगुणसकल
निवारौं मनतैंसकलकांमनांटारौं
४३ सकलसाधअनुमोदनकरै
तथास्तुयौंकहि० च्यारौंजनघूपि
स्रायुथोरोहेमेरो तोकहहरिकोप
हेनेरो ४४ नृपषट्वांगजबहीह
रिध्यायो येकमहूरतमेंप्रभूपा
यो ताते प्रभुसमकोईनांहीं

प्रगटहोयपलमांहीं॥४६॥म
चक्रमन्त्रबताकौंनजौ॥इजी
रकलकोमनोंतजौं॥ओसोनिश्चै
मनमैंधस्यौ॥निन्हुकनयोसकल
परिहस्यो॥४६॥सीतलहिरदेत्र
सबस्यागी॥निश्चलभयोबिप्रब
भागी॥अहंकारममताक
हीं॥एकाकीबिचरैभूमांहीं॥४७॥
यप्राणवचनमनगह्यो॥अंतर
बाहरिसंगहीरह्यो॥आपहीका
कूंनलषावै॥मिथ्याहेतग्रह
जावै॥४८॥संसकार
॥जीरणइकबसतरन
चुकहृदबिप्रकौंजोवै॥तब
उष्टघातकीहोवै॥४९॥केईता
कौंदंडछुडावै॥केईपात्रषोसिनै
॥केईलेयकमंडलकरतैं॥केई
कसनदेहिनघरतैं॥५०॥केईधू
लिमीषमैंडारैं॥केईमूढकोधकरै

मारैं॥ केई ग्रासन कौं ले भागैं॥ उरध
करि केई पग लागैं॥५१॥ केई कं था
कौं परिहरैं॥ मारि मारि बानी उच्चरैं॥
केई षोसि लेय जपमाला॥ केई ब
स्त्र जाय लेबाला॥५२॥ केई श्रोनिश्र
निकरि देवैं॥ केई षोसि षोसि पुनि
लेवैं॥ केई नीषञ्ज न लेजांई॥ भोज
न करण पावै नांही॥५३॥ केई तन मैं
थूंकैं मूतैं॥ केई निंदा करैं बहु तैं॥
केई कांनन लाग पुकारैं॥ केई सी
धूलि जल डारैं॥५४॥ केई मूनि छु
य बुलावैं॥ केई बोलत मौनि गहावैं
केई ताहि बांधि करि राषै॥ जांन
पावै केई भाषै॥५५॥ केई करैं ब
तच्छ्रूप मांनां॥ निंदै बहु बिधि मू
ढ जांनां॥ यह है चोर जांन नहीं प
दिन देषै निस चोरी आवै॥५६॥ य
कौ षीण भयो है बित॥ तातैं यह
ब्याकुल चित॥ सकल कुटंबय

रैकेते॥परियाकै

गहिरह्यो॥भयो॥योकरिक्रोधबढ्य
तोड़ारे॥काढमाहिदेऊपरिमारै

तिकैडषभायेऐसे॥देवज्ञातम

दै

कदेनआवैतनकौसुख॥परिसो

मसबजांनै॥ईश्वतबत्तिनिमाषी

केमिकककहेवचनतबजे
तोसोभावतहोतेहै॥६२॥निद्रुम
॥६३॥दुषसुषदायकलोगनये
रूनहीदेहनहींसुरजेते॥नांग्रह
नहींकमनहींकाल॥येसमस्तहैंम
नकेष्याल॥६४॥जगतचक्रमेंमनहीं
फिरावै॥जीवम्हादुषमनतैंपावै॥म
नहींकरैबिषयनकोभोग॥तातें
होयकरमसंयोग॥६५॥होवैसत
रजतमबिसतार॥जालेजौनिबिब
धिपरकार॥तातैंदुषनिरंतरतहै
देहजोगतैंनिसदिनदहै॥६६॥तातें
दुषदायकमनयेक॥संतकरैया
परमबिबेक॥आपआतमासदा
अनीह॥परिसोमनकरिकरैसमी
ह॥६७॥मनसोंबंध्योअबिद्यामांहि
तातैंबंधनजानैनांहीं॥बिषसमा
निबिषयनकोंपावै॥ताकेंसंगजी
वदुषपावै॥६८॥योहैजीवब्रह्मके

रसपरम प्रकासी
नमनहीक
म
तबसीवजीव भेदनहीकोई॥७०॥

कहक
नवसिकी होनाहे
लत्र ग्राहीजाइ॥७१॥खरणदिक
देवेबङदानायेकादसीश्राहित
तनानो॥अपनेअपनेधरमनिक
रे॥समदमयंम.ने मनबिसतरै
७२॥बिद्याबेदपढे ऊजारे॥औरस
कलधरमनिबिसतारे॥परिजोब
सिनाही मनयेक॥तोमिथ्याश्राच
रणअनेक॥७३॥मनबसिकाजक
हेसबतेते॥बिधिश्राचरणबेदमें
जेते॥मननिग्रहसोउतमजान॥म

ननिग्रहबिनसबञ्जपांन॥७४॥त
तेंजोमनतेंह चलनकरे॥सोबिधिक
हिकौबिसतरे॥ताकोबिधिनहतै
कछूनांहीसबबिधिहैमननिग्र
हमांही॥७५॥ञ्जरुजेबसिनांहीम
नयेक॥तौबिधिकीनेहृथाञ्जनेः
क॥सबहिनकौफलमनबसिक
रणौं॥मनबसिकाजसकलञ्जाच
रणौं॥७६॥मनकौंबसिकरेजोकोश
इंद्रीयगुणञ्जापहीबसिहोई॥क
रिकरिजतनबडतमरिजांईग
मनबसिभयेसकलबसिदेवा॥
स्यौंभवनकरेंनितिसेवा॥सकल
बलिनतेंमनबलिवंता॥मारिकरे
सबहिनकौंञ्जंता॥७८॥मनकौंको
जीतनसकेंबडतउपायनको
करिष्यकें ञ्जैसेमनकोंजीतिके
सबहिनमांहिप्रबलहैसोइ॥७
सोइजेयरिपुबसिनहींकरे॥ब

रिपुद्यादिकबिसतैं।बैरीमित्रव
तबिधिगांनैं।अनिहितअरुहि
तिनतैंजांनैं।८०।तिअतिमुढसु॰
नहींहोवै।मनजीतैंबिनजुगजु
रैवै।दुषरूपजडमिथ्यातनकौं
आपुजांनिकरिबांध्यौमनकौं।८१
कुकीयौदेहसबंधी।तिन
अरुममताबंधी।यहमैंयेमम
मेरै।मित्रसत्रुगांनैंबहुतेरा।८
तातैंमूढमहादुषपावै।उपजि॰
जिपुनिमरिमरिजावै।तातैंदुषकौ
नहींकारण।आतमकौंनवजं॰
रण।८३।अरुजोसुषदुषदा
मोकौंदुःषदैनहैंजेता।तिसबसु
षमोकौंनांहीं।देहयेकसबआप
तमांहीं।८४।तेदुषसुषदेहईपांवै।
आतमकेकछुंनिकटनआवै।
पितनकेसंजोग।करैजीवहीसु
षभोग।८५।तोकमैंदुषदेतेकां॰

कों॥रूपसकलममदेषौजाकौं॥
न्ध्रापकौंकौंडुषदीजे॥अपनौं
हितन्ध्रापकौंकीजे॥८ ईयातनमां
हिम्हाडुषपांजें॥ग्ररुतिनकमैं
डुपजांकें॥ईतननृत्निजीनका
जै॥तोफिरिकहातिकडुषदीजे
॥ईतनिग्ररुजीनहीडुषदेहीं॥
सोतोसकलन्ध्रापकरिलेई॥ईइं
यन्ध्रधिपतिदेवताजेते॥जोडुषदें
निहौंहिसबतेते॥८८॥तोन्ध्राप
कोपकौंकीजे॥परिग्रपाधिकौंसि
रपरिलीजे॥करदीजेमुषमांहिग्र
मनसौं॥सोमुषकाटैकरहीदसन
सौं॥८९॥तोपावकग्ररुबासवजानैं
रागद्वेषनावैत्यौंगानैं॥योंसबइंी
नकेसबदेवा॥करैं॥आपमेंदोषरु
सेवा॥९०॥तेतेसबजानैंत्यौंकरैं॥पं
नीग्रपनैंमननहींधरैं॥ग्ररुजोसुष
डुषदाताग्रापा॥द्रजेकोकछूनांहिं

पाप।ए।३।तोयेसकलनआपनैंसुना
वा।कोईकौनआनीयेअभाव।अ
रुआतममैंसुखदुखनाहीं।उपजे
ज्ञानसकलमिटिजांहीं।ए।२।आप॰
भूलिसुखदुखकरिलीन्हें।सबमि
टिजायआपकेचीन्हैं।तातेंदोष॰
कौनकौंधरीमें।जोअपनौंमनब॰
सिनहींकरीयें।ए३।अरुजोयहसु
खदुखकेदाता।लोकवेदकहीतवि
ख्याता।तोआपनकौंकोंधहीकीजे
परस्कौदुखआपकौंलीजे।ए४।यह
आकासमांहिहैंजेते।द्वादसरासिव
सैसबतेते।रागदोषआपनसैंकरैं
तिनकौंसुखदुखनितिहींपरैं।ए५॥
तातारासिवनमजेपावें।तिनकौंसं
गतिदुखसुखपआवें।तातैंआतमसदा
अजनमा।वमवारदेषतिकोजनमां
एइ।तातैंसुखदुखननहींपावैं।नि
कटआतमकैनर्हींआवैं।

पिसंगतिडुषपरै॥ आपकोपुसो
ोंकरै॥ ८९॥ करिनहारतेय
ों॥ रागदोषभावसोंगनो॥ अरुडुष
ंनीहेयजोकरम॥ तेतोसकल
होभरम॥ ८८॥ यहजडदेहकर
ामांही॥ आतमनिकटदेहकैनांही॥
आतमचेतनिरमांनसरूप॥ परेसक
नतेंपरमअनूप॥ ८९॥ तातेंकोध
कौनसोंकरौ॥ काकोदोषहिरदामे
रौ॥ अरुजोडुषकालतेंकहीये॥
तो॥ आपुनमेंकदेनलहीये॥ १००॥ त
नहीकालकुतेडुषपावै॥ तेआतम
केनिकटनआवै॥ कालनआतमाव
ह्मसरूप॥ देहबिलषिएसकलअ
नूप॥ १०१॥ तातेंकालकृतेंडुषनांही
कालनयांनकदेहनिमांही॥ ज्योंले
अगनिअगनिमेंडारे॥ सोबहुअग
निअगनिहीजारे॥ १०२॥ अरुज्योंपा
लाकोकणलीजे॥ तेबहुतेपालामें

जे॥तोता[illegible]पालाकौंभयनांही॥
ह्वपिरहैसदालामांही॥१०२॥यों
हीयेकआतमाकाला॥सुषदुःषा
दिदेहनकेभाला॥आतमसबतैं
न्यारी॥अंधकारहितअनिहअं त
॥१०४॥अरुआतमापरैतैंपरै
दजहालूंतेसबडरेंकोईआतम
नहीजांनैंसुषदुषकौनकौन
कोवानै॥१०५॥सुषअरुदुषजहांलौं
तें॥येकपरकतिहीकेसबतेतें॥
परकतिआपजडरूपा॥चेतनिआ
मब्रह्मसरूपा॥१०६॥केवलमांनि
योसंसारसुषदुषतनमनसक
लअसार॥मोहनिसांतैंजागेजेतें॥नि
भयभयेततछणतेतें॥१०७॥ता
अबमैंभयनहीअंणौ॥आपही
परैसकलतैंजांणौ॥हरिचरणनि
सेवाकरौ॥ऐसीबिधिभवसा
तिरौ॥१०८॥जेईजेआयेहरिके

३२ रणां तिनहीं तिनमाये हरिचरण
तातें मे हरिचरणनिमजौं मन
मबचनश्रोरसबतजौ १०८ ३
वयोंडुजि मयो बिरक्तो तनकें
नरहोन्नुरक्ता बकुतअसाधन
बकुतडिगायो परिमनमेंकछू
ल्यायो ११० ये नाथे दसस्तुमलो
का करिबिचारमेटो मयेसोक
तें उह बसुषडुबदायका ग्रातम
कौंकोयतेनायका १११ सुबडुबद
यकनाहीं कोई जातैंक हुंहैतक
छुहोई सुबडु बभरमतेंजांनेंमक
ना श्रातमयेकसुजनमांसकल
११२ भर्मछूटैहुजोकोईनांहीमे
रोरूपमिलेमोमांही जबसुषडुष
मिथ्याकरिजांनें मनांमांनहिरदे
नहीं श्रांनें ११३ धीरजधरिममचर
णनिमजे देहादिककीश्रासातजे
नबभवसागरकौं तरिश्रावें मेरो

नंदपदपावै॥१४॥तातें उद्धव
चिक्रम॥सकलहै तकौं जो
भ्रम॥सबतें मनकौं निग्रह करौ
अलकरि ममचरणनि धरो॥१५
कौं कहीयतु है जोग॥याकरि
ममसें जोग॥अरु जो यागाथा
कौं धारे॥सुनै सुनावै सदा बिचारै॥१६
नकें निकट द्वंद नहीं आवै॥अं
तकाल ममचरणनि पावै॥तातें या
कौं सदा बिचारौ॥मेरो बल अंत ग
ति धारो॥१७॥दोहा॥ये उद्धव तोसों
कह्यौ॥मनसंजम हट जोन॥अब म
है सांषि कौ॥सुनत मिटैं भौ भौन
१८॥इति श्री भागवते महापुराणे ये
कादसस्कंदे भगवद उद्धव संमा
दे भिक्षुकगीता कथा नाम त्रे॥ये
बीसमो अध्याय॥२३॥१८५५॥
श्री भगवान उवाच॥चौपई॥उद्ध
व तोसों सांषि ही कहूं॥ हैं नर में

हि अमलिन ह्है। जाहि सुनत छूटै
है तादे है येक ब्रह्म है त १ प्रथ
महि महापुरष जे नये तेयह सां
षि प्रगट करिगाये मुक्ति सांषि जांन
तहीं होई सांषि बिनां नहीं छूटैको
ईर सोही सांषि कहों मैं तोसों निः
श्चल मन ह्वै सुनीयो मोसों २ द्वंद्वर
घ्म क्त तो मैं येक सो बिन सकल
नक्त ते अनेकार तब मैं प्रकृति
आपतें करी जड चेतनि द्वैबिधि
बिसतरी जिन दोन्यों तें उपज्यो सु
त्र महतत्त जो कहिय है सुत्र धाये
क प्रकृति के त्रियगुण कीन्है लन
षिण भिंन्न तिह्ं कौं दी के सुत्र ज
तें त्रैबिधि अहंकार नरमां वनकू
बडो बिकार ५ पंच भूत जे प्रथ
वी आदि अरु पंचों सुषिम सद्ग
हि तांमस अहंकार ते ये ते राजस
तें जह इंद्रीय सब तेते ई सातिक तें

ग्र

नै
ग्र॥प॥

तौ
सुर

ग्लोकदेवनकौंदीयो।अंतरिक्षुन
तनग्रहकीयो।भूंमिलोकमैंमनुष्य
राखो।असुरअहिनकौंनीचैराखे॥२
॥महरलोकजनतपसत्यलोक।
ध्यानमैंसिधिनकेलोक।जेत्रगु
एकरमनकौंकरैंतेत्रिलोकनि

मेंफिरे १२ तपञ्जरुजोगतथासन्मा
सइन्तेंनितिन्यारःमेंबासनक्रिड
तैंजावेबैकुंठ जोसबहिनकेरिस
दास्त्रकंठ १३ प्रबलकालहैमेरो
सकलजगतभच्छणतिंहिकेरोसत
लोकमैंहं जोजावे कालतहांतेता
कुंपावे १४ कबहुकायकष्टकहि
ऊंचे कबहुंकालठहावेनीचे
सीबिधिसब भरमतरहें जनमैंमर
बहुतडषसहैं १५ उतममधिमन
चेंजेते छोटेबडेथूलेरूसकेता
जेकछुजहांलगआकार तेसबप्र
कृतिपुरषबिसतार १६ प्रकृतिपुर
बिनऔरनकोई इंद्रीयमनगोचर
जोई प्रथमहिनिराकारमेंयेक ता
येआकारअनेक १७ अरुपुनिमें
रहेहंअंत तातेंअबहंमेंबरतंत
जाकीआदिअंतहेजोई ताकेमधि
मेंपुनिसोई १८ ज्योंमाटीकेबहुघ

नये॥ अंतही फूटि माटी मिलिगये
माटी आदि माटी ये अंत॥ तौ माटी म
धि बरतंत॥१७॥ औं कंचन के बहु उ
आभरण आदि अंत ये कही सुव
र्ण॥ तौ मधि हू और कछु नांही॥ नां क
म रूप मिथ्या कै जाई॥१८॥ त्यों जब दे
षे तजि मोहारा॥ तब मैं ही हौं सब वि
स्तारा॥ आदि रु अंत मधि मैं येक॥
मिथ्या नाम रूप अनेक॥१९॥ माया रु
तैं महतत्त अहंकारा॥ तिन तैं होय स
कल बिसतारा॥ बहुर्‍यौं नास सक
ल को होई॥ महदादिक कछु रहन को
ई॥२०॥ प्रकृति मूल अरु पुरष अ
हारा॥ अरु जो काल सकल करता
र मेरी सक्ति तीन ये जानौ॥
क देमति मानौं॥२१॥ या बिधि
जाय बिसतारा॥ नई
सार॥ परमातम की अ
बरतैं सकल निरं

मेंकिरे॥१२॥तपऋरुजोगतपासंन्या
मइनृतेंनितिच्यारूंमेंबास॥नकिउ
तेंजावैबेकूंठ॥जोसबहितकरिस
दाऋकूंठ॥१३॥प्रबलनकालनहैमेरो
सकलजगतमत्त्वणतिंहिंकेरो॥सर
लोकमेंकूंजोजाके॥कालनतहांतेता
कूंपावे॥१४॥कबहूनायकबूकरि
ऊंचे॥कबहूंकालनहावैनीचे॥चे
सोविधिसब भरमतरहै॥जनमेंमरे
बहुतदुषसहै॥१५॥ऊतममधिमनी
चेंजेते॥छोटेबडेथूलेंकसकेते॥
जेकछूजहांलगआकार॥तेसबप्र
कृतिपुरषविसतार॥१६॥प्रकृतिपुरष
बिनओरनकोई॥इंद्रीयमनगोचरहै
जोई प्रथमहिनिराकारमेंयेक॥ताते
येआकारअनेक॥१७॥अरुपुनिमें
रहैहैंअंत॥तातेंअबहूंमेंबरतंत
जाकीआदिअंतहैजोई॥ताकेमधि
मेंपुनिसोई॥१८॥जोंमाटीकेबहुघ

नयो॥ अंतही फूटि मांटी मिलि गये
मांटी आदि मांटी ये अंत॥ तो माटी म
धिं बरतंत॥१९॥ ज्यों कंचन के बहु
आभरण आदि अंत ये कही स्व
र्ण॥ तो मधि हू और कछु नांही॥ नां
म रूप मिथ्या कै जांई॥२०॥ सो जब दे
षें तजि ओहार॥ तब मैं ही हों सब बि
सतार॥ आदि रु अंत मधि मैं येक॥
मिथ्या नांम रूप अनेक॥२१॥ माया
तैं महतत्त अहंकार॥ तिन तैं हो यस
कल बिसतार॥ बहुर्यौं नास सक
ल को होई॥ महदादिक कौं रहन कै
ई॥२२॥ प्रकृति मूल अरु पुरष अं
हार॥ अरु जो काल सकल करता
र मेरी सक्ति तीन ये जांनौं॥ मो तैं हु
कदे मति मांनौं॥२३॥ याबिधि चल्यै
जाय बिसतार॥ नदी प्रवाह तु
सार॥ परमातम क
बरतैं सकल निरंतर तौ सौ॥

क्रसैांप्रलयसकलनकोहोईसुक्ष्म
स्थूलरहैनहींकोईमहाबलिष्टस
क्तिममकालताकोसकलजगत
येस्थाल॥२४॥कालविनासैसकल
ब्रह्मंड॥कितक्रंकछूनराषैषंड
नाहहिहोवैसतवरष॥तातैंदे
हनकोंत्राकरष॥२५॥छोटेबडेदे
हसबतेते॥लीनत्रसनमैंहोवैजेते
त्रसनभूमिमैंहोवैलीना॥भूमिगंध
मिल्महोवैषीना॥२६॥गंधलीनहोवैज
लमांही॥जलसुक्ष्मरसमांहिसमां
ही॥रसजबतेजमांहिमिलिजावै॥ते
जरूपमैंजायसमावै॥२८॥रूपपवन
मांहिमिलिरहै॥पवनहींतबसप
सगुणगहै॥सपरसलीनहोयतब
गगनि॥गगनिहिंसबदमांहिंहोय
गनि॥२९॥शबदमिलैतामसत्र
कार॥सोत्रहंडीयदसमरकार॥
सबमिलिराजसत्रहंकारहीं॥

रिसकल्लहोयसंहारहीं॥२०॥दि
स मनसांतिकअहंकार॥मिलि
रिसकल्लहोयसंहार॥अहंकार
हत्ततहीमिलै॥प्रकृतितबमहत्त
हीमिलै॥२१॥प्रकृतिकालमैंहो
लीन॥कालपुरषमिलिहोवैषी
॥पुरषमिलैपुरषोत्तममांहीं॥पु
षोत्तमकहंजावैनांहीं॥२२॥भे
दाभेदरहिततबयेक॥निस्मानं
दद्वैतबितरेक॥चेतननिरमलग्यां
नसरूप॥२३॥अधियेपरमअनूप
॥तातैंजछवमिथ्याद्वैत॥ग्यादिअं
तअद्वैत॥जलबुदबुदस
आकार॥उत्पममधिमबिनधि
कार॥२४॥ऐसैंसदाबिचारैजो
कौंकौंनभांतिभ्रहोई॥रबिउद्यो
कहोतमकैसैं॥नदीमध्यद्दावान
तैसैं॥२५॥येसैंभा॥ग्योसांषिप्र
हैतउतपतिसंहार॥याके

मांननसंसैंरहै।अहंकारदिढग्रं
थहीदहै।२६।छोडेरूपअरूपस
मांवें।जातैंबडूरिनडुषकौंपावें
तातैंयाकौंसदाबिच्यारै।मोकौंजं
नित्रापकौंतारै।२७।दोहा।उध्व
येतोसंकह्यो।सांष्यिरूपांनबिचा
र।अबगुणवृतिनुकौंकहूं।भिं
नभिंनपरकार।२८।इतिश्रीभा
गवतेमहापुरांणेएकादसस्कंदे
भगवदुधवसंमादे।सांष्यिनिरू
पणानांमचतुर्वीसमोध्याय।।
२४।।१८ एहीं।।श्रीभगवांनउवाच
[illegible]।उधववांषोंगुणवर
तीं।तिनकौंजांनैंलहनिरवरतीं।।
जागुणतैंजोलछिणहोई।भिंनिभिं
निनाषोंसोसोई।१।समदमषिमांबि
बेकसुधरमा।लजामांनिनकरेबि
करमा।सतिदयानहींमूलैसुद्धि
नृतिममालग।मैंछिरबुधि।२।जस

सोभाग्रीरजवंता।परउपकार
दावरतंता।बुधिश्रासतिकनि
संग।संतोषीश्ररुदानश्रभं
कोमलविनयदीनचतुराई।सी
लहिरहृयसकलसुषदाई।श्रैसी
तिबहोतसंपती।सातिकगुणकी
णोंवरती।धाश्रातमरुनसब
मारो।चित्तनिकरिबरतांवनहा
गासक्तिरुदेवरुकोंमा।धनश्र
नलाप्राजसश्रभिरोमा।धा।नहमा॰
सग्रबबलनवंता।रिपुमित्रादिक
दश्रेनंता।करिकोंमनोमजेवरु
वा।परमारथकोलहनमेवा।दैव
श्रारंभनिमैंउतसाहा।सदाकवो
सदाश्रुतिचाहै।बरुतनबरतिरा
श्रैसी।येतुमसौंभाषीमैंतेसी।
हिंस्यालोभक्रोधश्रधिकाई।जिं
तिहिंदीनरुदंभरुगाई।भ्रम॰
कलहसोकश्ररुमोहा।निंद्राश्रा

सभैपरजैहा॥८॥तिमदिनचिंताउ
दिमहीन॥हिरदैआसासाहसही
न॥असीबक्रुतांमसकीबरती॥जि
नतैंकहेनजहै निरबरती॥ए॥उप
जैममताअरुअहंकार॥तातैंक
रैबिबधिबिवहार॥तेसबमिलि
तमगुणकीबरती॥तिनतैंबाढै
बक्रुतपरंबरती॥१०॥धरमरुअ
थकांमअनुरक्ती॥अधालोनत
घाआशक्ती॥धरमप्रबरतिपराय
ण॥जेते॥बक्रुतनांतिबिसतारैते
ते॥११॥बरतैअपनेअपनेधरमा॥प्र
यग्रहअरुसुभग्रहकरम॥तेसब
मिलितिगुणनकीबरती॥जिनतैंब
क्रुविधिहोयप्रबरती॥१२॥समदम
आदिजुगतिनरजोई॥सातिकल
णकहीयेसोई॥राजसकांमादिक
अधिकार॥तांमसजहांकोधादि
कार॥१३॥जबसुधरमसौंमोकौंभ

दूजीसकलकोंमनोंतजै॥त्रियापु
रषभावैसोहोई॥सात्तिकप्रकृति
कहीजेसोई॥१४॥जबकोंमनोंहि
रदैधरिलेवौ॥अपनेकरमनिमों
कौंसेवौ॥येसुभावराजसकोकही
ये॥मुक्तिहेतकबहूंनहींगहीये
१५॥जबहैंस्याहिरदामैंआनैं॥नि
जकरमनिममसेवाठानैं॥सोब
हतोमसबरत्तिकहावै॥तातैंम
मसुषकहैंनपावै॥१६॥सतरजत
मतीन्यौंगुणजेहैं॥जीवहीकोंबंध
नसबतेहैं॥त्रिगुणमेरीअग्याकरै
तातैंमोहिभजेतेतिरै॥१७॥चित्त
हूतैंउपजैयेसकल॥इनकौंत
जैंआतमाअकल॥इनकौंछोडि
रहैमोमांही॥बहुरियौंउपजैबिन
सैनांही॥१८॥करिसाधनरजतमप
रिहरै॥सात्तिकगुणकीबरत्तिहींक
रै॥सात्तिकसूरजिन्यौंपरकासा॥अ

तिसीतत्तजैसौंचंद्रविगासा १९ ॥ सब
केल्यांणमूलसुषकारी ॥ निश्चल
करणसकलदुषहारी ॥ तातैंधर
मध्यांनसुषलहे ॥ चिंतासोकमो
हनयदहे २० ॥ जवसांतिकतंम
सनहींरहै ॥ राजसन्यायबसेराग
है ॥ राजसरूपसंगबल भेद ॥ तातै
मानेकरम नयषेद ॥ २१ ॥ जबसत
ज्ञरुरजछूटैदोई ॥ केवलयेक
तमोगुणहोई ॥ तबञवेवेकना
सकलावैण ॥ उदिमहरताजड़
ताकरण ॥ २२ ॥ तातैंसोकमोहको
बासा ॥ निंद्रालसनिसदिनञ्ना
सा ॥ जबछूटैइंद्रीयनकीबरती ॥
हिरदैनहींईहांउतपती ॥ २३ ॥ चि
तप्रसनसकलनिहसंग ॥ सोसा
तिकममग्रहहैञ्नंग ॥ जबतनञ्न
रुइंद्रीयमनबूधी ॥ थिरनहींहो
हितहैनहींसूधी ॥ २४ ॥ वांनैंबिब

धिकरमविसलार॥सोजानौराजस
अधिकार॥जबविकारबऊनि
धिमनगहे॥असाबसिनिरंतरर
हे॥२५॥सोकविषाद चेतनांहीन
सोतामसउदिमबलछीना॥जबज
पजेसातिकको भाव॥तबसबहो
वेदेवसुभाव॥२६॥राजसतेंअसुर
निकीबरती॥भूतगणनिकीतम
उतपती॥सातिकतेंजागणौहोई
राजसपावेसुपनासोई॥२७॥तामस
ऊतेंसुषपतिलहे॥ब्रह्मतुरीयानि
रंतररहे॥सातिकउर्द्धलोकनिकूं

२८॥तामसनीचेथावरआदि॥या
बिधिभरमैंजीवअना।
बुधिमानवजोहोई॥तामेंमरण
हेजोकोई॥२९॥
कहीजावे॥राजसमेंमरिनरतन
पावे॥त

तीन्यौंगुणनजिमोमेंरहै॥२०॥मेरेहि
तकरमजोकरै॥तामेंहूजोफलनं
नहींधरै॥सोवैसात्तिककरमक
हावै॥तातेंजीवमहासुषपावै॥२
फलनिमतिममकरमनिगंनै॥ता
कोंराजसकरमबषांनै॥हंस्याहेत
करैममकर्म॥सोतांमसहैबडोअ
धर्म॥२२॥भेदरहितसोसात्तिकग्यां
न॥देहभेदसोराजसजांन॥बाल
कमंकतुल्निजोहोई॥तांमसग्यांन
कहीजैसोई॥२३॥आतमदेहरहि
तजोयेक॥सोहैमेरोग्यांनबिबेक
॥कैबिरक्तबसीयेयेकंत॥सात्तिक
बासकहैजोसंत॥२४॥ग्रहमेंकही
येराजसबास॥तांमसजुंयसुरास्र
बास॥घावैरचैलममसूरतिजहां॥
निरगुणबासकहीजैतहां॥२५॥सा
त्तिककर्तासोनिहसंगी॥सोराजस
फलकरमप्रसंगी॥बिधिकरिरहि

तांमसीकर्ता॥ऐसेत्यागकरम
निमित्तता॥२६॥आपहीमेहिरहैम
मसरणं॥ताकोसबनिरगुणआच
रणं॥सोजननिरगुणकरताकही
ये॥ताकेसंगपरमपदलहीये॥२७॥
जोनिहकरमआतमांजांनैं॥सकल
तजनकीसरद्दावांनैं॥सकलत्याग
निश्चलजोहोई॥सांतिकश्रद्धाकही
ये सोई॥२८॥राजसश्रधावांनैंकरम
तांमसश्रद्धाकरैबिकरम॥निरगुण
सरधामेरीमनकी॥जातैंमिटैसकल
आसनकी॥२९॥पथ्यपवित्रबिनांस्र
मआवै॥जामैंअपनौंधरमनजावै॥
जातैंउपजैनहीबिकारा॥सोकहीये
सांतिकीअहारा॥३०॥खाटामीठाती
खाखारा दुखदायकराजसअहारा
जोअसुद्धहंस्यातैंआवै॥सोतांमस
अहारकहावै॥३१॥ममजनअरुमै
रोउछिष्ट॥सोनिरगुणभोजनअति

ष॥इंद्रीयसुषतस्मादिकदहै॥तजि
आरंभनिष्पिरहैरहै॥४२आतमतै
उपजैजोई॥सोतिकसुषकहीयतुहै
सोई॥इंद्रीयसुषराजसनहींगहीये॥
निंद्राआलसतामसकहीये॥४३॥
रेप्रेमभक्तिसुषजोई॥निरगुणसुष
कहीयतुहैसोई॥द्रव्यदेसफलका
लरुग्यांन॥करताकर्मअवस्थादा
न॥४४॥४५धानिष्टाअरुकार॥त्रिगुण
निर्मितिसबबिसतार॥जोकछुकहै
सुनेअरुदेषे॥मनअरुबुधिजहांल
गुलेषे॥४६॥सोसबप्रक्रतिपुरषबि
सतार॥त्रिगुणनिरमतसकलपसा
इनतैजीवलहैसंसार॥त्रिगुणकर
मयबारंबार॥४८॥जोइनतीन्योंगु
निनिवारै॥चित्तआपनोंमोमैधारै॥
मेरोनिरगुणपदपावै॥बहुर्यौयाभ
वमैंनहींआवै॥४९॥तातैयेऐसीन
रदेह॥जाकरिमिटैसकलसंदेह॥

होवै श्रगटग्यांन निसांन॥ पावै मोहि
मिटै सकलत्र्यांन॥धरा॥तातैं पंडित क
... ॥सो कोसेय त्र्यापकों म्यारै
बिन सकल त्र्यपंडित जांनैं॥जेते
त्र्यांत मघाती मांनैं॥धरा॥सकल त्र्य
होवै नेह संग॥सावधांन पलपरे
भंगा इंद्रीय प्रांण देह मन जीतैं॥
मचर चाहि नरैं निबिदीतैं॥धुंगेस
कलें सातिक की संगति करै॥राजस
तांमस परिहरै॥देहादिक तैं निस
हहो ईन्ह्रा गेत्र्यंभ्याक रैन कोई धुर
मैं धारैं नेह चलबुद्धी॥नवपावै [illegible]
तिसुद्धी॥या विधि सातिक [illegible]
वै॥तातैं लिंगसरीर मिटावै [illegible]
गसरीर मिटै भव तजै [illegible]
त्र्यापनैं भजै॥ति सो कै [illegible]
वैं॥बाहरि भीतरि है न [illegible]
मैं मिलि मोही मैं रहै [illegible]
गनिन हौं दहै॥ [illegible]

तातेंकदेनहोवेनंग॥पूध॥दोहा॥
उद्धवयेतोसोंकहो॥तीन्योंगुणकी
बरति॥ अबजोरूपानहोंकहें
जातेंहोयनिरबरति॥पूध॥
भागवतेमहापुराणेयेकादसस्कं
हे भगवदउद्धवसंवादे गुणब्रि
तिनिरूपणंनामपंचवीसमोअध्या
य॥२५॥१४४॥श्रीभगवांनउवा
च॥ उद्धवयेनरतनहैजैसो॥
कलसिद्धमैंनांहीतैसो॥यातनक
रिममग्यांनहीपावे॥जातेंमवतजि
मोमेंआवे॥१॥तातेंजैसेतनकूंपाइ
मोमिलिवेकोकरेउपाइ॥अंतरमां
हीमोहिबिचारे॥औरेसकलबास
नांटारे॥२॥ममजगतनकेलक्षि
णो॥स्योंस्योंआपआपमेंवांनो॥अनाय
सैंतबमोकोंपावे॥कालब्यालकबं
हेंनहीषावे॥३॥मायागुणजबमिथ्या
जानें॥मेरेग्यांनपायकरिमानें॥योंहे

रहेदेहहमांहीं॥तोहकेरिलिपैक॰

ा॥तोहरूपंनध्यांनकोभ॥॥

मेरैॱहै॥जैसेअंधअंधकेसंगाकूपप
नेगयाकीगाथानाथेोंटे

उर

ही॥तोसैंभाष्याभावूंसोही॥७॥रा
रवाचकरबरती॥ताकीआनजहां
लौंधरती॥आपकुतैंउतरीउरवसी
सोमिलिकरिनिरपकेउरबसी॥९॥ये
उरनाहरिलेवेजबही॥नगनदेषं
तमैंबिनतबही॥तबहीउरबसी॥१

नृ ॰ ९

नैनन पावै॥१३॥ऐसैबैन उरवसी
नी भी राजासुनिहिरदामैं राषे
परसपर भोगनिरंतर विषै
हीपरै अंतर॥११॥वढ्योश्र
तिजव भई॥तवतजिउरवसीन
हीगई॥निरपविलापकरैवहुरो
परिसोनृपकीवोरनजोवै॥१२॥रा
गनदेहसुद्धिनांही॥वांणीविक
लतामांही॥लज्जारहित मतमदजेसे
चल्यो उरवसीपाछैतेसे॥१३॥ल्हैप्री
यातुमगाढीहोवो॥मेरीवोरक्रूपाक
जोवो॥मोकोंविसारिकहैजावो॥कृपा
करोमेरेग्रहआवो॥१४॥मिलिउरव
संगसुषपायो॥सोसोसकलउछाहोय
आयो॥तवमनभयोभोगवतभोगा॥पा
उरवसीकोसंजोग॥१५॥ताउर
नआकरष्यो॥तातेंमनलोमांनिकरि
रष्यो॥तनमयहिरदेकछुनआंनो॥
निसदिनमांससवरषनहीजांन्यो॥१६॥

बतानरपके पूरण भाग॥जातेंप्रग
टभयोबैराग॥तबनृपबचनबषा
नेंजेई॥तेसोमें भाषत हौंतेही॥१७
पुरुरवाउबाच॥अहोएकदेषोमम
मोह॥आपहीकीयोअपनोद्रोह॥गही
योकं वदेवकीमाया॥जिनमेरोसब
आयुगवाया॥१८॥नमोकौंडहक्यो
बकुतेरो॥अबसुआयुलीयोहरिमे
रो मैंदिनरातिनजानेंजात॥अमृत
करिमांन्योंविषबात॥१९॥बरष
समूह गयेदिनबीती॥सकलविका
रनलीनैंजीती॥देषोमेंकैसोडहर
कायो॥स्त्रीकेकरआपबिकायो॥
२०॥जोमैंराजाराजचक्रबरती॥जी
तिसमस्तकरीबसधरती॥सकलभू
पममचरणनिसेवें॥तनमनधनसेब
मोकौंदेवें॥२१॥सोमैंबिकानौंस्त्रीहा
थि॥ज्यौंबानरबाजीगरसाथि॥ज्योंज्यों
स्त्रीमोहिनचायो॥त्योंत्योंमूरषमैसठ

है

२४ सो॥२२॥तापरिराजसहितत
तृणसमांनिकरिचलीबिछोहि
गननयोमैंपीछेआयो॥सोजनम
तआपबिसरायो॥२३॥कोंनमां
ताकेबलनहोइ॥तेजपरतापरहैन
हींकोइ॥जोहोवैंस्त्रीआधीनजैसें
रीसंगघरहीन॥२४॥बिद्यामोनित
स्यास्याग॥बनमेंबसिबोद्रिढबैरा
ग॥येसमस्तकीन्हेंकछुनांही॥
लगत्रीयाबसेमनमांही॥२५॥ये
उरबसीजबहीतैंपाइ॥कांमअ
गनिबङमांतिजगाइ॥परियेअ
गनिनसीतलभइ॥अधिकअ
बाधतैंगइ॥२६॥जैसेंअगनिप्रज
तहोई॥तामेंईधनडारेकोइ॥सो
अधिकअधिपरजरे॥पलकोनहीं
सीतलताकरे॥२७॥मैंअपनोनहिं
सोचरच्या॥आपुआपुकोकीयो
रच्या॥मूरखआपहीपंडितमांसों॥प

॥ स्यौमनुसुषअमृतजान्यौ॥१८॥जो
मेंईसमकलनकेरो॥सोकैरह्यौ॥त्री
याकोचेरोमेंमूरषताकौंद्धिरकार
जिननकीयोकंकूग्यानबिचार॥१९॥
स्त्रीकरिजाकौंचितगह्यौ॥ग्यानबि
चारसकलसोदह्यौ॥ताकौंहरिबिन
कौनछुडावै॥हूजोआपनकूटनपा
वै॥२०॥तातेंमैंहरिचरणनिगहौं॥स
कलत्यागहरिकौकैरहौं॥जद्यपिदे
बीमोहिबुझायो॥त्रीयाप्रीतिडषक
हिसमझायो॥२१॥तौउमैंमूरषनहीं
जान्यौ॥कौंमत्रंधसुषईकरिमान्यौ॥
तातैंताकौंनहीअपराध॥येमेरोमन
डौअसाध॥२२॥जोमैंसुरगनरकमें
ष्यौडवहीमांहिसुषकरिलेष्यौ॥
पजांनिडषपावे॥अगनिपतं
परेंमरिजावे॥२३॥तौतिनकौंअपं
धनकोडी॥आपडठाकरिलेवेसो
तातेंडूनकोयहसु

४ धरयोकु भाव॥२४॥जोमेंत्र्प्रापन्नग
निमेंपरौ॥तोतरदेश्रकवनकोध
रों॥देहमलीनमहाडरगंध॥सोक
रिजांनीबिमलसुगंध॥२५॥सोत्र्प
नीत्र्प्रबिद्याकरयौ॥निजानंदत्र्प्रा
तमबिसरयो॥येतननतोबडूतन
कोकहीये॥तामेंममतागहिकोर
हीये॥२६॥मातापितात्र्प्रपनोंकरि
२ कहैं॥स्त्रीयेकमेकमिलिरहे॥के
यहतनकहीयेराजाको॥केपाव
कनथिणहेजाको॥२७॥केनूकोके
स्वांनश्रृंगाल॥केत्र्प्रपनोंमित्रकेका
ल॥येतनधूकहीयेकिनकिनको॥
प्रगटदीसतहैतिनतिनको॥२८॥म
हात्र्प्रसुद्धदेहहैत्र्प्रैसी॥परगटनर
कग्रांनिहैजैसी॥तहांकोमनबांधे
मतिमंद॥त्र्प्रस्त्रीनांमकालकोफं
द॥२९॥तुचारुहीरमांसत्र्प्ररुत्र्प्र
तमंजामेदरोमनत्र्प्रदंत॥मिष्टमु

४१
ह मेदाडा।स्त्री परगटनरक
।।तातैं स्त्री अरुतासंगी। २
तिनके नहीं कछु जे प्रसंगी।।तिनके
दरस कमित मनहोई देषें बिनां
दसनैंकरी

रामनबचिक्रमदोऊसंगतिहारे
:रातबयहमनस्हा
डीकदेबिकारनपरसेकोई।।ता
तैंजोस्त्रीनकोंनजौ।।अरुअस्त्री।तिन
कौंबुधितजै।।४३।।दरसपरसअरु
श्रवणनिबासासबभावनितेमोनै
त्रासा।छंडीयनुंकोबिस्वासनकरै
ग्यानवंतनेलहीपरेहरै।।४४।।मह
पुरषजेजीवनमुक्ति।।तिनहूंकौं
सबसंगअयुक्ति।।तोजेजगतेंछूटे
चहैं।।तेहमसेकौंसंगतिगहैं।।४५
तातैंमैंसबसंग

रनकेवत्नउरधास्ंदीनबंडक
रुणामयस्वांमी॥ कृपाकरीयह
स्वंत्रजांमी॥ ४६॥ श्री भगवांनउवा
चा॥ याविधिवचनकहेनरराज
तजिउरवसीलोकसुषसाजा॥ ग्यांन
लनेह्यौसबसंसयटास्यौ॥ मननिश्चल
करिमोमेंधास्यौ॥ ४७॥ तातेउद्धवये
पुरुषारथ॥ नरतनपायौतबहीस्वा
रथ॥ जबसमस्तकीसंगतितजैस
तसंगतिगहिमोकौभजै॥ ४८॥ संत
बतावैहितउपदेस॥ जिनतेंसंसय
रहैनलेस॥ मनकीसबआसक्तिनि
वारै॥ संतमहाभवसागरतारै॥ ४९॥
निसपृहनिरारंभसमदरसैसंय
हरहितद्वंदनहीपरसै॥ अहंकार
ममतानहीआंनै॥ मोहिभजैहजोन
हीजांनै॥ ५०॥ तेजद्यपिउपदेसनदे
हीं॥ तोहूमोहिचहेंतेसेवैं॥ तहांकथा
मेरीनितिहोवै॥ तेहीअंधसंदेहनवे

वै।७८। मेरी कथाश्रवणजोकरैतेति
सबपापनितैंनिसतरैं।सुनैंकरैश्रं
तरगतिध्यावैं।श्रितिश्रादरसौंप्रीति
बधावैं।७९।तिसहजहीलहैंममभं
क्ती।सहजैंहोवैंसकलबिरक्ती।मेरी
भगतिलहैंनरजबही।पूरणकांम
भयेसोतबही।८०।ताकोंकछून
करणौंरहै।ग्यांनांनंदरूपममलहै
सीननिसौंकछेहोवैकोई।तहांश्र
गनिपरजालैसोही।८१।तमतुमार
भयसहजहीजावै।त्योंसाधूसबदो
षमिटावै।यैश्रंपारसागरसंसार।
जामैंबूडेजीवश्रपार।८२।तिनकों
नांवयेकहीयेह।संतरूपपरगट
ममदेही।ज्यौंप्रांणनिराधैश्रहार।
मेरीसरणिडषसंहार।८३।ज्यौंपरं
लोकधरमधनजांनों।त्यौंभवतारक
साधूमांनों।जिनके

५७ ज्यों बाहरिहै सूरजियेक थोग
र नयन उधारें अनेक संतही मात
पिता हितकारी संतें देव बंधू उप
हारी ५८ तातें संतसंग नितिकर
णों ओरउपायनहिं फिदे धरणों
तिन तें अनायो सनवतरें अनाया
समा कों अनुसरें ५९ तब पुरुरव
ऐसो कह्यो सो उरवसी लोक परिह
स्यो तब तजि भयो आतमाराम बि
चस्यो भूमें है निहकाम ६० तातें
असत संग परहरीये साधू संग नि
रंतर करीये साधूजन सुषही नवत
रें सुष ही मम चरण नितचित धारें
१ दोहा ऐसो साध असाध को सु
हरि जी सूं संग तब उद्धव जन पूछ
यो करम योग पर संग ६१ इति श्री
भागवते महापुराणे एकादश स्कंधे
भागवत उद्धव संवादे ऐलगीत
मां ...

उरुवृतवार्त्ता॥चौपई॥हेम्र नृरू

गविधिजैसी॥जाकेकरतहोयस
तसंगा॥पावैग्यानहोयनिहसंगा॥१॥
यहजोतुवप्रतिमाकीपूजा॥तातें
श्रीयेकहतनहीदूजा॥याकोंकहे
व्यासअरुनारद॥गुरुवृहस्पति
परमविसारद॥२॥औरोंसकलमु॰
नीसुरजेते॥परमश्रीयेयहभाषेंते
ते॥कर्मआदिविधिसोंतुमकहौ
सोदिढकरिविधिहिरदेगहौ॥३॥ति
नभृगवादिकसुतनिसुनायो॥सोमैं
हूतेंभवानीपायो॥जिनेसकलवर॰
णआश्रम॥अरुश्रीअंत्यजसबकोध
रम॥४॥याबिनुऔरधरमहैजेते॥
याहीकौजकहेहैतेते॥याबिनऔ
रधरमजेकरें॥तोतिननेंफिरिबंध
नपरें॥५॥यहईसबधरमनिकोधर
मायाही

बिधिबिसतारो
जीवनिनिसतारो है तुमदया
सबै हितकारी
भ्रमहारी
बैन बोले हरषिके मनन दतनैं
श्रीभगवानउवाच ॥ उद्धवयाकौ
अंतनपार भम पूजाबिधिबहुबिस
तार परतोसोंसंछेप सुनां क्रं तामें
तत्वसकलनकौं ल्याऊं ॥ पूजाबिधि
है तीनप्रकारी बैदिक तंत्रक मिश्र
तसारी बेदमंत्र अरु बैदिक अंग
सो कहीये बैदिक परसंग ॥ पंचर्यौ
हीतंत्रक मिश्रत जांनैं नांवेतासं
पूजावांनैं बिप्रलघित्री बैस्यत्रिब
रण इनकौं जाबिधि पूजाकरण अं
सोसमस्तबिधि तुमही सुनांऊं जीव
निकौं कल्याण उपांऊं प्रतिमामें
मिश्रगनिजलबाई हृदि अरु आ
पुश्रर्क अरुगाई ॥ १ ॥ अरु सब हिन

कौजांनै।जथाजोगसबपूजा
गनै।गुरुअरुमोमेंभेदनराषै।
नुषबुधिहरिकरिनांषै।१२।सु
होयजलमांटीसंग।स्नानादिक
सकलहीअंग।जेजेप्रगटबेदअ
रुतंत्र।तितेसकलपढेममभंत्र
१३।संध्यापासनादिकजेकरम
प्रगटतिहूंबरणनिकेधरम।ति
नतिनसोनित्तिमोकोभजे।होयन
षेदसकलसोतजे।१४।जाहीकरि
ममसुमरणहोई।काटेसबकरमनि
कोसोई।सोईसोकहीयेममधरम
ममसुमरणबिनुबंधनकरम।१५
अबभाषोंप्रतिमाकेभेद।सेवततै
नहीमिटेभवषेद।येकसिलाकी
कहीयेमूरति।येककाठकीत्योंम
मसूरति।१६।येकलेपिचंदनकी
करीये।येकचित्ररपुस्तकलिषि
धरीये।प्रतिमांयेकम

येकमनोमयमनमैंधारी॥१७॥ये
कमृतकाकी स्वेकीन्ही॥येकर
तनमणिकीकरिलीन्ही॥येमम
प्रतिमांस्वरूपपरकार॥तामेंमम
मंदरिनिजसार॥१८॥तिनमेंहोवे
निश्चलजेती॥सेनादिकनिक
वैतेती॥सालिगरांमस्रादिहै
मेरोतनजांनैंनितितेती॥१९॥स्रर
चनकोंपूजाकाल॥किंवाजा
निगोपाल॥लेपीलिखीमारजन
स्रोरनितिसनानहीबिसतारे॥२०॥
उत्तमसामग्रीसोंसेवे॥तनमनधन
सबमोकोंदेवे॥जोनेहकांमनि
कपटीहोई॥करेभावबस
सोई॥२१॥उत्तमवस्तुनिमनकरि
वे॥प्रेमसहितसबमोहिचढावे॥
उत्तमबिधिस्नानकरावे॥बस्तर
भरणांदिकपहिरावे॥२२॥स्र
तादिकहोमहीकरे॥धरणीरविस्र

मोकोंवकृविकिक्कनव

२४ ताकोमहिमाकहावय

आनिव

केसुनीयोमोम्पांहाय

फिरिउविवेकोरहनतरेड

बवेन्त्रकेपूरवमुय निष्क्रन

२७ हैनोनका नि

तिभ्रा नृ

रहाउतमक

लसतोयसोंनरेंइजेजलकेपृतर

हि धरै। जलमैं बकुल सुगंध मिलावै
तासूं मोहि सनांन करावै। २०। अ
षपाचूं अरु बिधूरकरै। तिनपा
तर ता तैं जल भरै। गंध उसपतिन
मैं बकु धरै। गायत्री अमिमंत्र ति
करै। २०। तब अपनौ करै तन सुद्ध
के अहार नहीय असुध। हिर दै
मांहि मम रूप ही ध्यावै। जैं कास
हां तें आवै। २१। जैसें ग्रहमें दीपप्र
कासे। यों ध्यावै तन मांहि उजासे।
पूजे प्रेम सों तन मछ हो ई। पुनि मूर
ति मैं थापै सोई। २२। सांगोपंग करै
तन पूजा। कोई भावन उपजे दूजा।
देवै अरथ पाद्य अचवन। रचै अ
ष्ट दल पंकज भवन। २३। ता परि
स थापै धरमादि। सकल सक्ती रवि
ससि अगनादि। संष चक्र गदा पद्म
अं तें अस्त्र। धनष रु बांण मूसल ह
लसस्त्र। २४। ये आयुध अरु आदि सस्त्र

नैं।मणिमालाहलतातरजोनैं।।नं
दसुनंदमहाबलचंडा।कुमुदेक्षण
बलकुमुदप्रचंडा।३धूम्रसूदिसा
पारषदसामग्र।।गाढोगरुडजोरि
करअग्र।।विष्वकसैनव्यासगुरदे
व।गणपतिदुरगाअरुबसुदेव।।२६।। स
करजोरेंहरिसुनमुषगाढो।।हरषि
तबदनप्रेमअतिबाढो।।सबहिन
कूंपूजें अरघादी।।विनयनमृताबं
दनआदी।।३७।।चंदनअरुकपूरउ
सीरकुंकमअगररुसुगंधतनी र।
प्रथमहिंकसुमधूपकचढावें नि
रमलजलआचमनकरावे।।३८।।पु
निसुगंधजलदेयसनानैं मंजनदन्त
मनकरमहीआनैं।पुंसीकाना न
न नव भोवनआदिपुरपदअ न
पजांवना।३९।। जे त्व
आध

श्रुतिविसतारे॥४०॥वस्त्रजनेउअ
रुत्राभरण॥अंगअंगतिलका
ककरण॥उत्तममालाबकुत
है॥प्रेमसहितमोसौमनबंधा॥४१॥
बालभोगआचमनकरावे॥कु
मसुगंधरूधूपबनावे॥बकुतमो
आरतीउतारे॥नांनांबिधिवेबद
वारे॥४२॥षीरषांडघृतदधआप
सी॥स्नाहूघुवासहारसुरसी॥बिंजन
करेओरबकुतेरे॥बिनोलगा
कुतहीमेरे॥४३॥नितिदांतोंनउ
बटनोतेल॥आकवावेपचांमृत
मेल॥अलंकारदरसनआइस॥
गीतनृत्तबादिंत्रसपरसा॥४४
तभांतिनेवेदसवारे॥नितनाहीं
तोपरबनटारे॥बकुरिकरेपाव
कमेपूजा॥मोबिनुताहिनजाने
जा॥४५॥अगनिकूंडमेअगनिहीं
धरे॥समसधघृतादिकहोमहीकरे

॥मूलमंत्र॥ छिं…
कहेहे वेद अलतंत्र॥४६॥करिहेमही
आचमनकरावै॥ताकोमेरेरूपही
भावै॥तपतसुबरणतुल्यछविअं
ग॥चारुचतुरभुजआयुद्धसंग॥४
७॥पीतबसनकुंडलबनमालासी
समुकटकटिसुत्रबिसाला॥भृगु
लताअरुलक्ष्मीआदि॥बहुबिधि
ध्यावेरूपअनादि॥४८॥पुनिनैवे
दिपारषदजेते॥विधिविधानसूर
जेतेतेजपेमूलमंत्रबहुबार॥जा
विधिवधेप्रेमअधिकार॥४९॥पीछे
तापरिसादहीलेवै॥लेकरेसबने
कनकोदेवै॥आगपापायआपतवं
पावे॥प्रीतिसहितजेतोजीयभावै
५०॥पुनिअरपेसुगंधताम्रूलभूतन
मालाउतमफूल मेरेगुण
रगावै॥नामनना
मेरेगुणअरुकरमसराहे

[illegible] मिलै [illegible] है [illegible] जितिम
[illegible] सो सु [illegible] वै [illegible] कहूंन
[illegible] वै । पूरा [illegible] पलोटे सै
नकरा [illegible] तैं नाम सूलिनही
शी प्राकृति स्रु रुसहंसहृति वेद ॥
जेइजे अस्तुति के भेद ॥ ५३ ॥ ति
नसैं भमम्र स्तुति करै बारबार च
रननमम परै ॥ पीछे धारि जोरि
[illegible] करै दीनकै विनती सोइ ॥ ५४
[illegible] भवसागर तैं तारो ॥ काल
[illegible] भैसोक निवारो ॥ तुम विन मै [illegible]
रन कोई ॥ पांव चरणनि की जे सोइ
५५ ॥ हिरदै जोति जो चित्त मैं धारै सूर
ति कों सन्पा विसतारै ॥ यो श्रीका
जहां लों देषै ॥ ते समस्त मम मूरति
[illegible] ॥ ५६ ॥ करैं जछा विधि सब मैं [illegible]
जा ॥ मा कों छोडि न जानै दूजा ॥ या वि
धि कीया जोग मन ल्यावै ॥ सो नर सु
मुक्ति फल पावै ॥ ५७ ॥ मो कों जतम

हसंवरावै।तौमैंममप्रतिमांपधरा
वैमोकौंकरैबागफुलवाईजोंनि
महोछवकीअधिकाईभुममहि
तसदाबरतादिकरदेवै।बक्रत्तजो
तिममभक्तनिसेवै।ममपूजाप्रवा
हकेहैतादेइगांवपुरहाटक्षेत्रके
ता।धपा।सोममसमिईसुरतापावै।ति
हंलोककोईसकहावै।जोममप्रति
मास्थापनकरैसोसबनृपतिहोयअ
तेरोईश।जोमेरौमंदिरसवरावै।ति
हंलोककीप्रभुतापावै।प्रजादिकन
भक्तकोलोक।जहांनहीनांनांभेसो
कहीश।नांनौंकौयेंलहैबैकुंठ।कालां
हिकसबकुंनेअवकंठ।जोयोंसेवै
केन्हकांम।सोममभक्तिलहैसुख
धांम।ईश।न्हकांमीभावैसेंसेवैसो
तनमनसबमोकौंदेवै।सोपावैमे
रौनिजज्ञांन।लहैमोहिछूटेसबअं
न।ईश।इतिश्रुतिअरुविप्रनिकेरी

र अरु जो करी होइ कछु मेरी दई॥
और की किंवा आपु ता के हेरं क
स्यै सब पाप दंध सो होइ कर मीशि
प्रमाही बरष को दिक्स निकसै नां
ही करता प्रेरक तथा स होइ अ
तु मो द कजिनि लचित प जाइ ईयु
सब हिन को फल नहोय समांन ॥ ना
वै उत्तम नावै ज्ञांन ॥ तातें महित कर
न्कि रै सो बक्तन नलै नव जलत रै
ईई ॥ दोहा ॥ या विधि पूजा कीं करैत
कूं उपजे ज्ञांन ॥ तातें मेरो पद लहैं
ता कौं करौं बषांन ॥ ६७ ॥ इति श्री भा
गवते महापुरांणे येकादस स्कंधे श्री भ
गवद उद्धव संवादे भाषायां पूजाविधि
निरूपण नांम सत्तवीसो ध्याय ॥ ॥
स्लो ॥ २०८० ॥ श्री भगवांन उवाच ॥ दे
हर्व ॥ उद्धव तोसों भाषूं ज्ञान ॥ तातें लहै
सो हित जिह्वांन ॥ उत्तम मध्यम करम
तु भाव जे सब जग मैं नांनां भाव ॥ श्ति

तिनकी निंदा नहीं करैं। अरु नहीं
करै अस्तुति बिसतरै। प्रकृति पुर
य निरमत सब जानैं। येक जांनि सब
भेद ही नानैं। राव रंक आदि कीट पर
यंत। येक रूप देषे मम संत। जे जे बहु
विधि करम सुभाव। तिनको जानैं मा
या भाव। ३। तो सो होय अरथ तें न्य
ारा। माया मोह चित आरूढा। मिथ्या
ही चित को धरैं। तातैं सूरष जा में
परै। ४। लीन होय जब इंद्री यदेह। सु
षुपन रूप है तब आतम येह। जहां मन
ना गयो लहां तहां जावै। बहुत भांति
के सुष दुष पावै। ५। पुनि सुषपति में हो
वै लीन। मरणो कहीये अहं मम हीन।
यो सुषपति अरु देषत सुपना। जन
म मरण बहु सुष दुष अपना। ६। जो
लग सोवै तो लग पावै। जागत नहीं क
छु वै न रहावै। सो यह सुष दुष पाप
रु पुन्य। जनम मरण।

।होई॥सब्ब आकारजहांलूंकोईता
ऐसंसब्बमिथ्याआकार॥चेतनब्रह्म
एकसनआधार॥२०॥अरस्रुतिकोग्र
णमबिचारे॥नेतिनेतिकरिसदापु
कारे॥अरुत्यों देषेअनुभवमांही॥
नांमरूपकछुयहनांही॥२१॥अंतन
रहिहैंकृतेनांआदी॥आतमनिश्चलब्र
ह्म अनादी॥ऐसेंबहुबिधिकोबिसता
र॥मिथ्याजांनिबरणआकार॥२२॥मन
करमबचनहोयनहसंग॥ब्रह्मबिचा
रहीकरैअभंग॥ऐसेंबचनकहेभग
वांन॥तबउठवपुञ्योदिठजांन॥२३॥
जड़नहजा॥हेप्रभूयहआतमअ
बिनासी॥चेतनरूपसवंपरकासी॥निर
गुणनिराकारनितिसुध॥सदाजनाबर
तिसदाप्रबुध॥२४॥इहारहितसदाअ
नंद॥सकलनप्रकासतिपेनहींदंद॥
रूयहदेहसक्तिकरिहीन॥जड़असुद्ध
हैजावैलीन॥२५॥तातेंतिनकौंसंगन

।महानिसेषपरसपरहोइ।कछु अ
आनहीं आतममांही। अरु ननसोंक
होवेनांही॥२६ आतमकुं बंधनन
कोई। अरु आतम आवरणनहोई
संसारलहेसोकोन। आतमसुधस
दासुषभोन॥२७॥यहकरिकृपामो
हिसमझावो।मेरोभ्रमसंदेहमिटावो
सोतुठवषत्रौ जानातबबोलेभेव
तिभगवांन॥२८॥श्रीभगवांनउवा
च॥ आतमकोंनांहीसंसार। अरु तिन
कोंनहींजेआकार। तिनदोस्येतेजो
अबिबेक। ताहीकों नबटुभेअनेक
२७।इंद्रीयदेहप्राणमलबंधाइ मन
जो आतमसेंबंध। तातेंआभासेंस
।महादुषनानापरकार॥३०॥जे
देहैंनसोसंबंध। तातें जगतआतमसं
नेबंधा। सो अग्यानकरयोसबजो
।नांहीसकछुसकलकरिमानो
३१जद्यपिमिथ्याहेसंसार

कुंवारनपार॥सदाजीवडमहीमेंरहै
बारबारतनछोडैगहै॥२२॥जोंसुपन
है यहकछुनांही॥परिसबसांचोतिं
मांही॥जोजोसुषदुषमनमैंआवै
सोसोसकलसुपनमैंध्यावै॥२३॥हैन
हीपरिहैसोजांनै॥नांनांबिधिकेसुष
दुषमांनै॥जागतहीकछुहैयनां
हीं॥सबब्योहारहूयाकेजांही॥२४
हरषसोकभयमोहअरलोभा॥अ
क्षाक्रोधअसोभासोभ॥जनमरमर
णबिकारजहांलौं॥अहंकारके
सकलतहांलौं॥२५॥आतमसदाय
करस हैं॥अहंकारसंगतिदुषसहै
ंडीयदेहबुधिमनप्रांना॥तुत्रम
हतत्वअभिमांन॥२६॥इनसोंमिलि
करिआतमयेका॥मायाकेसुषग
हैअनेका॥तिनतिनकेहितकरम
निकरे॥करमनिकेबसिजनमैंमरै
२७॥लिंगजंभ्योदेहनिमैंजावै॥ति

इंद्रीयकरमं
णसमीर॥महतत्व॥अहं
रीर॥छ८॥सुखअरुदुषममता॥
कार॥तिनकोनानाबिधिसंसार॥जो
नेरमूलनसकलनहीजानें॥ज्योंजेवरी
लोपत्योंमानें॥२८॥ध्यानअडंगमन
जिमोहिउपावे॥गुरसेवासोसांनध
रावे॥तासोंकाटिहोयनहसंग॥बि
चरेसबंदेषतममअंग॥४०॥गुरुके
हामेंधारे॥आदिअंतलोंसु
लिबिचारे॥जनममरणदेषेपरतछि
तजिअग्यानहीहोवेदछि॥४१॥साध
नधरममांहिथिरहोई॥आतमदेह
बिचारेदोई॥जोयाजगकीआदिरुअं
त॥सोहीमधिबिचारेसंत॥४२॥आदिरु
अंतमधिमेंयेक॥नामरूपनरमरूप
अनेकाहेमयेकज्योंआदिरुअंत॥
मधिकीयेआभरणअनेक॥तौकहे
हेमछोडिनहीआंन॥जोबिचारक

हैसें सोत। ८३ध्यासकलनांमस्राक
हैसकाल सी ग्रे करें विचार ४४ तै
जगल्या दिम धिल्ल कल्पंत मोक्षि
पाति वोरसें ल गादि ल्पंत में येक्या
रूप सोहंमधि हृथ्यासवरूप ४५ज
गत सुपन सुषोपति अवस्था ग्रा
दि कल्पंत मधि सावस्था इनके
नाम नवें जोरहे सकल छोडि तो
हु अगहे ४६ इंद्रीयल्प रूइंद्रीय
केदेव इन्हा याविमइनकेअक्र
व तैसवजावएक विननाही स
कुलमाया जो मांही ४७ जादिस्न
नन सकल प्रकासें जाको सति
न जानें सुमको सुमकरा निक
मा करकै करवरननके व
नानामनेनकेनैन जि
न चैन नैन याविधिसक
लमेंक ना विनुंनि ध्यासक
कै अप जैनाम रूपविसन

एसकलसंसारतेसबत्र्यादि
तेकर्मनांही॥अरुनहीरहेअंतह
ही॥४०॥तातेअबहूमिथ्यामाने॥
कारणब्रह्मनिरंतरजानेंनामधरयो
लविकारतिहूकालमेंमो
टीसार॥४१॥जोकछुब्रह्मसमस्त
दिमधिअरुसबकेअंतजेसेबं
बिधिवेदवषांनेब्रह्मअंतायहेत
नांनें॥४२॥आदिसमस्तहूतोकछु
नांहीअबआभासतुहेसोहिमांही
यातेंपरेब्रह्मअमरूपासकलप्रका
आपअरूपा॥४३॥येबिचतरता
प्रभासेताकोसतिसकिपरकासे
तेंसकलब्रह्मेनेर्येनिजिकरि
पअरूपहीरयो॥४४॥इजैपरेरूप
मजांमेंअरुयेसबअमरूपहीम
हेनछोडिनिश्चलकेरहोजानिब
तोब्रह्महीलहे॥४५॥जैसेजानितिक
विचारमिथ्याजांनेसबआका

८ सेवाकरिज्ञांनबधावै चेतनमोहि
अर्थंमितभावै ५६ येजोतनसो
तमनांही तनघटरूपबिचारैमांहि
अरुइंद्रीयतेदीपसमांन ऽनही
प्रकासकआतमज्ञांन ५७ अर
जौंदेवपनमनबुधी आतमकौन
जांनैंसुधी छितजलतेजपवनआ
कास अहंकारगुणचितप्रकास ५
सांमिप्रक्रितनआ पंचौ तेजडआ
मकौंनहीजांनैं आतमसक्तिईहास
बखांनैं ५९ सकलप्रकासकआतम
येक येजडजांनिनकैअनेक याधि
धिजोममरूपबिचारै सकलउपाधि
रैंकोटारै ६० सो हैइंद्रीयनथं
मै किंवापुन्यबिषयनआरतै तोऊ
ताकौंनहीगुणदोष जीवतहीजिनपा
येमोख ६१ जैसेघनरबिआडेआयेति
तिनसौंकछुरबिनहीछायै अरुजो
मेघहरिहैगये तौकछूरबिनप्रकासि

तनयो।ई२।रबिहेपरैभरैघन हूंदा।जोमैं
लिपतिलोगमतिमंद।जैसेंप्रगटपवन
घनतोगीधूमधूलिअरुदांमनिहोई।ई२
रितुकेगुणसीतभसनादी।उपजतबिन
सतरहेंअनादी।परिनहिंलिपतिहोय
आकासा।त्यौंआतमापरमप्रकासा।
परितोहुसंगतिनहीकरै।मायागुणनि
दूरिपरिहरै।जोलोंकरेमेरीदिटमनकी
छूटीनहींरजतमआसकी।देखीहैहेमे
देन भूलेजोलौं।ममजनसंगकरेनही
जैसेंरोगहोयतनमांही।दिटक
मूरभयासौनांही।ई२।सोलजिअगद
थहीकरैसोसोरोगबकुरिबिस
त्योंअहंकाररोगभवमूल।सो
लगपनेभयोनिरमूल।ई२।तोल
संगअपथिहीकरै।तौबकस्योंजग
अवतरै।बंधुकुटंबमिषबकुते
आवेसकलसुरनकेप्रेरे।ई२।तेनेअं
यबकुकरेजोगीकोकरमनिबि

रे सोतिन तैंपावै अवतार बऊसौं
नकिबिसतार ६९ करमपंथमैं
नाही मैं प्रेरकताके उरमांही याबि
प्रेपायज्ञांनबिज्ञांन देषे मोहिमिटावै
ज्ञांन ७० तबताको तनकरमनिक
लेनदेनभोजनबिसतरै पूरबसंस
कारकरवै बिधिकोलिप्योनमिथ्या
जावै ७१ सोमुनिमगनब्रह्मसुषमां
हीं तातें करताजानैनांही जोबेदेअ
गडीहोई आवेजायकछूजोस
ई पर अंनषायजलपीवैसोवै
आहार देहकोहोवे सोसोकछुन
जांनेजोगी निश्चलरहै ब्रह्मसम
गी ७२ जोकबहू देषैसंसार इंद्री
यगोचरबिबिधिप्रकार तौ तेंकछू
तिनहींजांनै सुपनबसतज्यों जागें
नै ७३ प्रथमआतमाऊंतो अबंध
आ नहीं भयो प्रकृति सो बंध नहो
सौं मोसोंबिद्यापावै तबउपजानि

प्रकृतिछिटकावै॥७५॥तबबकस्यौं
ताकौंनहींगहै॥मोहिजांनिमोहीमेंरहै
प्रथमहिजबमोकौंनहिंजांन्यौं॥तबमा
यासुषउतममांन्यौं॥७६॥बकस्यौंजब
ममसरणिहीआवै॥ममप्रसादअग्यांन
मिटावै॥तबमायाकौंडुषमयजांनैंप
रमांनंदरूपमोहिमांनै॥७७॥तातैंआप
हीगहीउपाधि॥ताकौंनजैजांनिकरि
सदानिरंतरमोमेंरहै॥बकस्यौं
भवसागरनहींबहै॥७८॥औरबिअंस
कलहीअरूसापरिरबिबिनुनलषैप्र
ह्वारिबसंजोगबकरिजबहोई॥तब
मस्तदेषैसोसोई॥७९॥रबिबिनुअंष
वै॥तातैंकोईनैंननजोवै॥
रबिसंजोगप्रकासहीपावै॥तबसबदे
तमहीमिटावै॥८०॥परितेनैंनत्रिकाल
अलेपा॥अंधकारसौंभयेनलेप॥तैस्यौं
कैस्यौंतमहीमांहीं॥परिरबिबिनकछू
देषैनांहीं॥८१॥रबितैंतमउपाधिपरिहै

पायप्रकासप्रकासहीकरै सौंयह
आतममेरो रूप स्वयंप्रकासिकप्र
अनूप ८२ जनममरणमरजादर
हित काहूकरिकबहूनहीगहित
जेरहितअनहीयेक ताहीकरिये
हेअनेक ८३ महानुभावसकल
अनुभाव जामैंकदेनकरमसुभाव
निस्यानंदसदाअतिसुद्ध सदानिरीह
सदाप्रबुध ८४ जाकरहंडीयतनमन
प्रांनां चेतनिकैबरतैंबिधिनांनां ज
हांलौंमनअरुबचननजावै औरकै
नबिधिताकूंपावै ८५ परिजबमोतैं
रहितोभयो तबताकौसबबलमिटि
गओ अंधकारआयोअज्ञांन तातैंहू
रिभयोमैंभांन ८६ जबबहुरयोमम
सरणिहीआवै तबसोरूपानप्रकास
हीपावै तातैंछोडैसकलउपाधि
जोमोबिनुकरिलीन्हीब्याधि ८७
ताकौंअबहूंपरसैनांही परिमोबि

नांतजी नहीं जो झी मो फैं पायसकत्नपरि
हरै। मेरे चरणनकौं अनुसरै
प्रकास मिटै तम जैसें [illegible]

तातें निरखी है मैं रहौं। मो मिलि प्रमानंद
ही लहै। ४०४। ब्रह्म व स्तसौं ईश्वरांना। जो वे
केवल मैं जानें कौं जो ब्रह्म बिनां कछु न जो
नांहीं। जैसें सांप जेवरी मांहीं। ४०५। देखि
देह जड मिथ्या जानें। तातें एक ब्रह्म
करि मांनै। अरु यह पंचबरण बिसता
रा। उपजै बिनसें बारबारा। ४०६। जाकौं
मिथ्या ले दरसांनौं। अरु त्यौं ही गुरसा पृ
मांनौं। अरु अनुभवतें त्यौं ही देखौं। जागे
सुपन जगत त्यों लेखौं। ४०७। सो [illegible]
सति जो जांनें। सुष्पत बांनी बेद बखानें
अरु तिन श्रुति के बचन बिचारे। जैसे
हैं तैसें उर धारे। ४०८।

हो तै मूरख यानव मैं वहै। करम
पतति मकी बुधि तातैं कदेन पावै
धूता तातैं तिनकै लगै न ग्यान मूरख
आपही जानै जान। तातैं बिषई जीव स
तिनही मरमाय करै
तातै यह ही ज्ञान। ब्रह्म जानि
रि है ज्ञान। मेरो भजन निरंतर करै
जा प्रकास है तह ही पुरि हरै। ५७ अरु
व जो जोग कहावै। अष्ट अंग को बेद
ब ता वै सब धरमनि को राजा मानौं भ
ऐसा भई जानौं। ५८ जब याकै
नन सकल बिकार। करि नही सकैं ति
अधिकार। तातै ये लज बिधि बिस तरै
न बिस्वास पाय परिहरै। ५९। प्रभू
जोग धारणी करै। सीतल सरै रोग नि
तै। जैसै करित पपा दनिवारै। मंत्र नि
बाधादिक टरै। ६०। भोजन सुधा
दसै रोग थौं। असांन नास कहै जोग
माहि कर मांनसी बिकार। जो तै सुम

अधार१०१ममभक्तनकीसेवा
करै।ताकरिदंभादिकपरिहरै।याबि
धिबिघ्नजयसमस्तनिवारे।मेरोभज
हिरदैमेंधारे।१०२।अरुएकनमह
केराजा।साधेकरमदेहकेकाजा
देहमिटाईचहीये।देहमिटैमे
सनहीये।१०३।मेरोअंसत्र्यात
मायेहा।याकोंडरतासोदेहा।ता
देहहीजराव्योचहे।तिनपुहीयानव
मैंबहे१०४।तनकेरोगजरादिकटारे।
स्वासजीतिकेंमृत्युनिवारे।फेरिमृत्युना
हीकरनपंता।बकरिनपावैंमहंत१०५
मृत्युजीतिब्रह्मरतहोई।ब्रह्मस्थांमृ
त्युनहीकोई।योगीसदाब्रह्मरतरहे।।
ताकूंकालमृत्युनहींदहे।१०६।देहज
तनअरुआसातजे।जोगजुगतिआतम
कूंभजे।जेयोगीदेहाअभिमांनी।।
डपजहवयेनांही।१०७।मोबिनहठ्याक
रैंश्रममूढमेरोयोगभजनसो ।।ता

मैंहूंसंतनिमांही। तेतोमोतैंन्यारेनांही॥
१०८॥ प्रथम योगीजोगहीकरै॥ बिघ
निवारियोगविसत्तरै॥ ताकोतनजोनि
श्चलनहोई॥ तोहूआदरकरैनसोई॥१०
५॥साधैजोगसमाधिसहेत॥गहिमममस
त्ति बढावैहेत॥ योगमांहिछांडैअह
कार॥ तातेंनहीहोवैसंसार॥१०६॥ तातें
योगीमोकोंभजे॥ ममआधीनव्है
तजे॥ ममप्रसादतेंमोकोंपावै॥बड
होंभवडुषमैंनहीआवै॥११॥ अहंमा
व्रतजिजोगहीकरै॥ सोजन भवसाग
नहीपरै॥ जोगहीपरैंब्रह्महैजैसो॥स
मिक ग्यांनजांनीयेतेसो॥११२॥जोगीयो
गमनजोरेजासों॥ आतमब्रह्मप्रकासै
तासों॥ येसाधनहैमनकोंनीकों॥
जीवब्रह्मव्हैटीकों॥११३॥ जोहोकै
रैआधीन॥ आपहीमांनैसबबलहीन
मैंआधीनहोहूं ताजनकै॥ ज्योंआधीन
देहयामनकै॥११४॥ केवलजोगममस

तातैं बिघन न आवे कोई॥ बिघ न जहाँ तहाँ ईछा होई॥१४॥ मम आनंद रहे आनंद ता॥ तातैं सब देवन के होवे बंदना॥ ताते उद्धव यह ईकरणौ॥ मेरो भजन हिरदा में धरणौ॥१५॥ जग अरु आपब्रह्म मे ऐसे जानें॥ द्वैत भाव कबहू नहीं आने॥ ब्रह्म भाव तें हु लही पावे॥ जनम जनम

हू सो सुगम उपाय तब॥ उद्धव परम सुजान॥१६॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंदे श्री भगवद उद्धव भाषायां प्रमारथ निरणौ नाम पचावीसो अध्याय॥२५॥

उद्धव उवाच॥ चौपई॥ हे प्रभू यह तुम ज्ञान बषान्यो॥ सो तो मैं अति दुर्

केसे काज होय प्रभू तिनको॥१॥ जेहु

(margin: ...तिनकै ... हितैं ... ज्ञान कै ... केवल ज्ञान)

ौहूंसंतनिमांही॥ तेतोमोतैंन्यारेमांही॥
० ८॥ व्रथम योगीजोगहीकरै॥ बिघ
नेवारियोगबिसतरै॥ ताकोतनजोति
छन्नहोई॥ तोहूआदरकरैनसोई॥ १
॥साधेजोगसमाधिसहेत॥ गहिममस
ाग॥ बढावेहेत॥ योगमांहिछांडेऽहं
कार॥ तातैंनहीहोवेसंसार॥ १७॥ ता
योग॥ मोकोंभजे॥ ममआधीनहै॥ श्री
ातजे॥ ममप्रसादतैंमोकोंपावे॥ ब
होनवडुषमैंनहीआवे॥ ११॥ अहंमा
वतजिजोगहीकरै॥ सोजनभवसार
नहीपरै॥ जोगहीपरैब्रह्महै॥ सोस
मकज्ञानजांनीयेतैसो॥ ११२॥ जोगीय
गमनजोरेजासों॥ आतमब्रह्मप्रकार
तासों॥ येसाधनहेमनकोनीकों॥ श्र
ीजीवब्रह्महैटीको॥ ११३॥ जोहांकं
रैआधीन॥ आपहीमांनैसबब्रह्महीन
मैंआधीनहोऊं॥ ताजनकै॥ ज्योंआधीन
देहयामनकै॥ ११४॥ केवलजोगममस

णिहीआवे।ताहीकीसबअंगआजावै।
तातैंविघननआवेकोई।विघनजहां
नहांईछाहोई।।१५।।ममआनंदरहेआ
नंदता।सबदेवनकेंहोवेबंदता।तातैं
उद्धवयहईकरणों।मेरोभजनहिरदा
मेंधरणों।।१६।।जगअरुआपब्रह्ममं
येजांनें।द्वैतभावकबहूनहींआंनें।।
ब्रह्मभावतेंसुखहीपावे।जनमजनम
केदुखबिसरावै।।१७।।दोहा।।ऐसोसु
निश्रीकृष्णसूं।अतिहीसुखकरज्ञांन।।
मूढोसुगमउपायतव।उद्धवपरमसु
जांन।।१८।।इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेयेकादसस्कंदेश्रीभगवदउद्धव
समांदेभाषायांप्रमार्थनिरोपणोनाम
अठाबीसोअध्याय।।२८।।२१९८।।
उद्धवउवाच।।चौपई।।हेप्रभूयद्
तुमज्ञांनबखांन्यो।सोतोमेंअतिदुख
रजांन्यो।बसनांहींइंद्रीयमनजिनको
केसेकाजहोयप्रभूतिनको।।१।।जेहैंप

महंस द्रिढचित ॥ तिनकैं ब्रह्मद्रिष्टि है
नित ॥ औरै जे ये सांसारि विचारौं थैं चि
यामनकौं धारै ॥२॥ तिनकौ मनबसि है
यन ज्यौं ज्यौं महाक्लेस लहत हैं तौं
तिनकौ मनबसि होय नकौं हौ ॥ श्रम
करि जन मनु मावै यौं हौ ॥३॥ तुव पद
परमानंद समुद्र ॥ ता कौ भेद न जानै
स्रुद्रा करै जोग जग्यादि कर्म अति
न तैं कदैन छुटै भरम ॥ ध्यान तातैं गर्व
बधै तैं करैं ॥ यातैं जग जुग जनम मैं मरैं
केवल भान कुंभार है जे तो परमानंद
लहै सो लेते ॥ पूजब ही तें तुम चरणनि
आवै ॥ तब ही ते पूरण सुख पावै ॥ माय
निकटि न आवै तिनकै ॥ तुम रे चरण
हिरदा मै जिनकै ॥ दीनता से सहज ही ज
गत मिटावै ॥ तुव चरणनि मैं सहज सि
मावै ॥ तुम ब्रह्मादि सकल के नायक
सब हि तिनकौं प्रभुता के दायक ॥ ति
नके चरण गहे हैं दीना ॥ तुम ता के हे

वो आधीन। अरु यह कहा अचंभा
स्वामी। तुम सब प्रभू सब अंतरजामी
हा। तिनको सबत ज्ञि मिलै जो ईश। करे अ

है जेते तुव पद मुकट निधारे ते ते। ए
रा मरूप तुम भये मुरारी। तिनकी न्हेवा
नर अधिकारी। बानर सकल सषा तु

१०। तातें जो तुव कृत हि विचारे। सो
कोपर तुव भजन निवारे। तुम ही न
षति षदे ह सवारी। चेतनि सक्ति तुम्हे
पुनि धारी। ११। सदा रहै तु मरे आधार।
तुम ही निति प्रतिपालन हारा। ता परजि
व तुम ही नही जाने। करता भरता और
न माने। १२। तो हु तुम औगुण नही मानो
बहु बिधि जहां तहां रस्या ठानो। पुनि
जब ही तुव सरण ही आवे। तब तुम सौ
च्या रू फल पावे। १३। परति ष्ठापि सो
अति अज्ञाना। तुम कू सेथ त्न है जो अं

महंसद्रिढचित। तिनकें ब्रह्मद्रिष्टहै
नित। औरजेयेज्ञान विचारौंथेंचिमैं
यामनकौधारैं।२। तिनकौमनवसिहै
यनज्यौंज्यौं महाक्लेसलहतहैत्यौं
तिनकौमनवसिहोयनकयौहै।अभ
करिजनमगुमावैयोंहै।३।तुवपद
परमानंदसमुद्राताकोभेदनजानै
स्तुशाकरैजोगजग्यादिककरमांति
नतेंकहेनछूटैभरमा।अतातैंगरव
बंधेजेंकरैं।यातैंजगजुगजनममरैं
केवलनिजभक्तुम्हारेजेतेपरमानंद
लहेंसैंहैते।पूजबहीतेंतुमचरणनि
ध्यावै।तबहीतेंपूरणसुखपावैमाय
निकटिनआवैतिनकौंतुमरेचरण
हिरदामेंजिनकौंधौतातेंसबजीज
नतमिलावै।तुवचरणनिमेसहजिस
मावै।तुमब्रह्मादिसकलकेनायका
सबहिनकौंप्रभुताकेदायकातिनि
नकेचरणगहेंहैंदीना।तुमताकेहैं

वोआधीन।अरु यह कहा अचंभा
स्वांमी।तुम सब प्रभू सब अंतरजामी।
०।तिन कों सब तजि सेवै जो ई।करै अ

८
है जेते तुव पद मुकट निधारै तेते ऐ
प तुम भये मुरारी।तिन की सेवा
नर अधिकारी।बानर सकल सखा तु
म करे।सब हिन के सब हित आचरे
१०।तातैं जो तुव कृतहि विचारै।सो

तुम नव न
धसि धदेह सवारै।[illegible]
धुनिधारी।११।[illegible]
तुम ही निति प्रतिपालन हार।तापरि जी
व तुम ही नहीं जानै करता नरता और
नमानै।१२।ता कि तुम श्रीगुण नहीं मानै
बहु विधि जहां तहां र स्यागे नौ।सुनि
जब ही तुव सरणि ही आवै।तब तुम सौं
च्यारूं फल पावै।१३।परिति थापि सो
अति अंसान [illegible] मकें से ध तने है जो श्रो

नाचारिपदारथसेवकजाकेतुम
भक्तिविराजेताके१४येकजहांन
हींतुवभजनोंनरकजांनिसोहीसे
तजनोंतातेंजोहोवेसरवग्यतुमरे
उपकारनकोंतन्न१५अरुबिधि
समित्रायुरवल्तपावेवकुबिधिप्र
त्युपकारबनावेतोक्तुमहीन्
नृणनहींहोईब्रह्माआदिजहांलै
जोई१६जेतुम्बाहरिसतगुररूप
भीतरिचेतनिसक्तिअनूपयोजीव
निकोपापनिवारोआपहीहरिदे
भसंकटटारो१७तातेंभाषोभज
नानंदसहजिमिलतेतुमछूटेफंद
येसुनिप्रीयउध्वकेबेनबोलेकृ
कृपाकेऐन१८श्रीभगवांनउवा
धन्यंधन्यंउधवममभक्तसबजीव
नकेहितअनुरक्ततोसोंकहोंआप
धर्मजातेंमिटेसहजिसबकर्म१९
करतेंसुषआगेंसुषपावेछोडेन

नयमोमेंआवोछढवकरमकरैनर
जेतेमेरेहेतकरेसबतेतोा२०ाकर
मनिमेंमाधेममनामामेरेकरिराषेध
नधामामोमेंअरपेमनकीवृतितीके
सबआचरणनिवृत्ति२१मेरीप्रीति
करेसोकरेमेरीप्रीतिरहितपरिह
रेजिनदेसनिमेंमेरेभक्तातिनकरि
बासहोयअनुरक्त॥२२॥सुरअरुअ
सुरनरनिमेंजेतेमेरेभक्तभयेहेकेते
तिनतिनकेआचरणनिजांनें॥२३॥मेरे
जन्महोछवकरेमरिवनिमेंमिलाप
किसतरेमेरीजहांजातराहोईतहांत
हांचलिजावेसोई॥२४॥गीतनृतिबाद
त्रकरावेछत्रचंवरआदिकअधिक
कावेस्त्रुतिउदारताकरिसबगानें
ममहितल्गेभलोसोमानें॥२५॥सब
भूतनिमेंमोकोंदेखेअंतरवाहरिये
केलेषेआपआहिजगमोमेंजानेंज्यों
आकासअनावृतिमानें॥२६॥योंस

स्वभाव सबहिनके सतकार ही करै
ज्ञानद्रिष्टि भेद ही परिहरै २७ येके
बिप्र बेद अधिकारी येके अंतिजमह
बिकारी येके बिप्रनके धनहरता
अरु येके धनके बिसतरता २८ येके
तेजहीन बहु देषे एके तेजवंत बहु
पेषे येके क्रूर सकल दुषदाई येके
सकलन साति कसमाई २९ इत्यादि
कनांनां बिधि देषे परिजो भेद कहुंन
ही लेषे मेरी द्रष्टि सबन में आनें मम
जन पंडित ताहि बषानें ३० या बिधि
सबमें मोकों जांने देह भेद कछु वे
नहीं आंने थोरे कालन मांहि ताजनके
सब बिकार मिटि जावे मनके ३१ स
पर्ध्या तिरस्कार अहंकार सकल मिट
कछु लगे न बार ताते देह द्रष्टि नहीं
धरे लोक कुटंब लाज परिहरे ३२
हांसी करे सकल ही लोक परि सो अ

नेंहरषन [illegible] सोकों तिनकी कछु

सबजीवनमैंमोकौंजं

जहां

८

दे इसमानधरनिमैंपरे

३४ जौलग थावरजंगममांही मेरो

भावहोयथिरनांही तौलगमनबच

कायहमेत यौंसबमैंमोनैंममहेत ॥२

ध्याविधिकरतरहेनरजोई ताकौंस

कलब्रह्ममयहोई मिटैअबिद्याबि

द्याआवै तातैंबंधनसकलमिटावै

रही ३६ बसकलमतेहैंजेते बेदम

धिमैंभाषेतेते तिनमैंयहमतोममस

सार जातेंबेगमिटैसंसारा ॥३७॥ मन

कर्मवचनजहांलौंजेते ममस्वरूपहीं

जांनैंसबतेते ॥३८॥ वइसोधरमहेमेरो

कहाप्रभावकहूंतिहिकेरो ॥३९॥ जा

णरूपकप्रगटजबहोई क्यौंहीबडौ

रिमिटैनहींसोई जहांलगैंगुणनिरम

तबलु ज्ञानतेगैंसबसोवैश्नुस्तु ३९॥
मैंनिरगुणसगुणपरकासीनातेंम
मधरमक्ष्रबिनासी ॥ मेरोनांसक
देनहींकोंहीं समधर्मेध्योरात्मोंहीं
४० ज्ञानजह्वबपेकताकहीजेमेरो
धरमकदेनहीहीजे जडकवजेनो
किकबोहार राजसतांमसबिबधिप्र
कार ४१ जिनतेंकेवलहोयअनर
थ परबृतिकोसबमेटेत्रुरथ नर
कनसांहिडारनिहार कांमक्रोधहे
आदिबिकार ४२ जौतेगतेमोमेंक
रें तोहुमोहिनलेबकुतरे जैसेकंस
नरसनयकस्यौ मेरोधरमनहीआव
स्यौ ४३ परिसोनयतकरिमोसांहीं
नामपदपहुंच्यौनैमेंनाहीं अरुगोपि
... निकीयेबिनचार लंघेबेदतजेप्र
...तार ४४ परिबिनचारमोमेंकस्यौ
...तिनमेजलपरिहस्यौ अरुजो
...कीयोसिसपाल जातेंजीवनिम्रा

स्यौकालौ॥परिसोर्डमोमेंकरिदोषा॥भ
वजलतजिंकरिपङ्कचौमोठा॥यौंविठ
रूपविकाररहेजेते॥मोमेंश्रायईमृतके
३॥

चहीलीजे॥पूरणकाजआपनौकीजे
४७॥येकुंवीचिणचेंगुरदेहसकलवि
कारनहीकोगेह॥ताकरिमईयेहरिव
विनासी॥निरविकारपूरणसुषरासी
४८॥येसबब्रह्मग्यानकोसारजानैमि
टैसहजसंसार॥मैसंषेपमाहिसबक
ह्यौ॥यातैसारनकहिवैरह्यौ॥४९॥य
हैनरतनकूरुयेममग्यानदिवनहु
कोड्डरत्नमजोनिजछ्पिजीवलहैन
रदेह॥ताकूग्यानचपावैयेह॥५०॥तातै
मैंनाष्योनिजग्यान॥तातैमोहिलहैनर
जिआन॥तद्दवप्रसनकरीतुमजेती॥

यह तुम मेरा मेरो से बाद । अध्यातम परम तम बात ४२ ताकौं मुनि हिरदै मैं धारे । मा वे में आ हरज्ञा पक्कौं तारे । जो यह मेरो परम ज्ञान । मेरे नर क न देवे दान ४३ मोकहौ यह तुहै मेरो दाता । जहां न हां होवे बिख्याता । जो जो दई न है सो सो ई लोक बेद माये है दोई ४४ ता ते दान देय जो मेरो मैं आधीन होऊं तिहि केरो मोहि देय सो मोकौं पावे । तिन कों ने मो मांहि समावे ४५ जो नर या कों नित ही पढे । ता जन कौं मो सो हित बढे सो जन मेरो अति प्रीय होई । ता के सम है जो नही कोइ ४६ जो यह सुनैं नित करि श्रद्धा दर । श्रोरस कल्न को कैश्व ला दर सो कर स नसों लिप तिन होई मेरी भक्ति न्हे हिर दे सोई ४७ मैं ये परम ज्ञान ज्ञ ज्ञास्यो । उद्धव तुम कहूं हिरदे मा स्यो । सो क मो ह नयन मो निबर न । निश्चल नये हिरदै आव

७ठुवयेज्ञोमेरोज्ञानसोम९

ज्ञरुनासतीकडहैकुवाहेडि
पूणाप्रीतिनजांनेनहीममनका।डर
बांनीबिषयनिआसक्त।तिनकोंत्री
ननदेवै येहा।जोकालरभूबीजरु
मेह ई०।इनदोषनकरिहेवेंहीन
मेरोनक प्रीतिदिढदीन।ऋस्त्रीसुइ
ठऋसोहोई।ताकसोऋंतरनहींको
डो।ईशऋसेंनसोयाज्ञानहीकहीये
तो।तिनसहितप्रेमपदलहीयो।जोयेमे
रोजांनेज्ञानताहिजानिवेरहेनऋं
नाईर।जोकोईपावेपीयूष।ताकेरहे
नदूजीभूषा।ज्ञानरुकरमजोगऋष्ट
गा।सबस्वाफिलयमेरोऋंग।ईर।ऋर
धरुधरममोषिऋरुकोम।इनसबहि
नकोमोमेंधाम।तातेमोमेंआवेजोई।।
इनसबहिनकोंपावेसोहीईध।परिमे
रोजनकछुनलेवे।सकलत्यागपकरि

१०८ मोकोंसेवै तातेंसाध्यकसाधनजेते म
मज्जन देंभोमोमेंजेते ६५ सबतजिज
बमम चरणनिसेवै आपनिवेदैक
छनतेवै ताकेसमिद्धजोथीयनाहीं
सोलितसोमेमेंतामांही ६६ नवमुनि
श्रेमेंहरिकेबेंन उद्धवश्रोसुकला
कुन्नेंन आगेंगाडेंअंजुलीबांधे प्र
ममगान ननमनदिठसांधे ६७ बेंन
ड्रैतेंबोल्यो नहींजावे कंठद्रुतेंगद
गदसुरआवे तातेंउद्धवचुपकरिर
हैं कछुबेरकछु बेंननकहे ६८
बड्रोसोचित्तथांभिकरिधीरजपूर
णप्रेमनयोंश्र बकीरज निश्चेआप
कतारघःसान्यो सबसंदेहहरिदेतैंभ
यो ६९ हरिकेचरणनमांथोधास्यो
उद्धव नकेबचनउचास्यो जिनतेंह
रिसोंनाटेप्रेम जिनकोंकहिसुनिपई
प्रेम ७० नाथश्र
तनमांच्छलश्चविनासी परमानंदप

रमपरकासी।तिनकेसंनिधांनजबश्रौ
तबहीसबअग्यांनमिटायौ।७१।संनिधां
नपावककेजावै।सहजहीतमभयस
तगमावै।अरुतापरितुमपरमदयालु
मोनिजजनपरिभयेक्रपालु।७२।ये
बिरांनदीपमोहिदीकौ।जैतेंसकलसु
नासुभचीन्हौं।तुमरेचरणसरणिभव
मांही।इजेगैरकदेसुषनांही।७३।जे
कोईतुवकृतकौंजांनैं।अरुतापरि
नवकोंदुषमांनैं।सोतुवचरणसरणि
नहींआवै।तोइजोकहांतेंसुषपावै
७४।प्रभूजीतुमअतिकरणांकरी।म
ममायाफांसीपरिहरी।सकलजावव
निमेंअसनेह।अरुजोबनीसुतबित
ग्रहदेह।७५।येसबमेरेमनतेंटारे।।
अपनेचरणकेंबलउरधारे।तुमबि
सर्तरीअपनीमाया।जिनयेसकलज
गतभरमाया।७६।सोतुमज्ञांनषड़ग
सोंछेरी।है

नमोनमज्ञानप्रकासी जोगेसुईस्व
रज्ञविनासी ७७ दीजैमोहियेकवर
देवा निश्चलनहिरहैनिरंतरसेवा तुम
हौहौडिकजोनहीजांनौ परिसेवक
छैसेवाकौनौ ७८ मोहिप्रसाददीजीये
यह तुमसौनिश्चल वढैसनेहा करी
वीनतीउद्धवभक्त वोलेहरिजीके
अनुरक्त ७९ [illegible]
तथाअस्तुउद्धवमम भक्त ममचरण
निनिश्चलन्यासक्त अवतुमउद्धव
ऐसीकरौ लोकनिकौमिथ्याविस
तरौ ८० वद्रीवंदआश्रमहैमेरो अ
तिपुनीतिदरसनजिहिकेरो तहांती
रथममचरणनिकोजल दरसपरस
अघनासनहरैमल ८१ नामअलकनि
दाजोगंगा निरमलकरैदरसनअंग
तहांजायतुमवासाकरौ फलनखिण
तनमूलकलधरौ ८२ हंदसीतउस्त
हिकसहो छिनयाहिकसुमनमिण

म्होइंडीयनकेअररथनिपरिहरो॥
येबि॰।

सदाविसतारो॥६४॥नवती
न्योगुणकौंपरिहरिहो॥ममनिरगुणप
दकौंअनुसरिहो॥यहेउरबपरतंपा
मेरी॥फिरिभतपतिनहीकैहेतेरी॥६५
याबिधिकहिबचनउचारे॥तेउवव
लैमसतकधारो॥चरणनिपरिदेषिण
दीन्हो॥तबचलिबेकोआग्याकीनी॥
६६॥जद्यपिहृदहिरदैनहीआवै॥तौ
हू हिरनीतजैनजावै॥आसकेअति
आदरबुधि॥तनमयनयोनललनकीसु
धि॥६७॥कहमनबियोगनबोहीसहै॥बा
रबारचलिफिरिफिरिहैं॥ग्रेलरजा
नीपरमगोपाल॥जनकौजानिप्रेमबि
हल॥६८॥निकटिबुलायमिलेदेअंग
ग्रोनरूपकीकौसरबंग॥तबआपनी

७९ तोहू प्रथमही कृस्नपधारे जाइ
वतनंदजा अस्वंदारे तबही तहां उद्धव
चलितसाथ कृस्नयेकही बेर पाये ८०
मुनिमैत्रेयपधारे तहां कृस्न देव बैठे
हैं जहां टोककीयो हरिकौं प्रनांम। द
रसनपायौ अतितिस्रनिरांम ८१ गद्देम
येजौ हिकरवोई प्रेममगन कछुक
हनकोई तबतिनकौं हरि नाख्यौ गांन
जेमअंथुकारकौं भांन ८२ परमतत
वोगसो नाख्यौ आपनौ गोपि मतो सो
दाख्यौ प्रमसिद्धांतसारकौ सार या
तें औरनवृत्ति बिचार ८३ मैत्रेयकौं
दीनो आदेस बिदुरहीकरौ योयान
पदेस आज्ञादीन्हीउद्धवजनकौं आप
नीसक्तिकीयोथिरमनकौं ८४ तब
उद्धव हरिचरननिपरे हरिहेरदे
निस्चलकरि धरे पुनि उद्धवजनपर्ड
चलतहां नरनारायणपरगत्तजहां
८५ जहांजायकीन्हैं आचरण जेजेह
रिभाखे तेकरण बलकननअंबरफल

हीतबत्रिगुणविसतारमिटायो॥
रुवब्रह्मनिरंजनपायो॥यहहरि
छवकोसंमादोहरिजीकोहैप्रमप्र
नाद।९७॥जाकोंकृपाकरैसोपावै
नजिभवसिंधुब्रह्ममेंजावै॥जबतें
याकोंनाचैसुनोप्रेमसहितहिरदेमें
गुनें॥९८॥तबतेंपावैपरमानंद॥भ्रमं
ही बिनांमिटैदुषद्वंद॥यहस्वयंमेव
ह्यपहरिकहौ॥जामेंकछुसंदेनर
ह्यौ॥९९॥यामेंअैसोकस्मप्रभाव॥मिटै
जगतउपजेहरिभाव॥जिनहरिप्रग
टअमृतद्वैकरै॥नक्कनपायसकल
दुषहरै॥१००॥एकजलधितेंअमृत
तेपायो॥निजाधीनदेवनकोंपायो॥
जरारोगआदिकदुषहरै॥बलउप
जायविगतभयकरै॥१०१॥अरुहजो
यहअमृतयेकोवेदसिधतेंब्रह्मवि
वेषसोअपनेजनकोंपायो॥जनक
ममरनभवभयहीमिटायो॥१०२॥है

सेस्रादि [illegible] जस्रु बिनासी॥ सुमरत जिनै
मिटै [illegible] बासी॥ कृस्न नाम लीनौं स्रु
वतार [illegible] तिनकौं बंदन बारंबार॥१०३॥
[illegible] श्रीमोहन सुखदेव सों॥ परमत
त्व उपदेस॥ कृस्न कथा के प्रेम तें॥
कीन्ही प्रस्न नरेस॥१०४॥ [illegible]
[illegible] कहे श्री
[illegible] भाखा यौं नृकवि
[illegible]
[illegible] हे प्र
हरि की कथा सुनावो॥ करम पुह निय
त्तिं संतत पावो॥ हरि उपदेस उधव
दीन्हो॥ पीछे आप कहां नहां कीनो॥
१ जादव कुल नष्ट भयो आप॥ हरि
जी कहा कस्यो न बच्याप॥ ईश्वर कौं बा
धा नहीं कोई॥ अरु द्विज स्राप न मिथ्या
होई॥ सब के तन मन मोहन देह॥
परमानंद सुख को गेह॥ जे नारी हरि
दरस न पावें॥ तिन सों नैनन ये चे जावें
२॥ अरु जे हरि के रूप ही गावें॥ बांणी

माई॥धु॥ऐसेंसोतनहरिस्याग्योकैसें॥
कोईहरैकागमणिजैसें॥ऐसेबचन
कहेंनरदेवा॥तबउनरदीन्होंश्रीसु
कदेवा॥श्रीसुकउवाच॥द्वारवतीउ
पजेउतपात॥तिनकोंदेषिकहीहरि
बात॥उग्रसैनआदिकसबलोगास
नासुदरमांडुमनैसोका॥७॥तिनसोंक
ह्यबचनउचारे॥हरिकोंमतोनलषे
विचारे॥निजमायासोंमोहितकरे॥
ज्ञानबिबेकसबनकेहरे॥८॥श्रीभग
वांनउवाच॥हियांबहुतसुनोंमसबा
त॥द्वारावतीबडउतपात॥य
हउतपातमृत्युनिसांन॥तातेंतजिये
यहअस्थांन॥जुवतीबालवृद्धस

बजेते सो द्वारपठईयेतेते ओरस
कंनप्रभासहीजईये तहांपश्चिमस
रस्वती अन्हईये १० करिसनानतन
निरमनकरिये सुधहिरदेनीरथम
नधरिये जेजेबडतपितरअरुदेवा
तिनकोकरियेपजासेवा ११ सकलविप्र
नकीपजाकीजे करिसुनमानदांनबड
दीजे गायनभिसेनोवसनादि हयहा
थीरथअनग्रहादि १२ आशीवाददि
जनिकेनीजे जानेहिहि समकतईवी
जे देवलविप्रगायकी पुजा पापहर
ण विधि ऐतन इजा १३ ऐसोसुनिहरि
जीकीबांनी सबजादवने मलीक
रिमांनी नावेनेविधिसंधुहितनरे
चहिकरिरथनपयानोकरे १४
सोहरितिनकोअग्याटीन्ही सोये
सबनिसवैविधिकीन्ही करिसना
धरमसबनांने सधिप्रभासआपबैठ
मांते १५ नवनितकीयेजुमजा[illegible]

तैंन्रलिगये सबक्षोनातबमदमतस
कलईनयोहरिमायाबिबेकहरिन
यो।१६। तिनमैकलह नयोतनपेन स
बमैप्रेरकहरिपरिछेनातबतिनकी
तासनामंफरी।सातिकबीरगिरा
चारी।१७।कतब्रह्माकोकरिश्रपमां
नासातिकछोडेबांणीबांण।नाईजो
सकवीयतनधारी।श्रुलबक्रमैंकही
येअधिकारी।१८।सोत्रैसोत्रैसीकोक
रीसोवतबालनिकेसिरहरैयेप्रद्यु
म्नबचनसुनबा स्योक्तस्यब्रह्माकौ
अतिथिकोस्यो।१९।तबकतब्रह्माकी
कौतुधांबांणीबांणप्रकास्योजुधकश
रकरैमित्रीकौत्रैसी।ब्याधकुरज्योनै
कीन्हीजैसी।२०।भूरीश्रवानिरायुध
योजा
कोबधतुमकीन्होत्रैसी
करैनजैसो।२१।तबसातिक
बांनीसुनेसुनेहोसारंगपानी।इनत

कोनमन्नदृश्रापमिराह्यो नातैंसोम
नोहै ग्राम्यो २२ येक हिबचन मंडग
निनकानो क्रनभुसाकोमलक्व
ह्यो ज छाप सबमिलि ग्रकनिवासै
नो प्रसालिकोकोधन हास्यो २३ नतै
मकलनयेज बक्कुधसातिकहीस्रंग
न्नोजुव नवतेसकल नये हैग्रोराजु
धवत्रोमायरत टघोर २४ कोईधनक
तो नमोलरैकोई षंड गहैं संहरै केई
करसागदाकुमार केई लेसो हथीप्रह
र २५ केईगुरजगोफणीकेई हुमादि
कनिलरैतेतई हरिषितसबकरैसंग्राम
खेतदेषैहरमनसुरराम २६ हयसोंहय
लाथीसोंहाथी रथसोंरथसाथीसोंसाथ
मरसों मरफंट फूटनसों महीमरमहं
मुवेंनवैलनिसों २७ सरसंप्रसुरमि
लिलरै नरसों नरमिलि जुद्दहि करैम
हामनकोकनबेनत्रसैं जुधकरैवन
मैं गजनैसैं २८ सांबप्रद्युमनवांन्योजु

।सौंअक्रूरधनोजअतिकुधा।तहांसे
जीतरुसुनद्राकैजुधबीरनकों
नद्रारणगदसेनामकृस्नकोभ्राता।नां
मसुचारुपुत्रबिष्याता।सौंसांतिकीसं
मिलिअनुरुध।सुरुथसुमित्रकरैमिध
लजुध।२०।तिन्मुकेनसवसहसज्यत
सतजित।मोनूंआदिदेजोधअपरमि
त।आपुआपुमैंजुधहीगनैं।हरिकरि
हितकअनजानैं।२१।।अहमवंसदा
हवंस।सात्वअंधकभोजवतंस
अरबुदसूरसेनमधमाथुरादेसबि
सरजनकुंतिरुकुंकुरा।२२।आपआ
पमिलिजुधहीगन्यो।सबनिपरसपर
हदाभांन्यौ।पुत्रपितामाईअरुनाई
मांमांअरुभांनेजेनराई।२३।काकाभे
तीजेनातीनांनां।मित्रमित्रमिलिजुध
हीगनां।सुहृदहृदस्यातिनसूंत्यानी
बमिलिनयेपरसपरघाती।२४।तब
दीएनयेसबहिनकोंदृष्टतघाव

नकतिन तनके आयुधसकल्ली
तबगये तबतिनकरनिश्चैरकान
ये ३४ मयेम्रसन्नसूरगातेजेते बज्रस
मां निसिचुनट नेते जेनसकलकरनि
करलीने हरिस्वंजुधकोधहीकोन्हे
३६ रामकेलबकेनांतिनिवारेमरि
तेसुरसकलुन विचारे रामकेमको
रिपुकरिजांने जुधबुधिस्वंतरगतिवं
नें ३७ नबआपुहीकीयेतिनकोप
कस्यो चहैंसबहिनकोलोप तबश्रे
रकाकरनिनिलीये थोरसोहिप्रल
यसबकीये ३८ विप्रश्रापपश्चात्तादि
नकरे हरिमाया बिचारसबहरे पा
वकेकोधप्रगटजबनयो बांसबिप
नकुलजरिबरिगयो ३९ तबकुल
नकलनिसूहरिदेष्यो नकोनारत
ताकौलेष्यो जाकारणलीन्हेंअवतार
सोमनलिहेस्योघरनिकोनारतबसमु
झतमैंसबनड कीन्होंब्रह्मध्यान

त्ति नंद। श्री पहीबसमाहिल्लैरा
यो भानवदेहहरिकरिनाभ्यो ४४
मप्रयाएलखोहरिजबही लघुपी
लवेवेतमही निरमलनरूपर
जथास्यो दसोदिसाकीति
स्यो ४५ ज्यौनिरधूमपावकप्र
स जैसोप्रगटभयोनजासमीत
बसनहेतनघनस्यामतनसोबरण
अभिरामा ४६ सुंदरहास
मुषपद्माकवलनैनसोभाकेस
चाकरणनिकुंडलमकराकार
मुकटसोभाअधिकार ४७ रूपर
चतरभुजश्रीगोपालरुचिरनील
रकेसबिसाल उरभृगुलतामणि
बनमाला कंठसूतकटिसुत्रनि
त्छुद्रघंटिकानूपुरराजे ४८ व
आभूषणभूषितअंगादे
भूमितअनंगआयुधमूरतिवं
मत्तसुमरतजिन्हहिहोयनय

स्त॥ धरी उतम चरण के वन आस्त
जिनकौ उर आवै निति तिनका॥ दषि
जंघा नीचे कस्यो॥ बांम चरण ता ऊप
रि धस्यौ॥ ७७॥ यौं पद्मासन कस्यो जो
गीस॥ नासा अग्र द्रिष्टि समि सीस॥
ऐसी रीति करी सुषदाई॥ संतन कौ
यह रीति दिषाई॥ ७८॥ यौं निश्चल वे
वेक कर्म॥ सुमरत जिन्है ही मिटै न
य भ्रम॥ अति लघु मूसल पंड अपार
ह्यौ॥ जल मे डुस्यौ मछी गह्यौ॥ ७९॥
सो वह मछ जाल मे आयो॥ जाके उद
र लोह सो पायो॥ जरा व्याधि मन लको स
की जौ॥ लै कर सिर के आगे दीन्हौ॥
८०॥ सो वह व्याधि कुतो बन मांहीं॥ ह
रि कौ पद तिन जांन्यौ नांहीं॥ हरि कौ
चरण द्रिष्टि जब पस्यौ॥ म्रग मुष जां
नि घात तिन कस्यो॥ ८१॥ सोही बांण ल
गायो चरण॥ विप्र वचन नहीं मिथ्या
करण॥ सो वह है बधिक निकट चलि

ायो॥रूपचतरभुजदरसनपायो॥
र चरणलग्योजबदेख्यो बो०॥जरा
नयो तबमूर्ति कसमांनि॥चरणनिप
रिबो ल्योनयनीत॥कंपतऋंगलग्यो
ज्योंसी ता५१॥हे प्रभूमैंकीन्होंऋपरा
ध॥तुमहिनजांन्योमूरखब्याधायेमैंकी
न्होसकलक्ष्रयो नो॥बांनलगायोमृ
गकेजोंना॥५७॥यालऋपराधहिंतुमही
टारोजेतुमनोमलोयेतेतारोा॥तुवसु
मरणसबपापबिनासे॥मिटेऋग्यांन
त्पोंनप्रकासे॥५४॥ब्रह्माऋादिकरैंऋ
राध॥तिनकोमैंकीन्होंऋपराध॥तातें
प्रभूजीबिलमनकरो॥मोपापीके प्रां
हीहरो॥५५॥तातेंबकस्यौकरूंनऋसो
यहऋपराधकस्योमैंजेसो॥जिनकी
मायाकोबिसतार॥ब्रह्मासिवसनक
दिकुमार॥५७॥ऋोरेंश्रुति इच्छाहैंजे
ते॥क्योंहीजांनिसकेनहीतेते॥मोहि
तसकलतुम्हारीमाया॥जातेंकिन

हुंपा[illegible] या पूर्ण जिनकौं पापजो
निहेम [illegible] कौन नांलिकरिजानैं
है [illegible] क्षुद्र जीन विचारो वैगेमोद
सोकैंमारे ५५ ऐसी जरा नविके
कांकांगां) सु नौन्हैः कपटसारंगमां
गां) [illegible] आप वनत्र चारे ना
के [illegible] नाके नैहारे ६०
नठिनठिजरा भयेमति
मानै श्रवनौं कैयापमतिजानैं थे
[illegible] कनैमेरी यामें कहा सकिहै
नारो ६१ मेरे कृपा जाकु तुस्वरग ज
[illegible] तुष्यनलि नपसरग ऐसेवैन
[illegible] ननन्हें उन्होमिमानसुरगौं
[illegible] ६२ नौनपटे क्रमां [illegible] प्रनाम
[illegible] केवांधिक गयो सुरधाम चढिवि
[illegible] कहीगयो जैजैसबदेन
[illegible] ६३ तनु रथ लीयें [illegible]
[illegible] पांचहरिजांकौं कहें नपैथे
[illegible] पवन ज[illegible] यो ताके मो

कृस्नपैआयौ।ईधापीपलस्नलज
आसना।प्रभार्मनुंसिसिरस्क
तासना।आयुद्धआगेसूरतिवंता।
तिहैथेमगतंना।ईधालब
रुकधीरजकहींकमोरथतजि
हवलचरननपर्यौ।उमग्योहि
रदैनैननजलछायो।प्रेममगनसु
बैननआयो।ईदीनबकरिधीर
आसुनिवारो।करुणासहितबच
नउचारो।हेप्रभुमैंतुवचरणनदेषे
पलकल्पकल्पकरिलेषा।ई६।तन
निरुडिस्टमैंनयो।सबडपथे
कबरअनुमयो।न्तिदिसानक
सुसपायो।ज्यौंउडपतिनिसमा
हिछिपायो।ईचात्रुमबिजमेंज्यौंत
नबिनप्रान।जैसेनैनअंधबिनभा
ना।ऐसेबचनकहेजबसूता।रहेग्यौ
येकचिरवनश्रदभूता।ई९।गगनि
तमरथआयो।हयनसहितन्

हुगहइ [illegible] यो मूरति अहिरिश्रायु
जैन रेथुभिंजाटकै सबतेते १०५
हच्छिपिदासिके जबदेख्यो त्रिसमय
यौन्कृ [illegible] नीनैख्यो नबुहरिसुतनीबेन
सुनाय करिगुनमानइ अविसराय ॥
१११ सुनह्वारका
कौंगुनजोबो ममाचारमवजायगसु
नाबो मबकोमरणांमनिरजांन ॥
श्रुलमेलैश्र वकरतप्रयांन १२ हु
रालनारहैंमतिकोई ननकौंधरेंज
कुलोंजोई गहनरलोकनजोमैंजब
हो मधुद्वारिकाबोरेनबही १३ हु
मरेमातपितादिक गेई लेस्वपनेंगे
कीतेतेई छिनीजइयोश्वरजुनसं
ग रहेंद्वारिकाकेहैंमंग १४ तिन
कौंनहसंदेसमुनावो श्रुतुमम
मदमेहीमलनावो ममभायारचना
बै ।।नौ लांमरूपसबमिथ्यामानौ
१५ त्रिगानेंगुरसबनांनारूप नि

थलजांनौंमोहिअरूपा।जहांतआप
कमोकौंमांनौं।नांमरूपसबमायाजां
नौं॥७६॥मेरेचरणनिरंतरभजो।इजी
सकलबासनांतजो।जैसेकैआवोमो
मांहीजातेफिरिउपपावोनांही॥७७॥य
हसुनिसूतकृस्मसौंज्ञांना।छोड्योप्रांसो
कमोहनयञ्जांना।निमसकारकरि
बारंबारा।परदछिणांदेबिबिधिप्र॰
कारा॥७८॥हरिबियोगलैंअतिउध
थ्यो।ज्ञानबिचारचितठहरायो॥ह
केचरणकंवलउरधारे।तबदारु
कहरिकापदहारे॥७९॥दोहा॥य
पमेंतुमसोंकहो।पडकुलकोसंहा
रा।अबभाखोंहरिकोगवना।अरु
रिजनउधारा॥८०॥इतिश्रीभागव
महापुरांणेयेकादससकंदेश्रीसुक
परीख्यतसंमादेभाखायांबलदेव
दियाणौंनांमत्रिंशोध्याय॥३०॥११
...॥चौपई॥॥

तब ब्रह्मासनकादिकलीये॥ नर्गुन
दिकनत्तथासंग्यकीये॥ सहितभव
नीसंकरदेव॥ इंद्रादिकसुरअरु
उपदेव॥ ४॥ बिद्याधरकिंनरगंध्रब
पितरमहोरगचारणसरब॥ गरुड
लोकपंचीअरुसिध॥ हरिकेदर
सकोमनोबिध॥ ५॥ सबमिलिहरिके
रसनकोआये॥ सबहिनहरिकेदर
नपाये॥ हरिकेजनमकरमगुणगा
वे॥ सबमिलिजयजयसबदसुना
वे॥ ६॥ सकलबिवांणनिछायेगगन॥
बरषेंपुहुपप्रेमकरिमगन॥ बारंब
रकरैंपरनांम॥ मुषतेंभाषैंहरिके
नांम॥ ७॥ ब्रह्मादिकसबकरमबि
लीनी॥ कहमहीतेंतिनकीउदलीनी
तेसमस्तदेखेभगवान॥ नैंनमूंदि
तबगंध्योध्यांन॥ ८॥ ब्रह्मालच्छपये
ककरिध्यायो॥ हेतभावसबइहि
बहायो॥ निजतनलोकनिकोंअभि

रोम।ध्यानधारणामगनलधामहि॥
ताकोश्रगनिधारणाधरी।श्रगनि
उपायनकासोकरी॥नवहरिजीवे
कुंटसिधारेम्या।विधिसबकेकार
जसारे।अतवहंदनीबाजेसुरलोक
उपज्योहरषमिटेनयसोको।सतिस
कीरतिधारजधरमासो।मान्त्ररुजेउ
त्तमकरमाछ।तेसवगयेसंगजगदी
साजातेहरिसवहिनकेईसा॥तेज
हाकथाहरिजीकीपूजाध्यानधारणा
नीकी।ए।जहांसमस्तरहेतेतेईसत्यादि
कसबविधिजेजेईब्रह्माश्रादिसवक
सुरजेतेहरिकीनगीतिहिनजानेतेते॥
१९॥हरिवेकुंटपयाणेकस्यो।सोकिंन
हूकोजानिनपर्यो।कहूनहीतिन
हरिकोदेख्यो।वडोत्रचंभासवहि
नलेष्यो।२॥जैसेमेघहोयन्राकास
त्ररुदामनिप्रगटघनपासहैकरिपु
रगटगुपतह्वैजावे।ताकोषोजनकोई

पावै॥१२॥सोहरिकोपोप्रयाजवह
कारुतिनहींनदेषौतवहीनमै
प्रगटकुतेतवदेषै॥गुपतनयेकि
नहुंनहीपेषै॥१३॥हेनपयहश्चेन
मांही॥सक्तिअनंतसदाहरिमांही॥
जडकुलमेंहरिकोअवतार॥ग्रह
करिबोनानाब्योहार॥१४॥सोसम
स्तमायाकरिमांनौ॥हरिकीसक्तिहे
तसवजांनौ॥हरिजीसदाएकरस
रहै॥करमनकरैजनमनहीगहै॥१
औरेंकरमकरतसवजांनै॥जनम
लीयोहरिजीकौमांनै॥येसवदेहनि
केब्योहार॥हरिजीइनसवहिनतै
पार॥१६॥जैसैनटबाजीबिसतारै॥
बडरूपोआपहीसकलनिवारै॥बा
जीगरसवहिनसौन्यारा॥यूंहरिके
करमरुअवतारा॥१७॥जिनहरिर
च्यौत्रिगुणसंसार॥नांनांभांतिप्रगट
आकार॥आपुप्रवेसकीयोतिनति

सबवरताय बिनासैं छिनमैं
घाअंत आपके आपही रहें। त्योंही इ

उजिन आंन्यो काल मृतुके ग्रमही
नान्यो।२५। ब्रह्म सत्रुते तुमही बचा
यो। अधिक ही सुरग मैं हेपठायो।। ते
जो अपनी रज्ञा करते। तौतनकौ क
हेपरिहरते। २६। सबजगकी उतपति
प्रतिपाला। नासकरै जिनकौ बलका
ल अैसैं सकलसक्तिमय देवी ब्रह्मा
आदिकरैं जासेवी २७। हरिवेकौ धर
नीकौ भार धस्यौ ऊतौ मानुष आका

ज्यौंकाटौ भागै
बिननिकसैंनाहीं
जबही ऊहे उडा
निजबही २८। त्यौंहरिमृ

कौनां यैं अरु येक ऋतिहीं अपौन॥

तिनकौंप्रगटदिषायोज्ञांनार४जोग
साधिकरिराषेंदेह।पुरषारथकरिम
नैयेह।सकलबिकारनकौंआगार।
ताकौंराषितजेसुषसार।२५।तातैंति
नकौंमोहमिटाया।देहतजेंतैंब्रह्मव
नायो।ऐसेंतनकोंकौंअनादर।जातैं
कोईकरैनआदर।२६।देहनिरंजन
सुधसरूप।ब्रह्मदेहसोततअनूप।
कालकरमगुणताकौंनांही।अकल
देहसकलकैंमांही।२७।तातैंहरिबि
कुंठपधारे।बाजीज्योंदेहादिनिवारे
ब्रह्मारुद्रइंद्रादिकजेते।देषिप्रयां
णोंहरिकोतेते।२८।बिसमयनयह
अगुणगावैं।अपनेंअपनेंलोकनिजा
वैं।ज्योयहचिरतपढैपरभातकह
देवकीनिरमलजात।२९।सोदिढ
भक्तिकृष्णकीपावै।जातैंकृष्णलो
कमैंजावै।हरिदासकहहरिकापद
योसोवसुदेव नृपमैंआयो।३०

कृष्णवियोगविकलअतिचित्तजे। सेंकृपणगयेतेंबिता।तिनहस्पोकें चरणनिपरोतिनस्वारथीवचनउ चरो।२१॥श्रोस्त्रवाहचलेनैननितो।अ तिव्याकुलअटपटेबैननितो।सबज दुकुलकोनासमुनायो।अरुबलकेो निर्जानजनायो।२२।योसुनिसोकतपति सबनयो।करतविलापप्रभासहीगये। जहांजायहरिजीनहीदेषे।तबबेक

जातेंमिट्यो देहसंजोग।बलि

कीयो।अतिनेहा।२४।वसुदेवहीलेओठ सनारि।कीयोसहगमनचितासंवारि।प्र द्युम्नादिजहांलौजेते।तिनकीत्रियनि

स्त्रियां ॥ तैं कस्यो अगनि संजोग ॥
हरि को लघु जहां लों जेती रुकमिनि
आदि सकल न लों तेती ३७ हरि को स
पति देख मधु स्यो अगिनि प्रवेस सब
मिलि कियो अरजुन प्रभ सम माहि
जीवां ॥ ऊस्मां वियोग प्रकार क जी
को ३८ तौ तैं अरजुन अति दुख पायो
कान्ह नवानि देखायो गीत मांहि क
ह्यो हरि ज्ञान मिथ्या देह सत्य भगवान
३९ ऐसो ज्ञान विधि सो नवि चासौ
कर्म निबंध सो कसनटास्यो आप
आपने मारे जे ते अपने बंधु नाति ग्री
थन ते ४० जिन को जो पिंड दिक दां
नो ह्मांन की या जतो बिधि नांनो सो
ह्ली अरजुन सकरी हस प्रीति
न नहीं पारि हरी ४१ नवे हरि का कम
विन नई माथुर को रिपनक में लई
के न नहरि जी के ग्रह जे ते सो हरि के स
कलां ने ते ४२ निनि बिसरन तां हरि

जाकोसुमिरतसुनतउधारएजीको
मंगलसकलमंगलनिकेरोत्रिभव
नसुषहोवेनितिचेरो॥४३॥सत्रीना
लबरधसबजेतेमरतमरतउबरे
तिकेतेअरजुनताहिदिलीलेआ
येसमाचारपांडवनिसुनाये॥४४॥तु
मरे पिता सकलपिता महजेते॥क
लमषयोएहीसुनिकरितेतेतुमही बे
सधररोजाकीयोसुषरातिलकबज
रकोदीयो॥४५॥तेसबतजिउतरदिस
गये॥कर्महिसेयकर्ममयभयेजो
यहहरिजीकोअवतारा॥जामेकमगुए
नविसतारा॥४६॥तिनकोकहेसुनेनर
जोईसबपापनितेछुटेसोही॥याविधि
हरिकेजेअवतारगितिपता तेतेहि
करमअपारा॥४७॥लोकबेदमेपरग
टजेते॥गावेपहेसुनेविचारेतेते॥सब
तेलहेप्रमअानंदा॥मिलेकृष्णछुवेड
पदंदा॥४८॥दोहा

भी
ऐसे तुमरा ... ब्रोमनना ... य याकोंकों
सु नैमोहन कु नारायणपैजाय प्रण
लुब्धानिरीहनिरंजनस्वामि
सकललोककेश्रेत्रजांमी भगतिन
केलगेरूपधरलाग नानांभांतिकेतु
धार पुं तिनमेंकरूमखयं भगवान
ओंन कृष्णसनक्षपतिप्रधान जिनके
गुनिनिकसोगुणदेव सुनतनस्योपर
गेज्ञ मनरहव पुर जिनकोनांमलनी
में जन नाही लोक विराजै निजपद
मांही ऐसेकृष्णसंतनकोंबित नि
मनवार तिनकृष्णकोंनित पुर तेत्र
बनतहानसेनांम देहधरेंजीवनि
... कृष्णनिहूंनमक्तिकरवा
... अपनीभक्तिहिरदैमेंन्यांवे पुर
... विधिनवषुःखमिटावे अपने प
... मन वहीं प्रकटावे कृष्णरूपतिन
... ताको ज्ञानजननिजपदहीं
चाको पुर मोलेकछांलेहसकनिका

सो।तातैंहोयनअरथपरकास।जोपं
डितजानैसोसोई।८४।जोकदेनजानैं
कोई।८५।तातैंतिनअबकरुणाकी
न्ही।मोसेवककौंअज्ञादीन्ही।सब
लोकनिकीहितमनधारी।भगतरहै
भाषाविसतारी।८६।जोकोईबांचै
सुनैसुनावै।ध्यानकरैअंचैसुरगावै।
तातैंलहैज्ञानबैराग।प्रेमभक्तिहरि
कौअनुराग।८७।प्रेमप्रवाहमगन
तितरहै।भवदावागिनिकदैनदहै
ऐसैकैकरिब्रह्मसमावै।तजिआ
नदजगतनहीआवै।८८।कबहुक
रैकोमनोकोई।यातैंलहैसकलसोसो
ई।तातैंजेजेहोयसहकाम।अरुजेब
डभागीनहकाम।८९।तिनसबहि
नकौंभाषायेह।मुक्तिरुमुक्तिभक्ति
कोगेह।तातैंयासंकीजेप्रीति।येह
सकलसंतनकीरीति।९०।सेमत
सौंनेहसैबोतवीजेवहुचकनथई

कुं जि देवा संतदास गुरु आज्ञा दी न्हो
चतुरदास ये भाषा कीन्ही ॥ ६ ॥ २ ॥ है
प्रेम पंथ प्रगट कर्यो मम घट के नि
देवा ते मेरे उर नित बसैं संतदास गुर
देवा ॥ ६ ॥ ३ ॥ इति श्री भागवते म्हापुरा
णे येकादस स्कंधे श्री शुक परीक्षत
संवादे श्री कृष्ण उधव संवादे ना
म पंचमो अध्याय ॥ ५ ॥ संपूर्ण
दोहा ॥ चौपई ॥ सब को पाती ये मं
ता ॥ २७४७ ॥ अथ सबही जंत्र प्रो
पान की लिखी सो ॥ चौपई ॥ सुंन मंड
ल मैं मन का वास जहां है प्रेम जोति
प्रकास आपे पूछै आपै कहै सतगुर
मिलै ॥ परम पद लहै ॥ १ ॥ येक अच
ना ऐसा कुवा गगरी माहि उरध्या क
वा बोल्यो नेज पहुंचै नांही लोग पिया
सा मरि मरि जांही ॥ २ ॥ आसा पासा दूरि प
सरंतौ निवारि ॥ सिध साधिक सुसंग क
रि सतगुर सबद बिचारि ॥ ३ ॥ धरतीं अ
दोहा ३ चौपई

वनअरूपांणी॥ चंदसूरयटदर
गंणी॥ ॐकारजांणेजोमंत्र॥ त्रैसा
अलयअअंत॥४॥ गोपीचंदकहै
॥बसतीरहूंतोकंद्रफव्यापे॥ ज
ंगरहूंतोयुद्यासंतापे॥ आसणरहूं
लं॥ तो मायापेयचलूंतोछीजेकाया॥ धू
मीठांयांकेसोव्यापैरोग॥ कहोकिसीबि
धिसाधूंजोग॥ अवधूसंजमअहारकंद्र
फनहींव्यापैपवनअहारयुद्यानसंत
पे॥ ही सिधआसणनहींलागेमाया॥ नाद
पीयांणेनहीछीजेकाया॥ जिभ्यास्वार
नकीजेभोग मनपवनालेसाधोजोग॥ ५
योडासायतोकलपेकलपे॥ बहूतस
यतोरोगी॥ दोईपषांकीसंधिलिचारे॥
सोकोइबिरलाजोगी॥ ६॥ मरदनकेसअ
नलेअवधू॥ पवनअस्थी नलेका
या॥ आवलोसेजरोमरसआ नले
त्यागलेमाया॥ ण॥ सबसिधांमिलिपा
पार॥ नामरैजोगीनलेअवतार॥ सुन्य

समोवेबांजेबीनां।।अत्लअपुरषत्नहांत्ले
त्नीनां।१०।। अेकराजछोडिजोगीऊवा
।एकजोगछांडिघरवासं।।छ्याहस
तीवनकूंजावै।। स्यांनकरककेपास
११।।जोगनजोग्या।मोगनमोग्या।।अहत्ल
गयाजमारं।।ग्रांमेंगादरजंगत्लसूंक
फिरिफिरित्लेश्रीतारं।।१२।।योसंसारक
केकाथेत।जवत्लगजीवेतवत्लगचे
ति।अंध्यांदेअेकांनांसुनेजेसांब
वैतेसात्लु।ली।।१३।।ऽलत्लछ्मीजत्लं श्री
नाथजीसबदीसंपूरण।।१।।अथ
त्लोलीपावजीसबदीलिख्यते
।।अजपाजपोरेअवधूअजपाजपो
धूजेनिरंजननाथंगगनिमंडत्लमे
जोतित्लपाई।।देषिधरैते ध्यांनं।।१
।।मोकौ आंध्यांकैनकोपांठि।।दिब
दिष्टिसुंन्यकोफाके।।अगमअगो
चरगुलकूंत्नहै।।ऽत्लत्लीपावस्रीहा
त्नीपावकेहै।।२।।छोटानमोटासेतन
चेतन

सांवला॥हाली पावक है पांणी जैसे
पतला॥सुंन्य सरूपी पवन जैसे ३ ना
वला॥जो वो अनघ फूल जस हलवा
हा अरथै दोता ३ रथै आवे॥घट ही क
या बिचारं॥निरंजन धुं नि सुनि मैंयानं
ह चलन निरालंभ सबद पारं ॥६॥
धा हंसा बरण पहिली होता॥सुष म
नि घर जो आया॥पिंड धरे नहीं गुर
जां एण आवा गवन मिटाया॥ध
रै देषि आराधते॥करै ते आसत
नी डाही सिव पाईया॥ना हा गुर सु
मे हां॥मन सा मेरै माता कहीये॥पि
ता निरंजन ॥ सत्गुरु हमारे
गोरष कहीये॥अतीत सबद भये
पारं ॥७॥ इति श्री हाली पावकी सबद
ही संपूरणः॥श्री॥ अथ कुन्हारी पा
वकी सबदी लिष्यते॥हादस श्रो
गल हंसा जाय॥३ निमनि ताली गग
नि समाय॥ये हजो भजुगति सिध गोर

मराव। स्व मोषेंकुम्हारीपाव॥१॥ई
लाविंगलामधिधरैसुषमनिनारीप
तनाकैनासि चँरतहारोकेबाय
नतिसतिकहैकुम्हारीपाव॥२॥सु
मनितंतीछेडकरै॥वंकनालित
हांइमरलकरै॥अनंतसिधपीवेगो
रसराव॥सस्ततिकहैकुम्हारीपा
व॥३॥पिंडब्रह्मांडजोरेअवधूपिंडयोजो
पिंडयोजासूंअनंतकोटिसिधापा
रगामीभये॥अनहदसबदसूंसंध
ध ॐकारघोजोरेअवधूॐकारघो
जो कहांतेउतनतें ॐकार॥जाघोज्यां
जोकहांतेउतनतें ॐकार॥जाघोज्यां
निर्माणवकोटिराजाउधरे॥अनंत
सिधभयेपार॥४॥अनंटीबाइचटी
आकास गरजैमेरगगनिकैलास
जावेतेगावणीयांकहीयेजोडेते
जोडणा मेषपहरिनेइसणीकही
ये सिधपुरषकोइषोडणा ई॥अब
धूसूई गमारेसुरतिबातीयें॥अंह

निससी बोलागा॥८॥ कैसे अकास हजार थ
गा बोली ओसी बोस्वाँउ सा संगाती न
सैसाठि थे गली कहीये॥ कल पांन प
रगासी॥ बहुत असथांन हमारे नग्री क
हीये॥ अडसठि तीर्थ असथांन॥ नौनोसे
नाडी हमारे नदी बोलीये॥ चौसठि जोग
णी भिख्या प्रमांणे॥ मढी हमारे अंबर गु
फा बोलीये॥ कोटि रतनं बजर कपाट
णी परमसुंनि मैं ध्यांन हमारो जो बोल्यो
तू बाढो सुरग लोक हमारे मसतग कही
पाताल बोलीये पादिका॥ उड मूल मं
त्र न कहीये हम जोगी हे आदिका॥१०॥
इया हमारे रह रासि बोलीये सींगी अन
हद नादं चवरसु रसुजा बोलीये मठ सु
कांम कहीये आदेस॥११॥ अपी हमारे अ
नंत दल बोलीये पेरमण रह मारे चे
नां सतिसतिकहे कुम्हारी पाव...
रहां अनंत सिधां सू मेला॥१२॥ ...
...रि बंकनालि कहीये॥ ...

नीयेकपालीरथबांहलपवनबोलीये
मनरावल ... रम्भवाली१३ पिंगलाज
मनांबोलीये इंगलाहमारैगंगा सुषम
नांसुरसतीबोलीये अ्रसनानत्रबेणीसं
गा।१४।कासीमेत्रकायाकहीये त्रवेण
प्रागअ्रस्नांन दसवेंद्वारकेदारबोलीये
त्रकुटीजगनाथथानां।१५।कूंपचक्र
पहोकरकहीये दसदलद्वारेकाथां
नं तीनकूंपगयाबोलीये बदरीधरि
बाथांनं।१६।चंद्र हमारेकंद्रफबोली
ये सूरजबोलीयेनादं अ्रगनिब्रह्मअ
गनिबोली ये तजिबावादबिबादं।१७।
नेत्रचंदरसूरजिबोलीये बैराटसक
लसरीर। गगनिमंडलआगरं तहमारे
तहांधरतीवरषतनीर।१८। कायापर
थीबोलीये लोहीबोलीयेनीरं तेज
उद्र अगनिबोलीये पवनस्वासस्री
रं।१९। अ्रप्रकुलीपरबतमस्तगबोली
ये सबदबोलीयेअ्रकासं सताईस

यंत्र अघोतरसैमालाकहीयेजपि
स्वासउसासे॥२९॥अकईसमुरगपि
बोलीयेसीससप्तब्रहंड॥सप्तदीप
कायाबोलीये॥नौषंडद्वारनवषंडं
शभूरवदिठ्यणजोगजुगतिबोलीये॥
अपछिमधरिबाध्यांनाअरधउरध
मुकामबोलीयेतहांकथिबाब्र
न॥२२॥धरचक्रगढकोटबो
॥कंवलमहलअवासंसतिना
रीपावजोगीसि दबैकूंटकै
लासे॥२३॥दीपंदीपगकुजासंसूरज
प्रगासे॥स्वासस्वासघटपरनां
वें॥भाषेसत्यकुम्हारीपावे॥२४॥चं
चंदइस्मृतसारोबूंदबूंदसमंदअ
॥सबदेसम्रपानअनंता॥बचन
बचनसतगुरहीसंता॥२५॥चतरदलेपि
कामूला॥षटदलकंवलसुषमअ
थूला॥दसदलकंवलस्वासकावा
॥हासदसकंवलजोतिका ॥मा

सोहं [illegible] वैनंगगालकासल चवैद
मन्त्र [illegible] मैदलकेवलनवक्षेम
आतं [illegible] निकुम्हारीपाव २७ मदद
दल [illegible] के मैलसासार कावलसंकलक
[illegible] गुरूनेस्थानिकरेप्रकासं
[illegible] के दलदलत्रभूनिवासे २८ ब
[illegible] नयाम प्रांणसंचारे सहंस्रकेवलद
[illegible] सार स्वहगगनिमुयकेगेसर कु
[illegible] पावकेहे सनहदतरे २९ चक्रद
[illegible] त्रभुमुयहार षटदलकेव
[illegible] अनुसार दसदलकेवलनि
[illegible] द्वादसकेवलदलसूरजिसंच
र ३० सोहंसदलकेवलसिसकाध्या
[illegible] सकेवलमधिजोगविचार चतु
[illegible] प्रजरै बंकनालिबक्रइ
[illegible] ३१ स्वहकेवलकोगेसूर अ
[illegible] वदकैरेघननर सहंस्रकेव
[illegible] जपाजाप स्वंसिकेवलद
[illegible] स्थान ३२ अनंतकेवलदलत

रध प्रमाण॥परसुन्नपनमेसुरध्यांन॥जोग
जुगतिश्रीसिंनूरावाभावेसत्मकुन्हा
रीपावें॥२३॥षटघटाघटथिररहेतो
घटघटाघटिजाय॥घटघटजीत्याघट
सैंधे॥ञनमनिरहेसमाय॥२४॥ञत्रघं
कतेंसक्तिचरतेगी॥ष्यणपकाईडीबिंड
कलघदोलघहंसंसमांनां॥गोदंतपन्न
र्या बिंदा॥२४॥पातालबिवरथ्यालच
लैगा॥ञाकासबिवरथदूंकां॥मेरडंक
जबबरणफिरेगा॥घटचक्रनरिकुंड
उद्दीजुगतिगंमेंथिरभयेघोटसमत
प्रमाणं॥जोगजुगतिसमाधितट॥ताली
जोगनिरबाणं॥२७॥रोगभोगतहांजो
गानहरसेंग्यांनबिनांगुरकेसा॥बुधि
बिहूंनांऊंगचेला॥सिधसबदहेऐसा
उठा॥नासिकाञग्रनाभीमंडल।घटसत
सहेञञकीसा॥द्वादसञांगलजोगबि
धि॥जपिजेबिसवाबीसा॥२०॥घटचक्र

सोहं अहनिस जपै ॥ ब्रह्मरंद्र अस्थांनं
४० ॥ इड़ा पिंगला जोग अभ्यासं सुषम
नि पवन समांनं ॥ अष्ट पत्र धुनि नाद
लग्या ॥ सहंस्र पत्र अस्थांनं ॥ ४१ ॥ इड़ा पू
रि लै पूरण पवनां ॥ सुषमनि कुंभ समा
नं ॥ पिंगला नाड़ी रेचिबा वारि ॥ त्राटक
धरिबा ध्यांनं ॥ ४२ ॥ इंगल पिंगला उल
टि चलैगी ॥ सुषमनि के घर वासं ॥ सहंस्र
मांन जब पहुँचै फिरैगा ॥ तब परजोति
परगासं ॥ ४३ ॥ त्रकुटी मधे बाट बहीते
नाद बिंद का मेला ॥ बहत्र चंदा गगनि
फिरैगा ॥ दसौं द्वार गुर चेला ॥ ४४ ॥ त्रिकु
टी मधे जे भाणिनां चै ॥ जोगी धरिबा ध्यां
नं गगनि मंकल जहां अचरज देष्या ॥
सुनि जन कथै गीयांनं ॥ ४५ ॥ ब्रह्म सहं
स्र धुनि सींगी ॥ बंकनालि नित हां सुषमनि
नां चै ॥ भंवर गुफा तहां जोगी ॥ ४६ ॥ नासि
का अग्र त्रकुटी मधे ॥ देषि धरिबा ध्यां
नं ॥ इड़ा पिंगला जोग अभ्यासं सुषम

चक्रजहांवायबंधैगी॥अजपाजाप
मेचारोधणइतिश्रीकुम्हारीपावकी
।संपूरण:॥३॥अथचरपटन
थकीसबदीलिख्यते॥साधूकैकरि
करैजपाहिंचरपटकहैकलजुगका
गादासाधकहावैसुगनेनगा॥कालाः
मूंडापीलापगा॥शाचमडीकूटेधरैध्यां
नोतापसुवभैकहागियांनाचरपट
कहैसुनोरेअवधूकामनिसंगनकीजे
जिंदबिंदनोनाडीसूंकोदिनदिनकाया
कीजोरजतनकरतोजायंतोजाव।भ
गदेषिनहींघालेघाव।कोटिवरसलो
वा आवासतिसतिभाषैचरपटरावा॥
ःचरपटचोरकरैमनकंथा।चितचा
वककरणं ऐसीकरणीकरोरेअवधू
वकरिनहोवैमरणं॥४॥दिढकरिमनवा
थिरकरिचित्तकायापवनंप्राणैनित्त॥

अनराभरोस्मोथिरहोयकंघातकेनहंस
पैडे.नजिंदाथ्मलनहारेदीजेबंधबाईवे
त्तेचोरुविसद्दुजुरापलटैषंफेरोगबो
ल्लेचरपटधनिधनिजोगा ईमूलनहारेब
धूलगाया पवनपलटेगगनिसमाय
नादबिंददोउल्थिरहोयाग्रदिष्टपु
षदिष्टलबजोया७ बंधेसे धबिक्म
करिबंधात्तलिकरिरविकपरिकरिच
दारेंनिद्युसरसचरपटपीयाछूटेतेल
नबूफेदीया८ जोतूरावलघरासीया
नांहसिकिनबांधेंटादीबारेग्रागुरुपे
विगईतबसोलेग्रांगालफाटी९पव
नकाथाग्रांगिलेबास पिसननकोईरे
ग्रावेपासिमनसूंमतोरापानबङूता चर
पटबोलेतेंग्रबधूता१० निरमैनिसंक
रहैततबेता मनमोनिबिबरजतईडी
जीतासितफटकमणिरपांनरताचर
पटकहैयेसिधमता११ साधेनेषग्ररु
मोडेनीदा सुपनेफरबादेनबिंदापे

चौताबारू

गणभूत चरपटबोलैतेअवधूतशि
गरकेदलबासअहनिसर
जोगअभासपलटेकायाछूटेरो

तोजनरहे

चरपटबि
त्रकेथ्यापूरणपूरणबिबरजतपंथ्याख

दांस्वाद [illegible]स्जत तूड सुणमै जोत
तमूं कै [illegible] मन नहीं मूं है मूंडे केस वे
स मुंडे क्या [illegible] पदेस मूंडे नहीं मन मर
का मांन बोलै चरपट तत गीयांन २
धंधा धंधीगी मुसता मुसुती बुधि चोर व
जारी आप गुरनि दे पैर वंदे लड वड
[illegible] ब्रह्मचारी २१ कोली पाई पत्र पाय
पाया पंथका मेवा री ता जांणं मरिया
[illegible] कहा करै गुरदेव २२ बैठे
जावैठै परजा बैठै जंगल हिरणी हम
कंचो बैठे राव ल बावल सगली नगरी
फिरणी २३ बांवै हाथक मंडल दाहिं
कंड माफो च[illegible] कर पूजो भैरूं तुम गुरु
आगे बैठे गोरख चरपट कहै यसव पा
खंड २४ टूका पाया मगर मचाया औ
र सहर का कुत्ता जोग जुगत्ति को मव
रिन जांणी मूंक मुकाय विगूता २५ गो
ईन छोडूं लेण न जांणं ता सूं मेरा चरपु
ट नांणं आई जो छोड दीये लेण न जा

ये।गोरषकहैसतगुरकीमायाविचारिवि
चारिषाईये।२६।बेसिनरहिबादोइनर
जावा।पंदनदेबापावा।ग्रातमाप्रमांणनि
न्मायाइबा।देषिबाजतीसतीकाभावा।।
२७।सतिच्लणगुरबायकथीर।निसच
लकायागहरगंभीर।जतसतनिरवरति
विमोबक्ती।बेचलचरपटतेग्रबधूत
२८।बूढाजोगीबेदरोगी।सरापीवपीछेघा
वी।रसायणीहोयकरिमागेभीष।तिसकी
मूड़ीमाया।२९।पुरषकुलषणेबेसांजा
रोकुलनलजावननीलजनारिहसणाजो
गीपदणीनारिचरपटकहैतेमाथैमा
र।३०।कानेंमुद्रागलैरुद्रारावे।फिरि
मागेनिषनीसाषी।चरपटकहैसुणोरे
लोड़ी।बरतनहैपणिजोगनहोई।३१।प
गांबड्तमाथेगेपागलमेबागामनमैं
केपिमायादेषिपसाराकरै।चरपट
कहैग्रणबूटीमरै।३२।बजरकछोटी
चावेपान।तीरथजायगावेदान।क

रैवैदगी॥ ग्यावैरोगी॥ चरपटकहैबिगुत
जोगी॥ ३३॥ जटाबिटंबनअंगेछारा॥ टोपाहे
कावड्डबिसतार॥ बिचत्रकंथाअच
नाचंगा॥ बटवासीवैबहुबिधिरंगा॥ ३४॥
मांनअभिमांननल्याद्दां फिरै॥ गुरुनषोजे
मूरषमरै॥ फंफकमंडलभगवांभेसा॥ प
थरपूजाबगउपदेसा॥ ३५॥ जीवहतेअ
रु पूजाकरै॥ जंत्रमंत्रलेमनमेंधरै॥ तीं
रथजायकरैअसनांन॥ बोलेचरपट
षंडतिग्यांन॥ ३६॥ न्हावैधोवैपषालेअं
गं॥ भीतरिमैला बाहरिचंगा॥ होमजाप
अग्यारी करै॥ पारब्रह्महिरदै नहीधरै॥
३७॥ दिनदिनहत्याकरैअपार॥ सतव
चासकफेलेभार॥ ब्रह्मरूपरग्यासंसा
र॥ चरपटकहै येधूतबिच्यार॥ ३८॥ म
द्यमांससंग्यावैचित॥ ग्यांनबिबरजंत
गावैगीत॥ ग्रहनिसनिंद्राभोगबिलास॥
चरपटबोलेकंधबिनास॥ ३९॥ दयाध
रमसतिचितनहीबसै॥ अतीतदेषि

चर ८ अकलिका
जिसका काम जिसी कों
छाजे और करे तो वीगा नाजे चर प
कनककां
नेय ॥४३॥ फोकट आवे फोक
लेफोकट पायफो

बिजपाधि धरा कथनी बकनी सब
वसके तो बंधो बाग्याच
हे पवनकी मेरि नूकत गंध
॥४४॥ नाके नाके पाके धरम
चामूंदर कूडा करमा चरपटक

रतन

रपावाहू
गोडा ऊपरि भावा तो जा आगे बा
जे तूरा चरपट कहे बिगोवा पूरा ॥४५
येकै पाथर ऊपर भावा इजा पाथर
ऊपर भावा चरपट कहे उनी का मे

रैबेदगी न्यावैरोगी॥चरपटकहैबिगुत
जोगी॥ ३३ जटाबिटंबनअंगेछार॥टोपांहै
कावकु बिसतार॥बिचत्रकंथाअरुच
नाचंगा॥बटवासीवेबकुबिधिरंगा॥३४॥
मांनअभिमांननलाह्यांफिरैगुरुनषोजै
अरथभरै॥कंकंकमंडलभगवांभेसा॥प
थरपूजागउपदेसा॥३५॥जीवहतैअ
रुपूजाकरै॥जंत्रमंत्रलेमनमेंधरै॥ती
रथजायकरैअसनांन॥बोलैचरपट
षंड निरबांन॥३६॥न्हावैधोवैपषालैअं
गं॥सील नरिमैला बाहरि चंगा॥होमजाप
अरुभारी करै॥पारब्रह्महिरदैनहींधरै॥
३७॥ दिनदिनहत्याकरैअपार॥सतव
पासकफैलेभार॥ब्रह्मरूपअपासंस
र॥ चरपटकहैयेधूतबिचार॥३८॥म
धुमांससंन्यावैचित॥ग्यांनबिबरजंत
गावैगीत॥अरुनिसनिंद्राभोगबिलास
चरपटबोलैकंधबिनास॥३९॥दयाध
रमसतिचितनहीबसै॥अतीतदेषि

रपट कहै अकलि का
जिसका काम जिसी कौं

वायाच
है पवन की कोरि नूकत गंध
गया चौरा ॥४३॥ नांफे को के पांके धरम
डा करमा चरपट क

को का ॥४४॥ ये को गोका ऊपरि पावा ॥ हू
आ गोडा ऊपरि भावा ॥ ती जा आगे बा
जै तूरा ॥ चरपट कहै बिगोवा पूरा ॥४५
ये कैं पाथर ऊपर मावा ॥ दुजा पाथर
ऊपर भावा ॥ चरपट कहै उनी का मे

बु॥ बा। के। ॥ थरबाकूं देवा। भई पुं जेपु
जिस। ॥ जगधा। टा॥ निजततरहा
बिरा॥ जौतिसरूपी संगही बाजे॥ ता
का करो बिचारं ४७ पृजिबा॥ तो॥
महेव चढाय बा॥ नादि पाती चरप
ह कहैं नहीं केनमरनो घटहीं तो॥
॥ ४८ ॥ ॥ ॥ नायकी
॥ ॥ ॥ नरथरी
॥ ॥ अहंकार १४
॥ पुस पषिण॥ नैरा॥ सतिसति
नाथ नरथरी॥ पिंकका बैरी जो॥
॥ सोव नड़ थी यारो वत॥ कव
॥ सत्रांणी॥ सराफ फंतमें॥
॥ सतिसति नाथत नरथरी॥ जित
॥ का सवदू नत्रांणी ॥ चढैं गेसोप
हु॥ गे महे। गेतत बिचारी॥ सा। कारतो
॥ जोगी॥ तरा का। जायगा नरथरी भि
॥ मरनेका संसा नहीं। नहीं जीव
॥ सतिसति नाथत नरथरी॥

ेतिही मोग बिनासा॥४॥निरगुण कं थ
कु बिसनारा कथूं निरंजन रहंत्रा
राम छे बिकरम बाबन बीरा कीए
चेरहि बाथी राष॥सुणिहो बिक्रम
ब्रह्मग्यानादेह बिबरजत धरिबाध्यां
नाउ देत्र्प्रसथ जहां कथ्यान जाय तहां
भरथरी रहे समाय॥६॥आगे बहनी पीछे
नांनां सुरति निरति बिरछन त्नध्यांना क
थूं निरंजन रहूं उदास॥जजकूं न छूटे त्र
सेपांसि॥७॥निपसत्र णी करिवा ग्रबिान
हीधन जो बनराज त्र्प्ररूरु बि॥कनक
कामणी मोग बिनासा॥कहे भरथरी
के दबिनास॥८॥साधबालो थेक पवन
त्र्प्रारंभ साधिबा॥छो डिबा सकल बि
कारां रहिबा तो सति सबद की छाया
सेयबा निरंजन निराकारं॥९॥मनपं
छी उडि पांणी बंधो पवनां ल्ने हो समा
ई॥सति सति भाषत भरथरी चोर न
संचरिहे जाई॥१०॥

नप्रमोक्षिबा॥ तिम्या ते ग्यांनबिचारं॥ पंच
सा बतिक रिवेक रस रहिबा॥ ऐसें उत
रै पारं॥ १॥ निरमल बुधी तिष्ट्वबा सा ॥
गली कुमेद न पा कुली॥ आसा॥ सहज सु
न्य मैं न या ब्रगासा॥ ऐजगै व नरथरी
है षिन मासा॥ २॥ मरीये परि मागीये न
ही कहै नरथरी तीया मनसा बाचा
रमनां॥ गुरगोरष की सीष॥ ३॥ मन बै
रागी धुंधुकार॥ पेट बैरागी कोधे मार
सो बैरागी कोधव्य पार॥ ग्यांन बैरागी
भवन सार॥ ४॥ देस फिरंता सदा बैरा
गी॥ सास त्र बैरागी पंडिता॥ बलकं
बिधि बैरागी॥ ग्यांन बैरागी नरथरी॥ ५॥
तन निरास मन बिच्यमाया मं मुंड
य बिगाडी काया॥ मन निरास सकल
स भोगी॥ कहें नरथुरी ते नर जोगी॥ ६॥
पंच षंड ज्यों धिक बैरं बंना॥ मन राव
मह मंत गाजे॥ बिषम लहरि कं इ फ
की जा गे॥ देषै कौंण फूंकै कौंण नाजै

जगायांकराजारोवेबेद
कामक्रूरे

बा

दसाकौंनाम्यश्एजि

बैरागकौंन
गछलाएंजसिमायातसिजाय
नुगताया हे हे लोगा
चारी निजतत छोडि लोहि वाम
चित्तलाया२श कांमकसाडे चित्त चिल
लसुराबिषेसन्यान न मथमासाबी
रजब्रह्महत्या हे हे लोकाडराचारी
ब्रसत्रीजोंदी

पबरत नजन ब्रह्महत्या पदे मदो च
मडी दमडी मम डी तीन बस्त कास्या
गी सत्तिसत्तिक है भरथरी बै गी रज
नारी चोरी जारी तीनूं वसत लागि
ब्रवसिकरि

सति मा ... यत नरथरी सोन्यायन्त
बैरागी ... नरथरीजी की
... चंद
जी ... गढवा कूं नां
देयत्रा कूं ... चंद ... जितपे
... जन्नकाड पन ... चिंतपद
गापी चंद पाया १ मनराजा मनपरजा मन
सबकलवकाबंध मनकूंचीनैगपांनगांमी मन
थेगोपी चंद २ पवन थिरं तां मन थिरे मन थि
रं तां बिंद बिंद थिर तां कंद थिरै भाषै गो
पी चंद ३ गजत जिबारे पता राज तजिबा
न जिबा ... सती घोडा सति भाषै मैणावंती
जग मैं ... घोडा ४ बैरागी जोगी बैराग
... मनमनसा करि बंदी ... गम ...
गो ... परिमिध का बासा तहां ... सासा त्रि ...
... ... मनपवन
... जीव सति सति भाषत नरथरी त
... ६ जोगी नरथरी नरम
... करि ...

दोयदोइ लकडीजुगतिसे बाली॥जोगी
नरहरीजी वेजुग चारी॥७॥अवधूजल
बिन कंवल कंवल बिन मधुकर॥कोय
लबोलेकंवल बिनो॥थलबिन मृघ मृघबि
नपारधी॥यकसर बेध्यापंचजनो॥८॥नव
द्वारजडि लेकपाटो दसवें द्वारसिवघरखा
टोंइकलबचंदो दोयलबभांनो बेध्या
मृघगगनिअसथांन बेध्यामृघ नछोडे
पासिनिराल नरहरी गोरषदासा॥९॥बी
जनहीअंकूरनहीरूपरेवआकारबी
नांही॥तदेअसतजहांकथ्यानजाय॥त
हांनरहरीरहेसमाय॥१०॥तरणसजाल
बनोलबासी॥ऊपरअमरस्थायाा॥नर
हरीमननिश्चलो॥घोरघोरवरसेइंद्के
राया॥११॥नगनस्यकाहनगनस्यरिष न
गनस्यजीवजलचरा॥अजहूंकाचेर
सहोयमूरखनरा॥नहीप्रसिधजोगेसु
१२॥धनिस्येपुत्रीकुलवंतीनारी॥धनिध
नितुवपतिव्रता॥धनिस्यदेसमदेबी॥ध

निगुरु नर हे मनुवा १३ राजा के घर राणी
होती ॥ हम अघर कहीये माई सा न छिपे
बारे रहती । म्यांन कहांते ल्याई ॥ १४ गुरु
मारे गोरख कहीये चरपट हे गुर माई
एक मछन्दर गुर गोरख दीया ॥ तेवे लिख्या
मैणावती माई १५ सोना सेरा णी बार
से कन्या दे सब गाल्या बकु जोगी बार
बारस हम कूं राज करण दे माता पीछे
कू गा जोगी १६ आज कालि करतां रे
पूता काया फेर ज्यों कलाल की भाठी
माता मेणावती ये तन जल बल ह्वे
समाटी १७ मन छि गा मंडवे सता पीहरे
मोहि भुलाई सुवरण देह तुमारा पिता
कौ रे पूता सो जलबलि को इनाहोई
१८ जोगन हो सो रे पूता जोगन हो सी न
सी कूसी जल्या न्यं न की काया सति भाष
त मेणावती भरमन भूलो माया १९
मरोगे मर जायेंगे फिर हो मम सां गोह
रा कुवर मतत ची ल्हो राजा गोपी चं

ग्जौंभतरो भोपार ॥२७॥ कौण हमकूं
नात ग्निला वे ॥ कौण पयाले पाया ॥ कहां
तुमेरे मेडी मंदरां कहां तूं मेणावती मा
य ॥२१॥ धरती रे सूना भाल ग्निला वे ॥ गंग प
याले पाय रू पवर मत रि मेडी मंदरा घ
र घर मैणावती माय ॥२२॥ माता कै उप
देस करि तजीया देस बंगाला ॥ गोपी चंद
गुर के सरणै ॥ भेटत नाग काला ॥२३॥
छोड्या राज पाट फिरि छांड्या भोग बि
लास गोपी चंद थोला गिरत जे ली ॥ छां
डि गया बन बासो ॥ राणी सकल लक म सु
त सह ली ॥ हाहाकार भई ला ॥ रावर ते रे
तुरी गज बंगला ॥ जब गोपी चंद कहां ग
ई ला ॥२४॥ जल धरी पाव हाथ दे को बी
गोपी चंद थ ना या ॥ मे ड महल पो लि जहां
भीतरि तहां अलख जगाया ॥ रही माय ब
हनि करि भिष्या मांगी पूस्या सींगी नाद
...सबद गै नै सिव रा णौ ॥ आय की
धा संग बा व ॥२५॥ इति श्री गोपी चंद जी

कोसेंदूरगा॥ ६॥ अथ कंफेरी पाव कं
सबदी लिख्यते॥ सगोनहीं संसारि॥
चितनहीं आवे बैरी॥ निरभै है ग्यत्रिं
का हरख हरखो कंफेरी॥ १॥ हरखो कंफेरी
हरख करि येक तंडी अोरन सुरा
बि छोडी जोमरणा मरन बिछोह मन
च मन बामेरा बीजो वें॥ पवनो बाडी
लगाई॥ चेतन राकला पहरै खेवा॥ मरे
अखेतन आई॥ २॥ जागो पसुवा जे मति
नं जहां न पाया भेवा॥ काल बि कालेव
करि मारे॥ सोवे कंफेरी देवा॥ ३॥ अकल
कंफेरी सांक तन बंध॥ बिन परचे जोग
बधां रोधंध॥ बिन परचे जोग न होसर
वला॥ सुस कूं च्यो क्यों निकसे चावल
४॥ घोसे चंद गरास्तृ सूर॥ गगन मंडमें
बाजे तूर॥ सत्त सबद कंफेरी कहे॥ पर
म हंस थिर का है न रहे॥ ५॥ कहां तें आ
वे कहां तें जां थवे कहां तें रैतिबिं
ट॥ पूछे कंफेरी सुनो नाग अरजुन॥

॥ डिप्रांनकहांसमाय॥७॥सहजै
नांसहजैजावनां॥सहजैसहजै
पवनां॥सहजैसहजैबहै बाई॥
जैसहजैचारिकाशी॥८॥इतिश्री कं
पावजी की सबदी संपूरण॥७॥
अथ मीडकीपावकीसबदीलिख्यते
पिंड चलंतासबकोइदेष्या॥प्राण चलं

आईरोगरषवसैगरुमधिवसैचेला॥नि
कुटीषेत्र जलटा मेला॥अनहदसबद
नई जलबाई॥गुरमुषजोतिनिरंजनपा
॥सो

लेगुरकूंदीजे॥अबडे मफलसंदीछि
वाईजुरामरनहीछीजे॥७॥सिधगडबड
छांडि रोअनहदप्यालाके लाबूंदसम
नीसमदमैंसोहीबूंदलेषेलापीर म

डारांपरलीयें।मनमेंरमतां।जतीसत
वंतराष्टनोंमैंथिररहतां।६।रातिगई
धरातिगई।बालकयेंप्रकारैहैकोईन
गरमैंसूरवां।बालककाउमनिवारै।७
इतिश्रीमीडकीपावकीसबदीसंपू
रण:।।८।।अथचोरंगीनाथजीकीस
बदीलिख्यते।।मूलसीचोरअवधू
लसीचो।।ओंतरवरमेल्हतडारहिम
चोरंगीमूलसींचीयां।मनमैंउतर्या
मार।१।मालीलो।भाईमालीलोसींचैस
हजकीयारी।उनमनिकलायकपु
पपायलै।आवागवननिवारी।२।मारिवा
तोमनमस्तमारिवा।लूटिवापवनभंडा
र।साधिवातोपंचतत्तसाधिबा।सेयबा
निरंजननिराकार।३।लागनिसेती।लग
निबालिबा।पांणीसेती।सोखिबापांणी
बाईसेती।बायफेरबा।४।कासमुष
बोलिबाबांणी।४।इतिश्रीचोरंगीना
थजीकीसबदीसंपूरण:।।५।।अथ

ल्ननाथजी की सबदी लिख्यते॥
कूं दिसजोगी सदा मलंगा बेलै बर
मणि संगा हसै खेलै राषै नावा राषै
गया गढ कारा वा१दस दरवाजा रा
षेवांण। भीतरि चोर न दे बेजांण। ष्पां
नक छोटी बांधे कस्यापांचूं इंद्री राषै
बसार। पवन पीया ला भरि बोकरै॥उ
नमनि ताली जुगजुग धरै। राम रमे रागे लष
एक है। जोगी होय सो अहनिस रहै॥३॥
अबधू सो जो अण नेजांणे। चलता बां
णगगनि कूं तांणे। पलटी बाइ बेधीया
नौ राख्यात म जोगी बसिकीया जोरा॥
ध पारधी चढीया रोज जुपाया। नाथे
बाल गुनाही। परचे डोरी गुरमुख जांणी
सु सैस्यं ग्रह राई॥४॥कल जुग मांही सत
जुग थाप्या। उलटी जोति चढाई। भेद वि
हो एंग नगसर हो सी॥ सति भाष नबाल
गुनाही॥५॥ बूढी सुरति बादी होसी॥ बा
लक डाहो सीबोलयाई। कलके तु टैं

परमे ... बकरिनमिन्नमा नाई ७
तुरत ... हवुकेगाई बहनिके
नाई ... के पवमाई ... नाव
... येनीनोच्च नपरे नाई ये
... ... नर का जाई ८ पहिलेपह
... जागे ... पहिरे नोगी नी
... जागे चोथपहिरेजा
... नस ... जागे
... बिंदने ... पजी
... बिंदने ... गये बिंदकोप
... बिंदकेराया १० प
... मुवा बिंदके ...
... काल ...
... बजरसिध ...
... तुम हो चतुर
... गुरका ...
... चा ...
... ११ ... मनरा जगन्न
... बिनाई बिमल बि
... ... घर सनकि आई
... ... गुनाही पहत
...

बासो हीं॥ तन मनितालीजो तिं
गाई॥ सिध धरि दीपग होई॥१४
पद्मासन अकोचन दे बा॥ दस बेहा
घडारकत्र कासे आया॥ सुणि
धूबाल गुनाही॥ ये ग्यान सि छिसो घित
हि बा पवन मधा॥ ई॥१५॥ पद पणे
वपद हूरि अबधू॥ पद लेपिंड प्रबा
आकार होय निराकार देषो॥ अनंद
सिधां की बाणी॥१६॥ नाम अ छे आ
र बिडं णां॥ सेत कं वल मन ला गा॥ त्रि
धि बिंद नील गिर निरालं बा॥ कां
ल दोइ भागा॥१७॥ बाहरि भीतरि प्रत
ष्य देष्या॥ सधि भेद हम लंधा॥ ब्रह्मावि
स्वर देवा॥ तिन कूं गुर करे सिधा॥१८॥ स
ह जननी त्रिभवन जननी॥ तीस कि
णे पाया॥ आरि कं वारी गतं कीना
ब्रह्मा बिस्न महादेव जिन जाया॥१९॥ ह
ते हम बहरा भई लों देषते जाचंधा॥
बनाघ्याई ध मारे॥ अमरपद हर

ने

लो मा ... आपणीअमहि ति: बोलं

प्रलो ... लोकहनकेलागी घरती

छुप ... चदनेलना तैजा गतैहैणिवि

लो ... पचहस्याचादाकसुषश्रो

नाले ... कलानपराई ग्यानविहलाणा

भाति पन. लौ येकअनेकसुषमाई

... ऐसा

... जैगवानी

मूकतमूकेमे

अविहके नामेहुयेसतगुरकीबा

ता ...जिसुनके हिसलेपसुवा आप

सुहिल लागी २ नान मन्य लपवनाग

णा परमहुनंसेप लिहीसुन्यसपि

... तुपचा लेहुन्यहैकेसा २ ती

अनुलेमे आपाक प्रा आपाकोगसै

नाहा सुन्यनागतेमरिमहिजाय श्र

नाउने नलाधांसिधा २ पिंकतेब्र

मेना... लमाइ तेनिकपिंकक्यानही

... अषंकनकलोकसमझे पि

ब्रह्ममेरुसमाई॥७॥पिरथीकेतत
महल्तरचिबा॥आपाकेनरिल्ले
रात्तेजतलुहमदीपगबा॥लिब
केघरल्लेबिचारा॥आत्मकासंत
बामैकरिबा॥मारिबामनराय
ंनासुंन्यसिंघासननमंतोमडली
बैसिबाप्रांणपुरसदिवांण॥दीजु
रामरतिकालसबव्यापेकांमबस
तसरीर॥लषमणकहेबाबाजेपा
ला तुमकौंणआरंभतेथीरोबाब्र
ह्मअगनिवजरअगसीफबांकेइ
कदेवसरीरंजुरामृतिपवनकान
षिण॥जोगआरंभअसथीरो॥२॥दसल
हरिगगनिअसथांन॥सोधित्तीयाजल
माल्ला॥षटचक्रजोगधेरिबेवा॥नवं
नांजिगयाजेमकाल्ला॥४॥इतिश्री
पालजीकीसबदीसंपूरण॥१४॥अथ
श्रीजतीहणवंतकीसबदीलिख्य
बैताआगेसुरताहोबाधींगदेव

मसकां मे सिधकैसाधिकहोवा सति
माथुन हुणा वतबीरं १ केदमहेप
हि गुवा भविगुण भाटनगारी
राजन नेराजामुवा रूपदेश तीन
री रान करना सुरतामरिमरिजासीर
लिन हसीधरं सारकाचणांकोई
रनाचाले सतिमाथतहणवतबीरं
३ नपितालोकषिगयेसुरनासुणिरे
निरमलन हैगे धीरं बिरलाविरुध
णार कन रैणा सतिमाथनहणवत
बीरं ४ चं चरनष्या तेन्ह झनडुवा
गुरकैसबदांधीरं परमजोतिझाका
नजलाई सतिमाथनहणवतबीरं काय
५ मनरधजपूरे दोहणतबीरं कायजाका
तेगदि बार ड सबिनीरथजाका
वरणां सोदेवतुम्हारे झंतहकरण
हीरणवत केहैमनझमधिर रणां
माहरि भट केन मरणां पापं
धतेतेनवनाहूटे ननछीजेतत

पा।देहीतें कोइ हरिबताबै।ति
।सूं हूं माय।।६।।देहअंदर करो ७
।धू देहअंदर करो।।दिसंतरांतन
जी।जो।हणवंत कहै देहअंतरकर
तो।।कारज संगत्तासी कै।।ए चतैमी
न जल पोजन दरसै गगनि बिहंग
मर ह्रीया।।सिध का मारग कोइ साधू
जाणै।।और सब दरस [illegible] णब हीया
१०।।करत मकरता रहै बीचही।।बि
करतूति पढ़ंता।।बिधनां रची बिध
है जैता।।घुरबायक अवधूता।।११
इति श्री हणवंतजी की सबदी सं
पूरण।।१२।।अथ म्हादेवजी की
सबदी लिरवते।।गगनि मंनछा कि
लै।।निबिधि डमका टिलै।।था
बैलं पंचभूतां।।हरीरस पागपले
नम मोभागतो।।भावत सिव अ
धूतां।।१।।सिवसक्ति गुरपाय लै मां
णिक ला भलो।।रो कि बहद्ध था ॥

सा

मसन्ता सिधकैसाखिकहोवा सति
लोकनदना सनबीरं १ बेदबदेप
ह्रि सुवा घरिसुण भाटनगारी
सनलरंनैलाजामुवा रूपदेसतीन
री कनातुरतामरिमरिजासी
मीसनमीरारं साकाचणकोई
वालेसातिनामसनहणवनबीरं
लितालोकछिगयेसुरलसुणिरे
लरहैगयीरं बिरलाबिछ
र्या रैगा सतिनामसनहणव
रीरं ५ चवनखातेनकसनकवा
सुदेमसबोयीरं परमजोतिप्राक
माई सतिनामसनहणवनबीर
सरसूजपूछे दोहणनबीरं काय
गोहि मारं अडसविनीरथजाक
को सोहेवपुम्लारेअनहकरण
उलनकेहैमनअसथिरं रण
ह नट कन मरणांउप
वैतोपवनाहूटे ननबीजेत

सत्रहै

यादेहीतेंकोइहरिवलावे।तिस
।मंकूंमाया।६।देहअंदरकरोरेअं
।धूदेहअंदरकरो।दिसंतरांतन
७।जो।हणवंतकहेदेहअंतरकर

थ्या।सिधकामारगकोइसाधू
णो।श्रोरसवदरस..णवहीया

ता।विधनारचीविध
है।जेता।धरवायकअवधूता।११
हणवंतजीकीसबदीसं
१४१।अथम्हादेवजीकी
।गगनि[illegible]नछाकि
बेधिडमकाटिरलै।छाकि
हरीरसपासलेअ
..तसिवअ[illegible]
धूतां।१।सिवसकिगुरद[illegible]
णिकलाभजे[illegible]

…ही पहलें श्रवण में १४ ॥ बे

…गनें गान श्रपांनी जोगी

…श्रवण राजा कीन कीजे से

…लना यन श्री महादेव १६ ॥

…ग्रन्थ … च कीजे रम

…तीलत पारबती। ने निर

…नन मैं जो गौनी। बाक

…धांग … धरम सिव

…गुर कीगते तो लैन कहो

…सुनन १८ पकपइ हुं तपन

…श्रवदन नांक कें बाद्दलिवाद

…तनाच पांइ लंतथापिपांक

…॥

…नलनरीनल श्रुगनि

…कनन श्रुगनि नलैन

…गी ताकार पारबती जग

…रा ॥ … छकं घड़ी

…नरी नाग … त्रन नथैते

।ली॥अलै हैपवैन गगनिसमाई
।रण।गर अगोपसुवामरिजाई।र
।द्रष्टीबुगोधोनी॥बालअवस्थ एभुज
।हारी।सोअवधूतबैरागीपारबती॥ह
भेषधारी।३।धनजोनलकीकरैनअ
।चेतनराषेकोमणिपासि।नादबिंद

रूंषबरषगिरकेदलबास।निरगुण
थारहैभदास।

जुगतिनिरंतररहण

।रहेभदास।सतगुरजाबदलेहि

लिश्रीपारबतीकोसबदीसंपूरण।
४४॥अथगोरषनाथजीकोसबदी
॥बसतीनसुन्यसुन्यनबसीअ

बोलैनांवधरोगेकेसा।१।अस्थ

षबा देषि बिचारिबा॥ अदिष्ट रषिबा चं
या॥ पाताल की गंगा ब्रह मंड चढाईब
तहां बिमल बिमल जल पीया॥२॥ इहां
हीं अछै छाइ उहां ही अलोपा॥ इहां ही रचि
लै तीन त्रिलोका॥ अछै छा संग मरहे जुवा
ता कारणि अनंत सिधजुवा॥३॥ बेद क
तेब बषांणै बांणी सब ढां कीतलि अ
णी॥ गगनि सिषर चढि शबद प्रकाली
ना हि बूझि लै अलष निरबांनी॥४॥ अल
लष लिनांनी दोइ दीपक रचिलै ती
न भवन तत जोती॥ तास बिचारत त्रिभ
वन सूझै॥ चुणि लो मांणिक मोती॥५॥
बेद सास्त्र कतेब कुरांण पुस्तक लि
षान जाइ॥ ते पद जांणत बिरला जोगी
और दुनी सब धंधै लाया॥६॥ हसिबा षेल
बा रहिबा रंग॥ कांम क्रोध का करै न संग
हसै षेलै गावै गीत॥ दिढ करि राषै अप
णां चित॥७॥ हसिबा षेलिबा धरिबा ध्यां
न॥ अहनिस कथिलै ब्रह्म गिनांन॥ ह

सो षेलकरै मनमंगा॥ निश्चल रहै साध
का संगा॥७॥ मनमुष जाता गुरमुष लेह
लोही मांस अग्नि मुष देह॥ मात पिता
की मेटै धात॥ ऐसा होय बुलावै नाथ॥
८॥ नाथ कहंता सब जग नाथ्या॥ गोरष
कहंता गोई॥ कलमां का गुर महमद हो
ता पहली मुवा सोई॥९॥ महमद महमद क
हता काजी॥ महमद विषम विचारां॥ मह
मद हाथि करद जो होती॥ लोहं गढी न
सारंग॥१०॥ सबदै ही मारी सबदै ही जाइ॥
ऐसा महमद पीरा॥ ताके भरम न भू
काजी॥ सो बल नहीं सरीरा॥११॥ सारंग
रंग गहरंगनी रांगा॥ निज ल्लीया ना
माणिक पाया फेरलु काया॥ फेवा बाद
बिबादं॥१२॥ कोई बादी कोई बिबादी॥
जोगी कू बाद न करणा॥ अड़सठि तीर
थ समद समावै॥ जोगी कूं गुरमुष जरणां
॥१३॥ उतपति ही कूं जरणां जोगी॥ अ
पीर मुसलमानी तैरहैं चीन्हौ काजी
ही

मुक्ता॥ वू सा बिसम महेस्वर जांणी॥१४॥म
न्सा सबद मीगा या दं॥ नह चै राजा भर
थरी॥ पर चै गोपी चंद॥ नह चै र वे भयो
निरं द॥ परचै परमानंद॥१६॥ अह निस
मन लै उनमनि रहै॥ गम की छांडि अ
गम की कहै॥ छांसा छाडै रहै निरासा॥ ब्रह्म
कहै हूं ता को दासा॥१७॥ अरधै जाता उ
रधै धरै॥ कांम दगध जे जोगी करै॥ तजै अ
लिंग कांटै माया॥ ताका बिसनपद पाया॥ पांचौ
या॥१८॥ अजपा जाप सुनि मैं धरै॥ पांचौ
इंद्री निग्रह करै॥ ब्रह्म अगनि मैं होमै का
या॥ तास म्हादेव बंदै पाया॥१९॥ धन जो
बन की करै न आसा॥ चित न राषै कां
मणि पासा॥ नाद बिंद जाकै घट जरै॥ ता
की सेव पारबती करै॥२०॥ बाल जोबन
जे नर जती॥ काल दुकाल ते नर सती
फुरति भोजन अलप अहारी॥ गोरष क
हे सो काया हमारी॥२१॥ पूरण पेट तब
ही है सती॥ जुवती मुये कहावै जती॥४

न बिनां सब रागी त्यागी॥ नाथ कहे सो ब

डभागी॥२३॥ शब्दहि ताला शब्दही

कूंची॥ शब्दही शब्द जगाया॥ शब्दहि शब्द प

रच्या हूवा॥ शब्दहि शब्द समाया॥२४॥

ग्रुबें दोरे अबधू सबें दो॥ अबदे सीक

तकाया॥ निरंकार के विरा जाराजन जि

परजा अंतन पाया॥२५॥ शब्द बंदोरे अ

बधू शब्द बंदो॥ थांनमांन सब धंधा॥ बं

दत गोरष आतम बिचारी॥ ज्यों जल म

धे चंदा॥२६॥ पंथ बिन चलिबा अगनि

बिन जलिबा अनिल त्रिषा विन पीया।

सुसम बेद श्री गोरष कथिया॥ सूक्ष्म ले

पंडित पढीया॥२७॥ गगन मंडल में ऊ

र मुष कुवा॥ तहां अमृत का बासा॥ सु

गरा होय सो भरि भरि पीवे॥ नुगरा जा

य पिया सा॥२८॥ गगन गोसत तेजन

सो षत॥ पवनं येलंत बाइ॥ सही भोरि

न भाजंतन दिकल दूबंत॥ कहंसो

पतियाइ॥२९॥ बास सहित सबज

ला॥ब्रह्मा बिस्नु महेस्वर जोगी॥१५॥
सासबद सो गाया॥ नहचै राजा भर
थरी॥ परचै गोपीचंद॥ नहचै रवै मयो
निरंद॥ परचै परमानंद॥१६॥ अहनिस
मन लै उनमनि रहै॥ गम की छांडि अ
गम की कहै॥ आसा छाडै रहै निरासा॥ ब्रह्म
कहै हूं ता को दासा॥१७॥ अरधै जात उ
रधै धरै॥ कांम दगध जे जोगी करै॥ तजै अ
लिंगन काटै माया॥ ता का बिसनु पषालै पा
या॥१८॥ अजपा जाप सुंनि मैं धरै॥ पांचौं
इंद्री निग्रह करै॥ ब्रह्म अगनि मैं होमैं का
या॥ तास महादेव बंदै पाया॥१९॥ धन जो
बन की करै न आसा॥ चित न राषै कां
मणि पासा॥ नाद बिंद जाकै घट जरै॥ ता
की सेव पारबती करै॥२०॥ बालै जोबन
जे नर जती॥ काल दुकाल ते नर सती॥
फुरति भोजन अलप अहारी॥ गोरष क
है सो काया हमारी॥२१॥ घूरण पेट तव
ती है सती॥ जुवती मुषे कहावै जती॥४

न बिनां सब रागी त्यागी॥ नाथ कहै सो ब
ड भागी॥२२॥ग्यारहि ताला॥ग्यारही
कुंची॥ग्यारही॥ग्यारह नगाया॥ग्यारहि॥ग्यारहप
रच्या कुंवा॥ग्यारहि॥ग्यारहसमाया॥२३॥
रे अवधूत यन दो॥ग्यारदेसी क
वै को हिराजा॥राजनजि
का
त
बं
मवेदश्री गोरष कथिया॥
मैत्र
रमुष कुवा॥ नहां अमृत का बासा॥सु
गरा होय सो भरि भरि पीवे॥सुगरा जा
य पियासा॥२७॥गगनि नगो सत तेजन
सो षत॥ पवनै पेलंत बाड॥सही भोरि
न भाजंतत दिकन दूबंता॥ कहंतो को
पतियाइ॥२८॥बास सहित सब जग

बास्या॥बादसहितसबमीत॥सांच
होतोसतगुरमांनै॥रूपसहितसबद
२०॥मरिबेजोगीमरणहैमीत॥जिस
रणैमैंगोरषदीठ॥जीवतमरिबा
रिकैजीवै॥स्वामीम्हारसनरिनरिपीवै
२०॥षाइबापीयबाधापिबानांहीच
लिबाधाइबाथाकिबानांही॥लोटिं
पोटिबासोइबानांही॥हसिबाषेलबं
बोलिबानांही॥२१॥हबकनबोलिबा
हबकनचालिबा धीरैधरिबापाव॥
गरबनकरिबासहजैरहिबाषैनाथ
तगोरषराव॥२२॥भरियातेथीरफल
कतआधा॥सिधसौमिल्याऊरलाधा
नाथकहैफकीरपरवाणी॥पारिअपु
रषदिष्टसुषबांणी॥२३॥नाथकहैसुणै
रेअवधू॥दिढकरिराषोचीया॥कांम
क्रोधअहंकारनिरवारो॥ताहिसंत
कीया॥२४॥स्वांमीबनषंडजांतोषुध्या
व्यापैनगरीरहूंतोमाया॥नरिनरिषांउं

निंद्राब्यापै।क्यौंसीझंतजलाबिंबकी
काया॥२४॥सूलाधापनबाइबा भूषन
रहिबा।इनबिधिब्रह्मअग्निकासेवा।ह
ठकरिबापड्यानरहिबा॥बोलैगोर
षदेवा॥२५॥थोड़ाबोलैथोड़ाबाइ।ता
घटपवनरहैसमाइ।गगनिमंडलमैंअ
नहदबाजै।पिंडपडै।तोसतगुरलाजै
२६।अहारतैंनिंद्रामोड़ै।कबहुनहो
बारोगी।नागाबंगबनासैंती।यौंकोइबि
रलाजोगी॥२७॥अहारकूंतोडिबापवन
कूंपलटिबा।कबहूनहीबिरोगी।छठे
महीनैंकाथापलटै।नागाबंगबनासप
तीजोगी॥२८॥देवकलातोसंजमरहिबा
भूतकलाँतैंअहार।मनपवनालेउन
मनरहिबा।तेजोगीततसार।३०।निंद्रा
केघरकालजंजाल।अहारकेघरचो
र।मिथुनकेघरजुराबियापै।अरधउ
रधलेजोर।३१।घटघटगोरषबोवैक्या
रो।जोनिपजैसोहोयहमारो।घटघट

रषकहैकहांणी।।काचैभांडैरहनपाणं
धर।।स्त्रतिस्त्रहारइंद्रीबलकरै।।नासै
ग्यांनमिथुनचितधरै।।व्यापैनिंद्राकंपै
काल।।ताकैहिरदैसदाजंजाल।।४३
स्त्रतिस्त्रहारनिंद्राबैरी।।काल।।कैसै
राषिबा।।गुरकामंफारा।।स्त्रहारतोडै।।निंद्र
मोडै।।सिवसक्तीलेदिढकरिजोडै।।४
धा।।सूरजषाइबा।।चंद्रसोइ।।त्रुबैनपीबा
पांणी।।जीवता।।कैतलैमुवा।।बिछावैयो
कहैगोरषबांणी।।४५।।जीवतबिछावैमु
वाझोटै।।कबहूंनहोवैरोगी।।बरसैदि
नकाँयापलटै।।यूंकोइबिरलाजोगी।।४
दी।।जलकेसंजमस्त्रटलस्त्रकासं।।स्त्र
कसंजमजोतिपरकासं।।पवनकेसंज
मलाबंधा।।बिंदकैसंजमथिरहोयकंध
४७।।स्त्रनकामासस्त्रलीलनकाहाडां।।त
तकाबंधचाल......ताचाडां।।फेरबाब
ईसाधैजोगं।।बंदतगोरषस्त्रषैयभोगं
धर्मनहीपडै।।त्रिभणीनहीपडै।।कंथते

बैहीजाणैअनहदकाबंधरेतअस
रैतआगैथैनछूटैाजोगीकहैताहीरा
नफूटैाधणाआसंणदिढअहारदिढा
जोनिद्रादिढहोइ।गोरषकहैसुणौरेअ
अधूमरैनछूटाहोइ।५।जबलगपे
टैपुविनहीहटैाजबलारकिरेत
नहीहटैाचितचेतन्यकुरमनिकोदै
जोगीकहैताही यानफूटैा।४।बडे
बडेकूलंहटैपेटा।नांहीपूतागुरसूंमे
टा।षडीमडीकायानिरमलनेता।त
बजांणिबागुरुकाहैताधूराभोटेपे
टपिंडअसथूला।जोगजुगतिनजांणैअ
लंबायामानकुस्नायापेला।नांहीपूता
गुरसूंमेटा।धूराम्हरांकापंथहारयांका
बिसरांमसुरतालेउबिचारी।अण
परचैपिंडनेब्याधाइ।अंतकालहो
यः।भारीमिलौंसतगुरदानीदिष्या।
उतमकरणीमांगीभिष्या।।नाथकहै
हैतुमसुणौरेबाला।तनजायसूटै

ग्न हद ताला॥ ५५॥ निद्रा हमारी कोमवै
न बोलौ ये संसार हमारी बाड़ी॥ गुर परस
द निद्रा पायबा॥ आदि अंत नहीं भारी॥
ई॥ पावै बक्रत चलावै छोटा॥ जोगी नां वे
पंथ का पोटा॥ ग्रलपग्रहारी पात्र पूरा॥
थक हैं पंथ का सूरा॥ ५७॥ स्वांग का पूरा
न का करा पेट का टट्या ड़ा॥ भगति का स
बंदत गोरष नाथ या जोगा॥ करि पावंड रि
जा या लोग॥ ५८॥ पेट की अग्नि बरजत रिष
की अग्नि बारी॥ ग्यांन गुरु का आगे होत पु
नि बिरले अवधू पाया॥ ५९॥ बहु लये कै
दी जे भांड़े कहै गरु जी यह बिधि मांडे
पाये मरि ये अणपाये॥ गोरष कहै स्तात
न मत्ति रिये॥ ६०॥ दाबे न भरि बा पाली न
र पिबा॥ जांणि बा अग्नि का ... चा॥ बूढ़ा
तें ... गुर षीणी हो यगी सति भाषत गोर
देवा॥ ६१॥ जिभ्या स्वारथ तन न षोजे॥ हैल
करै गुर बाचा॥ अग्नि बिकुणं बंध न ला
हति कै गया रस का चा॥ ६२॥ मरि मरि

इंद्री निग्रह जोग नहीं पूजा वडीन
ग्रासंजमरहि जी सो वेन जागे॥ ना इ निंद्रा
स्थिरकाल क्रम भागे॥ ६३॥ इंद्री काल
डाजि म्याका कुह डा गोरष कहै तेपर
तषि चुहडा काछ का जती मुख इमृत
बांणी॥ सो सति गुरषाजतम जांणी॥ ६४॥
मन चंगा तो कठोटी गंगा॥ आथा पेंना तो
जगति चेला॥ नाथ कहे दयाते बन्धाई
गया दोषत बमुकति पाई॥ ६५॥ करीया
हीन सब इका सुराका रज सिधि न परे
पूरा॥ सी सी साधि बसा या ब रा॥ ना थ क
हि पूना बोटा न मारा॥ ६६॥ सीस ये साधि
बसाई येब रा॥ डारी ये बोटा जी जे ब रा
मारे ही रत बा टु फूरं तमी हे उपजे रो गो गो
रष कहे सुणो रे अ बधू॥ अन पांणी
गा॥ ६७॥ आलस निंद्रा दूजे भाई॥ तर द
पांन प्रांन समाई॥ गोरष कहे अध्या
इ॥ साधत जोगी देह बिदेह॥ ६८॥ च
रीकर तां असरी रा ठो॥ अ

अनहद नाल्ना ॥५५॥ मिल्या हमारी कों
न बोलीये संसार हमारी बाड़ी ॥ गुर पर
द मिल्या पायबा आदि अंत नहीं भारी ॥
६ ॥ पावे बकल चलावे छोटा ॥ जोगी नांव
पंथ का पोटा ॥ अलप अहारी पात्र पूरा न
थ कहे पंथ का सूरा ॥५७॥ स्वांग का पूरा प
न का कूरा पेट का टट्या डाभा तिका सूर
बंदत गोरष नाथ या जोग ॥ करि पाखंड रि
झाया लोग ॥५८॥ पेट की अग्नि बरजत रि
की अग्नि बार ॥ ज्ञान गुरु का आगे होत पु
नि बिरले अबधू पाया ॥५९॥ बहु लैये कै
दी जे छांडे कहो गुरु जी यह बिधि मांडे
पाये मरिये अण पाये गोरष कहै पूता सं
जम तिरिये ॥६०॥ दाबि न मरिबा पाली न
र सिबा जांणिबा अग्नि का भेवा बूढा ह
ते [illegible] गुर षी णी होय गी सति भाषत गोरष
देव ॥६१॥ जिभ्या स्वारथ तन न षोजे हे लो
करे गुर बाचा अग्नि बिकरण बंधन लागे
[illegible] रस का चा ॥६२॥ भरि भरि

बाई भोग करंतां जो ब्यंद राषै गोरष
गुर नाई॥ ६० मन मुषि ब्यंद निमु
ष पारा जो राषै सो गुरु हमारा गोरष
कहै सुणौरे ऽवधू नाद ब्यंद ले ऽवहू
निस सूता ७०॥ ईस्वर हमारा चेला कहि
ये मछिंद्र कहीये नाती॥ निगुरी प्रथीम
रि मरि जाती॥ हम तलहटि सिंह्र कशि
षी॥ ७१॥ सांच का सबद सौं नां की रेष॥
निगुरा कै चाले सुगुरा कै उपदेस ना
षक है सतिन भरांती॥ जाति गुमां णैं
लागे भांती॥ ७२॥ रोस गोला रुषा रोग
भूषा मछिंद्र का भोला जोगी॥ गोरष कहै
सरट सोगी॥ इन मैं निपजे नांही जोगी॥
७३॥ घट घट गोरष बाबै कवारी॥ सो निपजै
सो होय हमारी॥ घट घट गोरष क
हां णी॥ का चै भांडै रहै न पांणी॥ ७४॥
घट गोरष रहै न रूता॥ कोघट
घट सूता॥ घट घट गोरष घट घट मे
आपा पर चै गुर मुष चीन्हा॥ ७५॥ कै

आवेकेताजाईकेतामागेकेताआइ
केतारूपबिरषतत्तिरहै॥गोरषअ
णनैकासुषस्तहै॥७३॥बूकरीतेमूल
णानहीं॥नाथोजनअरूपा नीमहीं॥
थोजीजीवेबादीमेरो॥अहंकारीकेपिंड
पड़े॥ऊषपरष्टमर्येछांडिये॥केसभेस
अरुदेसातजिबासतगुरके अमरै
अवधूपंथषरा॥७४॥सा॥७५॥जोगीहोइ
पणनिंद्राकषे॥मदमांसअरुभांगि
नषेइकोत्रसेपुरषानरकांजाई॥स
त्तिसतिभाषैगोरषराई॥७६॥मांसभ
षैतहांदयाधरमकोनास॥मदपीवेत
हांप्राणनिरास॥भांगभषैतज्ञांनध्यान
षोवतजमदुवारेतेप्राणीरोवत॥७७॥
स्तकेकंठभूषसंतापै॥देहबिसरज
ननिंद्राव्यापै॥बुधिबिनाबिकलहोइ
जाइ॥तातेंगोरषमांगिनषाइ॥७८॥न्म

ह॥ तो तें बिजी यां सिधन माइ ॥८२॥ पाव
डीयां पग पिसलै अवधू लोही चीजै
काया नाग मैं नी दुराधारी येतजे
मान पाया ॥८३॥ दुराधारी परघर चित
नागा लकडी चाहे निति मूनी करै भि
त्रकी आसा ॥ बिनाग दंडी नहि बिसवा
सा ॥८४॥ दछण जोगी संगा चंगा ॥ पूरब
जोगी बांदी ॥ पछिम जोगी बाला भोला
सिध जोगी उत्रादी ॥८५॥ पूरब दिसा ब्या
धि का रोग ॥ पछिम दिसा मृति का सोग
दछण दिस माया का भोग ॥ उतर दि
सा सिध का जोग ॥८६॥ जो भी सो जो मन
को जोवे बिना बिलायत राज भोगवे
कनक कांमणी त्यागे दोई सो जोगेश्व
र निरभै होई ॥८७॥ सन्यासी है एक
रम सब नासे गगन मंडल मैं मांडै ग्रा
सें ॥ अनहद सुमरन उनमन रहे ॥
सो सन्यासी आगम की कहे ॥८८॥ गोर
षनाथ जती सबदी साखी दूछ लिखतां
का गुटका मैं छै सो जांणो गा

धुं॥ अथ ग्रंथ ग्यानीजी को संवदी लिख्य
ते॥ अदे षदे षै सबद विचारे॥ आपत्ति
रे और नके सारे॥ पषापषी कां पषन
हि काले॥ लोक वेद सूं निलगा चाले १
आतमतत्त का करे विचार॥ कहै ग्या
नी सो गुरु हमारा॥ अंजन मां हि निरंज
न ध्यावे॥ अत्र गति सूं लो मन ल्यावे॥ सत
गुर सबद सूं ना ग्यार है॥ काम क्रोध सों दा
हन दहै॥ आसा त्रस्ना रहैत जिन्मारा॥ क
है ग्यानी सो गुरु हमारा॥ २॥ एक ायेकी अ
रब कु संगी॥ सदा उदासी अरु बकरंगी॥
ग्रह मे रह नाबन षंक बासा॥ अह कु व्या
धि की काटै फासा॥ देहा रनी डानी डालै
दू रिजं नग्यानी का सत गुर पूरा॥ ३॥ ममता
जा ले न सम चेहा वे॥ दा एअ नाहद सी
गी बजावै॥ मन मनसा की मु डा करे॥ का
म क्रोध रोग अजरा जरे॥ इं गला पिंगला
सुषमन निभोगी॥ कहै ग्यानी सो सा चा १
जोगी॥ ४॥ जंत्र मंत्र नां ही करे॥ ना टिकचे

टकसबपरिहै॥ श्रोनदिसानहींलागेज्ञा
न्हैमनपवनांलेसहजसमाई सोजोगी
निरभैरेभाई॥ जाकेग्यांनीलागेपाई॥
५॥ नागासोईनिरंजनध्यावै॥ अंत्रगति
संमेलमिलावै॥ त्रिकुटीऊपरआस
नकरै धूंणीपांणीसहजेबरै भोजन
बसतीनांहीजाई कहैग्यांनीसोनाग
भाई॥ ६॥ मौनीसोहैमगनहोयरहैस
बदकहैसोपूरनगहै॥ उनमनिताली
हैलगाई ग्रिहछांडिबाहरिनहींजाई
१०॥ सबदअनाहदत्यावैधूंनी॥ कहैग्यां
नीसोसांचामौनी॥ पांचूंइंद्रीकरैपरहा
रा॥ सतसबदगुरबचनउचारा॥११॥ नि
रमलरहैतजेअहंकारा॥ सीलसंतोष
गहैमतसारा॥ येकांयेकीरहैउदासी॥
कहैग्यांनीसोसतिसंन्यासी॥१२॥ बैरागी
सोत्यागैभ्रम॥ मनकेकाटैसबहीकै
म॥ सैषैसाषिकाकरैननिंदा॥ आसापा
सिपडैनहिंफंद॥१३॥ धर्याग्यानसेरहै

त्यागी॥कहैरग्पांनीसोसत बैरागी।सेवग
सोही सेवा भाई।सेवा छांडि अंतनहि जा
ई।१५।नातीसीनातीक सनीस है।सेवा छां
डि औरनहीलहै।सतगुरकी नहीमै टै
बाचा॥कहैरग्पांनीसो सेवग सांचा।१६।ग्रि
हीसोही ग्रिह बनकरै।हरखसोगसब
हीपरिहरै।नावोनिंदोबिंदोकोई।वि
रभावमननमैनहीहोई।१६।पखापखी
का भावन धरै।कहैरग्पांनीगुरसेवा क
रै।स्वांमी सोईसबघटसमता।सबघट
दैषैयेकहीरमता।१७।मानअपमान
व्यापैनांही।कोईभलीबुरीसबल्यै।
समोई।औरगतिकाअंतरजांमी।कहै
रग्पांनीसोसाचास्वांमी।१८।ब्राह्मसोही
चीन्हैब्रह्म।गगनिगुफामैरोपैयेनां।सुं
न्यमंडलमैधरैजध्यांन।सोहीब्रह्मणब्र
ह्मसमांन।१९॥
देहककासबत्यागैरग्पां

घटबूरि।२०। मुसलमांनमुसावेश्रापप
तसबूरीकत्तमोपाक। षडीनछेडै
पडीनषाइ। सोमुसल्लमांनभिस्तकों
जाय।२१। सेषसबूरीमांहीरहै। श्रापा
तजिकरिसाहिबलहै। सबघटसाहि
बएकबिचारै। दूजाकाफरश्रोरनहिम
रै।२२। घटमेंमकामदीनांदेषाकहै
ग्यांनीसोसांचासेषा। मुल्लासोहीमनकी
जांनै। बाहरिजातीभीतरिश्रांनै।२३। का
जीसोहीकुरांनबषांनै। येकश्रलाबिन
नहीं जांनै। श्रापातजिकरिषोजैदिल
घटमेंजोरिकरैबिसमल।२४। जंगम
सोहीजोश्रजराजरै। श्रापातजिजीवत
हीमरै। जंदासोईदमकीजानै। दमदम
मनहीमेंश्रांनै।२५। सोफीसोहीब्रह्मबि
चारै। ब्रह्मश्रगनिश्रंगपरिजारै। सबद
परिषकीपारिषाहोई। श्रैसाहोइसोग
धरैसोई।२६। कहै पानीयोनिरमलग्यांन
मिटगयोतिमरउदैभयोभांन॥ दोहा॥

टकबीजकीमांफमैं।देखिनयामन
राजनग्यांनीकासंसामिद्या।सतगु
स्माकबीरा२७।सबदहमाराग्यांनह
रासंतचलैवैबाटा।कोईसहंस्रमैंक
रैग्यांनीओघटघाटा।२८।इतिश्री
नीजीकीसबदीसंपूरण:॥१६॥अ
थअतामछिजोगगोरषनाथ
लिख्यते।

तेहैसोलाप्रकारकेराजजोगहैं।तिनके
नांमकहतेहैं।क्रियाजोग१।गिनांनजोग२
वरचाजोग३।हठजोग४।करमजोग५
लैजोग६।ध्यांनजोग७।मंत्रजोग८।लछि
जोग ९ बासनांजोग१०।सिवजोग११।ब्र
अतीतजोग१३।राजजोग१४
धजोग१५।क्रियामुक्तिजोग१६।सर
बपिंकसिधायेकोंजयकरेतो।कितोन
करजारंभैमनसदाथें मै।कुंचनुकर

वंती॥ क्रियाजोगसो नवंती॥ षिमां विवेक वैराग॥ सत्यसंतोषी निसप्रेही॥ येतात्व समाज्ञाता माया मिमता॥ हंस्यामद मछर॥ कांमक्रोधलोभमोह॥ नयलाजराग द्वेष॥ जिसयेतानबंधते क्रीयाजोगसो उच्यते॥१॥ येताग्यांनजोगके लछन कहते है॥ अरथवनासपती परवत॥ प्रथीअस्तिदस्थावरजंगम॥ संसारमनुषहसती घोडा॥ पंषी आदि सर्व भूतसंसार॥ आपणी अंश ब्यादेषीये सोइ ष्टिक है॥ नहीं दीषे सो अइष्ट कहीये॥ ऐसे संसारके आपणी आतमा कामे दृष्टि येक करि देषीये॥ येगिनाग्यान जोगसाधंते॥ कालसरीरकूं जत्न निनां करि सकै॥२॥ इंतालछिनचरचा जोगके भेद कहते है॥ निराकार अचल भेद ऐसी आतमारूपमांनीये॥ मननिश्चलकरि राषीये॥ मन निश्चल करि राषे सरीर॥ ज्यो पवन के पात समां निरहते है॥ संसोनहो

यतेंयापुरसकूंपापपुंन्यकोसंसोनां
हीं।ज्योंअसमांनिमेंआपणींअछाभे
वतहै।ज्योंजिसकामननिराकारमां
हिलीनहोया।वापुरसचरचाजोगक
हीये।२।हठजोगकेभेदकहतेहै।रे
चकपूरककुंभकत्राटकयेतादस
पवनसाधन।औरषटकरमधोतीआ
दिकरिसाधितेयेसाधेंसरीरकीनाडी
नाडीसुधहोतीहै।सारेसरीरकेरोगदू
रिहोय।तिसतेंमननिश्चलहोय मन
निश्चलहूवातेंअनेकरूपप्रगटहो
य।हठजोगतेंचितसुंन्यमांनिलीनहो
तहै।लीनहूवांतेंकालनेजीकनहीं
आवै।हठजोगकादूसराभेदकहतेहै
पावतेंसिरनांईकेहिसूरजमांनोंते
जहै।सुपेदपीतलालसबजस्याह।को
ईकरंगरूपकाध्यानकीयांतेंसारेअं
गकेरोगजाय।राजजोगकेभेदकह
तेहै।केतीकसिंधिकूंकलनीसकिज

गाड़ी तिसकूं राजजोगी कहते हैं मूल
कुंभकी ओरते तेजरूप येक मांहीना
ड़ी है वा नाड़ी येक इडा पिंगलाके
द्विगन्नैसे भेदकूं पावती है बांवेंभ
रपचंदरूपनाड़ी है दिखणनागिसू
रजरूपनाड़ी है मध्यमारगसुखमनां
नाड़ी है सुखमनांके मूलके तांतूसमा
नि कोटि बीजलीके तेज कूंधरती है
भक्तिमुकत्तिकी देणहार है ऐसी सु
षमनांनाड़ी है एक गिनांनउपावक
हती है गिनांनउपजते है पुरषश्रव
गिनानी ब्रह्मकूं णीकांमपावि है तिस
कूंपीछि मांनी होय च्यारिदलकाकंव
लमूलकंदके ओर है कंवलमांहि अ
ग्निकी सिषाके आकार येक मूरति
है तिस मूरतिका ध्यानकीयांतें सव
लसासत्र बिनां टके आदि करिसरव
मारगभ्यासे आपहीपुरषकूं मनमां
नि उपजता जाय येता लछिन दूजा कंम

त्स्वादिष्टानंनाव छदलंकाकंमन्तं
हैाछज्ञाणीपी छिन्नसनाम कहतेहे॥
जिसमाहिमाणिकरंगतेजहै॥तिस
काध्यानकीयांतेसाधिककूंश्रुति
सुरतिहोयाश्रोरतिकूंश्रुतिबलन
होय॥दिनदिनश्रावबधतीजाया।ये
तालछिरतीजाकेमलनाभीकाठेर
दसदलकाहोतिसकेमलमांहिपंचवरे
रांचकहै॥तीननाडीलालरंगदेष्याजे
जाय॥तिसकंवलमांहिश्रावदलका
श्रोरउरधमुषकंवलहै॥तिसकंम
लमांहिश्रगुष्टाप्रमाणएकमूरतिहै
तिसमूरतिकारूपनरश्रलसुंदपण
जिभ्यासंकह्यानजाय॥उसमूरतिका
नकीयांतेसुरगमानिकपातालमां
कश्राकासमांनिकाणिंडपलोककी
हीजलोककीविद्याधरलोककोइं
लोककीसंडकामभीबसिहोया॥जो
धिककेमनमैंश्रछाहोयातोइनलो

ककीबसिहोय ॥ ग्रथीक
इसकाक्याकहणाहै ॥ येताल्लच्छिपंच
मांकंवलकंवकीगेरसोलादलका
है तिसमांहिकोटिचंद्रकंधरताहैश्रेस
येकपुरसहै ॥ तिसकाध्यांनकीयांतैंस
धिककारोगजाय ॥ येकसहंश्रपुरस
कीउमरिबधै ॥ येताल्लच्छिछठमांकं
मलअग्निनांमहै ॥ सोकंमलभैमां
हिहैदोदलकाकंमलकहतेहै ॥ तिस
कंवलमांहिअग्निकीसिषाकेआका
रयेकमूरतिहै ॥ तिसमूरतिकाध्यांन
कीयांतैंपुरषकापिंडअजरहोयये
ताल्लच्छिसातवांकंवलतालवा
इमृतपूरताहै ॥ सोकंवलचोसठिद
लकाहै ॥ कंमलमांहिनीलारंग
काहै ॥ तिसमांहिग्रग
लाइमृतसरवती है ॥ २
रवसाताहै ॥ इसकंलाकाध्यांन
यांतैंपुरषकेनजीकमरणनहं

ककीबासिहोय॥ प्रथीकीबासिहोय॥
इसकाक्याकहणांहै॥ येतालछिपंच
मांकंवलकंठकीगेरसोलादलका
है तिसमांहिकोहिचंद्रकंधरताहैअेस
येकपुरसहै॥ तिसकाध्यांनकीयांतेंस
धिककारोगजाय॥ येकसहंस्रपुरस
कीउमरिबधे॥ येतालछिछठमांकं
मलअग्निनांमहै॥ सोकंमलभौंमां
हिहैदोदलकाकंमलकहतेहै॥ तिस
कंवलमांहिअग्निकीसिषाकेआका
रयेकमूरतिहै॥ तिसमूरतिकाध्यांन
कीयांतेंपुरषकाप्रिंडअजरहोय॥ ये
तालछिसातवांकंवलतालवामांहि
इमृतपूरताहै॥ सोकंवलचौसठिद
लकाहै॥ कंमलमांहिनीलरंगघंटि
काहै॥ तिसमांहिअगटचंद्रमांकीक
लाइमृतसरवती है॥ औरमिष्टुनस
रबसाताहै॥ इसकलाकाध्यांनकी
यांतेंपुरषकेनजीकमरणनहीं॥ अ

रोजलछि ध्यानकीयांतेपितजुरहिर
देदाहजीमकेजाडांमावसरबरोग
नासकूंपावे।जहरखायतोजरनिनांक
रिसकै।उसकापरममनोरथहोयये
तालछि सातवांकंवलका।ज्ञानमो
केमलब्रह्मरंद्रकीगेरएकंसहंस्र
दलकाहे।तिसकसिधपुरसब्रह्मच
क्रकहतेहें।तिसकमलमांहिधुवांकी
रेषहोयतेसीपुरषकीमूरतिहे।तिस
कीआदिअंतनांही।तिसमूरतिका
ध्यानकीयांतेंअसमानमांहिआवऐ
जावऐकीसांमरथ्याहोय।इनीयांमांहि
रहे।अरुआपएतेइनीइरिकरिदेखें।तो
अनंततजेमेरिबधेहरणकरणकीसांम
रथ्याकहे।येतालछिनवमीकंवलका
भेदम्हासुंन्यचक्रकहतेहेगोरषजैव
चस्वांमीमनकाअेसापूरणनांमकह
तेहे।तिसकंमरिओरकुछिनांही।ति
सकूंसिधपुरसम्हासुंन्यचक्रकहतेहे

तिसकापूरणऐसानामहै।तिसमांहि
मांनिजरथसुषअनंतरंगहै।सारासोभा
भंडारहै।अनेककल्याणपूरताहै।असे
सिद्धकाकेवलहै तिसकाअमलअ
रुबचनमनहीसंअगोचरहै।तिस
वलमांहिनिरंजनरूपअनंतकला
कोटिसूरजबराबरिउसकलाकाते
जहै।परिसूरजकासुभावैनांही।को
टिचंद्रबराबरिउसकलाकातेजहै
चंद्रकासीतलसुभावेउसुभावनां
ही।जोअतिदाहोयअथवासीतल
होय।साधिककेमनउषहोयतिस
तेंअकलिअमांणउर्धसक्तिकलाहै
उसकलाकाध्यानकीयातें।सुरस
मनमैंजैसीअंछाकरै।तिसभावे
सगेरउपजतीजावे।राजसुषभोग
तोअमरतिमांनेबिनासकरै।तोसं
तिकेंबिनोदवेषतेरहै।दिनदिन
जालाकासपरितमरिवधतीजाय।

अरधस्त्तिके भेदकहे
निर्मोहि मनअरु नजरेंअरधकरिरा
षीयेयेस्तिनिजरिमिहकीयाते।
करतारके अग्नि तेजसेतीनिजरिका
मेल्ला होया। असमानमाहि अद्रिष्टप
दारथसिधसाधिकसोसारेनिजरस्त्रा
गेदेषीयेअरधस्त्तिकहीयेनासिका
कोअग्रीकपरिवाराअगरसाई। नि
जरथिकरिराषीयेतोअमरिदराजहो
याअधनादोयनेरांमाहिनिजरथि
रराषीयेतोअमरिदराजहोयायेना
जिस्तिकहीयाअबअरधस्तित
बाहरिभीतरिअसमानकेपरेसुंन्य

लक्षिकरणं जागतांचालतांषाणां
षातांपड्यारहतांसरबगोररहतांसु
सलक्षिकरणां तोमरणेकीत्रासन
होय यतालक्षिराजजोगीपुरसके
चहन्कहतेहै सरबत्रसारीदुनीमें
हरिभावैअरुदुनीमांहिविचरै जिस
केगांवनांहीनांवनांहीजनमनांही
मरणनांहीसुषनांहीदुषनांहीकुल
नांहीस्वांतिनांहीरूपनांहीरंगनांही
चहननांही ऐसाअलषनिरंजनअ
लेषकरतार तिसकामनमांनेहरि
रोजबिकासकूंपावे वापुरसराजजो
गीकहीये अरुराजपायेतैंजिसकाम
नहरषचपलभावकूंनपावे अरुहं
णाकुयेकछुमनमांहिहीणतानहोय
पदारथपायेतैकछुमनमांहिहरषन
हीहोय वापुरषराजजोगीकहीये
अरुजिसगोरकूंदुतासताहोय अ
बडीनदीकीतीरहोयवापरबेगहो

यडुसमनमित्रकेबिषेपाथरसोंनां॰
केबिषें।जिसकामनअरुनिजरिब
राबरिहोयवापुरषराजजोगीक
हीये।सारीडनीमांहिरमतासुषभोग
नांहेवेकछूनहींकरतेहे।महरमां
हिअथवाउजाडिगांवमांहि।जिसका
मनउनानपूराहोयावापुरषराजजो
गीकहीये।येतालछिसुभावकेभेदक
हतेहे।जैसेबटकाबिरछआपणासु
भावदसभांतिकूंपावे।मूलअंकूरतु
चापडडालकलीपातफूलफलबी
जनहचे।तैसेनिरमलनामरहतेहे।
निरबिकारनिरंजनयेकआतमाअ
पणासुभावतेंदसभांतिकूंपावे।प्रथी
अपतेजबायआकास।मनबुधिमां॰
याहंकारबिकारऐसेसुभावकूंपा॰
वे।गिनांनजोगकेप्रभावतेंयेकआ
तमांहे।जोनहचलहोयतोयेप्रथीक
ठिनहेसकोमलहेमनोहरहेप्रमल

मुक्ताहै।परमैत्नरहतबीहै।जैरभीहै
नलैनलैफलहै।इंद्रतरूपहै।येप्रथी
कासुभावतेअेकअंगुलमांनपंथी।हर
णहस्तीविद्याधरगांडपकेनगरहैमै
पंक्तिम्हाम्रप्रजोगीसकलसंसक
लजरताहै।स्वांतिरूपकेविनअप
णासुभावकूंनधरताहै।गिन्यानजोग
तैंविकारननरहताहै।येतालछिना
सिकाकीअणीतैंच्यारिअंगलप्रमा
णनिराकारतेजपूरताहै।धुंवाकैव
रणिअैसालछिकरणा।अथवानासि
काकीअणीतैंआवअंगलप्रमांण
अतिनातरंगतेजकूंलछिकरणां।
अथवानासिकाकीअणीतैंदसअं
गलप्रमांणकालोकोयलोअतिजो
तृदिकततकालछिकरणां।अथवा
नासिकाकीअणीसूंबाराअंगप्र
णमीतरंगप्रथीततकालछिकर
णां।अथवाकोटिसूरजिकातेज

रताहे॥असमानमाहिलक्षिकरण
असमानमाहिकपरकीयातैबारेह
तारसूरजिकी करणिकेईहजार दे
ीये॥अथवाकपरिआगलसन्नातेचा
निजरासिकाल्लक्षिकरण॥अथवानि
तरिकेआगेगाल्मासौंनाकेआकार
अथीततकाल्लक्षिकरण॥येलक्षिमां
हियेकलक्षिसाधीये॥केनपलीतहरि
हीया॥अंगकेसारेरोगदूरिहोया॥बर
सहजारकीतंम[illegible]॥केवतसास
वगीनजीभके[illegible]तेजाया॥
सिबङ्तेरे[illegible]फ[illegible]लक्षिअंत्र
लक्षिकहतेहे॥[illegible]सेतीब्रह्मंक
ताईलागी॥खपेदरंगब्रह्मंरंद्रताई॥
एकब्रह्मनाडीकनकतांतूसमो
को
तिसमूरतिकाध्यानकीयातें॥
महिमांग्रमांम्हाशिधिपुरष
ूरहे॥येताल्लक्षिअथवालिलाटकेऊ

वरिाक्ष्मसमांनमांहितैसातारेकातेजा
यतैसातेजध्यांनकीयांतेहोयाकोर
ध्याजिबौंचौगजचरमवहीरद्देसेत
नकेरोगनासकूंपावेतेमरिवधोये
तालछिाक्ष्मथवाभौंहरामांहिबत
ताराकातेजहोयलालरंगध्यांनकी
यांतेडनीयांकौंपुरमबलनहोय
वापुरमदेषेतैंसारीडनीकीनिजरि
तीहोयाअतालछिाक्ष्मगमांहिनाडी
काभेदक[illegible]हदहजारन
डीहैतिस[illegible]नाडीसरेपहै
तिनकेनां[illegible]हैाइडापिंगला
साहरवह[illegible]सुषमनांनाडीता
वामारगब्रह्मन्हारबहतीहैाम्न
नुषमुषमांहिबहतीहैागंधारीहस्त
चक्षुमांहिबहतीहैामुषजास्वासनां
करणमांहिबहतीहैाकहूसचालिं
गमांहिबहतीहैासंषनीमूलद्वारमां
हिबहतीहैायेदसनाडीदसद्वारबह

है

नी माहि बहती है सो

बहती है सो बाय सारी नाडी कूं सोप
ती है। सो नाडी कूं संतापन करती है।।

सो बाय अन्न कू
अस्त पाणी पीवता है। नाग बाय सारे अ

मां

हिबहतीहै। देवदत्त बायुकरणमांहि
बहतीहै। धनञ्जय बायसारेअंगमां
हि बहतीहै। येतालछिअबमप्रिल
छिकहतेहैं। सुपेदरंगअथवापीत
रंगलालबरणअथवाअगनिकीसि
षासारिषाअथवाधुंवांकीरेषअसि
नीलाबरण। बीजलीकेतेजसमांनि
सूरजमंडलअरचंद्रकेआकार
येमधमलछिकहतेहैं। येलछिमांहि
मनकामैलजाइ येमनस्यांतिरूपप्र
गटहोय पुरषकैसदाआनंदहोय।
येतालछि असमांनमांहितिनकेल
छिनकहतेहैं। आकासप्रकासमहाअ
कासतत्त्वआकासमूरजिआकासबा
हिरिभीतरिनिरमलनिराकारकालछि
करणांअथवाबाहरिभीतरिकोटिदी
पगाहोय जैसाइजालहोय जैसाततक
प्रकासहोयलछिकरणा।येतालछिवि
कलकेअनंकमकहतेहैं। आधारम्

लञ्चस्थानचक्रा।स्वादिष्टानलिंगञ्च
स्थानचक्रा।२नाभीञ्चस्थानमाणिक
पूरचक्रा।३हिरदैञ्चस्थानञ्चनहदच
क्रा।४।कंठमधिविसुधचक्रा।५।भौमधि
ञ्चग्निचक्रा।६।सप्तवांतालवाचक्रा।७।।
ञ्चष्टमोब्रह्मरंद्रकीगैरहै।८।नौमांचक्र
परमसुंन्यमधि येतानवो।।ञ्चाधारकेभेद
कहतेहै।पांवकेञ्चंगुष्टकेञ्चाकारल
छिकीयातैनिजरथिरहोया।दूजाम्ल
द्वारपावकीएणीदेवेठेतैञ्चग्निञ्चपर
बलहोय।।तीजागुदाधारसंकोचकीयं
तेपवनथिरहोयपुरषमरणनहोय
चोथा।लिंगमांहिसंकोचनकीयातैप
छिमनंद्रमांहिवजरनाडीहैजिसका
ध्यानकीयातैमनपवनकासंचारन
होय।संचारनहुवातैतीनग्रंदिका
फटैपवनब्रह्मकंवलमांहिभरपू
रिहोय।।जिसतैंबीरजञ्चस्थंभनहो
या।बीरजञ्चसथंभनहुवातैसुरस

सदाजो बनरहै॥ पंचमांतमणीअ
रा तहांबंधदीयांतैमलमुत्रकाना
होय॥ छठवांनाभीधार॥ तहांसम
नबायकाअभ्यासकीयांतैअनह
नादरूपजे॥ सातवांहिरदाधारतह
प्रांनबायकानिरोधकीयांतै॥ कंठ
तरमुषहोयबिकारकूंपावै॥ अ
ठवांकंठधारबंधदीयांतैइंगलापिंग
लाकापवनथिरहोय॥ नौमाघंटिक
धारतहांजीभकीअणीलगायेरहो
ये॥ तिसकीकलाइंमृतश्रवै॥ सोअ
तपीयांतैअंगमांहिसिधिकासंचार
होय॥ दसवांतालवाधार॥ तिसमधि
दनचालनदोहनकरलबिकारकाप्र
बेसकीयांतेतालीलागै॥ ग्यारवेंजीभ
कैतलैजिभ्याधार॥ तहांजीभकेअ
मैथुनकीयांतैअतिमीवास्वादपा
वैस्वादपायेंतैकबित्तगीतगिन्यांन
॥ उपजे॥ बारवांऊपरिकादोयदंत

मांहि दंधा धारा॥ तिस ठौर जी भ की अ
णी लगाये रहीये चांपि घड़ी अधी तां
ई राषीये तौ सारे अंग के रोग नास हुं
पांवै॥ ते रवां नासिका धार तिस की अ
णी का लछि करणं॥ इस लछि की मुंतै
न धारा॥ अप णा सरूप छुटै महा मै ग्र
गट होया॥ प्रगट हुवां तें डुली के सु रे
रि थिर रावै तें करण कोटि है यो वे॥ से
त्वां नेत्र धार अंगुली के अग्र करि
चालीयो॥ चालण के अभ्यासै तें जे ले
डुनी मांनि ते होय ते तें के नित्र देषावे।
दे षें दे षें पुरष अवगिन्यां नं इ ता लछि
अष्टांग जोग के विचारि कहते है॥ मा
या निरमाया आसण प्राणायांम प्रति
हारा॥ ध्यांन समाधि के लछन कहते है
सति है इंद्री काया जम धूप
कहीये॥ ये ताल छि कहते

नीतैंदूरिरहीये॥किसीबसतकी
नकरीये॥मनकाचपलताभावर
राषीये॥येकांत्ररहीये॥प्रांणीमात्र
संगनकरीये॥जोकछुवाततपरि
मराषीये॥तसताजकाबचनबिच
ये॥मनमांहिहीएतानप्रांणीये॥
लछि॥आसणके भेदकहतेहे॥
ग्रंथमांहिबोलतेहे॥तिसतेंबोल
नांही॥प्रांणवायमुसकलिहे॥
तैंसाधीनजाय॥तिसतेंनांवमात्रक
तेहे॥प्रतिहारध्यायमनषेचकरिप
मकुंराषीये॥मनमांहितेजबिकार
पजतेहे॥तेपीछेग्रासीये॥अनंतचि
मतकारकीबुधिउपजे॥तेबुधलो
मांहिगुपतराषीये॥ध्यांनबडतेरेह
तिसतेंलहतेनांही॥इतालछि॥पिंड
लंडयेकरूपहे॥तिसब्रहमंडमांहि
जपदारथहे॥तेतेपिंडमांहिकहते
पावकेअंगुठातलेपातालहे॥पावक

पृठिकपरिम्हातालहै।पीठिमांहिती
नलोकहै।मूलधारपातालहै।लिंगभू
लोकहै।लिंगकेअग्रसूरलोकहै।५
तालचि।चारिलोकपिंडमांहिहै।पी
ठिकाकंडकेअंकूरमांहिम्हालोकहै
पीठिकाकंडकेछेदमांहिजनलोक
है।कंडकीनालिमांहितपलोकहै
डंडकेमूलमांहिसतिलोकहै।ब्रहमं
डमांहिचारिलोकस्वामीहै।तेबीपिं
डमांहिरहतेहै।५तालचि।राजजोगी
केलछणकहतेहै।पहलीसारेरोगदू
रिहोय।सारीडुनीकूंप्यारोहोय।सारीडु
नीदेषनचाहै।तापीछैसारतत्वगिमं
नभपजे।अबकीभाषासममै।तिस
पीछैबजरदेहहोय।नाहररूपरषि
माबैनहीं।तिसपीछैभूषप्याससीत
उष्मवापुरषकूंब्यापैनहीं।तापीछै
कछूबोलैसोसतहोय।किसलिपडै
तेअंगकूंज्यांननहीहोय।सारीडुनी

कूं निज रिअगे देषै पवनवेगहोय
आपणी गंमअष्ट सिधि नो नै धिनजीव
आयरहै ॥ असमांन मांहि देसदेसांमां
हि आवणो जावणो को बलिहोय ॥ अ
रु रे करण हरण को सांमरथाहोय
ये गुरकी सेवा को फलहै ॥ आतम
हि आपणां मुकों मविसरो मकर ॥
ऐसा करैता पुरषाधरि ॥ इति श्री रत
नजि जोग लासन ग्रंथ संपूर ॥ अ
ष्ट कंवल को विचार लिष्यते ॥ अबकूं
पा अध्यातमसोई ये कही ब्रह्म सक
ल मैं व्यापक ॥ और न दूजा कोई टेक
प्रथम कंवल जहां जो निचक्र दल
देवगणेस को बासा ॥ छ सेजापजपीजे
रिधसिधि परकासा १ षट दलकंवल
ब्रह्मा को बासा ॥ सावत्री संगसेवा घ
ट सहंस्त्र जहां जापजपीजे २ इस
हितसबदेवा २ अष्ट दलकंवल
तहां हरि संग लछमी ॥ तीजा सेवग पवन

षटसहंस्र जहां जापजपीजे मिटिजाय
श्रवगवनां॥शाहा दसकेंकनदंलसिव
काबासा॥स्योसकतीजहांसंगा॥षटसहं
स्रजहांजापजपीजेनिरगुणसुरतिल्ले
गा॥धा॥षोडसकेंकवलजहांजीवकावा
संगतिविद्याजांणीयेकसहंस्रजहां
ऐसेंब्रह्मवषांणी॥५॥नंव

ते करमभरमकानासा॥हीस्रागेसहंस्र
ां॥बडीकेंकनस्रनुपाजिहांफलमहेन
जोतिस्रपारा॥जोतिसरूपसकलघटब
रते॥स्नलषपुरषनिन्यारा॥७॥सुरतिकं
वलपरिसतगुरबोल्लैजापजपीजेसोऽ
सोऽकीसहंजारकीस्रकैस्रजपा॥क
हैकबीरबूझैबिरलाकोईदूसरो॥॥
कंवलदलन्यारा॥जहांबसैगणप
हांरोमनडवारषटपतरसजहांबसै
भ्रमनवारो॥नाभकंवलदलस्रष्ठ

जहांबसेसांपनि॥तासतेपरिउगेसूर
कोटीचंद्रप्रगासे॥रहिरदाकंवलद्वा
दस॥जहांबसेश्रातमाराजा॥श्रमीचं
दमननिरतेतहांप्रगासा॥३॥कंठकंव
लदलषोडस॥जहांबसेसुरसरीरा
नी॥तहांरुघनाथकाथांन चेतोसब
गपांनी॥४॥भंवरगुफा॥जहांदोइदलकं
वल॥परमहंसकाबासा॥हांलहल
कंतलंकश्र॥सेबपाखडी॥कोकंवल
जहांजोगीकोश्रासना॥५॥साधजनद
सनपावे॥श्रागेसहश्रदलतहांफलम
लब्रसे॥श्रापबसेश्रोरा॥जोतिसरूप
सकलघटबरते येकलपुरषहेन्या
रा॥६॥श्रागेतलकेपाटबतीसदलकं
वल॥रमतसिधापलटेतगंगापीवत
जोगेसुरं॥परमसुंन्यगरमतसिधोंजु
गरंडीयां॥जोगेसुरपरन्यां॥हांन्हेसिद्
सकतीसूंफेरा॥जेमंदलपरधजा॥फ
रुकै॥जोमंदलपरमेरा॥८॥सबजुगदे

न तकं वरा चलीया॥ नहीं कोई जन
रा॥ मोहि सत गुर परनाईया॥ क हेक
बीर जहां चंद न सूरा॥ ६॥ साषी॥ प्रेम पी
याला सुरति नरि॥ पीवे संत सुजान॥
जुगन जुगन के सो मतवाले॥ पावै पद
निरबांन॥ १॥ ऐसो पीया सो सील वंत
बुधि वंता बकु धीरा॥ अगम लहर रिजि
न के उ वे॥ सतगुर मिलें कबीर॥ १॥ अ
थ साहीकणि हा कौ जफा सको लिष्य
ते॥ दोहा॥ कणिहार कडवा नये॥ जे
तरक सकाती॥ शबद बिना षाली प
डे॥ सतगुर कहे कबीर॥ १॥ एणि॥ का
या छोडि चलने कणिहारा॥ पला पकडे
धरम बरपाडा॥ बेग गुरजी ले षसुना
वो॥ ता पीछे तुम लोक सिधावो॥ २॥ नरी
यर कं ध के से करिजांनां॥ भूलो गुर वा
आप अभिमांनां॥ चोके बैठ कंध फु
लाई॥ नरीयर मोरि करिगफ लाई॥ २
मुजानवायरु नरीयर फोडा॥ लेषानि

नाकसमका चोरा तेषा बिनानाहि
तिहोई गुरुसिष नावेहोयकोई धम
मे॥ धरमरायअेसेकहै। करूंतुमारी
हांनि। च्यारिपहरिसासतिदेउं। पुनिम
तनकीषांनि॥ धूरस्मेणी॥ नरगुनीयां
जोगुनकूं पावे॥ बंसहैमाया अंनिच
नावे॥ माया जोरिबंससुषपावे॥ अ
सिरवादबंसको पावे॥ दोजबजीवन
जमनासहिभावे॥ अ सिरवादकहां
तबपावे॥ अ सिरवादजीवनहीनिरह
मूलतेषबिनअगनिधरिजरही॥ पन
रीयरहमारहाथितेतीन्हां॥ तेषाको
नगुरुतोहिदीन्हां॥ हमकूंगरुतिलक
जोदीन्हां॥ मांनिसिषापनतिरषेली
न्हां॥ ठाकरिचोका हमनरीयरमोरा
मावभगतिहमकीन्हो भोरा॥ अबप
ऊंचेसतलोककूंचीन्हां॥ गुरुसिषाप
नहमकूंदीन्हां॥ ए॥ अरेगरुतुमकबु
नकीन्हां॥ अंधअंधतोहिदक्षादीनी

कामबजरठहिमांहिरिसाच्चे

कीन्हाहनहमकेकइ

न्होहमयाकेतनहेम्रके

निडारारवे

जीवघणीकरेचिकाराभाकेकसन

बजमत्राणिघसीद

२॥सेमे॥जेसेबिनावचुबरा

कोबिडविधिनासदियाया॥जबजीवन

हेकबीरधमेदाससं॥बिनलेथमन्येके

किहाराबिनामूलनेलूटेनहीफूलेजमके

हाराश्धारमेणी॥निरगुनीयांकेहेके

किहारा॥ शब्दलेषनहीपावेधारा॥

मनकारंगबड़तबिसनाराबिचन

हारेचौकानहीधारा॥१॥सबदहेन

ोकाकरहै॥

वो हत भतजमञ्ञांनिकुरनावै॥१६॥दो
पीतिल्लककालकाबांनां॥तहांचोक
है धरमछिकांनां॥कांमवजरतबजो
नागैनाई॥होयञ्ञासिकञ्ञादिपुरजा
ई॥१७॥होयञ्ञासिकजोञ्ञंगल गावै
सोजाग्रतपुनिड ष्टकहावै॥ञ्ञैसाषे
व वे करैबिचारा॥ञ्ञैर भूतहोयस
सारा॥१८॥ताकीकायाकूटैनाईमर
तिञ्ञंधा तबकोकैजाई॥सबघटरो
कजीवगहिलेही॥पकडि.जीवभ्रमर
य कूंदेही॥१९॥तुमसंसारकेगरुकह
ई॥पारसकीयाबहुतसुषपाई॥नोह
कीजैपांजरैतनाई॥नोहकीजोसज
बेगई॥२०॥ञ्ञबतननोहकुवाजो
ञ्ञाई॥छिननछिनननजोजमजराई॥
नापीछेपुनिञ्ञरकसलगाई॥काटि
काटिसबदेहजराई॥२१॥देषिदेषि
ञ्ञगनिपैरमुरझाई॥इतनीसासतिजी
व कूंकीन्हां॥सबैजनमचामत

॥२॥समै॥ कहैं कबीर धर्मदास सं॥दे

समाय॥२३॥तो

॥हजार लै॥कै छिहारन का

२४॥रमैणी॥नौ बज्र मल

जोर है मतवाला॥सो कहीये साचा कै

छिहारा॥ हैहसि आपन कपट नहीं क

रि हैं॥सो कै छिहार जीव लै निरही॥२५

सब द सरी त्रहि रदै सूचा॥सो कै छिहार

जगत सूं ऊंचा॥कुल करणी का मेटै भौ

म क्रोध तरस्मा परिहर ही॥सो कै छिहार

आरती क रिही॥जम से तुन का बज्र कू

तोडै॥सो कै छिहार नरी यर कूं मो

समैं॥आसण मारि बैस होय बे

बोलीनैं सब सिर मारा॥कहै कबीर जब

जांनि हो॥पडै बजर की मारा॥२८॥रमैणी

नां तरि हूतन आये कै छिहारा॥सब जीव

नका करै ऋहारा करै ऋहार उ
भरिहीं सो पापी कै सैं निस तिरही
वकृत भांति करिचोक
णी यांहू ट वारैल गाई तेल्नै वसतद
गा पुनि करिहीं
रिहीं ३०॥ समैं॥ कहैं कबीर धर्मदास
सं ऋेसा हेम्य कं फिहारा कह्यो हमार
नां करै सो ऋष्ट कै जमहारा ३१ रमैणी
संपूरणः॥ ऋथ तत्त बोध लिख्यते॥ गै
बी गिरनारी धजाधारी पवन तुरी पल
णंता॥ ऋासण मूल सबद कम्चा बक
लो लगा मद फेरंता॥१॥ पांच पचीस प
गल्ने चंपी तीनों न्यारे रहै वंता जोग
णाजागी ऋबल बलागी सिध बेरागी
गावंता॥२॥ गंगा जमनां उलटि चढाई
चंद सूर मिलावंता ऋधर धरंता चक्र
फिरंता सम करि निरति लगावंता॥३॥ च
कवे जोगी सुषमनि भोगीत
वंता ध्यांन निरंत्र ऋापा ऋंड्र पछिम भां

ग्रन्गावंता॥धीतीनूंलोकनयाजजीयारा
तीतिहीजोतिमिलावंता॥तीनोलोकन
गजजियारा॥चोडैचोपडिल्यावंता॥२
नहांधैरैवाजीमनकाराजी॥जुगजीते
रत्रांवंता॥पांचूंपीरादरीयातीरा॥२
याबूंदसमावंता॥६॥वहांधरनिनगगनी
ग्रीसतरजनीउसघरआलमचावंता॥
तीनैंपासाएकादासा॥तेतीसूंसारिमि
लावंता॥७॥वहांगरजैगिगनांबाजैबेना॥
बकबिधिनग्रवसावंता॥पांचूंबाईसह
नसमाई॥सूसमानीघरत्रावंता॥८॥वहां
रबाजेसंग्रधुनिगाजै॥दरीयापा

वा॥सेतधनाफहिरावंता॥णमूलसब
गजोगीभेदा॥गहरीबांणीगावंता॥वहां
बीगिरवाहाथैंफरवा॥जरिनरिप्पा
ग्याल्लासदमतवाल
तां॥गे
गीगोबंदापरमानंदा॥तनकोधमथिके

लंता॥११॥ घणघोरनिसांणीअकथकह
णी॥ अणभैबांणीगावंता॥ उलटीबाई
हजसमाई॥ ध्यांननिरंतरल्यावंता॥१२
वहांबाजेतूराबरषैनूरा॥ मुरलीघोरसु
णावंता॥ वहांगगनीगाजैनोबतिबाजे द
रीयालहरिसमावंता॥१३॥ सतगुरकहं
मैतेंनाहीं॥ सुरतिशबदमैंसुरतिबसव
ता॥ वहांश्रोरनदूजाआतमपूजा॥ ततत
रूपीदरसावंता॥१४॥ ततपरिततागल
टामता जोगीछुताबोलंता॥ जोगेस्वर
बोलैन्यारापेलै॥ अमृतप्यालापीवंता॥
१५॥ सबद समान्हागुरकीनाल्हाअरस
पीयाल्ना॥ गहरीबांणीबोलंता॥ बोल
तबांणीउलटापांणी॥ सुषमनिहेदम
रावंता॥१६॥ वहांकछनीकाछेपात
रिनांचे॥ बकुबांणीगुणगावंता॥ वहां
गहरागाजेगुरुबिराजे॥ वाघरचंवर
ढुलावंता॥१७॥ नहांश्रापाभूलादरी
याफूला॥ बकुरिनमढीबणावंताव

।कीयपंनीनोंमपिछांनी।।गुरगमप
(रजणं बेना।।१८।।दोहा।।सबसंतो
ँ कीनती।।सुनौं संतचितलाय।।ऋज
र अमरघरअलषकागैबीरहैसमा
य।।१९।।इतिश्रीततबोधमंप्रथमः।।अ
।।अगं्रथलिख्यते।। चौपई।।मुनि
कैमारगसतगुरगाढा।।तालिबकोया
सबदसूंगाढा।।उनसाहिबकौंमोजोभ
या।।जिनअंब्रआसेतीमनाउपाया।।१।।अ
गमभेदचेलाबतलाया।।तिसचेलापरि
करेगुरजीन्हाया।।धरतीअसमानकी
नीवबिचारी।।जबकौंनसैपंडितकरीअ
ग्यारी।।२।।ॐकारसूंकवापेदा।।पांणीदोडि
लग्ये चोगड़दा।।पांचततकीमोइजमां
नी।।निकसीडुनीयोंबुगसीपंडी।।३।।गाग
रिमेंसौंसबदबैनाया।।जमीमांहिसूंचु
णउपाया।।चंदसूरसूरजकरुमसूंचां
नेरा।।पारहेप्रतिनहींहासे।।४।।उनंधूर
कोउजीरोंआदिहजूरी।।
कबीर

लंता॥११॥ घरणघोर निसांणी अक घक्क
णी, अण मे बांणी गावंता॥ उलटी बाई
ह ज समाई ध्यांन निरंतर ल्यावंता॥१२
वहां बाजे तूरा बर मैनूरा॥ सुरती घोर सु
णावंता॥ वहां गगनी गाजे नौबति बाजे द
रीयाल हरि समा वंता॥१३॥ सतगुर च्यांह
मे तैं नांही॥ सुरति शबद में सुरति बसव
ता॥ वहां और न दूजा आतम पूजा॥ तत
रूपी दरसा वंता॥१४॥ ततपरि तता उल
टा मता॥ जोगी छता बोलंता॥ जोगेस्वर
बोले न्यारा खेले॥ अमृत प्याला पीवंता
१५॥ सबद समाला गुर की नाला॥ अरस
पी याला गहरी बांणी बोलंता॥ बोल
त बांणी उलटा पांणी सुषमनि होदम
रावंता॥१६॥ वहां कछनी काछे पात
रिनां चे बडु बांणी गुण गावंता॥ वहां
गहरा गाजे गुरु बिराजे वा घर चंवर
दुलावंता॥१७॥ वहां आपा भूला दरी
या फूला बडु रिनमही बणांवंता॥

गैवी॰

आरजरण वेना॥१७॥दोहा॥सब संतां

तूं बीनती॥सुनो संत

।इतिश्रीततबोधसंपूरण

लिख्यते॥चोपई

गुरगाहाताल्लिबकीया

।म

।काया धरती असमान कं

हा॥पांचतत्तकीमांडजम

ली॥निकसीडुनीयां बुगसी पंडी॥३॥गग

रिकेसेरिन्वरबे भाया॥जमीमांहिसेचु

गा उपाया॥चंदरुस्रज कुकमसुन्वा

काउजीरो॰

कबीर

नांमन वूझै ॥ ऐसी उत्तीयां हीयाकी फूटी साधां सेती डोलें रूठी ॥ १८ ॥ दोहा ॥ पात साह रूठ्या क्या करै सी ॥ क्या करसी संसार ॥ रचे मैं हा राये कहै ॥ जिन का सब बिसतार ॥ १९ ॥ चौपई ॥ धीरज दिढ करि राषो भाया ॥ गुरसूं पर पै परगट पाया ॥ परचा पाय डिगो मति कोई ॥ हासी जोग बिजोग न होई ॥ २० ॥ दोहा ॥ कहूं मडर बासा का सिष है ॥ सतगुर का है दास ॥ जा का छिपाया कब रहै ॥ जिन दरस्या वंदी षिलास ॥ २१ ॥ चौपई ॥ दरस्या कैं जर जो धन गावै ॥ सतगुर चरन जुगां जुग पावै ॥ सत का सबद जे नर बेध्या ॥ बेध्या जिनूं कुं बधिकूं षेध्या ॥ २२ ॥ दोहा ॥ देवल कें पथर करि देषो ॥ तीरथ देषो पांणी ॥ जिन कूं सतगुर पूरा पाया ॥ जन मैं न गति पछांनी ॥ २३ ॥ जन मै भेद कौंन सूं कहीये ॥ है कोइ चतुर बिबेकी ॥ कहै कबीर गुर दीया पलीता

फलबिरलां देषी ॥२४॥ इति श्री ते
ंथसंपूरण ॥ अथ छका फर बोध
ख्यते ॥ अकलिपीरहे मनमुरी
॥तनसही दहे ॥ अमलिगजाहे बि
॥स घाती दोजग है ॥ ही मतिकते
॥गुसाहरामहै ॥ निससेलानहे॥
॥तनेगुलामहे ॥ असीलजादेवं
महे ॥ निकीनामतिहे ॥ बदीकुची
॥मदिलपाकहे ॥ सिंघदिलनाप
हेवानहे ॥ बेहरसके
॥ गाफलहे ॥ गुदी ग मरहे॥
॥लहे ॥ मुसलमा
॥बे
लहे ॥ ज़ोहदोजगहे ॥ दिलमहलहे ॥ जो
रीजुलमहे ॥ श्रासा परबेसाहे ॥ ज्यानम
॥लहे ॥ दिलमहराबहै ॥ श्रोरवके क
लमासंगतिहै ॥ पेकमरकरी बंदगी ॥
तासूं पाईसेपतिहै ॥ अलीमहमंदहे
अलाबेहदहै

थमतोमूलबंध॥दुतीयेनंगोटबंध
त्रितीयेकमरबंध॥चोथेदिवालबंध
पांचवेनालबंध॥येतेकबंधसबदी
मावतीबोलीये॥छ॥
जाकाभेदबिरलैपाया॥मकाकासमे
लमदीनांबसाया॥धूंनीमहंमदकुल
षकापातस्याकूफिबनलाया॥तुरक
कीकाटीचमडी॥हींदूकेफाडे॥कांन
बोलनहारा॥हींदूनमुसलमांन॥हींदू
पूजादेहरा॥मुसलमांनमहजीद॥के
हैकबीरहमतुमजिंदफकीर॥रेबाबे
उसकुंपूजेंजहांशेककापरतीत॥श
लश्रीनाथदरबोधसंपूरण॥अथब्र
लस्थांनलिष्यते॥परापसंतीमधिम
बेषरीच्यारिबांणी॥पराकोनाभीअस
थांन॥पसंतीकोहिरदैअस्थांन॥मधि
माकोकंठअस्थांन॥बेषरीकोहोंठअ
स्थांन॥पराकोस्यांमबरण॥पसंतीको
रगतबरण॥मधिमांकोपीतबरण॥बे

वेदसबदकी
गी कोल्लीलबरण।वेदसबदकी मधिमावें
री बांणी।सोहंसबदकी मधिमावें
नहदसबदकी पसंती बांणी।सा
दकी परा बांणी।तूंपद।तत्तपद।
पद।परमपद।तूंपरमाया।तत्त
व. असीपद ब्रह्म।परमपद अ स्थू
ललिंगाकारण।ईश्वर।हिरणगरभ।अ
व्याकरत।अष्ट गगनिके ऊपरें।परम
त्तपरमांनंद।अचिंत गगनिकूं जोके त
गी।छपन गंदसुगंद रूप अचिंत गगनि
समांनै निराकारतास्ंगोष्टि।अग्रब्रग
व्रो।कोई कजांणैसंत।गगनिसमांनै गु
रु है।त्रदीप जांणै।देहीम्हतत्तबरति।र
हो।जीवघरतकूं जांणि।बासस्रूपी
ब्रह्म है।मायाछाडिपिछांनि।कोटक
यामेंकाल है।देषोब्रह्म विचारि।कहेंके
बीर अग्रपुरषका अंसको।विरलाजांणें
नेवा।महतंत बिराजे ऊपरें।पडं च्येंगाको
5देवं॥इतिश्री ब्रह्मग्यांनसंपूरण॥२७

चौदा इंद्री कौ तिन्यार लिख्यते ॥ पां
चूं तत पर पंचा ॥ पांच तन मात्रा मन ॥
पांच ग्यांन इंद्री ॥ पांच करम इंद्री ग्यजा
नीजे ॥ चतुष्ट अंत करण इंद्री ॥ ...
... जीव पुरष पं. चौ
सवैं ॥ तत बात तिलोक मे ॥ षोजिस
दा षटबीस तत्वा बिह्म ॥ पांच ग्यांन इं
द्री ॥ पांच कर्म इंद्री ॥ प्रथम स्तुचा इसे
चे स्तु ॥ त्रितीये घ्रांन ॥ चतुरथी रसनां
... नोस रोत्र ॥ तुचा इंद्री के देवता बा
बोलीये स ... सरूपी ॥ इतीये चक्षु इं
द्री के देवता सूरज बोलीये तेज सरू
पी ॥ त्रितीये घ्रांण इंद्री के देवता अस
नीकुंवार बोलीये सुगंध सरूपी ॥ चतु
रथी रसनां इंद्री के देवता बरुण बोलीये
स्वाद सरूपी ॥ पांचई सरोतर इंद्री के दे
वता ॥ दरगदेसा बोलीये सबद सरूपी
इती पांच ग्यांन इंद्री ॥ बाकि इंद्री के दे
वता ई सुर ग्यांन हद सरूपी ॥ १ ॥ पांन इंद्री के
अगनि

देवताइंद्र बरखासरूपी॥४॥ग्रेहाइंद्री
केदेवताजम कालसरूपी॥३॥पाव
२४॥केदेवता कुरम मारसरूपी॥४॥
उपस्थइंद्रीके देवता दच्छ परजापति
द्रीमनइंद्री
केदेवताचंद्रमा आंकोसरूपी॥बुध्दि
२ ब्रह्मसरूपी॥२॥चित
तइंद्रीकेदेवताबिस्नब्रह्मगतसरू
पी॥३॥अहंकारइंद्रीकेदेवतारुद्रज्वा
लासरूपी॥४॥इलीचौदाइंद्री॥साषी॥क
बीरकौनसबदकामुषहै॥कौनसब
दकीआंष॥कौनसबदकाध्यानहै
कौनसबदकीसाष॥ब्रह्मसबद

दकाध्यानहै॥कब
बदकौनकापुत्रहै॥कौनमायमणीं
जो॥पंडितकरोबिचार॥इनकाअरथ
करीजो॥सबदसबदसबकोकहै॥बिनां
पित्तानहीकोय॥बिनापिताजेऊपजे

चौदा इंद्री कौ तिन्ह भार लिखते।।प
चूं मूत पर पंच।।पांच तन मात्रा मन
पांच प्रांन इंद्री।।पांच करम इंद्री मन
नी जे।।चतुष्ट अंतकरण इंद्री।।मन
अ...जीव पुरष प चं
सवैं।।तत बात ति ॐ लोक मैं बोजि
दा षट बीस ठम्हा बिम्ब।।पांच प्रांन
इंद्री।।पांच करम इंद्री।।द्रय मतु चा।।ह
चतु।।त्रितीये घरां नां चतुरथी रसन
...सरोतं।।तु चा इंद्री के देवता बा
बोलीये स...सरूपी।।इतीये चतु
इंद्री के देवता सूरज बोलीये तेज सर
पी।।त्रितीये घरां ण इंद्री के देवता।।अ
नी कुंवार बोलीये सुगंध सरूपी।।च
रथी रसनां इंद्री के देवता बरुं बोलीये
स्वाद सरूपी।।पांच ई सरोतर इंद्री के
वता।।दरग देसा बोलीय सबद सरूपी
इती पांच प्रांन इंद्री।।बाकि इंद्री के दे
वता ई...नहद सरूपी।।प्रांन इंद्री के
...गनि

देवताइड़ बरयासरूपी॥सांगह्रइंड्री
केदेवताजमकालसरूपी॥३॥पाच
इंद्रीकेदेवताकुरमभारसरूपी॥४॥
उपस्थइंद्रीकेदेवतारचापरजापति
बेदसरूपी॥५॥इती क्रमइंद्रीमनइंद्री
केदेवताचंद्रमाजोकेसरूपी॥बुधि
इंद्रीकेदेवताब्रह्माबेदसरूपी॥चित्त
तइंद्रीकेदेवताबिस्नब्रबनंतसरू
पी॥अहंकारइंद्रीकेदेवतारुद्रच
लसरूपी॥४॥इतीचौदाइंद्रीसाषीक
बीरकौणसबदकामुषहै॥कौनसब
दकीत्रग्रषि॥कौनसबदकाध्यानहै
कौनसबदकीसाषि॥ब्रह्मसबदका
मुषहै॥सुरतिसबदहे अंषि॥रंपानसब
दकाध्यानहै॥कबीरसबदकीसाषि॥स
बदकौनकापुत्रहै॥कौनमायनपी॥
जोपिन्नितकरोबिचार॥इनकाअर्थ
करीजे॥सबदसबदसबकोकहै॥बिन
पित्तानहींकोय॥बिनापित्ताजेऊपजे

तो तरियाँ करि जो प्र ॥ सबद के पिता ज
ति मय ब्राय है ॥ पुत्र नये ऋंकार ॥ ए
सबद परथी चलै ॥ येक सबद ररंक
र ॥ ररंकार बिस्तार है ॥ यो ब्राय कसब
संसार ॥ तीन गगनि बैकूंठ है ॥ दोय जल
मधि निवास ॥ पांच भौम बैकूंठ ॥ इक
घट ऋंतर बास ॥ बीस पर चौबीस व
बीर पूरी आस ॥ साधसंगति बैकूंठ प
द ॥ ऋभै लोक ऋमरापुरी ॥ सं
य बसि ष्ठ जी को गो हि निरम्मत ॥ क
रमी जी सुनो उपदेस ॥ करमी जीव काल
करमे स ॥ गुरु बसिष्ठ राम के नेहा ॥ तुम सो
वह्यं ऋाह्म नेहा ॥ १ ॥ गुरु बसिष्ठ रिषन के
राऊ ॥ मोहि तुम बोलो सति सुभाऊ ॥ मो
हि भेद धरो जिन गोई ॥ कैसे मुक्ति जीव क
होई ॥ २ ॥ नी मर्षार बेवे ऋस्थांनां ॥ मोसुं क
हि सति निरबांनां ॥ रांमचंद्र त्रिभवन केरा
॥ ताके प्रभु तुम गुरु कहा जे ॥ ३ ॥ दत्तात्रै के
बचन सुनाय ऊ ॥ कौन भेद तुम ताहि ल

यक्ता।सो मोहि भेद कहो समझाई॥जी
न मुक्ति कौन बिधि पाई॥४॥रामचंद्र
वै बलंद ताता।ताके प्रसु तुम गुरु बिधा
॥आदि अंत जो जानकु बाता॥तुम कौ
त्त्वं सति सुहाता॥५॥सतजुग सति गहे स
ब कोई॥कंचन ची चजेता नर लोई॥पजमी
न ग्रंक ही एक आनंदा॥तिहां वहां बसे राव
हरिचंदा॥६॥सति बचन तन हूं मन लावा
सतजुग वन कालन कहों तें आवा॥गहे स
ति वे सदा नरेसा॥कीन्हों काल बिप्र को भे
सा॥७॥गुरु बसिष्ट तुम रिषन के नेहा॥तस
कालकौं न जुग एहा॥नृपति हरचंद स
तजुग मैं राजा॥वे निति करें सति को का
जा॥८॥ताकूं छलन कौं लौं ते आवा॥कि
हो कौन औगुन तैं सत छुडावा॥गहे सत
वा सदा नरेसा॥कीक्यों दगल बिप्र को भे
सा॥९॥करै महनती मसकति लेई उदि
म कराये॥पिदोहा॥केहा निमत्त वे सत
छुडावे॥कालनक बिन बिकरारा॥गुरु व

सिष्यरिषभाषिकि॥ सोधू कौन विचार॥
१०॥ चौपई॥ रांमरांम नित्त सुमरहि जां
नी सत्त छुडावन काल बलगंनी॥ नृप
ति हरचंद पावन ही भावा॥ काहे का
रन काल सत्त छुडावा॥ न्यावा नृपति
हरचंद सत्ति करि नेहा॥ नरमत काल
डषदेत है देहा॥ श्रीगुन कीन्ह रामद
बारा॥ तातैं नृपति सहै डष भारा॥१३॥
रांम काज कीन्ह चतुराई॥ तातैं काल
लगै तिहि जाई॥ रामजांनें बिन काल
लगै संसारा॥ कासिब काहे नृपति के
कुटम परिवारा॥१४॥ जुनि कुकमाव
हे रिषराव कहो मत बांनी॥ कालगै
कौन श्रीगुन जांनी॥ मोतैं कहो सति सो
भेवा॥ तुम गुरु रामचंद के देवा॥१५॥ रा
म रांम नित्त नृपति पुकारा॥ तेऊ तैं काल
भये अधिकारा॥ वै तो कहै राम की बां
नी॥ काल नरावै डूमघर पांनी॥ ॥१६
कहो बासिष्ट भेद निज सोई॥ सेवें रांम

यहंफलहोई।महिमारांमकहोअ-
धिकारी।तेहीसेवतमननयऊसु-
खारी।१७।सेवतरामयहंफलपाव-
नरपतिनरिलेहाटिबिकावा।रांम
सेयेंतेंहोयअसहाला।रामहीतेंजोरा-
वरकाला।१८।एनिजभेदकहोरिखरा-
ऊ।रांमचंद्रकौंकोनिरमाऊ।रांमचं-
द्रकेतुमगुरदेवा।कौनसहेसमकों
योसेवा।१९।सुदिनलगनिधरिव्याह
करायऊ।सुदिनसनेहमैंबसमफाय-
ऊ।त्रिगुनकौनबनैंगयऊ।सीतासा-
थिबियोगीभयऊ।२०।लंकापतिजो
कहीयेनरेसा।रावनकीयोम्रगकोभे-
सा।कनकदेहनवरावनवयऊ।रांम
चंद्रभूलिबनगयऊ।२१।रामहीहोते
करताआपा।तोनहींजानेम्रगकेसा-
पा।रांमहीहोतेमुक्तिकेमूला।तोनहीं
गयाम्रगबनभूला।२२।कौनमंत्रतु-
राहीदीन्हा।कायाकनकम्रग

चीन्हां॥माया म्रग को मरम न जांनां॥त
के गुह न रांम भ्लांनां॥२३॥वैन ही हो
हि मुक्ति के दाता॥बिन चीन्हें जग
है बिधाता॥बंध्यो राम माया की डोरी॥
रावन आय सीया की चोरी॥२४॥त
छि मन रेषा धरती दीन्हां॥चो कीस द
सीया की कीन्हां॥सीया बचन चित
मांनि कुमोरा॥३॥पेलि कि नकरि
मोरा॥२५॥रेषा पार पाव किं धरि
माया कानन जेल पुनि परि॥रावन
म्रग माया करि नय ठौ॥रांम चंद्र ते
ही गुह न गय ठौ॥२६॥सीत्तां एक बच
न सुनि लौं॥रेषा परै पाव किन धरि
कहि कें बचन रांम बन गयठौ॥२७॥सिष
न ड्ष्ट पग र हां न पेठौ॥२७॥सिष
पन न बचन मांनि नहीं लीन्हां॥रेषा उ
परि पाव जिन दीन्हां॥रावन सीया ल
कर ते गयठौ॥औगुन कौन करम यहु
न्यउ॥२८॥लछमन रेषा लषी बिने

गारावनउलंघरा कासके नहीरेषा
षपेलिकेबाहरि नयउ।रावनता
ईलोक लेगयउ।।२५।।कौनसबदरा
ाहीसमझायउ।।रावनकेरभेदनहं
ाउ।।यहरिषभेदसुनावोमोही।।गम
ाकरेकालनहीहोई।।२७।।येनिजमे
सोहिसमझायउ।।रामचंद्रकेगुरु
हकहावउ।।गुरुबसिष्टतुमरिष
नेही।।रामचंद्रधरीयादिकदेही
।।आदिउसद्र्यासोनहीकहावा।।

।मायामृगभूलतनहीं
रिषकरमे
।२८।
हो।।गुरबासिष्टतुमपंडिता।सुदिन
लैदीन्ह कनकमृगरामबनभू
।।(?)
प्रउवाचबोलोसाहिबसतितुमजा

वऋवतार नयेयेही तेषा॥ ऋादिसनेही
मेदनपेषा॥ ३४॥ ऋादिनिरंजननिरगुन
देवा॥ इनकी करैसबमिलिसेवा॥ तीनले
कपुनिइनतेंनयर्न॥ नोऋवतारइनहीं
जोवयर्ने॥ ३५॥ ऋादिनिरंजननिरगुनभ
रा॥ ताहीतें नयोसबव्योहारा॥ भवालाग
जीवकरैऋहारा॥ उतपतिपरलैरचने
हारा॥ ३६॥ सोहमरानिजकहीयेविधात
सोप्रभुकहीयेमुकतिकेदाता॥ जोतिस
रूपसकलसवनाषा॥ नोऋोतारइने
रचिराषा॥ ३७॥ सोप्रभुनिरगुनऋादि
हमारा॥ सरगुनकहीयेनोऋोतारा॥ ॥
निरगुननामनिरंजन॥ जाकासक
लपसार॥ गणगंध्रफमुनिसुमरिहीं॥
सोनिजनांहहमार॥ ३८॥ चोपई॥ ॥
गुरुवसिष्टमुनीवचनबिले
इ॥ निरंजननांहीनिरगुनहोई॥ जोयेह
तेमुकतिकेदाता॥ भवालषजीवकर
तेनहीघाता॥ ३९॥ जुगमेनिरगुनपवे

नकहावे॥ताकीदेहदिष्टनहीं आवै
निरगुनपवनजुगमांहिसनेही॥जा
कीचलतनदीसैदेही॥४७॥निरगुन
कहीयेनीरकरिअंगा॥तपजनिवि
नसनताकेसंगा॥मनकीआससक
लघटनेहा॥मनकीचलतनदीसैदे
हा॥४८॥दोहा॥मनकूंचलतनदेषीये
तीनलोकफिरिआवे॥मनकोभेदनज
नहीं॥करैकल्लजेघाव॥४९॥चोपई॥
मनहैतीनलोकमैराजा॥मनप्रत्तहैस
बकेकाजा॥मनहींजांनितपसाधेकोई
तीनलोकमेराजाहोई॥५०॥मनकूंसाधे
तपहोइजाई॥तपसाधेंबिनराजनपाई
मनसाधेतैंहोयतपसाजा॥बकुरिजन
मघरपावैराजा॥५१॥तपसाधेंउपजेब
डरंगा॥कोमनिकनकतुरीबडसंगा॥
राजजनमहोय्पहैअहंकारा॥तुरीतेज
बनषेलहीसिकारा॥५२॥दोहा॥तुरी
चढैमनहरषहोय॥बन

कागस्वांनजुगजनमल्ने।नरघतकरैश्र
हार॥४६॥नैमपतमस्मासाधिकैं।निपट
करैंश्रहंकार।जाकोकीयेनिरंजनां॥
सोतोपुरषनिन्यार॥४७॥चौपई॥जुग
मेंकहीयेनिरंजनभारा।सवाल्लाषजी
वकरहीश्रहारा।च्यारिवेदकोन्हांषि
सतारा।इनहींरचेनतुंश्रवतारा॥४८
जेतिसरूपरच्योइनदेवा।पनगंध्रफ
मुनिल्लावहीसेवा।तीरथबरतजुगस
कल्लपसारा।इनरंगन्हल्लेसबसंसार
॥४९॥तुल्लाचढायदेयबडदांनां।जन
मधरिधरिल्लेहीनिधांनां।श्रावागवन
रहेउरफाई।उपजतबिनसतपरेभु
लाई॥५०॥देवैदांनदांनपुनिपावैर
हतिघरकदेनहीजावै।फिरिफिरि
गरभवासमैंश्रावै।नरश्रघोरसदान
रमावै॥५१॥ [illegible] गरवासछूटेनहीं
मुनौंवसिहृचितलाय।जिनप्रभुरच्यो
निरंजनां।ताहिमिलोतुमश्राय॥५२॥चौ

ई तहां के सबद गहो चित जांनी॥
नौ सागर तैं छूटै प्रांनी॥ तप साधें ज
नम धरैं काया॥ जनम लेत चौरासी
धाया॥१३॥ और बचन सुनौ रिषराई
मैं नौ बोलौं सति सु नाई॥ तीन लोक
कहीयै संसारा॥ घर घर दीपग होय
उजियारा॥१४॥ कंचन ची चकहीयेन
र लोई॥ दीपग बारि रहै सब कोई॥ घ
र घर हो ति जोति उजियारा॥ पीतिने
बैरे संसारा॥१५॥ कित होय कौंमनि
हिमां कराई॥ कित होय दीपग घर कं
जाई॥ ताकेकैंउ भेद समझाई॥ दीप
ग जोति कहां धु जाई॥१६॥ ताहि जोति
कौं कहां है बासा॥ सो मोहि भेद कहो
र गासा॥ कौंन सो मंदिल कौंन ग्रांमा॥ ज
वहां जोति करै बिसश्रांमा॥१७॥ कै
न पवन का मंदिल छाये॥ कौंन पवन
चढि घर कूं जाये॥ कौंन जतन तहां व
ह राये॥ कहो बसिष्ठ मोहि समझाये॥

षचाद्दीपकजोतितहांपरगासा॥ तीन
तदीपगमैंबासा॥ उषमजजीवक
हैंसंगा॥ जायपडतहैंताकेसंगा॥
पंछीजीवदेषिजोपावे॥ कुत्तासप
नसंगताहिजरावे॥ ऐसालछिनव
लसुभाव॥ कैसेजीवतहांमुकताउ
६०॥ सोबसिष्टनाथकसमकाई॥ वे
सैजमतेंजीवछुडाई॥ दोहा॥ रिषबा
जोजांनहु॥ कहोभेदसमकाय॥
बतुमबां॥ चकका लसं॥ चलोनिस
नबजाय॥ ६१॥ चौपई॥ बसिष्टगुरु
॥ एसतगुरलष्योनहींजाई॥ सोधुजं
तिकहांठहराई॥ प्रांनआतमाकोगु
रपाठी॥ दीपगजोतितहांठहराठी॥ ६
कौनसोदेसकहांधूजाई॥ येकछुभे
दलिष्योनहीजाई॥ हेसाहिबतुमकी
नबषांनां॥ ऐसोग्यानसुमोंनहींकांनं
६३॥ दोहा॥ दीपगजोतिअरुआतमा॥
नाजांनूंकहांजाय॥ तुमसाहिबजोभा

षूचादीपकजोतितहांपरगासा।
तदीपगमैंवासा॥३
हैसंगा॥जायपडतहैताकेसंगा॥४
पंछीजीवदेषिजोपावे।
नसंगताहिजरावे॥ऐसाल
लसुभाउ॥केसैजीवतहांमुक
ई॥०॥सोवमिष्टनाषकसमकाई
सैजमतैंजीवकुडाईदोहा॥रि
ष्टजोजांनहु॥कहोभेदसमकाय
बतुमबांचउकालसें॥
नवजाय॥ई१॥चोपई॥बुमि
एसतगुरलषोनहीजाई
तिकहांठहराई॥प्रांन
रपाउ॥दीपगजोतितहांठहराउ
कौनसोदेसकहांषूजाई
दलिषोनहीजाई॥
नवषांनां॥ऐसोप्रांनसुन्योनहींकां
ई२॥दोहा॥दीपगजोतिसरूप
नांजांनूंकहांजाय॥तुमसाहिबजो

॥क तातेंप्रचूधाया॥६॥चोपई॥
पुनिइँउवाच हमरोक होजोमानि
हो देवा॥तो नितसुमरोसतगुरसेवा॥
जोतिसरूपकहेसेसार॥जोतिसरूपी
कालवट पारा॥६४॥जोतिसरूपीकहे
सबकोई॥जाकोमरमनजानैलोई॥
जोतिसरूपकालहोयभाई॥चोरासी
लखिजीवनकोषाई॥६५॥धरतीसा
हिजोयहसमाना॥सबकोमारिकरे
विसमाना॥अगनिरूपयेकहेधरा
सबकोजारतहेसारा॥६७॥धरतीबासै
तलिरोयधरई॥सूनीदेहकहाबलक
रई॥तनत्यागिरनिरंजनकराई॥प्रेगा
यजोदेहधराई॥६८॥सनेघरवहजाय
समाई॥वासकेरैअरुदेहफुलाई॥जार
बिनारहनजोपावै॥तहांतहांतेंगबिन
ठिधावै॥६९॥पांचततकायाकोवासा
ताचढितहांकरैपरगासा॥जलतेंततसं
गजोतिसमाई॥जलकेजीवमेंज्यायहैभाई

७०॥ आकासततमैंतजैजो देहा॥ तार
नमैंज्याय तरेहा॥ वायततमैंतजैजो
ई बनह छमैंरहैसमाई॥७१॥ तेजत
मैंकैरे पयांनां॥ बजरसिलामैंज्याय
मांनां॥ धरतीततमैंदेहजबजावै॥ ध
तीजीवनमैंजायसमावै॥७२॥ पांच
ततत्तुमनेदबिच्यारा॥ तबसोजांनि
है भेदहमारा॥ गणगंइकमुनिज्ञुग
जांनां॥ सबकेघटमैंकालसमांनां॥७
३॥ कहै बसिष्ट नेदनिरखांनां॥ रांम
कहै तुमगुरजांनां॥ कौननीरसंगपच
न खांनी॥ जातैनयेपथरततपांनी॥
७४॥ पाथरजनमकहांथु नयऊ॥ कौ
न भांतिपाथरनिरमयऊ॥ तपज्योपा
थरकौनेसांचा॥ कौनअंगतानीतरि
नांचा॥७५॥ बैसंदरहूतबसैतामहि
ताकोनावूमेदजोसही॥ चकमकतै
जोमारैजांनी॥ निकसैअगनिमहाबि
षषांनी॥ ७६॥ तालोहाकोअत्रघडा

वातबसोपाथरदेवकहावा॥बै
संदरहतबसेबटपाड़ानरमाघे
गोबिंदहमाराभै॥पूजेमतिकेहीन
गवारा॥त्र्यागेजनमजूतबटपारा
दोहा॥सुनिबसिष्टरिष्ठमोरमतादोष
परेतोहिजानिसबत्र्यपराधतोहिसि
राधोधेजीवकीहांनि॥७५॥चौपई॥रि
श्रवाचसुतुहेस्वामीत्र्यपराधसब
जाई॥सुनत्र्यपुरानसदाचितलाई॥ग
ऊदानत्र्यरुकंचनदीजे॥जमकेमारि
हरिकरिदीजे॥७६॥भोजनकरावेस
नबिप्रनत्र्यांनी॥तबत्र्यपराधहोयस
बहांनी॥इबदानत्र्यरुहस्तीघोरा॥मा
यामोगजाकेत्र्यसजोरा॥६७॥करित्र्यस
नानदेवकीपूजा॥तनत्र्यपराधरहेन
हीदूजा॥धोतीपहरिजनेऊकांधे॥कर
मऊकालरहेनहीराधे॥७८॥मूरतिपूजि
दछिनादेई॥बिप्रनपुनित्र्यासिकालेई
दोहा॥तबछूटेत्र्यपराधस

५२

करमकटाय॥तिमादयापुरांनसुनि
कवजनजमसाय॥८२॥चोपई॥सुनि
[illegible]सुतुंब सिष्टकहंसमफ
सुनतपुरांनदयाठहराई॥सुनतपुरां
नदयादिलजांनी॥कवजनहोतजी
वकीहांनी॥८३॥सुनतपुरांनदयादि
लआई॥उतमजनमबेधिकेपाईमु
कतिपंथहरिहेदेसा॥तहांकरेजो
कोईसंदेसा॥८४॥तबहोयताहिजी
वकरकाजा॥जबकुलकरमसिटा
वेलाजा॥सुमरेनामनहअछरजांनी
तातेहोयकरमकीहांनी॥८५॥बिन
जिभ्यावहवेदउचारा॥तबजीवउत
रेभोजलपारा॥सुनेपुरांनजोअति
तलाई॥ता[illegible]तहरिहोयसाई॥
॥८६॥[illegible]गकेरहा॥जीव
कीदय[illegible]हा॥सुनतपुरांन
जीवकूं[illegible]रनरकमेंड
रा॥८७॥मा[illegible]सोपावे॥जन

।तं ऽ ग्रिनिष्ठा चुंच

न्हिवावे॥६ ता गव बंधन सो पुरान जो

सुनही।सिव सक्तो लेनां मन चे रही।

जज्ञ करत जीव मारै जानी।को रिज

नम परे नरक की षांनी।।६ए।।जीवम

ऽरघर होय

नोजनक

रावही।।जीव मारि न्नाहरवडस्वाव

ही।।ए१।।जीव मारि मिछ न जिन कीन्ह

त्रेसाहवा लनपुनिता को दीन्हा।जी व

मारि जीव जस तेही।।मेतनष्या जनही

ठहरै ही।।ए२।।जीव मारि नोजन किनपा

वां।साविसा विवो लनपुनिता सिर ल्याव

जीव मारे त्रुरु सुनै पुरानो।।ता धर्म सद

कालन्हि स्थानां।।ए३।।सुनै पुरानष्यानब

त्यागे॥ नेगुनैंबिपताही घटजागे॥ सुन
त्पुरांन वगबंधन कीन्हो॥ बोलैवे
लै पुनि ताहि कूं दीन्हो॥ ८४॥ जबज
वे लहरि ग्यांन की आवे॥ कालगर
धूरि बफ बटावे॥ जत्रपुरांन जाके पै
ठिक हावे॥ ताके घट में दया नहीं आ
वे॥ ८५॥ सुनोव सिष तुम रिषसनेहि
आयधरी तुम तप की देही॥ सुमति स
नाव कुमति लेडारी॥
रदेधारी॥ ८६॥ जुग हजारचो कडी
ई बाजस रूपी सब कोइ जांनां सबद
सनेही कोइ कोइ मांनां॥ ८७॥ होत
इतनां जुग मोहि बीतिया॥ कोइ सब
द नहीं जांनि॥ आदि अंत जांने बिनां
पडे कारन की षांनि॥ ८८॥ [illegible]
[illegible] तुम हो पूरण पुरष
पुरानां सेन तु मूरी कोई नहीं जांनां
केते राम कृष्ण हे ये गये॥ केता रावन
लंका भय गे॥ ८९॥ केते ब्रह्मा बिष्नु

गयऊ॥केतेसंकरगनपति भयऊ॥
केतेभयेदेवगणभारी॥केतेचंदसूर
रविसतारी॥१००॥बीतेचौकडीसबे

कजुगसकलजुगगयऊ॥गनगंइक
देवसबभयऊ॥१०१॥दोहा॥जोतुमपुर
षपुरानहो॥अतिपनसबकहदेउ॥आ
दिअंतसबमाधिजो॥जनससबतुमले
उ॥१०२॥मुनिइउबाच॥चोपई॥सुनु
बसिष्टमैकहूंबिचारी॥जुगकीकथा
कहूंनिर्वारी॥चंदसूरधरतीअसमानं॥
पानीपवनसकलअस्थानं॥१०३॥आ
दिअंतघटअंतरजानो॥जापरसकलदे
वजनमानो॥जुगसमानरामकहमवति
गयऊ॥केतेरावनलंका भयऊ॥१०४॥कै
सैजीवनतपबलनठयऊ॥तपसाधतन
रकमैगयऊ॥मुकतिसंदेसनपूछेलोई
जमकीघालमरैसबकोई॥१०५॥ब्रह्मा
दिकगयेअनेकनदेवा॥एसबकरैंकाल

१ कीसेवा किन्नअनेकऐसैंचल्लिगाय
ते मुक्तिकाजकाकिकोननयते॥१०६॥
कहीयेरियमहऋत्रग्यासी॥मरिमरि
नयेकालघरवासी॥ ॥कालबसि
सबजीवनये॥पृछ्छपरेनहींकाहूकै
रहे। केचाकरसबे कोइनपृछैसाहु
१०५ ॥ ॥चौपई॥ अहेमाहि
बह्मारिवेदकहीयेतनमांनां कोनसे
ब्रह्माकीन्हबषांनां॥चोदारतनजोक
हीयेबषांनी॥कोराषेतदेधमेंआंनी॥
१०८ कोंनसोब्रह्माकहोसोनयते॥चा
रबेदकैसेजिनरयते॥कैसेचोदारत
नसबांरा॥सिधदेवकहांबिसतारा॥१०
किंहिंबानरवैदघिमेरापा॥कहोमें
ताहिकरिनाथा॥ब्रह्माविसजोक
हीयेमहेसा॥सोपुनिकीन्हमि
पदेसा॥११०॥ ॥कीन्हेमिथुन
मइको च्यारबेदल्लेआव चोदा
नसमकरिकहेउ॥ताकोकहोसु

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पदे ... केलन कर [illegible]

बहुतन [illegible] नती [illegible] आरिपुर मन्नाए ।।

यहीबानी ।११३। आरि पुर समसा ।

निगाजा । सुरनिसनेह कीन्ह समरा ।। [illegible]

जा सुरैन करही ग्राह धमिनेहा ।। [illegible]

नयेहीनसबदेहा ।।११४।। आ [illegible]

ध्यानलगाना ।। औरन कुमह [illegible]

वा रामनिरंजन कुमा [illegible] नाए ।।

बलोककोमूहोदारा ।।११५।। [illegible]

ररावीसहिदांना ।। बिरला [illegible]

जानी ।। मारिकै [illegible]

रिबैदत्त दक्षिमें डारा ।।११६।। [illegible]

हिसंगमयत्तौ ।। सर्वरान [illegible]

ही ।। तिनतैं बोसानीना [illegible]

कीसेवा॥ बिस्नअनेकऐसेंचलिगये
उमुक्तिकाजकाहूकोनभयउ॥१०६॥
कहीयेरिषसहअअग्यासी॥मरिमरि
भयेकालघरबासी॥ दोहा॥ कालबसि
सबजीवभये॥ पूछ्यपरेनहींकाहुचे
रहीकेचाकरसबै॥कोइनपूछैसाहु
१०७॥ रिषउवाच॥ चोपई॥ अहोसाहि
बच्यारिवेदकहीयेउनमांनां॥कोंन्है
ब्रह्माकीन्हबषांनां॥चोदासतनजोक
हीयेबषांनी॥कोराषेउदधमैंआंनी॥
१०८॥कोंनसोब्रह्माकहोसानयउ॥च
रवेदकैसेंजिनउयउ॥कैसैचोदासत
नसवांरा॥सिधदेवकहोबिसतारा॥१०९
किंहिंपातरवेदधिमेराषा॥कहोमे
ताहिकरिभाषा॥ब्रह्माबिस्नजोक
हीयमहेसा॥सोप्रुनिकीन्हमिथुनउ
पदेसा॥११०॥दोहा॥कीन्हौमिथुनस
मडकोॊच्यारबेदलेआव॥चोदासत
नसमकरिकहेउ॥ताकोकहोसुन

वा॥१११॥मुनिंद्र उवाच॥चौपई॥सुने
वासिष्ट ब्रह्म सु जांनां॥जिन मुष च्या
रूं बेद बषांनां॥ब्रह्म प्रसाद सीष्ट कु
कवयऊ॥षोतौ ब्रह्म न्न जोनी मैं ययऊ॥
११२॥पार ब्रह्म निरंजन भयऊ॥तिहि
प सेवक केवल इक ठयऊ॥ताहि प्रसै
वसे ब्रह्म उतपांनी॥च्यारि बेद मुष भा
षही बांनी॥११३॥आदि पुरष शाष्ट मु
निमांजा॥सुर निस नेह कीन्ह सब सा
जा सुर नंकरही शाष्ट मुनि नेहा॥तातै
न येही न सब देहा॥११४॥शाष्ट मुनि सुं
ध्यांन लगावा॥ओर कछु नहि निज रंश्च
वा॥रायनिरंजन कुं कछि बिचारा॥षर
ष लोक को मूंद्यो द्वारा॥११५॥मकरत
र राषी सहिदांनी॥बिरला जांनै हंस सु
जांनी॥मारि झुं ब्रह्मसी सब तारी॥च्या
रि बेद तन दधि मैं डारी॥११६॥तेरा रतन त
हि संग भयऊ॥सर्ब साज उदधि मैं ठय
ऊ॥तिन तैं स्वासा लीन्ह छुडाई

वनमें दीन्ह फैलाई॥११७॥ छिनछिन
ध्यान धरै संसारा॥ वोतो ब्रह्म है अंसमि
र दारा॥ सो ब्रह्म है अंत्र नेह॥ च्यारि
वेद वै नकी देह॥११८॥ दोहा॥ सो ब्र
है सो सबिन॥ च्यारि बेद जिन कीन्ह॥
सोई संदेसा जांनि के॥ उदधि मिथुन
जो कीन्ह॥११९॥ चोपई॥ बाजी काल
की कजुग मांही॥ नरीयर धोषै सो सक
यो तांही॥ जम नरीयर ताको सिर की
न्हां॥ बिरला जांनै करचीन्हा॥१२०॥ त
को नांम है नरीयर मोरा॥ जनम चोरा
सी जम के चोरा॥ नरीयर बी
को बासा॥ ताको नाम करो परगासा॥
१२१॥ स्वासा पुरष बिबेष करनाउं
रे उ चार नरीयर के ठांउं॥ पवन नांम
जांनै नहीं नाउं॥ फिरि फिरि बसै काल
के गांउं॥१२२॥ दोहा॥ जोर पवन नरी
यर बसै संजम नीर सनेह॥ ता कर नेद
जांनै नहीं॥ बहुरि धरै जग देह॥१२३॥

चोपई॥ जुगहजारचोकडीगयऊ। इतनेजुगमोहिश्रावतभयऊ॥ ह। तेश्रदेहदेहधरिश्रायऊ॥ यहां। श्रायकरिकबीरकहायऊ॥ २४ पवनसरूपीरेहसंचार॥ काया। बीरहेनांमहैमारा॥ पवनसरूपीबे। त्तिवांनी॥ कोकरिहेमांनसपहि। चांनी॥ २४॥ देहधारिमानससमझ। यऊ॥ बिनादेहपुहो नाऊ॥ कहूंनेद। निजवचनसुधारी॥ गहेनेदताहिले। हूँतबारी॥ २६॥ जुगएकनांमहेश्रा। री॥ ताकरिदेषोनेदबिचारी॥ च्यारह। जारजुगश्रेसेंचलिगयेऊ॥ हंसकाज। श्रावतमोहिभयऊ॥ २७॥ जुगजुगना। पिरंशष्टबिलोई॥ सुनतसंदेसजीव। चकतहोई॥ श्रारंभजुगबोधितजुग। च्यारी॥ जमसंसुकतलोन्हेंतबारी॥ २। ८॥ धरमरायसुतबडश्रभिमांनी॥ बि। दवायककीश्रस्तुतिठांनी॥ ताकाय

हिसकलसंसारा॥अस्तुतिप्रेमकरै
अधिकारा॥१२०॥बिनजिम्याबेदजो
भाषा॥सोपरतीतिसदाजीवराषा॥पं
चऊँबेदनिरगुनअधिकारा॥ताका
अंसजमसारिउतारहीपारा॥१२१॥
कूंचमुकांमपूरनकोजांनी॥जोपा
वैनिरगुनसहिदांनी॥तिसबासुरउ
वेवहांबांनी॥सतगुरमिलैतोलिषै
सहिदांनी॥१३१॥दोहा॥गुरबसिष्ट
चितचेतहू॥जिनभूलोजमदेसाक
ह्याहमारामांनिहू॥तौनिरगुनगहो
संनेस॥१३२॥चौपई॥तुमसाहिबहो
निरगुननाहा॥मोकूंदेहोसतिकरि
बांहा॥बिनजिम्याबेदजोभाषा॥सो
मोसंतुमकहुनराषा॥१३३॥अषेद
ताकेदरनेहोई॥साहिबभेदधरोजि
नगोई॥मैंभूल्योरांमरांमकहिआई
आघटजातकालमोहिषाई॥१३४
चौरासीमेंपडिहूंजाई॥मनषजनम

डुक्तनहैनाईं।कौनदेहधरिबाह
रिआवै।कैसेंदरसताहिकरपावै
रख धूं।ऐसीमोहिबुझावौबाता।तु
मसतगुरहोमुकतिकेदाताहोह
हैं।ताजुगमेंजावता।अष्टकेजम
केदेश।सा नरकषांनिबहजातहैं।।
करगहकाढिककेसा।१२६।चौपई
गुरुबासिष्ट पूछि तृष्णा।तुमकौं
देहुंमुक्ति मनिपांना।जिभ्याबिनांबे
दहैसोया।ताहिजांनिजमचलिहै
राया।१२७।दोहा।।च्यारिबेदहैजमके
देषोलछिनिसांना।इनसबहिनतेंमु
कतिनहीं।सतगुरकहैबषांनि।१२८
चौपई।नलिबसिष्ट चेततुमकीन्हां
निरषनिरंतरसतगुरचीन्हां।केता
रांमनेताअगेहोयगयऊ।नेसठिरां
मनेतामैंबैधिऊ।।१२९।।नेसठिनेता
पाछेचलिगयऊ।।नेसठिजनमरांम
केभयऊ।।ताहिरांमकेतुम

हस कल्न संसारा॥ अ स्तुति प्रेम करै
अधिकारा॥ १२९॥ बिन जिभ्या बेद
भाषा॥ सो परतीति सदा जीव राषा॥
चर्तुं बेद निरगुन अधिकारा॥ ता
अंस जम मारि तारही पारा॥ १३०॥
कूंच सुकाम पूरन को जांनो॥ जो पा
वै निरगुन सहिदांनी॥ निसबासुर
वै वहां वांनी॥ सतगुर मिलै तो
सहिदांनी॥ १३१॥ सोरठा॥ गुरु बसि
चित्त चेतहु॥ जिन तूलोज म देस
ल्याहमारा मानिहूं॥ तो निरगुन ग
संनेस॥ १३२॥ चौपई॥ तुम साहिब
निरगुन नाहा॥ मोकूं देहो सतिक
बांहा॥ बिन जिभ्या बेद जो भाषा॥
सो सं तुम कछु न राषा॥ १३३॥ अ
स त्ता के दरसैं न होई॥ साहिब मेद धरो जि
न गोई॥ मैं मूरखा रांम रांम कहि
ऐ घट जात काल मोहि षाई॥ १३४
चौरासी मैं पडि हूं जाई॥ मनष

डुलत न है नाई॥ कौंन देह धरि बाहेरि आवै॥ कैसें दरस ताहि कर पावे॥ १२४॥ पूछी ऐसी मोहि बुझावो बाता॥ तुम सतगुर हो मुकति के दाता॥ दोहा॥ त्रेता जुग मैं जावता॥ प्रगट के जम के देस॥ नरक षांनि बहु जात हैं॥ करग हकाढि कु केस॥ १२६॥ चौपई॥ गुरु बासिष्ट पूछि ग्यांना॥ तुम कौ देहु मुक्ति मनि पांना॥ जिभ्या बिना बेद हैं सो या॥ ताहि जांनि जम चलि हैं रोय॥ १२७॥ दोहा॥ चारि बेद है जम के देषो लछि निसांन॥ इन सबहिन तें मुकति नहीं॥ सतगुर कहै बषांनि॥ १२८॥ चौपई॥ मलि बसिष्ट चेत तुम कीन्हां॥ निरष निरंतर सतगुर चीन्हां॥ केता रांम त्रेता आगे होय गयउ॥ ऐसहि रांम त्रेता मैं बोधि उ॥ १२९॥ ऐसहि त्रेता पाछे चलि गयउ॥ ऐसहि जनम रांम के भयउ॥ ताहि रांम के तुम गुरदेव॥

वातैं भये चौरासी षांनी॥१५१॥ तामैं जेते
निरंजन देवा॥ तीन लोक स्यावैं सब से
वा॥ तासूं भये न तंअवतारा॥ ब्रह्मा बि
ष्णु महेस बिचारा॥१५२॥ दोहा॥ तास
हि बकौ छिपाय कैं रिआप भये सिर
दार॥ उपजावहीं बिनसावहीं॥ उनतैं
मुक्ति निन्यार॥१५३॥ चौपई॥ मुक्ति पंथ
झीनों है द्वारा॥ सुनौं बाि सिष कन्या हम
रा॥ सतगुर मिलै तो भेद बतावे॥ जमकूं
जीति लोक कौं आवे॥१५४॥ इति श्री ल
[illegible]
जनां सं लिख्यते॥ करतहूं पुकार प्र
भु तुम हो हो आधार मेरे॥ कीजीये गुहा
र बेगि बार का लिलाये हो॥१॥ बडे बडे
संकट मैं सहाय करी संतन की॥ राषे
पन जन की निजि पैज कू सिधाये हो॥२॥
जन के दुष दुष दूष देत आप देषि नस किउ
कलापताप कौं मिटाय सुष सिंधु भ्र
वाये हो॥३॥ सेत बंध बांधवे कौं रामच

नक्रितुरनप्योनिधीसत्यरेधाजनप
गांजसैनिराधेहोधाहातुरपगधारेले
निसतास्योनृपनधुव्यालनिषकोंहि
डारिजमकिंकरनैंकुंकायेहो।धू।पं
डुकेकुमारगयेकसैपेप्रकारनये
हेसैकीधारहारसीसनुबलायेहो
दीनकोजगिसारयोविडारयोडपद
तुनलायसर्बभूपनेधसैजैजैउचारे
हो।७।जाकेजनविकलकरनकेरैला
साहिबकोदासकीहसाईकहियाकु
रहेहिसायेहो।गकनुतनधार्योकाज
लासोसनगैबनकोरुवहिपुरसे
सपुरीदेवनचपातेहो।लानारद
गायोमगद्यायोसर्वतर्तलककर
येरेधिङनिमेजनधर्मेमिलायेहो।
बलनकौसिधायेकुटनायेनका
नकौलेआयेगुनतानमनिमारन
चिताकेहो।१२।सिंधुबोलिलव्याके
पावपंडाकोबुकायेहोयकासोपुर

बासीअनंतगुनगावायेहो॥१२॥सेष
तकीबारबाररह्योहारिकसणीदेक
रिकुंदरतेकमालसुतम्रितकजिवा
येहो॥१३॥गोरषपुरमगहरबसिप्रमो
धेतुमदोउदीनबोध्योबघेलाषांनष
नांकुचितायेहो॥१४॥कोतिगदिषाये
नदीअमीकूंबुहायेतहांधायेनरना
रीमनबंछतफलनदिवायेहो॥१५॥जी
वनकेधनीआपप्रभुताकेनायक
होअसाजाहिजैसीताहितैसीपुरवा
येहो॥१६॥बंदीछोरनामतेरोबेगबंद
छोरिमेरोकुंतोअबतेरोकहाअनेरो
वहरायेहो॥१७॥निरषोप्रभुअपनी
तोरकृपाकीजेमेरीओरचबुषोलि
चिंतुतुम्हेंओरकोनधायेहो॥१८॥स
पूतऔकपूतसुतलआपितुजनन
कौआपनौहीजांनिताहिपालनऊ
करायेहो॥तुमृरोबत्लजांनिआंनिजी
वनकोदीयोपांनलीजेसुनेविनैजं

नधर्मनिगहोरायेहैं॥२०॥प्रगटेसफुर
कबीरधर्मनिश्चितधरोधीरसुतनके
ततनुंचच्छुनीरधायपायलागेहैं।
२१॥निरषतसुआरबिंदउपज्योमन
आतिंअनंदहीयेंउमगिबोलेसंत
नांमअनुरागेहैं॥२२॥पगपैंपरगा
ढ़िहाहारिउफापटखूटिजमकेघ
नइलूटिडरजनउखिजागेहैं॥२३॥
द्वारपालकियोसोरधायेसबचकेंने
रकरतकर्लैंपहाहारोलतहांनहिं
पायेहैं॥२४॥कहेदंपतिकरजोरिपु
डनमासोमोरहममरिहैंयेहिबोरश्रा
पनेअनुरागेहैं॥बोलेसतनामजेनस
हीयेराषिचेनलेरोसुतजीवेजैनतउ
कुबषिकागेहैं॥२६॥सहजआरतिअ
निमांनिमांनिसुतदीयोपांनतबबालव
अंगरानेंपितुमातांअनुरागेहैं॥२७॥ध
मनिचितभयोअनंदमेटेसबबिकलं
दसतनामपाय

२८ धरमनिदासानुदाससंतगुरपदकं
जआसचूटीकलिफाससदाप्रेमरसं
पागेहैं॥२९॥ इतिश्री अरजनांमासं
पूरण:॥ दोहा॥ संमत चतुरदसपं
चमो॥ सातदोयको जांनि॥ कातिक
ग्यारससुकलपषि सोमवारकौमा
नि॥१॥ गुरपदरज सिरपर धरे संतनकौ
दृढभाव॥ सो अधिकारी ग्रंथको तजै
कपटकोदाव॥२॥ जैपुर मोतीडूंगरी॥
संतनपुज्यस्थांन॥ तहां बैठि पुस्तक
लिष्यो॥ भगवांनदास लेऊ जांन॥३॥ पु
रनह्चकनके सिषहै॥ भगवांनदास ति
हिंनांम॥ पुस्तक लिषपूरणकर्यो॥ त
नसुषलेषनजांन॥४॥ देष्यासो तो लिष
दीया हमकूं दोस न होय॥ अषरमात्र
जोघटै बिडजनलीज्योजोय॥५॥ नीची
नांडि कडिकर बडी॥ नीचा नैनरु बे
न॥ एताकष्ट पोथी लिषी॥ नीकां राषीसै
न॥६॥ सबसंतनसूंबीनती॥ करुणालीजो
मांन॥ अष्टअंग दंडवत करूं भगवन्न गुह
तज्जांन॥७॥

अथपुस्तकमैंग्रंथतिनकीयाद
दासतीलिख्यते॥